प्रकाशक—आगम अनुयोग प्रकाशन परिषद्
वख्तावरपुरा, सांडेराव
[फालना-राजस्थान]

प्रथम संस्करण : वीर संवत् २४९९ दीपमालिका
अक्टूबर १९७२
प्रतियाँ : एक हजार
मूल्य पच्चीस रुपये

मुद्रण व्यवस्था—
श्रीचन्द सुराना 'सरस'
संजय साहित्य संगम
दास बिल्डिंग नं. ५
बिलोचपुरा, आगरा-२

प्राप्ति स्थान
शा. हिम्मतमल हस्तीमल
A/4 मस्कती मार्केट
अहमदाबाद-२

मुद्रक—श्यामसुन्दर शर्मा, श्री प्रिंटर्स, २९।१५४
राजामण्डी, आगरा-२

श्रमणसंस्कृति के प्रतीक-
सरल शान्त दान्त
गुणरत्नाकर गुरुवर..
भजनानदी श्री फतहचन्द्र जी म० को

प्रकाशकीय

स्वतन्त्र भारत की राजधानी देहली मे आगम अनुयोग प्रकाशन की ओर से जैनागमो का नवीन शैली मे प्रकाशन प्रारम्भ किया गया। इस कार्य मे सर्वप्रथम ई० सन् १९६६ मे समवायाङ्ग का प्रकाशन किया गया। पश्चात् स्थानाङ्ग सूत्र का प्रकाशन भी प्रारम्भ होगया था। बियालीस फर्मे भी वहाँ छप-गये थे किन्तु कारणवश मुद्रण कार्य स्थगित करना पड़ा। सन् १९७१ मे पुन आगरा मे मुद्रण कार्य प्रारम्भ किया गया।

प्रूफ संशोधन एवं मुद्रण का सारा कार्यभार श्रीमान् श्रीचन्दजी सुराना "सरस" ने सँभाल कर हमारे गुरुतर भार को हलका कर दिया। आपका यह सहयोग कभी भुलाया नही जा सकता।

समवायाङ्ग के समान इस स्थानाङ्ग सूत्र मे भी विस्तृत विषय सूची, शुद्ध मूलपाठ शब्दानुलक्षी सरल, सरस, सक्षिप्त हिन्दी अनुवाद और ज्ञानवर्धक शोधपूर्ण विशिष्ट परिशिष्ट पं० रत्न मुनि श्री कन्हैयालालजी म० "कमल" की अनुपम कृपा से

हमे प्राप्त हुए है अत' हम सब गुरुदेव की ज्ञान साधना के प्रति श्रद्धापूर्वक सदा नतमस्तक है।

इस प्रकाशन के हेतु स्थानीय दानवीर धर्म प्रेमी **शा. देवीचन्दजी रूपाजी** ने २००१) रु० कागज खरीदने के लिए प्रदान किए तथा **श्री श्वे० स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, फूलिया कलां** ने ५५०१) रु० का महान् योगदान मुद्रणकार्य के लिए किया—इसके लिए हम आप सबके आभारी है।

मन्त्री—
आगम अनुयोग प्रकाशन परिषद्
बखतावरपुरा, साडेराव

सम्पादकीय

आगम अनुयोग प्रकाशन की ओर से स्थानाङ्ग के प्रकाशन की योजना पर सर्वप्रथम मूलपाठ संशोधन का संकल्प बना किन्तु कार्य प्रारम्भ करते ही कुछ ऐसी समस्यायें सामने आईं—जिनके कारण यथेष्ठ "संशोधन की सम्भावना धूमिल होती चली गई। दुर्भाग्य से कार्य-काल मे एक अप्रत्याशित व्यवधान ऐमा अनिष्टकर आया कि जिमके कारण कार्य सर्वथा स्थगित करना पडा। सौभाग्य से शेष कार्य पूरा करने के लिए पुनः सुअवसर प्राप्त हुआ और गुरुदेव की कृपा से कार्य सम्पन्न भी हो गया।

मेरे संकल्पो के अनुरूप संपादन मे सौष्ठव नही आ पाया है—यह मैं स्वय स्वीकार करता हूँ—फिर भी स्वाध्याय प्रेमियो के लिए उपलब्ध अन्य संस्करणों की अपेक्षा प्रस्तुत संस्करण अधिक उपादेय सिद्ध होगा।

स्मरणशक्ति की समृद्धि के लिए संख्या प्रधान संकलनो की एक सुन्दर श्रृङ्खला जो चिरकाल से चली आ रही हैं, उसकी ये दो अमर कड़ियाँ स्थानाङ्ग और समवायाङ्ग है। समवायाङ्ग का प्रकाशन पाठको के हाथो

मे पहले पहुँच गया है और स्थानाङ्ग का प्रकाशन अब पहुँच रहा है।

सम्पादन काल मे प० रत्न मुनि श्री मिश्रीमलजी "मुमुक्षु" का तथा सेवाभावी मुनि श्री चाँदमलजी का समय-समय पर जो योगदान रहा है वह चिरस्मरणीय रहेगा। श्री नवीन मुनिजी (गुजराती) तथा अन्तेवासी मुनि विनय ने सेवा मे सलग्न रहकर मेरी श्रुत-साधना को जो संबल प्रदान किया है वह सर्वदा अविस्मरणीय है।

जिनके सामयिक सुझावो से इस कार्य के सम्पन्न होने मे जो सरलता हुई है उन सिद्धहस्त लेखक एव अनेक ग्रन्थो के सपादक "सरस" जी को भी मैं अपना सहयोगी पाकर प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूँ।

दीपमालिका —मुनि कन्हैयालाल "कमल"
वीर संवत् २४९८
वर्षावास-फूलिया कलाँ

प्राक्कथन

स्थानाङ्ग-परिचय—

स्थानाङ्ग मे स्थान और अङ्ग ये दो शब्द है। स्थान शब्द का मामान्य अर्थ "विश्रान्ति-स्थल" होता है। अङ्ग का मामान्य अर्थ "एक विभाग" होता है। इस प्रकार स्थानाङ्ग नाम निष्पन्न हुआ है।

इस स्थानाङ्ग के संकलनकर्ता श्री सुधर्मा गणधर एक-एक सख्या वाले पदार्थों का संकलन जव परिपूर्ण कर लेते है तो उस संकलन का नाम "एक स्थान" देते हैं। इसी प्रकार द्विसख्यक त्रिसख्यक यावत् दशसख्यक पदार्थों के सकलन का क्रमशः द्विस्थान त्रिस्थान यावत् दसस्थान नाम देते है।

यह आगम द्वादशाङ्गात्मक गणिपिटक का एक अङ्ग-विभाग है। अत इस अङ्ग का "स्थानाङ्ग" नाम सार्थक है[1]। यह स्थानाङ्ग का शाब्दिक परिचय है। अन्तरङ्ग परिचय इस प्रकार है—

स्थानाङ्ग तृतीय अङ्ग आगम है। इसके दस अध्ययन है। इन दस अध्ययनो का एक ही श्रुतस्कन्ध है। द्वितीय, तृतीय

---

१ एक से दस तक की संख्यावाले स्थान ही प्रवचन पुरुष के भाव अङ्ग है, अत इस आगम का नाम स्थानाग है।

और चतुर्थ अध्ययन के चार-चार उद्देशक है। पंचम अध्ययन के तीन उद्देशक है। शेष छ. अध्ययनो मे एक-एक उद्देशक हैं। इस प्रकार स्थानाङ्ग के इक्कीस उद्देशक है।

वर्तमान मे उपलब्ध स्थानाग मे ७८३ मूल सूत्र माने गये है[१]। इन सूत्रो मे से जिन-जिन सूत्रो के जितने-जितने अन्तर्गत सूत्र माने गये हैं उनकी एक विस्तृत सूची परिशिष्ट नम्बर २ मे दी गई है। किस अनुयोग के कितने सूत्र है—इसकी पूरी जानकारी परिशिप्ट नम्बर १ मे दी गई है। सबसे अधिक सूत्र द्रव्यानुयोग के है और सबसे अल्पसूत्र कथानुयोग के हैं। स्थानाग और समवायाग के कुछ ऐसे सूत्र हैं जिनका विषय समान है। ऐसे सूत्रो की एक तुलनात्मक सूची परिशिष्ट नम्बर ३ मे दी गई है।

स्थानांग की विषय सूचियो का तुलनात्मक अध्ययन—

नन्दी सूत्र और समवायाग मे वर्णित स्थानाग की विषय-सूचियो के देखने पर यह पता चलता है कि नन्दीसूत्र मे कही गई स्थानाग की विषयसूची संक्षिप्त है और समवायाग मे कही गई विस्तृत है। समवायाग की अपेक्षा नन्दीसूत्र अर्वाचीन है (यह जैन साहित्य के ऐतिहासिक विद्वानो का अभिमत है) अतः नन्दी-सूत्र मे कही गई स्थानांग की विषय सूची विस्तृत होनी चाहिए

---

१ आगमोदय समिति से प्रकाशित सटीक स्थानाग की प्रति के अनुसार ये सूत्राक दिये गए है।

थी, किन्तु ऐसा न होकर विपरीत हुआ है। इस समस्या का समाधान कही मिल नही रहा है।

समवायांग मे स्थानांग की विषय सूची—

१. स्वसिद्धान्त, पर-सिद्धान्त और स्वपर-सिद्धान्तो का सयुक्त कथन।

२. जीव, अजीव और जीवाजीव का संयुक्त कथन।

३. लोक, अलोक और लोकालोक का संयुक्त कथन।

४. द्रव्य के गुण तथा विभिन्न क्षेत्र-कालवर्ती पर्यायो का कथन।

५. पर्वत, पानी, समुद्र, चार प्रकार के देव, आकर, पुरुषो के विभिन्न प्रकार, स्वर, गोत्र, नदियो, निधियो और ज्योतिषी देवो की विविध गतियो का वर्णन।

६. एक प्रकार, दो प्रकार यावत् दस प्रकार के लोकस्थ जीव और पुद्गलो का कथन।

नन्दीसूत्र मे स्थानांग की विषय सूची—

प्रारम्भ के तीन कोष्ठको मे कहे गए विषय यद्यपि यहाँ व्युत्क्रम से कहे गए है फिर भी समवायांग के समान हैं।

चौथे और पाँचवे कोष्ठक मे कहे गए विषय यहाँ अत्यन्त संक्षिप्त करके कहे गये है—यथा—टक, कूट शैल, शिखरी प्राग्भार, गुफा, आकर, द्रह और नदियो का कथन है।

छठे कोष्ठक मे कहे गये विषय समान हैं। इस संक्षिप्ती-करण का हेतु क्या है-यह ज्ञातव्य है।

स्थानांग की पदसंख्या का ह्रास—

समवायांग और नंदी सूत्र मे स्थानाग की पदसंख्या वहत्तर हजार कही गई है किन्तु वर्तमान मे उपलब्ध स्थानांग मे वहत्तर हजार पद नही हैं–ऐसी मान्यता प्रचलित है। यद्यपि पद का परिमाण सुनिश्चित नही है फिर भी उपलब्ध आचाराग से स्थानाग चौगुना नही है–इसलिए संकलन काल मे जितने पद थे उतने पद वर्तमान मे नही हैं–यह निश्चित है।

एक स्थान से लेकर दसवे स्थान तक प्रत्येक स्थान के अन्तिम सूत्र की सकलन शैली देखकर यह धारणा वनती है कि स्थानाङ्ग मे संकलन काल से लेकर अव तक किसी प्रकार का परिवर्तन नही हुआ है। पर यह धारणा असंगत है। अतः स्थानाङ्ग के प्रत्येक स्थान का अन्तिम भाग ज्यो का त्यो वना रहा[1] और पूर्व भाग मे से पदो का ह्रास हो गया"—ऐसा मान लें तो कोई असगति नही दिखाई देती।

---

१ देखिए—एक स्थान सूत्र ५६। द्वितीय स्थान सूत्र ११७-११८। तृतीय स्थान सूत्र २३३-२३४। चतुर्थस्थान सूत्र ३८७-३८८। पंचम स्थान सूत्र ४७४।.. षष्ठ स्थान सूत्र ५४०। सप्तम स्थान सूत्र ५९२-५९३। अष्टम स्थान सूत्र ६६०।... नवम स्थान सूत्र ७०२-७०३। दसम स्थान सूत्र ७८३।

स्थानाङ्ग की सूत्राङ्क निर्धारण नीति—

आगमोदय समिति से प्रकाशित सटीक स्थानाङ्ग की प्रति मे जो सूत्राङ्क दिये है उनकी विभाजक रेखा जानने के लिये जो अब तक प्रयास किये गए है, वे सफल सिद्ध नही हुए है। द्वितीय तृतीय, चतुर्थ, सप्तम और नवम अध्ययन के अन्तिम दो-दो सूत्रो की जो रचना शैली है वही षष्ठ, अष्टम और दसम अध्ययन के अन्तिम एक-एक सूत्र की है।[1] इनके अतिरिक्त भी अनेक सूत्र ऐसे है जिनकी विभाजक रेखा का आधार अब तक अज्ञात है अतः सूत्राङ्क निर्धारण नीति निश्चित करके आगामी प्रकाशनो मे सूत्राङ्क दिए जावे तो यह एक प्रशस्त प्रयास सिद्ध होगा।

सूत्रों की सृष्टि का अज्ञात रहस्य—

१. सप्तम स्थान के सूत्राङ्क ५४३ मे सात प्रकार का योनि संग्रह कहा गया है, और अष्टम स्थान के सूत्राङ्क ५९९ मे अष्ट प्रकार का योनि सग्रह कहा गया है। इन दो सूत्रो की किस अपेक्षा से रचना की गई है—यह ज्ञातव्य है।

२ द्वितीय स्थान प्रथम उद्देशक सूत्राङ्क ६७ मे दो प्रकार का समय कहा गया है और इसी स्थान एवं उद्देशक के सूत्राङ्क ७४ मे दो प्रकार का काल कहा गया है। समय और काल पर्यायवाची हैं—तो क्या ये दोनो सूत्र केवल पर्याय भेद की अपेक्षा से कहे गये है या और भी कोई अपेक्षा इन सूत्रो की सृष्टि के पीछे सन्निहित है?

---

१ टिप्पण एक के समान।

३. पंचम स्थान के सूत्राङ्क ४१० मे केवली के पाँच अनुत्तर कहे है और दसम स्थान के सूत्राङ्क ७६३ मे केवली के दस अनुत्तर कहे गये है। दस अनुत्तरो मे पांच अनुत्तरो का समावेश हो जाता है फिर भी पाच और दस के दो भिन्न-भिन्न जो सूत्र कहे गये है वे विवक्षा भेद या उपेक्षा भेद से ही कहे गए होगे ?

४. अष्टम स्थान के सूत्राक ६१३ मे आठ प्रकार के तृण वनस्पतिकायो का कथन है और दसम स्थान के सूत्राक ७७३ मे दस प्रकार के तृण वनस्पतिकायो का कथन है। ऊपर के समान सूत्रद्वय की रचना का हेतु प्रकाश मे आना चाहिए।

५. सूत्राक १६३, २८६, ४९८ और ६०० मे क्रमश: लोक-स्थिति के ३, ४, ६ और ८ प्रकार कहे गए हैं किन्तु ५ और ७ प्रकार नही कहे गए है—ऐसी स्थिति मे हमारे सामने दो विकल्प आते हैं।

पहला विकल्प—पांच और सात प्रकार की लोक स्थिति के सूत्र बने ही नही होगे।

दूसरा विकल्प—यदि बने थे तो विच्छिन्न हो गए होगे।

फिर भी चार सूत्र किस-किस अपेक्षा से कहे गए है यह तो मालुम होना ही चाहिए।

६. सूत्राङ्क २४४, ४३१ और ४८४ मे क्रमश: ४, ५ और ६ भेद तृण वनस्पतिकाय के कहे गए है। एक-एक नाम बढाकर तीन सूत्रो की रचना करने का तात्पर्य क्या है ?—यह जिज्ञासा है।

इस प्रकार अनेक सूत्र समाधान के लिए प्रस्तुत किये जा सकते है यहाँ केवल कुछ सूत्र उदाहरणार्थ लिखे गए है।

स्थानाङ्ग में इन सूत्रों को स्थान कैसे मिला—

तृतीय स्थान-द्वितीय उद्देशक के अन्तिम दो सूत्र १६६ और १६७ दु.ख विषयक हैं।

प्रथम सूत्र मे दु.ख सम्वन्धी प्रश्नोत्तर हैं।

द्वितीय सूत्र मे अन्यतीर्थियो की मान्यता है।

दोनो सूत्रो मे कही सख्या का निर्देश नही है फिर भी गणना प्रधान स्थानांग में ये सूत्र है....यह विचारणीय प्रश्न है।

तृतीय स्थान के तृतीय उद्देशक के अन्तिम सूत्र १९० में इग्यारह प्रश्नोत्तरो मे श्रमण को पर्युपासना का फल कहा गया है। तीन की सख्या का कही उल्लेख नही है फिर भी तृतीय स्थान मे इस सूत्र का संकलन किया गया है।

नन्दीश्वर द्वीप वर्णन और भ० विमलवाहन का वर्णन आदि के कुछ सूत्र ऐसे हैं जो स्थानाङ्ग की संकलन शैली से मेल नही खाते है। यद्यपि ये सूत्र टीकाकार के सामने भी थे। किन्तु वे स्वयं इस सम्वन्ध मे किसी निर्णय पर नही पहुचे है।[1]

---

१ सत्सम्प्रदायहीनत्वात्, सदूहस्य वियोगतः। सर्व स्वपर शास्त्राणामदृष्टेरस्मृतेश्च मे ॥१॥ वाचनानामनेकत्वात्, पुस्तकानामशुद्धित.। सूत्राणामति गाम्भीर्याद्, मतभेदाच्च कुत्रचित् ॥२॥

—स्थानाङ्गवृत्ति प्रशस्ति

क्या यह क्रम भंग नहीं ?

सूत्राङ्क २६३ मे मान, माया और लोभ के चार प्रकार कहे गये हैं और सूत्राङ्क ३११ मे चार प्रकार का क्रोध कहा गया है। सूत्राङ्क ३८५ मे भी चार प्रकार के कषाय कहे गये हैं। चार कषायो के क्रम के अनुसार सर्वप्रथम क्रोध पश्चात् मान माया और लोभ का कथन होना चाहिए किन्तु सत्तरह सूत्र के पश्चात् क्रोध सूत्र का सकलन क्रम भंग नही है क्या ? अन्यथा प्रस्तुत संकलन क्रम की संगति सिद्ध करना चाहिये।

प्राचीन काल के गणित प्रयोग

१. "सय" (शत-१००) के स्थान मे "दस दसाइं" का प्रयोग है।[1]

२. "एग सहस्स" (एक सहस्र १०००) के स्थान मे "दस सयाइ" का प्रयोग है।

३. "एग लक्ख" (एक लक्ष १०००००) के स्थान मे "दस सय सहस्साइं" का प्रयोग है।

४. तीन की सख्या के लिए "छच्च अद्ध" का प्रयोग है।[2]

५. नो से अधिक को अर्थात् ९। या ९॥ को नो मे ही गिन लिया है क्योकि इनमे ९ का ही उच्चारण है।

---

१ दसवें स्थान मे दस की सख्या वाले पदार्थो का ही कथन होता है अत. सौ हजार और एक लाख को उक्त सख्याओ मे यहा कहा गया है।

२ देखिये सूत्राङ्क ४९३, ६६९, ७१९ और ७३५।

क्लिष्ट कल्पना

जम्बूद्वीप के भरत और ऐरवत वर्ष मे अतीत उत्सर्पिणी के सुषम-सुषमा कालवर्ती मनुष्यो की उत्कृष्ट आयु तीन पल्योपम काल का था यह कथन सूत्राङ्क ४९३ मे है—यहाँ विचारणीय यह है कि तीन पल्योपम काल को **"छच्च अद्ध पलिओवमाइं परमाउं पालइत्ता"** इन शब्दो मे सकलित करके छठे ठाणे मे कहा है।

तीन पल्योपम काल के आयु को छ का आधा कहकर छठे ठाणे मे कहना सूत्र संकलन काल की प्रचलित पद्धति के अनुसार उपयुक्त माना जा सकता है किन्तु आधुनिक पाठक इम प्रकार के संकलन को क्लिष्ट कल्पना की संज्ञा ही देते है।

वाचना भेद या विवक्षा भेद

सूत्राङ्क ४९१ मे छ प्रकार के ऋद्धि प्राप्त मनुष्य और छ प्रकार के अनऋद्धि प्राप्त (ऋद्धि रहित) मनुष्य कहे गये है। प्रज्ञापना प्रथम पद के सूत्र ६५ मे भी ऋद्धि प्राप्त मनुष्य छः प्रकार के ही कहे गये है किन्तु अनऋद्धि प्राप्त (रिद्ध रहित) मनुष्य ९ प्रकार के कहे गये है।

स्थानाग मे कथित छः प्रकार के रिद्धि रहित मनुष्यो से प्रज्ञापना मे कथित रिद्धिरहित मनुष्य सर्वथा भिन्न हैं। स्थानांग मे उक्त छ. प्रकार के रिद्धिरहित मनुष्य अकर्म भूमिक है। जब कि प्रज्ञापना मे उक्त रिद्धि रहित मनुष्य कर्म भूमिक है। इस

प्रकार के अनेक विवक्षा भेद हैं जिनका स्वतन्त्र चिन्तन होना आवश्यक है।

लौकिक सूत्र

स्थानाग मे कुछ सूत्र ऐसे है जिन्हे लौकिक सूत्र कहे तो कोई असंगति दिखाई नही देती, क्योकि इन सूत्रो से केवल लौकिक ज्ञान की वृद्धि होती है। साधक जीवन मे लौकिक ज्ञान भी यदा कदा लोकोत्तर ज्ञान का पूरक होता है। लौकिक ज्ञान-शून्य साधक लोकोत्तर साधना मे सहज सफलता प्राप्त नही कर पाता। लौकिक ग्रन्थो मे स्थानाग के लौकिक कहे जाने वाले सूत्रो का आधार स्थल शोधने का कार्य भी महत्त्वपूर्ण है।

यहाँ कुछ सूत्रो के सूत्राङ्क और विषय दिये जा रहे हैं जिन्हे देखकर पाठक यह समझ सकें कि ये सूत्र लौकिक ज्ञान की वृद्धि के लिये सकलित किये गये हैं।

सूत्राङ्क	विषय निर्देश
२०६—	तीन पितृ अङ्ग और तीन मातृ अङ्ग।
३४३—(१)	चार प्रकार की व्याधिया।
(२)	चार प्रकार की चिकित्सा।
३४४—	चार प्रकार के चिकित्सक।
३७४—	चार प्रकार के वाद्य, नाट्य, गेय, माल्य, अलकार और अभिनय।
३७६—	चार प्रकार के उदकगर्भ।
३७७—	चार प्रकार के मानुषी गर्भ।

३७६— चार प्रकार के काव्य ।
४१६—(१) गर्भ रहने के पाँच कारण ।
(२) गर्भ न रहने के पाच कारण ।
४४८— पाच प्रकार की निधि ।
४४६— पाच प्रकार के शौच ।
५३३—(१) छ प्रकार का भोजन परिणाम ।
(२) छ प्रकार का विप परिणाम ।
५५१— सात प्रकार के गोत्र ।
५६१— आयुक्षय के सात कारण ।
६११— आठ प्रकार के आयुर्वेद ।
६६७— रोगोत्पत्ति के नो कारण ।

इनके अतिरिक्त और भी अनेक सूत्र इस सूची मे सम्मिलित करने योग्य हैं किन्तु विस्तार भय से यहा अंकित नही किये गये है। लोकोत्तर साधना मे इन सूत्रो की उपादेयता सिद्ध करना बहुश्रुतो कार्य हैं। स्थानाङ्ग की विपय सूचियो मे इन लौकिक सूत्रो का उल्लेख नही है, अतः ये सब प्रक्षिप्त हैं—यह आधुनिक विद्वानो का मत है।

हमारे बहुश्रुत इन सूत्रो को पर-सिद्धात के सूत्र मानते हैं किन्तु ये पर दर्शन के सूत्र नही है। उक्त सूत्रो मे आयुर्वेद से सबंधित सूत्र ही अधिक हैं—इसलिये इन सूत्रों से लौकिक ज्ञान की वृद्धि ही होती है।

श्रुत पुरुष में स्थानांग का स्थान

श्रुत पुरुष की कल्पना किस कल्पनाशील महापुरुष के मस्तिष्क की उपज है। और उस महापुरुष का कौन-सा युग है? इस विषय की तथ्यपूर्ण जानकारी प्राप्त करने के साधन सुलभ नही है अत निश्चित कुछ नही लिखा जा सकता, किन्तु यह सुनिश्चित है कि यह कल्पना आगम संकलन काल की नही है।[1]

आगम काल की कल्पनायें केवल दो हैं। पहली प्रवचन माता की कल्पना और दूसरी गणिपिटक की कल्पना। समवायाङ्ग भगवती सूत्र आदि आगमो मे दोनो कल्पनाओ का उल्लेख है।[2]

श्रुत पुरुष और श्रुत देवता की कल्पना आगमोत्तर काल के ग्रन्थो मे हैं। इसी प्रकार लोक पुरुष की कल्पना भी ग्रन्थो मे ही है।

श्रुत पुरुष की वाम और दक्षिण पिण्डलियो मे स्थानाङ्ग और समवायाङ्ग का स्थान है। इसलिये ये दोनो आगम स्तम्भ के समान सुदृढ एवं महत्वपूर्ण है।

---

१ अंग आगम सकलना काल।

२ (क) समवायांग का ८ वा समवाय।

(ख) भगवती शतक १ उ० ४।

(ग) भगवती शतक २५ उ० ३।

स्थानांग का अध्ययन काल

दीक्षा पर्याय के आठवे वर्ष मे स्थानाङ्ग की वाचना दी जानी चाहिये यह पूर्वाचार्यों की मान्यता है। यदि आठवें वर्ष से पूर्व कोई वाचना दे तो उसे आज्ञा भङ्गादि दोष लगते हैं।[1]

स्थानाङ्ग और समवायाङ्ग के ज्ञाता को ही आचार्य उपाध्याय और गणावच्छेदक का पद देने का विधान है अतः प्रत्येक सयमी को इन अंगो का स्वाध्याय करना चाहिए।[2]

क्रमिक विकास

१. सूत्राक ५८८ मे सातावेदनीय और असातावेदनीय के सात-सात अनुभाव कहे हैं किन्तु प्रज्ञापना पद २३ उ० १ सूत्राङ्क ६०४ मे सातावेदनीय और असातावेदनीय के आठ-आठ अनुभाव कहे हैं।

आधुनिक विद्वान् इस प्रकार के कथनो को चिन्तन का क्रमिक विकाश मानते है किन्तु कायिक सुख और कायिक दुख को छोड कर स्थानाग मे सात-सात अनुभाव कहने का तात्पर्य क्या है ? यह जिज्ञासा बनी हुई है। स्थानाग के सकलन कर्त्ता ने किसी विशेष अपेक्षा को लेकर ही सात-सात अनुभाव कहे हैं।

---

१ ठाणं-समवाओऽवि य अंगे ते अट्ठवासस्स—अन्यथादानेऽस्याज्ञाभङ्गादयो दोषा—स्थानाङ्ग टीका

२ ठाण-समवायधरे कप्पइ आयरित्ताए उवज्झायत्ताए गणावच्छेइयत्ताए उद्दिसित्तए—व्यवहारसूत्र उ० ३ सूत्र ६८

प्रज्ञापना मे उक्त कायिक सुख और दुख का अनुभाव तो स्थानाग के सकलन कर्ता गणधर भगवान को ज्ञात तो था ही, फिर भी आठ अनुभाव न कहकर सात अनुभाव ही कहे है तो किसी विशेप अपेक्षा को लेकर ही कहे है—ऐसा मानना चाहिए।

२. सूत्राक ६४८ मे ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी के ८ नाम है और उववाई तथा प्रज्ञापना पद-२ मे १२ नाम है। इस सम्बन्ध मे विचारणीय यह है कि स्थानाग मे दस स्थान है इसलिये १२ नामो मे से १० नाम दसवें स्थान मे कहे जा सकते थे, किन्तु आठवे स्थान मे आठ नामो का ही कथन है, अत वाचना भेद मे बारह नाम और आठ नाम कहे गये है—यही मानना चाहिये।

उपसंहार

स्थानाङ्ग एक बृहद् अङ्ग आगम है इसकी विशालता के अनुरूप अनेक विषय अचर्चित रह गये है। इसका एक मात्र कारण है समय और साधनो का अभाव। आगम अनुयोग प्रकाशन के कार्यकर्ता चिरप्रतीक्षित स्थानाङ्ग के प्रकाशन को और अधिक दिनो तक स्थगित रखना भी नही चाहते हैं, अतः इस समय इतना ही लिखना पर्याप्त है।

—मुनि कन्हैयालाल "कमल"

स्थानांग सूत्र · विषय सूची

—एक स्थान—(पहला ठाणा)

एक समय की स्थिति वाले—यावत्—असख्य समय की स्थिति वाले-पुद्गलो की वर्गणा,
एक गुण काले—यावत्—अनन्त गुण रुक्ष पुद्गलो की वर्गणा,
जघन्य आदि प्रदेशस्थित पुद्गल स्कधो की वर्गणा,
जघन्य आदि अवगाहना वाले पुद्गल स्कधो की वर्गणा,
जघन्य आदि स्थिति वाले पुद्गल स्कधो की वर्गणा,
जघन्य आदि गुण काले—यावत् अजघन्योत्कृष्ट गुण रुक्ष पुद्गल-स्कंधो की वर्गणा।

५२. जम्बूद्वीप की परिधि,
५३. भगवान महावीर का एकाकी निर्वाण,
५४. अनुत्तरोपपातिक देवो के शरीर की ऊचाई,
५५. आर्द्रा, चित्रा, और स्वाति नक्षत्र के तारे,
५६. एक प्रदेशावगाढ पुद्गल,
एक समय स्थिति वाले पुद्गल,
एक गुण काले—यावत्—एक गुण रुक्ष पुद्गल ।



द्विस्थान (दूसरा ठाणा)

प्रथम उद्देशक

सूत्रांक विषय

५७. लोक मे सभी पदार्थों का द्वैविध्य,
जीव की विभिन्न दो दो विवक्षाएं,
५८. अजीव की विभिन्न दो दो विवक्षाएं,

द्वितीय उद्देशक

भाषा, आहार, परिणमन, वेदन और निर्जरा करने के दो-दो स्थान,

मरुत प्रमुख देवो के दो प्रकार के शरीर,

तृतीय उद्देशक

८१. दो-दो प्रकार के शब्द और शब्द की उत्पत्ति,

८२. पुद्गलो का सम्मीलन, भेदन, परिशाटन, पतन और विध्वंस-स्वयं और परकृत,

दो-दो प्रकार के पुद्गल,

८३. इसी प्रकार दो दो प्रकार के शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श,

८४. दो-दो प्रकार के आचार,

दो-दो प्रकार की प्रतिमा 'तप'

दो प्रकार की सामायिक।

८५. देव और नारक इन दो के जन्म की उपपात संज्ञा है

नारक और भवनवासी देव इन दो के मरण की उद्वर्त्तन संज्ञा है,

ज्योतिषी और वैमानिक इन दो के मरण की च्यवन संज्ञा है,

मनुष्य और तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय इन दो के जन्म की गर्भ व्युत्क्रान्ति संज्ञा है।

गर्भावस्था मे आहार वृद्धि, हानि, विकुर्वणा, गति परिवर्तन, समुद्घात, काल प्रभाव, जन्म मरण आदि भिन्न-भिन्न परिणतियाँ,

सदा दुषमसुषम कालवत् रिद्धि वाले दो क्षेत्र
छहो प्रकार के काल प्रभाव वाले दो क्षेत्र ।

९०. जम्बूद्वीप मे चन्द्र, सूर्य, कृतिका, यावत्-भावकेतु, ८८ ग्रह,
९१ जम्बूद्वीप की वेदिकी की ऊँचाई,
लवण समुद्र की वेदिका की ऊंचाई।

९२. धातकीखण्ड पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे दो भरत, दो ऐरवत आदि दो-दो क्षेत्र, वृक्ष वृक्षवासीदेव, वर्षधर पर्वत, वृत्त वैताढ्य पर्वत, पर्वतवासीदेव, वक्षस्कार पर्वत, वर्षधर पर्वतकूट, पर्वत-ह्रद, ह्रदवासी देवियाँ,क्षेत्रगतह्रद,महानदियाँ, अन्तरनदियाँ, चक्रवर्ती विजय, विजयराजधानियाँ, वनखण्ड, शिला, मेरु, मेरुचूलिका आदि धातकीखण्ड की वेदिका की ऊचाई।

९३. कालोद समुद्र की वेदिका की ऊंचाई,
पुष्करार्धद्वय मे क्षेत्रादि के द्विक का वर्णन,
पुष्कर द्वीप की वेदिका की ऊँचाई,
समस्त द्वीप एवं समुद्रो की वेदिका की ऊचाई।

९४. चमरेन्द्र और बलीन्द्र आदि सर्व स्थानों के इन्द्र युगल, महाशुक्र और सहस्रार देवलोक के विमानो के वर्ण, ग्रैवेयक देवो के शरीर की ऊँचाई।

चतुर्थ उद्देशक

९५. समय, आवलिका से लेकर उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी पर्यन्त ग्राम, नगर से लेकर राजधानी पर्यन्त और छाया से लेकर-



त्रि स्थान (तीसरा ठाणा)

प्रथम उद्देशक

द्वितीय उद्देशक

तीन प्रकार के जल,
अष्टमभक्त करने वाले के लिए कल्पनीय तीन प्रकार के जल,
तीन प्रकार की उनोदरी, निर्ग्रन्थो के अहित और हित के तीन स्थान,
तीन प्रकार के शल्य,
तेजोलेश्या के तीन हेतु
त्रैमासिक भिक्षुप्रतिमा प्रतिपन्न को कल्पनीय तीन दत्ति
एक रात्रि की प्रतिमा की सम्यक् पालन करने से होने वाले तीन शुभ फल और सम्यक् पालन न करने से होने वाले तीन अशुभ फल।

१८३. तीन-तीन कर्मभूमियाँ (जम्बूद्वीप में)
१८४. तीन दर्शन,
तीन रुचियाँ,
तीन प्रयोग।
१८५. तीन व्यवसाय
१८६. तीन प्रकार के पुद्गल,
नरक के तीन आधार (नयविचार)।
१८७. तीन प्रकार के मिथ्यात्व,
अक्रिया मिथ्यात्व, अविनय और अज्ञान के तीन-तीन भेद।
१८८. धर्म, उपक्रम, वैयावृत्य, अनुग्रह, अनुशिष्टि और उपालम्भ के तीन-तीन भेद।

चतुर्थ उद्देशक



चतुर्थ स्थान

प्रथम उद्देशक

२४६. निर्ग्रन्थी (साध्वी) को कल्पनीय चार संघाटी (साडी)।
२४७. ध्यान के चार-चार भेद, लक्षण, आलम्बन और अनुप्रेक्षा।
२४८. देवो की चार प्रकार की स्थिति और सवास।
२४९. चौवीस दण्डक मे चार कषाय,
चौवीस दण्डक मे क्रोधादि का चार प्रकार का प्रतिष्ठान
क्रोधादि की चार प्रकार की उत्पत्ति,
अनन्तानुवंधी आदि क्रोधादि के चार भेद,
आभोग निर्वर्तित आदि क्रोध के चार भेद।

२५०. अष्ट कर्मप्रकृति के चयनादि के चार स्थान।
२५१. समाधि आदि चार प्रतिमा।
२५२. चार अजीव (अधर्मास्तिकायादि) काय।
२५३. चार अरुपी काय,
फल की उपमा और पुरुप।

२५४. चार प्रकार के सत्य,
चार प्रकार का झूठ,
चौवीस दण्डक मे चार प्रकार के प्रणिधान,
चार प्रकार के सुप्रणिधान,
चौवीस दण्डक मे चार प्रकार के दुष्प्रणिधान।

२५५. भद्र और अभद्र पुरुप,
दोषदर्शी पुरुप,
दोप प्रकाशक पुरुप,
दोप शामक पुरुप,

द्वितीय उद्देशक

तृतीय उद्देशक

चतुर्थ उद्देशक

पंच स्थान (पाँचवाँ ठाणा)

प्रथम उद्देशक

द्वितीय उद्देशक

तृतीय उद्देशक

षट्स्थान (छठा ठाणा)

जवूद्वीप मे छह महाह्रद और छह उनकी नदियां,
जवूद्वीप मे छह महानदिया मेरु के उत्तर मे छह महानदिया,
मेरु के दक्षिण मे, सीता, सीतोदा महानदी के उभयकूल मे छह अन्तर नदिया,
धातकीखण्ड आदि के पूर्वार्ध मे भी इसी प्रकार।

५२३. छह ऋतुए।

५२४. छह अवमरात्रि,
छह अतिरात्रि।

५२५. छह प्रकार का अर्थावग्रह।

५२६. अवधिज्ञान के छह भेद।

५२७, साधु के लिए नही वोलने योग्य छह प्रकार के वचन।

५२८. षड् कल्प प्रस्तार।

५२६ कल्प के विरोधी।

५३०. छह प्रकार की कल्पस्थिति।

५३१. श्रमण भगवान् महावीर षष्ठभक्त करके प्रव्रजित हुए,
षष्ठ भक्त करके केवली हुए,
षष्ठ भक्त करके सिद्ध हुए।

५३२. सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्प के विमान छह सौ योजन के और उनके देवो की अवगाहना (भवधारणीय) उत्कृष्ट छह हाथ।

५३३. छह प्रकार का भोजन परिणाम,
छह प्रकार विष परिणाम।

सप्त स्थान (सातवां ठाणा)

प्रथम उद्देशक

अष्टस्थान (आठवाँ ठाणा)

६३७. सीता महानदी के दोनों कूलो पर आठ-आठ वक्षस्कार पर्वत। सीता महानदी के उत्तर मे और दक्षिण मे आठ-आठ चक्रवर्ती विजय।
सीतोदा महानदी के उत्तर और दक्षिण मे आठ-आठ चक्रवर्ती विजय।
इन दोनो नदियों के उत्तर और दक्षिण मे आठ-आठ राजधानियाँ।

६३८. सीता महानदी के उत्तर तथा दक्षिण मे उत्कृष्ट आठ-आठ अर्हन्त, आठ-आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव वासुदेव होते है।
इसी तरह सीतोदा महानदी के दक्षिण और उत्तर मे भी,
सीता महानदी के उत्तर तथा दक्षिण मे आठ-आठ दीर्घ-वेताढ्य।
आठ-आठ तिमिस्रगुहा,
आठ-आठ खण्डप्रपात गुफा,
आठ-आठ कृतमालक देव,
आठ गगा सिन्धु कुण्ड-यावत्-आठ-आठ ऋषभकूट देव है।

६३९. सीतोदा महानदी के उत्तर में आठ दीर्घ वैताढ्य-यावत् नृत्यमालदेव आठ रक्ता रक्तावती यावत् ऋषभकूट देव हैं।

६४०. मेरुपर्वत चूलिका मध्यभागमे आठ योजन विष्कम्भवाली है।

६४१ धातकीवृक्ष आदि का उच्चत्व आदि भी इसी तरह जानना चाहिए।

६५७. जम्बूद्वीप आदि द्वीप समुद्र के द्वार आठ योजन ऊँचे है,

६५८. पुरुष वेदनीय कर्म की जघन्य बंघस्थिति आठ वर्ष की है, यशःकीर्ति नाम कर्म और उच्चगोत्र की जघन्य बंधस्थिति आठ मुहूर्त की है।

६५९. त्रीन्द्रिय की आठ लाख कुलकोडी।

६६०, जीव अष्ट स्थाननिर्वतिक पुद्गल पापकर्म रूप से एकान्तिक करते है यावत् निर्जरा करते हैं।
अष्टप्रदेशी स्कन्ध, अष्टप्रदेशावगाढपुद्गल यावत् अष्टगुण रूक्षपुद्गल अनन्त कहे गये है।

नव-स्थान (नौवाँ ठाणा)

६६१. विभभोग के नौ कारण।

६६२. नव ब्रह्मचर्य अध्ययन।

६६३. नौ ब्रह्मचर्य गुप्ति और अगुप्ति।

६६४. अभिनन्दन तीर्थंकर और सुमति तीर्थंकर के बीच का अन्तर नौ लाख क्रोड सागरोपम का है।

६६५. नौ सद्भाव पदार्थ।

६६६. संसारी जीव के नौ भेद और उनकी गति आगति।
सर्व जीव के नौ भेद,
नौ प्रकार की सर्व जीवावगाहना।
संसार वर्त्तन के नौ स्थान।

६६७. रोगोत्पत्ति के नवकारण।

६६८. दर्शनावरणीयणीय के नौ भेद।

दस-स्थान (दशवाँ ठाणा)

स्थानांग सूत्र

(मूल पाठ)



संपादक

मुनि कन्हैयालाल "कमल"

णमो सिद्धाण

तइयं ठाणंगं

एगट्ठाणं

१ सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं–

२ एगे आया.

३ एगे दंडे.

४ एगा किरिया.

५ एगे लोए ६ एगे अलोए

७ एगे धम्मे ८ एगे अधम्मे.

९ एगे बंधे. १० एगे मोक्खे.

११ एगे पुण्णे. १२ एगे पावे

१३ एगे आसवे १४ एगे संवरे.

१५ एगा वेयणा. १६ एगा णिज्जरा.

१७ एगे जीवे पाडिक्कएणं सरीरएणं

१८ एगा जीवाणं अपरियाइत्ता विगुव्वणा.

१९ एगे मणे. २० एगा वइ. २१ एगे कायवायामे.

२२ एगा उप्पा. २३ एगा वियती २४ एगा वियच्चा.

२५ एगा गइ. २६ एगा आगइ.

२७ एगे चवणे. २८ एगे उववाए.

२९ एगा तक्का. ३० एगा सन्ना ३१ एगा मन्ना. ३२ एगा विन्नू.

३३ एगा वेयणा. ३४ एगा छेयणा ३५ एगा भेयणा

३६ एगे मरणे अंतिमसारीरियाणं.

३७ एगे संसुद्धे अहाभूए पत्ते.

३८ एगे दुक्खे जीवाणं एगेभूए. २

३९ एगा अहम्मपडिमा जं से आया परिकिलेसइ.

४० एगा धम्मपडिमा जं से आया पज्जवजाए

४१ एगे मणे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि.
एगा वइ देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि
एगे कायवायामे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि ३

४२ एगे उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसकारपरक्कमे-
देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि.

४३ एगे नाणे एगे दंसणे. एगे चरित्ते ३

४४ एगे समए.

४५ एगे पएसे. एगे परमाणु. २

४६ एगा सिद्धी एगे सिद्धे एगे परिनिव्वाणे एगे परिनिव्वुए ४

४७ एगे सद्दे. एगे रूवे. एगे गंधे. एगे रसे. एगे फासे.
एगे सुब्भिसद्दे एगे दुब्भिसद्दे.
एगे सुरूवे एगे दुरूवे.
एगे दीहे. एगे हस्से.
एगे वट्टे. एगे तंसे. एगे चउरंसे. एगे पिहुले. एगे परिमडले
एगे किण्हे. एगे नीले एगे लोहिए. एगे हालिद्दे एगे सुक्किले.

एगे सुब्भिगंधे. एगे दुब्भिगंधे.

एगे तित्ते. एगे कडुए एगे कसाए एगे अंबिले. एगे महुरे.

एगे कक्खडे एगे मउए एगे गरुए. एगे लहुए.

एगे सीए. एगे उण्हे. एगे निद्धे एगे लुक्खे ३६

४८ एगे पाणाइवाए —जाव— एगे परिग्गहे

एगे कोहे —जाव— एगे लोहे.

एगे पेज्जे —जाव— एगे परपरिवाए.

एगा अरइरइ.

एगे मायामोसे एगे मिच्छादंसणसल्ले. १८

४९ एगे पाणाइवायवेरमणे —जाव— एगे परिग्गहवेरमणे

एगे कोहविवेगे —जाव— एगे मिच्छादंसणसल्लविवेगे. १८

५० एगा ओसप्पिणी एगा सुसमसुसमा —जाव—

एगा दूसमदूसमा ७

एगा उस्सप्पिणी. एगा दूसमदूसमा —जाव—

एगा सुसमसुमसा ७

५१ (१) एगा नेरइयाणं वग्गणा. एगा असुरकुमाराणं वग्गणा

चउवीसदंडओ —जाव—

एगा वेमाणियाणं वग्गणा २४

(२) एगा भवसिद्धियाणं वग्गणा.

एगा अभवसिद्धियाणं वग्गणा.

एगा भवसिद्धियाणं नेरइयाण वग्गणा.

एगा अभवसिद्धियाण नेरइयाण वग्गणा.

एवं—जाव—एगा भवसिद्धियाणं वेमाणियाणं

वग्गणा. एगा अभवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा. ५०

(३) एगा सम्मदिट्ठियाणं वग्गणा. एगा मिच्छदिट्ठियाण वग्गणा एगा सम्मच्छिदिट्ठियाणं वग्गणा.

एगा सम्मदिट्ठियाणं नेरइयाणं वग्गणा एगा मिच्छदिट्ठियाण नेरइयाण वग्गणा. एगा सम्ममिच्छदिट्ठियाण नेरइयाण वग्गणा.

एवं—जाव—सम्ममिच्छदिट्ठियाणं थणियकुमाराण वग्गणा.

एगा मिच्छदिट्ठियाण पुढविकाइयाण वग्गणा.

एवं —जाव— मिच्छदिट्ठियाण वणस्सइकाइयाणं वग्गणा. एगा सम्मदिट्ठियाण बेइंदियाण वग्गणा. एगा मिच्छदिट्ठियाण बेइंदियाणं वग्गणा.

एव तेइंदियाण वि. चउरिंदियाण वि

सेसा जहा नेरइया—जाव—एगा सम्ममिच्छदिट्ठियाण वेमाणियाण वग्गणा ६२

(४) एगा कण्हपक्खियाणं वग्गणा

एगा सुक्कपक्खियाण वग्गणा

एगा कण्हपक्खियाण नेरइयाण वग्गणा

एगा सुक्कपक्खियाण नेरइयाण वग्गणा

एवं चउवीसदंडओ भाणियव्वो. ५०

(५) एगा कण्हलेस्साण वग्गणा एगा नीललेस्साण वग्गणा.

एवं—जाव—एगा सुक्कलेस्साण वग्गणा

एगा कण्हलेस्साणं नेरइयाणं वग्गणा. —जाव—
एगा काउलेस्साणं नेरइयाणं वग्गणा
एवं जस्स जइ लेस्साओ
भवणवइ-वाणमंतर-पुढवि-आउ-वणस्सइकाइयाणं च चत्तारि लेस्साओ.
तेउ-वाउ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं तिण्णि लेस्साओ
पचेंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं छल्लेसाओ.
जोइसियाणं एगा तेउलेसा वेमाणियाणं तिण्णि उवरिम लेसाओ ६६

(६) एगा कण्हलेस्साणं भवसिद्धियाणं वग्गणा
एगा कण्हलेस्साणं अभवसिद्धियाण वग्गणा
एवं छसु वि लेसासु दो दो पदाणि भाणियव्वाणि
एगा कण्हलेस्साणं भवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा
एगा कण्हलेस्साणं अभवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा
एवं जस्स जति लेसाओ तस्स तत्तियाओ भाणियव्वाओ —जाव— एगा सुक्कलेस्साणं अभवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा १२०

(७) एगा कण्हलेस्साणं सम्मदिट्ठियाणं वग्गणा.
एगा कण्हलेस्साणं मिच्छदिट्ठियाणं वग्गणा
एगा कण्हलेस्साणं सम्मामिच्छदिट्ठियाणं वग्गणा.
एव छसु वि लेसासु —जाव— एगा सुक्कलेसाणं सम्मामिच्छदिट्ठियाण वेमाणियाणं वग्गणा

जेंसि जइ दिट्ठीओ २२७

(८) एगा कण्हलेस्साण कण्हपक्खियाणं वग्गणा —जाव— एगा सुक्कलेस्साण सुक्कपक्खियाणं वेमाणियाणं वग्गणा. जस्स जइ लेस्साओ. ५०

एए अट्ठ चउवीसदंडया

एगा तित्थसिद्धाणं वग्गणा. एवं —जाव— एगा एक्कसिद्धाणं वग्गणा एगा अणिक्कसिद्धाण वग्गणा.

एगा पढम-समय-सिद्धाण वग्गणा.

एवं —जाव— एगा अणंत-समय-सिद्धाणं वग्गणा.

एगा परमाणुपोग्गलाणं वग्गणा

एवं—जाव— एगा अणतपएसियाण खंधाणं वग्गणा.

एगा एगपएसोगाढाण पोग्गलाण वग्गणा —जाव— एगा असंखेज्जपएसोगाढाणं पोग्गलाण वग्गणा.

एगा एगसमयठिइयाणं पोग्गलाण वग्गणा. —जाव— एगा असंखेज्ज-समय-ठिइयाणं पोग्गलाणं वग्गणा.

एगा एग-गुण-कालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा —जाव— एगा असंखेज्ज-गुण-कालगाण पोग्गलाणं वग्गणा

एगा अणत-गुण-कालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा

एव वण्णा गधा रसा फासा भाणियव्वा. —जाव— एगा अणत-गुण-लुक्खाणं पोग्गलाण वग्गणा.

एगा जहन्नपएसियाण खंधाण वग्गणा एगा उक्कोस-पएसियाणं खंधाण वग्गणा. एगा अजहन्नुक्कोसपए-सियाण खंधाणं वग्गणा.

एवं जहन्नोगाहणयाणं उक्कोसोगाहणयाणं. अजहन्नुक्कोसोगाहणयाणं

जहन्नठिइयाणं. उक्कोसठिइयाणं. अजहन्नुक्कोसठिइयाणं.

जहन्नगुणकालयाणं उक्कोसगुणकालयाणं. अजहन्नुक्कोसगुणकालयाणं

एवं वण्ण-गंध-रस-फासाणं वग्गणा भाणियव्वा.

—जाव— एगा अजहन्नुक्कोस-गुण-लुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा. ३६४।१०७३

५२ एगे जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं —जाव— अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं

५३ एगे समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउव्वीसाए तित्थगराण चरमतित्थयरे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतकड़े परिनिव्वुडे सव्वदुक्खपहीणे

५४ अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं एगा रयणी उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता.

५५ अद्दानक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते चित्ता नक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते. साती नक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ३

५६ एगपएसावगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता.

एवमेगसमयठिइया एगगुणकालगा पोग्गला अणंता पण्णत्ता.

—जाव— एगगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता २२

।।एगट्ठाणस्स सव्वसुत्ताइ १२४२।।

दुट्ठाणं

दुट्ठाणस्स पढमो उद्देसो

५७ जदत्थि णं लोगे तं सव्वं दुपड़ोआरं तं जहा-

जीवच्चेव अजीवच्चेव

तसे चेव थावरे चेव.

सजोणियच्चेव अजोणियच्चेव.

साउयच्चेव. अणाउयच्चेव.

सइंदियच्चेव अणिंदियच्चेव.

सवेयगा चेव अवेयगा चेव

सरूवि चेव. अरूवि चेव

सपोग्गला चेव अपोग्गला चेव

ससारसमावन्नगा चेव असंसारसमावन्नगा चेव.

सासया चेव. असासया चेव. १०

५८ आगासे चेव. नो आगासे चेव.

धम्मे चेव अधम्मे चेव २

५९ बधे चेव. मोक्खे चेव

पुन्ने चेव. पावे चेव

आसवे चेव. संवरे चेव

वेयणा चेव. निज्जरा चेव. ४

६० दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
जीवकिरिया चेव. अजीवकिरिया चेव.

जीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-
सम्मत्तकिरिया चेव. मिच्छत्तकिरिया चेव.

अजीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-
इरियावहिया चेव संपराइया चेव.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
काइया चेव अहिगरणिया चेव.

काइया किरिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-
अणुवरयकायकिरिया चेव. दुप्पउत्तकायकिरिया चेव

अहिगरणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. त जहा-
संजोयणाहिगरणिया चेव णिव्वत्तणाहिगरणिया चेव

दो किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
पाउसिया चेव पारियावणिया चेव

पाउसिया किरिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-
जीवपाउसिया चेव अजीवपाउसिया चेव.

पारियावणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-
सहत्थपारियावणिया चेव. परहत्थपारियावणिया चेव.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
पाणाइवायकिरिया चेव. अपच्चक्खाणकिरिया चेव.

पाणाइवायकिरिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-

सहत्थपाणाइवायकिरिया चेव. परहत्थपाणाइवायकिरिया चेव.

अपच्चक्खाणकिरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव
अजीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
आरंभिया चेव. परिग्गहिया चेव

आरंभिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जीवआरंभिया चेव. अजीवआरंभिया चेव.

परिग्गहिया किरिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-
जीवपरिग्गहिया चेव अजीवपरिग्गहिया चेव.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
मायावत्तिया चेव. मिच्छादंसणवत्तिया चेव.

मायावत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-
आयभाववंकणया चेव. परभाववंकणया चेव.

मिच्छादंसणवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
ऊणाइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव
तव्वइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव

दो किरियाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
दिट्ठिया चेव. पुट्ठिया चेव

दिट्ठिया किरिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-
जीवदिट्ठिया चेव. अजीवदिट्ठिया चेव

पुट्ठिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जीवपुट्ठिया चेव अजीवपुट्ठिया चेव.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
पाडुच्चिया चेव सामंतोवणिवाइया चेव.

पाडुच्चिया किरिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-
जीवपाडुच्चिया चेव. अजीवपाडुच्चिया चेव.

सामंतोवणिवाइया किरिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-
जीवसामंतोवणिवाइया चेव अजीवसामंतोवणिवाइया चेव

दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
साहत्थिया चेव नेसत्थिया चेव.

साहत्थिया किरिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-
जीवसाहत्थिया चेव. अजीवसाहत्थिया चेव

नेसत्थिया किरिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-
जीवणेसत्थिया चेव. अजीवणेसत्थिया चेव

दो किरियाओ पण्णत्ताओ. त जहा-
आणवणिया चेव. वेयारणिया चेव.
जहेव नेसत्थियाओ

दो किरियाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
अणाभोगवत्तिया चेव अणवकंखवत्तिया चेव.

अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-
अणाउत्तआइयणया चेव. अणाउत्तपमज्जणया चेव.

अणवकंखवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
आयसरीअणवकखवत्तिया चेव परसरीरअणवकंखवत्तिया चेव.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
पेज्जवत्तिया चेव दोसवत्तिया चेव.

पेज्जवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
मायावत्तिया चेव लोभवत्तिया चेव.

दोसवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
कोहे चेव. माणे चेव ३६

६१ दुविहा गरहा पण्णत्ता. तं जहा-
मणसा वेगे गरहइ वयसा वेगे गरहइ.

अहवा–गरहा दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
दीहं वेगे अद्ध गरहइ रहस्स वेगे अद्ध गरहइ २

६२ दुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते तं जहा-
मणसा वेगे पच्चक्खाइ वयसा वेगे पच्चक्खाइ

अहवा–पच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-
दीहं वेगे अद्धं पच्चक्खाइ रहस्स वेगे अद्ध पच्चक्खाइ २

६३ दोहिं ठाणेहिं अणगारे सपन्ने अणादिय अणवदग्ग दीहमद्धं-
चाउरंतसंसारकंतार वीइवएज्जा. तं जहा-
विज्जाए चेव चरणेण चेव

६४ दो ठाणाइं अपरियाणित्ता आया नो केवलिपण्णत्त धम्मं लभेज्ज
सवणयाए. तं जहा-

आरंभे चेव. परिग्गहे चेव.

दो ठाणाइं अपरियाइत्ता आया नो केवलं बोहिं बुज्झेज्जा. तं जहा-

आरभे चेव. परिग्गहे चेव.

दो ठाणाइं अपरियाइत्ता आया नो केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा त जहा-

आरंभे चेव. परिग्गहे चेव.

एवं नो केवलेणं बभचेरवासमावसेज्जा.

नो केवलेणं संजमेणं सजमेज्जा.

नो केवलं संवरेणं संवरेज्जा

नो केवल आभिणिबोहियणाणं उप्पाड़ेज्जा

एवं केवलं सुयणाणं उप्पाड़ेज्जा

एव ,, ओहिणाण उप्पाड़ेज्जा.

एवं ,, मणपज्जवणाणं उप्पाड़ेज्जा

एवं ,, केवलणाणं उप्पाड़ेज्जा ११

६५ दो ठाणाइं परियाइत्ता आया केवलिपण्णत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए तं जहा-

आरंभे चेव. परिग्गहे चेव.

एव —जाव— केवलणाणमुप्पाड़ेज्जा. ११

६६ दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए. त जहा-

सोच्चा चेव अभिसमेच्चा चेव.

एवं —जाव— केवलणाणमुप्पाड़ेज्जा ११

६७ दो समाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
ओसप्पिणी समा चेव उस्सप्पिणी समा चेव

६८ दुविहे उम्माए पण्णत्ते तं जहा-
जक्खावेसे चेव मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं चेव.
तत्थ णं जे से जक्खावेसे से णं सुहवेयतराए चेव
सुहविमोयतराए चेव
तत्थ णं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं से णं दुहवेयतराए
चेव. दुहविमोयतराए चेव.

६९ दो दंडा पण्णत्ता त जहा-
अट्ठादडे चेव अणट्ठादडे चेव
नेरइयाणं दो दंडा पण्णत्ता त जहा-
अट्ठादंडे य अणट्ठादंडे य
एव चउवीसदंडओ —जाव— वेमाणियाणं २५

७० दुविहे दंसणे पण्णत्ते तं जहा-
सम्मद्दंसणे चेव मिच्छादंसणे चेव.
सम्मद्दसणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
निसग्गसम्मद्दंसणे चेव अभिगमसम्मद्दसणे चेव
निसग्गसम्मद्दंसणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
पड़िवाइ चेव. अपड़िवाइ चेव.
अभिगमसम्मद्दंसणे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-

पड़िवाइ चेव अपड़िवाइ चेव.

मिच्छादंसणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

अभिगहिय-मिच्छादंसणे चेव. अणभिगहिय-मिच्छादंसणे चेव.

अभिगहिय-मिच्छादंसणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

सपज्जवसिए चेव. अपज्जवसिए चेव

अणभिगहिय-मिच्छादंसणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

सपज्जवसिए चेव. अपज्जवसिए चेव (७)

७१ दुविहे नाणे पण्णत्ते. तं जहा-

पच्चक्खे चेव. परोक्खे चेव.

पच्चक्खे नाणे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-

केवलनाणे चेव नो केवलनाणे चेव.

केवलणाणे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-

भवत्थ-केवलनाणे चेव. सिद्ध-केवलनाणे चेव.

भवत्थ-केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-

सजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव

अजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव.

सजोगि-भवत्थ-केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-

पढमसमय-सजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव

अपढमसमय-सजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव.

अहवा--चरिमसमय-सजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव

अचरिमसमय-सजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव.

एव अजोगि-भवत्थ-केवलनाणे वि

सिद्ध-केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
अणंतर-सिद्ध-केवलनाणे-चेव परपर-सिद्ध-केवलनाणे चेव.

अणंतर-सिद्ध-केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
एक्काणतर-सिद्ध-केवलनाणे चेव
अणेक्काणतर-सिद्ध-केवलनाणे चेव

परंपर-सिद्ध-केवलनाणे दुविहे पणत्ते तं जहा-
एक्क-परंपर-सिद्ध-केवलनाणे चेव.
अणेक्क-परपर-सिद्ध-केवलनाणे चेव

नो केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते. त जहा-
ओहिणाणे चेव. मणपज्जणाणे चेव.

ओहिणाणे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-
भवपच्चइए चेव. खओवसमिए चेव

दोण्ह भवपच्चइए पण्णत्ते. तं जहा-
देवाण चेव नेरइयाण चेव.

दोण्हं खओवसमिए पण्णत्ते त जहा-
मणुसाणं चेव. पंचिदिय-तिरिक्खजोणियाणं चेव.

मणपज्जवणाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
उज्जुमई चेव विउलमई चेव

परोक्खे नाणे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-
आभिणिवोहियनाणे चेव सुयणाणे चेव

आभिणिबोहियणाणे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-
सुयनिस्सिए चेव. असुयनिस्सिए चेव.

सुयनिस्सिए दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
अत्थोग्गहे चेव वंजणोग्गहे चेव.
असुयनिस्सिए वि एवमेव

सुयणाणे दुविहे पण्णत्ते. त जहा-
अंगपविट्ठे चेव. अंगबाहिरे चेव

अंगबाहिरे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-
आवस्सए चेव आवस्सय-वइरित्ते चेव.

आवस्सव-यइरित्ते दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
कालिए चेव. उक्कालिए चेव. २२

७२ दुविहे धम्मे पण्णत्ते तं जहा-
सुयधम्मे चेव. चरित्तधम्मे चेव

सुयधम्मे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
सुत्त-सुयधम्मे चेव. अत्थ-सुयधम्मे चेव

चरित्तधम्मे दुविहे पण्णत्ते. त जहा-
अगार-चरित्तधम्मे चेव अणगार-चरित्तधम्मे चेव.

दुविहे संजमे पण्णत्ते तं जहा-
सरागसजमे चेव वीतरागसंजमे चेव.

सरागसजमे दुविहे पण्णत्ते. त जहा-
सुहुमसंपराय-सरागसंजमे चेव

बादरसंपराय-सरागसंजमे चेव.

सुहुमसंपराय-सरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
पढमसमय-सुहुमसपराय-सरागसजमे चेव.
अपढमसमय-सुहुम-संपराय-सरागसजमे चेव
अहवा—चरमसमय-सुहुमसपराय-सरागसंजमे चेव
अचरमसमय-सुहुमसंपराय-सरागसजमे चेव

अहवा—सुहुमसंपराय-सरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
सकिलेसमाणए चेव. विसुज्झमाणए चेव

बादरसपराय-सरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-
पढमसमय-बादर-संपराय-सरागसजमे चेव
अपढमसमय-बादर-संपराय-सरागसंजमे चेव
अहवा—चरमसमय-बादरसपराय-सरागसंजमे चेव
अचरमसमय-बादरसंपराय-सरागसंजमे चेव

अहवा—बादरसंपराय-सरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-
पड़िवाइ चेव अपड़िवाइ चेव

वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
उवसंतकसाय-वीयरागसंजमे चेव
खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव

उवसंतकसाय-वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-
पढमसमय-उवसंतकसाय-वीयरागसंजमे चेव
अपढमसमय-उवसंतकसाय-वीयरागसंजमे चेव
अहवा—चरमसमय-उवसंतकसाय-वीयरागसजमे चेव

अचरमसमय-उवसतकसाय-वीयरागसंजमे चेव

खीणकसाय-वीतरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-

छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव.

केवली-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव.

छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-

सयंबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव

बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव

सयबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते.
तं जहा-

पढमसमय-सयंबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

अपढमसमय-सयबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव.

अहवा–चरमसमय सयबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे
चेव

अचरमसमय-सयंबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयराग
सजमे चेव

बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते.
तं जहा-

पढमसमय-बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे
चेव

अपढमसमय-बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे
चेव

अहवा–चरमसमय-बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयराग-

संजमे चेव.

अचरमसमय-बुद्ध बोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव

केवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव

अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव

सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-

पढमसमय-सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव

अपढमसमय-सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

अहवा–चरमसमय-सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव

अचरमसमय-सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव.

अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

पढमसमय-अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

अपढमसमय-अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

अहवा–चरमसमय-अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव

अचरमसमय-अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव २!

७३ (१) दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता त जहा-

सुहुमा चेव वायरा चेव

एवं —जाव— दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता
तं जहा-
सुहुमा चेव. बायरा चेव. ५

(२) दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता. तं जहा-
पज्जत्तगा चेव अपज्जत्तगा चेव

एवं —जाव— दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता
तं जहा-
पज्जत्तगा चेव अपज्जत्तगा चेव. ५

(३) दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता तं जहा-
परिणया चेव. अपरिणया चेव

एवं —जाव — दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता.
तं जहा-
परिणया चेव अपरिणया चेव ५

(१) दुविहा दव्वा पण्णत्ता तं जहा-
परिणया चेव अपरिणया चेव.

(४) दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता. तं जहा-
गइसमावन्नगा चेव. अगइसमावन्नगा चेव.

एवं —जाव— दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता.
तं जहा-
गइसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगा चेव. ५

(२) दुविहा दव्वा पण्णत्ता. तं जहा-

गइसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगा चेव.

(५) दुविहा पुढविकाइया पंण्णत्ता. तं जहा-
अणतरोगाढा चेव परंपरोगाढा चेव
एवं —जाव— दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता.
तं जहा-
अणतरोगाढा चेव परंपरोगाढा चेव ५

(३) दुविहा दव्वा पण्णत्ता त जहा-
अणंतरोगाढा चेव परंपरोगाढा चेव २८

७४ दुविहे काले पण्णत्ते तं जहा-
ओसप्पिणी काले चेव. उस्सप्पिणी काले चेव

दुविहे आगासे पण्णत्ते तं जहा-
लोगागासे चेव अलोगागासे चेव २

७५ (१) नेरइयाण दो सरीरगा पण्णत्ता. तं जहा-
अब्भतरए चेव. बाहिरए चेव

अब्भतरए कम्मए बाहिरए वेउव्विए
एवं देवाण भाणियव्वं

पुढविकाइयाण दो सरीरगा पण्णत्ता. तं जहा-
अब्भतरए चेव बाहिरए चेव.
अब्भतरए कम्मए बाहिरए ओरालिए —जाव—
वणस्सइकाइयाणं

बेइंदियाणं दो सरीरगा पण्णत्ता. त जहा-

अब्भंतरए चेव. वाहिरए चेव.

अब्भंतरए कम्मए अट्ठि-मंस-सोणियबद्धे वाहिरए.

ओरालिए —जाव— चउरिंदियाणं.

पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दो सरीरगा पण्णत्ता.

तं जहा-

अब्भंतरए चेव बाहिरए चेव.

अब्भंतरए कम्मए. अट्ठि-मंस-सोणिय-ण्हारु-छिराबद्धे बाहिरए ओरालिए.

मणुस्साण वि एवं चेव २४

(२) विग्गहगइसमावन्नगाणं नेरइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता.
तं जहा-
तेयए चेव. कम्मए चेव.
निरंतरं — जाव — वेमाणियाणं. २४

(३) नेरइयाण दोहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती सिया. तं जहा-
रागेण चेव. दोसेण चेव —जाव—वेमाणियाणं. २४

(४) नेरइयाणं दुट्ठाणनिव्वत्तिए सरीरगे पण्णत्ते. तं जहा-
रागनिव्वत्तिए चेव दोसनिव्वत्तिए चेव. —जाव— वेमाणियाणं २४

दो काया पण्णत्ता तं जहा-

तसकाए चेव. थावरकाए चेव

तसकाए दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

भवसिद्धिए चेव. अभवसिद्धिए चेव.

एवं थावरकाए वि. ६६

७६ दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पव्वावित्तए. तं जहा-

पाईणं चेव. उदीणं चेव

एवं मुंडावित्तए सिक्खावित्तए. उवट्ठावित्तए संभुजित्तए. संवसित्तए. सज्झायं उद्दिसित्तए. सज्झायं समुद्दिसित्तए. सज्झायं अणुजाणित्तए. आलोइत्तए पडिक्कमित्तए. निंदित्तए. गरहित्तए विउट्टित्तए विसोहित्तए. अकरणयाए अब्भुट्ठित्तए. अहारिहं पायिच्छत्तं तवोकम्मं पडिवज्जित्तए.

दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पइ निग्गथाण वा, निग्गंथीण वा अपच्छिम-मारणंतिय-सलेहणा-झूसणा-झूसियाणं भत्त-पाण-पडियाइक्खित्ताणं पाओवगयाण काल अणवकंखमाणं विहरित्तए. तं जहा-

पाईणं चेव. उदीणं चेव- १८-

दुट्ठाणस्स बीओ उद्देसो

७७ जे देवा उड्ढोववन्नगा कप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चारोववन्नगा चारट्ठितीया गइरइया गइसमावन्नगा तेसिं णं देवाणं सया समियं जे पावं कम्मे कज्जइ तत्थेगया वि एगइया वेयणं वेदेंति अण्णत्थगया वि एगइया वेयणं वेदेंति।

नेरइयाणं सया समियं जे पावे कम्मे कज्जइ

तत्थगया वि एगइया वेयणं वेदेंति.
अन्नत्थगया वि एगइया वेयणं वेदेंति —जाव—
पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं
मणुस्सा णं सया समियं जे पावे कम्मे कज्जइ.
इहगया वि एगइया वेयणं वेदेंति.
अण्णत्थगया वि एगइया वेयणं वेदेंति.
मणुस्सवज्जा सेसा एक्कगमा. २३

७८ नेरइया दु गतिया दु आगतिया पण्णत्ता तं जहा-
(१) नेरइए नेरइएसु उववज्जमाणे मणुस्सेहिंतो वा.
पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वा उववज्जेज्जा.
से चेव णं से नेरइए नेरइयत्तं विप्पजहमाणे
मणुस्सत्ताए वा पचेंदियतिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेज्जा.
एवं असुरकुमारा वि. णवरं-से चेव णं से असुरकुमारे
असुरकुमारत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा.
तिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेज्जा. एवं सव्व देवा.

पुढविकाइया दु गतिया. दु आगतिया पण्णत्ता. तं जहा-
पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइए-
हिंतो वा. नो पुढविकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा.
से चेव ण से पुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे
पुढविकाइयत्ताए वा नो पुढविकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा
एवं—जाव—मणुस्सा २४

७९ (१) दुविहा नेरइया पण्णत्ता तं जहा-
भवसिद्धिया चेव. अभवसिद्धिया चेव
—जाव वेमाणिया २४

(२) दुविहा नेरइया पण्णत्ता तं जहा-
अणंतरोववण्णा चेव परंपरोववण्णगा चेव. —जाव—
वेमाणिया. २४

(३) दुविहा नेरइया पण्णत्ता तं जहा-
गइसमावण्णगा चेव अगइसमावण्णगा चेव —जाव—
वेमाणिया २४

(४) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
पढमसमयोववण्णगा चेव. अपढमसमयोववण्णगा चेव.
—जाव— वेमाणिया २४

(५) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
आहारगा चेव. अणाहारगा चेव. —जाव—
वेमाणिया. २४

(६) दुविहा नेरइया पण्णत्ता तं जहा-
उस्सासगा चेव. नो उस्सासगा चेव —जाव—
वेमाणिया. २४

(७) दुविहा नेरइया पण्णता तं जहा-
सइंदिया चेव अणिंदिया चेव. —जाव—
वेमाणिया २४

(८) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
पज्जत्तगा चेव अपज्जत्तगा चेव. —जाव—
वेमाणिया २४

(९) दुविहा नेरइया पण्णत्ता तं जहा-
सन्नि चेव. असन्नि चेव.
एवं पंचेंदिया सव्वे.
विगलिंदियवज्जा —जाव— वेमाणिया. १६

(१०) दुविहा नेरइया पण्णत्ता तं जहा-
भासगा चेव. अभासगा चेव. एवमेगेंदियवज्जा
सव्वे. १९

(११) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
सम्मदिट्ठिया चेव. मिच्छदिट्ठिया चेव एवमेगेंदियवज्जा
सव्वे. १९

(१२) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
परित्तसंसारिया चेव. अणंतसंसारिया चेव. —जाव—
वेमाणिया २४

(१३) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
संखेज्जकालसमयठिइया चेव. असंखेज्जकालसमयठि-
इया चेव एवं पचेंदिया. एगिंदिय-विगलिंदियवज्जा
—जाव— वाणवंतरा. १४

(१४) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-

सुलभबोहिया चेव. दुलभबोहिया चेव —जाव— वेमाणिया. २४

(१५) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
कण्हपक्खिया चेव. सुक्कपक्खिया चेव —जाव— वेमाणिया. २४

(१६) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
चरिमा चेव: अचरिमा चेव —जाव— वेमाणिया. २४ (३५६)

८० दोहिं ठाणेहिं आया अहोलोगं जाणइ. पासइ. तं जहा-
समोहएणं चेव अप्पाणेणं आया अहोलोगं जाणइ. पासइ असमोहएणं चेव-अप्पाणेण आया अहोलोगं जाणइ पासइ आहोही-समोहयासमोहएणं चेव अप्पाणेणं आया अहोलोगं जाणइ. पासइ.

एवं तिरियलोगं. उड्ढलोगं केवलकप्पलोगं.

दोहिं ठाणेहिं आया अहोलोगं जाणइ. पासइ. तं जहा-
विउव्विएण चेव अप्पाणेण आया अहोलोगं जाणइ. पासइ.
अविउव्विएण चेव अप्पाणेण आया अहोलोगं जाणइ. पासइ.
आहोही-विउव्वियाविउव्विएण चेव अप्पाणेण आया अहोलोगं जाणइ. पासइ.

एवं तिरियलोगं. उड्ढलोगं केवलकप्पलोगं

दोहिं ठाणेहि आया सद्दाइं सुणेइ. तं जहा-
देसेण वि सद्दाइं सुणेइ सव्वेण वि सद्दाइं सुणेइ

एवं रूवाइं पासइ गंधाइं अग्घाइ. रसाइं आसादेइ. फासाइं पड़िसवेदेइ

दोहिं ठाणेहिं आया ओभासइ. तं जहा-
देसेण वि आया ओभासइ. सव्वेण वि आया ओभासइ.-
एवं पभासइ. विकुव्वइ. परियारेइ. भासं भासइ. आहारेइ. परिणामेइ. वेदेइ. निज्जरेइ

दोहिं ठाणेहिं देवे सद्दाइं सुणेइ. तं जहा-
देसेण वि देवे सद्दाइं सुणेइ.
सव्वेण वि देवे सद्दाइं सुणेइ.
एवं रूवाइं पासइ गंधाइं अग्घाइं रसाइं आसादेइ. फासाइं पड़िसंवेदेइ ओभासइ. पभासइ. विकुव्वइ परियारेइ. भासं भासेइ. आहारेइ परिणामेइ. वेदेइ. निज्जरेइ.

मरुया देवा दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
एग सरीरी चेव वि सरीरी चेव
एव किन्नरा. किंपुरिसा. गंधव्वा. नागकुमारा सुवन्नकुमारा. अग्गिकुमारा वाउकुमारा.

देवा दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
एगसरीरी चेव बिसरीरी चेव. ४५

दुट्ठाणस्स तइओ उद्देसो

८१ दुविहे सद्दे पण्णत्ते तं जहा-

भासासद्दे चेव. नो भासासद्दे चेव

भासासद्दे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
अक्खरसबद्धे चेव. नो अक्खरसबद्धे चेव

नो भासासद्दे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
आउज्जसद्दे चेव नो आउज्जसद्दे चेव.

आउज्जसद्दे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
तते चेव वितते चेव

तते दुविहे पण्णत्ते तं जहा-
घणे चेव झुसिरे चेव.
एवं वितते वि

नो आउज्जसद्दे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
भूसणसद्दे चेव नो भूसणसद्दे चेव

नो भूसणसद्दे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
तालसद्दे चेव लत्तिआसद्दे चेव

दोहिं ठाणेहि सद्दुप्पाए सिया तं जहा-
साहन्नताण चेव पुग्गलाण सद्दुप्पाए सिया
भिज्जताणं चेव पोग्गलाणं सद्दुप्पाए सिया ६

८२ दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहण्णंति. तं जहा-
सइं वा पोग्गला साहण्णति
परेण वा पोग्गला साहण्णति

दोहिं ठाणेहिं पोग्गला भिज्जंति. त जहा-

सइं वा पोग्गला भिज्जति.
परेण वा पोग्गला भिज्जति
दोहिं ठाणेहिं पोग्गला परिसड़ंति. तं जहा-
सइं वा पोग्गला परिसड़ंति.
परेण वा पोग्गला परिसड़ति.
एवं परिवड़ति
विद्धंसति.
दुविहा पोग्गला पण्णत्ता. तं जहा-
भिन्ना चेव अभिन्ना चेव.
दुविहा पोग्गला पण्णत्ता. तं जहा-
भिउरधम्मा चेव. नो भिउरधम्मा चेव.
दुविहा पोग्गला पण्णत्ता. तं जहा-
परमाणु-पोग्गला चेव. नो परमाणु-पोग्गला चेव.
दुविहा पोग्गला पण्णत्ता तं जहा-
सुहुमा चेव. बायरा चेव.
दुविहा पोग्गला पण्णत्ता. तं जहा-
बद्धपासपुट्ठा चेव नो बद्धपासपुट्ठा चेव.
दुविहा पोग्गला पण्णत्ता तं जहा-
परियाइयच्चेव अपरियाइयच्चेव.
दुविहा पोग्गला पण्णत्ता तं जहा-
अत्ता चेव. अणत्ता चेव

दुविहा पोग्गला पण्णत्ता. तं जहा-
इट्ठा चेव. अणिट्ठा चेव.
एवं कंता पिया मणुन्ना. मणामा १७

८३ दुविहा सद्दा पण्णत्ता. तं जहा-
अत्ता चेव अणत्ता चेव
एवमिट्ठा —जाव— मणामा

दुविहा रूवा पण्णत्ता त जहा-
अत्ता चेव अणत्ता चेव
एवमिट्ठा —जाव— मणामा
एवं गंधा रसा. फासा.
एवमिक्केक्के छ छ आलावगा भाणियव्वा. ३०

८४ दुविहे आयारे पण्णत्ते. त जहा-
नाणायारे चेव नो नाणायारे चेव

नो नाणायारे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
दंसणायारे चेव नो दसणायारे चेव

नो दसणायारे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
चरित्तायारे चेव नो चरित्तायारे चेव

नो चरित्तायारे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
तवायारे चेव वीरियायारे चेव

दो पड़िमाओ पण्णत्ताओ त जहा-
समाहि-पड़िमा चेव. उवहाण-पडिमा चेव.

दो पड़िमाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
विवेग-पड़िमा चेव विउस्सग्ग-पड़िमा चेव.

दो पड़िमाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
भद्दा चेव. सुभद्दा चेव.

दो पड़िमाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
महाभद्दा चेव. सव्वओ भद्दा चेव

दो पड़िमाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
खुड्डिया चेव मोय-पड़िमा महल्लिया चेव मोय-पड़िमा.

दो पड़िमाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
जवमज्झा चेव चद-पड़िमा. वइरमज्झा चेव चंद-पड़िमा.

दुविहे सामाइए पण्णत्ते तं जहा-
अगार-सामाइए चेव. अणगार-सामाइए चेव ११

८५ दोण्ह उववाए पण्णत्ते. तं जहा-
देवाण चेव नेरइयाण चेव.

दोण्ह उव्वट्टणा पण्णत्ता तं जहा-
नेरइयाण चेव. भवणवासीण चेव

दोण्हं चयणे पण्णत्ते तं जहा-
जोइसियाण चेव वेमाणियाण चेव.

दोण्हं गब्भवक्कंती पण्णत्ता तं जहा-
मणुस्साण चेव पंचिदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव.

दोण्ह गब्भत्थाणं आहारे पण्णत्ते. त जहा-

मणुस्साण चेव पंचिदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव

दोण्हं गब्भत्थाणं वुड्ढी पण्णत्ता तं जहा-
मणुस्साण चेव. पंचिदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव.
एव निव्वुड्ढी विगुव्वणा गइपरियाए
समुग्घाए कालसजोगे आयाती मरणे

दोण्हं छविपव्वा पण्णत्ता तं जहा-
मणुस्साण चेव. पंचिदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव

दो सुक्क-सोणियसभवा पण्णत्ता त जहा-
मणुस्सा चेव पंचिदिय-तिरिक्खजोणिया चेव

दुविहा ठिई पण्णत्ता त जहा-
कायट्ठिई चेव भवट्ठिई चेव.

दोण्हं कायट्ठिई पण्णत्ता तं जहा-
मणुस्साण चेव पंचिदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव

दोण्ह भवट्ठिई पण्णत्ता. तं जहा-
देवाण चेव नेरइयाण चेव.

दुविहे आउए पण्णत्ते तं जहा-
अद्धाउए चेव भवाउए चेव.

दोण्हं अद्धाउए पण्णत्ते. तं जहा-
मणुस्साण चेव पंचिदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव.

दोण्हं भवाउए पण्णत्ते. त जहा-
देवाण चेव नेरइयाण चेव.

दुविहे कम्मे पण्णत्ते. तं जहा-
पएसकम्मे चेव अणुभावकम्मे चेव

दो अहाउयं पालेंति तं जहा-
देवच्चेव नेरइयच्चेव

दोण्ह आउयसवट्टए पण्णत्ते तं जहा-
मणुस्साण चेव पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिखयाण चेव. २४

८६ जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं दो वासा.
बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता. अण्णमण्णं नाइवट्टंति आयाम-
विक्खभ-सठाण-परिणाहेण तं जहा-
भरहे चेव. एरवए चेव
एवमेएणमहिलावेण हिमवए चेव हेरण्णवए चेव
हरिवासे चेव रम्मयवासे चेव

जबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स पुरच्छिम-पच्चच्छिमेणं दो खेत्ता
बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता. अण्णमण्णं नाइवट्टंति आयाम-
विक्खभ-सठाण-परिणाहेणं. तं जहा-
पुव्व-विदेहे चेव अवर-विदेहे चेव

जबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर दाहिणेणं दो कुराओ बहुसम-
तुल्लाओ अविसेसमणाणत्ताओ अण्णमण्णं नाइवट्टंति आयाम-
विक्खभ-सठाण-परिणाहेण त जहा-
देवकुरा चेव उत्तरकुरा चेव

तत्थ णं दो महइमहालया महद्दुमा बहुसमतुल्ला. अविसेसम-
णाणत्ता अण्णमण्ण नाइवट्टंति आयाम-विक्खभुच्चत्तोव्वेह-

संठाण-परिणाहेण तं जहा-

कूडसामली चेव सुदसणा चेव.

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया महज्जुइया महाणुभागा महायसा. महाबला महासोक्खा पलिओवमट्ठिइया परिवसंति तं जहा- गरुले चेव वेणुदेवे अणाढिए चेव जंबुद्दीवाहिवई. ७

८७ जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं दो वासहरपव्वया बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं तं जहा-

चुल्लहिमवंते चेव. सिहरि चेव

एवं महाहिमवंते चेव रुप्पि चेव एवं निसढे चेव नीलवंते चेव. जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं हेमवतेरण्णवएसु वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वया बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं तं जहा-

सद्दावाई चेव वियडावाई चेव

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया चेव —जाव — पलिओवमट्ठिइया परिवसंति तं जहा-

साई चेव पभासे चेव

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं हरिवास-रम्मएसु वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वया बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं तं जहा-

गंधावाई चेव मालवंतपरियाए चेव.

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया चेव. —जाव— पलिओवमट्ठिइया परिवसंति तं जहा-

अरुणे चेव. पउमे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स दाहिणेणं देवकुराए पुव्वावरे पासे एत्थ णं आसक्खधगसरिसा अद्धचंद-संठाणसंठिया दो वक्खार-पव्वया वहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं तं जहा-
सोमणसे चेव. विज्जुप्पभे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तरेणं उत्तरकुराए पुव्वावरे पासे एत्थ णं आसक्खंधगसरिसा अद्धचंद-सठाणसठिया दो वक्खार-पव्वया वहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-
गंधमायणे चेव. मालवते चेव

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं दो दीहवेयड्ढ-पव्वया वहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-
भारहे चेव दीहवेयड्ढे एरावए चेव दीहवेयड्ढे.

भारहए ण दीहवेयड्ढे दो गुहाओ वहुसमतुल्लाओ अविसेस-मणाणत्ताओ अण्णमण्ण नाइवट्टंति आयाम-विक्खभुच्चत्त-सठाण-परिणाहेणं त जहा-
तिमिसगुहा चेव खडप्पवायगुहा चेव

तत्थ ण दो देवा महिड्ढिया —जाव— पलिओवमट्ठिइया परिवसंति. तं जहा-
कएमालए चेव नट्टमालए चेव
एरावयए णं दीहवेयड्ढे दो गुहाओ वहुसमतुल्लाओ -- जाव—
कएमालए चेव नट्टमालए चेव.

जंवुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंते वासहर-
पव्वए दो कूड़ा वहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं
नाइवट्टंति. आयाम-विक्खभुच्चत्त-सठाण-परिणाहेण त जहा-
चुल्लहिमवतेकूडे चेव वेसमणकूडे चेव

जबुद्दोवे दीवे मदरपव्वयस्स दाहिणेण महाहिमवंते वासहर-
पव्वए दो कूड़ा वहुममतुल्ला अविसेसकणाणत्ता अण्णमण्ण
नाइवहंति आयाम-विक्खभुच्चत्तसठाणपरिणाहेण त जहा-
महाहिमवतकूड़े चेव वेरुलियकूडे चेय.

एव निसढे वासहरपव्वए दो कूडा वहुसमतुल्ला —जाव--
परिणाहेणं त जहा-
निसढकूडे चेव रुयगप्पभे चेव

जंबुद्दोवे दीवे मदरपव्वयस्स उत्तरेण नीलवते वासहरपव्वए दो
कूडा वहुसमतुल्ला -- जाव— परिणाहेण त जहा-
नीलवंतेकूड़े चेव उवदसणकूडे चेव.

एव रुप्पिम्मि वासहरपव्वए दो कूड़ा वहुसमतुल्ला —जाव—
परिणाहेणं त जहा-
रुप्पिकूडे चेव मणिकचणकूडे चेव

एव सिहरिम्मि वासहरपव्वए दो कूडा वहुसमतुल्ला —जाव—
परिणाहेण त जहा-
सिहरिकूडे चेव तिगिच्छकूडे चेव १९

८८ जबुद्दोवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेण चुल्लहिमवत-

सिहरीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा वहुसमतुल्ला अविसेसम-णाणत्ता अण्णमण्णं नाइवट्टंति आयाम-विक्खंभ-उव्वेह-संठाण-परिणाहेणं तं जहा-
पउमद्दहे चेव पुंडरीयद्दहे चेव

तत्थ णं दो देवयाओ महड्ढियाओ महज्जुइयाओ महाणुभागाओ महायसाओ महावलाओ महासोक्खाओ पलिओवम-ट्ठिइयाओ परिवसति त जहा-
सिरि चेव. लच्छी चेव

एवं महाहिमवंत-रुप्पीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा वहुसम-तुल्ला —जाव -- परिणाहेणं तं जहा-
महापउमद्दहे चेव महापोडरीयद्दहे चेव.

तत्थ णं दो देवयाओ महड्ढियाओ —जाव— पलिओवम-ट्ठिइयाओ परिवसंति त जहा-
हिरि चेव बुद्धि चेव

एव नीसढ-नीलवतेसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा वहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं तं जहा-
तिगिछद्दहे चेव. केसरिद्दहे चेव.

तत्थ णं दो देवयाओ महड्ढियाओ —जाव— पलिओवम-ट्ठिइयाओ परिवसंति. तं जहा-
धिती चेव किति चेव.

जंवुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स दाहिणेणं महाहिमवंताओ

वासहरपव्वयाओ महापउमद्दहाओ दो महाणईओ पवहंति.
तं जहा-
रोहियच्चेव हरिकतच्चेव.

एवं निसढाओ वासहरपव्वयाओ तिगिंछद्दहाओ दो महाणईओ
पवहंति तं जहा-
हरिच्चेव सीओअच्चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तरेणं नीलवंताओ वासहरपव्व-
याओ केसरिद्दहाओ दो महाणईओ पवहति तं जहा-
सीता चेव नारिकंता चेव

एवं रुप्पीओ वासहरपव्वयाओ महापोडरीयद्दहाओ दो
महाणईओ पवहति त जहा-
णरकता चेव. रुप्पकूला चेव

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स दाहिणेण भरहे वासे दो पवायद्दहा
बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं त जहा-
गंगप्पवायद्दहे चेव सिंधुप्पवायद्दहे चेव

एवं हिमवए वासे दो पवायद्दहा बहुसमतुल्ला —जाव—
परिणाहेणं त जहा-
रोहियप्पवायद्दहे चेव रोहियसप्पवायद्दहे चेव.

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स दाहिणेणं हरिवासे दो पवायद्दहा
बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं तं जहा-
हरिप्पवायद्दहे चेव हरिकंतप्पवायद्दहे चेव

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेण महाविदेहवासे दो पवायद्दहा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण. तं जहा-
सीअप्पवायद्दहे चेव सीओअप्पवायद्दहे चेव

जबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तरेणं रम्मए वासे दो पवायद्दहा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-
नरकतप्पवायद्दहे चेव. नारीकतप्पवायद्दहे चेव

एवं हेरण्णवए वासे दो पवायद्दहा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं त जहा-
सुवन्नकूलप्पवायद्दहे चेव रुप्पकूलप्पवायद्दहे चेव.

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स उत्तरेण एरवए वासे दो पवायद्दहा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण. तं जहा-
रत्तप्पवायद्दहे चेव रत्तावईप्पवायद्दहे चेव.

जबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स दाहिणेणं भरहे वासे दो महाणईओ बहुसमतुल्लाओ अविसेसमणाणत्ताओ अण्णमण्णं नाइवट्ट ति आयाम-विक्खभ-उव्वेह-संठाण-परिणाहेणं पवहंति तं जहा-
गगा चेव. सिधू चेव.
एव जहा पवायद्दहा एवं णईओ भाणियव्वाओ —जाव— एरवए वासे दो महाणईओ बहुसमतुल्लाओ —जाव— रत्ता चेव रत्तवई चेव ३१

८९ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीआए उस्सप्पिणीए सुसम दुसमाए समाए दो सागरोयमकोडाकोडीओ कालो होत्था.

एवमिमीसे ओसप्पिणीए — जाव— काले पण्णत्ते.

एवं आगमिस्साए उस्सप्पिणीए — जाव— कालो भविस्सइ.

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीआए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दो गाउयाइं उड्ढ उच्चत्तेण होत्था.

जबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीआए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दोन्नि य पलिओवमाइं परमाउं पालइत्था

एवमिमीसे ओसप्पिणीए —जाव— पालइत्था

एवमागमिस्साए उस्सप्पिणीए जाव — पालिस्सति

जबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमए एगजुगे दो अरिहंतवंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा एव चक्कवट्टिवसा एवं दसारवसा

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमए एगजुगे दो दो अरहता उप्पज्जिसु वा. उप्पज्जति वा. उप्पज्जिस्सति वा.

एव चक्कवट्टिणो एवं बलदेवा एवं वासुदेवा.

जंबुद्दीवे दीवे दोसु कुरासु मणुया सया सुसमसुसमुत्तमिड्ढि पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरति. त जहा-

देवकुराए चेव. उत्तरकुराए चेव.

जबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसमुत्तमिड्ढि पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरति तं जहा-

हरिवासे चेव. रम्मगवासे चेव

जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसमदुसमुत्तमिड्ढिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति. तं जहा-

हेमवए चेव. एरण्णवए चेव.

जंबुद्दीवे दीवे दोसु खित्तेसु मणुया सया दुसमसुसमुत्तमिड्ढिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति तं जहा-

पुव्वविदेहे चेव अवरविदेहे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया छव्विहंपि कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति. तं जहा-

भरहे चेव एरवए चेव. १९

९० जंबुद्दीवे दीवे दो चंदा पभासिसु वा. पभासंति वा. पभासिस्संति वा

दो सूरिया तविंसु वा तवंति वा. तविस्संति वा

एवं दो कत्तियाओ, दो रोहिणीओ, दो मगसिराओ, दो अद्दाओ

गाहाओ—

कत्तिय रोहिणि मगसिर अद्दा य पुणव्वसु अ पूसो य ।
तत्तो ऽ वि अस्सलेस्सा. महा य दो फग्गुणीओ य ॥१॥
हत्थो चित्ता साई विसाहा तह य होइ अणुराहा ।
जेट्ठा मूलो पुव्वा य. आसाढा उत्तरा चेव ॥२॥
अभिई सवण धणिट्ठा सयभिसया दो य होंति भद्दवया ।
रेवइ अस्सिणि भरिणी णेयव्वा आणुपुव्वीए ॥३॥

एवं गाहाणुसारेण णेयव्वं —जाव— दो भरणीओ

दो अग्गी. दो पयावई. दो सोमा. दो रुद्दा.
दो अइई दो वहस्सई दो सप्पी दो पीई.
दो भगा. दो अज्जमा. दो सविया दो तट्ठा.
दो वाउ दो इदग्गी दो मित्ता. दो इदा.
दो निरइ दो आउ. दो विस्सा दो वम्हा
दो विण्हु. दो वसु दो वरुणा दो अया
दो विविद्धी. दो पुस्सा दो अस्सा दो यमा
दो इंगालगा. दो वियालगा दो लोहियक्खा दो सणिच्छरा.
दो आहुणिया. दो पाहुणिया. दो कणा दो कणगा दो कणकणगा.
दो कणगवियाणगा दो कणगसताणगा दो सोमा दो सहिया.
दो आसासणा दो कज्जोवगा दो कव्वडगा दो अयकरगा.
दो दुंदुभगा दो संखा दो संखवण्णा दो संखवण्णाभा दो कसा.
दो कसवण्णा. दो कसवण्णाभा. दो रुप्पी. दो रुप्पाभासा
दो नीला दो नीलोभासा दो भासा. दो भासरासी.
दो तिला. दो तिलपुप्फवण्णा दो दगा. दो दगपचवण्णा
दो काका दो कक्कधा. दो इदग्गी वा दो धूमकेऊ दो हरी
दो पिगला दो बुहा दो सुक्का दो वहस्सई दो राहू
दो अगत्थी दो माणवगा दो कासा दो फासा दो धुरा
दो पमुहा दो वियड़ा. दो विसधी दो नियल्ला दो पइल्ला.
दो जड़ियाइलगा दो अरुणा दो अग्गिल्ला दो काला
दो महा कालगा. दो सोत्थिया. दो सोवत्थिया
दो वद्धमाणगा दो पलंबा दो निच्चालोगा दो निच्चुज्जोया
दो सयंपभा. दो ओभासा. दो सेयंकरा. दो खेमंकरा.

दो आभंकरा. दो पभंकरा दो अपराजिया दो अरया.
दो असोगा दो विगयसोगा दो विमला दो वितत्ता.
दो वितत्था दो विसाला दो साला दो सुव्वया.
दो अणियट्टी. दो एगजटी. दो दुजडी. दो करकरिगा.
दो रायग्गला. दो पुप्फकेऊ दो भावकेऊ. १४६

९१ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

लवणे णं समुद्दे दो जोयण-सयसहस्साइं चक्कवाल-विक्खंभेणं पण्णत्ते.

लवणस्स णं समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ३

९२ धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं दो वासा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं तं जहा-

भरहे चेव. एरवए चेव.

एवं जहा जंबुद्दीवे तहा एत्थ वि भाणियव्वं —जाव— दोसु वासेसु मणुया छव्विहं पि कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति तं जहा-

भरहे चेव एरवए चेव.

नवरं कूडसामली चेव धायइरुक्खे चेव

देवा गरुले वेणुदेवे चेव. सुदंसणे चेव

धायइखंडे दीवे पच्छत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-

दाहिणेण दो वासा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण तं जहा-

भरहे चेव. एरवए चेव.

एवं जहा जंबुद्दीवे तहा एत्थ वि भाणियव्व —जाव— दोसु वासेसु मणुया छव्विहं पि कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति तं जहा-

भरहे चेव एरवए चेव.

नवरं कूडसामली चेव महा धायइरुक्खे चेव

देवा गरुले वेणुदेवे चेव पियदसणे चेव

धायइसडे ण दीवे दो भरहाइं.

,, दो एरवयाइ.

,, दो हेमवयाइ

,, दो हेरण्णवयाइं

,, दो हरिवासाइं

,, दो रम्मगवासाइं

,, दो पुव्वविदेहाइ

,, दो अवरविदेहाइ

,, दो देवकुराओ.

,, दो देवकुरु-महद्दुमा

,, दो देवकुरु-महद्दुमवासी देवा.

,, दो उत्तरकुराओ

,, दो उत्तरकुरु-महद्दुमा

धायइसडे णं दीवे दो उत्तरकुरु-महद्दुमवासी देवा

" दो चुल्लहिमवता

" दो महा हिमवता.

" दो निसहा

" दो नीलवंता.

" दो रुप्पी

" दो सिहरी.

" दो सद्दावाई

" दो सद्दावायवासी साती देवा.

" दो वियडावाई

" दो वियडावाईवासी पभासा देवा.

" दो गधावाई

" दो गधावाईवासी अरुणा देवा

" दो मालवतपरियागा.

" दो मालवतपरियागावासी पउमा देवा

" दो मालवता.

" दो चित्तकूडा

" दो पम्हकूडा

" दो नलिणकूडा

" दो एगसेला

" दो तिकूडा.

" दो वेसमणकूडा.

" दो अंजणा

धायइसंडे णं दीवे दो मातजणा
,, दो सोमणसा
,, दो विज्जुप्पभा.
,, दो अंकावई
,, दो पम्हावई
,, दो आसीविसा.
,, दो सुहावहा
,, दो चदपव्वया
,, दो सूरपव्वया
,, दो नागपव्वया.
,, दो देवपव्वया.
,, दो गंधमायणा.
,, दो उसुआरपव्वया
,, दो चुल्लहिमवत-कूडा
,, दो वेसमण-कूडा
,, दो महा हिमवत-कूडा
,, दो वेरुलिय-कूड़ा.
,, दो निसह-कूड़ा
,, दो रुयग-कूडा
,, दो नीलवत-कूडा.
,, दो उवदसण-कूडा
,, दो रुप्पि-कूडा.
,, दो मणिकचण-कूडा

घायइसंडे णं दीवे दो सिहरि-कूड़ा.
„ दो तिगिच्छि-कूड़ा.
„ दो पउमद्दहा
„ दो पउमद्दहवासिणीओ सिरीदेवीओ.
„ दो महा पउमद्दहा.
„ दो महा पउद्दहवासिणीओ हिरीदेवीओ.
„ दो पुंडरीयद्दहा.
„ दो पुंडरीयद्दहवासिणीओ लच्छीदेवीओ.
„ दो महा पुंडरीयद्दहा.
„ दो महा पुंडरीयद्दहवासिणीओ बुद्धिदेवीओ.
„ दो तिगिच्छद्दहा
„ दो तिगिच्छद्दहवासिणीओ घिइदेवीओ.
„ दो केसरिद्दहा.
„ दो केसरिद्दहवासिणीओ कित्तिदेवीओ
„ दो गंगापवातद्दहा —जाव— दो रत्तवइ-पवायद्दहा.
„ दो रोहियाओ —जाव— दो रुप्पकूलाओ.
„ दो गाहावईओ (णईओ)
„ दो दहवईओ.
„ दो पंकवईओ
„ दो तत्तजलाओ
„ दो मत्तजलाओ
„ दो उम्मत्तजलाओ

धायइसंडे णं दीवे दो खीरोयाओ
,, दो सीहसोयाओ.
,, दो अंतोवाहिणीओ.
,, दो उम्मिमालिणीओ.
,, दो फेणमालिणीओ.
,, दो गंभीरमालिणीओ.
,, दो कच्छा. (३२ विजयाओ)
,, दो सुकच्छा
,, दो महा कच्छा
,, दो कच्छगावई
,, दो आवत्ता.
,, दो मंगलावत्ता.
,, दो पुक्खला.
,, दो पुक्खलावई.
,, दो वच्छा
,, दो सुवच्छा.
,, दो महा वच्छा.
,, दो वच्छगावई.
,, दो रम्मा.
,, दो रम्मगा
,, दो रमणिज्जा.
,, दो मंगलावई
,, दो पम्हा.

घायइसंडे णं दीवे दो सुपन्हा.

,, दो महा पम्हा.

,, दो पम्हगावई.

,, दो सखा.

,, दो नलिना

,. दो कुमुया.

,, दो नलिलावई.

,, दो वप्पा.

, दो सुवप्पा.

,, दो महा वप्पा

,, दो वप्पगावई

,, दो वग्गू

,, दो सुवग्गू

,, दो गंधिला

,, दो गंधिलावई (३२ विजय)

,, दो खेमाओ. (रायहाणीओ)

,, दो खेमपुरीओ.

,, दो रिट्ठाओ

,, दो रिट्ठपुरीओ

,, दो खग्गीओ.

,, दो मंजुसाओ

,, दो ओसहीओ.

,, दो पोंडरगिणीओ

धायइसंडे णं दीवे दो सुसीमाओ.
,, दो कुंडलाओ
,, दो अपराजियाओ.
,, दो पभंकराओ.
,, दो अंकावईओ
,, दो पम्हावईओ
,, दो सुभाओ
,, दो रयणसचाओ.
,, दो आसपुराओ
,, दो सीहपुराओ
,, दो महा पुराओ
,, दो विजयपुराओ
,, दो अपराजिआओ.
,, दो अवराओ.
,, दो असोगाओ.
,, दो विगयसोगाओ.
,, दो विजयाओ
,, दो वेजयतीओ
,, दो जयतीओ
,, दो अपराजियाओ
,, दो चक्कपुराओ
,, दो खग्गपुराओ
,, दो अवज्झाओ

धायइसडे णं दीवे दो अउज्झाओ. (३२ रायहाणीओ)

,, दो भद्दसालवणाइं

,, दो नंदणवणाइ

,, दो सोमणसवणाइं

,, दो पडगवणाइ.

,, दो पडुकवलसिलाओ.

,, दो अइपंडुकंवलसिलाओ

,, दो रत्तकवलसिलाओ.

,, दो अइरत्तकंवलसिलाओ

,, दो मदरा (पव्वया)

,, दो मंदरचूलियाओ

धायइसंडस्स ण दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता. २०९

९३ कालोदस्स णं समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता.

पुक्खरवरदीवड्ढ-पुरच्छिमद्धे ण मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणेण दो वासा वहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं त जहा-

भरहे चेव. एरवए चेव.

तहेव —जाव— दो कुराओ पण्णत्ताओ तं जहा-

देवकुरा चेव. उत्तरकुरा चेव.

तत्थ णं दो महइमहालया महद्दुमा पण्णत्ता. तं जहा-

कूड़सामली चेव पउमरुक्खे चेव
देवा गरुले चेव वेणुदेवे पउमे चेव —जाव— छव्विहं पि
काल पच्चणुब्भवमाणा विहरंति
पुक्खरवरदीवड्ढ-पच्चत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-
दाहिणेणं दो वासा बहुसमतुल्ला तहेव.
णाणत्त-कूडसामली चेव. महा पउमरुक्खे चेव. देवा गरुले चेव
वेणुदेवे. पुंडरीए चेव
पुक्खरवरदीवड्ढे ण दीवे दो भरहाइ. दो एरवयाइ.
—जाव — दो मंदरा, दो मंदरचूलियाओ।
पुक्खरवरस्स ण दीवस्स वेइया दो गाउयाइ उड्ढं उच्चत्तेण
पण्णत्ता
सव्वेसि पि णं दीव-समुद्दाण वेइयाओ दो गाउयाइं उड्ढ
उच्चत्तेण पण्णत्ताओ २५७

९४ दो असुरकुमारिंदा पण्णत्ता तं जहा-
चमरे चेव बली चेव.

दो नागकुमारिंदा पण्णत्ता तं जहा-
धरणे चेव. भूयाणदे चेव

दो सुवण्णकुमारिंदा पण्णत्ता तं जहा-
वेणुदेवे चेव वेणुदाली चेव

दो विज्जुकुमारिंदा पण्णत्ता. त जहा-
हरिच्चेव हरिस्सहे चेव

दो अग्गिकुमारिंदा पण्णत्ता. त जहा-

अग्गिसीहे चेव. अग्गिमाणवे चेव.

दो दीवकुमारिंदा पण्णत्ता तं जहा-
पुण्णे चेव. विसिट्ठे चेव.

दो उदहिकुमारिंदा पण्णत्ता. त जहा-
जलकंते चेव. जलप्पभे चेव.

दो दिसाकुमारिंदा पण्णत्ता तं जहा-
अमियगई चेव. अमियवाहणे चेव.

दो वायुकुमारिंदा पण्णत्ता त जहा-
वेलंवे चेव. पभंजणे चेव

दो थणियकुमारिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
घोसे चेव. महा घोसे चेव.

दो पिसाइंदा पण्णत्ता त जहा-
काले चेव. महा काले चेव.

दो भूइंदा पण्णत्ता. तं जहा-
सुरूवे चेव. पडिरूवे चेव.

दो जक्खिंदा पण्णत्ता त जहा-
पुण्णभद्दे चेव माणिभद्दे चेव.

दो रक्खसिंदा पण्णत्ता. त जहा-
भीमे चेव. महा भीमे चेव

दो किन्नरिंदा पण्णत्ता तं जहा-
किन्नरे चेव. किंपुरिसे चेव.

दो किंपुरिसिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
सप्पुरिसे चेव महा पुरिसे चेव

दो महोरगिंदा पण्णत्ता तं जहा-
अइकाए चेव महा काए चेव

दो गधव्विंदा पण्णत्ता तं जहा-
गीयरइ चेव गीयजसे चेव

दो अणपन्निंदा पण्णत्ता त जहा-
सनिहिए चेव. सामण्णे चेव.

दो पणपण्णिंदा पण्णत्ता तं जहा-
धाए चेव. विहाए चेव.

दो इसिवाइंदा पण्णत्ता त जहा-
इसिच्चेव. इसिवालए चेव.

दो भूतवाइंदा पण्णत्ता. तं जहा-
इस्सरे चेव महिस्सरे चेव

दो कंदिंदा पण्णत्ता त जहा-
सुवच्छे चेव. विसाले चेव.

दो महा कंदिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
हस्से चेव. हस्सरई चेव.

दो कुहंडिंदा पण्णत्ता. त जहा-
सेए चेव. महा सेए चेव

दो पतइंदा पण्णत्ता. तं जहा-

पतए चेव. पतयवई चेव.

जोइसियाणं देवाणं दो इंदा पण्णत्ता. तं जहा-
चंदे चेव सूरे चेव.

सोहम्मीसाणेस णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता तं जहा-
सक्के चेव. ईसाणे चेव.

एवं सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता तं जहा-
सणंकुमारे चेव माहिंदे चेव

बंभलोग-लंतएसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता. तं जहा-
बंभे चेव. लंतए चेव.

महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता. तं जहा-
महासुक्के चेव. सहस्सारे चेव.

आणय-पाणयारण-च्चुएसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता. तं जहा-
पाणए चेव अच्चुए चेव.

महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा दुवण्णा पण्णत्ता.
त जहा-
हालिद्दा चेव. सुक्किला चेव.

गेविज्जगाणं देवाणं दो रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता. ३४

दुट्ठाणस्स चउत्थो उद्देसो

९५ समयाइ वा. आवलियाइ वा-
जीवाइ या. अजीवाइ या पव्वुच्चइ.

आणाप्पाणुइ वा थोवेइ वा.
जीवाइ या. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

खणाइ वा. लवाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

एवं मुहुत्ताइ वा अहोरत्ताइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

पक्खाइ वा मासाइ वा
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

उउइ वा अयणाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

सवच्छराइ वा जुगाइ वा.
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

वासयाइ वा वाससहस्साइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

वाससयसहस्साइ वा वासकोडीइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ वा.

पुव्वगाइ वा पुव्वाइ वा
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

तुडियगाइ वा. तुडियाइ वा.
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

अड़डंगाइ वा. अड़डाइ वा.

जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

अववंगाइ वा. अववाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

हूहूअगाइ वा हूहूयाइ वा.
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

उप्पलगाइ वा उप्पलाइ वा
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

पउमगाइ ना पउमाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

नलिणंगाइ वा नलिणाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

अच्छणिकुरंगाइ वा. अच्छणिकुराइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

अउअंगाइ वा अउआइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

नउअंगाइ वा. नउआइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

पउअगाइ वा पउआइ वा.
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

चूलिअगाइ वा चूलिआइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

सीसपहेलियंगाइ वा. सीसपहेलियाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

पलिओवमाइ वा. सागरोवमाइ वा.
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

उस्सप्पिणीइ वा. ओसप्पिणीइ वा
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

गामाइ वा नगराइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

निगमाइ वा. रायहाणीइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

खेडाइ वा कव्वड़ाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

मडंवाइ वा दोणमुहाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

पट्टणाइ वा. आगराइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

आसमाइ वा.- सबाहाइ वा.
जीवाइ वा अजीवाइ या पव्वुच्चइ.

सनिवेसाइ वा घोसाइ वा.
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

आरामाइ वा. उज्जाणाइ वा.

जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ
वणाइ वा वणसंडाइ वा
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ
वावीइ वा पुक्खरिणीइ वा
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.
सराइ वा. सरपंतीइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.
अगड़ाइ वा तलागाइ वा.
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.
दहाइ वा णईइ वा
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.
पुढवीइ वा उदहीइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.
वातखधाइ वा उवासतराइ वा.
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.
वलयाइ वा विग्गहाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.
दीवाइ वा समुद्दाइ वा.
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.
वेलाइ वा वेइयाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

दाराइ वा तोरणाइ वा
जीवाइ वा. अजीवाइ वा. पव्वुच्चइ.

नेरइयाइ वा नेरइयावासाइ वा. —जाव—
वेमाणियाइ वा, वेमाणियावासाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

कप्पाइ वा कप्पविमाणावासाइ वा
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

वासाइ वा वासधरपव्वयाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

कूड़ाइ वा कूड़ागाराइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

विजयाइ वा रायहाणीइ वा.
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

छायाइ वा. आतपाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

दोसिणाइ वा अंधगाराइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

ओमाणाइ वा उम्माणाइ वा.
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

अइयाणागिहाइ वा. उज्जाणगिहाणि वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

अवलिवाइ वा सणिप्पवायाइ वा.

जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ.

दो रासी पण्णत्ता. तं जहा-

जीवरासी चेव. अजीवरासी चेव ७८

९६ दुविहे बधे पण्णत्ते. तं जहा-

पेज्जवधे चेव दोसबधे चेव.

जीवाण दोहिं ठाणेहिं पावकम्मं वंधंति तं जहा-

रागेण चेव दोसेण चेव

जीवा ण दोहिं ठाणेहिं पावकम्मं उदीरेंति तं जहा-

अब्भोवगमियाए चेव वेयणाए. उवक्कमियाए चेव वेयणाए.

एव ण दोहिं पावकम्मं वेदेंति. तं जहा-

अब्भोवआमिगए चेव वेयणाए. उकक्कमियाए चेव वेयाणाए.

एव णं दोहिं ठाणेहिं पावकमं निज्जरेंति तं जहा-

अब्भोवगमियाए चेव वेयणाए. उवक्कमियाए चेव वेयणाए. ५

९७ दोहिं ठाणेहिं आया सरीर फुसित्ता ण णिज्जाति. त जहा-

देसेण वि आया सरीर फुसित्ता ण णिज्जाति.

सव्वेण वि आया सरीरं फुसित्ता ण णिज्जाति

एवं फुरित्ता ण० एव फुड़िता णं० एवं संवट्टित्ता णं०

एव निव्वट्टइत्ता णं०. ५

९८ दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपण्णत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए.

तं जहा- खएण चेव, उवसमेण चेव.

एवं —जाव— मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा. तं जहा-

खएण चेव. उवसमेण चेव

९९ दुविहे अद्धोवमिए तं जहा-
पलिओवमे चेव सागरोवमे चेव.

प्र० से किं तं पलिओवमे ?

उ० पलिओवमे —

गाहाओ —

ज जोयणविच्छिन्न. पल्ल एगाहियप्परूढाणं ।
होज्ज निरंतरणिचिय भरियं वालग्गकोड़ीण ॥१॥
वाससए वाससए एकेक्के अवहडमि जो कालो ।
सो कालो वोद्धव्वो उवमा एगस्स पल्लस ॥२॥
एएसि पल्लाणं कोड़ाकोडी हवेज्ज दसगुणिया ।
तं सागरोवमस्स उ एगस्स भवे परिमाण ॥३॥

१०० दुविहे कोहे पण्णत्ते. तं जहा-
आयपइट्ठे चेव. परपइट्ठे चेव
एव नेरइयाण —जाव वेमाणियाण
एव —जाव— मिच्छादंसणसल्ले, २

१०१ दुविहा ससारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता. तं जहा-
तसा चेव थावरा चेव

दुव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-
सिद्धा चेव असिद्धा चेव

दुव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-

एवं एसा गाहा फासेयव्वा — जाव — ससरीरी चेव.
असरीरी चेव १३
गाहा—सिद्ध-सइंदिय-काए. जोए वेए कसाय-लेसा य ।
णाणुवओगाहारे. भासग-चरीमे य ससरीरी ॥१॥

१०२ दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गंथाण-
नो निच्चं वण्णियाइ, नो निच्च कित्तियाइं, नो निच्चं बुइयाइं,
नो निच्चं पसत्थाइ, नो निच्चं अब्भणुण्णाइ भवंति तं जहा-
वलायमरणे चेव, वसट्टमरणे चेव -

एवं नियाणमरणे चेव, तब्भवमरणे चेव
एवं गिरिपडणे चेव, तरुपडणे चेव
एवं जलप्पवेसे चेव, जलणप्पवेसे चेव.
एवं विसभक्खणे चेव, सत्थोवडणे चेव.

दो मरणाइं —जाव— नो निच्च अब्भणुण्णायइं भवंति.
कारणेण पुण अप्पडिकुट्ठाइं त जहा-
वेहाणसे चेव, गिद्धपिट्ठे चेव -

दो मरणाइं समणेण भगवया महावीरेण समणाणं निग्गंथाण-
निच्चं वण्णियाइ, निच्चं कित्तियाइं, निच्चं पसत्थाइ,
निच्च अब्भणुण्णयाइं भवंति त जहा-
पाओवगमणे चेव, भत्तपच्चक्खाणे चेव

पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-
नीहारिमे चेव, अनीहारिमे चेव. नियमं अपडिकम्मे.

भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
नीहारिमे चेव, अनीहारिमे चेव. णियमं सपड़िकम्मे. ९

१०३ प्र० के अयं लोगे ?
उ० जीवच्चेव, अजीवच्चेव

प्र० के अणंता लोए ?
उ० जीवच्चेव, अजीवच्चेव.

प्र० के सासया लोगे ?
उ० जीवच्चेव, अजीवच्चेव. ३

१०४ दुविहा बोही पण्णत्ता. तं जहा-
णाणबोही चेव, दसणबोही चेव.
दुविहा बुद्धा पण्णत्ता तं जहा-
णाणबुद्धा चेव, दसणबुद्धा चेव.
एवं मोहे, मूढा. ४

१०५ नाणावरणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
देसणाणावरणिज्जे चेव, सव्वणाणावरणिज्जे चेव.
दरिसणावणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
देस-दंसणावरणिज्जे चेव, सव्व-दंसणावरणिज्जे चेव
वेयणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
सायावेयणिज्जे चेव, असायावेयणिज्जे चेव
मोहणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

दंसणमोहणिज्जे चेव, चरित्तमोहणिज्जे चेव.

आउए कम्मे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा.
अद्धाउए चेव, भवाउए चेव.

नामे कम्मे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
सुभणामे चेव, असुभणामे चेव.

गोत्ते कम्मे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
उच्चागोए चेव, णीयागोए चेव

अंतराइए कम्मे दुविहे कम्मे पण्णत्ते. तं जहा-
पडुप्पण्णविणासिए चेव, पिहियागामिपहं चेव. ८

१०६ दुविहा मुच्छा पण्णत्ता. तं जहा-
पेज्जवत्तिया चेव, दोसवत्तिया चेव

पेज्जवत्तिया मुच्छा दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
माए चेव, लोभे चेव.

दोसवत्तिया मुच्छा दुविहा पण्णत्ता तं जहा-
कोहे चेव, माणे चेव ३

१०७ दुविहा आराहणा पण्णत्ता तं जहा-
धम्मियाराहणा चेव, केवलि-आराहणा चेव.

धम्मियाराहणा दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
सुयधम्माराहणा चेव, चरित्तधम्माराहणा चेव.

केवलि-आराहणा दुविहा पण्णात्ता तं जहा-
अंतकिरिया चेव, कप्पविमाणोववत्तिया चेव. ३

१०८ दो तित्थगरा नीलुप्पलसमा वण्णेणं पण्णत्ता. तं जहा-
मुणिसुव्वए चेव. अरिट्ठनेमी चेव.

दो तित्थगरा पियंगुसमा वण्णेणं पण्णत्ता. त जहा-
मल्ली चेव, पासे चेव.

दो तित्थगरा पउमगोरा वण्णेण पण्णत्ता तं जहा-
पउमप्पहे चेव, वासुपुज्जे चेव.

दो तित्थगरा चंदगोरा वण्णेणं पण्णत्ता. त जहा-
चदप्पभे चेव, पुप्फदते चेव. ४

१०९ सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दुवे वत्थू पण्णत्ता

११० पुव्वाभद्दवया-णक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते.
उत्तराभद्दवया-णक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते.
एव पुव्व-फग्गुणी उतरा-फग्गुणी. ४

१११ अंतो णं मणुस्स-खेत्तस्स दो समुद्दा पण्णत्ता. तं जहा-
लवणे चेव, कालोदे चेव.

११२ दो चक्कवट्टी अपरिचत्त-काम-भोगा कालमासे कालं किच्चा
अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पइट्ठाणे नरए नेरईयत्ताए उववण्णा
त जहा-
मुभूमे चेव, बभदत्ते चेव

११३ असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाण देसूणाइं दो पलिओ-
वमाइं ठिई पण्णत्ता.

सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेण दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता.

ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहन्नेणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

माहिंदे कप्पे देवाणं जहन्नेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता. ५

११४ दोसु कप्पेसु कप्पत्थियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
सोहम्मे चेव. ईसाणे चेव.

११५ दोसु कप्पेसु देवा तेउलेस्सा पण्णत्ता. तं जहा-
सोहम्मे चेव. ईसाणे चेव.

११६ दोसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा पण्णत्ता. तं जहा-
सोहम्मे चेव. ईसाणे चेव.

दोसु कप्पेसु देवा फासपरियारगा पण्णत्ता. तं जहा-
सणंकुमारे चेव माहिंदे चेव

दोसु कप्पेसु देवा रूवपरियारगा पण्णत्ता. तं जहा-
बभलोगे चेव लंतगे चेव.

दोसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारगा पण्णत्ता तं जहा-
महासुक्के चेव. सहस्सारे चेव.

दो इंदा मणपरियारगा पण्णत्ता. तं जहा-
पाणए चेव. अच्चुए चेव. ५

११७ जीवा णं दुट्ठाण-णिव्वत्तिए पोग्गले पावम्मत्ताए चिणिसु वा,

चिणंति वा, चिणिस्संति वा तं जहा-
तसकायणिवत्तिए चेव, थावरकायणिवत्तिए चेव
एवं उवचिणिंसु वा, उवचिणंति वा, उवचिणिस्संति वा.
एवं बंधिंसु वा, बधंति वा, बधिस्संति वा.
एवं उदीरिंसु वा, उदीरेंति वा, उदीरिस्संति वा
एवं वेदेंसु वा, वेदेंति वा, वेदिस्सति वा
एव णिज्जरिंसु वा णिज्जरिंति वा. णिज्जरिस्संति वा. ६

११८ दुप्पएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता
दुपएसावगाढा पुग्गला अणता पण्णत्ता.
दुसमयठिइया पुग्गला अणंता पण्णत्ता.
दोगुण-कालगा पुग्गला अणंता पण्णत्ता
एव —जाव— दुगुण-लुक्खा पुग्गला अणंता पण्णत्ता. २३

तिट्ठाणं

तिट्ठाणस्स पढमो उद्देसो

११९ तओ इंदा पण्णत्ता. तं जहा-
नामिंदे, ठवणिंदे, दव्विंदे.

तओ इंदा पण्णत्ता. तं जहा-
नाणिंदे, दंसणिंदे, चरित्तिंदे.

तओ इंदा पण्णत्ता. तं जहा-
देविंदे, असुरिंदे, मणुस्सिंदे ३

१२० तिविहा विगुव्वणा पण्णत्ता. तं जहा-
बाहिरए पोग्गलए परियाइत्ता एगा विगुव्वणा,
बाहिरए पोग्गलए अपरियाइत्ता एगा विगुव्वणा,
बाहिरए पोग्गलए परियाइत्ता वि, अपरियाइत्ता वि एगा विगुव्वणा.

तिविहा विगुव्वणा पण्णत्ता. तं जहा-
अब्भंतरए पोग्गलए परियाइत्ता एगा विगुव्वणा,
अब्भंतरए पोग्गलए अपरियाइत्ता एगा विगुव्वणा,
अब्भंतरए पोग्गलए परियाइत्ता वि, अपरियाइत्ता वि एगा विगुव्वणा.

तिविहा विगुव्वणा पण्णत्ता तं जहा-

बाहिरब्भंतरए पोग्गलए परियाइत्ता एगा विगुव्वणा,

बाहिरब्भंतरए पोग्गलए अपरियाइत्ता एगा विगुव्वणा,

बाहिरब्भंतरए पोग्गलए परियाइत्ता वि, अपरियाइत्ता वि एगा विगुव्वणा. ३

१२१ तिविहा नेरइया पण्णत्ता तं जहा-

कतिसंचिया, अकतिसंचिया, अवतव्वगसंचिया.

एवंमेगेंदियज्जा —जाव — वेमाणिया.

१२२ तिविहा परियारणा पण्णत्ता. तं जहा-

एगे देवे. अन्ने देवे. अन्नेसिं देवाणं देविओ य अभिजुंजिय २ परियारेइ,

अप्पणिज्जिआओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ,

अप्पणामेव अप्पणा विउव्विय २ परियारेइ.

तिविहा परियारणा पण्णत्ता तं जहा-

एगे देवे. नो अन्ने देवा. नो अन्नेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ,

अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ,

अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय २ परियारेइ.

तिविहा परियारणा पण्णत्ता. तं जहा-

एगे देवे. नो अन्ने देवा नो अन्नेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ,

नो अप्पणिज्जिआओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ,

अप्पाणमेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेइ. ३

१२३ तिविहे मेहुणे पण्णत्ते. तं जहा-
दिव्वे, माणुस्सए, तिरिक्खजोणिए.

तओ मेहुणं गच्छंति तं जहा-
देवा, मणुस्सा, तिरिक्खिजोणिया

तओ मेहुणं सेवंति. तं जहा-
इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा ३

१२४ तिविहे जोगे पण्णत्ते. तं जहा-
मणजोगे, वइजोगे, कायजोगे.
एवं नेरइयाणं विगलिंदियवज्जाणं —जाव— वेमाणियाणं.

तिविहे पओगे पण्णत्ते तं जहा-
मणपओगे, वइप्पओगे, कायपओगे
जहा जोगो विगलिंदियवज्जाणं तहा पओगो वि.

तिविहे करणे पण्णत्ते. तं जहा-
मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे.
एवं विगलिंदियवज्ज —जाव— वेमाणियाणं.

तिविहे करणे पण्णत्ते. तं जहा-
आरंभकरणे, सरंभकरणे, समारंभकरणे
निरंतरं —जाव— वेमाणियाणं. ४

१२५ तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-
पाणे अइवाइत्ता भवइ,

मुसं वइत्ता भवइ,

तहारूवं समणं वा, माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण पड़िलाभित्ता भवइ.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताए कम्मं पगरेंति.

तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-

नो पाणे अइवाइत्ता भवइ.

नो मुसं वइत्ता भवइ,

तहारूवं समणं वा, माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पड़िलाभित्ता भवइ.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति.

तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभ-दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-

पाणे अइवाइत्ता भवइ,

मुसं वइत्ता भवइ,

तहारूव समण वा, माहण वा हीलेत्ता, निंदित्ता, खिंसित्ता, गरहित्ता, अवमाणित्ता अन्नयरेण अमणुण्णेणं अपोइकारएण असण-पाण-खाइम-साइमेणं पड़िलाभित्ता भवइ.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभ-दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति.

तिहिं ठाणेहिं जीवा सुभ-दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-

नो पाणे अइवाइत्ता भवइ,

नो मुसं वइत्ता भवइ,

तहारूवं समणं वा, माहणं वा वंदित्ता, नमंसित्ता, सक्कारित्ता, सम्माणित्ता, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं, पज्जुवासेत्ता मणुण्णेणं पीइकारएणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पड़िलाभित्ता भवइ.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा सुभ-दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति. ४

१२६ तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

मणगुत्ती, वइगुत्ती, कायगुत्ती.

संजय-मणुस्साणं तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

मणगुत्ती, वइगुत्ती, कायगुत्ती.

तओ अगुत्तीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

मण-अगुत्ती, वइ-अगुत्ती, काय-अगुत्ती.

एवं नेरइयाणं —जाव— थणियकुमाराणं, पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणियाणं, असंजय-मणुस्साणं, वाणमंतराणं, जोइसियाणं, वेमाणियाणं.

तओ दंडा पण्णत्ता, तं जहा-

मणं-दंडे, वय-दंडे, काय-दंडे.

नेरइयाणं तओ दंडा पण्णत्ता. तं जहा-

मण-दंडे, वय-दंडे, काय-दंडे.

विगलिंदियवज्जं —जाव— वेमाणियाणं. ६

१२७ तिविहा गरहा पण्णत्ता. तं जहा-

मणसा वेगे गरहइ, वयसा वेगे गरहइ, कायसा वेगे गरहइ पावाणं कम्माणं अकरणयाए.

अहवा–गरहा तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

दीहंपेगे अद्धं गरहइ, रहस्सपेगे अद्धं गरहइ, कायंपेगे पड़िसाहरइ पावाणं कम्माणं अकरणयाए.

तिविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा-

मणसा वेगे पच्चक्खाइ, वयसा वेगे पच्चक्खाइ, कायसा वेगे पच्चक्खाइ पावाणं कम्माणं अकरणयाए. ४

अहवा–पक्चक्खाणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा-

दीहंपेगे अद्धं पच्चक्खाइ, रहस्संपेगे अद्ध पच्चक्खाइ, कायंपेगे पड़िसाहरइ पावाणं कम्माणं अकरणयाए.

१२८ तओ रुक्खा पण्णत्ता. तं जहा-

पत्तोवए, फलोवए, पुप्फोवए

एवामेव तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

पत्तो वा रुक्खसमाणा, पुप्फो वा रुक्खसमाणा, फलो वा रुक्खसमाणा

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

नाम-पुरिसे, ठवण-पुरिसे, दव्व-पुरिसे.

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

नाण-पुरिसे, दंसण-पुरिसे, चरित्त-पुरिसे.

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

वेद-पुरिसे, चिण्ह्-पुरिसे, अभिलाव-पुरिसे.

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उत्तम-पुरिसा, मज्झिम-पुरिसा, जहण्ण-पुरिसा

उत्तम-पुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा-
धम्म-पुरिसा, भोग-पुरिसा, कम्म-पुरिसा.

धम्म-पुरिसा अरिहंता, भोग-पुरिसा चक्कवट्टी, कम्म-पुरिसा वासुदेवा.

मज्झिम-पुरिसा तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
उग्गा, भोगा, रायन्ना

जहण्ण-पुरिसा तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
दासा, भयगा, भाइल्लगा. ६

१२६ तिविहा मच्छा पण्णत्ता. तं जहा-
अडया, पोयया, संमुच्छिमा.

अंडया मच्छा तिविहा पण्णत्ता तं जहा-
इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा

पोयया मच्छा तिविहा पण्णत्ता तं जहा-
इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा.

तिविहा पक्खी पण्णत्ता तं जहा-
अंडया, पोयया, संमुच्छिमा.

अंडया पक्खी तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा.

पोयया पक्खी तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा.
एवमेएणं अभिलावेणं उरपरिसप्पा वि भाणियव्वा.
एवमेएण अभिलावेण भुयपरिसप्पा वि भाणियव्वा. ८

१३० एवं चेव तिविहा इत्थीओ पण्णत्ताओ. त जहा-
तिरिक्ख-जोणित्थीओ देवित्थीओ.

तिरिक्खजोणिणीओ इत्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
जलचरीओ, थलचरीओ, खहचरीओ.

मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
कम्मभूमिआओ, अकम्मभूमिआओ, अतरदीविआओ

तिविहा पुरिसा पण्णत्ता. तं जहा-
तिरिक्खजोणी-पुरिसा, मणुस्स-पुरिसा, देव-पुरिसा

तिरिक्खजोणी-पुरिसा तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जलचरा, थलचरा, खेचरा

मणुस्स-पुरिसा तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
कम्मभूगिमा, अकम्मभूगिमा, अतरदीवगा.

तिविहा नपुंसगा पण्णत्ता. तं जहा-
नेरइय-णपुंसगा, तिरिक्खजोणिय-णपुंसगा, मणुस्स-णपुंसगा.

तिरिक्खजोणिय-णपुंसगा तिविहा पण्णत्ता तं जहा-
जलचरा, थलचरा, खहचरा.

मणुस्स-णपुंसगा तिविहा पण्णत्ता तं जहा-

कम्मभूमिगा, अकम्मभूमिगा, अंतरदीवगा. ६

१३१ तिविहा तिरिक्खजोणिया पण्णत्ता. तं जहा-

इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा

१३२ नेरइयाणं तओ लेसाओ पण्णत्ताओ तं जहा-

कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा.

असुरकुमाराणं तओ लेसाओ संकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा एवं —जाव— थणियकुमाराणं.

एव पुढविकाइयाण, आउ-वणस्सइकाइयाण वि.

तेउकाइयाण, वाउकाइयाणं, बेइंदियाणं, तेदियाणं, चउरिंदियाण वि तओ लेस्सा जहा नेरइयाणं.

पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणियाण तओ लेसाओ संकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा.

पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणियाणं तओ लेसाओ असंकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ तं जहा-

तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा.

एवं मणुस्साण वि.

वाणमंतराणं जहा असुरकुमाराणं.

वेमाणियाणं तओ लेस्साओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा.

१३३ तिहिं ठाणेहिं ताराख्वे चलिज्जा तं जहा-
विकुव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, ठाणाओ ठाणं संकम-
माणे ताराख्वे चलेज्जा.

तिहिं ठाणेहिं देवे विज्जुयारं करेज्जा. तं जहा-
विकुव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, तहारूवस्स समणस्स
वा, माहणस्स वा इड्ढिं, जुइं, जसं, वल, वीरियं, पुरि-
सक्कारपरक्कमं उवदसेमाणे देवे विज्जुयारं करेज्जा.

तिहिं ठाणेहिं देवे थणिय-सद्दं करेज्जा. तं जहा-
विकुव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा.
तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा —जाव— देवे
थणिय सद्दं करेज्जा. ३

१३४ तिहिं ठाणेहिं लोगंधयारे सिया त जहा-
अरिहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं.
अरिहतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे.
पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे.

तिहिं ठाणेहिं लोगुज्जोए सिया. तं जहा-
अरहतेहिं जायमाणेहिं
अरहतेसु पव्वयमागेसु
अरहताण णाणुप्पाय-महिमासु

एव आसणाइं चलेज्जा सीहणायं करेज्जा. चेलुक्खेवं करेज्जा.

तिहिं ठाणेहिं देवाण चेइय-रुक्खा चलेज्जा तं जहा-
अरिहंतेहि जायमाणेहिं • जाव— त चेव

तिहिं ठाणेहिं लोगंतिया देवा माणुस लोगं हव्वमागच्छिज्जा. तं जहा-

अरिहंतेहि जायमाणेहिं,
अरिहंतेहि पव्वयमाणेहिं,
अरिहंताणं णाणुप्पायमहिमासु २१

१३५ तिण्ह दुप्पडियारं समणाउसो ! तं जहा-
अम्मापिउणो, भट्टिस्स, धम्मायरियस्स
संपाओ वि य ण केइ पुरिसे अम्मा-पियरं सयपाग-सहस्स-पागेहिं तिल्लेहिं अब्भगेत्ता, सुरभिणा गंधट्टएण उव्वट्टित्ता, तिहिं उदगेहिं मज्जावित्ता, सव्वालंकारविभूसिय करेत्ता, मणुन्न थालीपागसुद्ध अट्ठारसवजणाउल भोयणं भोयावेत्ता, जावज्जीवं पिट्ठिवडेंसियाए परिवहेज्जा, तेणावि तस्स अम्मा-पिउस्स दुप्पडियार भवइ.

अहे ण से तं अम्मापियरं केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता पण्णवित्ता परूवित्ता ठावित्ता भवइ, तेणामेव तस्स अम्मा-पिउस्स सुप्पडियारं भवइ समणाउसो!
केइ महच्चे दरिद्दं समुक्कसेज्जा, तए णं से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुरं च ण विउलभोगसमिइसमण्णागए यावि

विहरेज्जा, तए णं से महच्चे अण्णया कयाइ दरिद्दीभूए समाणे तस्स दरिद्दस्स अंतिए हव्वमागच्छेज्जा, तए णं से दरिद्दे तस्स भट्टिस्स सव्वस्समवि दलयमाणे तेणावि तस्स दुप्पडियारं भवइ.

अहे णं से तं भट्टिं केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता पण्णवइत्ता ठावइत्ता भवइ तेणामेव तस्स भट्टिस्स सुप्पडियारं भवइ.

केइ तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे, तए णं से देवे तं धम्मायरियं दुब्भिक्खाओ वा देसाओ सुभिक्खं देसं साहरेज्जा, कंताराओ वा निक्कंतारं करेज्जा, दीहकालिएण वा रोगायंकेण अभिभूयं समाणं विमोएज्जा, तेणावि तस्स धम्मायरियस्स दुप्पडियारं भवइ

अहे णं से तं धम्मायरियं केवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भट्ठं समाणं भुज्जो वि केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता जाव ठावइत्ता भवइ, तेणामेव तस्स धम्मायरियस्स सुप्पडियारं भवइ

१३६ तिहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीईवएज्जा तं जहा-

अणिदाणयाए, दिट्ठिसंपण्णयाए, जोगवाहियाए

१३७ तिविहा ओसप्पिणी पण्णत्ता तं जहा-

उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना

एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ —जाव— दुसम दूसमा.

तिविहा उस्सप्पिणी पण्णत्ता. तं जहा-

उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना.

एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ —जाव— सुसमसुसमा.

१३८ तिहिं ठाणेहिं अच्छिण्णे पोग्गले चलेज्जा तं जहा-

आहारिज्जमाणे वा पोग्गले चलेज्जा,

विकुव्वमाणे वा पोग्गले चलेज्जा,

ठाणाओ वा ठाणं सकामिज्जमाणे पोग्गले चलेज्जा.

तिविहा उवही पण्णत्ता तं जहा-

कम्मोवही, सरीरोवही, बाहिर-भड-मत्तोवही.

एवं असुरकुमाराणं भाणियव्व.

एव एगिंदिय-नेरइयवज्जं —जाव— वेमाणियाण.

अहवा तिविहा उवही पण्णत्ता त जहा-

सचित्ता, अचित्ता, मीसया

एवं नेरइयाण निरतरं —जाव— वेमाणियाण

तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते त जहा-

कम्मपरिग्गहे, सरीरपरिग्गहे, बाहिरभंडमत्तपरिग्गहे.

एवं असुरकुमाराणं.

एवं एगिंदिय-नेरइयवज्जं —जाव— वेमाणियाण.

अहवा तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते तं जहा-

सचित्ते, अचित्ते, मीसए
एवं नेरइयाणं निरतरं —जाव— वेमाणियाणं ५

१३९ तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते तं जहा-
मणपणिहाणे, वयपणिहाणे, कायपणिहाणे
एवं पंचिंदियाणं —जाव— वेमाणियाणं.

तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते तं जहा-
मणसुप्पणिहाणे, वयसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे
संजयमणुस्साणं तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते तं जहा-
मणसुप्पणिहाणे, वइसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे.

तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते तं जहा-
मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे.
एवं पंचिंदियाणं —जाव— वेमाणियाणं. ४

१४० तिविहा जोणी पण्णत्ता तं जहा-
सीया, उसिणा, सीओसिणा.
एवं एगिंदियाणं —जाव— विगलिंदियाण तेउकाइय-वज्जाण संमुच्छिनपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिम-मणुस्साण य

तिविहा जोणी पण्णत्ता. तं जहा-
सचित्ता, अचित्ता, मीसिया
एवं एगिंदियाणं, विगलिंदियाणं, संमुच्छिमपंचिंदियति-रिक्खजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साण य.

तिविहा जोणी पण्णत्ता तं जहा-
सवुड़ा, वियड़ा, सवुड़वियड़ा
तिविहा जोणी पण्णत्ता. तं जहा-
कुम्मुन्नया, सखावत्ता, वसीपत्तिया.
कुम्मुन्नया णं जोणी उत्तमपुरिसमाऊण.
कुमुण्णयाए णं जोणीए तिविहा उत्तमपुरिसा गब्भ वक्कमति. तं जहा-
अरहंता, चक्कवट्टी, वलदेव-वासुदेवा
संखावत्ता जोणी इत्थीरयणस्स, संखावत्ताए णं जोणीए वहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमति विउवक्कमति चयति उववज्जति नो चेव ण निप्फज्जति,
वसीपत्ता णं जोणी पिहुज्जणस्स, वंसीपत्ताए णं जोणीए वहवे पिहुज्जणे गब्भ वक्कमति ५

१४१ तिविहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता तं जहा-
सखेज्जजीविया, असंखेज्जजीविया, अणतजीविया

१४२ जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तओ तित्था पण्णत्ता. तं जहा-
मागहे, वरदामे, पभासे.
एवं एरवए वि
जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहवासे एगमेगे चक्कवट्टिविजये तओ तित्था पण्णत्ता तं जहा-
मागहे, वरदामे, पभासे
एव धायइसडे दीवे पुरच्छिमद्धेवि, पच्चत्थिमद्धे वि.

पुक्खरवरदीवद्धपुरच्छिमद्धेवि, पच्चत्थिमद्धे वि. ७

१४३ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था.

एवं ओसप्पिणीए, आगमिस्साए उस्सप्पिणीए भविस्सइ.

एव धायइसडे पुरच्छिमद्धे, पच्चत्थिमद्धे वि.

एवं पुक्खरवरदीवद्धपुरच्छिमद्धे पच्चत्थिमद्धेवि कालो भाणियव्वो.

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए मणुया तिण्णि गाउयाइं उद्ध उच्चत्तेणं तिण्णि पलिओवमाइं परमाउं पालइत्था.

एव इमीसे ओसप्पिणीए

आगमिस्साए उस्सप्पिणीए

एवं —जाव— पुक्खरदीवद्ध-पच्चत्थिमद्धे.

जंबुद्दीवे दीवे देवकुरु-उत्तरकुरासु मणुया तिण्णि गाउआइं उद्ध उच्चत्तेणं तिण्णि पलिओवमाइं परमाउं पालयति.

एव —जाव— पुक्खरवरदीवद्ध-पच्चत्थिमद्धे.

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगासु ओसप्पिणि उस्सप्पिणीए तओ वसाओ उप्पज्जिंसु वा, उप्पज्जति वा, उप्पज्जिसंति वा तं जहा-

अरहतवंसे, चक्कवट्टिवंसे, दसारवंसे.

एव —जाव— पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे.

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणी-

उस्सप्पिणीए तओ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु वा, उप्पज्जंति वा, उप्पज्जिस्सति वा. तं जहा-

अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेव-वासुदेवा.

एवं —जाव— पुक्खरवरवद्धपच्चत्थिमद्धे.

तओ अहाउयं पालयंति. तं जहा-

अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेव-वासुदेवा

तओ मज्झिमाउयं पालयंति. तं जहा-

अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेव-वासुदेवा. ४७

१४४ बायरतेउकाइयाणं उक्कोसेणं तिण्णी राइंदियाइं ठिई पण्णत्ता. बायरवाउकाइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता. २

१४५ प्र० अह भंते ! सालीणं वीहीणं गोधूमाणं जवाणं जवजवाण एएसिणं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताण मालाउत्ताण ओलित्ताण लित्ताणं लंछियाणं मुद्दियाणं पिहियाणं केवइय कालं जोणी संचिट्ठति ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि संवच्छराइ, तेण परं जोणी पमिलायइ, तेण परं जोणी पविद्धसइ, तेण परं जोणी विद्धंसइ, तेण परं बीए अबीए भवइ, तेण परं जोणीवोच्छेदो पण्णत्तो.

१४६ दोच्चाए णं सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

तच्चाए णं वालुयप्पभाए पुढवीए जहन्नेणं णेरइयाणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

१४७ पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिण्णि निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

तिसु णं पुढवीसु णेरइयाणं उसिणवेयणा पण्णत्ता. तं जहा-
पढमाए, दोच्चाए, तच्चाए.

तिसुणं पुढवीसु णेरइया उसिणवेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति-
पढमाए, दोच्चाए, तच्चाए. ३

१४८ तओ लोगे समा सपक्खि सपडिदिसिं पण्णत्ते. तं जहा-
अप्पइट्ठाणे नरए, जंबुद्दीवे दीवे, सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे.

तओ लोगे समा सपक्खि सपडिदिसिं पण्णत्ते. तं जहा-
सीमंतए णं नरए, समयक्खेत्ते, ईसीपब्भारा पुढवी २

१४९ तओ समुद्दा पगईए उदगरसेणं पण्णत्ता. तं जहा-
कालोदे, पुक्खरोदे, सयंभुरमणे.

तओ समुद्दा बहुमच्छकच्छभाइण्णा पण्णत्ता. तं जहा-
लवणे, कालोदे, सयंभुरमणे २

१५० तओ लोगे निस्सीला निव्वया निग्गुण निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववज्जंति. तं जहा-
रायाणो, मंडलीया, जे य महारंभा कोडुंबी.

तओ लोए सुसीला सुव्वया सगुणा समेरा सपच्चक्खाण-
पोसहोववासा कालमासे काल किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे
देवत्ताए उववत्तारो भवंति तं जहा-
रायाणो परिचत्तकामभोगा, सेणावइ, पसत्थारो २

१५१ बभलोग-लंतएसु णं कप्पेसु विमाणा तिवण्णा पण्णत्ता. त जहा-
किण्हा, नीला, लोहिया
आणय-पाणयारणच्चुएसु णं कप्पेसु देवाण भवधारणिज्ज-
सरीरा उक्कोसेण तिण्णि रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेणं पण्णत्ता. २

१५२ तओ पण्णत्तीओ कालेण अहिज्जति. त जहा-
चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती

तिट्ठाणस्स बीओ उद्देसो

१५३ तिविहे लोगे पण्णत्ते. तं जहा-
नामलोगे, ठवणलोगे, दव्वलोगे
तिविहे भावलोगे पण्णत्ते तं जहा-
नाणलोगे, दसणलोगे, चरित्तलोगे.
तिविहे लोगे पण्णत्ते तं जहा-
उड्ढलोगे, अहोलोगे, तिरियलोगे. ३

१५४ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तओ परिसाओ
पण्णत्ताओ तं जहा-
समिया, चंडा, जाया.

अब्भंतरिया समिया, मज्झिमया चंडा, बाहिरया जाया.

चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सामाणियाणं देवाण तओ परिसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

जहेव चमरस्स

एव तायत्तीसगाणवि.

चमरस्स लोगपालाणं तओ परिसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

तुवा, तुडिया, पव्वा.

एवं अग्गमहिसीण वि.

वलिस्सवि एव चेव —जाव— अग्गमहिसीणं.

धरणस्स य सामाणिय-तायत्तीसगाणं-

समिया, चडा. जाया

लोगपालाणं अग्गमहिसीणं-

ईसा, तुडिया, दढरहा

जहा धरणस्स तहा सेसाणं भवणवासीणं

कालस्स ण पिसाइंदस्स पिसायरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तं जहा-

ईसा, तुड़िया, दढरहा.

एवं सामाणिय-अग्गमहिसीणं.

एवं —जाव— गीयरइ-गीयजसाणं.

चंदस्स णं जोईसिंदस्स जोइसरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

तुंबा, तुड़िया, पव्वा.

एवं सामाणिय-अग्गमहिसीण

एवं सूरस्स वि

सक्कस णं देविंदस्स देवरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तं जहा-

समिया, चडा, जाया.

एवं —जहा— चमरस्स — जाव— अग्गमहिसीण

एवं —जाव – अच्चुअस्स लोगपालाण. १३२

१५५ तओ यामा पण्णत्ता त जहा-

पढमे यामे, मज्झिमे यामे, पच्छिमे यामे

तिहिं यामेहिं आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए-

पढमे यामे, मज्झिमे यामे, पच्छिमे यामे

एव —जाव— केवलनाण उप्पाडेज्जा-

पढमे यामे, मज्झिमे यामे, पच्छिमे यामे

तओ वया पण्णत्ता तं जहा-

पढमे वए, मज्झिमे वए, पच्छिमे वए

तिहिं वएहिं आया केवलिपण्णत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए तं जहा-

पढमे वए, मज्झिमे वए, पच्छिमे वए

एसो चेव गमो णेयव्वो —जाव— केवलनाण ति ११

१५६ तिविहा बोही पण्णत्ता तं जहा-

नाणवोही, दंसणवोही, चरित्तवोही.

तिविहा बुद्धा पण्णत्ता तं जहा-

नाणबुद्धा, दंसणबुद्धा, चरित्तबुद्धा.

एवं मोहे, मूढ़ा ४

१५७ तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता तं जहा-

इहलोगपड़िवद्धा, परलोगपड़िवद्धा, दुहओपड़िवद्धा.

तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता तं जहा-

पुरओ पड़िवद्धा, मग्गओ पड़िवद्धा, दुहओ पड़िवद्धा.

तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता तं जहा-

तुयावइत्ता, पुयावइत्ता, बुआवइत्ता

तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता तं जहा-

उवायपव्वज्जा, अक्खायपव्वज्जा, संगारपव्वज्जा. ४

१५८ तओ णियंठा नो सण्णोवउत्ता पण्णत्ता तं जहा-

पुलाए, नियठे, सियाए.

तओ नियठा सण्ण नो सण्णोवउत्ता पण्णत्ता. तं जहा-

वउसे, पडिसेवणाकुसीले, कसायकुसीले. २

१५९ तओ सेहभूमीओ पण्णत्ताओ तं जहा-

उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना

उक्कोसा छम्मासा, मज्झिमा चउमासा, जहन्ना सत्तरा-
इंदिया

तओ थेरभूमीओ पण्णत्ताओ त जहा-
जाइथेरे, सुयथेरे, परियायथेरे
सट्ठिवासजाए समणे निग्गथे जाईथेरे,
ठाणग-समवायधरे ण समणे निग्गथे सुयथेरे,
वीसवासपरियाए णं समणे निग्गथे परियायथेरे. २

१६० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
सुमणे, दुम्मणे, नो सुमणे नो दुम्मणे

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
गता नामेगे सुमणे भवइ,
गंता नामेगे दुम्मणे भवइ,
गता नामेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. त जहा-
जामीतेगे सुमणे भवइ,
जामीतेगे दुम्मणे भवइ,
जामीतेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ
एव जाइस्सामीतेगे सुमणे भवइ
जाइस्सामीतेगे दुम्मणे भवइ
जाइस्सामीतेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
अगंता नामेगे सुमणे भवइ
अगता नामेगे दुम्मणे भवइ
अगंता नामेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

न जामि एगे सुमणे भवइ.

न जामि एगे दुम्मणे भवइ.

न जामि एगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

न जाइस्सामि एगे सुमणे भवइ.

न जाइस्सामि एगे दुम्मणे भवइ.

न जाइस्सामि एगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ.

एवं आगंता नामेगे सुमणे भवइ.

आगंता नामेगे दुम्मणे भवइ

आगंता नामेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ.

एतिमेगे सुमणे भवइ

एतिमेगे दुम्मणे भवइ

एतिमेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ

एस्सामीति एगे सुमणे भवइ

एस्सामीति एगे दुम्मणे भवइ.

एस्सामीति एगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ

गाहाओ-

गंता य अगंता य, आगंता खलु तहा अणागंता।
चिट्ठित्तमचिट्ठित्ता, णिसिइत्ता चेव नो चेव ॥१॥
हंता य अहंता य, छिंदित्ता खलु तहा अछिंदित्ता।
बूइत्ता अबूइत्ता, भासित्ता चेव णो चेव ॥२॥

दच्चा य अदच्चा य, भुंजित्ता खलु तहा अभुंजित्ता।
लंभित्ता अलंभित्ता, पिइत्ता चेव नो चेव ॥३॥
सुइत्ता असुइत्ता, जुज्झित्ता खलु तहा अजुज्झित्ता।
जइत्ता अजइत्ता य, पराजिणित्ता य नो चेव ॥४॥
सद्दा रूवा गंधा रसा य, फासा तहेव ठाणा य।
निस्सीलस्स गरहिया, पसत्था पुण सीलवतस्स ॥५॥

एवमिक्केक्के तिन्नि उ तिन्नि उ आलावगा भाणियव्वा.
सद्दं सुणेत्ता णामेगे सुमणे भवइ-
एवं सुणेमीति
सुणिस्सामीति.
एव असुणेत्ता णामेगे सुमणे भवइ
न सुणेमीति
एवं न सुणिस्सामीति.
एवं रूवाइ, गंधाइ, रसाइ, फासाइ
एक्केक्के छ छ आलावगा भाणियव्वा १२७ आलावगा भवंति.

१६१ तओ ठाणा णिस्सीलस्स निव्वयस्स निग्गुणस्स निमेरस्स निप्पच्चक्खाणपोसहोववासस्स गरिहिया भवंति. त जहा-
अस्सि लोगे गरहिए भवइ,
उववाए गरहिए भवइ,
आयाइ गरहिया भवइ.

तओ ठाणा सुसीलस्स सुव्वयस्स सगुणस्स समेरस्स सपच्च-
क्खाणपोसहोववासगस्स पसत्था भवंति. तं जहा-
अस्सिं लोगे पसत्थे भवइ,
उववाए पसत्थे भवइ,
आजाती पसत्था भवइ. २

१६२ तिविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता. तं जहा-
इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा.

तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं जहा-
सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी य.

अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं जहा-
पज्जत्तगा, अपज्जत्तगा, नो पज्जत्तगा नो अपज्जत्तगा.
एव सम्मदिट्ठी-परित्ता-पज्जत्तग-सुहुम-सन्नि-भविया य. ७

१६३ तिविहा लोगट्ठिई पण्णत्ता. त जहा-
आगासपइट्ठिए वाए,
वायपइट्ठिए उदही,
उदहिपइट्ठिया पुढवी

तओ दिसाओ पण्णत्ताओ त जहा-
उड्ढा, अहा, तिरिया

तिहिं दिसाहिं जीवाण गइ पवत्तइ तं जहा-
उड्ढाए, अहाए, तिरियाए
एव आगइ, वक्कंती, आहारे, वुड्ढी, णिवुड्ढी, गइपरियाए,

समुग्घाए, कालसंयोगे, दंसणाभिगमे, नाणाभिगमे, जीवाभिगमे.

तिहिं दिसाहिं जीवाण अजीवाभिगमे पण्णत्ते तं जहा-

उड्ढाए, अहाए, तिरियाए

एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं.

एवं मणुस्साण वि १७

१६४ तिविहा तसा पण्णत्ता. त जहा-

तेउकाइया, वाउकाइया, उराला तसा पाणा.

तिविहा थावरा पण्णत्ता तं जहा-

पुढविकाइया, आउकाइया, वणस्सइकाइया २

१६५ तओ अच्छेज्जा पण्णत्ता तं जहा-

समए, पएसे, परमाणू

एवमभेज्जा, अडज्झा, अगिज्झा, अणड्ढा, अमज्झा, अपएसा,

तओ अविभाइमा पण्णत्ता. तं जहा-

समए, पएसे, परमाणू ८

१६६ अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे गोयमाइ समणे निग्गथे आमंतेत्ता एव वयासी-

प्र० किं भया पाणा ? समणाउसो !

गोयमाइ समणा निग्गथा समण भगवं महावीरं उवसंकमंति उवसंकमित्ता वंदंति नमसति वंदित्ता नमसित्ता एवं वयासी-

नो खलु वयं देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं जाणामो वा, पासामो वा तं जइ ण देवाणुप्पिया एयमट्ठं नो गिलायंति परिकहित्तए तमिच्छामो णं देवाणुप्पियाण अंतिए एयमट्ठं जाणित्तए.

उ० अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे गोयमाइ समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी-दुक्खभया पाणा समणाउसो !

प्र० से णं भंते ! दुक्खे केण कड़े ?

उ० जीवेणं कड़े पमादेण

प्र० से णं भंते ! दुक्खे कहं वेइज्जइ ?

उ० अप्पमाएणं.

६७ अण्णउत्थिया ण भते ! एवं आइक्खति, एव भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं परूवेंति-

प्र० कहण्णं समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ?
तत्थ जा सा कड़ा कज्जइ नो तं पुच्छति,
तत्थ जा सा कड़ा नो कज्जइ नो तं पुच्छति,
तत्थ जा सा अकड़ा नो कज्जइ नो तं पुच्छंति,
तत्थ जा सा अकड़ा कज्जइ तं पुच्छंति से एवं वत्तव्वं सिया ?

अकिच्चं दुक्खं, अफुसं दुक्खं, अकज्जमाणकड़ं दुक्खं अकट्टु अकट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेयंतित्ति

वत्तव्वं, जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहसु.

उ० अहं पुण एवमाइक्खामि, एव भासामि, एव पण्णवेमि, एवं परूवेमि-

किच्च दुक्खं, फुस्सं दुक्खं, कज्जमाणकडं दुक्खं कट्टु-कट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेयंतित्ति वत्तव्वं सिया

तिट्ठाणस्स तइओ उद्देसो

१६८ तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु नो आलोएज्जा, नो पड़िक्कमेज्जा, नो निंदिज्जा, नो गरहिज्जा, नो विउट्टेज्जा, नो विसोहेज्जा, नो अकरणाए अब्भुट्ठेज्जा, नो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्म पड़िवज्जेज्जा. त जहा-

अकरिंसु वाऽहं, करोमि वाऽहं, करिस्सामि वाऽहं

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु नो आलोएज्जा, नो पडिक्कमिज्जा, —जाव— नो पड़िवज्जेज्जा.

अकित्ती वा मे सिया,

अवण्णे वा मे सिया,

अविणए वा मे सिया.

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु नो आलोएज्जा —जाव— नो पड़िवज्जेज्जा. तं जहा-

कित्ती वा मे परिहाइस्सइ,

जसो वा मे परिहाइस्सइ,
पूयासक्कारे वा मे परिहाइस्सइ.

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा —जाव— पड़िवज्जेज्जा तं जहा-

मायिस्स णं अस्सिं लोगे गरहिए भवइ,
उववाए गरहिए भवइ,
आयाइ गरहिया भवइ.

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा —जाव— पड़िवजेज्जा. तं जहा-

अमाइस्स ण अस्सिं लोगे पसत्थे भवइ,
उववाए पसत्थे भवइ, 6772
आयाइ पसत्था भवइ.

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा —जाव— पड़िवज्जेज्जा तं जहा-

नाणट्ठयाए, दंसणट्ठयाए, चरित्तट्ठयाए. ६

१६९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. त जहा-

सुत्तधरे, अत्थधरे, तदुभयधरे

१७० कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा तओ वत्थाइं धारित्तए वा, परिहरित्तए वा. तं जहा-

जंगिए, भंगिए, खोमिए.

कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा तओ पायाइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा तं जहा-

लाउयपाए वा, दारुपाए वा, मट्टियापाए वा. २

१७१ तिहिं ठाणेहिं वत्थं धरेज्जा तं जहा-

हिरिपत्तियं, दुगुंछापत्तियं, परीसहवत्तियं.

१७२ तओ आयरक्खा पण्णत्ता. तं जहा-

धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएत्ता भवइ,

तुसिणीओ वा सिया,

उट्ठित्ता वा आयाए एगंतमंतमवक्कमेज्जा

निग्गंथस्स ण गिलायमाणस्स कप्पंति तओ वियडदत्तीओ पड़िग्गाहित्तए तं जहा-

उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना. २

१७३ तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे साहम्मियं संभोगियं करेमाणे नाइक्कमइ. तं जहा-

सयं वा दट्ठुं,

सड्ढस्स वा निसम्म,

तच्चं मोसं आउट्टइ चउत्थं नो आउट्टइ.

१७४ तिविहा अणुन्ना पण्णत्ता तं जहा-

आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए

तिविहा समणुन्ना पण्णत्ता त जहा-

आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए.

एवं उवसपया, एव विजहणा ४

१७५ तिविहे वयणे पण्णत्ते तं जहा-

तव्वयणे, तदन्नवयणे, नो अवयणे.

तिविहे अवयणे पण्णत्ते. तं जहा-
नो तव्वयणे, नो तदन्नवयणे, अवयणे.

तिविहे मणे पण्णत्ते. तं जहा-
तम्मणे, तयन्नमणे, नो अमणे.

तिविहे अमणे पण्णत्ते तं जहा-
नो तम्मणे, नो तयन्नमणे, अमणे. ४

१७६ तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिकाए सिया. तं जहा-
तस्सिं च णं देससि वा पदेसंमि वा नो बहवे उदगजोणिया जीवा य, पोग्गला य उदगत्ताए ववकमंति विउक्कमंति चयति उववज्जंति,

देवा नागा जक्खा भूया नो सम्ममाराहिया भवंति तत्थ समुट्ठियं उदगपोग्गलं परिणयं वासिउकामं अन्नं देसं साहरंति,

अब्भवद्दलगं च णं समुट्ठितं परिणय वासिउकामं वाउकाए विधुणइ.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिकाए सिया.

तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठीकाए सिया. तं जहा-
तस्सि च णं देससि वा पदेससि वा बहवे उदगजोणिया जीवा य, पोग्गला य उदगत्ताए ववकमति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति,

देवा जक्खा नागा भूया सम्ममाराहिया भवंति अन्नत्थ समुट्ठिय उदगपोग्गलं परिणयं वासिउकामं तं देसं साहरंति,-

अब्भवद्दलग च ण समुट्ठियं परिणयं वासिउकामं नो वाउआओ विधुणइ

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठिकाए सिया. २

१७७ तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव ण सचाएइ हव्वमागच्छित्तए तं जहा-

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने से णं माणुस्सए कामभोगे नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अट्ठं बधइ, नो नियाणं पगरेइ, नो ठिइपकप्पं पकरेइ,

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु, मुच्छिए, गिद्धे, गढिए, अज्झोववन्ने तस्स ण माणुस्सए पेम्मे वोच्छिन्ने दिव्वे संकते भवइ,

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए —जाव— अज्झोववन्ने तस्स ण एव भवइ–"इयाणिं न गच्छं मुहुत्तं गच्छं" तेणं कालेणं अप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा सजुत्ता भवंति,

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा

माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए. णो चेव णं संचाएइ हव्व-
मागच्छित्तए.

७७ तिहिं ठाणेहिं देवे अहुणोववन्ने देवलोगेसु इच्छेज्जा माणूसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, संचाएइ हव्वमागच्छित्तए-

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने तस्स णं एवं भवइ- "अत्थि णं मम माणुस्सए भवे आयरिएइ वा, उवज्झाएइ वा, पवत्ती इ वा, थेरेइ वा, गणीइ वा, गणधरेइ वा, गणावच्छेइए वा, जेसिं पभावेण मए इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी, दिव्वा देवजुइ, दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए" तं गच्छामि ण ते भगवंते वंदामि, णमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं, पज्जुवासामि,

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए —जाव— अणज्झोववन्ने तस्स णं एवं भवइ-एस णं माणुस्सए भवे नाणीइ वा, तवस्सीइ वा, अइदुक्करकारए तं गच्छामि णं भगवंतं वंदामि, णमंसामि —जाव— पज्जुवासामि,

अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु—जाव—अणज्झोववन्ने, तस्स णं एवं भवइ–"अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मायाइ वा, —जाव—सुण्हाइ वा, तं गच्छामि णं तेसिमंतियं पाउब्भ-वामि पासंतु ता मे इमं एयारूवं दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं

देवजुइं, दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं,

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणूसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, संचाएइ हव्वमागच्छित्तए.

१७८ तओ ठाणाइं देवे पीहेज्जा त जहा-

माणुसं भवं, आरिए खेत्ते जम्म, सुकुलपच्चायाइं.

तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा. तं जहा-

अहो णं मए, संते वले, सते वीरिए, सते पुरिसक्कारपरक्कमे, खेमंसि सुभिक्खंसि आयरिय-उवज्झाएहिं विज्जमाणेहिं कल्लसरीरेणं नो वहुए सुए अहीए,

अहो णं मए इहलोयपडिबद्धेणं परलोयपरंमुहेण विसयतिसिएणं नो दीहे सामण्णपरियाए अणुपालिए,

अहो ण मए इड्ढिरससायगरुएण भोगामिसगिद्धेणं नो विसुद्धे चरित्ते फासिए

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा. २

१७९ तिहिं ठाणेहिं देवे चइस्सामित्ति जाणइ. त जहा-

विमाणाभरणाइ णिप्पभाइं पासित्ता,

कप्परुक्खगं मिलायमाण पासित्ता,

अप्पणो तेयलेस्सं परिहायमाण जाणित्ता.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे चइस्सामित्ति जाणइ

तिहिं ठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा त जहा-

अहो णं मए इमाओ एयारूवाओ दिव्वाओ देविड्ढीओ,

दिव्वाओ देवजुइओ, दिव्वाओ देवाणुभावाओ पत्ताओ लद्धाओ अभिसमण्णागयाओ चइयव्वं भविस्सइ,

अहो णं मए माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभयसंसट्ठं तप्पढमयाए आहारो आहारेयव्वो भविस्सइ.

अहो णं मए कलमलजंबालाए असुइए उव्वेयणियाए भीमाए गब्भवसहीए वसियव्व भविस्सइ.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा २

१८० तिसठिया विमाणा पण्णत्ता. तं जहा-

वट्टा, तंसा, चउरंसा

तत्थं ण जे ते वट्टा विमाणा ते णं पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिया सव्वओ समंता पागारपरिक्खित्ता एगदुवारा पण्णत्ता-

तत्थ णं जे ते तसा विमाणा ते णं सिंघाड़गसंठाणसंठिया दुहाओ पागारपरिक्खित्ता एगओ वेइया परिक्खित्ता तिदुवारा पण्णत्ता-

तत्थ ण जे ते चउरंसविमाणा ते णं अक्खाड़गसंठाणसंठिया, सव्वओ समंता वेइया परिक्खत्ता चउदुवारा पण्णत्ता-

तिपइट्ठिया विमाणा तं जहा-

घणोदधिपइट्ठिया, घणवायपइट्ठिया, ओवासंतरपइट्ठिया.

तिविहा विमाणा पण्णत्ता. तं जहा-

अवट्ठिया, वेउव्विया, परिजाणिया. ३

१८१ तिविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-

सम्मादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी.

एवं विगलिंदियवज्ज —जाव - वेमाणियाण

तओ दुग्गइओ पण्णत्ताओ तं जहा-

नेरइयदुग्गई, तिरिक्खजोणीयदुग्गई, मणुयदुग्गई

तओ सुगइओ पण्णत्ताओ त जहा-

सिद्धिसोगई, देवसोगई, मणुस्ससोगई

तओ दुग्गया पण्णत्त। तं जहा-

नेरइयदुग्गया, तिरिक्खजोणियदुग्गया, मणुस्सदुग्गया.

तओ सुगया पण्णत्ता त जहा-

सिद्धसुग्गया, मणुस्ससुग्गया, देवसुग्गया. ५

१८२ चउत्थभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पति तओ पाणगाइ पडिगाहित्तए तं जहा-

उस्सेइमे, संसेइमे, चाउलधोवणे

छट्ठभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए. तं जहा-

तिलोदए, तुसोदए, जवोदए

अट्ठमभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए. तं जहा-

आयामए, सोवीरए, सुद्धवियडे.

तिविहे उवहडे पण्णत्ते. तं जहा-

फलिओवहडे, सुद्धोवहडे, संसट्ठोवहडे.

तिविहे उग्गहिए पण्णत्ते. तं जहा-

जं च ओगिण्हइ,

जं च साहरइ,

ज च आसगंसि पक्खिवइ.

तिविहा ओमोयरिया पण्णत्ता तं जहा-

उवगरणोमोयरिया, भत्तपाणोमोयरिया, भावोमोयरिया.

उवगरणोमोयरिया तिविहा पण्णत्ता तं जहा-

एगे वत्थे, एगे पाए, चियत्तोवहिसाहिज्जणया.

तओ ठाणा निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा अहियाए असुहाए अक्खमाए अणिस्सेएसाए अणाणुगामियत्ताए भवति तं जहा-

कूअणया, कक्करणया, अवज्झाणया

तओ ठाणा निग्गथाण वा, निग्गंथीण वा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेयसाए आणुगामिअत्ताए भवंति. तं जहा-

अकूअणया, अकक्करणया, अणवज्झाणया.

तओ सल्ला पण्णत्ता. तं जहा-

मायासल्ले, नियाणसल्ले, मिच्छादसणसल्ले.

तिहि ठाणेहि समणे निग्गंथे संखित्तविउलतेउलेस्से भवइ. त जहा-

आयावणयाए, खंतिखमाए, अपाणगेणं तवोकम्मेणं. ११

१८२ तिमासियं णं भिक्खूपड़िमंपडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति तओ दत्तीओ भोयणस्स पड़िगाहित्तए, तओ पाणगस्स.

एगराइयं भिक्खूपड़िमं सम्मं अणणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेयसाए अणाणुगामित्ताए भवति. तं जहा-

उम्मायं वा लभिज्जा,

दीहकालिय वा रोगायंकं पाउणेज्जा,

केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा.

एगराइयं भिक्खुपड़िम सम्म अणुपालेमाणस्स अणगारस्स तओ ठाणा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेसाए आणुगामियत्ताए भवंति तं जहा-

ओहिणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा,

मणपज्जवनाणे वा से समुप्पज्जेज्जा,

केवलणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा ३

१८३ जंबुद्दीवे दीवे तओ कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

भरहे, एरवए, महाविदेहे

एवं धायइसडे दीवे पुरच्छिमद्धे —जाव — पुक्खरवरदीवड्ढे पच्चत्थिमद्धे. ५

१८४ तिविहे दंसणे पण्णत्ते, तं जहा-

सम्मद्दंसणे, मिच्छदंसणे, सम्मामिच्छदंसणे.

तिविहा रुई पण्णत्ता. तं जहा-

सम्मरुई, मिच्छरुई, सम्मामिच्छरुई.

तिविहे पओगे पण्णत्ते. त जहा-

सम्मपओगे, मिच्छपओगे, सम्मामिच्छपओगे ३

१८५ तिविहे ववसाए पण्णत्ते तं जहा-

धम्मिए ववसाए,

अधम्मिए ववसाए,

धम्मियाधम्मिए ववसाए

अहवा तिविहे ववसाए पण्णत्ते. तं जहा-

पच्चक्खे, पच्चइए, आणुगामिए.

अहवा तिविहे ववसाए पण्णत्ते. तं जहा-

इहलोइए, परलोइए, इहलोइएपरलोइए.

इहलोइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते. त जहा-

लोइए, वेइए, सामइए.

लोइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते तं जहा-

अत्थे, धम्मे, कामे

वेइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते. त जहा-

रिउव्वेदे, जउव्वेदे, सामवेदे.

सामइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते. त जहा-

नाणे, दंसणे, चरित्ते

तिविहा अत्थजोणी पण्णत्ता त जहा-

सामे, दंडे, भेए ८

१८६ तिविहा पोग्गला पण्णत्ता तं जहा-

पओगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया.

तिपइट्ठिया नरगा पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविपइट्ठिया, आगासपइट्ठिया, आयपइट्ठिया.

णेगमसंगहववहाराणं पुढविपइट्ठिया,

उज्जुसुयस्स आगासपइट्ठिया,

तिण्हं सद्दणयाणं आयपइट्ठिया २

१८७ तिविहे मिच्छत्ते पण्णत्ते तं जहा-

अकिरिया, अविणए, अन्नाणे.

अकिरिया तिविहा पण्णत्ता. त जहा-

पओगकिरिया, समुदाणकिरिया, अन्नाणकिरिया.

पओगकिरिया तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

मणपओगकिरिया, वइपओगकिरिया, कायपओगकिरिया.

समुदाणकिरिया तिविहा पण्णत्ता तं जहा-

अणतरसमुदाणकिरिया,

परपरसमुदाणकिरिया,

तदुभयसमुदाणकिरिया.

अन्नाणकिरिया तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

मइअन्नाणकिरिया,

सुअअन्नाणकिरिया,

विभगअन्नाणकिरिया

अविणए तिविहे पण्णत्ते. त जहा-

प्र० से णं भंते ! सवणे किं फले ?

उ० णाणफले.

प्र० से णं भंते ! णाणे किं फले ?

उ० विण्णाणफले.

एवमेएणं अभिलावेणं इमा गाहा अणुगतव्वा-

सवणे णाणे य विण्णाणे, पच्चक्खाणे य संजमे ।
अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरिय निव्वाणे ॥

प्र० —जाव— से णं भते ! अकिरिया कि फला ?

उ० निव्वाणफला

प्र० से णं भंते ! निव्वाणे किं फले ?

उ० सिद्धिगइगमणपज्जवसाणफले पण्णत्ते, समणाउसो. !

तिट्ठाणस्स चउत्थो उद्देसो

१६१ पड़िमापड़िवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति तओ उवस्सया पडि-
लेहित्तए. त जहा-

अहे आगमणगिहंसि वा,
अहे वियड़गिहंसि वा,
अहे रुक्खमूलगिहंसि वा.
एवमणुन्नवित्तए, उवाइणित्तए.

तिविहे सम्मे पण्णत्ते तं जहा-

नाणसम्मे, दंसणसम्मे, चरित्तसम्मे.

तिविहे उवघाए पण्णत्ते. तं जहा-

उग्गमोवघाए, उप्पायणोवघाए, एसणोवघाए.

एवं विसोही ४

१९५ तिविहा आराहणा पण्णत्ता तं जहा-

णाणाराहणा, दंसणाराहणा, चरित्ताराहणा

नाणाराहणा तिविहा पण्णत्ता तं जहा-

उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना.

एवं दंसणाराहणा वि, चरित्ताराहणा वि

तिविहे संकिलेसे पण्णत्ते तं जहा-

नाणसंकिलेसे, दंसणसंकिलेसे, चरित्तसंकिलेसे

एवं असंकिलेसे वि

एवमइक्कमे वि, वइक्कमे वि, अइयारे वि, अणायारे वि.

तिण्हमइक्कमाणं आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, निंदेज्जा, गरहिज्जा —जाव— पडिवज्जिज्जा तं जहा-

नाणाइक्कमस्स, दंसणाइक्कमस्स, चरित्ताइक्कमस्स

एवं वइक्कमाण वि अइयाराणं, अणायाराणं. १४

१९६ तिविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते. तं जहा-

आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे

१९७ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तओ अकम्मभू-

मिओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

हेमवए, हरिवासे, देवकुरा.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं तओ अकम्मभू-
मीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

उत्तरकुरा, रम्मगवासे, एरण्णवए.

जंबूमंदरस्स दाहिणेणं तओ वासा पण्णत्ता तं जहा-

भरहे, हेमवए, हरिवासे.

जंबूमंदरस्स उत्तरेणं तओ वासा पण्णत्ता. तं जहा-

रम्मगवासे, हेरण्णवए, एरवए.

जंबुमंदरदाहिणेणं तओ वासहरपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

चुल्लहिमवते, महाहिमवते, णिसढे.

जंबूमंदरउत्तरेणं तओ वासहरपव्वया पण्णत्ता तं जहा-

नीलवते, रुप्पी, सिहरी.

जंबूमंदरदाहिणेणं तओ महा दहा पण्णत्ता त जहा-

पउमदहे, महापउमदहे, तिगिंछदहे.

तत्थ णं तओ देवयाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओव-
मट्ठिइयाओ परिवसंति तं जहा-

सिरी, हिरी, धिती

एवं उत्तरेण वि नवरं-केसरिदहे, महापोंडरीयदहे,
पोंडरीयदहे देवयाओ-कित्ती, बुद्धि, लच्छी

जंबूमंदरदाहिणेणं चुल्लहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ पउ-

मदहाओ महादहाओ तओ महाणईओ पवहति. तं जहा-

गगा, सिंधू, रोहितंसा.

जंबूमंदरउत्तरेण सिहरीओ वासहरपव्वयाओ पोंडरीयदहाओ महादहाओ तओ महानईओ पवहंति. तं जहा-

सुवन्नकूला, रत्ता, रत्तवती.

जंबूमंदरपुरच्छिमेण सीयाए महाणईए उत्तरेणं तओ अंतरणईओ पण्णत्ताओ त जहा-

गाहावई, दहवई, पंकवई

जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं तओ अतरणईओ पण्णत्ताओ तं जहा-

तत्तजला, मत्तजला, उम्मत्तजला.

जंबूमंदरपच्चत्थिमेण सीओदाए महाणईए दाहिणेण तओ अतरणईओ पण्णत्ताओ त जहा-

खीरोदा, सीयसोता, अतोवाहिणी

जबूमंदरपच्चत्थिमेण सीओदाए महाणईए उत्तरेण तओ अतरणईओ पण्णत्ताओ त जहा-

उम्मिमालिणी, फेणमालिणी, गभीरमालिणी

एवं धायइसडे दीवे पुरच्छिमद्धे वि अकम्मभूमीओ आढवेत्ता —जाव— अतरणईओ णिरवसेस भाणियव्वं —जाव— पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमड्ढे तहेव निरवसेसं भाणियव्वं १९

१९८ तिहिं ठाणेहिं देसे पुढवीए चलेज्जा त जहा-

अहे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उराला पोग्गला णिवत्तेज्जा, तए णं ते उराला पोग्गला णिवत्तमाणा देसं पुढवीए चलेज्जा,

महोरगे वा महिड्ढीए —जाव— महेसक्खे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे उम्मज्ज-णिमज्जियं करेमाणे देसं पुढवीए चलेज्जा,

नाग-सुवन्नाण वा संगामंसि वट्टमाणंसि देसे पुढवीए चलेज्जा

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देसे पुढवीए चलेज्जा.

तिहिं ठाणेहिं केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा. तं जहा-

अहे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए गुप्पेज्जा, तए णं से घणवाए गुविए समाणे घणोदहिमेएज्जा, तए णं से घणोदही एइए समाणे केवलकप्पं पुढविं चलेज्जा,

देवे वा महिड्ढिए —जाव— महेसक्खे तहारूवस्स समणस्स माहणस्स वा, इड्ढि जुइं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे केवलकप्पं पुढविं चलेज्जा,

देवासुरसंगामंसि वा वट्टमाणंसि केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा. २

१९९ तिविहा देवकिब्बिसिया पण्णत्ता तं जहा-

तिपलिओवमट्ठिइया,
तिसागरोवमट्ठिइया,
तेरससागरोवमट्ठिइया.

प्र० कहिणं भंते ! तिपलिओवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसंति ?

उ० उप्पिं जोइसियाणं हिट्ठि सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु एत्थ णं तिपलिओवमट्ठिइया देवा किव्विसिया परिवसंति.

प्र० कहि णं भंते ! तिसागरोवमट्ठिइया देवा किव्विसिया परिवसंति ?

उ० उप्पि सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं हेट्ठि सणंकुमार-माहिंदे कप्पे एत्थ णं तिसागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसंति.

प्र० कहि णं भंते ! तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसंति ?

उ० उप्पि बंभलोगस्स कप्पस्स हिट्ठि लंतगे कप्पे एत्थ णं तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसंति.

२०० सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो बाहिरपरिसाए देवाणं तिन्नि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता.

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अब्भिंतरपरिसाए देवीणं तिन्नि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता.

ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो वाहिरपरिसाए देवीणं तिन्नि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता. ३

२०१ तिविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते तं जहा-

नाणपायच्छित्ते, दंसणपायच्छित्ते, चरित्तपायच्छित्ते.

तओ अणुग्घाइमा पण्णत्ता. तं जहा-

हत्थकम्मं करेमाणे, मेहुणं सेवमाणे, राइभोयणं भुंजमाणे.

तओ पारंचिया पण्णत्ता. तं जहा-

दुट्ठपारंचिए,

पमत्तपारंचिए,

अन्नमन्नं करेमाणे पारंचिए.

तओ अणवट्ठप्पा पण्णत्ता. तं जहा-

साहम्मियाणं तेणं करेमाणे,

अन्नधम्मियाणं तेणं करेमाणे,

हत्थातालं दलयमाणे ४

२०२ तओ नो कप्पंति पव्वावेत्तए. तं जहा-

पंडए, वाइए, कीवे

एवं मुंडावित्तए, सिक्खावित्तए, उवट्ठावित्तए, सभुंजित्तए संवासित्तए. ६

२०३ तओ अवायणिज्जा पण्णत्ता तं जहा-

अविणीए, विगइपडिवद्धे. अविओसियपाहुडे.

तओ कप्पंति वाइत्तए. तं जहा-

विणीए, अविगइपडिबद्धे, विउसियपाहुडे

तओ दुसन्नप्पा पण्णत्ता तं जहा-

दुट्ठे, मूढे, वुग्गहिए.

तओ सुसन्नप्पा पण्णत्ता. तं जहा-

अदुट्ठे, अमूढे, अवुग्गाहिए. ४

२०४ तओ मंडलिया पव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

माणुसुत्तरे, कुंडलवरे, रुअगवरे

२०५ तओ महइमहालया पण्णत्ता तं जहा-

जंबूद्दीवे मंदरे मंदरेसु,

सयभूरणे समुद्दे समुद्देसु,

बंभलोए कप्पे कप्पेसु

२०६ तिविहा कप्पठिई पण्णत्ता तं जहा-

सामाइयकप्पठिई,

छेदोवट्ठावणियकप्पट्ठिई,

निव्विसमाणकप्पट्ठिई

अहवा तिविहा कप्पट्ठिई पण्णत्ता तं जहा-

निव्विट्ठकप्पट्ठिई, जिणकप्पठिई, थेरकप्पठिई २

२०७ नेरइयाणं तओ सरीरगा पण्णत्ता. तं जहा-

वेउव्विए, तेयए, कम्मए.

असुरकुमाराण तओ सरीरगा पण्णत्ता. तं जहा-

एवं चेव, एवं सव्वेसि देवाणं.

पुढविकाइयाणं तओ सरीरगा पण्णत्ता. तं जहा-

ओरालिए, तेयए, कम्मए.

एवं वाउकाइयवज्जाणं —जाव— चउरिंदियाणं.

२०८ गुरुं पडुच्च तओ पड़िणीया पण्णत्ता. तं जहा-

आयरियपड़िणीए, उवज्झायपड़िणीए, थेरपड़िणीए.

गइं पडुच्च तओ पड़िणीया पण्णत्ता. तं जहा-

इहलोगपड़िणीए, परलोगपड़िणीए, दुहओ लोगपड़िणीए.

समूहं पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता तं जहा-

कुलपड़िणीए, गणपड़िणीए, संघपड़िणीए.

अणुकपं पडुच्च तओ पड़िणीया पण्णत्ता. तं जहा-

तवस्सिपड़िणीए, गिलाणपड़िणीए, सेहपड़िणीए.

भावं पडुच्च तओ पड़िणीया पण्णत्ता तं जहा-

नाणपड़िणीए, दंसणपड़िणीए, चरित्तपड़िणीए.

सुयं पडुच्च तओ पड़िणीया पण्णत्ता तं जहा-

सुत्तपड़िणीए, अत्थपड़िणीए, तदुभयपड़िणीए. ६

२०९ तओ पिइयंगा पण्णत्ता. तं जहा-

अट्ठी, अट्ठिमिजा, केस-मंसु-रोम-नहे

तओ माउयंगा पण्णत्ता. तं जहा-

मंसे, सोणिए, मत्थुलिंगे. २

२१० तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ. तं जहा-

कया णं अहं अप्प वा, बहुय वा, सुयं अहिज्जिस्सामि,

कया ण अहं एकल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विह-रिस्सामि,

कया ण अहं अपच्छिममारणंतियसलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खित्ते पाओवगए कालं अणवकखमाणे विहरिस्सामि

एव समणसा, सवयसा, सकायसा पागडेमाणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ.

तिहिं ठाणेहिं समणोवासए महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ. तं जहा-

कया णं अहं अप्पं वा, वहुयं वा, परिग्गहं परिचइस्सामि,

कया णं अहं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइ-स्सामि,

कया णं अहं अपच्छिममारणंतियसलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि

एवं समणसा, सवयसा, सकायसा पागडेमाणे समणोवासए महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ. २

२११ तिविहे पोग्गलपडिघाए पण्णत्ते. तं जहा-

परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलं पप्प पडिहन्निज्जा,

लुक्खत्ताए वा पडिहन्निज्जा,

लोगते वा पडिहन्निज्जा.

२१२ तिविहे चक्खू पण्णत्ता तं जहा-
एगचक्खू, विचक्खू, तिचक्खू.
छउमत्थे णं मणुस्से एगचक्खू,
देवे बिचक्खू,
तहारूवे समणे वा, माहणे वा उप्पन्न-नाण-दसणधरे से णं
तिचक्खूत्ति वत्तव्वं सिया २

२१३ तिविहे अभिसमागमे पण्णत्ते. त जहा-
उड्ढ, अहं, तिरियं

जया णं तहारूवस्स स्समणस्स वा, माहणस्स वा अइसेसे
नाणदंसणे समुप्पज्जइ से ण तप्पढमयाए उड्ढमभिसमेइ,
तओ तिरियं,
तओ पच्छा अहे
अहोलोगे णं दुरभिगमे पण्णत्ते समणाउसो !

२१४ तिविहा इड्ढी पण्णत्ता तं जहा-
देविड्ढी, राइड्ढी, गणिड्ढी.

देविड्ढी तिविहा पण्णत्ता त जहा-
विमाणिड्ढी, विगुव्वणिड्ढी, परियारणिड्ढी.
अहवा देविड्ढी तिविहा, पण्णत्ता. तं जहा-
सचित्ता, अचित्ता, मीसिया

राइड्ढी तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
रन्नो अइयाणिड्ढी,
रन्नो निज्जाणिड्ढी,

रन्नो बल-वाहण-कोस-कोट्ठागारिड्ढी.

अहवा राइड्ढी तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
सचित्ता, अचित्ता, मीसिया

गणिड्ढी तिविहा पण्णत्ता तं जहा-
नाणिड्ढी, दसणिड्ढी, चरित्तिड्ढी

अहवा गणिड्ढी तिविहा पण्णत्ता तं जहा-
सचित्ता, अचित्ता, मीसिया. ७

२१५ तओ गारवा पण्णत्ता तं जहा-
इड्ढीगारवे, रसगारवे, सायागारवे

२१६ तिविहे करणे पण्णत्ते त जहा-
धम्मिए करणे,
अधम्मिए करणे,
धम्मियाधम्मिए करणे.

२१७ तिविहे भगवया धम्मे पण्णत्ते त जहा-
सुअहिज्झिए, सुझाइए, सुतवस्सिए.
जया सुअहिज्झियं भवइ तहा सुझाइयं भवइ,
जया सुझाइयं भवइ तया सुतवस्सियं भवइ,
से सुअहिज्झिए, सुझाइए, सुतवस्सिए सुयक्खाए णं
भगवयाधम्मे पण्णत्ते.

२१८ तिविहा वावत्ती पण्णत्ता. तं जहा-
जाणू, अजाणू, विइगिच्छा

एवमज्झोववज्जणा, परियावज्जणा ३

२१९ तिविहे अंते पण्णत्ते. तं जहा-

लोगंते, वेयते, समयते.

२२० तओ जिणा पण्णत्ता तं जहा-

ओहिणाणजिणे,

मणपज्जवणाणजिणे,

केवलणाणजिणे.

तओ केवली पण्णत्ता. तं जहा-

ओहिनाणकेवली,

मणपज्जवनाणकेवली,

केवलनाणकेवली

तओ अरहा, पण्णत्ता तं जहा-

ओहिनाणअरहा,

मणपज्जवनाणअरहा,

केवलनाणअरहा ३

२२१ तओ लेसाओ दुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा.

तओ लेसाओ सुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

तेऊलेसाओ, पम्हलेसाओ, सुक्कलेसाओ.

एवं दोग्गतिगामिणीओ, सोगतिगामिणीओ, संकिलिट्ठाओ, असंकिलिट्ठाओ, अमणुण्णाओ, मणुण्णाओ, अविसुद्धाओ, विसुद्धाओ, अप्पसत्थाओ, पसत्थाओ, सीतलुक्खाओ,

निह्नुण्हाओ १४

२२२ तिविहे मरणे पण्णत्ते. तं जहा-

वालमरणे, पडियमरणे, वालपडियमरणे.

वालमरणे तिविहे पण्णत्ते तं जहा-

ठियलेसे, सकिलिट्ठलेसे, पज्जवजायलेसे.

पडियमरणे तिविहे पण्णत्ते. त जहा-

ठियलेसे, असकिलिट्ठलेसे, पज्जवजायलेसे.

वालपंडितमरणे तिविहे पण्णत्ते त जहा-

ठियलेसे, असकिलिट्ठलेसे, अपज्जवजायलेसे ४

२२३ तओ ठाणा अव्ववसियस्स अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवति त जहा-

से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए निग्गथे, पावयणे, सकिए, कखिए, वितिगिच्छिए, भेदसमावन्ने, कलुससमावन्ने निग्गथं पावयणं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, तं परिस्सहा अभिजुजिय, अभिजुंजिय अभिभवति, नो से परिस्सहे अभिजुजिय अभिजुंजिय अभिभवइ,

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ, अणगारियं पव्वइए पंचहिं महव्वएहिं सकिए --जाव-- कलुससमावन्ने पच महव्वयाद नो सद्दहइ -- जाव--- नो से परिस्सहे अभिजुजिय, अभिजुजिय अभिभवइ,

से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए छहिं

जीवनिकाएहिं —जाव— अभिभवइ.

तओ ठाणा ववसियस्स हियाए —जाव— आणुगामियत्ताए भवंति. तं जहा-

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए निग्गंथे पावयणे, निस्संकिए, निक्कंखिए —जाव— नो कलुससमावन्ने निग्गंथे पावयणे सद्दहइ, पत्तियइ, रोएइ से परिस्सहे अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवइ, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवंति,

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचहिं महव्वएहिं निस्संकिए निक्कंखिए —जाव— परिस्सहे अभिजुंजिय, अभिजुंजिय अभिभवइ, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवंति,

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए छहिं जीवनिकाएहिं निस्संकिए —जाव— परिस्सहे अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवइ, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिय, अभिजुंजिय अभिभवंति

२२४ एगमेगा णं पुढवी तिहिं वलएहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता तं जहा-

घणोदहिवलएणं, घणवायवलएणं, तणुवायवलएणं.

२२४ नेरइया णं उक्कोसेणं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जंति, एगिंदियवज्जं —जाव— वेमाणियाणं

२२६ खीणमोहस्स णं अरहओ तओ कम्मंसा जुगवं खिज्जंति तं जहा-

नाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं, अंतराइयं.

२२७ अभिइणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते

एवं सवणो, अस्सिणी, भरणी, मगसिरे, पूसे, जेट्ठा ६

२२८ धम्माओ णं अरहाओ संती अरहा तिहिं सागरोवमेहिं ति-चउब्भागपलिओवमऊणएहिं वीइक्कंतेहिं समुप्पन्ने.

२२९ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स —जाव— तच्चाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकरभूमी,

मल्ली णं अरहा तिहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता —जाव— पव्वइए. एवं पासे वि. ३

२३० समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तिन्नि सया चउद्दसपुव्वीण अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसन्निवाइणं जिण इव अवितहवागरमाणाणं उक्कोसिया चउद्दसपुव्विसंपया हुत्था

२३१ तओ तित्थयरा चक्कवट्टी होत्था. तं जहा-

संती, कुंथू, अरो

२३२ तओ गेविज्ज-विमाण-पत्थड़ा पन्नत्ता तं जहा-

हिट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,

मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,

उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े.

हिट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े तिविहे पण्णत्ते. तं जहा-

हेट्ठिम हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाणपत्थडे,
हेट्ठिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
हेट्ठिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे.

मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे तिविहे पण्णत्ते. तं जहा-
मज्झिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
मज्झिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
मज्झिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे.

उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, तिविहे पण्णत्ते. तं जहा-
उवरिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे.
उवरिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
उवरिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे ४

२३३ जीवाणं तिट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा, चिणंति वा, चिणिस्संति वा तं जहा-
इत्थिनिव्वत्तिए, पुरिसनिव्वत्तिए, नपुंसगनिव्वत्तिए.
एवं चिण-उवचिण-बंध-उदीर-वेद-तह निज्जरा चेव. ६

२३४ तिपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता,
एवं —जाव – तिगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता. २३

चउट्ठाणं

चउट्ठाणस्स पढमो उद्देसो

२३५ चत्तारि अतकिरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
तत्थ खलु पढमा इमा अंतकिरिया,
अप्पकम्मपच्चायाए यावि भवइ,
से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए,
सजमवहुले, सवरवहुले, समाहिबहुले, लूहे, तीरट्ठी,
उवहाणवं, दुक्खक्खवे तवस्सी, तस्स णं नो तहप्पगारे
तवे भवइ, नो तहप्पगारा वेयणा भवइ
तहप्पगारे पुरिसजाए दीहेणं परितावेण, सिज्झइ, बुज्झइ,
मुच्चइ, परिनिव्वायइ, सव्वदुक्खाणमत करेइ
जहा से भरहे राया चाउरतचक्कवट्टी,
पढमा अतकिरिया

अहावरा दोच्चा अतकिरिया,
महाकम्मे पच्चायाए यावि भवइ
से णं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए,
सजमबहुले, सवरबहुले, —जाव— उवहाणवं दुक्ख-
क्खवे तवस्सी तस्स ण तहप्पगारे तवे भवइ, तहप्पगारा

वेयणा भवइ.

तहप्पगारे पुरिसजाए निरुद्धेणं परितावेण सिज्झइ —जाव— अंतं करेइ

जहा से गयसुकुमाले अणगारे,

दोच्चा अंतकिरिया

अहावरा तच्चा अंतकिरिया,

महाकम्मे पच्चायाए यावि भवइ

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए,

जहा दोच्चा. नवरं-दीहेण परितावेण सिज्झइ —जाव— सव्वदुक्खाणमंतं करेइ

जहा से सणंकुमारे राया चाउरंतचक्कवट्टी,

तच्चा अंतकिरिया.

अहावरा चउत्था अंतकिरिया,

अप्पकम्मपच्चायाए यावि भवइ.

से णं मुंडे भवित्ता —जाव— पव्वइए संजमबहुले, —जाव— तस्स णं नो तहप्पगारे तवे भवइ. नो तहप्पगारा वेयणा भवइ.

तहप्पगारे पुरिसजाए निरुद्धेण परितावेण सिज्झइ —जाव— सव्वदुक्खाणमंतं करेइ

जहा सा मरुदेवा भगवई,

चउत्था अंतकिरिया

२३६ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता तं जहा-

उन्नए नामेगे उन्नए, उन्नए नामेगे पणए,
पणए नामेगे उन्नए, पणए नामेगे पणए.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उन्नए नामेगे उन्नए,
तहेव जाव— पणए नामेगे पणए.

चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता त जहा-
उन्नए नामेगे उन्नय-परिणए,
उन्नए नामेगे पणय-परिणए,
पणए नामेगे उन्नय-परिणए,
पणए नामेगे पणय-परिणए

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
उन्नए नामेगे उन्नय-परिणए,
तहेव —जाव— पणए नामेगे पणय-परिणए

चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता त जहा-
उन्नए नामेगे उन्नय-रूवे, उन्नए नामेगे पणय-रूवे,
पणए नामेगे उन्नय-रूवे, पणए नामेगे पणय-रूवे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
उन्नए नामेगे उन्नय-रूवे,
तहेव – जाव— पणए नामेगे पणय-रूवे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
उन्नए नामेगे उन्नय-मणे, उन्नए नामेगे पणय-मणे,

पणय नामेगे उन्नय-मणे, पणए नामेगे पणय-मणे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

उन्नए नामेगे उन्नय-संकप्पे,

उन्नए नामेगे पणय-संकप्पे,

पणय नामेगे उन्नय-संकप्पे,

पणय नामेगे पणय-सकप्पे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

उन्नए नामेगे उन्नय-पन्ने, उन्नए नामेगे पणय-पन्ने,

पणए नामेगे उन्नय-पन्ने, पणए नामेगे पणय-पन्ने.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

उन्नए नामेगे उन्नय-दिट्ठी,

उन्नए नामेगे पणय-दिट्ठी,

पणए नामेगे उन्नय-दिट्ठी,

पणए नामेगे पणय-दिट्ठी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

उन्नए नामेगे उन्नय-सीलायारे,

उन्नए नामेगे पणय-सीलायारे,

पणए नामेगे उन्नय-सीलायारे,

पणए नामेगे पणय-सीलायारे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

उन्नए नामेगे उन्नय-ववहारे,

उन्नए नामेगे पणय-ववहारे,

पणए नामेगे उन्नय-ववहारे,
पणए नामेगे पणय-ववहारे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
उन्नए नामेगे उन्नए-परक्कमे,
उन्नए नामेगे पणय-परक्कमे,
पणए नामेगे उन्नय-परक्कमे,
पणए नामेगे पणय-परक्कमे.
एगे पुरिसजाए पडिवक्खो नत्थि.

चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता तं जहा-
उज्जू नामेगे उज्जू, उज्जू नामेगे वंके,
वंके नामेगे उज्जू, वंके नामेगे वंके

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
उज्जू नामेगे उज्जू, तहेव —जाव— वंके नामेगे वंके.
एव जहा उन्नय-पणएहिं गमो, तहा उज्जू-वंकेहिं वि
भाणियव्वो —जाव— परक्कमे. १४

२३७ पडिमापडिवन्नस्स णं अणगारस्स कप्पंति चत्तारि भासाओ
भासित्तए तं जहा-
जायणी, पुच्छणी, अणुन्नवणी, पुट्ठस्स वागरणी.

२३८ चत्तारी भासजाया पण्णत्ता तं जहा-
सच्चमेगं भासज्जाय, बीयं मोस,
तइयं सच्चमोस, चउत्थ असच्चमोसं.

२३९ चत्तारि वत्था पण्णत्ता तं जहा-

सुद्धे नामेगे सुद्धे, सुद्धे नामेगे असुद्धे,
असुद्धे नामेगे सुद्धे. असुद्धे नामेगे असुद्धे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

सुद्धे नामेगे सुद्धे,
तहेव —जाव— असुद्धे नामेगे असुद्धे
एव परिणय-रूवे वत्था सपडिवक्खा.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

सुद्धे नामेगे सुद्ध-मणे, सुद्धे नामेगे असुद्ध-मणे,
असुद्धे नामेगे सुद्ध-मणे, असुद्धे नामेगे असुद्ध-मणे.
एव सकप्पे —जाव— परक्कमे १०

२४० चत्तारि सुया पण्णत्ता त जहा-

अइजाए, अणुजाए, अवजाए, कुलिंगाले.

२४१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

सच्चे नामेगे सच्चे, सच्चे नामेगे असच्चे,
असच्चे नामेगे सच्चे, असच्चे नामेगे असच्चे
एव परिणए —जाव— परक्कमे १०

चत्तारि वत्था पण्णत्ता तं जहा-

सुई नामेगे सुई, सुई नामेगे असुई,
असुई नामेगे सुई, असुई नामेगे असुई

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

सुई नामेगे सुई,

तहेव —जाव— असुई नामेगे असुई

एव जहेव सुद्धेणं वत्थेणं भणिय तहेव सुइणावि --जाव—
परक्कमे १०

२४२ चत्तारि कोरवा पण्णत्ता त जहा-

अव-पलव-कोरवे, ताल-पलंब-कोरवे,

वल्लि-पलव-कोरवे, मेंढ-विसाण-कोरवे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. त जहा-

अव-पलव-कोरवसमाणे, ताल-पलंब-कोरवसमाणे,

वल्लि-पलव-कोरवसमाणे, मेढ-विसाण-कोरवसमाणे

२४३ चत्तारि घुणा पण्णत्ता त जहा-

तयक्खाए, छल्लिक्खाए, कट्ठक्खाए, सारक्खाए.

एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता त जहा-

तयक्खायसमाणे —जाव— सारक्खायसमाणे.

तयक्खायसमाणस्स ण भिक्खागस्स सारक्खायसमाणे तवे
पण्णत्ते,

सारक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स तयक्खायसमाणे तवे
पण्णत्ते,

छल्लिक्खायसमाणस्स ण भिक्खागस्स कट्ठक्खायसमाणे तवे
पण्णत्ते,

कट्ठक्खायसमाणस्स ण भिक्खागस्स छल्लिक्खायसमाणे

तवे पण्णत्ते.

२४४ चउव्विहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता. तं जहा-
अग्ग-बीया, मूल-बीया, पोर-बीया, खंध-बीया.

२४५ चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे नेरइए नेरइयलोगंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव ण संचाएइ हव्वमागच्छित्तए

अहुणोववण्णे नेरइए निरयलोगंसि समुब्भूयं वेयणं वेयमाणे इच्छेज्जा माणुस लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए,

अहुणोववण्णे नेरइए निरयलोगंसि निरयपालेहिं भुज्जो, भुज्जो अहिट्ठिज्जमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोग हव्वमागच्छित्तए, नो चेव ण संचाएइ हव्वमागच्छित्तए,

अहुणोववण्णे नेरइए णिरयवेयणिज्जसि कम्मंसि अक्खीणसि अवेइयंसि अणिज्जिण्णंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं सचाएइ हव्वमागच्छित्तए,

अहुणोववण्णे नेरइए निरयाउअसि कम्मसि अक्खीणंसि अवेइयसि अणिज्जिण्णसि इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए.

इच्चेएहिं चउहि ठाणेहिं अहुणोववन्ने नेरइए —जाव— नो चेव णं सचाएइ हव्वमागच्छित्तए.

२४६ कप्पति निग्गथीणं चत्तारि सघाडीओ धारित्तए वा, परि-

हरित्तए वा. तं जहा-

एगं दुहत्थवित्थारं,

दो तिहत्थवित्थारा,

एगं चउहत्थवित्थारं.

२४७ चत्तारि झाणा पण्णत्ता तं जहा-

अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे.

अट्टे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा-

अमणुन्न-संपओग-सपउत्ते तस्स विप्पओग-सइ-समण्णागए यावि भवइ.

मणुन्न-संपओग-सपउत्ते तस्स अविप्पओग-सइ-समण्णागए यावि भवइ

आयंक-संपओग-संपउत्ते तस्स विप्पओग-सइ-समण्णागए यावि भवइ

परिजुसिय-काम-भोग-संपओग-सपउत्ते तस्स अविप्पओग-सइ-समण्णागए यावि भवइ

अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता. तं जहा-

कंदणया, सोयणया, तिप्पणया, परिदेवणया.

रोद्दे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा-

हिंसाणुबंधि, मोसाणुबंधि,

तेणाणुबंधि, सारक्खणाणुबंधि

रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता तं जहा-

ओसण्णदोसे, बहुदोसे, अन्नाणदोसे, आमरणंतदोसे.

धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पड़ोयारे पण्णत्ते. तं जहा-
आणाविजए, अवायविजए,
विवागविजए, सठाणविजए.

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता. तं जहा-
आणारुई, णिसग्गरुई, सुत्तरुई, ओगाढरुई.

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंवणा पण्णत्ता. तं जहा-
वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा.

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
एगाणुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा,
असरणाणुप्पेहा, संसाराणुप्पेहा

सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पड़ोयारे पण्णत्ते तं जहा-
पुहुत्तवितक्के सवियारी,
एगत्तवितक्के अवियारी,
सुहुमकिरिए अणियट्टी,
समुच्छिन्नकिरिए अप्पडिवाई,

सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता. तं जहा-
अव्वहे, असम्मोहे, विवेगे, विउस्सग्गे

सुक्कस्स ण झाणस्स चत्तारि आलवणा पण्णत्ता तं जहा-
खती, मुत्ती, मद्दवे, अज्जवे

सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

अणतवत्तियाणुप्पेहा, विप्परिणामाणुप्पेहा,
असुभाणुप्पेहा, अवायाणुप्पेहा.

२४८ चउव्विहा देवाण ठिई पण्णत्ता त जहा-
देव नामेगे, देवसिणाए नामेगे,
देवपुरोहिए नामेगे, देवपज्जलणे नामेगे

चउव्विहे सवासे पण्णत्ते तं जहा-
देवे नामेगे देवीए सद्धि संवास गच्छेज्जा,
देवे नामेगे छवीए सद्धि सवास गच्छेज्जा,
छवी नामेगे देवीए सद्धि सवास गच्छेज्जा,
छवी नामेगे छवीए सद्धि संवास गच्छेज्जा २

२४९ चत्तारि कसाया पण्णत्ता तं जहा-
कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए.
एवं नेरइयाणं —जाव— वेमाणियाण

चउपइट्ठिए कोहे पण्णत्ते त जहा-
आयपइट्ठिए, परपइट्ठिए, तदुभयपइट्ठिए, अपइट्ठिए.
एवं नेरइयाण —जाव— वेमाणियाणं
एवं माणे —जाव— लोभे वेमाणियाण

चउहि ठाणेहि कोहुप्पत्ती सिया तं जहा-
खेत्तं पडुच्चा, वत्थुं पडुच्चा,
सरीरं पडुच्चा, उवहि पडुच्चा.
एवं नेरइयाणं —जाव— वेमाणियाण

एवं माणे —जाव— लोभे वेमाणियाणं.

चउव्विहे कोहे पण्णत्ते तं जहा-

अणताणुबंधिकोहे, अपच्चक्खाणकोहे,

पच्चक्खाणावरणे कोहे, संजलणे कोहे.

एवं नेरइयाण —जाव— वेमाणियाणं.

एवं माणे —जाव— लोभे वेमाणियाणं

चउव्विहे कोहे पण्णत्ते तं जहा-

आभोगणिव्वत्तिए, अणाभोगणिव्वत्तिए,

उवसंते, अणुवसंते.

एव नेरइयाण - जाव— वेमाणियाणं.

एवं माणे —जाव— लोभे वेमाणियाणं ५

२५० जीवा ण चउहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिसु. तं जहा-

कोहेण, माणेण, मायाए, लोभेणं.

एव नेरइयाण —जाव— वेमाणियाण

एवं चिणति एस दंडओ.

एव चिणिस्सति एस दंडओ एवमेएणं तिण्णी दंडगा.

एवं उवचिणिसु उवचिणति. उवचिणिस्संति

बंधिसु. बंधति बंधिस्सति.

उदीरिसु. उदीरेंति उदीरिस्संति.

वेदेंसु वेदेंति. वेदीस्संति

निज्जरेंसु. निज्जरेंति. निज्जरिस्संति —जाव— वेमा-
णियाणं.

एवमेक्केक्के पए तिण्णि तिण्णि दंडगा भाणियव्वा
— जाव— निज्जरिस्संति. १८

२५१ चत्तारि पडिमाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
समाहिपडिमा, उवहाणपडिमा,
विवेगपड़िमा, विउस्सग्गपड़िमा.

चत्तारि पड़िमाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा, सव्वओभद्दा.

चत्तारि पड़िमाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
खुड्डिया-मोयपड़िमा, महल्लिया-मोयपडिमा,
जवमज्झा, वइरमज्झा. ३

२५२ चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया पण्णत्ता तं जहा-
धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए,
आगासत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए.

चत्तारि अत्थिकाया अरुविकाया पण्णत्ता तं जहा-
धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए,
आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए २

२५३ चत्तारि फला पण्णत्ता तं जहा-
आमे नामेगे आममहुरे, आमे नामेगे पक्कमहुरे,
पक्के नामेगे आममहुरे, पक्के नामेगे पक्कमहुरे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
आमे नामेगे आममहुरफलसमाणे

तहेव —जाव— पक्के नामेगे पक्कमहुरफलसमाणे.

२५४ चउव्विहे सच्चे पण्णत्ते. तं जहा-

काउज्जुयया, भासुज्जुयया,

भावुज्जुयया, अविसंवायणाजोगे.

चउव्विहे मोसे पण्णत्ते. तं जहा-

कायअणुज्जुयया, भासअणुज्जुयया,

भावअणुज्जुयया, विसंवायणाजोगे.

चउव्विहे पणिहाणे पण्णत्ते तं जहा-

मणपणिहाणे, वइपणिहाणे,

कायपणिहाणे, उवगरणपणिहाणे,

एवं नेरइयाणं पंचिदियाणं —जाव— वेमाणियाणं.

चउव्विहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते. तं जहा-

मणसुप्पणिहाणे —जाव— उवगरणसुप्पणिहाणे.

एवं सजयमणुस्साण वि.

चउव्विहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते तं जहा-

मणदुप्पणिहाणे —जाव— उवगरणदुप्पणिहाणे.

एव पंचिदियाणं —जाव— वेमाणियाण. ५

२५५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

आवायभद्दए नामेगे नो संवासभद्दए,

सवासभद्दए नामेगे नो आवायभद्दए,

एगे आवायभद्दए वि संवासभद्दए वि,

एगे नो आवायभद्दए नो सवासभद्दए

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. त जहा-
अप्पणो नामेगे वज्ज पासइ नो परस्स,
परस्स नामेगे वज्ज पासइ नो अप्पणो,
एगे अप्पणो वि वज्ज पासइ परस्स वि,
एगे नो अप्पणो वज्ज पासइ नो परस्स.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अप्पणो नामेगे वज्ज उदीरेइ नो परस्स. तहेव —जाव—
एगे नो अप्पणो वज्जं उदीरेइ नो परस्स

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अप्पणो नामेगे वज्जं उवसामेइ तहेव —जाव—
एगे नो अप्पणो वज्ज उवसामेइ नो परस्स

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
अब्भुट्ठेइ नामेगे नो अब्भुट्ठावेइ,
अब्भुट्ठावेइ नामेगे नो अब्भुट्ठेइ,
एगे अब्भुट्ठेइ वि अब्भुट्ठावेइ वि,
एगे नो अब्भुट्ठेइ नो अब्भुट्ठावेइ

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
वदइ नामेगे, नो वंदावेइ,
वंदावेइ नामेगे, नो वदइ,
एगे वदइ वि, वंदावेइ वि,
एगे नो वंदइ नो वंदावेइ.
एवं सक्कारेइ. सम्माणेइ पूएइ. वाएइ. पड़िपुच्छइ.

पुच्छइ. वागरेइ.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

सुत्तधरे नामेगे नो अत्थधरे,

अत्थधरे नामेगे नो सुत्तधरे,

एगे सुत्तधरे वि अत्यधरे वि,

एगे नो सुत्तधरे नो अत्थधरे १४

२५६ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता तं जहा-

सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे.

एवं बलिस्स वि. सोमे, जमे, वेसमणे, वरुणे

एवं धरणस्स वि.

कालपाले, कोलपाले, सेलपाले, संखपाले.

एवं भूयाणंदस्स वि.

कालपाले, कोलपाले, सखपाले, सेलपाले

एवं वेणुदेवस्स वि

चित्ते, विचित्ते, चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे.

एवं वेणुदालिस्स वि

चित्ते, विचित्ते, विचित्तपक्खे, चित्तपक्खे.

एवं हरिकंतस्स वि

पभे, सुपभे, पभकंते, सुपभकंते.

एवं हरिस्सहस्स वि.

पभे, सुपभे, सुपभकते, पभकते.

एव अग्गिसिहस्स वि

तेउ, तेउसिहे, तेउकते, तेउप्पभे.

एवं अग्गिमाणवस्स वि.

तेऊ, तेऊसिहे, तेउप्पभे, तेउकते

एव पन्नस्स वि

रूए, रूयसे, रूयकते, रूयप्पभे.

एव विसिट्ठस्स वि,

रूए, रूयसे, रूयप्पभे, रूयकते

एवं जलकतस्स वि.

जले, जलरए, जलकते, जलप्पभे

एवं जलप्पहस्स वि

जले, जलरए, जलप्पभे, जलकते

एवं अमितगतिस्स वि.

तुरियगइ, खिप्पगइ, सीहगइ, सीहविक्कमगइ.

एवं अमितवाहणम्स वि

तुरियगइ, खिप्पगइ, सीहविक्कमगइ, सीहगइ.

एवं वेलवस्स वि.

काले, महाकाले, अंजणे, रिट्ठे.

एवं पभजणस्स वि

काले, महाकाले, रिट्ठे, अंजणे

एवं घोसस्स वि

आवत्ते, वियावत्ते, णंदियावत्ते, महाणंदियावत्ते.

एवं महाघोसस्स वि.

आवत्ते, वियावत्ते, महाणंदियावत्ते, णंदियावत्ते.

एवं सक्कस्स वि

सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे

एवं ईसाणस्स वि.

सोमे, जमे, वेसमणे. वरुणे.

एवं एगंतरिया —जाव— अच्चुयस्स

चउव्विहा वाउकुमारा पण्णत्ता तं जहा-

काले, महाकाले, वेलंबे, पभंजणे. २३

२५७ चउव्विहा देवा पण्णत्ता. तं जहा-

भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, विमाणवासी.

२५८ चउव्विहे पमाणे पण्णत्ते तं जहा-

दव्वप्पमाणे, खेत्तप्पमाणे, कालप्पमाणे, भावप्पमाणे

२५९ चत्तारि दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ तं जहा-

रूया, रूयंसा, सुरूवा, रूपावती

चत्तारि विज्जूकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ तं जहा-

चित्ता, चित्तकणगा, सएरा, सोयामणी २

२६० सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाए देवा चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता

ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाए देवीण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता. २

२६१ चउव्विहे संसारे पण्णत्ते त जहा-
दव्वससारे, खेत्तससारे, कालससारे, भावससारे.

२६२ चउव्विहे दिट्ठिवाए पण्णत्ते त जहा-
परिकम्म, सुत्ताइ, पुव्वगए, अणुजोगे

२६३ चउव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते. त जहा-
नाणपायच्छित्ते, दसणपायच्छित्ते,
चरित्तपायच्छित्ते, चियत्तकिच्चपायच्छित्ते.

चउव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते त जहा-
परिसेवणापायच्छित्ते, सजोयणापायच्छित्ते,
आलोअणापायच्छित्ते, पलिउचणापायच्छित्ते २

२६४ चउव्विहे काले पण्णत्ते त जहा-
पमाणकाले, अहाउयनिव्वत्तिकाले,
मरणकाले, अद्धाकाले.

२६५ चउव्विहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते त जहा-
वण्णपरिणामे, गधपरिणामे,
रसपरिणामे, फासपरिणामे

२६६ भरहेरवएसु ण वासेसु पुरिम-पच्छिमवज्जा मज्झिमग

वावीसं अरहंता भगवंता चाउज्जामं धम्मं पण्णवेंति. तं जहा-

सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं,

सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं,

सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं,

सव्वाओ वहिद्धादाणाओ वेरमणं

सव्वेसु णं महाविदेहेसु अरहंता भगवंता चाउज्जामं धम्मं पण्णवेंति. तं जहा-

सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं —जाव—

सव्वाओ वहिद्धादाणाओ वेरमणं. २

२६७ चत्तारि दुग्गइओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

नेरइयदुग्गई, तिरिक्खजोणियदुग्गई,

मणुस्सदुग्गई, देवदुग्गई.

चत्तारि सुगइओ पण्णत्ताओ तं जहा-

सिद्धसुगई, देवसुगई,

मणुयसुगई, सुकलपच्चायाई.

चत्तारि दुग्गया पण्णत्ता. त जहा-

नेरइयदुग्गया, तिरिक्खजोणियदुग्गया,

मणुयदुग्गया, देवदुग्गया.

चत्तारि सुगया पण्णत्ता. तं जहा-

सिद्धसुगया —जाव— सुकुलपच्चायया. ४

२६८ पढमसमयजिणस्स णं चत्तारि कम्मंसा खीणा भवंति. तं जहा-

नाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं,

मोहणिज्जं, अंतराइय

उप्पण्णणाणदसणधरे ण अरहा जिणे केवली चत्तारि कम्मंसे वेदेंति तं जहा-

वेयणिज्जं, आउयं, नाम, गोत्तं

पढमसमयसिद्धस्स णं चत्तारि कम्मसा जुगवं खिज्जंति. तं जहा-

वेयणिज्जं, आउयं, नाम, गोत्तं. ३

२६९ चउहिं ठाणेहिं हासुप्पत्ती सिया. तं जहा-

पासित्ता, भासेत्ता, सुणेत्ता, संभरेत्ता.

२७० चउव्विहे अंतरे पण्णत्ते तं जहा-

कट्ठंतरे, पम्हंतरे, लोहतरे, पत्थरतरे.

इत्थिए वा पुरिसस्स वा चउव्विहे अतरे पण्णत्ते. तं जहा-

कट्ठंतरसमाणे, पम्हंतरसमाणे,

लोहंतरसमाणे, पत्थरंतरसमाणे. २

२७१ चत्तारि भयगा पण्णत्ता तं जहा-

दिवसभयए, जत्ताभयए,

उच्चत्तभयए, कब्बालभयए

२७२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

संपागडपड़िसेवी नामेगे नो पच्छण्णपड़िसेवी,
पच्छण्णपड़िसेवी नामेगे नो सपागडपड़िसेवी,
एगे सपागड़पडिसेवी वि पच्छण्णपड़िसेवी वि,
एगे नो संपागडपडिसेवी नो पच्छण्णपड़िसेवी.

२७३ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
कणगा, कणगलया, चित्तगुत्ता, वसुंधरा
एवं जमस्स, वरुणस्स, वेसमणस्स.

वलिस्स ण वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
मितगा, सुभद्दा, विज्जुत्ता, असणी
एवं जमस्स, वेसमणस्स, वरुणस्स

धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
असोगा, विमला, सुप्पभा, सुदंसणा
एवं —जाव— संखवालस्स

भूताणंदस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं जहा-
सुणंदा, सुभद्दा, सुजाया, सुमणा
एवं —जाव— सेलवालस्स जहा धरणस्स
एवं सव्वेसिं दाहिणिंदलोगपालाणं —जाव— घोसस्स जहा भूताणंदस्स.

एवं —जाव— महाघोसस्स लोगपालाणं.

कालस्स णं पिसाइंदस्स पिसायरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदंसणा.

एवं महाकालस्स वि.

सुरूवस्स णं भूइंदस्स भूयरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

रूववई, बहुरूवा, सुरूवा, सुभगा

एव पडिरूवस्स वि

पुण्णभद्दस्स ण जक्खिंदस्स जक्खरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

पुत्ता, बहुपुत्तिया, उत्तमा, तारगा

एव माणिभद्दस्स वि

भीमस्स ण रक्खसिंदस्स रक्खसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. त जहा-

पउमा, वसुमई, कणगा, रयणप्पभा.

एव महाभीमस्स वि

किंनरस्स णं किंनरिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

वडेंसा, केतुमई, रइसेणा, रइप्पभा

एव किंपुरिसस्स वि

सप्पुरिसस्स णं किंपुरिसिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

रोहिणी, नवमिया, हिरी, पुप्फवई.

एवं महापुरिसस्स वि

अइकायस्स णं महोरगिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

भुयगा, भुयगवई, महाकच्छा, फुडा.

एवं महाकायस्स वि

गीयरइस्स णं गंधव्विंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

सुघोसा, विमला, सुस्सरा, सरस्सई

एवं गीयजसस्स वि.

चंदस्स ण जोईसिंदस्स जोइसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

चंदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा.

एवं सूरस्स वि णवरं सुरप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा.

इंगालस्स णं महागहस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

विजया, वेजयंति, जयंति, अपराजिया

एवं सव्वेसिं महग्गहाणं —जाव— भावकेउस्स.

सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि

अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं जहा-
रोहिणी, मयणा, चित्ता, सोमा.
एवं —जाव— वेसमणस्स.

ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि
अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं जहा-
पुढवी, राई, रयणी, विज्जू
एवं —जाव— वरुणस्स २३०

२७४ चत्तारि गोरसविगईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
खीरं, दहिं, सप्पिं, णवणीयं

चत्तारि सिणेहविगईओ पण्णत्ताओ. त जहा-
तेल्लं, घय, वसा, नवणीय

चत्तारि महाविगईओ पण्णत्ताओ तं जहा-
महुं, मंस, मज्जं, णवणीय. ३

२७५ चत्तारि कूड़ागारा पण्णत्ता तं जहा-
गुत्ते नामेगे गुत्ते, गुत्ते नामेगे अगुत्ते,
अगुत्ते नामेगे गुत्ते, अगुत्ते नामेगे अगुत्ते.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
गुत्ते नामेगे गुत्ते, —जाव—
अगुत्ते नामेगे अगुत्ते

चत्तारि कूडागारसालाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
गुत्ता नामेगा गुत्तदुवारा,

गुत्ता नामेगा अगुत्तदुवारा,
अगुत्ता नामेगा गुत्तदुवारा,
अगुत्ता नामेगा अगुत्तदुवारा.

एवामेव चत्तारित्थीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

गुत्ता नामेगा गुत्तिंदिया,
गुत्ता नामेगा अगुत्तिंदिया,
गुत्तिंदिया नामेगा अगुत्ता,
अगुत्तिंदिया नामेगा अगुत्ता. ४

२७६ चउव्विहा ओगाहणा पण्णत्ता तं जहा-

दव्वोगाहणा, खेत्तोगाहणा,
कालोगाहणा, भावोगाहणा.

२७७ चत्तारि पण्णत्तीओ अंगबाहिरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती,
जंबुद्दीवपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती.

चउट्ठाणस्स बीओ उद्देसो

२७८ चत्तारि पडिसलीणा पण्णत्ता. तं जहा-

कोहपडिसंलीणे, माणपडिसंलीणे,
मायापडिसंलीणे, लोभपडिसलीणे.

चत्तारि अपडिसंलीणा पण्णत्ता. तं जहा-

कोहअपडिसलीणे —जाव— लोभअपडिसंलीणे.

चत्तारि पड़िसंलीणा पण्णत्ता तं जहा-
मणपडिसलीणे, वइपड़िसंलीणे,
कायपड़िसलीणे, इदियपड़िसलीणे
चत्तारि अपड़िसंलीणा पण्णत्ता तं जहा-
मणअपड़िसंलीणे —जाव— इदियअपड़िसंलीणे. ४

२७९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीणे, दीणे नामेगे अदीणे,
अदीणे नामेगे दीणे, अदीणे नामेगे अदीणे
चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
दीणे नामेगे दीणपरिणए,
दीणे नामेगे अदीणपरिणए,
अदीणे नामेगे दीणपरिणए,
अदीणे नामेगे अदीणपरिणए
चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीणरूवे तहेव — जाव —
अदीणे नामेगे अदीणरूवे
एव दीणमणे, दीणसंकप्पे, दीणपण्णे, दीणदिट्ठी, दीणसीला-
यारे, दीणववहारे.
चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीणपरक्कमे, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणपरक्कमे.
एवं सव्वेसिं चउभंगो भाणियव्वो.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
दीणे नामेगे दीणवित्ती, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणवित्ती.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दीणे नामेगे दीणजाई, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणजाई.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
दीणे नामेगे दीणभासी, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणभासी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीणोभासी, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणोभासी.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीणसेवी, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणसेवी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीण परियाए, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीण परियाए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
दीणे नामेगे दीणपरियाले, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणपरियाले.

सव्वत्थ चउभगो. १७

२८० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जे, अज्जे नामेगे अणज्जे,
अणज्जे नामेगे अज्जे, अणज्जे नामेगे अणज्जे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जपरिणए, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जपरिणए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्ज नामेगे अज्जरूवे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जरूवे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जमणे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जमणे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जसंकप्पे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जसकप्पे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

अज्जे नामेगे अज्जपण्णे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जपण्णे.

चत्तारिपुरिस जाया पण्णत्ता त जहा-

अज्जे नामेगे अज्जदिट्ठी, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जदिट्ठी.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जसीलायारे, तहेव —जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जसीलायारे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जववहारे, तहेव —जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जववहारे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जपरक्कमे, तहेव —जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जपरक्कमे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जवित्ती, तहेव —जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जवित्ती

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जजाई, तहेव —जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जजाई

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जभासी, तहेव —जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जभासी.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जओभासी, तहेव —जाव —

अणज्जे नामेगे अणज्जओभासी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जसेवी, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जसेवी.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जपरियाए, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जपरियाए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. त जहा-
अज्जे मामेगे अज्जपरियाले, तहेव – जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जपरियाले.
एव सत्तर आलावगा जहा दीणेणं भणिया तहा अज्जेण वि भाणियव्वा.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जभावे, अज्जे नामेगे अणज्जभावे,
अणज्जे नामेगे अज्जभावे, अणज्जे नामेगे अणज्जभावे १८

२८१ चत्तारि उसभा पण्णत्ता. तं जहा-
जाइसम्पन्ने, कुलसम्पन्ने,
बलसम्पन्ने, रूवसम्पन्ने
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. त जहा-
जाईसम्पन्ने —जाव— रूवसम्पन्ने.

चत्तारि उसभा पण्णत्ता त जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो कुलसम्पन्ने,

कुलसम्पन्ने नामेगे नो जाईसम्पन्ने,
एगे जाई सम्पन्ने वि कुलसम्पन्ने वि,
एगे नो जाईसम्पन्ने नो कुलसम्पन्ने

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो कुलसम्पन्ने तहेव — जाव—
नो जाईसम्पन्ने नो कुलसम्पन्ने

चत्तारि उसभा पण्णत्ता. त जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो वलसम्पन्ने,
वलसम्पन्ने नामेगे नो जाईसम्पन्ने,
एगे जाईसम्पन्ने वि वलसम्पन्ने वि,
एगे नो जाईसम्पन्ने नो वलसम्पन्ने

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो वलसम्पन्ने, तहेव —जाव—
एगे नो जाईसम्पन्ने नो वलसम्पन्ने

चत्तारि उसभा पण्णत्ता. त जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने,
रूवसम्पन्ने नामेगे नो जाईसम्पन्ने,
एगे जाईसम्पन्ने वि, रूवसम्पन्ने वि,
एगे नो जाइसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने, तहेव —जाव—

एगे नो जाईसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने.

चत्तारि उसभा पण्णत्ता. त जहा-

कुलसम्पन्ने नामेगे नो वलसम्पन्ने,

वलसम्पन्ने नामेगे नो कुलसम्पन्ने,

एगे कुलइसम्पन्ने वि वलसम्पन्ने वि,

एगे नो कुलसम्पन्ने नो वलसम्पन्ने.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

कुलसम्पन्ने नामेगे नो वलसम्पन्ने तहेव —जाव—

एगे नो कुलसम्पन्ने नो वलसम्पन्ने.

चत्तारि उसभा पण्णत्ता. त जहा-

कुलसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने,

रूवसम्पन्ने नामेगे नो कुलसम्पन्ने,

एगे कुलसम्पन्ने वि रूवसम्पन्ने वि,

एगे नो कुलसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

कुलसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने, तहेव —जाव—

एगे नो कुलसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने

चत्तारि उसभा पण्णत्ता त जहा-

वलसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने,

रूवसम्पन्ने नामेगे नो वलसम्पन्ने,

एगे वलसम्पन्ने वि रूवसम्पन्ने वि,

एगे नो वलसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

बलसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने, तहेव —जाव—

एगे नो बलसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने.

चत्तारि हत्थि पण्णत्ता, त जहा-

भद्दे, मदे, मिए, सकिन्ने.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

भद्दे —जाव— संकिन्ने.

चत्तारि हत्थि पण्णत्ता, त जहा-

भद्दे नामेगे भद्दमणे,

भद्दे नामेगे मदमणे,

भद्दे नामेगे मियमणे,

भद्दे नामेगे सकिण्णमणे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

भद्दे नामेगे भद्दमणे, तहेव —जाव- -

भद्दे नामेगे सकिण्णमणे.

चत्तारि हत्थि पण्णत्ता. त जहा-

मदे नामेगे भद्दमणे,

मदे नामेगे मदमणे,

मंदे नामेगे मियमणे,

मदे नामेगे संकिण्णमणे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

भद्दे नामेगे भद्दमणे, तहेव —जाव—
भद्दे नामेगे संकिण्णमणे

चत्तारि हत्थि पण्णत्ता. तं जहा-
मिए नामेगे भद्दमणे,
मिए नामेगे मंदमणे,
मिए नामेगे मियमणे,
मिए नामेगे संकिण्णमणे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
मिए नामेगे भद्दमणे, तहेव —जाव—
मिए नामेगे संकिण्णमणे

चत्तारि हत्थि पण्णत्ता. तं जहा-
संकिण्णे नामेगे भद्दमणे,
संकिण्णे नामेगे मंदमणे,
संकिण्णे नामेगे मियमणे,
संकिण्णे नामेगे संकिण्णमणे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
संकिण्णे नामेगे भद्दमणे, तहेव —जाव—
संकिण्णे नामेगे संकिण्णमणे. २४

गाहाओ–मधुगुलियपिंगलक्खो ,
अणुपुव्वसुजायदीहलंगूलो ।
पुरओ उदग्गधीरो ,
सव्वंगसमाहिओ भद्दो ।१।

चलवहलविसमचम्मो ,
थूलसिरो थूलएण पेएण ।
थूलणहदंतवालो ,
हरिपिंगललोयणो मंदो ।२।
तणुओ तणुअग्गीवो ,
तणुयतओ तणुयदंतणहवालो ।
भीरू तत्थुव्विग्गो ,
तासी य भवे मिए णामं ।३।
एएसिं हत्थीणं ,
थोवं थोवं, तु जो हरइ हत्थी ।
रूवेण व सीलेण व ,
सो संकिण्णोत्ति नायव्वो ।४।
भद्दो मज्जइ सरए ,
मंदो पुण मज्जए वसंतम्मि ।
मिउ मज्जइ हेमंते ,
संकिण्णो सव्वकालंमि ।५।

२८२ चत्तारि विकहाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
इत्थिकहा, भत्तकहा, देसकहा, रायकहा.

इत्थिकहा चउव्विहा पण्णत्ता तं जहा-
इत्थीणं जाइकहा, इत्थीण कुलकहा,
इत्थीणं रूवकहा, इत्थीणं णेवत्थकहा.

भत्तकहा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-

भत्तस्स आवावकहा, भत्तस्स णिव्वावकहा,
भत्तस्स आरभकहा, भत्तस्स निट्ठाणकहा.

देसकहा चउव्विहा पण्णत्ता त जहा-
देसविहिकहा, देसविकप्पकहा,
देसच्छंदकहा, देसनेवत्थकहा.

रायकहा चउव्विहा पण्णत्ता तं जहा-
रण्णो अइयाणकहा, रण्णो निज्जाणकहा,
रण्णो वलवाहणकहा, रण्णो कोसकोट्ठागारकहा.

चउव्विहा धम्मकहा पण्णत्ता. तं जहा-
अक्खेवणी, विक्खेवणी, संवेयणी, निव्वेयणी

अक्खेवणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता तं जहा-
आयारअक्खेवणी, ववहारअक्खेवणी,
पन्नत्तिअक्खेवणी, दिट्ठिवायअक्खेवणी

विक्खेवणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता तं जहा-
ससमयं कहेइ, ससमय कहित्ता परसमयं कहेइ,
परसमयं कहेत्ता ससमय ठावइत्ता भवइ,
सम्मावायं कहेइ सम्मावाय कहेत्ता मिच्छावायं कहेइ,
मिच्छावायं कहेत्ता सम्मावाय ठावइत्ता भवइ.

संवेगणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-
इहलोगसवेगणी, परलोगसवेगणी,
आयसरीरसंवेगणी, परसरीरसवेगणी

निव्वेगणीकहा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-

इहलोगे दुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति,

इहलोगे दुच्चिण्णा कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति,

परलोगे दुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति,

परलोगे दुच्चिण्णा कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति,

इहलोगे सुचिण्णा कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति,

इहलोगे सुचिण्णा कम्मा परलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति,

परलोगे सुचिण्णा कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति,

परलोगे सुचिण्णा कम्मा परलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति. ११

२८३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

किसे नामेगे किसे, किसे नामेगे दढे,

दढे नामेगे किसे, दढे नामेगे दढे. ११

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

किसे नामेगे किससरीरे,

किसे नामेगे दढसरीरे,

दढे नामेगे किससरीरे,

दढे नामेगे दढसरीरे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

किससरीरस्स नामेगस्स नाणदंसणे समुप्पज्जइ. नो दढ-सरीरस्स,

दढसरीरस्स नामेगस्स नाणदंसणे समुप्पज्जइ नो किस-सरीरस्स,

एगस्स किससरीरस्स वि नाणदंसणे समुप्पज्जइ दढ-सरीरस्स वि,

एगस्स नो किससरीरस्स नाणदंसणे समुप्पज्जइ नो दढ-सरीरस्स. ३

२८४ चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा अस्सिं समयंसि अइसेसे नाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे वि न समुप्पज्जेज्जा तं जहा-

अभिक्खणं अभिक्खणं इत्थिकहं, भत्तकहं, देसकहं रायकहं कहेत्ता भवइ,

विवेगेण विउस्सग्गेणं नो सम्ममप्पाणं भावित्ता भवइ,

पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि नो धम्मजागरियं जागरइत्ता भवइ,

फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स नो सम्म गवेसिया भवइ.

इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा —जाव— नो समुप्पज्जेज्जा.

चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा अइसेसे नाण-दंसणे समुप्पज्जिउकामे समुप्पज्जेज्जा. त जहा-

इत्थिकहं भत्तकह देसकहं रायकहं नो कहेत्ता भवइ,

विवेगेण विउस्सगेणं सम्ममप्पाणं भावेत्ता भवइ,

पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरइत्ता भवइ,

फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स सम्मं गवेसिया भवइ,

इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा —जाव— समुप्पज्जेज्जा. २

२८५ नो कप्पइ निग्गथाण वा, निग्गंथीण वा चउहिं महापाडिव-एहिं सज्झायं करेत्तए तं जहा-

आसाढपाडिवए, इदमहपाड़िवए,

कत्तियपाड़िवए, सुगिम्हपाड़िवए.

नो कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा चउहिं संझाहिं सज्झाय करेत्तए. त जहा-

पढमाए, पच्छिमाए, मज्झण्हे, अड्ढरत्ते

कप्पइ निग्गथाण वा, निग्गंथीण वा चाउक्कालं सज्झायं करेत्तए तं जहा-

पुव्वण्हे, अवरण्हे, पओसे, पच्चूसे. ३

२८६ चउव्विहा लोगट्ठिई पण्णत्ता तं जहा-
आगासपइट्ठिए वाए,
वायपइट्ठिए उदही,
उदहिपइट्ठिया पुढवी,
पुढविपइट्ठिया तसा थावरा पाणा.

२८७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
तहे नामेगे, नोतहे नामेगे,
सोवत्थी नामेगे, पहाणे नामेगे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
आयंतकरे नामेगे नो परतकरे,
परंतकरे नामेगे नो आयतकरे,
एगे आयतकरे वि परतकरे वि,
एगे नो आयंतकरे नो परंतकरे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
आयतमे नामेगे नो परतमे —जाव —
एगे नो आयतमे नो परतमे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
आयदमे नामेगे नो परदमे, — जाव—
एगे नो आयंदमे नो परदमे. ४

२८८ चउव्विहा गरहा पण्णत्ता तं जहा-
उवसपज्जामित्तेगा गरहा,

विइगिच्छामित्तेगा गरहा,
जं किंचि मिच्छामीत्तेगा गरहा,
एवं पि पन्नत्तेगा गरहा.

२८९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
अप्पणो नामेगे अलमंथू भवइ नो परस्स,
परस्स नामेगे अलमंथू भवइ नो अप्पणो,
एगे अप्पणो वि अलमंथू भवइ परस्स वि,
एगे नो अप्पणो अलमंथू भवइ नो परस्स.

चत्तारि मग्गा पण्णत्ता. त जहा-
उज्जू नामेगे उज्जू, उज्जू नामेगे वंके,
वंके नामेगे उज्जू, वंके नामेगे वंके.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उज्जू नामेगे उज्जू, — जाव —
वंके नामेगे वके.

चत्तारि मग्गा पण्णत्ता तं जहा-
खेमे नामेगे खेमे, खेमे नामेगे अखेमे,
अखेमे नामेगे खेमे, अखेमे नामेगे अखेमे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
खेमे नामेगे खेमे —जाव—
अखेमे नामेगे अखेमे.

चत्तारि मग्गा पण्णत्ता तं जहा-

खेमे नामेगे खेमरूवे, खेमे नामेगे अखेमरूवे,
अखेमे नामेगे खेमरूवे, अखेमे नामेगे अखेमरूवे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
खेमे नामेगे खेमरूवे, —जाव—
अखेमे नामेगे अखेमरूवे.

चत्तारि सवुक्का पण्णत्ता. त जहा-
वामे नामेगे वामावत्ते,
वामे नामेगे दाहिणावत्ते,
दाहिणे नामेगे वामावत्ते,
दाहिणे नामेगे दाहिणावत्ते.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
वामे नामेगे वामावत्ते, —जाव—
दहिणे नामेगे दाहिणावत्ते

चत्तारि धूमसिहाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव—
दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता

एवामेव चत्तारित्थीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव—
दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता.

चत्तारि अग्गिसिहाओ पण्णत्ताओ त जहा-
वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव—

दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता.

एवामेव चत्तारित्थिओ पण्णत्ताओ तं जहा-

वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव—

दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता

चत्तारि वायमंडलिया पण्णत्ता तं जहा-

वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव—

दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता.

एवामेव चत्तारित्थीओ पण्णत्ताओ तं जहा-

वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव —

दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता

चत्तारि वणसडा पण्णत्ता तं जहा-

वामे नामेगे वामावत्ते, —जाव—

दाहिणे नामेगे दाहिणावत्ते

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

वामे नामेगे वामावत्ते, —जाव—

दाहिणे नामेगे दाहिणावत्ते १७

२९० चउहिं ठाणेहिं निग्गथे निग्गथिं आलवमाणे वा, संलवमाणे वा नाइक्कमइ तं जहा-

पंथं पुच्छमाणे वा, पंथं देसमाणे वा,

असणं वा —जाव— साइमं वा दलमाणे वा,

असणं वा —जाव— साइमं वा दलावेमाणे वा

२९१ तमुक्कायस्स ण चत्तारि नामधेज्जा पण्णत्ता. तं जहा-
तमिति वा, तमुक्कारेइ वा,
अधकारेइ वा, महधकारेइ वा.

तमुक्कायस्स णं चत्तारि नामधेज्जा पण्णत्ता. तं जहा-
लोगधगारेइ वा, लोगतमसेइ वा,
देवधगारेइ वा, देवतमसेइ वा.

तमुक्कायस्स ण चत्तारि नामधेज्जा पण्णत्ता. तं जहा-
वातफलिहेइ वा, वातफलिहखोमेइ वा,
देवरण्णेइ वा, देववूहेइ वा.

तमुक्काए ण चत्तारि कप्पे आवरित्ता चिट्ठइ. तं जहा-
सोधम्म, ईसाण, सणकुमारं, माहिंदं. ४

२९२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
संपागडपडिसेवी नामेगे, पच्छन्नपडिसेवी नामेगे,
पडुप्पन्ननदी नामेगे, निस्सरणणंदी नामेगे.

चत्तारि सेणाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
जइत्ता नामेगे नो पराजिणित्ता,
पराजिणित्ता नामेगे नो जइत्ता,
एगा जइत्ता वि पराजिणित्ता वि,
एगा नो जइत्ता नो पराजिणित्ता.

एवामेव पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जइत्ता नामेगे नो पराजिणित्ता, —जाव—

एगा नो जइत्ता नो पराजिणित्ता.

चत्तारि सेणाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

जइत्ता नामेगा जयइ,

जइत्ता नामेगा पराजिणइ,

पराजिणित्ता नामेगा जयइ,

पराजिणित्ता नामेगा पराजिणइ.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

जइत्ता नामेगा जयइ —जाव— पराजिणित्ता नामेगा पराजिणइ. ५

२९३ चत्तारि केयणा पण्णत्ता. तं जहा-

बंसीमूलकेयणए, मेंढविसाणकेयणए,

गोमुत्तिकेयणए, अवलेहणियकेयणए.

एवामेव चउव्विहा माया पण्णत्ता. तं जहा-

बंसीमूलकेयणासमाणा —जाव— अवलेहणियासमाणा,

वंसीमूलकेयणासमाणं मायं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ नेरइएसु उववज्जइ,

मेढविसाणकेयणासमाणं मायं अणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ,

गोमुत्तिकेयणासमाण माय अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ मणुस्सेसु उववज्जइ,

अवलेहणियाकेयणासमाणं मायं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ

चत्तारि थंभा पण्णत्ता तं जहा-

सेलथमे, अट्ठिथभे, दारुथभे, तिणिसलयाथभे.

एवामेव चउव्विहे माणे पण्णत्ते. तं जहा-

सेलथंभसमाणे —जाव— तिणिसलयाथमसमाणे.

सेलथंभसमाण माण अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ नेरइएसु उववज्जइ,

अट्ठिथभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ,

दारुथंभसमाण माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ मणुस्सेसु उववज्जइ,

तिणिसलयाथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ

चत्तारि वत्था पण्णत्ता. त जहा-

किमिरागरत्ते, कद्दमरागरत्ते,

खजणरागरत्ते, हलिद्दरागरत्ते.

एवामेव चउव्विहे लोभे पण्णत्ते. तं जहा-

किमिरागरत्तवत्थसमाणे,

कद्दमरागरत्तवत्थसमाणे,

खजणरागरत्तवत्थसमाणे,

हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणे.

किमिरागरत्तवत्थसमाणं लोभं अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ नेरइएसु उववज्जइ,

कद्दमरागरत्तवत्थसमाणं लोभं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ,

खंजणरागरत्तवत्थसमाण लोभं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ मणुस्सेसु उववज्जइ,

हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणं लोभं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ ६

२९४ चउव्विहे ससारे पण्णत्ते. तं जहा-

नेरइएसंसारे, तिरिक्खजोणिएसंसारे,

मणुस्ससंसारे, देवससारे

चउव्विहे आउए पण्णत्ते. त जहा-

नेरइअआउए, तिरिक्खजोणिए आउए,

मणुस्साउए, देवाउए

चउव्विहे भवे पण्णत्ते. तं जहा-

नेरइए भवे, तिरिक्खजोणिए भवे,

मणुस्स भवे, देव भवे.

२९५ चउव्विहे आहारे पण्णत्ते. तं जहा-

असणे, पाणे, खाइमे, साइमे.

चउव्विहे आहारे पण्णत्ते तं जहा-

उवक्खरसंपण्णे, उवक्खडसंपण्णे,

सभावसंपण्णे, परिजुसियसंपण्णे. २

२९६ चउव्विहे बधे पण्णत्ते तं जहा-

पगइबंधे, ठिइबंधे,
अणुभावबंधे, पदेसबंधे.

चउव्विहे उवक्कमे पण्णत्ते त जहा-
बंधणोवक्कमे, उदीरणोवक्कमे,
उवसमणोवक्कमे, विप्परिणामणोवक्कमे.

बंधणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा-
पगइबंधणोवक्कमे, ठिइबंधणोवक्कमे,
अणुभावबंधणोवक्कमे, पदेसबंधणोवक्कमे.

उदीरणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा-
पगइउदीरणोवक्कमे,
ठिइउदीरणोवक्कमे,
अणुभावउदीरणोवक्कमे,
पदेसउदीरणोवक्कमे

उवसमणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा-
पगइउवसामणोवक्कमे,
ठिइउवसामणोवक्कमे,
अणुभावउवसामणोवक्कमे,
पदेसुवसामणोवक्कमे.

विप्परिणामणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-
पगइविप्परिणामणोवक्कमे,
ठिइविप्परिणामणोवक्कमे,

अणुभावविप्परिणामणोवक्कमे,

पदेसविप्परिणामणोवक्कमे.

चउव्विहे अप्पाबहुए पण्णत्ते तं जहा-

पगइ-अप्पाबहुए, ठिइ-अप्पाबहुए,

अणुभाव-अप्पाबहुए, पएस-अप्पाबहुए

चउव्विहे संकमे पण्णत्ते तं जहा-

पगइ-संकमे, ठिइ-सकमे,

अणुभाव-संकमे, पएस-सकमे

चउव्विहे निधत्ते पण्णत्ते. तं जहा-

पगइ-णिधत्ते, ठिइ-णिधत्ते,

अणुभाव-णिधत्ते, पएस-णिधत्ते

चउव्विहे निकाइए पण्णत्ते. तं जहा-

पगइ-णिकाइए, ठिइ-णिकाइए,

अणुभाव-णिकाइए, पएस-णिकाइए. १०

२९७ चत्तारि एक्का पण्णत्ता. त जहा-

दविए एक्कए, माउ एक्कए,

पज्जए एक्कए, संगहे एक्कए

२९८ चत्तारि कती पण्णत्ता तं जहा-

दवियकती, माउयकती, पज्जवकती, संगहकती.

२९९ चत्तारि सव्वा पण्णत्ता. त जहा-

नामसव्वए, ठवणसव्वए,

आएससव्वए, निरवसेससव्वए.

३०० माणुसुत्तरस्स णं पव्वयस्स चउदिसिं चत्तारि कूडा पण्णत्ता. तं जहा-

रयणे, रयणुच्चए, सव्वरयणे, रयणसंचए.

३०१ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीआए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था,

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवए इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए जहण्णपए णं चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था,

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो भविस्सइ. ३

३०२ जंबुद्दीवे दीवे देवकुरु-उत्तरकुरुवज्जाओ चत्तारि अकम्म-भूमीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

हेमवए, हेरण्णवए, हरिवासे, रम्मगवासे

चत्तारि वट्टवेयड्ढपव्वया पण्णत्ता तं जहा-

सद्दावइ, वियडावइ, गंधावइ, मालवंतपरियाए

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया —जाव— पलिओव-मट्ठिइया परिवसंति. तं जहा-

साइ, पभासे, अरुणे, पउमे

जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा-

पुव्वविदेहे, अवरविदेहे, देवकुरा, उत्तरकुरा.

सव्वेऽवि णं निसढणीलवंतवासहरपव्वया चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीयाए महानईए उत्तरे कूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता तं जहा-

चित्तकूडे, पम्हकूडे, नलिणकूडे. एगसेले.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता तं जहा-

तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मातंजणे

जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पच्चत्थिमेणं सीओआए महाणईए दाहिण कूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

अंकावई, पम्हावई, आसीविसे, सुहावहे

जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पच्चत्थिमेणं सीओआए महाणईए उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता तं जहा-

चंदपव्वए, सूरपव्वए, देवपव्वए, नागपव्वए

जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स चउसु विदिसासु चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

सोमणसे, विज्जुपभे, गंधमायणे, मालवंते.

जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे जहण्णपए चत्तारि अरहंता, चत्तारि चक्कवट्टी, चत्तारि बलदेवा, चत्तारि वासुदेवा उप्प-

ज्जिसु वा, उप्पज्जंति वा, उप्पज्जिस्संति वा

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वए चत्तारि वणा पण्णत्ता. तं जहा-
भद्दसालवणे, नंदणवणे, सोमणसवणे, पंडगवणे.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वए पडगवणे चत्तारि अभिसेगसिलाओ, पण्णत्ताओ. तं जहा-

पंडुकंवलसिला, अइपंडुकंवलसिला,
रत्तकंवलसिला, अइरत्तकंवलसिला.

मंदरचूलिया णं उर्वारं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेण पण्णत्ता, एवं धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धेऽवि कालं आदिं करेत्ता —जाव— पुक्खरवरदीवपच्चच्छिमद्धे —जाव— मंदरचूलियत्ति

जंबुद्दीवगआवस्सगं तु कालाओ चूलिया —जाव— धायइसडे पुक्खरवरे य पुव्वावरे पासे. ४३

३०३ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स चत्तारि दारा पण्णत्ता. तं जहा-
विजए, वेजयते, जयते, अपराजिए.

ते णं दारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं पण्णत्ता.

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढीया —जाव— पलिओवमट्ठिइया परिवसति. त जहा-

विजए, वेजयंते, जयते, अपराजिए. ३

३०४ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स

वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिण्णि-तिण्णि जोयणसयाइ ओगाहित्ता एत्थ ण चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता. तं जहा-

एगूरूयदीवे, आभासियदीवे,

वेसाणियदीवे, नंगोलियदीवे.

तेसु ण दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसति. त जहा-

एगूरूया, आभासिया, वेसाणिया, णंगोलिया.

तेसि णं दीवाण चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइ ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता. तं जहा-

हयकण्णदीवे, गयकण्णदीवे,

गोकण्णदीवे, संकुलिकण्णदीवे

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसति. तं जहा-

हयकण्णा, गयकण्णा, गोकण्णा, सकुलिकण्णा.

तेसि ण दीवाण चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं पंच पंच जोयणसयाइ ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता. त जहा-

आयसमुहदीवे, मेढमुहदीवे,

अओमुहदीवे, गोमुहदीवे

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा

तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं छ छ जोयण-

सयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता. तं जहा-

आसमुहदीवे, हत्थिमुहदीवे,
सीहमुहदीवे, वग्घमुहदीवे

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा.

तेसि णं दीवाण चउसु विदिसु लवणसमुद्द सत्त सत्त जोयण-सयाइ ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता. तं जहा-

आसकण्णदीवे, हत्थिकण्णदीवे,
अकण्णदीवे, कण्णपाउरणदीवे.

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा.

तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं अट्ठट्ठ जोयण-सयाइ ओगाहेत्ता एत्थ ण चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता. त जहा-

उक्कामुहदीवे, मेहमुहदीवे,
विज्जुमुहदीवे, विज्जुदतदीवे.

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा

तेसु ण दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं नव नव जोयण-सयाइ ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता. त जहा-

घणदतदीवे, लट्ठदंतदीवे, गूढदतदीवे, सुद्धदंतदीवे

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति. तं जहा-

घणदंता, लट्ठदंता, गूढदंता, सुद्धदंता.

जबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं सिहरिस्स वासहर-पव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिण्णि तिण्णि जोयण-सयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता. तं जहा-

एगोरूयदीवे —जाव— नगोलियदीवे.

सेस तदेव निरवसेसं भाणियव्वं —जाव— सुद्धदंता. ३०

३०५ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउदिसि लवणसमुद्दं पचाणउइ जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थ णं महइमहालया महालजरसंठाणसठिया चत्तारि महापायाला पण्णत्ता तं जहा-

वलयामुहे, केउए, जूवए, ईसरे.

एत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया —जाव— पलिओव-मट्ठिइया परिवसंति तं जहा-

काले, महाकाले, वेलबे, पभंजणे

जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयताओ चउद्दिसि लवणसमुद्दं बायालीसं बायालीसं जोयणसहस्साइ ओगाहेत्ता एत्थ ण चउण्ह वेलधरनागराइणं चत्तारि आवासपव्वया पण्णत्ता तं जहा-

गोथूभे, उदयभासे, संखे, दगसीमे

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया —जाव— पलिओव-

मड्ढिइया परिवसति त जहा-

गोथूभे, सिवए, संखे, मणोसिलाए.

जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउसु विदिसासु लवणसमुद्द बायालीस बायालीस जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चउण्हं अणुवेलंधरणागराईणं चत्तारि आवासपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

कक्कोड़ए, विज्जुप्पभे, केलासे, अरुणप्पभे.

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढीया —जाव— पलिओवमट्ठिइया परिवसति तं जहा-

कक्कोड़ए, कद्दमए, केलासे, अरुणप्पभे,

लवणे णं समुद्दे णं चत्तारि चदा पभासिसु वा, पभासंति वा, पभासिस्संति वा.

चत्तारि सूरिया तविंसु वा, तवति वा, तविस्सति वा.

चत्तारि कत्तियाओ —जाव— चत्तारि भरणीओ.

चत्तारि अग्गी —जाव— चत्तारि जमा

चत्तारि अंगारा —जाव— चत्तारि भावकेऊ.

लवणस्स णं समुद्दस्स चत्तारि दारा पण्णत्ता. तं जहा-

विजए, वेजयते, जयते, अपराजिए.

ते णं दारा णं चत्तारि जोयणाइ विक्खभेणं तावइय चेव पवेसेणं पण्णत्ते तं जहा-

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया —जाव— पलिओव-
मट्ठिइया परिवसंति. तं जहा-

विजए, वेजयते, जयंते, अपराजिए. १०२

३०६ धायइसंडे दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवाल-
विक्खंभेणं पण्णत्ते.

जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बहिया चत्तारि भरहाइं, चत्तारि
एरवयाइ.

एव जहा सद्दुद्देसए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं —जाव—
चत्तारि मंदरा, चत्तारि मदरचूलिआओ. २०९

नंदीसरदीवस्स वण्णओ

३०७ नदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवालविक्खभस्स बहुमज्झदेस-
भाए चउद्दिसि चत्तारि अंजणगपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

पुरित्थिमिल्ले अजणगपव्वए,
दाहिणिल्ले अंजणगपव्वए,
पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वए,
उत्तरिल्ले अजणगपव्वए.

ते ण अंजणगपव्वया चउरासीइ जोयणसहस्साइं उड्ढं
उच्चत्तेण, एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, मूले दस जोयण-
सहस्साइ विक्खभेणं, तदणतरं च णं मायाए मायाए परि-
हाएमाणा उवरिमेगं जोयणसहस्सं विक्खंभेणं पण्णत्ता, मूले

इक्कतीस जोयणसहस्साइ छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खेवणं, उवरिं तिण्णि तिण्णि जोयणसहस्साइ एगं च छावट्ठं जोयणसय परिक्खेवेणं, मूले विच्छिण्णा, मज्झे सखित्ता, उप्पि तणुया गोपुच्छसठाणसठिया सव्वअंजणमया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निप्पका निक्कंकडच्छाया सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासाइया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा, तेसि णं अंजणगपव्वयाणं उवरिं बहुसमरमणिज्जभूमिभागा पण्णत्ता

तेसि णं बहुसमरमणिज्जभूमिभागाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि सिद्धाययणा पण्णत्ता

ते णं सिद्धाययणा एगं जोयणसय आयामेणं पण्णत्ता, पण्णास जोयणाइ विक्खंभेण बावत्तरि जोयणाइं उड्ढ उच्चत्तेण, तेसिं सिद्धाययणाणं चउदिसिं चत्तारि दारा पण्णत्ता. तं जहा-

देवदारे, असुरदारे, नागदारे, सुवण्णदारे.

तेसु णं दारेसु चउव्विहा देवा परिवसति त जहा-

देवा, असुरा, नागा, सुवण्णा.

तेसि णं दाराणं पुरओ चत्तारि मुहमडवा पण्णत्ता

तेसि णं मुहमंडवाणं पुरओ चत्तारि पेच्छाघरमंडवा पण्णत्ता

तेसि ण पेच्छाघरमंडवाण बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामया अक्खाडगा पण्णत्ता

तेसि णं वइरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ.

तासि णं मणिपेढियाण उवरिं चत्तारि सीहासणा पण्णत्ता.

तेसि णं सीहासणाण उवरिं चत्तारि विजयदूसा पण्णत्ता

तेसि ण विजयदूसगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामया अंकुसा पण्णत्ता

तेसु ण वइरामएसु अंकुसेसु चत्तारि कुंभिका मुत्तादामा पण्णत्ता

ते ण कुंभिका मुत्तादामा पत्तेयं पत्तेयं अन्नेहिं तदद्धउच्चत्तपमाणमित्तेहिं चउहिं अद्धकुंभिकेहिं मुत्तादामेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता

तेसि ण पेच्छाघरमंडवाण पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ

तासि ण मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि चत्तारि चेइयथूभा पण्णत्ता.

तासि ण चेइयथूभाणं पत्तेय पत्तेय चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ

तासि ण मणिपेढियाण उवरिं चत्तारि जिणपडिमाओ सव्वरयणामईओ संपलियंकनिसण्णाओ थूभाभिमुहाओ चिट्ठंति तं जहा-

रिसभा, वद्धमाणा, चंदाणणा, वारिसेणा

तेसि ण चेइयथूभाण पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ.

तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि चेइयरुक्खा पण्णत्ता.

तेसि णं चेइयरुक्खाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ

तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि महिंदज्झया पण्णत्ता.

तेसि णं महिंदज्झयाण पुरओ चत्तारि नदाओ पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ.

तासि ण पुक्खरणीणं पत्तेयं पत्तेयं चउदिसिं चत्तारि वणसडा पण्णत्ता. त जहा-

पुरच्छिमेण, दाहिणेण, पच्चत्थिमेण, उत्तरेण.

गाहा–पुव्वेणं असोगवण, दाहिणओ होइ सत्तवण्णवणं ।
अवरेणं चपगवणं, चूयवणं उत्तरे पासे ।।

तत्थ ण जे से पुरच्छिमिल्ले अजणगपव्वए तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि नंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ त जहा-

नदुत्तरा, नदा, आणदा, नंदीवद्धणा.

ताओ नदाओ पुक्खरिणीओ एग जोयणसयसहस्सं आयामेण, पण्णासं जोयणसहस्साइं विक्खभेण, दस जोयणसयाइं उव्वेहण, तासि णं पुक्खरिणीण पत्तेयं पत्तेय चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा

तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरओ चत्तारि तोरणा पण्णत्ता. त जहा-

पुरच्छिमेणं, दाहिणेण, पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं.

तासि णं पुक्खरणीणं पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता. तं जहा-

पुरओ, दाहिणओ, पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं.

पुव्वेणं असोगवण —जाव— चूयवणं उत्तरे पासे.

तासि ण पुक्खरिणीणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि दहिमुहग-पव्वया पण्णत्ता

ते णं दहिमुहगपव्वया चउसट्ठि जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, एग जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा पल्लग-संठाणसंठिया, दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, एक्कतीसं जोयणसहस्साइ छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खेवेणं, सव्व-रयणामया अच्छा —जाव - पड़िरूवा, तेसि णं दहिमुह-पव्वयाणं उवरिं बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता.

सेसं जहेव अंजणगपव्वयाण तहेव निरवसेसं भाणियव्वं —जाव चूयवणं उत्तरे पासे

तत्थ ण जे से दाहिणिल्ले अंजणगपव्वए तस्स णं चउदिसिं चत्तारि नदाओ पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ तं जहा-

भद्दा, विसाला, कुमुदा, पोडरिगिणी.

ताओ नदाओ पुक्खरणीओ एगं जोयणसयसहस्सं सेसं तं चेव —जाव— दहिमुहगपव्वया —जाव— वणसंडा, तत्थ णं जे से पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वए तस्स णं चउद्दिसि चत्तारि

नंदाओ पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ तं जहा-

नंदिसेणा, अमोहा, गोथूभा, सुदंसणा.

सेसं तं चेव, तहेव दहिमुहगपव्वया तहेव सिद्धाययणा —जाव – वणसंडा

तत्थ णं जे से उत्तरिल्ले अंजणगपव्वए तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि नंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

विजया, वेजयंती, जयंती, अपराजिया

ताओ णं पुक्खरणीओ एगं जोयणसहस्सहस्सं तं चेव पमाणं तहेव दहिमुहगपव्वया तहेव सिद्धाययणा —जाव— वणसंडा

नंदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेस-भागे चउसु विदिसासु चत्तारि रकइरगपव्वया पण्णत्ता तं जहा-

उत्तरपुरच्छिमिल्ले रइकरगपव्वए,

दाहिणपुरच्छिमिल्ले रइकरगपव्वए,

दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए,

उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए

ते णं रइकरगपव्वया दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा झल्लरिसंठाणसंठिया दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खेवेणं, सव्वरयणामया अच्छा —जाव— पडिरूवा. तत्थ णं जे से उत्तरपुरच्छिमिल्ले रइ-

करगपव्वए तस्स णं चउद्दिसिं ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो-चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ त जहा-

नंदुत्तरा, नंदा, उत्तरकुरा, देवकुरा

कण्हाए, कण्हराइए, रामाए, रामरक्खियाए

तत्थ णं जे से दाहिणपुरच्छिमिल्ले रइकरगपव्वए, तस्स णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ तं जहा-

समणा, सोमणसा, अच्चिमाली, मणोरमा

पउमाए, सिवाए, सतीए, अंजूए.

तत्थ णं जे से दाहिण-पच्चत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए तत्थ णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्ह अग्गमहि-सीणं जंबूद्दीवपमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ तं जहा-

भूता, भूतवडेंसा, गोथूभा, सुदसणा

अमलाए, अच्छराए, नवमियाए, रोहिणीए

तत्थ णं जे से उत्तर-पच्चत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए तत्थ णं चउदिसिमिसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवप्पमाणमित्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ता तं जहा-

रयणा, रयणुच्चया, सव्वरयणा, रयणसंचया.

वसुए, वसुगुत्ताए, वसुमित्ताए, वसुंधराए.

३०८ चउव्विहे सच्चे पण्णत्ते त जहा-

नामसच्चे, ठवणसच्चे, दव्वसच्चे, भावसच्चे.

३०९ आजीवियाणं चउव्विहे तवे पण्णत्ते. त जहा-

उग्गतवे, घोरतवे,

रसणिज्जूहणया, जिब्भिदियपडिसलीणया

३१० चउव्विहे सजमे पण्णत्ते. तं जहा-

मणसजमे, वइसंजमे, कायसजमे, उवगरणसंजमे.

चउव्विहे चियाए पण्णत्ते तं जहा-

मणचियाए, वइचियाए, कायचियाए, उवगरणचियाए.

चउव्विहा अकिंचणया पण्णत्ता त जहा-

मणअकिंचणया, वइअकिंचणया,

कायअकिंचणया, उवगरणअकिंचणया. २

चउट्ठाणस्स तइओ उद्देसो

३११ चत्तारि राईओ पण्णत्ताओ त जहा-

पव्वयराई, पुढविराई, वालुयराई, उदगराई

एवामेव चउव्विहे कोहे पण्णत्ते त जहा-

पव्वयराइसमाणे, पुढविराइसमाणे,

वालुयराइसमाणे, उदगराइसमाणे

पव्वयराइसमाण कोह अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ ने

इएसु उववज्जइ,

पुढविराइसमाण कोहं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ,

वालुयराइसमाण कोहं अणुप्पविट्ठे समाणे जीवे कालं करेइ मणुस्सेसु उववज्जइ,

उदगराइसमाणं कोह अणुपविट्ठे समाणे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ,

चत्तारि उदगा पण्णत्ता त जहा-

कद्दमोदए, खजणोदए, वालुओदए, सेलोदए.

एवामेव चउव्विहे भावे पण्णत्ते त जहा-

कद्दमोदगसमाणे, खजणोदगसमाणे,

वालुओदगसमाणे, सेलोदगसमाणे

कद्दमोदगसमाण भाव अणुपविट्ठे समाणे जीवे कालं करेइ नेरइएसु उववज्जइ, एव — जाव —

सेलोदगसमाण भाव अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ देवेसु उववज्जइ ४

३१२ चत्तारि पक्खी पण्णत्ता तं जहा-

रुयसपण्णे नामेगे नो रूवसपण्णे,

रूवसपण्णे नामेगे नो रुयसपण्णे,

एगे रूवसपण्णे वि रुयसपण्णे वि,

नो रुयसंपण्णे नो रूवसंपण्णे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

रुयसंपण्णे नामेगे, नो रूवसपण्णे —जाव—
नो रुयसंपण्णे नो रूवसपण्णे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
पत्तियं करेमीतेगे पत्तिय करेइ,
पत्तियं करेमीतेगे अपत्तिय करेइ,
अप्पत्तिय करेमीतेगे पत्तिय करेइ,
अप्पत्तियं करेमीतेगे अप्पत्तिय करेइ

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अप्पणो नामेगे पत्तिय करेइ नो परस्स —जाव—
नो अप्पणो पत्तिय करेइ, नो परस्स अपत्तिय करेइ.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
पत्तिय पवेसामीतेगे पत्तिय पवेसेइ —जाव—
अपत्तियं पवेसामीतेगे अप्पत्तियं पवेसेइ.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अप्पणो नामेगे पत्तियं पवेसेइ नो परस्स —जाव—
नो अप्पणो पत्तियं पवेसेइ नो परस्स पत्तिय पवेसेइ. ६

३१३ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता त जहा-
पत्तोवए, पुप्फोवए, फलोवए, छायोवए

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
पत्तो वा रुक्खसमाणे, पुप्फो वा रुक्खसमाणे,
फलो वा रुक्खसमाणे, छायो वा रुक्खसमाणे २

|१४ भारण्हं वहमाणस्स चत्तारि आसासा पण्णत्ता तं जहा-

जत्थ णं अंसाओ अंसं साहरइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य णं उच्चारं वा, पासवणं वा परिट्ठावेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य णं नागकुमारावासंसि वा, सुवण्णकुमारावासंसि वा वासं उवेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य ण आवकहाए चिट्ठइ तत्थ वि य से एग आसासे पण्णत्ते.

एवामेव समणोवासगस्स चत्तारि आसासा पण्णत्ता. तं जहा-

जत्थ णं सीलव्वय-गुणव्वय-वेरमण-पच्चक्खाणपोसहोववासाइं पड़िवज्जेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य णं सामाइयं देसावगासियं सम्ममणुपालेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य णं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य ण अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडिआइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते. २

३१५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

उदीयोदिए नामेगे, उदियत्थमिए नामेगे,

अत्थमियोदिए नामेगे, अत्थमियत्थमिए नामेगे.

भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी णं उदिओदिए,

बभदत्ते ण राया चाउरतचक्कवट्टी उदिअत्थमिए,

हरिएसबले ण अणगारे णं अत्थमियोदिए,

काले णं सोयरिए अत्थमियत्थमिए

३१६ चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता तं जहा-

कडजुम्मे, तेओए, दावरजुम्मे, कलिओए

नेरइयाणं चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता तं जहा-

कड़जुम्मे, तेओए, दावरजुम्मे, कलिओए.

एवं असुरकुमाराणं —जाव-- थणियकुमाराण,

एवं पुढविकाइयाणं आउ-तेउ-वाउ-वणस्सइ-बेंदियाणं

तेंदियाणं चउरिंदियाणं, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण

मणुस्साणं वाणमंतर-जोइसियाण वेमाणियाण सव्वेसि

जहा नेरइयाण २

३१७ चत्तारि सूरा पण्णत्ता. त जहा-

खतिसूरे, तवसूरे, दाणसूरे, जुद्धसूरे

खतिसूरा अरहंता, तवसूरा अणगारा,

दाणसूरे वेसमणे, जुद्धसूरे वासुदेवे.

३१८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

उच्चे नामेगे उच्चच्छदे, उच्चे नामेगे नीयच्छदे,

नीए नामेगे उच्चच्छदे, नीय नामेगे नीयच्छदे

३१९ असुरकुमाराणं चत्तारि लेसाओ पण्णत्ताओ तं जहा-

कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा.

एवं —जाव— थणियकुमाराण,

एव पुढविकाइयाण आउवणस्सइकाइयाणं वाणमंतराणं

सव्वेसि जहा असुरकुमाराण

३२० चत्तारि जाणा पण्णत्ता त जहा-

जुत्ते नामेगे जुत्ते, जुत्ते नामेगे अजुत्ते,

अजुत्ते नामेगे जुत्ते, अजुत्ते नामेगे अजुत्ते.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

जुत्ते नामेगे जुत्ते —जाव—

अजुत्ते नामेगे अजुत्ते.

चत्तारि जाणा पण्णत्ता तं जहा-

जुत्ते नामेगे जुत्तपरिणए,

जुत्ते नामेगे अजुत्तपरिणए,

अजुत्ते नामेगे जुत्तपरिणए,

अजुत्ते नामेगे अजुत्तपरिणए

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

जुत्ते नामेगे जुत्तेपरिणए, —जाव—

अजुत्ते नामेगे अजुत्तपरिणए

चत्तारि जाणा पण्णत्ता तं जहा-

जुत्ते नामेगे जुत्तरूवे, जुत्ते नामेगे अजुत्तरूवे,

अजुत्ते नामेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते नामेगे अजुत्तरूवे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

जुत्ते नामेगे जुत्तरूवे, —जाव—

अजुत्ते नामेगे अजुत्तरूवे.

चत्तारि जाणा पण्णत्ता तं जहा-

जुत्ते नामेगे जुत्त सोभे,

जुत्ते नामेगे अजुत्त सोभे,

अजुत्ते नामेगे जुत्त सोभे,

अजुत्ते नामेगे अजुत्त सोभे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. त जहा-

जुत्ते नामेगे जुत्त सोभे, —जाव—

अजुत्ते नामेगे अजुत्त सोभे

चत्तारि जुग्गा पण्णत्ता तं जहा-

जुत्ते नामेगे जुत्ते, —जाव—

अजुत्ते नामेगे अजुत्ते

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

जुत्ते नामेगे जुत्ते —जाव—

अजुत्ते नामेगे अजुत्ते

एवं जहा जाणेण चत्तारि आलावगा तहा जुग्गेण वि,

पडिवक्खो तहेव पुरिसजाया —जाव— सोभेत्ति.

चत्तारि सारही पण्णत्ता तं जहा-

जोयावइत्ता नामेगे नो विजोयावइत्ता,

विजोयावइत्ता नामेगे नो जोयावइत्ता,
एगे जोयावइत्ता वि विजोयावइत्ता वि,
एगे नो जोयावइत्ता, नो विजोयावइत्ता.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जोयावइत्ता नामेगे नो विजोयावइत्ता, —जात—
एगे नो जोयावइत्ता नो विजोयावइत्ता.

चत्तारि हया पण्णत्ता तं जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते.

एवामेव पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते.
एव जुत्तपरिणए जुत्तरूवे जुत्तसोभे,
सव्वेसिं पडिवक्खो पुरिसजाया.

चत्तारि गया पण्णत्ता तं जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते.
एवं जहा हयाण तहा गयाण वि भाणियव्वं पड़िवक्खो
तहेव पुरिसजाया

चत्तारि जुग्गारिया पण्णत्ता. तं जहा-
पंथजाई नाममेगे नो उप्पहजाई,
उप्पहजाई नामेगे नो पथजाई,
एगे पथ जाई वि उप्पहजाई वि,
एगे नो पथजाई नो उप्पहजाई

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
पंथजाई नामेगे नो उप्पहजाई, —जाव—
एगे नो पंथजाई नो उप्पहजाई

चत्तारि पुप्फा पण्णत्ता तं जहा-
रूवसंपण्णे नामेगे नो गंधसपण्णे,
गधसपण्णे नामेगे नो रूवसपण्णे,
एगे रूवसपण्णे वि गंधसपण्णे वि,
एगे नो रूवसंपण्णे नो गधसंपण्णे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
रूवसपण्णे नामेगे नो सीलसपण्णे, —जाव—
नो रूवसपण्णे नो सीलसपण्णे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जाइसपण्णे नामेगे नो कुलसपण्णे,
कुलसपण्णे नामेगे नो जाइसपण्णे,
एगे जाइसंपण्णे वि कुलसपण्णे वि,
एगे नो जाइसंपण्णे नो कुलसपण्णे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

जाइसंपण्णे नामेगे नो बलसंपण्णे, —जाव—

एगे नो जाइसंपण्णे नो बलसंपण्णे.

एवं जाइरूवेण चत्तारि आलावगा.

एवं जाइसुएण चत्तारि आलावगा.

एव जाइसीलेण चत्तारि आलावगा.

एवं जाइचरित्तेण चत्तारि आलावगा.

एवं कुलेण बलेण चत्तारि आलावगा.

एवं कुलेण रूवेण चत्तारि आलावगा.

एव कुलेण सुएण चत्तारि आलावगा.

एव कुलेण सीलेण चत्तारि आलावगा.

एवं कुलेण चरित्तेण चत्तारि आलावगा

एवं बलेण रूवेण चत्तारि आलावगा.

एवं बलेण सुएण चत्तारि आलावगा

एव बलेण सीलेण चत्तारि आलावगा.

एव बलेण चरित्तेण चत्तारि आलावगा,

एवं रूवेण सुएण चत्तारि आलावगा.

एवं रूवेण सीलेण चत्तारि आलावगा.

एव रूवेण चरित्तेण चत्तारि आलावगा.

एवं सुएण सीलेण चत्तारि आलावगा.

एवं सुएण चरित्तेण चत्तारि आलावगा.

एवं सीलेण चरित्तेण चत्तारि आलावगा.

एवं एक्कवीसं भगा भाणियव्वा.

चत्तारि फला पण्णत्ता तं जहा-

आमलगमहुरे, मुद्दियापहुरे, खीरमहुरे, खंडमहुरे.

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता तं जहा-

आमलगमहुरफलसमाणे, मुद्दियामहुरफलसमाणे,
खीरमहुरफलसमाणे, खंडमहुरफलसमाणे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

आयवेयावच्चकरे नामेगे नो परवेयावच्चकरे,
परवेयावच्चकरे नामेगे नो आयवेयावच्चकरे,
एगे आयवेयावच्चकरे वि, परवेयावच्चकरे वि,
एगे नो आयवेयावच्चकरे नो परवेयावच्चकरे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

करेइ नामेगे वेयावच्चं नो पडिच्छइ,
पडिच्छइ नामेगे वेयावच्च नो करेइ,
एगे पडिच्छइ वि वेयावच्च करेइ वि,
एगे नो पडिच्छइ नो वेयावच्चं करेइ

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

अट्ठकरे नामे नो माणकरे,
माणकरे नामेगे नो अट्ठकरे,
एगे अट्ठकरे वि माणकरे वि,
एगे नो अट्ठकरे नो माणकरे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

गणट्ठकरे नामेगे नो माणकरे, —जाव—

एगे नो गणट्ठकरे नो माणकरे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
गणसंगहकरे नामेगे नो माणकरे, —जाव—
एगे नो गणसगहकरे नो माणकरे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
गणसोभकरे नामेगे नो माणकरे, —जाव—
एगे नो गणसोभकरे नो माणकरे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
गणसोहीकरे नामेगे नो माणकरे, —जाव—
एगे नो गणसोहीकरे नो माणसोहीकरे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. त जहा-
रूव नामेगे जहइ नो धम्म,
धम्म नामेगे जहइ नो रूवं,
एगे रूवं वि जहइ धम्मं वि जहइ,
एगे नो रूवं जहइ नो धम्मं जहइ.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. त जहा-
धम्मं नामेगे जहइ नो गणसठिइं, —जाव—
एगे नो धम्म जहइ नो गणसंठिइं

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
पियधम्मे नामेगे नो दढधम्मे,
दढधम्मे नामेगे नो पियधम्मे,
एगे पियधम्मे वि दढधम्मे वि,

एगे नो पियधम्मे नो दढधम्मे.

चत्तारि आयरिया पण्णत्ता. तं जहा-

पव्वायणायरिए नामेगे नो उवट्ठावणायरिए,

उवट्ठावणायरिए नामेगे नो पव्वायणायरिए,

एगे पव्वायणायरिए वि उवट्ठावणायरिए वि,

एगे नो पव्वयणाएरिए नो उट्ठावणायरिए. धम्मायरिए.

चत्तारि आयरिया पण्णत्ता. तं जहा-

उद्देसणायरिए नामेगे नो वायणायरिए, —जाव—

एगे नो उद्देसणायरिए नो वायणायरिए

चत्तारि अतेवासी पण्णत्ता तं जहा-

पव्वायणतेवासी नामेगे नो उवट्ठावणतेवासी,

उवट्ठावणतेवासी नामेगे नो पव्वायणतेवासी,

एगे पव्वायणतेवासी वि उवट्ठावणतेवासी वि,

एगे नो पव्वायणतेवासी नो उवट्ठावणंतेवासी. धम्मतेवासी

चत्तारि अंतेवासी पण्णत्ता त जहा-

उद्देसणंतेवासी नामेगे नो वायणतेवासी, —जाव—

एगे नो उद्देसणतेवासी नो वायणतेवासी. धम्मतेवासी

चत्तारि निग्गथा पण्णत्ता त जहा-

राइणिए समणे निग्गथे महाकम्मे महाकिरिए अणायावी

असमिए धम्मस्स अणाराहए भवइ,

राइणिए समणे निग्गथे अप्पकम्मे अप्पकिरिए आयावी

समिए धम्मस्स आराहए भवइ,

ओमराइणिए समणे निग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए अणायावी असमिए धम्मस्स अणाराहए भवइ,

ओमराइणिए समणे निग्गंथे अप्पकम्मे अप्पकिरिए आयावी समिए धम्मस्स आराहए भवइ

चत्तारि निग्गंथीओ पण्णत्ताओ. त जहा-

राइणिया समणी निग्गंथी महाकम्मा महाकिरिया अणायावि समिया धम्मस्स अणाराहिया भवइ —जाव—

ओमराइणिया समणी निग्गंथी अप्पकम्मा अप्पकिरिया आयावि समिया धम्मस्स आराहिया भवइ

चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता. तं जहा-

राइणिए समणोवासए महाकम्मे महाकिरिए अणायावि असमिए धम्मस्स अणाराहए भवइ —जाव—

ओमराइणिए समणोवासए अप्पकम्मे अप्पकिरिए आयावि समिए धम्मस्स आराहए भवइ

चत्तारि समणोवासियाओ पण्णत्ताओ तं जहा-

रायणिया समणोवासिया महाकम्मा महाकिरिया अणायावि समिया धम्मस्स आराहिया भवइ —जाव—

ओमराइणिया समणोवासिया अप्पकम्मा अप्पकिरिया आयावि समिया धम्मस्स आराहिया भवइ.

३२१ चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता. त जहा-

अम्मापिइसमाणे, भाइसमाणे,

मित्तसमाणे, सवत्तिसमाणे.

चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता. तं जहा-

अद्दागसमाणे, पडागसमाणे,

खाणुसमाणे, खरकंटयसमाणे. २

३२२ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स समणोवासगाण सोहम्मकप्पे अरुणाभे विमाणे चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता

३२३ चउहि ठाणेहि अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं सचाएइ हव्वमागच्छित्तए तं जहा-

अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे से ण माणुस्सए कामभोगे नो आढाइ नो परियाणाइ नो अट्ठं वधइ, नो नियाण पगरेइ, नो ठिइपगप्पं पगरेइ,

अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए, गिद्धे, गढिए, अज्झोववण्णे तस्स णं माणुस्सए पेमे वोच्छिण्णे दिव्वे सकते भवइ,

अहुणोववण्णे देवे देवलोगु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे, गढिए अज्झोववण्णे, तस्स णं एव भवइ, इण्हि गच्छं, मुहुत्तेणं गच्छं, तेणं कालेणं अप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति,

अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए, गिद्धे, गढिए अज्झोववण्णे तस्स ण माणुस्सए गंधे पडिकूले पडिलोमे या वि भवइ, उड्ढपि य णं माणुस्सए गधे

—जाव— चत्तारि पंच जोयणसयाइं हव्वमागच्छइ,
इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए नो चेव ण संचाएइ हव्वमागच्छित्तए

चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए संचाएइ हव्वमागच्छित्तए. तं जहा-

अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए —जाव— अणज्झोववण्णे, तस्स ण एवं भवइ, "अत्थि खलु मम माणुस्सए भवे आयरिएइ वा, उवज्झाएइ वा, पवत्तीइ वा, थेरेइ वा, गणीइ वा, गणधरेइ वा, गणावच्छेएइ वा, जेसिं पभावेणं मए इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी, दिव्वा देवजुइ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया", गच्छामि ण ते भगवते वदामि —जाव— पज्जुवासामी

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु —जाव— अणज्झोववण्णे तस्स णं एवं भवइ "एस ण माणुस्सए भवे नाणीइ वा तवस्सीइ वा अइदुक्करकारए" त गच्छामि ण ते भगवंते वदामि —जाव— पज्जुवासामि.

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु —जाव— अणज्झोववण्णे तस्स ण एवं भवइ "अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मायाइ वा —जाव— सुण्हाइ वा, तं गच्छामि ण तेसिमंतियं पाउब्भवामि पासंतु ता मे इममेयारूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं,

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु —जाव— अणज्झोववण्णे

तस्स ण एवं भवइ—"अत्थि ण मम माणुस्सए भवे मित्तेइ वा, सहीइ वा, सहाएइ वा, सगएइ वा तेसिं च ण अम्हे अण्णमण्णस्स सगारे पडिसुए भवइ" जो मे पुव्वि चयइ से सवोहेयव्वे,

इच्चेएहिं —जाव— संचाएइ हव्वमागच्छित्तए २

३२४ चउहिं ठाणेहिं लोगधयारे सिया. तं जहा-

अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं,

अरहतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे,

पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे,

जायतेए वोच्छिज्जमाणे.

चउहिं ठाणेहिं लोउज्जोए सिया त जहा-

अरहतेहिं जायमाणेहिं,

अरहतेहिं पव्वयमाणेहिं,

अरहताण नाणुप्पायमहिमासु,

अरहताणं परिनिव्वाणमहिमासु.

एव देवधगारे, देवुज्जोए, देवसण्णिवाए, देवुक्कलियाए, देवकहकहए

चउहिं ठाणेहिं देविंदा माणुस्स लोग हव्वमागच्छंति

एवं जहा-तिठाणे —जाव— लोगतिया देवा माणुस्स लोग हव्वमागच्छेज्जा त जहा-

अरहतेहिं जायमाणेहिं —जाव—

अरिहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु ३

२२५ चत्तारि दुहसेज्जाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

तत्थ खलु इमा पढमा दुहसेज्जा. तं जहा-

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए निग्गंथे पावयणे संकिए कंखिए विइगिच्छिए भेयसमावण्णे कलुससमावण्णे निग्गंथं पावयणं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, निग्गंथं पावयणं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे मणं उच्चावयं नियच्छइ विणिघायमावज्जइ.

पढमा दुहसेज्जा.

अहावरा दोच्चा दुहसेज्जा-

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ —जाव— पव्वइए सएणं लाभेणं नो तुस्सइ, परस्स लाभमासाएइ, पीहेइ, पत्थेइ, अभिलसइ परस्स लाभमासाएमाणे —जाव— अभिलसमाणे मणं उच्चावयं नियच्छइ, विणिघायमावज्जइ.

दोच्चा दुहसेज्जा

अहावरा तच्चा दुहसेज्जा-

से णं मुंडे भवित्ता —जाव— पव्वइए दिव्वे माणुस्सए कामभोगे आसाएइ —जाव — अभिलसइ दिव्वे माणुस्सए कामभोगे आसाएमाणे —जाव— अभिलसमाणे मणं उच्चावयं नियच्छइ विणिघायमावज्जइ,

तच्चा दुहसेज्जा

अहावरा चउत्था दुहसेज्जा-

से णं मुंडे —जाव— पव्वइए तस्स णं एवं भवइ "जया णं अहं अगारवासं आवसामी तया णं अहं संवाहणपरि-

मद्दणगातवभंगगातुच्छोलणाइं लभामि जप्पभिइ च णं अह मुंडे —जाव— पव्वइए तप्पभिइ च ण अह सवाहण — जाव-- गातुच्छोलणाइ नो लभामि, से ण सवाहण —जाव - गातुच्छोलणाइ आसाएइ —जाव— अभिलसइ", से ण सवाहण —जाव— गातुच्छोलणाइ आसाएमाणे — जाव — मण उच्चावय नियच्छइ विणिघायमावज्जइ

चउत्था दुहसेज्जा.

चत्तारि सुहसेज्जाओ पण्णत्ताओ. त जहा-

तत्थ खलु पढमा सुहसेज्जा-

से ण मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए निग्गथे पावयणे निस्सकिए निक्कखिए निव्वितिगिच्छिए नो भेदसमावण्णे, नो कलुसमावण्णे निग्गथ पावयण सद्दहइ पत्तीयइ रोएइ निग्गथ पावयण सद्दहमाणे पत्तियमाणे रोएमाणे, नो मण उच्चावयं नियच्छइ, नो विणिघायमावज्जइ.

पढमा सुहसेज्जा

अहावरा दोच्चा सुहसेज्जा-

से ण मुंडे —जाव— पव्वइए सएण लाभेण तुस्सइ परस्स लाभ नो आसाएइ, नो पीहेइ, नो पत्थेइ, नो अभिलसइ परस्स लाभमणासाएमाणे —जाव— अणभिलसमाणे, नो मण उच्चावय नियच्छइ, नो विणिघायमावज्जइ,

दोच्चा सुहसेज्जा.

अहावरा तच्चा सुहसेज्जा-

से णं मुंडे —जाव— पव्वइए दिव्वे माणुस्सए कामभोगे नो आसाएइ —जाव— नो अभिलसइ दिव्वे माणुस्सए कामभोगे अणासाएमाणे —जाव— अणभिलसमाणे नो मणं उच्चावय नियच्छइ, नो विणिघायमावज्जइ,

तच्चा सुहसेज्जा.

अहावरा चउत्था सहसेज्जा-

से णं मुंडे —जाव— पव्वइए तस्स णं एवं भवइ-जइ ताव अरहंता भगवता हट्ठा आरोग्गा बलिया कल्लसरीरा अण्णयराइ ओरालाइं कल्लाणाइ विउलाइं पययाइं पग्गहियाइं महाणुभागाइं कम्मक्खयकारणाइं तवोकम्माइ पडिवज्जति किमंग पुण अहं अब्भोवगमि ओवक्कमिय वेयण नो सम्मं सहामि खमामि तितिक्खेमि अहियासेमि ममं च ण अब्भोवगमिओवक्कमियं सम्ममसहमाणस्स अक्खममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणहियासेमाणस्स किं मण्णे कज्जति ? एगतसो मे पावे कम्मे कज्जइ मम च ण अब्भोवगमिओ —जाव— सम्मं सहमाणस्स —जाव— अहियासेमाणस्स किं मण्णे कज्जइ ? एगतसो मे निज्जरा कज्जइ.

चउत्था सुहसेज्जा २

३२६ चत्तारि अवायणिज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

अविणीए, वीगइपडिवद्धे, ओसविएपाहुड़े, माइ.

चत्तारि वायणिज्जा पण्णत्ता तं जहा-
विणीए, अविगइपडिबद्धे,
विओसवियपाहुडे, अमाइ. २

३२७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
आयंभरे नामेगे नो परभरे,
परंभरे नामेगे नो आयभरे,
एगे आयभरे वि परंभरे वि,
एगे नो आयभरे नो परंभरे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
दुग्गए नामेगे दुग्गए, दुग्गए नामेगे सुग्गए,
सुग्गए नामेगे दुग्गए, सुग्गए नामेगे सुग्गए

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
दुग्गए नामेगे दुव्वए, दुग्गए नामेगे सुव्वए,
सुग्गए नामेगे दुव्वए, सुग्गए नामेगे सुव्वए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
दुग्गए नामेगे दुप्पडियाणदे,
दुग्गए नामेगे सुप्पडियाणदे,
सुग्गए नामेगे दुप्पडियाणदे,
सुग्गए नामेगे सुप्पडियाणदे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दुग्गए नामेगे दुग्गइगामी,

दुग्गए नामेगे सुग्गइगामी,
सुग्गए नामेगे दुग्गइगामी,
सुग्गए नामेगे सुग्गइगामी.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
दुग्गए नामेगे दुग्गइंगए,
दुग्गए नामेगे सुगइंगए,
सुगए नामेगे दुग्गइंगए,
सुगए नामेगे सुगइंगए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
तमे नामेगे तमे, तमे नामेगे जोई,
जोई नामेगे तमे, जोई नामेगे जोई

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
तमे नामेगे तमवले, तमे नामेगे जोइवले,
जोई नामेगे तमवले, जोई नामेगे जोइवले.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
तमे नामेगे तमवलपलज्जणे,
तमे नामेगे जोइवलपलज्जणे,
जोई नामेगे तमवलपलज्जणे,
जोई नामेगे जोइवलपलज्जणे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
परिण्णायकम्मे नामेगे नो परिण्णायसण्णे,
परिण्णायसण्णे नामेगे नो परिण्णायकम्मे,

एगे परिण्णायकम्मे वि परिण्णायसण्णे वि,
एगे नो परिण्णायकम्मे नो परिण्णायसण्णे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
परिण्णायकम्मे नामेगे नो परिण्णायगिहवासे,
परिण्णायगिहवासे नामेगे नो परिण्णायकम्मे,
एगे परिण्णायगिहवासे वि परिण्णायकम्मे वि,
एगे नो परिण्णायगिहवासे नो परिण्णायकम्मे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. त जहा-
परिण्णायसण्णे नामेगे नो परिण्णायगिहवासे,
परिण्णायगिहवासे नामेगे नो परिण्णायसण्णे,
एगे परिण्णायसण्णे वि परिण्णायगिहवासे वि,
एगे नो परिण्णायसण्णे नो परिण्णायगिहवासे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
इहत्थे नामेगे नो परत्थे,
परत्थे नामेगे नो इहत्थे,
एगे इहत्थे वि परत्थे वि,
एगे नो इहत्थे नो परत्थे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
एगेणं नामेगे वड्ढइ एगेण हायइ,
एगेणं नामेगे वड्ढइ दोहिं हायइ,
दोहिं नामेगे वड्ढइ एगेणं हायइ,
एगे दोहिं नामेगे वड्ढइ दोहिं हायइ

चत्तारि कथगा पण्णत्ता तं जहा-

आइण्णे नामेगे आइण्णे, आइण्णे नामेगे खलुंके,

खलुंके नामेगे आइण्णे, खलुंके नामेगे खलुंके.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

आइण्णे नामेगे आइण्णे, —जाव—

खलुंके नामेगे खलुंके

चत्तारि कंथगा पण्णत्ता. तं जहा-

आइण्णे नामेगे आइण्णयाए विहरइ,

आइण्णे नामेगे खलुंकत्ताए विहरइ,

खलुंके नामेगे आइण्णयाए विहरई,

खलुंके नामेगे खलुंकत्ताए विहरइ.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

आइण्णे नामेगे आइण्णत्ताए विहरइ, —जाव—

खलुंके नामेगे खलुंकत्ताए विहरइ.

चत्तारि पकथगा पण्णत्ता. तं जहा-

जाइसपण्णे नामेगे नो कुलसपण्णे,

कुलसंपण्णे नामेगे नो जाइसंपण्णे,

एगे जाइसपण्णे वि कुलसपण्णे वि,

एगे नो जाइसपण्णे नो कुलसपण्णे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

जाइसपण्णे नामेगे नो कुलसपण्णे, —जाव—

एगे नो जाइसपण्णे नो कुलसपण्णे

चत्तारि कंथगा पण्णत्ता तं जहा-
जाइसंपण्णे नामेगे नो बलसंपण्णे, —जाव—
एगे नो जाइसंपण्णे नो बलसंपण्णे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जाइसंपण्णे नामेगे नो बलसपण्णे, — जाव—
एगे नो जाइसपण्णे नो बलसपण्णे

चत्तारि कथगा पण्णत्ता त जहा-
जाइसंपण्णे नामेगे नो रूवसपण्णे, —जाव—
एगे नो जाइसंपण्णे नो रूवसंपण्णे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जाइसपण्णे नामेगे नो रूवसपण्णे, —जाव --
एगे नो जाइसंपण्णे नो रूवसपण्णे

चत्तारि कथगा पण्णत्ता त जहा-
जाइसपण्णे नामेगे नो जयसपण्णे, --जाव—
एगे नो जाइसपणे नो जयसपण्णे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. त जहा-
एगे जाइसपण्णे नामेगे नो जयसपण्णे, — जाव—
एगे नो जाइसपण्णे नो जयसपण्णे
एव कुलसपण्णे य बलसपण्णे य,
एवं कुलसपण्णे य रूवसंपण्णे य,
एवं कुलसपण्णे य जयसपण्णे य,
एव बलसपण्णे य रूवसंपण्णे य,

एवं बलसंपण्णे य जयसंपण्णे य,
सव्वत्थ पुरिसजाया पड़िवक्खो

चत्तारि कंथगा पण्णत्ता तं जहा-
रूवसपण्णे नामेगे नो जयसपण्णे, —जाव —
एगे नो रूवसंपण्णे नो जयसपण्णे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
रूवसंपण्णे नामेगे नो जयसंपण्णे, —जाव—
एगे नो रूवसंपण्णे नो जयसंपण्णे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
सीहत्ताए नामेगे निक्खंते सीहत्ताए विहरइ,
सीहत्ताए नामेगे निक्खंते सियालत्ताए विहरइ,
सीयालत्ताए नामेगे निक्खते सीहत्ताए विहरइ,
सीयालत्ताए नामेगे निक्खते सीयालत्ताए विहरइ

३२८ चत्तारि लोगे समा पण्णत्ता. तं जहा-
अपइट्ठाणे नरए, जंबुद्दीवे दीवे,
पालए जाणविमाणे, सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे.

चत्तारि लोगे समा सपक्खि सपड़िदिसि पण्णत्ता तं जहा-
सीमंतए नरए, समयक्खेत्ते,
उडुविमाणे, इसीपब्भारा पुढवी. २

३२९ उड्ढलोगे णं चत्तारि विसरीरा पण्णत्ता. तं जहा-
पुढविकाइया, आउकाइया,
वणस्सइकाइया, उराला तसापाणा

अहो लोगे णं चत्तारि विसरीरा पण्णत्ता तं जहा-
पुढविकाइया —जाव—
उराला तसा पाणा.
एवं तिरियलोए वि. २

३३० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते

३३१ चत्तारि सिज्जपडिमाओ पण्णत्ताओ.

चत्तारि वत्थपडिमाओ पण्णत्ताओ.

चत्तारि पायपडिमाओ पण्णत्ताओ

चत्तारि ठाणपडिमाओ पण्णत्ताओ ४

३३२ चत्तारि सरीरगा जीवफुडा पण्णत्ता. त जहा-
वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए.

चत्तारि सरीरगा कम्मुम्मीसगा पण्णत्ता तं जहा-
ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेउए २

३३३ चउहिं अत्थिकाएहिं लोगे फुडे पण्णत्ते. तं जहा-
धम्मत्थिकाएणं, अधम्मत्थिकाएणं,
जीवत्थिकाएणं, पुग्गलत्थिकाएण.

चउहिं वादरकाएहिं उववज्जमाणेहिं लोगे फुडे पण्णत्ते.
तं जहा-
पढविकाइएहिं, आउकाइएहिं,
वाउकाइएहिं, वणस्सइकाइएहिं २

३३४ चत्तारि पएसग्गेणं तुल्ला पण्णत्ता तं जहा-

धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए,

लोगागासे, एगजीवे.

३३५ चउण्हमेगं सरीरं नो सुपस्सं भवइ. तं जहा-

पुढविकाइयाणं, आउकाइयाणं,

तेउकाइयाणं, वणस्सइकाइयाणं.

३३६ चत्तारि इंदियत्था पुट्ठा वेदेंति. तं जहा-

सोइंदियत्थे, घाणिंदियत्थे,

जिब्भिंदियत्थे, फासिंदियत्थे.

३३७ चउहिं ठाणेहिं जीवा य पोग्गला य नो संचाएइ वहिया लोगंता गमणयाए तं जहा-

गइअभावेणं, निरुवग्गहयाए,

लुक्खयाए, लोगाणुभावेण.

३३८ चउव्विहे णाए पण्णत्ते तं जहा-

आहरणे, आहरणतद्देसे,

आहरणतद्दोसे, उवण्णासोवणए

आहरणे चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा-

अवाए, उवाए, ठवणाकम्मे, पडुपण्णविणासी

आहरणतद्देसे चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा-

अणुसिट्ठि, उवालंभे, पुच्छा, निस्सावयणे

आहरणतद्दोसे चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा-

अधम्मजुत्ते, पडिलोमे, अंतोवणीए, दुरुवणीए.

उवण्णासोवणए चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा-

तव्वत्थुए, तदण्णवत्थुए,

पडिनिभे, हेऊ

हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा-

जावए, थावए, वंसए, लूसए

अहवा हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा-

पच्चक्खे, अणुमाणे, ओवम्मे, आगमे

अहवा हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा-

अत्थित्ते अत्थि सो हेऊ,

अत्थित्ते नत्थि सो हेऊ,

नत्थित्ते अत्थि सो हेऊ,

नत्थित्ते नत्थि सो हेऊ ८

३३९ चउव्विहे सखाणे पण्णत्ते तं जहा-

पडिकम्मं, ववहारे, रज्जू, रासी.

अहोलोगे ण चत्तारि अंधगारं करेंति. तं जहा-

नरगा, नेरइया,

पावाइं कम्माइं, असुभा पोग्गला.

तिरियलोगे ण चत्तारि उज्जोय करेंति. तं जहा-

चंदा, सूरा, मणि, जोई

उड्ढलोगे णं चत्तारि उज्जोय करेंति. तं जहा-

देवा, देवीओ, विमाणा, आभरणा ४

चउट्ठाणस्स चउत्थो उद्देसो

३४० चत्तारि पसप्पगा पण्णत्ता तं जहा-

अणुप्पण्णाणं भोगाणं उप्पाएत्ता एगे पसप्पए,

पुव्वुप्पण्णाणं भोगाणं अविप्पओगेणं एगे पसप्पए,

अणुप्पण्णाणं सोक्खाणं उप्पाइत्ता एगे पसप्पए,

पुव्वुप्पण्णाणं सोक्खाणं अविप्पओगेणं एगे पसप्पए.

३४१ नेरइयाणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते तं जहा-

इगालोवमे, मुम्मरोवमे, सीयले, हिमसीयले.

तिरिक्खजोणियाणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते तं जहा-

ककोवमे, बिलोवमे, पाणमसोवमे, पुत्तमंसोवमे

मणुस्साण चउव्विहे आहारे पण्णत्ते तं जहा-

असणे —जाव — साइमे

देवाण चउव्विहे आहारे पण्णत्ते तं जहा-

वण्णमते, गंधमते, रसमते, फासमते. ४

३४२ चत्तारि जाइआसीविसा पण्णत्ता. त जहा-

विच्छुयजाइआसीविसे, मडुक्कजाइआसीविसे,

उरगजाइआसीविसे, मणुस्सजाइआसीविसे.

प्र० विच्छुयजाइआसीविसस्स णं भते ! केवइए विसए पण्णत्ते ?

उ० पभू ण विच्छुयजाइआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्त वोंदि विसेण विसपरिणय विसट्टमाणि करित्तए
विसए से विसट्ठयाए नो चेव णं सपत्तीए करेंसु वा, करेंति वा, करिस्संति वा

प्र० मंडुक्कजाइ आसीविसस्स पुच्छा ?

उ० पभू णं मंडुक्कजाइआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं वोंदि विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणि करित्तए
सेसं त चेव —जाव— करिस्सति वा

प्र० उरगजाइ पुच्छा ?

उ० पभू 'ण उरगजाइआसीविसे जबुद्दीवपमाणमेत्त वोंदि विसेण विसपरिणयं विसट्टमाणि करित्तए.
सेस त चेव —जाव— करिस्संति वा

प्र० मणुस्सजाइ पुच्छा ?

उ० पभू णं मणुस्सजाइआसीविसे समयखेत्तपमाणमेत्तं वोंदि विसेणं विसपरिणय विसट्टमाणि करेत्तए.
विसए से विसट्ठयाए नो चेव ण —जाव— करिस्सति वा.

३४३ चउव्विहे वाही पण्णत्ता. त जहा-

वाइए, पित्तिए, सिंभिए, सण्णिवाइए.

चउव्विहा तिगिच्छा पण्णत्ता. तं जहा-
विज्जो, ओसहाइ, आउरे, परिचारए २

३४४ चत्तारि तिगिच्छगा पण्णत्ता तं जहा-
आयतिगिच्छए नामेगे नो परतिगिच्छए,
परतिगिच्छए नामेगे नो आयतिगिच्छए,
एगे आयतिगिच्छए वि परतिगिच्छए वि,
एगे नो आयतिगिच्छए नो परतिगिच्छए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
वणकरे नामेगे नो वणपरिमासी,
वणपरिमासी नामेगे नो वणकरे,
एगे वणकरे वि वणपरिमासी वि,
एगे नो वणकरे नो वणपरिमासी,

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
वणकरे नामेगे नो वणसारक्खी —जाव—
एगे नो वणकरे नो वणसारक्खी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
वणकरे नामेगे नो वणसंरोही —जाव—
एगे नो वणकरे नो वणसंरोही.

चत्तारि वणा पण्णत्ता तं जहा-
अंतोसल्ले नामेगे नो बाहिसल्ले,

वाहिसल्ले नामेगे नो अंतोसल्ले,
एगे अंतोसल्ले वि वाहिसल्ले वि,
एगे नो अंतोसल्ले नो वाहिसल्ले.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
अंतोसल्ले नामेगे नो वाहिसल्ले —जाव—
एगे नो अंतोसल्ले नो वाहिसल्ले

चत्तारि वणा पण्णत्ता तं जहा-
अंतो दुट्ठे नामेगे नो वाहिं दुट्ठे,
वाहिं दुट्ठे नामेगे नो अंतो दुट्ठे,
एगे अंतो दुट्ठे वि वाहिं दुट्ठे वि,
एगे नो अंतो दुट्ठे नो वाहिं दुट्ठे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
सेयंसे नामेगे सेयसे, सेयने नामेगे पावंसे,
पावसे नामेगे सेयसे, पावसे नामेगे पावसे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
सेयसे नामेगे सेयंसेत्ति सालिसए,
सेयसे नामेगे पावसेत्ति सालिसए,
एगे सेयसे वि सेयसेत्ति सालिसए वि,
एगे नो सेयंसे नो सेयसेत्ति सालिसए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
सेयंसेत्ति नामेगे सेयसेत्ति मण्णइ,

सेयंसेत्ति नामेगे पावंसेत्ति मण्णइ,
एगे सेयंसेत्ति वि सेयंसेत्ति मण्णइ वि,
एगे नो सेयंसेत्ति नो सेयंसेत्ति मण्णइ.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
सेयंसे नामेगे सेयंसेत्ति सालिसए मण्णइ,
सेयंसे नामेगे पावंसेत्ति सालिसए मण्णइ,
एगे सेयंसे वि सेयंसेत्ति सालिसए मण्णइ वि,
एगे नो सेयंसे नो सेयंसेत्ति सालिसए मण्णइ.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
आघवइत्ता नामेगे नो परिभावइत्ता,
परिभावइत्ता नामेगे नो आघवइत्ता,
एगे आघवइत्ता वि परिभावइत्ता वि,
एगे नो आघवइत्ता नो परिभावइत्ता.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
आघवइत्ता नामेगे नो उंछजीविसंपण्णे,
उंछजीविसंपण्णे नामेगे नो आघवइत्ता,
एगे आघवइत्ता वि उंछजीविसंपण्णे वि,
एगे नो आघवइत्ता नो उंछजीविसंपण्णे.

चउव्विहा रुक्खविगुव्वणा पण्णत्ता तं जहा-
पवालत्ताए, पत्तत्ताए, पुप्फत्ताए, फलत्ताए. १४

३४५ चत्तारि वाइसमोसरणा पण्णत्ता तं जहा-

किरियावाई, अकिरियावाई,
अण्णाणियवाई, वेणइयवाई

नेरइयाणं चत्तारि वाइसमोसरणा पण्णत्ता तं जहा-
किरियावाई —जाव— वेणइयवाई
एवं असुरकुमाराण वि —जाव— थणियकुमाराणं.
एवं विगलिंदियवज्जं —जाव— वेमाणियाणं २

३४६ चत्तारि मेहा पण्णत्ता तं जहा-
गज्जित्ता नामेगे नो वासित्ता,
वासित्ता नामेगे नो गज्जित्ता,
एगे गज्जित्ता वि वासित्ता वि,
एगे नो गज्जित्ता नो वासित्ता

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
गज्जित्ता नामेगे नो वासित्ता, —जाव—
एगे नो गज्जित्ता नो वासित्ता

चत्तारि मेहा पण्णत्ता तं जहा-
गज्जित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता,
विज्जुयाइत्ता नामेगे नो गज्जित्ता,
एगे गज्जित्ता वि विज्जुयाइत्ता वि,
एगे नो गज्जित्ता नो विज्जुयाइत्ता

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
गज्जित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता —जाव—

एगे नो गज्जित्ता नो विज्जुयाइत्ता.

चत्तारि मेहा पण्णत्ता. तं जहा-
वासित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता,
विज्जुयाइत्ता नामेगे नो वासित्ता,
एगे वासित्ता वि विज्जुयाइत्ता वि,
एगे नो वासित्ता नो विज्जुयाइत्ता.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
वासित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता —जाव—
एगे नो वासित्ता नो विज्जुयाइत्ता.

चत्तारि मेहा पण्णत्ता तं जहा-
कालवासी नामेगे नं। अकालवासी,
अकालवासी नामेगे नो कालवासी,
एगे कालवासी वि अकालवासी वि,
एगे नो कालवासी नो अकालवासी.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
कालवासी नामेगे नो अकालवासी —जाव—
एगे नो कालवासी नो अकालवासी.

चत्तारि मेहा पण्णत्ता. तं जहा-
खेत्तवासी नामेगे नो अखेत्तवासी,
अखेत्तवासी नामेगे नो खेत्तवासी,
एगे खेत्तवासी वि अखेत्तवासी वि,

एगे नो खेत्तवासी नो अखेत्तवासी.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
खेत्तवासी नामेगे नो अखेत्तवासी, —जाव—
एगे नो खेत्तवासी नो अखेत्तवासी

चत्तारि मेहा पण्णत्ता. तं जहा-
जणइत्ता नामेगे नो निम्मवइत्ता,
निम्मवइत्ता नामेगे नो जणइत्ता,
एगे जणइत्ता वि निम्मवइत्ता वि,
एगे नो जणइत्ता नो निम्मवइत्ता

एवामेव चत्तारि अम्मापियरो पण्णत्ता. तं जहा-
जणइत्ता नामेगे नो निम्मवइत्ता, —जाव—
एगे नो जणइत्ता नो निम्मवइत्ता

चत्तारि मेहा पण्णत्ता तं जहा-
देसवासी नामेगे नो सव्ववासी,
सव्ववासी नामेगे नो देसवासी,
एगे देसवासी वि सव्ववासी वि,
एगे नो देसवासी नो सव्ववासी.

एवामेव चत्तारि रायाणो पण्णत्ता तं जहा-
देसाहिवइ नामेगे सव्वाहिवइ, —जाव—
एगे नो देसाहिवइ नो सव्वाहिवइ १४

३४७ चत्तारि मेहा पण्णत्ता तं जहा-

पुक्खलसंवट्टए, पज्जुण्णे, जीमूए, जिम्हे

पुक्खलसंवट्टए णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससहस्साइं भावेइ,

पज्जुण्णे णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससयाइं भावेइ,

जीमूए णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवासाइं भावेइ,

जिम्हे णं महामेहे बहूहिं वासेहिं एगं वासं भावेइ वा, ण वा भावेइ.

३४८ चत्तारि करंडगा पण्णत्ता. तं जहा-

सोवागकरंडए, वेसियाकरंडए,

गाहावइकरंडए, रायकरंडए

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता. तं जहा-

सोवागकरंडगसमाणे, वेसियाकरंडगसमाणे,

गाहावइकरंडगसमाणे, रायकरंडगसमाणे. २

३४९ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता तं जहा-

साले नामेगे सालपरियाए,

साले नामेगे एरंडपरियाए,

एरंडे नामेगे सालपरियाए,

एरंडे नामेगे एरंडपरियाए.

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता. तं जहा-

साले नामेगे सालपरियाए — जाव —

एरंडे नामेगे एरंडपरियाए.

चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता तं जहा-
साले नामेगे सालपरिवारे,
साले नामेगे एरंडपरिवारे,
एरंडे नामेगे सालपरिवारे,
एरंडे नामेगे एरंडपरिवारे.

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता तं जहा-
साले नामेगे सालपरिवारे —जाव—
एरंडे नामेगे एरंडपरिवारे

गाहाओ—सालदुममज्झयारे ,
जह साले णाम होइ दुमराया ।
इ य सुंदरआयरिए ,
सुंदरसीसे मुणेयव्वे ।।१।।
एरंडमज्झयारे ,
जह साले णाम होइ दुमराया ।
इ य सुंदरआयरिए ,
मंगुलसीसे मुणेयव्वे ।।२।।
सालदुममज्झयारे ,
एरंडे णाम होइ दुमराया ।
इ य मंगुलआयरिए ,
सुंदरसीसे मुणेयव्वे ।।३।।

एरंडमज्झयारे ,
एरंडे णाम होइ दुमराया ।
इ य मंगुलआयरिएं ,
मंगुलसीसे मुणेयव्वे ॥४॥

चत्तारि मच्छा पण्णत्ता तं जहा-
अणुसोयचारी, पड़िसोयचारी,
अंतचारी, मज्झचारी

एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता. तं जहा-
अणुसोयचारी, —जाव— मज्झचारी

चत्तारि गोला पण्णत्ता तं जहा-
मधुसित्थगोले, जउगोले, दारुगोले, मट्टियागोले.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
मधुसित्थगोलसमाणे —जाव— मट्टियागोलसमाणे.

चत्तारि गोला पण्णत्ता त जहा-
अयगोले, तउगोले, तंबगोले, सीसगोले

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अयगोलसमाणे, —जाव— सीसगोलसमाणे.

चत्तारि गोला पण्णत्ता तं जहा-
हिरण्णगोले, सुवण्णगोले,
रयणगोले, वयरगोलें.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
हिरण्णगोलसमाणे, —जाव— वइरगोलसमाणे

चत्तारि पत्ता पण्णत्ता तं जहा-
असिपत्ते, करपत्ते, खुरपत्ते, कलवचीरियापत्ते.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
असिपत्तसमाणे, —जाव—
कलंबचीरियापत्तसमाणे.

चत्तारि कडा पण्णत्ता तं जहा-
सुंबकडे, विदलकडे, चम्मकडे, कंबलकडे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
सुंबकडसमाणे — जाव— कंबलकडसमाणे. १६

३५० चउव्विहा चउप्पया पण्णत्ता तं जहा-
एगखुरा, दुखुरा, गंडीपया, सणप्फया

चउव्विहा पक्खी पण्णत्ता. तं जहा-
चम्मपक्खी, लोमपक्खी, समुग्गपक्खी, विततपक्खी

चउव्विहा खुड्डपाणा पण्णत्ता. तं जहा-
बेइंदिया, तेइंदिया,
चउरिंदिया, समुच्छिम-पंचिदिय-तिरिक्खजोणिया. २

३५१ चत्तारि पक्खी पण्णत्ता. तं जहा-
निवत्तित्ता नामेगे नो परिवत्तित्ता,
परिवत्तित्ता नामेगे नो निवत्तित्ता,

एगे निवत्तित्ता वि परिवत्तित्ता वि,
एगे नो निवत्तित्ता नो परिवत्तित्ता.

एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता. तं जहा-
निवत्तित्ता नामेगे नो परिवत्तित्ता —जाव—
एगे नो निवत्तित्ता नो परिमत्तित्ता. २

३५२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
निक्कट्ठे नामेगे निक्कट्ठे,
निक्कट्ठे नामेगे अनिक्कट्ठे,
अनिक्कट्ठे नामेगे निक्कट्ठे,
अनिक्कट्ठे नामेगे अनिक्कट्ठे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
निक्कट्ठे नामेगे निक्कट्ठप्पा, —जाव—
अनिक्कट्ठे नामेगे अनिक्कट्ठप्पा.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
बुहे नामेगे बुहे, बुहे नामेगे अबुहे,
अबुहे नामेगे बुहे, अबुहे नामेगे अबुहे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
बुहे नामेगे बुहहियए —जाव—
अबुहे नामेगे अबुहहियए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
आयाणुकंपए नामेगे नो पराणुकंपए,

परागुकंपए नामेगे नो आयाणुकंपए,
एगे आयाणुकंपए वि पराणुकंपए वि,
एगे नो आयाणुकंपए नो पराणुकंपए ५

३५३ चत्तारि संवासे पण्णत्ते तं जहा-
दिव्वे, आसुरे, रक्खसे, माणुसे

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते तं जहा-
देवे नामेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
देवे नामेगे आसुरीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
असुरे नामेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
असुरे नामेगे आसुरीए सद्धिं संवासं गच्छइ.

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते. तं जहा-
देवे नामेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
देवे नामेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
रक्खसे नामेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
रक्खसे नामेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छइ

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते तं जहा-
देवे नामेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
देवे नामेगे मणुस्सीहिं सद्धिं संवासं गच्छइ,
मणुस्से नामेगे देवीहिं सद्धिं संवासं गच्छइ,
मणुस्से नामेगे मणुस्सीहिं सद्धिं संवासं गच्छइ.

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते. तं जहा-

असुरे नामेगे आसुरीए सद्धि संवासं गच्छइ,
असुरे नामेगे रक्खसीए सद्धि संवासं गच्छइ,
रक्खसे नामेगे आसुरीए सद्धि संवासं गच्छइ,
रक्खसे नामेगे रक्खसीए सद्धि संवासं गच्छइ

चउव्विहे सवासे पण्णत्ते त जहा-
असुरे नामेगे आसुरीए सद्धि सवासं गच्छइ,
असुरे नामेगे मणुस्सीए सद्धि सवासं गच्छइ,
मणुस्से नामेगे आसुरीए सद्धि सवास गच्छइ,
मणुस्से नामेगे मणुस्सीए सद्धि सवासं गच्छइ.

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते तं जहा-
रक्खसे नामेगे रक्खसीए सद्धि संवासं गच्छइ,
रक्खसे नामेगे मणुस्सीए सद्धि संवासं गच्छइ,
मणुस्से नामेगे रक्खसीए सद्धि संवास गच्छइ,
मणुस्से नामेगे मणुस्सीए सद्धि संवासं गच्छइ ७

३५४ चउव्विहे अवद्धसे पण्णत्ते त जहा-
आसुरे, आभिओगे, समोहे, देवकिव्विसे

चउहि ठाणेहि जीवा आसुरत्ताए कम्मं पगरेंत्ति तं जहा-
कोवसीलयाए, पाहुडसीलयाए,
संसत्ततवोकम्मेणं, निमित्ताऽजीवयाए

चउहि ठाणेहि जीवा आभिओगत्ताए कम्मं पगरेंति तं जहा-
अत्तुक्कोसेणं, परपरिवाएणं,
भूइकम्मेणं, कोउयकरणेणं

चउहिं ठाणेहिं जीवा सम्मोहत्ताए कम्म पगरेंति. तं जहा-

उम्मग्गदेसणाए, मग्गतराएण,

कामासंसप्पओगेणं, भिज्जानियाणकरणेणं.

चउहिं ठाणेहिं जीवा देवकिव्विसियत्ताए कम्मं पगरेंति. त जहा-

अरहताणं अवण्णं वयमाणे,

अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्ण वयमाणे,

आयरियउ-वज्झायाण अवण्ण वयमाणे,

चाउवण्णस्स सघस्स अवण्णं वयमाणे ५

३५५ चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता तं जहा-

इहलोग-पड़िवद्धा, परलोग-पडिबद्धा,

दुहओ लोगपडिवद्धा, अपडिवद्धा.

चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

पुरओ पड़िवद्धा, दुहओ पड़िवद्धा,

मग्गओ पड़िवद्धा, अपड़िवद्धा

चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता तं जहा-

ओवायपव्वज्जा, अक्खायपव्वज्जा,

संगारपव्वज्जा, विहगगइपव्वज्जा.

चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता त जहा-

तुयावइत्ता, पुयावइत्ता,

मोयावइत्ता, परिपूयावइत्ता.

चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता. त जहा-
नड़खइया, भड़खइया,
सीहखइया, सीयालखइया.

चउव्विहा किसी पण्णत्ता तं जहा-
वाविया, परिवाविया,
निंदिया, परिणिंदिया.

एवामेव चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता तं जहा-
वाविया — जाव — परिणिंदिया

चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता. तं जहा-
धण्णपुंजियसमाणा, धण्णविरल्लियसमाणा,
धण्णविक्खित्तसमाणा, धण्णसंकट्टियसमाणा. ८

३५६ चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
आहारसण्णा, भयसण्णा,
मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा.

चउहिं ठाणेहिं आहारसण्णा समुप्पज्जइ तं जहा-
ओमकोट्ठयाए,
छुहावेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं,
मइए,
तदट्ठोवओगेणं

चउहिं ठाणेहिं भयसण्णा समुप्पज्जइ. त जहा-
हीणसत्तत्ताए,

भयवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं,

मइए,

तदट्ठोवओगेणं.

चउहिं ठाणेहिं मेहुणसण्णा समुप्पज्जइ. तं जहा-

चियमंस-सोणिययाए,

मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं,

मइए,

तदट्ठोवओगेण.

चउहिं ठाणेहिं परिग्गहसण्णा समुप्पज्जइ. तं जहा-

अविमुत्तयाए,

लोभवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएण,

मइए,

तदट्ठोवओगेण ५

३५७ चउव्विहा कामा पण्णत्ता त जहा-

सिंगारा, कलुणा,

बीभत्सा, रोद्दा

सिंगारा कामा देवाणं,

कलुणा कामा मणुयाण,

बीभच्छा कामा तिरिक्खजोणियाण,

रोद्दा कामा णेरइयाणं

३५८ चत्तारि उदगा पण्णत्ता तं जहा-

उत्ताणे नामेगे उत्ताणोदए,

उत्ताणे नामेगे गंभीरोदए,
गंभीरे नामेगे उत्ताणोदए,
गंभीरे नामेगे गभीरोदए

एवामेव पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणहियए —जाव—
गंभीरे नामेगे गभीरहियए.

चत्तारि उदगा पण्णत्ता तं जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणोभासी,
उत्ताणे नामेगे गंभीरोभासी,
गंभीरे नामेगे उत्ताणोभासी,
गभीरे नामेगे गभीरोभासी

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणोभासी —जाव—
गभीरे नामेगे गंभीरोभासी

चत्तारि उदहि पण्णत्ते त जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणोदही,
उत्ताणे नामेगे गंभीरोदही,
गभीरे नामेगे उत्ताणोदही,
गभीरे नामेगे गंभीरोदही.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणहियए, —जाव—

गंभीरे नामेगे गभीरहियए.

चत्तारि उदही पण्णत्ते त जहा-

उत्ताणे नामेगे उत्ताणोभासी,

उत्ताणे नामेगे गभीरोभासी,

गभीरे नामेगे उत्ताणोभासी,

गभीरे नामेगे गभीरोभासी

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

उत्ताणे नामेगे उत्ताणोभासी —जाव—

गंभीरे नामेगे गभीरोभासी. ८

३५९ चत्तारि तरगा पण्णत्ता तं जहा-

समुद्द तरामीतेगे समुद्द तरइ,

समुद्दं तरामीतेगे गोप्पय तरइ,

गोप्पयं तरामीतेगे समुद्द तरइ,

गोप्पय तरामितेगे गोप्पय तरइ.

चत्तारि तरगा पण्णत्ता त जहा-

समुद्द तरित्ता नामेगे समुद्दे विसीयइ,

समुद्द तरेत्ता नामेगे गोप्पए विसीयइ,

गोप्पय तरित्ता नामेगे समुद्दे विसीयइ,

गोप्पय तरित्ता नामेगे गोप्पए विसीयइ २

३६० चत्तारि कुभा पण्णत्ता तं जहा-

पुण्णे नामेगे पुण्णे, पुण्णे नामेगे तुच्छे,

तुच्छे नामेगे पुण्णे, तुच्छे नामेगे तुच्छे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
पुण्णे नामेगे पुण्णे, —जाव—
तुच्छे नामेगे तुच्छे.

चत्तारि कुंभा पण्णत्ता तं जहा-
पुण्णे नामेगे पुण्णोभासी,
पुण्णे नामेगे तुच्छोभासी,
तुच्छे नामेगे पुण्णोभासी,
तुच्छे नामेगे तुच्छोभासी.

एवं चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
पुण्णे नामेगे पुण्णोभासी, —जाव—
तुच्छे नामेगे तुच्छोभासी

चत्तारि कुंभा पण्णत्ता त जहा-
पुण्णे नामेगे पुण्णरूवे, पुण्णे नामेगे तुच्छरूवे,
तुच्छे नामेगे पुण्णरूवे, तुच्छे नामेगे तुच्छरूवे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
पुण्ण नामेगे पुण्णरूवे, —जाव—
तुच्छे नामेगे तुच्छरूवे.

चत्तारि कुंभा पण्णत्ता त जहा-
पुण्णे वि एगे पियट्ठे, पुण्णे वि एगे अवदले,
तुच्छे वि एगे पियट्ठे, तुच्छे वि एगे अवदले.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

पुण्णे वि एगे पियट्ठे, —जाव—
तुच्छे वि एगे अवदले.

चत्तारि कुंभा पण्णत्ता. तं जहा-
पुण्णे वि एगे विस्संदइ,
पुण्णे वि एगे नो विस्संदइ,
तुच्छे वि एगे विस्सदइ,
तुच्छे वि एगे नो विस्सदइ

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
पुण्णे वि एगे विस्संदइ, —जाव—
तुच्छे वि एगे नो विस्सदइ

चत्तारि कुंभा पण्णत्ता त जहा-
भिण्णे, जज्जरिए,
परिस्साइ, अपरिस्साइ

एवामेव चउव्विहे चरित्ते पण्णत्ते. तं जहा-
भिण्णे —जाव— अपरिस्साइ

चत्तारि कुंभा पण्णत्ता त जहा-
महुकुभे नामेगे महुपिहाणे,
महुकुभे नामेगे विसपिहाणे,
विसकुभे नामेगे महुपिहाणे,
विसकुभे नामेगे विसपिहाणे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

महुकुंभे नामेगे महुपिहाणे, —जाव—
विसकुंभे नामेगे विसपिहाणे. १४

गाहाओ-हिययमपावमकलुसं ,
जीहा वि य महुरभासिणी निच्चं ।
जंमि पुरिसंमि विज्जइ ,
से महुकुंभे महुपिहाणे ॥१॥
हिययमपावमकलुसं ,
जीहा वि य कडुयभासिणी निच्चं ।
जंमि पुरिसंमि विज्जइ ,
से महुकुंभे विसपिहाणे ॥२॥
जं हिययं कलुसमयं ,
जीहा वि य महुरभासिणी निच्चं ।
जंमि पुरिसंमि विज्जइ ,
से विसकुंभे महुपिहाणे ॥३॥
जं हिययं कलुसमयं ,
जीहा वि य कडुयभासिणी निच्चं ।
जंमि पुरिसंमि विज्जइ ,
से विसकुंभे विसपिहाणे ॥४॥

३६१ चउव्विहा उवसग्गा पण्णत्ता. तं जहा-
दिव्वा, माणुसा,
तिरिक्खजोणिया, आयसंचेयणिज्जा

दिव्वा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-

हासा पाओसा,

वीमंसा, पुढोवेमाया.

माणुस्सा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-

हासा पाओसा,

वीमंसा. कुसीलपडिसेवणया.

तिरिक्खजोणिया उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-

भया, पओसा,

आहारहेउं, अवच्चलेणसारक्खणया.

आयसंचेयणिज्जा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-

घट्टणया, पवडणया,

थंभणया, लेसणया. ५

३६२ चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते. तं जहा-

सुभे नाममेगे सुभे, सुभे नाममेगे असुभे.

असुभे नाममेगे सुभे, असुभे नाममेगे असुभे.

चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते. तं जहा-

सुभे नाममेगे सुभविवागे,

सुभे नाममेगे असुभविवागे,

असुभे नाममेगे सुभविवागे,

असुभे नाममेगे असुभविवागे,

चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते. तं जहा-

पयडिकम्मे, ठिइकम्मे,
अणुभावकम्मे, पएसकम्मे ३

३६३ चउव्विहे संघे पण्णत्ते तं जहा-
समणा, समणीओ,
सावगा, सावियाओ.

३६४ चउव्विहा बुद्धी पण्णत्ता तं जहा-
उप्पत्तिया, वेणइया,
कम्मिया, परिणामिया.

चउव्विहा मई पण्णत्ता तं जहा-
उग्गहमई, ईहामई,
अवायमई, धारणामई.

अहवा चउव्विहा मई पण्णत्ता तं जहा-
अरजरोदगसमाणा, वियरोदगसमाणा,
सरोदगसमाणा, सागरोदगसमाणा ३

३६५ चउव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता तं जहा-
नेरइया, तिरिक्खजोणीया,
मणुस्सा, देवा

चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-
मणजोगी, वयजोगी,
कायजोगी, अजोगी

अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं जहा-

इत्थिवेयगा, पुरिसवेयगा,
नपुंसकवेयगा, अवेयगा.

अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं जहा-
चक्खुदंसणी, अचक्खुदंसणी,
ओहिदंसणी, केवलदसणी.

अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता. त जहा-
संजया, असंजया,
सजयासजया, नो संजया नो असजया. ५

३६६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
मित्ते नामेगे मित्ते, मित्ते नामेगे अमित्ते,
अमित्ते नामेगे मित्ते, अमित्ते नामेगे अमित्ते.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
मित्ते नामेगे मित्तरूवे, —जाव—
अमित्ते नामेगे अमित्तरूवे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
मुत्ते नामेगे मुत्ते, मुत्ते नामेगे अमुत्ते,
अमुत्ते नामेगे मुत्ते, अमुत्ते नामेगे अमुत्ते.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
मुत्ते नामेगे मुत्तरूवे, —जाव—
अमुत्ते नामेगे अमुत्तरूवे ४

३६७ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया चउगइया चउआगइया पण्णत्ता-
तं जहा-

पंचिंदियतिरिक्खजोणिया पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु
उववज्जमाणा नेरइएहिंतो वा,
तिरिक्खजोणिएहिंतो वा,
मणुस्सेहिंतो वा,
देवेहिंतो वा उववज्जेज्जा
से चेव णं से पंचिंदियतिरिक्खजोणिए पंचिंदियतिरिक्ख-
जोणियत्तं विप्पजहमाणे नेरइयत्ताए वा,
तिरिक्खजोणियत्ताए वा,
मणुस्सयत्ताए वा,
देवत्ताए वा उवागच्छेज्जा

मणुस्सा चउगइआ चउआगइआ पण्णत्ता. तं जहा-
मणुस्सा मणुस्सेसु उववज्जमाणा-
नेरइएहिंतो वा,
तिरिक्खजोणिएहिंतो वा,
मणुस्सेहिंतो वा,
देवेहिंतो वा उववज्जेज्जा
से चेव णं से मणुस्से मणुस्सत्तं विप्पजहमाणे-
नेरइयत्ताए वा,
तिरिक्खजोणियत्ताए वा,
मणुस्सयत्ताए वा,
देवत्ताए वा उवागच्छेज्जा. २

३६८ बेइंदिया ण जीवा असमारभमाणस्स चउविहे सजमे कज्जइ.

तं जहा-

जिब्भामयाओ सोक्खाओ अववरोवित्ता भवइ,

जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवइ,

फासमयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ,

फासमएण दुक्खेणं असजोगेत्ता भवइ.

वेइंदियाणं जीवा समारभमाणस्स चउव्विहे असजमे कज्जइ.

तं जहा-

जिब्भामयाओ सोक्खाओ ववरोवित्ता भवइ,

जिब्भामएण दुक्खेणं सजोगित्ता भवइ,

फासमयाओ सोक्खाओ ववरोवित्ता भवइ,

फासमएणं दुक्खेणं संजोगित्ता भवइ. २

३६९ सम्मद्दिट्ठियाण नेरइयाण चत्तारि किरियाओ पण्णत्ता.

तं जहा-

आरंभिया, परिग्गहिया,

मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया

सम्मद्दिट्ठियाणं असुरकुमाराण चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ.

तं जहा-

आरभिया —जाव— अपच्चक्खाणकिरिया.

एवं विगलिंदियवज्ज —जाव— वेमाणियाण

३७० चउहिं ठाणेहिं सते गुणे नासेज्जा तं जहा-

कोहेणं, पडिनिसेवेणं,
अकयण्णुयाए, मिच्छत्ताभिनिवेसेणं.

चउहिं ठाणेहिं संते गुणे दीवेज्जा. तं जहा-
अब्भासवत्तियं, परच्छंदाणुवत्तियं,
कज्जहेउ, कयपडिकइएइ वा. २

३७१ नेरइयाणं चउहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती सिया. तं जहा-
कोहेणं, माणेणं,
माणयाए, लोभेणं
एवं —जाव— वेमाणियाणं.

नेरइयाण चउहिं ठाणेहिं निव्वत्तिए सरीरे पण्णत्ते. तं जहा-
कोहनिव्वत्तिए, - जाव — लोभनिव्वत्तिए.
एव —जाव— वेमाणियाणं २

३७२ चत्तारि धम्मदारा पण्णत्ता तं जहा-
खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे.

३७३ चउहिं ठाणेहि जीवा नेरइयत्ताए कम्म पकरेंति तं जहा-
महारंभयाए, महापरिग्गहयाए,
पचिंदियवहेण, कुणिमाहारेणं

चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पगरेंति-
तं जहा-
माइल्लयाए, नियडिल्लयाए,
अलियवयणेण, कूडतुलकूडमाणेणं.

चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्सत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-

पगइभद्दयाए, पगइविणीययाए,

साणुक्कोसयाए, अमच्छरियाए.

चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पगरेंति. त जहा-

सरागसजमेणं, संजमासंजमेणं,

बालतवोकम्मेणं, अकामणिज्जराए. ४

३७४ चउव्विहे वज्जे पण्णत्ते तं जहा-

तते, वितते, घणे, झुसिरे.

चउव्विहे नट्टे पण्णत्ते तं जहा-

अंचिए, रिभिए, आरभडे, भिसोले

चउव्विहे गेए पण्णत्ते त जहा-

उक्खित्तए, पत्तए, मंदए, रोविदए.

चउव्विहे मल्ले पण्णत्ते. त जहा-

गंथिमे, वेढिमे, पूरिमे, सघातिमे

चउव्विहे अलंकारे पण्णत्ते. तं जहा-

केसालंकारे, वत्थालंकारे,

मल्लालंकारे, आभरणालकारे.

चउव्विहे अभिणए पण्णत्ते तं जहा-

दिट्ठंतिए, पांडुसुए,

सामतोवायणिए, लोगसब्भावसिए ६

३७५ सणंकुमार-माहिंदेसु णं कप्पेसु विमाणा चउवण्णा पण्णत्ता.
तं जहा-

नीला, लोहिया, हालिद्दा, सुक्किला.

महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारिणिज्जा सरीरगा उक्कोसणं चत्तारि रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता. २

३७६ चत्तारि उदकगब्भा पण्णत्ता. तं जहा-

उस्सा, महिया, सीया, उसिणा.

चत्तारि उदकगब्भा पण्णत्ता तं जहा-

हेमगा, अब्भसथड़ा, सीयोसिणा, पंचरूविया.

गाहा–माहे उ हेमगा गब्भा, फग्गुणे अब्भसंथड़ा ।
सीयोसिणा उ चित्ते, वइसाहे पचरूविया ॥१॥

३७७ चत्तारि माणुस्सीगब्भा पण्णत्ता. तं जहा-

इत्थित्ताए, पुरिसत्ताए,
नपुंसगत्ताए, बिंबत्ताए.

गाहाओ–अप्पं सुक्कं बहुं ओयं, इत्थि तत्थ पजायइ ।
अप्पं ओयं बहुं सुक्कं, पुरिसो तत्थ पजायइ ॥१॥
दोण्हंपि रत्तसुक्काणं, तुल्लभावे नपुंसओ ।
इत्थीओ अ समाओगे, बिंबं तत्थ पजायइ ॥२॥

३७८ उप्पायपुव्वस्स णं चत्तारि मूलवत्थू पण्णत्ता.

३७९ चउव्विहे कव्वे पण्णत्ता तं जहा-

गज्जे, पज्जे, कत्थे, गेए

३८० नेरइयाणं चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता तं जहा-

वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए,

मारणंतियसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए.

एवं वाउक्काइयाण वि

३८१ अरिहंतो ण अरिट्ठनेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीणमजिणाण जिणसकासाण सव्वक्खरसण्णिवाइणं जिणो इव अवितथवागरमाणा उक्कोसिया चउद्दसपुव्विसंपया हुत्था.

३८२ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया हुत्था

३८३ हेट्ठिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसंठाणसंठिया पण्णत्ता. तं जहा-

सोहम्मे, ईसाणे, सणंकुमारे, माहिंदे

मज्झिल्ला चत्तारि कप्पा पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिया पण्णत्ता. तं जहा-

बंभलोगे, लंतए, महासुक्के, सहस्सारे

उवरिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसंठाणसंठिया पण्णत्ता. तं जहा-

आणए, पाणए, आरणे, अच्चुए. ३

३८४ चत्तारि समुद्दा पत्तेयरसा पण्णत्ता तं जहा-

लवणोदे, वरुणोदे, खीरोदे, घतोदे.

३८५ चत्तारि आवत्ता पण्णत्ता त जहा-

खरावत्ते, उण्णयात्ते, गूढावत्ते, आमिसावत्ते

एवामेव चत्तारि कसाया पण्णत्ता. तं जहा-

खरावत्तसमाणे कोहे,

उण्णयावत्तसनाणे माणे,

गूढावत्तसमाणा माया,

आमिसावत्तसमाणे लोभे.

खरावत्तसमाण कोहं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ नेर-
इएसु उवज्जइ,

उण्णयावत्तसमाणं माणं एव चेव.

गूढावत्तसमाण माय एव चेव.

आमिसावत्तसमाण लोभ एव चेव २

३८६ अणुराहानक्खत्ते चउ तारे पण्णत्ते

पुव्वासाढे एव चेव,

उत्तरासाढे एव चेव ३

३८७ जीवाण चउट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा, चिणिंति वा, चिणिस्संति वा.

नेरइयणिव्वत्तिए, तिरिक्खजोणियणिव्वत्तिए,

मणुस्सणिव्वत्तिए, देवणिव्वत्तिए

एव उवचिणिसु वा, उवचिणति वा, उवचिणिस्संति वा.

एवं चिय-उवचिय-बंध-उदीर-वेय-तह-निज्जरे चेव.

३८८ चउपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता.

चउपएसोगाढा पोग्गला अणंता

चउसमयट्ठिइया पोग्गला अणंता.

चउगुणकालगा पोग्गला अणंता —जाव— चउगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता.

पंचट्ठाणं

पंचट्ठाणस्स पढमो उद्देसो

३८९ पंच महव्वया पण्णत्ता. त जहा-
सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं
सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं,
सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं,
सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं,
सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं

पंचाणुव्वया पण्णत्ता. त जहा-
थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं,
थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं,
थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं,
सदारसंतोसे,
इच्छापरिमाणे २

३९० पच वण्णा पण्णत्ता त जहा-
किण्हा, —जाव— सुक्किल्ला.

पच रसा पण्णत्ता. तं जहा-
तित्ता, —जाव— महुरा.

पच कामगुणा पण्णत्ता तं जहा-

सद्दा, रूवा, गधा, रसा, फासा

पंचहि ठाणेहि जीवा सज्जति. त जहा-

सद्देहि, —जाव— फासेहि

एव रज्जति, मुच्छति, गिज्झति, अज्झोववज्जति.

पचहि ठाणेहि जीवा विणिघायमावज्जति त जहा-

सद्देहि, —जाव— फासेहि

पच ठाणा अपरिण्णाया जीवाण अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेयाए अणाणुगामियत्ताए भवति त जहा-

सद्दा, —जाव— फासा

पच ठाणा सुपरिण्णाया जीवाण हियाए सुभाए —जाव— आणुगामियत्ताए भवति. त जहा-

सद्दा, —जाव — फासा.

पच ठाणा अपरिण्णाया जीवाण दुग्गइगमणाए भवति. त जहा-

सद्दा, —जाव— फासा

पंच ठाणा सुपरिण्णाया जीवाण सुग्गइगमणाए भवति. त जहा-

सद्दा – जाव— फासा १३

३९१ पचहि ठाणेहि जीवा दुग्गइ गच्छति त जहा-

पाणाइवाएण, —जाव— परिग्गहेण

पंचहिं ठाणेहिं जीवा सुगइं गच्छति. तं जहा-

पाणाइवायवेरमणेण, —जाव— परिग्गहवेरमणेणं. २

.९२ पंचपड़िमाओ पण्णत्ताओ. त जहा-

भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा, सव्वओभद्दा, भद्दुत्तरपड़िमा.

.९३ पच थावरकाया पण्णत्ता. त जहा-

इदे थावरकाए,

बभे थावरकाए,

सिप्पे थावरकाए,

समती थावरकाए,

पाजावच्चे थावरकाए.

पंच थावरकायाहिवई पण्णत्ता तं जहा-

इदे थावरकायाहिवई, —जाव -

पाजावच्चे थावरकायाहिवई २

३९४ पचहिं ठाणेहि ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामे वि तप्पढमयाए खभाएज्जा. त जहा-

अप्पभूयं वा पुढवि पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा,

कुंथुरासिभूय वा पुढवि पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा,

महइमहालय वा महोरगसरीरं पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा

देव वा महड्डिय —जाव— महेसक्ख पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा,

पुरेसु वा पोराणाइ महइमहालयाइ महानिहाणाइं पहीणसा-

मियाइं पहीणसेउयाइं पहीणगुत्तागाराइं उच्छिण्णसामियाइं उच्छिण्णसेउयाइं उच्छिण्णगुत्तागाराइं जाइं इमाइं गामागर-नगर-खेड-कव्वड-दोणमुह-पट्टणासम-संवाह-सण्णिवेसेसु सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु नगरणिद्धमणेसु सुसाण-सुण्णागार-गिरि-कंदर-संति-सेलोवट्ठावण-भवणगिहेसु सणिक्खित्ताइं चिट्ठंति ताइं वा पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए खभाएज्जा

पंचहिं ठाणेहिं केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए नो खभाएज्जा तं जहा-

अप्पभूयं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए नो खभेज्जा,

सेसं तहेव —जाव— भवणगिहेसु सणिक्खित्ताइं चिट्ठंति,

ताइं वा पासित्ता तप्पढमयाए नो खभाएज्जा.

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए नो खभाएज्जा. २

३९५ नेरइयाणं सरीरगा पंचवण्णा पंचरसा पण्णत्ता. तं जहा-

किण्हा —जाव— सुक्किला

तित्ता —जाव— महुरा

एवं निरंतरं —जाव— वेमाणियाणं.

पंच सरीरगा पण्णत्ता तं जहा-

ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए.

ओरालिएसरीरे पंचवण्णे पंचरसे पण्णत्ते. तं जहा-

किण्हे —जाव— सुक्किल्ले.

तित्ते —जाव— महुरे

एवं ओरालिएसरीरे —जाव— कम्मगसरीरे.

सव्वे वि णं बादरबोंदिधरा कलेवरा पंचवण्णा, पंचरसा, दुगंधा, अट्ठफासा. ७

३९६ पंचहिं ठाणेहिं पुरिम-पच्छिमगाणं जिणाणं दुग्गमं भवइ. तं जहा-

दुआइक्खं, दुविभज्जं, दुपस्सं, दुइतिक्खं, दुरणुचरं.

पंचहिं ठाणेहिं मज्झिमगाणं जिणाणं सुगमं भवइ. तं जहा-

सुआइक्खं, सुविभज्जं, सुपस्सं, सुइतिक्खं, सुरणुचरं.

पंच ठाणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गंथाणं निच्चं वण्णियाइं, निच्चं कित्तियाइं, निच्चं बुइयाइं, निच्चं पसत्थाइं, निच्चमब्भणुण्णायाइं भवंति. तं जहा-

खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे

पंच ठाणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति तं जहा-

सच्चे, संजमे, तवे, चियाए, बंभचेरवासे

पंच ठाणाइं समणाणं —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति. तं जहा-

उक्खित्तचरए,
निक्खित्तचरए,
अंतचरए,
पंतचरए,
लूहचरए

पंच ठाणाइं समणाणं -जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति तं जहा-

अण्णाएचरए,
अण्णइलायचरए,
मोणचरए,
संसट्ठकप्पिए,
तज्जातसंसट्ठकप्पिए.

पंच ठाणाइं —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति तं जहा-

उवनिहिए,
सुद्धेसणिए,
संखादत्तिए,
दिट्ठलाभिए,
पुट्ठलाभिए.

पंच ठाणाइं —जाव - अब्भणुण्णायाइं भवंति तं जहा-

आयंबिलिए,
निव्वियए,
पुरिमड्ढिए,

परिमिए,

पिंडवाइए,

भिण्णपिंडवाइए

पंच ठाणाइं समणाणं —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति.
तं जहा-

अरसाहारे, विरसाहारे, अंताहारे, पंताहारे, लूहाहारे.

पंच ठाणाइं समणाण —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति.
तं जहा-

अरसजीवी, विरसजीवी, अंतजीवी, पंतजीवी, लूहजीवी.

पच ठाणाइं समणाणं —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति.
तं जहा-

ठाणाइए,

उक्कडुआसणिए,

पडिमट्ठाइ,

वीरासणिए,

नेसज्जिए

पंच ठाणाइं समणाणं —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति.
तं जहा-

दंडायतिए,

लगंडसाइ,

आयावए,

अवाउडए,

अकंडूयए. १२

३६७ पंचहि ठाणेहि समणे निग्गथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ तं जहा-

अगिलाए आयरिय-वेयावच्च करेमाणे,

अगिलाए उवज्झाय-वेयावच्चं करेमाणे,

अगिलाए थेर-वेयावच्च करेमाणे,

अगिलाए तवस्सी-वेयावच्च करेमाणे,

अगिलाए गिलाण-वेयावच्चं करेमाणे

पंचहि ठाणेहि समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ. तं जहा-

अगिलाए सेह-वेयावच्चं करेमाणे,

अगिलाए कुल-वेयावच्च करेमाणे,

अगिलाए गण-वेयावच्च करेमाणे,

अगिलाए सघ-वेयावच्चं करेमाणे,

अगिलाए साहम्मिय-वेयावच्चं करेमाणे २

३६८ पंचहि ठाणेहि समणे निग्गथे साहम्मिय संभोइयं विसभोइयं करेमाणे नाइक्कमइ तं जहा-

सकिरियट्ठाण पडिसेवित्ता भवइ,

पडिसेवित्ता नो आलोएइ,

आलोइत्ता नो पट्ठवेइ,

पट्ठवेत्ता नो निव्विसइ,

जाइं इमाइं थेराणं ठिइपकप्पाइं भवति, ताइ अतियंचिय

अतियंचिय पड़िसेवेइ से हंद हं पड़िसेवामि किं मे थेरा-
करिस्संति. ?

पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे साहम्मियं पारंचियं करेमाणे
नाइक्कमइ तं जहा-

सकुले वसइ सकुलस्स भेदाए अब्भुट्ठित्ता भवइ,
गणे वसइ गणस्स भेदाए अब्भुट्ठित्ता भवइ,
हिंसप्पेही,
छिद्दप्पेही,
अभिक्खणं पसिणाययणाइं पउंजित्ता भवइ. २

३९९ आयरिय-उवज्झायस्स णं गणंसि पंच वुग्गहट्ठाणा पण्णत्ता-
तं जहा-

आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि आण वा, धारणं वा नो
सम्म पउंजेत्ता भवइ,
आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि अहाराइणियाए किइकम्मं
नो सम्म पउंजित्ता भवइ,
आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि जे सुत्तपज्जवजाए धारेंति
ते काले काले नो सम्मं अणुप्पवाइत्ता भवइ,
आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि गिलाण-सेह-वेयावच्चं नो
सम्ममब्भुट्ठित्ता भवइ,
आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि अणापुच्छियचारी या वि
भवइ नो आपुच्छियचारी

आयरिय-उवज्झायस्स ण गगंसि पच अवुग्गहट्ठाणा पण्णत्ता. तं जहा-

आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि आणं वा, धारणं वा सम्मं पउंजित्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि अहाराइणियाए सम्मं किइकम्मं पउंजित्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए णं गणंमि जे सुयपज्जवजाए धारेइ ते काले काले सम्मं अणुप्पवाइत्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए ण गणंसि गिलाण-सेह-वेयावच्च सम्मं अब्भुट्ठित्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि आपुच्छियचारी यावि भवइ नो अणापुच्छियचारी. २

४०० पंच निसिज्जाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

उक्कुडुई,

गोदोहिया,

समपायपुता,

पलियंका,

अद्धपलियंका

पंच अज्जवट्ठाणा पण्णत्ता. तं जहा-

साहु-अज्जवं,

साहु-मद्दवं,

साहु-लाघवं,

साहु-खंती,

साहु-मुत्ती. २

४०१ पंचविहा जोइसिया पण्णत्ता तं जहा-

चंदा, सूरा, गहा, नक्खत्ता, ताराओ.

पचविहा देवा पण्णत्ता. तं जहा-

भवियदव्वदेवा,

नरदेवा,

धम्मदेवा,

देवाहिदेवा,

भावदेवा २

४०२ पचविहा परियारणा पण्णत्ता. तं जहा-

काय-परियारणा,

फास-परियारणा,

रूव-परियारणा,

सद्द-परियारणा,

मण-परियारणा.

४०३ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

काली, राई, रयणी, विज्जू, मेहा.

वलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. त जहा-

सुभा, निसुभा, रंभा, निरंभा, मयणा. २

४०४ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो पंच संगामिया अणिया पंच संगामियाणियाहिवई पण्णत्ता तं जहा-

पायत्ताणिए,
पीढाणिए,
कुंजराणिए,
महिसाणिए,
रहाणिए

दुमे पायत्ताणियाहिवई,
सोदामी आसराया पीढाणियाहिवई,
कुंथू हत्थिराया कुंजराणियाहिवई,
लोहियक्खे महिसाणियाहिवई,
किण्णरे रहाणियाहिवई

बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो पच संगामिया-अणिया, पच सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता तं जहा-

पायत्ताणिए —जाव— रहाणिए.
महद्दुमे पायत्ताणियाहिवई,
महा सोदामो आसराया पीढाणियाहिवई,
मालकारो हत्थिराया कुंजराणियाहिवई,
महा लोहिअक्खो महिसाणियाहिवई,
किंपुरिसे रहाणियाहिवई.

धरणस्स ण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो पच सगामिया

अणिया, पंच सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता. तं जहा-

पायत्ताणिए, —जाव— रहाणीए.

भद्दसेणे पायत्ताणियाहिवई,

जसोधरे आसराया पीढाणियाहिवई,

सुदंसणे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई,

नीलकंठे महिसाणियाहिवई,

आणदे रहाणियाहिवई

भूयाणदस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो पच संगामिया-
अणिया, पच संगामियाणियाहिवई पण्णत्ता. तं जहा-

पायत्ताणीए —जाव— रहाणीए.

दक्खे पायत्ताणियाहिवई,

सुग्गीवे आसराया पीढाणियाहिवई,

सुविक्कमे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई,

सेयकंठे महिसाणियाहिवई,

नदुत्तरे रहाणियाहिवई.

वेणुदेवस्स णं सुवण्णिंदस्स सुवण्णकुमाररण्णो पंच संगामिया-
अणिया, पंच संगामियाणियाहिवई पण्णत्ता त जहा-

पायत्ताणीए —जाव— रहाणिए.

सेसं जहा धरणस्स तहा वेणुदेवस्स वि,

वेणुदालियस्स जहा भूयाणंदस्स,

जहा धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं —जाव—
घोसस्स,

जहा भूयाणदस्स तहा सव्वेंसि उत्तरिल्लाणं —जाव - महाघोसस्स,

सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो पच सगामियां अणिया, पच संगामियाणियाहिवई पण्णत्ता त जहा-

पायत्ताणिए, --जाव— रहाणिए

हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवई,

वाऊ आसराया पीढाणियाहिवई,

एरावणे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई,

दामड्ढी उसभाणियाहिवई,

माढरो रहाणियाहिवई

ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो पच सगामिया अणिया, पच सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता त जहा-

पायत्ताणिए, —जाव— रहाणिए

लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवई,

महावाऊ आसराया पीढाणियाहिवई,

पुप्फदते हत्थिराया कुंजराणियाहिवई,

महादामड्ढी उसभाणियाहिवई,

महामाढरे रहाणियाहिवई.

जहा सक्कस्स तहा सव्वेंसि दाहिणिल्लाण —जाव - आरणस्स

जहा ईसाणस्स तहा सव्वेंसि उत्तरिल्लाण —जाव— अच्चुयस्स

४०५ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अब्भंतरपरिसाए देवाणं पंच पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता,

ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो अब्भंतरपरिसाए देवीणं पंच पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता २

४०६ पंचविहा पड़िहा पण्णत्ता. तं जहा-

गइ-पड़िहा,

ठिइ-पड़िहा,

बंधण-पड़िहा,

भोग-पड़िहा,

बल-वीरिय-पुरिसकारपरक्कम-पड़िहा.

४०७ पचविहे आजीविए पण्णत्ते तं जहा-

जाइ-आजीवे,

कुल-आजीवे,

कम्म-आजीवे,

सिप्प-आजीवे,

लिंग-आजीवे.

४०८ पच राय-ककुहा पण्णत्ता तं जहा-

खग्गं, छत्त, उप्फेसं, उपाणहाओ, वालवीअणी.

४०९ पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे ण उदिण्णे परिस्सहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा खमेज्जा तितिक्खेज्जा अहियासेज्जा. तं जहा-

उदिण्णकम्मे खलु अयं पुरिसे उम्मत्तगभूए, तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा, अवहसइ वा, णिच्छोडेइ वा,

निब्भंछेइ वा, बंधइ वा, रुंभइ वा, छविच्छेयं करेइ वा, पमारं वा नेइ, उद्दवेइ वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पायपुंछणं अच्छिंदइ वा, विच्छिदइ वा, भिंदइ वा, अवहरइ वा,

जक्खाइट्ठे खलु अयं पुरिसे तेणं मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा, तहेव —जाव— अवहरइ वा,

ममं च णं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उइण्णे भवइ तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा —जाव— अवहरइ वा,

ममं च णं सम्ममसहमाणस्स अखममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणहियासमाणस्स किं मण्णे कज्जइ ? एगंतसो मे पावे कम्मे कज्जइ,

ममं च ण सम्मं सहमाणस्स —जाव— अहियासेमाणस्स किं मण्णे कज्जइ ? एगंतसो मे निज्जरा कज्जइ

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे उदिण्णे परीसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा — जाव — अहियासेज्जा

पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिण्णे परिसहोवसग्गे सम्म सहेज्जा —जाव— अहियासेज्जा. तं जहा-

खित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा, —जाव— अवहरइ वा,

दित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा, —जाव— अवहरइ वा,

जक्खाइट्ठे खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे

अक्कोसइ वा, —जाव— अवहरइ वा,
ममं च णं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिण्णे भवइ तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा, —जाव— अवहरइ वा,
ममं च ण सम्मं सहमाणं खममाणं तितिक्खमाणं अहिया-सेमाणं पासेत्ता बहवे अण्णे छउमत्था समणा निग्गंथा उदिण्णे परीसहोवसग्गे एवं सम्मं सहिस्संति वा —जाव— अहियासिस्संति वा.

इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहिं केवली उदिण्णे परिसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा —जाव— अहियासेज्जा २

४१० पंच हेऊ पण्णत्ता. तं जहा-
हेउं न जाणइ,
हेउं न पासइ,
हेउं न बुज्झइ,
हेउं नाभिगच्छइ,
हेउं अण्णाणमरणं मरइ.

पच हेऊ पण्णत्ता. तं जहा-
हेउणा न जाणइ —जाव— हेउणा अण्णाणमरणं मरइ

पंच हेऊ पण्णत्ता. तं जहा-
हेउं जाणइ —जाव— हेउं छउमत्थमरणं मरइ

पंच हेऊ पण्णत्ता त जहा-

हेउणा जाणइ —जाव— हेउणा छउमत्थ-मरणं मरइ.

पंच अहेऊ पण्णत्ता तं जहा-

अहेउं न जाणइ —जाव— अहेउं छउमत्थ-मरणं मरइ.

पंच अहेऊ पण्णत्ता तं जहा-

अहेउणा न जाणइ —जाव— अहेउणा छउमत्थ-मरणं मरइ

पंच अहेऊ पण्णत्ता तं जहा-

अहेउं जाणइ —जाव— अहेउं केवलि-मरणं मरइ.

पंच अहेऊ पण्णत्ता तं जहा-

अहेउणा जाणइ —जाव— अहेउणा केवलि-मरणं मरइ.

केवलिस्स णं पंच अणुत्तरा पण्णत्ता तं जहा-

अणुत्तरे नाणे,
अणुत्तरे दंसणे,
अणुत्तरे चरित्ते,
अणुत्तरे तवे,
अणुत्तरे वीरिए. ९

४११ पउमप्पहे णं अरहा पंचचित्ते हुत्था पण्णत्ता तं जहा-

चित्ताहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते,
चित्ताहिं जाए,
चित्ताहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए,

चित्ताहिं अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे
पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे,
चित्ताहिं परिणिव्वुए.

पुप्फदंते णं अरहा पंचमूले हुत्था.
मूलेणं चूए चइत्ता गब्भववकते,
मूलेहिं जाए,
मूलेणं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए,
मूलेहिं अणते —जाव— केवलवरनाणदसणे समुप्पण्णे
मूलेहिं समुप्पण्णे परिनिव्वुए.

एवमेएणं अभिलावेणं इमाओ गाहाओ अणुगंतव्वाओ.
पउमप्पभस्स चित्ता, मूले पुण होइ पुप्फदतस्स ।
पुव्वाइ आसाढा, सीयलस्सुत्तर विमलस्स भद्दवया ॥१॥
रेवइया अणंतजिणो, पूसो धम्मस्स सतिणो भरणी ।
कुंथुस्स कत्तियाओ, अरस्स तह रेवइओ य ॥२॥
मुणिसुव्वयस्स सवणो,
आसिणि नमिणो य नेमिणो चित्ता ।
पासस्स विसाहाओ, पच य हत्युत्तरो वीरो ॥३॥

समणे भगवं महावीरे पच हत्युत्तरे होत्था
हत्युत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कते,
हत्युत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए,
हत्युत्तराहिं जाए,

हत्युत्तराहि मुंडे भवित्ता —जाव— पव्वइए,
हत्युत्तराहिं अणते अणुत्तरे —जाव— केवलवरनाण-
दसणे समुप्पण्णे १४

पंचट्ठाणस्स वीओ उद्देसो

४१२ नो कप्पइ निग्गथाण वा, निग्गथीण वा इमाओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वियजियाओ पच महण्णवाओ महाणईओ अतो मासस्स दुक्खुत्तो वा, तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा, संतरित्ता वा. तं जहा-

गगा, जउणा, सरऊ, एरावइ, मही

पंचहिं ठाणेहि कप्पइ. तं जहा-
भयसि वा,
दुब्भिक्खसि वा,
पव्वहेज्ज व ण कोइ,
दओघसि वा एज्जमाणसि महया वा,
अणारिएसु २

४१३ नो कप्पइ निग्गथाण वा, निग्गंथीण वा पढमपाउसंसि गामाणुगामं दूइज्जित्तए

पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ त जहा-
भयसि वा —जाव— अणारिएहिं.

वासावासं पज्जोसवियाण नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा गामाणुगाम दुइज्जित्तए

पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ तं जहा-

नाणट्ठयाए,

दंसणट्ठयाए,

चरित्तट्ठयाए,

आयरिय-उवज्झाया वा से वीसुंभेज्जा,

आयरिय-उवज्झायाण वा वहिया वेयावच्चं करणयाए. २

४१४ पच अणुग्घाइया पण्णत्ता तं जहा-

हत्थकम्मं करेमाणे,

मेहुणं पडिसेवेमाणे,

राइभोयणं भुंजेमाणे,

सागारियपिडं भुंजेमाणे,

रायपिंडं भुंजेमाणे

४१५ पचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे रायंतेउरं अणुपविसमाणे नाइक्कमइ तं जहा-

नगर सिया सव्वओ समंता गुत्ते गुत्तदुवारे, वहवे समण-माहणा नो सचाएइ भत्ताए वा, पाणाए वा, निक्खमित्तए वा, पविसित्तए वा, तेसिं विण्णवणट्ठयाए रायंतेउरं अणुपवेसेज्जा,

पाड़िहारियं वा पीढफलग-सेज्जा-संथारग पच्चप्पिणमाणे रायतेउरं अणुपवेसेज्जा,

हयस्स वा, गयस्स वा, दुट्ठस्स आगच्छमाणस्स भीए रायतेउरं अणुप्पवेसेज्जा,

परो व ण सहसा वा, बलसा वा बाहाए गहाए अतेउर अणुप्पवेसेज्जा,

बहिया ण आरामगयं वा, उज्जाणगय वा रायतेउरजणो सव्वओ समंता संपरिक्खिवित्ता ण निव्विसेज्जा,

इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे रायंतेउर अणुपविसमाणे णाइक्कमइ.

४१६ पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धि असंवसमाणी वि गब्भं धरेज्जा. तं जहा-

इत्थी दुव्वियड़ा दुण्णिसण्णा सुक्कपोग्गले अहिट्ठिज्जा,

सुक्कपोग्गलसंसिट्ठे व से वत्थे अंतो जोणीए अणुपवेसेज्जा,

सइ वा सा सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा,

परो व से सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा,

सीओदगवियड़ेण वा से आयममाणीए सुक्कपोग्गला अणुपवेसेज्जा

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेणसद्धि असवसमाणि वि गब्भं धरेज्जा

पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धि सवसमाणी वि गब्भं नो धरेज्जा तं जहा-

अप्पत्तजोवणा,

अइक्कंतजोवणा,

जाइवंझा,

गेलण्णपुट्ठा,

दोमणंसिया.

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं - जाव - नो धरेज्जा.

पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणी वि नो गब्भं धरेज्जा तं जहा-

निच्चोउया,

अणोउया,

वावण्णसोया,

वाविद्धसोया,

अणंगपडिसेवणी.

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणी वि गब्भं नो धरेज्जा

पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणी वि नो गब्भं धरेज्जा तं जहा-

उउंमि नो निगामपडिसेविणी यावि भवइ,

समागया वा से सुक्कपोग्गला पडिविद्धंसइ,

उदिण्णे वा से पित्तसोणिए,

पुरा वा देवकम्मुणा,

पुत्तफले वा नो निद्दिट्ठे भवइ

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणी वि

गब्भं नो धरेज्जा. ४

४१७ पंचहिं ठाणेहिं निग्गंथा निग्गंथीओ य एगंतओ ठाणं वा, सिज्जं वा, निसिहियं वा चेएमाणे नाइक्कमति तं जहा-

अत्थेगइया निग्गंथा निग्गंथीओ य एगं महं अगामिय छिण्णावाय दीहमद्धमडविमणुपविट्ठा तत्थ एगइओ ठाण वा, सेज्जं वा, निसीहिय वा चेएमाणे णाइक्कमंति.

अत्थेगइया निग्गथा निग्गथीओ य गामंसि वा नगरंसि वा —जाव— रायहाणिंसि वा वासं उवागया एगतिया जत्थ उवस्सय लभति एगतिया नो लभति तत्थ एगइओ ठाणं —जाव— नाइक्कमति,

अत्थेगइया निग्गंथा निग्गथीओ य नागकुमारावासंसि वा वास उवागया तत्थेगयओ —जाव— नाइक्कमंति,

आमोसगा दीसति ते इच्छति निग्गंथीओ चीवरपडियाए पडिगाहित्तए तत्थेगयओ ठाण वा —जाव— नाइक्कमति,

जुवाणा दीसति ते इच्छति निग्गथीओ मेहुणपडियाए पडिगाहित्तए तत्थएगइओ ठाणं वा —जाव— नाइक्कमति.

इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहिं —जाव— नाइक्कमति

पचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे अचेलए सचेलियाहिं निग्गंथीहिं सद्धिं सवसमाणे नाइक्कमइ तं जहा-

खित्तचित्ते समणे निग्गंथे निग्गंथेहिं अविज्जमाणेहिं अचे-

लए सचेलियाहिं निग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे नाइक्कमइ,
एवमेएणं गमएणं-
दित्तचित्ते-
जक्खाइट्ठे-
उम्मायपत्ते-
निग्गंथीपव्वावियए समणे निग्गंथेहिं अविज्जमाणेहिं अचे-
लए सचेलियाहिं निग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे नाइक्कमइ २

४१८ पंच आसवदारा पण्णत्ता तं जहा-
मिच्छत्तं, अविरइ, पमाए, कसाया, जोगा.

पंच संवरदारा पण्णत्ता तं जहा-
सम्मत्तं, विरइ, अपमाओ, अकसाइयं, अजोगीत्तं.

पंच दंडा पण्णत्ता. तं जहा-
अट्ठादंडे,
अणट्ठादंडे,
हिंसादंडे,
अकम्हादंडे,
दिट्ठीविप्परियासियादंडे ३

४१९ पंच किरियाओ पण्णत्ता. तं जहा-
आरंभिया,
परिग्गहिया,
मायावत्तिया,
अपच्चक्खाणकिरिया,

मिच्छादंसणवत्तिया.

मिच्छद्दिट्ठियाणं नेरइयाणं पच किरियाओ पण्णत्ताओ. तंजहा-

आरंभिया —जाव – मिच्छादंसणवत्तिया.

एवं सव्वेसिं निरंतर —जाव— मिच्छद्दिट्ठियाणं वेमाणियाणं, नवरं-विगलिंदिया मिच्छद्दिट्ठिया ण भण्णति सेसं तहेव.

पंच किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

काइया,

अहिगरिणया,

पाओसिया,

पारितावणिया,

पाणाइवाइकिरिया

नेरइयाण पंच किरिया एव चेव निरतर —जाव— वेमाणियाणं

पंच किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-

आरभिया —जाव— मिच्छादसणवत्तिया

नेरइयाणं पच किरिया निरतरं —जाव— वेमाणियाणं

पंच किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

दिट्ठिया,

पुट्ठिया,

पाडोचिया,

सामंतोवणिवाइया,

साहत्थिया.

एवं नेरइयाण —जाव— वेमाणियाणं.

पंच किरियाओ पण्णत्ताओ तं जहा-

नेसत्थिया,

आणवणिया,

वेयारणिया,

अणाभोगवत्तिया,

अणवकंखवत्तिया.

एव नेरइयाण —जाव— वेमाणियाणं.

पंचकिरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

पेज्जवत्तिया,

दोसवत्तिया,

पओगकिरिया,

समुदाणकिरिया,

ईरियावहिया

एवं मणुस्साण वि सेसाणं नत्थि. ५

४२० पंचविहा परिण्णा पण्णत्ता. तं जहा-

उवहि-परिण्णा,

उवस्सय-परिण्णा,

कसाय-परिण्णा,

जोग-परिण्णा,

भत्त-पाण-परिण्णा.

४२१ पंचविहे ववहारे पण्णत्ते. तं जहा-

आगमे, सुए, आणा, धारणा, जीए.

जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहार पट्ठवेज्जा,

नो से तत्थ आगमे सिया-

जहा से तत्थ सुए सिया सुएण ववहारं पट्ठवेज्जा,

नो से तत्थ सुए सिया-

जहा से तत्थ आणा सिया आणाए ववहारं पट्ठवेज्जा,

नो से तत्थ आणा सिया-

जहा से तत्थ धारणा सिया धारणाए ववहार पट्ठवेज्जा,

नो से तत्थ धारणा सिया-

जहा से तत्थ जीए सिया जीएणं ववहार पट्ठवेज्जा.

इच्चेएहिं पचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा त जहा-

आगमेणं, सूएणं, आणाए, धारणाए, जीएणं,

जहा जहा से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा तहा ववहारं पट्ठवेज्जा,

प्र० से किमाहु भते ! आगम-बलिया समणा निग्गथा ?

उ० इच्चेयं पंचविहं ववहारं जहा जहा जहिं जहिं तहा तहा तहिं तहिं अणिस्सिओस्सिवय सम्मं ववहर-माणे समणे निग्गंथे आणाए आराहए भवइ

४२२ संजयमणुस्साणं सुत्ताणं पंच जागरा पण्णत्ता तं जहा-

सद्दा, —जाव— फासा.

संजयमणुस्साणं जागराणं पंच सुत्ता पण्णत्ता, तं जहा-

सद्दा, —जाव— फासा

असंजयमणुस्साण सुत्ताणं वा, जागराणं वा पंच जागरा पण्णत्ता. तं जहा-

सद्दा, —जाव— फासा. ३

४२३ पंचहिं ठाणेहिं जीवा रयं आइज्जंति तं जहा-

पाणाइवाएण, —जाव— परिग्गहेणं.

पचहिं ठाणेहिं जीवा रयं वमति. तं जहा-

पाणाइवायवेरमणेणं, —जाव— परिग्गहवेरमणेणं. २

४२४ पचमासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पंति पंच दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहित्तए पंच पाणगस्स.

४२५ पंचविहे उववाए पण्णत्ते. तं जहा-

उग्गमोवघाए,

उप्पायणोवघाए,

एसणोवघाए,

परिकम्मोवघाए,

परिहरणोवघाए

पंचविहा विसोही पण्णत्ता तं जहा-

उग्गमविसोही,

उप्पायणविसोही,

एसणाविसोही,

परिकम्मविसोही,

परिहरणविसोही २

४२६ पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लभवोहियत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-

अरहंताण अवण्णं वयमाणे,

अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वयमाणे,

आयरिय-उवज्झायाण अवण्ण वयमाणे,

चाउवण्णस्स सघस्स अवण्ण वयमाणे,

विविक्क-तव-वंभचेराण देवाणं अवण्ण वयमाणे.

पंचहिं ठाणेहिं जीवा सुलभवोहियत्ताए कम्मं पगरेंति. त जहा-

अरहंताण वण्ण वयमाणे, —जाव—

विविक्क-तव-वभचेराण देवाण वण्णं वयमाणे २

४२७ पंच पडिसलीणा पण्णत्ता तं जहा-

सोइंदियपडिसलीणे, —जाव— फासिंदियपडिसलीणे.

पच अप्पडिसंलीणा पण्णत्ता तं जहा-

सोइंदियअप्पडिसलीणे, —जाव— फासिंदियअप्पडिसलीणे.

पंचविहे संवरे पण्णत्ते त जहा-

सोइंदियसवरे, —जाव— फासिंदियसवरे

पंचविहे असंवरे पण्णत्ते. तं जहा-

सोइंदियअसंवरे, —जाव— फासिंदियअसंवरे. २

:२८ पंचविहे संजमे पण्णत्ते. तं जहा-

सामाइयसंजमे,

छेओवट्ठावणियसंजमे,

परिहारविसुद्धिसंजमे,

सुहुमसंपरागसंजमे,

अहक्खायचरित्तसंजमे.

२९ एगिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ. तं जहा-

पुढविकाइयसंजमे, —जाव— वणस्सइकाइयसंजमे.

एगिंदिया ण जीवा समारभमाणस्स पचविहे असंजमे कज्जइ. त जहा-

पुढविकाइयअसंजमे, —जाव— वणस्सइकाइयअसंजमे २

४३० पंचिंदिया ण जीवा असमारभमाणस्स पचविहे संजमे कज्जइ. त जहा-

सोइंदियसजमे, —जाव— फासिंदियसजमे

पंचिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स पचविहे असंजमे कज्जइ. तं जहा-

सोइदियअसजमे, —जाव— फासिंदियअसजमे

सव्व-पाण-भूय-जीव-सत्ता णं असमारभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ तं जहा-

एगिंदियसंजमे —जाव— पंचिंदियसंजमे.

सव्व-पाण-भूय-जीव-सत्ता ण असमारभमाणस्स पचविहे असजमे कज्जइ तं जहा-

एगिंदियअसंजमे, —जाव— पंचिंदियअसंजमे ४

४३१ पंचविहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता त जहा-

अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खंधबीया, बीयरुहा

४३२ पचविहे आयारे पण्णत्ते. तं जहा-

नाणायारे,

दसणायारे,

चरित्तायारे,

तवायारे,

वीरियायारे.

४३३ पंचविहे आयारपकप्पे पण्णत्ते त जहा-

मासिए उग्घाइए,

मासिए अणुग्घाइए,

चउमासिए उग्घाइए,

चउमासिए अणुग्घाइए,

आरोवणा

आरोवणा पंचविहा पण्णत्ता. तं जहा-

पट्ठविया, ठविया, कसिणा, अकसिणा, हाडहड़ा २

४३४ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुत्थिमेणं सीयाए महा नईए उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

मालवते, चित्तकूड़े, पम्हकूड़े, नलिणकूड़े, एगसेले.

जवुमंदरस्स पुरओ सीयाए महानईए दाहिणेणं पंच वक्खार-पव्वया पण्णत्ता तं जहा-

तिकूड़े, वेममणकूड़े, अंजणे, मायंजणे, सोमणसे.

जवुमंदर-पच्चत्थिमेणं सीओआए महानईए दाहिणेणं पंच वक्खारपव्वया पण्णत्ता तं जहा-

विज्जुप्पभे, अकावती, पम्हावती, आसीविसे, सुहावहे

जवुमंदर-पच्चत्थिमेणं सीओआए महानईए उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वया पण्णत्ता तं जहा-

चंदपव्वए, सूरपव्वए, नागपव्वए, देवपव्वए गंधमायणे

जंवुमंदर-दाहिणेणं देवकुराए कुराए पंच महद्दहा पण्णत्ता त जहा-

निसहदहे, देवकुरुदहे, सूरदहे, सुलसदहे, विज्जुप्पभदहे

जबुमंदर-उत्तरेण उत्तरकुराए कुराए पंच महद्दहा पण्णत्ता तं जहा

नीलवंतदहे,

उत्तरकुरुदहे,

चंददहे,

एरावणदहे,

मालवंतदहे

सव्वे वि णं वक्खारपव्वया सीया सीओयाओ महाणईओ मदरं वा पव्वयंतेणं पच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं

आयरिय-उवज्झाए अंतो उवस्सगस्स पाए निगिज्झिय निगिज्झिय पप्फोडेमाणे वा, पमज्जेमाणे वा नाइक्कमइ,

आयरिय-उवज्झाए अंतो उवस्सगस्स उच्चार-पासवणं विगिंचमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ,

आयरिय-उवज्झाए पभू इच्छा वेयावड़िय करेज्जा, इच्छा नो करेज्जा,

आयरिय-उवज्झाए अंतो उवस्सगस्स एगराय वा, दुराय वा एगागी वसमाणे नाइक्कमइ,

आयरिय-उवज्झाए बाहिं उवस्सगस्स एगरायं वा, दुरायं वा वसमाणे नाइक्कमइ.

४३६ पंचहिं ठाणेहिं आयरिय-उवज्झायस्स गणावक्कमणे पण्णत्ते त जहा-

आयरिय-उवज्झाए य गणंसि आण वा, धारण वा नो सम्मं पउंजित्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए गणंसि अहारायणियाए किइकम्मं वेणइयं नो सम्मं पउंजित्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए गणंसि जे सुयपज्जवजाए धारिंति ते काले नो सम्ममणुप्पवाएत्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए गणंसि सगणियाए वा, परगणियाए वा निग्गंथीए वहिल्लेसे भवइ,

मित्ते नाइगणे वा से गणाओ अवक्कमेज्जा तेसिं संगहो-वुग्गहट्ठयाए गणावक्कमणे पण्णत्ते.

भोयणपरिणामेणं,

निद्दक्खएणं,

सुविणदंसणेणं.

४३७ पंचहि ठाणेहि समणे निग्गंथे निग्गंथि गिण्हमाणे वा, अव-लंबमाणे वा नाइक्कमइ तं जहा-

निग्गंथि च णं अण्णयरे पसुजाइए वा, पक्खिजाइए वा ओहाएज्जा तत्थ निग्गंथे निग्गंथि गिण्हमाणे वा, अलंबमाणे वा नाइक्कमइ,

निग्गंथे निग्गंथि दुग्गंसि वा, विसमंसि वा, पक्खलमाणि वा, पवडमाणि वा, गिण्हमाणे वा, अवलंबमाणे वा नाइक्कमइ,

निग्गंथे निग्गंथि सेयंसि वा, पकंसि वा, पणगंसि वा, उदगंसि वा, उदकसमाणीं वा, उवुज्झमाणीं वा, गिण्ह-माणे वा, अवलंबमाणे वा नाइक्कमइ,

निग्गंथे निग्गंथि नावं आरुहमाणे वा, ओरोहमाणे वा नाइक्कमइ,

खित्तचित्तं दित्तचित्तं जक्खाइट्ठं उम्मायपत्तं उवसग्गपत्तं साहिगरण सपायच्छित्तं —जाव— भत्तपाणपडिया-इक्खियं अट्ठजायं वा निग्गंथे निग्गंथि गिण्हमाणे वा, अवलंबमाणे वा णाइक्कमइ.

४३८ आयरिय-उवज्झायस्स णं गणंसि पंच अइसेसा पण्णत्ता. तं जहा-

सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे,

भावओ अवण्णे अगंधे अरसे अफासे,

गुणओ गमणगुणे य.

अधम्मत्थिकाए अवण्णे —जाव— लोगदव्वे, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते तं जहा-

दव्वओ —जाव— गुणओ. सेसं तहेव.

नवरं-गुणओ ठाणगुणे.

आगासत्थिकाए अवण्णे, एवं चेव.

नवरं-खेत्तओ लोगालोगप्पमाणमित्तए.

गुणओ अवगाहणगुणे, सेसं तं चेव

जीवत्थिकाए णं अवण्णे, एवं चेव.

नवरं-दव्वओ णं जीवत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं, अरूवी जीवे सासए, गुणओ उवओगगुणे, सेसं तं चेव.

पोग्गलत्थिकाए पंचवण्णे पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते तं जहा-

दव्वओ णं पोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं,

खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते,

कालओ न कयाइ नासि —जाव— निच्चे,

भावओ वण्णमंते गंधमंते रसमंते फासमंते,

गुणओ गहणगुणे. ५

०. पंचविहा इड्ढीमता मणुस्सा पण्णत्ता तं जहा-

अरहंता,

चक्कवट्टी,

बलदेवा,

वासुदेवा,

भावियप्पाणो अणगारा.

पंचट्ठाणस्स तइओ उद्देसो

४१ पंच अत्थिकाया पण्णत्ता तं जहा-

धम्मत्थिकाए,

अधम्मत्थिकाए,

आगासत्थिकाए,

जीवत्थिकाए,

पोग्गलत्थिकाए.

धम्मत्थिकाए अवण्णे अगंधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे, से समासओ पचविहे पण्णत्ते. तं जहा-

दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ.

दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एगं दव्वं,

खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते,

कालओ न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ त्ति, भुविं भवइ य भविस्सइ य धुवे निअए

पाईण-वाए,

पड़ीण-वाए,

दाहिण-वाए,

उदीण-वाए,

विदिस-वाए.

पंचविहा अचित्ता वाउकाइया पण्णत्ता तं जहा-

अक्कंते, धंते, पीलिए, सरीराणुगए, समुच्छिमे. ६

४४५ पंच निग्गंथा पण्णत्ता तं जहा-

पुलाए, बउसे, कुसीले, निग्गंथे, सिणाए.

पुलाए पंचविहे पण्णत्ते तं जहा-

नाण-पुलाए,

दंसण-पुलाए,

चरित्त-पुलाए,

लिंग-पुलाए,

अहासुहुम-पुलाए.

बउसे पंचविहे पण्णत्ते तं जहा-

आभोग-बउसे,

अणाभोग-बउसे,

संवुड-बउसे,

असंवुड़-बउसे,

अहासुहुम-बउसे

कुसीले पंचविहे पण्णत्ते. तं जहा-

४४२ पंच गइओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

निरयगइ, तिरियगइ, मणुयगइ, देवगइ, सिद्धिगइ.

४४३ पंच इंदियत्था पण्णत्ता तं जहा-

सोइंदियत्थे —जाव— फासिंदियत्थे.

पंच मुंडा पण्णत्ता तं जहा-

सोइंदियमुंडे —जाव— फासिंदियमुंडे

अहवा पंच मुंडा पण्णत्ता तं जहा-

कोहमुंडे, माणमुंडे, मायामुंडे, लोभमुंडे, सिरमुंडे. ३

४४४ अहोलोगे णं पंच बायरा पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविकाइया,

आउकाइया,

वाउकाइया,

वणस्सइकाइकाया,

ओराला तसा पाणा.

उड्ढलोगे णं पंच बायरा पण्णत्ता त जहा-

पुढविकाइया तहेव —जाव— ओराला तसा पाणा.

तिरियलोगे णं पंच बायरा पण्णत्ता. तं जहा-

एगिंदिया —जाव— पंचिंदिया.

पंचविहा बायरतेउकाइया पण्णत्ता तं जहा-

इंगाले, जाला, मुम्मुरे, अच्ची, अलाए

पंचविहा बादरवाउकाइया पण्णत्ता. तं जहा-

उण्णिए, उट्टिए, साणए, पच्चापिच्चियए, मुंजापिच्चिए. २

४४७ धम्मं चरमाणस्स पंच निस्साठाणा पण्णत्ता तं जहा-

छक्काए, गणे, राया, गिहवई, सरीर

४४८ पंच नि हि पण्णत्ता त जहा-

पुत्तनिही, मित्तनिही, सिप्पनिही, धणनिही, धण्णनिही

४४९ सोए पचविहे पण्णत्ते त जहा-

पुढविसोए, आउसोए, तेउसोए, मतसोए, वमसोए

४५० पंच ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ. तं जहा-

धम्मत्थिकायं,

अधम्मत्थिकाय,

आगासत्थिकायं,

जीवं असरीरपडिवद्ध,

परमाणुपोग्गल

एयाणि चेव उप्पण्ण-नाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेण जाणइ पासइ त जहा-

धम्मत्थिकायं — जाव — परमाणुपोग्गलं

४५१ अहोलोगे ण पच अणुत्तरा महइमहालया महा निरया पण्णत्ता. त जहा-

काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए, अप्पइट्ठाणे

उड्ढलोगे णं पच अणुत्तरा महइमहालया महा विमाणा

नाण-कुसीले,
दंसण-कुसीले,
चरित्त-कुसीले,
लिंग-कुसीले,
अहासुहुम-कुसीले.
नियठे पचविहे पण्णत्ते त जहा-
पढमसमय-नियंठे,
अपढमसमय-नियठे,
चरिमसमय-नियंठे,
अचरिमसमय-नियंठे,
अहासुहुम-नियठे.
सिणाए पंचविहे पण्णत्ते तं जहा-
अच्छवी,
असबले,
अकम्मसे,
संसुद्ध-णाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली,
अपरिस्सावी ६
४४६ कप्पइ निग्गथाण वा, निग्गंथीण वा पंच वत्थाइं धारित्तए वा, परिहरित्तए वा त जहा-
जगिए, भंगिए, साणए, पोत्तिए, तिरीडपट्टए.
कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गथीण वा पंच रयहरणाइं धारित्तए वा, परिहरित्तए वा. तं जहा-

तवे अणुण्णाए,
विउले इदियनिग्गहे.

४५६ पंच उक्कला पण्णत्ता. त जहा-
दंडुक्कले, रज्जुक्कले, तेणुक्कले, देसुक्कले, सव्वुक्कले

४५७ पंच समिइओ पण्णत्ताओ तं जहा-
ईरियासमिई —जाव— परिट्ठावणियासमिई.

४५८ पंचविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता त जहा-
एगिंदिया —जाव— पचिंदिया

एगिंदिया पच गइया, पच आगइया पण्णत्ता त जहा-
एगिंदिया एगिंदिएसु उववज्जमाणे एगिंदिएहिंतो —जाव— पंचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा

से चेव णं से एगिंदिए एगिंदियत्त विप्पजहमाणे एगिंदियत्ताए वा, —जाव— पंचिंदियत्ताए वा गच्छेज्जा.
बेंदिया पच गइया पच आगइया एवं चेव,
एव —जाव— पचिंदिया पचगइया पच आगइया.

पचविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं जहा-
कोहकसाइ —जाव— लोभकसाइ, अकसाइ

अहवा पचविहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-
नेरइया —जाव— देवा, सिद्धा. ६

४५९ प्र० अह भते ! कल-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-णिप्फाव-कुलत्थ-आलिसदग-सतीण-पलिमंथगाणं एएसि ण धण्णाणं कुट्ठा-

पण्णत्ता. तं जहा-

विजये, विजयंते, जयंते, अपराजिए, सव्वट्ठसिद्धे. २

४५२ पंच पुरिसजाया पण्णत्ता. त जहा-

हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते, उदयणसत्ते.

४५३ पंच मच्छा पण्णत्ता तं जहा-

अणुसोयचारी,

पडिसोयचारी,

अतचारी,

मज्झचारी,

सव्वचारी.

एवामेव पंच भिक्खागा पण्णत्ता तं जहा-

अणुसोयचारी —जाव— सव्वसोयचारी. २

४५४ पंच वणीमगा पण्णत्ता तं जहा-

अतिहि-वणीमए,

किविण-वणीमए,

माहण-वणीमए,

साण-वणीमए,

समण-वणीमए.

४५५ पंचहिं ठाणेहिं अचेलए पसत्थे भवइ. तं जहा-

अप्पा पडिलेहा,

लाघविए पसत्थे,

रूवे वेसासिए,

कडुओ वहूदओ तमाहु ,
संवच्छरं चंदं ॥२॥
विसमं पवालिणो ,
परिणमंति अणुदूसु देंति पुप्फफलं ।
वासं ण सम्म वासइ ,
तमाहु संवच्छर कम्मं ॥३॥
पुढविदगाणं तु रसं ,
पुप्फफलाणं तु देइ आदिच्चो ।
अप्पेण वि वासेणं ,
सम्मं निप्फज्जए सस्सं ॥४॥
आदिच्चतेयतविया ,
खण-लव-दिसा-उऊ परिणमंति ।
पूरिंति रेणुयलताइं ,
तमाहु अभिवड्ढितं जाण ॥५॥ ४

४६१ पंचविहे जीवस्स निज्जाणमग्गे पण्णत्ते. तं जहा-
पाएहिं, ऊरूहिं, उरेणं, सिरेणं, सव्वंगेहिं
पाएहिं निज्जायमाणे निरयगामी भवइ,
ऊरूहिं निज्जायमाणे तिरियगामी भवइ,
उरेणं निज्जायमाणे मणुयगामी भवइ,
सिरेणं निज्जायमाणे देवगामी भवइ,
सव्वंगेहिं निज्जायमाणे सिद्धिगइपज्जवसाणे पण्णत्ते-

४६२ पंचविहे छेयणे पण्णत्ते. तं जहा-

उत्ताणं जहा सालीणं —जाव— केवइयं कालं जोणी संचिट्ठइ ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं. उक्कोसेण पंच संवच्छराइ, तेण परं जोणी पमिलायइ —जाव— तेण परं जोणीवोच्छेदे, पण्णत्ते.

४६० पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तं जहा-

नक्खत्त-संवच्छरे,

जुग-संवच्छरे,

पमाण-संवच्छरे,

लक्खण-संवच्छरे,

सणिचर-संवच्छरे.

जुग-संवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते तं जहा-

चंदे, चंदे, अभिवड्ढिए, चंदे, अभिवड्ढिए चेव

पमाण-संवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते तं जहा-

नक्खत्ते, चंदे, ऊऊ, आदिच्चे, अभिवड्ढिए

लक्खण-संवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते तं जहा-

गाहाओ—समगं नक्खत्ता जोगं,
जोयंति समगं उदू परिणमंति ।
नच्चुण्ह नाइसीओ,
बहूदओ होइ नक्खत्ते ॥१॥
ससिसगलपुण्णमासी,
जोएइ विसमचारणक्खत्ते ।

सातयाणतए ४

४६३ पंचविहे नाणे पण्णत्ते तं जहा-

आभिणिबोहियणाणे,

सुयनाणे,

ओहिणाणे,

मणपज्जवणाणे,

केवलणाणे.

४६४ पंचविहे नाणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते तं जहा-

आभिणिबोहियनाणावरणिज्जे —जाव--

केवलनाणावरणिज्जे.

४६५ पंचविहे सज्झाए पण्णत्ते, तं जहा-

वायणा, पुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा.

४६६ पंचविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते त जहा-

सद्दहणसुद्धे,

विणयसुद्धे,

अणुभासणासुद्धे,

अणुपालणासुद्धे,

भावसुद्धे.

४६७ पंचविहे पड़िक्कमणे पण्णत्ते. तं जहा-

आसवदारपड़िक्कमणे,

मिच्छत्तपड़िक्कमणे,

कसायपड़िक्कमणे,

उप्पाच्छेयणे,

वियच्छेयणे,

बंधच्छेयणे,

पएसच्छेयणे,

दोधारच्छेयणे.

पंचविहे आणतरिए पण्णत्ते. त जहा-

उप्पायणतरिए,

वियणतरिए,

पएसाणतरिए,

समयाणतरिए,

सामण्णाणंतरिए

पंचविहे अणते पण्णत्ते त जहा-

नामाणंतए,

ठवणाणंतए,

दव्वाणतए,

गणणाणतए,

पदेसाणतए

अहवा पंचविहे अणंतए पण्णत्ते. तं जहा-

एगंओणतए,

दुहतोणतए,

देसवित्थाराणंतए,

सव्ववित्थाराणतए,

नेरइया णं पंचवण्णे पचरसे पोग्गले बंधिस्सु वा, बंधंति वा, बंधिस्सति वा तं जहा-

किण्हे —जाव— सुक्किल्ले.

तित्ते, —जाव— महुरे.

एवं —जाव— वेमाणिया. ४

४७० जवुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं गंगा महानई पच महानईओ समप्पेंति तं जहा-

जउणा, सरऊ, आई, कोसी, मही

जंवूमंदरस्स दाहिणेणं सिंधुमहाणई पंच महानईओ समप्पेंति. त जहा-

सतद्दू, विभासा, वितत्था, एरावई, चदभागा

जवूमंदरस्स उत्तरेणं रत्ता महानई पच महानईओ समप्पेंति. त जहा-

किण्हा, महाकिण्हा, नीला, महानीला, महातीरा

जंवूमंदरस्स उत्तरेण रत्तावई महानई पच महानईओ समप्पेंति. तं जहा-

इंदा, इदसेणा, सुसेणा, वारिसेणा, महाभोया ४

४७१ पंच तित्थगरा कुमारवासमज्झे वसित्ता मुंडा —जाव— पव्वइया. तं जहा-

वासुपुज्जे, मल्ली, अरिट्ठनेमी, पासे, वीरे.

४७२ चमरचंचाए रायहाणीए पच सभा पण्णत्ता तं जहा-

सुहम्मासभा,

जोगपडिक्कमणे,

भावपड़िक्कमणे

४६८ पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं वाएज्जा. तं जहा-

संगहट्ठयाए,

उवग्गहणट्ठयाए,

निज्जरणट्ठयाए,

सुत्ते वा मे पज्जवयाए भविस्सइ,

सुत्तस्स वा अवोच्छित्तिणयट्ठयाए.

पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं सिक्खेज्जा. तं जहा-

नाणट्ठयाए,

दंसणट्ठयाए,

चरित्तट्ठयाए,

वुग्गहविमोयणट्ठयाए,

अहत्थे वा भावे जाणिस्सामीत्तिकट्टु. २

४६९ सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पचवण्णा पण्णत्ता. तं जहा-

किण्हा —जाव— सुक्किल्ला.

सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता.

बभलोग-लंतएसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेणं पंचरयणी उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

छट्ठाणं

४७५ छहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहइ गणं धारित्तए. तं जहा-

सड्ढी पुरिसजाए, सच्चे पुरिसजाए,
मेहावी पुरिसजाए, बहुस्सुए पुरिसजाए,
सत्तिम, अप्पाधिकरणे.

४७६ छहिं ठाणेहिं निग्गथे निग्गथिं गिण्हमाणे वा, अवलवमाणे वा नाइक्कमइ त जहा-

खित्तचित्त, दित्तचित्तं,
जक्खाइट्ठ , उम्मायपत्त,
उवसग्गपत्त, साहिगरणं

४७७ छहिं ठाणेहिं निग्गथा निग्गथीओ य साहम्मियं कालगयं समायरमाणा णाइक्कमति. त जहा-

अंतोहिंतो वा बाहिं णीणेमाणा,
बाहीहिंतो वा निव्बाहिं णीणेमाणा,
उवेहमाणा वा,
उवासमाणा वा,
अणुण्णवेमाणा वा,
तुसिणीए वा संपव्वयमाणा

उववायसभा,

अभिसेयसभा,

अलंकारियसभा,

ववसायसभा.

एगमेगे ण इदट्ठाणे णं पंच सभाओ पण्णत्ताओ त जहा-

सुहम्मासभा —जाव— ववसायसभा २

४७३ पंच नक्खत्ता पच तारा पण्णत्ता तं जहा-

घणिट्ठा, रोहिणी, पुणव्वसू, हत्यो, विसाहा

४७४ जीवाण पचट्ठाणणिव्वित्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा, चिणंति वा, चिणिस्सति वा. तं जहा-

एगिदिएनिव्वत्तिए —जाव— पचिदियनिव्वत्तिए.

एव चिण-उवचिण-वध-उदीर-वेद-तह निज्जरा चेव.

पंचपएसिया खंधा अणता पण्णत्ता

पंचपएसोगाढा पोग्गला अणता पण्णत्ता, —जाव—

पंचगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता. २३

४८२ छव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता तं जहा-
पुढविकाइया —जाव— तसकाइया.

पुढविकाइया छ गइया, छ आगइया पण्णत्ता तं जहा-
पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा —जाव— तसकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा.
सो चेव णं से पुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा —जाव— तसकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा.
आउकाइया वि छ गइया छ आगइया.
एवं चेव —जाव— तसकाइया. २

४८३ छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-
आभिणिबोहियणाणी —जाव— केवलणाणी, अण्णाणी.

अहवा छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं जहा-
एगिंदिया —जाव— पंचिंदिया, अणिंदिया

अहवा छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं जहा-
ओरालियसरीरी —जाव— कम्मगसरीरी, असरीरी ३

४८४ छव्विहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता. तं जहा-

अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया,
खंधबीया, बीयरूहा, समुच्छिमा

४८५ छट्ठाणाइं सव्वजीवाणं नो सुलभाइं भवंति. तं जहा-
माणुस्सए भवे,
आयरिए खेत्ते जम्मं,

४७८ छ ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, तं जहा-

धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकायं,

आगासं, जीवं असरीरपडिवद्धं,

परमाणुपोग्गलं, सद्दं

एयाणि चेव उप्पण्ण-णाण-दंसणधरे अरहा जिणे —जाव— सव्वभावेणं जाणइ, पासइ तं जहा-

धम्मत्थिकायं —जाव— सद्दं. २

४७९ छहिं ठाणेहिं सव्वजीवाणं नत्थि इड्ढीइ वा, जुत्तीइ वा, जसेइ वा, वलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा. तं जहा-

जीवं वा अजीवं करणयाए,

अजीवं वा जीवं करणयाए,

एगसमएणं वा दो भासाओ भासित्तए,

सय कडं वा कम्मं वेएमि वा, मा वा वेएमि,

परमाणुपोग्गलं छिंदित्तए वा भिंदित्तए वा अगणिकाएण वा समोदहित्तए

वहिया वा लोगंता गमणयाए.

४८० छज्जीवनिकाया पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविकाइया —जाव— तसकाइया.

४८१ छ तारग्गहा पण्णत्ता. तं जहा-

सुक्के, बुहे, वहस्सइ,

अंगारए, सनिच्चरे, केऊ

४९० छव्विहा मणुस्सगा पण्णत्ता तं जहा-
जंबूदीवगा,
धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धगा,
धायइसडदीवपच्चत्थिमद्धगा,
पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धगा,
पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धगा,
अतरदीवगा

अहवा छव्विहा मणुस्सा पण्णत्ता. त जहा-

सम्मुच्छिममणुस्सा,
कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अंतरदीवगा.

गव्भवक्कतिअमणुस्सा-
कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अंतरदीवगा २

४९१ छव्विहा इड्ढीमंता मणुस्सा पण्णत्ता त जहा-
अरहता, चक्कवट्टी, वलदेवा,
वासुदेवा, चारणा, विज्जाहरा

छव्विहा अणिड्ढीमंता मणुस्सा पण्णत्ता. त जहा-
हेमवतगा, हेरण्णवतगा, हरिवसगा,
रम्मगवसगा, कुरुवासिणो, अतरदीवगा. २

४९२ छव्विहा ओसप्पिणी पण्णत्ता तं जहा-
सुसमसुसमा —जाव— दुसमदूसमा.

छव्विहा उसप्पिणी पण्णत्ता त जहा-

४९६ छट्ठाणा अणत्तवओ अहियाए असुभाए अखमाए अनीसेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति. तं जहा-

परियाए, परियाले, सुए,

तवे, लाभे, पूयासक्कारे.

छट्ठाणा अत्तवओ हियाए —जाव— आणुगामियत्ताए भवंति तं जहा-

परियारे —जाव— पूयासक्कारे. २

४९७ छव्विहा जाइ-आरिया मणुस्सा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा-अंबट्ठा य कलंदा य, वेदेहा वेदिगाइया ।
हरिता चुंचणा चेव, छप्पेता इब्भजाइओ ॥१॥

छव्विहा कुलारिया मणुस्सा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा-उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, नाया, कोरव्वा.

४९८ छव्विहा लोगट्ठिई पण्णत्ता तं जहा-

आगासपइट्ठिए वाए,

वायपइट्ठिए उदही,

उदहिपइट्ठिया पुढवी,

पुढविपइट्ठिया तसा थावरापाणा,

अजीवा जीवपइट्ठिया,

जीवा कम्मपइट्ठिया

४९९ छद्दिसाओ पण्णत्ताओ तं जहा-

पाईणा, पडीणा, दाहिणा,

उदीणा, उड्ढा, अहा.

मज्जपमाए, निद्दपमाए,
विसयपमाए, कसायपमाए,
जूयपमाए, पड़िलेहणापमाए

५०३ छव्विहा पमायपड़िलेहणा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा—आरभडा संमद्दा,
वज्जेयव्वा य मोसली तइया।
पप्फोड़णा चउत्थी,
वक्खित्ता वेइया छट्ठी ॥१॥

छव्विहा अप्पमायपडिलेहणा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—अणच्चावियं अवलियं
अणाणुवंधि अमोसलि चेव।
छप्पुरिमा नव खोडा,
पाणी पाणविसोहणी ॥१॥

५०४ छ लेसाओ पण्णत्ताओ तं जहा-

कण्हलेसा —जाव— सुक्कलेसा

पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं छ लेसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा

कण्हलेसा —जाव— सुक्कलेसा

एवं मणुस्सदेवाण वि २

५०५ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो छ अग्ग-
महिसीओ पण्णत्ताओ

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो छ अग्ग-
महिसीओ पण्णत्ताओ. २

खिप्पमोगिण्हइ, बहुमोगिण्हइ,
बहुविधमोगिण्हइ, धुवमोगिण्हइ,
अणिस्सियमोगिण्हइ, असंदिद्धमोगिण्हइ.

छव्विहा ईहामई पण्णत्ता. तं जहा-
खिप्पमीहइ —जाव— असंदिद्धमीहइ.

छव्विहा अवायमइ पण्णत्ता. तं जहा-
खिप्पमवेइ —जाव— असंदिद्धमवेइ.

छव्विहा धारणा पण्णत्ता तं जहा-
बहु धारेइ, बहुविहं धारइ,
पोराणं धारेइ, दुद्धरं धारेइ,
अणिस्सियं धारेइ, असंदिद्धं धारेइ. ४

५११ छव्विहे बाहिरए तवे पण्णत्ते तं जहा-
अणसणं, ओमोयरिया,
भिक्खायरिया, रसपरिच्चाए,
कायकिलेसो, पडिसंलीणया

छव्विहे अब्भंतरिए तवे पण्णत्ते तं जहा-
पायच्छित्तं, विणओ, वेयावच्चं,
सज्झाओ, झाणं, विउसग्गो २

५१२ छव्विहे विवादे पण्णत्ते तं जहा-
ओसक्कइत्ता, उस्सक्कइत्ता,
अणुलोमइत्ता, पड़िलोमइत्ता,
भइत्ता, भेलइत्ता

पुव्वाभद्दवया, कत्तिया, महा,
पुव्वाफग्गुणी, मूलो, पुव्वासाढा.

चंदस्स णं जोइसिदस्स जोइसरण्णो छ नक्खत्ता नत्तंभागा अवड्ढक्खेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पण्णत्ता. तं जहा-

सयभिसया, भरणी, अद्दा,
अस्सेसा, साई, जेट्ठा.

चंदस्स णं जोइसिदस्स जोइसरण्णो छ नक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढखेत्ता पणयालीसमुहुत्ता पण्णत्ता त जहा-

रोहिणी, पुणव्वसू, उत्तराफग्गुणी,
विसाहा, उत्तारासढा, उत्तराभद्दवया ३

५१८ अभिचंदे ण कुलकरे छ धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था.

५१९ भरहे ण राया चाउरंतचक्कवट्टी छ पुव्वसयसहस्साइं महाराया हुत्था.

५२० पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणियस्स छ सया वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाण सपया होत्था

वासुपुज्जे णं अरहा छहिं पुरिससएहिं सद्धि मुडे —जाव— पव्वइए.

चंदप्पभे णं अरहा छम्मासे छउमत्थे हुत्था. ३

५२१ तेइंदिया णं जीवाणं असमारभमाणस्स छव्विहे संजमे कज्जइ. तं जहा-

घाणमयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ,

१३ छव्विहा खुड्डा पाणा पण्णत्ता तं जहा-

बेंदिया,

तेइंदिया,

चउरिंदिया,

समुच्छिम-पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिया,

तेउकाइया,

वाउकाइया

१४ छव्विहा गोयरचरिया पण्णत्ता तं जहा-

पेड़ा, अद्धपेड़ा, गोमुत्तिया,

पतंगविहिया, सबुक्कवट्टा, गंतुंपच्चागया.

१५ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स य दाहिणेणं इमीसे रयण-प्पभाए पुढविए छ अवक्कतमहा निरया पण्णत्ता तं जहा-

लोले, लोलुए, उदड्ढे,

निदड्ढे, जरए, पज्जरए

चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढविए छ अवक्कंता महा निरया पण्णत्ता तं जहा-

आरे, वारे, मारे, रोरे, रोरुए, खाड़खडे २

१६ बम्भलोगे ण कप्पे छ विमाणपत्थड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

अरए, विरए, नीरए, निम्मले, वितिमिरे, विसुद्धे.

१७ चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो छ नक्खत्ता पुव्वंभागा समखेत्ता तीसइमुहुत्ता पण्णत्ता त जहा-

जबूमंदर उत्तरे ण छ कूडा पण्णत्ता तं जहा-

नीलवंत-कूडे, उवदसण-कूड़े,

रुप्पि-कूडे, मणिकंचण-कूड़े,

सिहरि-कूडे, तिगिच्छ-कूड़े

जबुद्दीवे दीवे छ महद्दहा पण्णत्ता तं जहा-

पउम-द्दहे, महापउम-द्दहे, तिगिच्छ-द्दहे,

केसरि-द्दहे, महापोडरिय-द्दहे, पुडरीय-द्दहे.

तत्थ णं छ देवयाओ महड्ढियाओ —जाव— पलिओव-मट्ठियाओ परिवसति तं जहा-

सिरि, हिरि, धिति, कित्ति, बुद्धि, लच्छी

जबूमंदरदाहिणे णं छ महानईओ पण्णत्ताओ तं जहा-

गगा, सिधू, रोहिया, रोहितसा, हरी, हरिकता

जबूमदरउत्तरेण छ महानईओ पण्णत्ताओ तं जहा-

नरकता, नारीकंता, सुवण्णकूला,

रुप्पकूला, रत्ता, रत्तवती

जंबूमंदरपुरच्छिमे णं सीताए महाणईए उभयकूले छ अतर-नईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

गाहावई, दहावई, पंकवई,

तत्तजला, मत्तजला, उम्मत्तजला

जबूमंदरपच्चत्थिमे णं सीतोदाए महाणईए उभयकूले च अंतरनईओ पण्णत्ताओ तं जहा-

घाणमएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ,
जिब्भामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ,
जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ,
फासमयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ,
फासमएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ.

तेइंदियाणं जीवाणं समारभमाणस्स छव्विहे असंजमे कज्जइ. तं जहा-

घाणमयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ —जाव—
फासमएण दुक्खेणं संजोगेत्ता भवइ. २

५२२ जंबुद्दीवे दीवे छ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

हेमवए, हेरण्णवए, हरिवासे,
रम्मगवासे, देवकुरा, उत्तरकुरा.

जंबुद्दीवे दीवे छव्वासा पण्णत्ता. तं जहा-

भरहे, हेरवए, हेमवए,
हेरण्णवए, हरिवासे, रम्मगवासे.

जंबुद्दीवे दीवे छ वासहरपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

चुल्लहिमवते, महाहिमवते, निसढे,
नीलवते, रुप्पि, सिहरी.

जंबूमंदरदाहिणेणं छ कूडा पण्णत्ता तं जहा-

चुल्लहिमवंत-कूडे, वेसमण-कूडे,
महाहिमवंत-कूडे, वेरुलिय-कूडे,
निसढ-कूडे, रुयग-कूडे.

५२६ छव्विहे ओहिणाणे पण्णत्ते. तं जहा-

आणुगामिए, अणाणुगामिए,
वड्ढमाणए, हीयमाणए,
पडिवाई, अपडिवाई

५२७ नो कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा इमाइं छ अवयणाइं वइत्तए तं जहा-

अलियवयणे, हीलिअवयणे,
खिंसियवयणे, फरुसवयणे,
गारत्थियवयणे, विउसवियं वा पुणो उदीरित्तए.

५२८ छ कप्पस्स पत्थारा पण्णत्ता तं जहा-

पाणाइवायस्स वायं वयमाणे,
मुसावायस्स वायं वयमाणे,
अदिण्णादाणस्स वायं वयमाणे,
अविरइवायं वयमाणे,
अपुरिसवायं वयमाणे,
दासवायं वयमाणे.

इच्चेते छ कप्पस्स पत्थारे पत्थरेत्ता सम्ममपरिपूरेमाणो तट्ठाणपत्ते

५२९ छ कप्पस्स पलिमथू पण्णत्ता त जहा-

कोकुइए संजमस्स पलिमंथू,
मोहरिए सच्चवयणस्स पलिमंथू,
चक्खुलोलुए ईरियावहियाए पलिमंथू,

खीरोदा, सीहसोता,
अंतोवाहिणी, उम्मिमालिणी,
फेणमालिणी, गंभीरमालिणी

धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं छ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

हेमवए —जाव— उत्तरकुरा.

एवं जहा जंबूद्दीवे दीवे तहा नई —जाव— अंतरनईओ —जाव— पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे भाणियव्वं. २४

५२३ छ उऊ पण्णत्ता. तं जहा-

पाउसे, वारिसारत्ते, सरए, हेमंते. वसंते, गिम्हे.

५२४ छ ओमरत्ता पण्णत्ता. तं जहा-

तइए पव्वे, सत्तमे पव्वे,
एक्कारसमे वव्वे, पण्णरसमे पव्वे,
एगूणवीसइमे पव्वे, तेवीसइमे पव्वे.

छ अइरत्ता पण्णत्ता तं जहा-

चउत्थे पव्वे, अट्ठमे पव्वे,
दुवालसमे पव्वे, सोलसमे पव्वे,
वीसइमे पव्वे, चउवीसइमे पव्वे. २

५२५ आभिणिवोहियणाणस्स णं छव्विहे अत्थोग्गहे पण्णत्ते. तं जहा-

सोइंदियत्थोग्गहे —जाव— नोइंदियत्थोग्गहे.

५३३ छव्विहे भोयणपरिणामे पण्णत्ते. तं जहा-

मणुण्णे, रसिए, पीणणिज्जे,
विंहणिज्जे, मयणिज्जे, दीवणिज्जे.

छव्विहे विसपरिणामे पण्णत्ते. तं जहा-

डक्के, भुत्ते,
निवइए, मंसाणुसारी,
सोणियाणुसारी, अट्ठिमिजाणुसारी २

५३४ छव्विहे पट्ठे पण्णत्ते तं जहा-

संसयपट्ठे, वुग्गहपट्ठे, अणुजोगी,
अणुलोमे, तहणाणे, अतहणाणे

५३५ चमरचंचा ण रायहाणी उक्कोनेणं छम्मासा विरहिए उववाएणं.

एगमेगे णं इंदट्ठाणे उक्कोसेण छम्मासा विरहिए उववाएणं.
अहेसत्तमा णं पुढवी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिया उववाएणं.

सिद्धिगइ णं उक्कोसेण छम्मासा विरहिया उववाएणं. ४

५३६ छव्विहे आउयवंधे पण्णत्ते तं जहा-

जाइणामणिधत्ताउए,
गइणामणिधत्ताउए,
ठिइणामणिधत्ताउए,
ओगाहणाणामणिधत्ताउए,

तिंतिणिए एसणागोयरस्स पलिमंथू,
इच्छालोभिए मोत्तिमग्गस्स पलिमंथू,
भिज्जाणियाणकरणे मोक्खमग्गस्स पलिमंथू.

सव्वत्थ भगवया अणियाणया पसत्था.

५३० छव्विहा कप्पट्ठिई पण्णत्ता. तं जहा-
सामाइयकप्पट्ठिई,
छेओवट्ठावणियकप्पट्ठिई,
निव्विसमाणकप्पट्ठिई,
निव्विट्ठकप्पट्ठिई,
जिणकप्पट्ठिई,
थविरकप्पट्ठिई.

५३१ समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं मुंडे —जाव— पव्वइए.

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं अणंते अणुत्तरे —जाव— समुप्पण्णे.

समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे ३

५३२ सणंकुमार-माहिंदेसु णं कप्पेसु विमाणा छ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता.

सणंकुमार-माहिंदेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जगा सरीरगा उक्कोसेण छ रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता. २

५३९ कत्तियाणक्खत्ते छत्तारे पण्णत्ते.

असिलेसाणक्खत्ते छत्तारे पण्णत्ते २

५४० जीवाणं छट्ठाण-निव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा, चिणंति वा, चिणिस्सति वा तं जहा-

पुढविकायनिवत्तिए —जाव— तसकायणिवत्तिए.

एवं चिण, उवचिण, बंध, उदीर, वेय तह णिज्जरा चेव

छप्पएसिया ण खंधा अणता पण्णत्ता.

छप्पएसोगाढा पोग्गला अणता पण्णत्ता.

छसमयट्ठिइया पोग्गला अणंता

छगुणकालगा पोग्गला —जाव— छगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता २९

पएसणामणिधत्ताउए,
अणुभावणामणिधत्ताउए.

नेरइयाणं छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते. त जहा-
जाइणामणिधत्ताउए —जाव— अणुभावणामणिध-त्ताउए

एवं —जाव— वेमाणियाणं.

नेरइया णियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति.
एवामेव असुरकुमारा वि —जाव— थणियकुमारा

असंखेज्जवासाउया सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिया णियमं छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति.

असंखेज्जवासाउया सण्णि-मणुस्सा णियमं —जाव— पगरिंति.

वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया जहा नेरइया. ३

५३७ छव्विहे भावे पण्णत्ते. त जहा-
ओदइए, उवसमिए,
खइए, खओवसमिए,
पारिणामिए, सण्णिवाइए.

५३८ छव्विहे पड़िक्कमणे पण्णत्ते तं जहा-
उच्चारपड़िक्कमणे, पासवणपड़िक्कमणे,
इत्तरिए आवकहिए,
जं किंचि मिच्छा, सोमणंतिए.

तत्थ खलु इमे पढमे विभंगणाणे

जया णं तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा विभंगनाणे समुप्पज्जइ, से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं पासइ पाईण वा, पड़िणं वा, दाहिण वा उदीणं वा, उड्ढं वा —जाव— सोहम्मे कप्पे, तस्स णं एवं भवइ "अत्थि णं मम अइसेसे नाण-दंसणे समुप्पण्णे एग दिसिं लोगाभिगमे, सतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहसु पंचदिसिं लोगाभिगमे" जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु

इइ पढमे विभंगणाणे

अहावरे दोच्चे विभंगणाणे

जया णं तहारूवस्स वा, माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जइ, से ण तेण विभगणाणेण समुप्पण्णेण पासइ पाईण वा, पडिणं वा, दाहिण वा, उदीण वा, उड्ढं वा —जाव— सोहम्मे कप्पे, तस्स ण एव भवइ "अत्थि णं मम अइसेसे णाण-दंसणे समुप्पण्णे पचदिसिं लोगाभिगमे", संतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहसु—"एगदिसिं लोगाभिगमे जे ते एवमाहंसु मिच्छ ते एवमाहंसु".

इइ दोच्चे विभंगणाणे

अहावरे तच्चे विभंगणाणे

जया णं तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा विभंगणाणे

सत्तट्ठाणं

५४१ सत्तविहे गणावक्कमणे पण्णत्ते तं जहा-

सव्वधम्मा रोएमि,

एगइया रोएमि एगइया नो रोएमि,

सव्वधम्मा वितिगिच्छामि,

एगइया वितिगिच्छामि एगइया नो वितिगिच्छामि,

सव्वधम्मा जुहुणामि,

एगइया जुहुणामि एगइया नो जुहुणामि,

इच्छामि णं भंते ! एगल्लविहारपड़िमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए

५४२ सत्तविहे विभंगणाणे पण्णत्ते, तं जहा—

एगदिसिलोगाभिगमे,

पंचदिसिलोगाभिगमे,

किरियावरणे जीवे,

मुदग्गे जीवे,

अमुदग्गे जीवे,

रूवी जीवे,

सव्वमिणं जीवा

समुप्पज्जइ, से णं तेणं विभगणाणेणं समुप्पण्णेणं देवामेव पासइ, वाहिरब्भंतरए पोग्गले अपरियादिइत्ता पुढेगत्त —जाव— विकुव्वित्ताण चिट्ठित्तए तस्स णं एवं भवइ "अत्थि —जाव— समुप्पण्णे अमुदग्गे जीवे," संतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहसु-मुदग्गे जीवे", जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु.

इइ पंचमे विभगणाणे.

अहावरे छट्ठे विभंगणाणे

जया णं तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जइ. से णं तेणं विभंगणाणेण समुप्पण्णेणं देवामेव पासइ वाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता वा, अपरियाइत्ता वा, पुढेगत्तं णाणत्तं फुसेत्ता —जाव— विकुव्वित्ताण चिट्ठित्तए, तस्स णं एवं भवइ "अत्थि णं मम अइसेसे णाण-दंसणे समुप्पण्णे, रूवी जीवे, संतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहंसु अरूवी जीवे" जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहंसु.

इइ छट्ठे विभंगणाणे

अहावरे सत्तमे विभंगणाणे

जया णं तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा विभंगणाणे वा समुप्पज्जइ, से णं तेणं विभंगणाणेण समुप्पण्णेणं पासइ सुहुमेणं वाउकाएणं फुडं पोग्गलकायं एयंतं वेयंतं चलतं

समुप्पज्जइ, से णं तेणं विभंगणाणेणं पासइ-पाणे अइवा-एमाणे, मुसं वयमाणे, अदिण्णमादियमाणे, मेहुणं पड़िसेवमाणे, परिग्गहं परिगिण्हमाणे, राइभोयणं भंजमाणे वा, पावं च णं कम्मं कीरमाणं नो पासइ, तस्स णं एवं भवइ "अत्थि ण मम अइसेसे णाण-दंसणे समुप्पण्णे किरियावरणे जीवे. संतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहंसु—नो किरियावरणे जीवे" जे ते एवमाहंसु, मिच्छ ते एवमाहसु.

इइ तच्चे विभंगणाणे

अहावरे चउत्थे विभंगणाणे

जया णं तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जइ, से णं तेणं विभगणाणेण समुप्पण्णेणं देवामेव पासइ, बाहिरब्भतरए पोग्गले परियादिइत्ता पुढेगत्तं णाणत्त फुसिया फुरेत्ता फुट्टित्ता विकुव्वित्ताण, विकुव्वित्ताणं चिट्ठित्तए तस्स ण एवं भवइ "अत्थि णं मम अइसेसे नाण-दंसणसमुप्पण्णे, मुदग्गे जीवे, सतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहसु—अमुदग्गे जीवे" जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु.

इइ चउत्थे विभगणाणे

अहावरे पंचमे विभंगणाणे

जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे

पोययाए वा —जाव— उब्भियत्ताए वा गच्छेज्जा.

पोयया सत्त गइया सत्त आगइया.

एवं चेव सत्तण्हवि गइरागइ भाणियव्वा —जाव— उब्भियत्ति २

५४४ आयरिय-उवज्झायस्स णं गणंसि सत्त संगहट्ठाणा पण्णत्ता. तं जहा-

आयरिय-उवज्झाए गणसि आणं वा, धारण वा सम्मं पउंजित्ता भवइ.

एवं जहा पंचट्ठाणे —जाव— आयरिय-उवज्झाए गणसि आपुच्छियचारि यावि भवइ.

नो अणापुच्छियचारी या वि भवइ.

आयरिय-उवज्झाए गणसि अणुप्पण्णाइं उवगरणाइ सम्म उप्पाइत्ता भवइ

आयरिय-उवज्झाए गणंसि पुव्वुप्पण्णाइ उवगरणाइ सम्म सारक्खेत्ता सगोवित्ता भवइ नो असम्मं सारक्खेत्ता संगोवित्ता भवइ

आयरिय-उवज्झायस्स णं गणंसि सत्त असंगहट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा-

आयरिय-उवज्झाए गणंसि आण वा, धारण वा नो सम्मं पउजित्ता, भवइ एव —जाव—

उवगरणाण नो सम्म सारक्खेत्ता सगोवेत्ता भवइ २

५४५ सत्त पिंडेसणाओ पण्णत्ताओ

खुब्भतं फंदंतं घट्टंतं उदीरेंतं तं तं भावं परिणमंत तस्स ण एवं भवइ "अत्थि णं मम अइसेसे णाण-दंसणे समुप्पण्णे सव्वमिण जीवा सतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहंसु-"जीवा चेव अजीवा चेव" जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु.

तस्स णं इमे चत्तारि जीवनिकाया णो सम्ममुवगया भवंति, तं जहा-

पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया,

इच्चेएहिं चउहिं जीवनिकाएहिं मिच्छादंडं पवत्तेइ

इइ सत्तमे विभंगणाणे

५४३ सत्तविहे जोणिसगहे पण्णत्ते, तं जहा—

अंडया,

पोयया,

जराउया,

रसया,

ससेइमा,

सम्मुच्छिमा,

उब्भिया

अंडया सत्त गइया सत्त आगइया पण्णत्ता. तं जहा-

अंडए अंडएसु उववज्जमाणे अंडएहिंतो वा, पोयएहिंतो वा —जाव— उब्भिएहिंतो वा उववज्जेज्जा.

से चेव णं से अंडए अंडयत्तं विप्पजहमाणे अंडयत्ताए वा,

सक्करप्पभा,

वालुअप्पभा,

पंकप्पभा,

धूमप्पभा,

तमा,

तमतमा, ११

५४७ सत्तविहा वायरवाउकाइया पण्णत्ता तं जहा-

पाईणवाए,

पडीणवाए,

दाहिणवाए,

उदीणवाए,

उड्ढवाए,

अहोवाए,

विदिसिवाए.

५४८ सत्त संठाणा पण्णत्ता. तं जहा-

दीहे, हस्से, वट्टे, तंसे, चउरंसे, पिहुले, परिमडले.

५४९ सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता. तं जहा-

इहलोगभए,

परलोगभए,

आदाणभए,

अकम्हाभए,

वेयणभए,

सत्त पाणेसणाओ पण्णत्ताओ

सत्त उग्गहपड़िमाओ पण्णत्ताओ.

सत्त सत्तिक्कया पण्णत्ता

सत्त महज्झयणा पण्णत्ता

सत्तसत्तमिया णं भिक्खुपड़िमा एगूणपण्णयाए राइंदिएहिं एगेण य छण्णउएणं भिक्खासएणं अहासुत्तं —जाव— आराहिया वि भवइ ६

५४६ अहेलोगे णं सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ

सत्त घणोदहिओ पण्णत्ताओ.

सत्त घणवाया, सत्त तणुवाया पण्णत्ता

सत्त उवासंतरा पण्णत्ता.

एएसु णं सत्तसु उवासंतरेसु सत्त तणुवाया पइट्ठिया.

एएसु णं सत्तसु तणुवाएसु सत्त घणवाया पइट्ठिया

एएसु णं सत्तसु घणवाएसु सत्त घणोदहि पइट्ठिया

एएसु णं सत्तसु घणोदहिसु पिंडलगपिहुणसंठाणसंठियाओ सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ तं जहा-

पढमा —जाव— सत्तमा.

एयासि णं सत्तण्हं पुढवीणं सत्त नामधेज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

घम्मा, वसा, सेला, अंजणा, रिट्ठा, मघा, माघवइ.

एयासि णं सत्तण्ह पुढवीण सत्त गोत्ता पण्णत्ता. तं जहा-

रयणप्पभा,

ते कासवा,

ते संडेल्ला,

ते गोल्ला,

ते वाला,

ते मुजतिणो,

ते पव्वपेच्छतिणो,

ते वरिसकण्हा.

जे गोयमा ते सत्तविहा पण्णत्ता तं जहा-

ते गोयमा,

ते गग्गा,

ते भारद्दा,

ते अंगिरसा,

ते सक्कराभा,

ते भक्खराभा,

ते उदगत्ताभा.

जे वच्छा ते सत्तविहा पण्णत्ता तं जहा-

ते वच्छा,

ते अग्गेया,

ते मित्तिया,

ते सामिलिणो,

ते सेलतया,

ते अट्ठिसेणा,

मरणभए,

असिलोगभए.

५५० सत्तहिं ठाणेहिं छउमत्थं जाणेज्जा तं जहा-

पाणे अइवाइत्ता भवइ,

मुसं वइत्ता भवइ,

अदिण्णमाइत्ता भवइ,

सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे आसाएत्ता भवइ,

पूया-सक्कारं अणुवूहेत्ता भवइ,

इमं सावज्जं ति पण्णवेत्ता पडिसेवित्ता भवइ,

नो जहावाइ तहाकारी यावि भवइ

सत्तहिं ठाणेहिं केवली जाणेज्जा. तं जहा-

नो पाणे अइवाएत्ता भवइ, —जाव— जहावाइ तहाकारी यावि भवइ २

५५१ सत्त मूलगोत्ता पण्णत्ता. तं जहा-

कासवा,

गोतमा,

वच्छा,

कोच्छा,

कोसिया,

मंडवा,

वासिट्ठा.

जे कासवा ते सत्तविहा पण्णत्ता तं जहा-

ते एलावच्चा,

ते कंडिल्ला,

ते खारातणा

जे वासिट्ठा ते सत्तविहा पण्णत्ता तं जहा-

ते वासिट्ठा,

ते उजायणा,

ते जारेकण्हा,

ते वग्घावच्चा,

ते कोडिण्णा,

ते सण्णी,

ते पारासरा. ८

५५२ सत्त मूलनया पण्णत्ता तं जहा-

नेगमे,

संगहे,

ववहारे,

उज्जुसुए,

सद्दे,

समभिरूढे,

एवंभूए

५५३ सत्त सरा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा—सज्जे रिसभे गंधारे,

मज्झिमे पंचमे सरे।

ते वीयकम्हा,

जे कोच्छा ते सत्तविहा पण्णत्ता. तं जहा-

ते कोच्छा,

ते मोग्गलायणा,

ते पिंगलायणा,

ते कोडीणा,

ते मंडलिणो,

ते हारिता.

ते सोमया,

जे कोसिया ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा-

ते कोसिया,

ते कच्चातणा,

ते सालकायणा,

ते गोलिकायणा,

ते पक्खिकायणा,

ते अग्गिच्चा,

ते लोहिया

जे मंडवा ते सत्तविहा पण्णत्ता तं जहा-

ते मंडवा,

ते अरिट्ठा,

ते समुता,

ते तेला,

सत्त सरा अजीवनिस्सिया पण्णत्ता. तं जहा-

गाहाओ—सज्जं रवइ मुइंगो ,
गोमुही रिसभं सरं ।
संखो णयइ गधारं ,
मज्झिमं पुण झल्लरी ॥१॥

चउचलणपइट्ठाणा ,
गोहिया पंचमं सरं ।
आडंवरो रेवइयं ,
महाभेरी य सत्तमं ॥२॥

एएसि णं सत्तसराणं सत्त सरलक्खणा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहाओ—सज्जेण लभइ विर्त्ति ,
कयं च ण विणस्सइ ।
गावो मित्ता य पुत्ता य ,
णारीणं चेव वल्लभो ॥१॥

रिसभेण उ एसज्जं ,
सेणावच्चं धणाणि य ।
वत्थगंधमलंकारं ,
इत्थिओ सयणाणि य ॥२॥

गंधारे गीयजुत्तिण्णा ,
वज्जवित्ती कलाहिया ।
भवंति कइणो पण्णा ,
जे अण्णे सत्थपारगा ॥३॥

धेवए चेव णिसाए ,
सरा सत्त वियाहिया ॥१॥

एएसि णं सत्तण्हं सराणं सत्त सरट्ठाणा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहाओ–सज्जं तु अग्गजिब्भाए ,
उरेण रिसभं सरं ।
कंठुग्गएण गधारं ,
मज्झजिब्भाए मज्झिमं ॥१॥
णासाए पंचमं बूया ,
दंतोठ्ठेण य धेवयं ।
मुद्धाणेण य णेसायं ,
सरट्ठाणा वियाहिया ॥२॥

सत्त सरा जीवनिस्सिया पण्णत्ता तं जहा-

गाहाओ–सज्जं रवइ मयूरो ,
कुक्कुड़ो रिसहं सरं ।
हंसो णयइ गंधारं ,
मज्झिमं तु गवेलगा ॥१॥
अह कुसमसंभवे काले ,
कोइला पंचमं सरं ।
छट्ठं च सारसा कोंचा ,
णिसायं सत्तमं गया ॥२॥

छट्ठी य सारसी णाम,
सुद्धसज्जा य सत्तमा ॥१॥

मज्झिमगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

गाहा—उत्तरमंदा रयणी,
उत्तरा उत्तरासमा ।
आसोकंता य सोवीरा,
अभिरु हवइ सत्तमा ॥१॥

गंधारगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

गाहाओ—नंदी य खुड्डिमा पूरिमा,
य चउत्थी य सुद्धगंधारा ।
उत्तरगंधारा वि य,
पंचमिया हवइ मुच्छा उ ॥१॥

सुट्ठुत्तरमायामा,
सा छट्ठी नियमसो उ णायव्वा ।
अह उत्तरायया,
कोडीमायसा सत्तमी मुच्छा ॥२॥

सत्त सराओ कओ,
संभवंति गेयस्स का भवंति जोणी ।
कइसमया उस्सासा,
कइ वा गेयस्स आगारा ॥३॥

सत्त सरा णाभीओ,
भवंति गीयं च रुयजोणीय ।

मज्झिमसरसंपण्णा ,
भवंति सुहजीविणो ।
खायती पीयती देइ ,
मज्झिमं सरमस्सिओ ॥४॥

पंचमसरसंपण्णा ,
भवंति पुढवीपई ।
सूरा सगहकत्तारो ,
अणेग-गण-णायगा ॥५॥

रेवयसरसंपण्णा ,
भवंति कलहप्पिया ।
साउणिया वग्गुरिया ,
सोयरिया मच्छबधा य ॥६॥

चंडाला मुट्ठिया सेया ,
जे अण्णे पावकम्मिणो ।
गोघायगा य जे चोरा ,
णिसायं सरमस्सिया ॥७॥

एतेसिं सत्तण्हं सराणं तओ गामा पण्णत्ता. तं जहा-
सज्जगामे, मज्झिमगामे, गंधारगामे.

सज्जगामस्स ण सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
गाहा—भंगी कोरव्वीया हरी य ,
रयतणी य सारकंता य ।

हेउजुत्तमलंकिय ।
उवणीयं सोवयारं च ,
मियं महुरमेव य ॥१०॥
सममद्धसमं चेव ,
सव्वत्थ विसमं च जं ।
तिण्णि वित्तप्पयाराइं ,
चउत्थं नोवलब्भइ ॥११॥
सक्कया पागया चेव ,
दुहा भणिइओ आहिया ।
सरमंडलम्मि गिज्जंते ,
पसत्था इसिभासिया ॥१२॥
केसी गायइ य महुरं ,
केसी गायइ खरं च रुक्ख च ।
केसी गायइ चउरं ,
केसी विलवं दुयं केसी ॥१३॥
विस्सरं पुण केरिसी ?,
सामा गायइ महुरं ,
काली गायइ खरं च रुक्खं च ।
गोरी गायइ चउरं ,
काणं विलंव दुतं अधा ॥१४॥
विस्सरं पुण पिंगला ।
तंतिसमं तालसमं ,
पादसमं लयसमं गहसमं च ।

पादसमा ऊसासा ,
तिण्णि य गीयस्स आगारा ॥४॥
आइमिउ आरंभया ,
समुव्वहंता य मज्झगारम्मि ।
अवसाणे तज्जवितो ,
तिण्णि य गेयस्स आगारा ॥५॥
छद्दोसे अट्ठगुणे ,
तिण्णि य वित्ताइं दो भणितीओ ।
जाणाहिइ सो गाहिइ ,
सुसिक्खिओ रंगमज्झम्मि ॥६॥
भीयं दुतं रहस्सं ,
गायतो मा य गाहि उत्तालं ।
काकस्सरमणुनासं च ,
होंति गेयस्स छद्दोसा ॥७॥
पुण्णं रत्तं च अलंकियं च ,
वत्तं तहा अविघुट्ठं ।
महुरं सम सुउमारं ,
अट्ठ गुणा होंति गेयस्स ॥८॥
उरकंठसिरपसत्यं च ,
गेज्जंते मउरिभिअपदवद्धं ।
समतालपडुक्खेवं ,
सत्तसरसीहरं गीयं ॥९॥
निद्दोसं सारवंतं च ,

जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासहरपव्वया पण्णत्ता त जहा-

चुल्लहिमवते,

महाहिमवंते,

निसढे,

नीलवते,

रुप्पी,

सिहरी,

मदरे.

जंबुद्दीवे दीवे सत्त महानईओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्द समप्पेंति. त जहा-

गगा,

रोहिया,

हिरी,

सिया,

नरकंता,

सुवण्णकूला,

रत्ता

जबुद्दीवे दीवे सत्त महानईओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवण-समुद्दं समुप्पेंति त जहा-

सिंधु,

रोहितसा,

हरिकंता,

नीससिऊससियसमं ,
संचारसमा सरा सत्त ॥१५॥
सत्त सरा य तओ गामा ,
मुच्छणा एकवीसइ ।
ताणा एगूणपण्णासा ,
सम्मत्तं सरमंडलं ॥१६॥

५५४ सत्तविहे कायकिलेसे पण्णत्ते तं जहा-

ठाणाइए,
ऊक्कुडुयासणिए,
पडिमठाइ,
वीरासणिए,
णेसज्जिए,
दंडाइए,
लगंडसाइ.

५५५ जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासा पण्णत्ता. तं जहा-

भरहे,
एरवए,
हेमवए,
हेरण्णवए,
हरिवासे,
रम्मगवासे,
महाविदेहे.

एवं पच्चत्थिमद्धे वि. नवरं-पुरत्थाभिमुहीओ कालोदं समुद्दं समप्पेंति. पच्चत्थाभिमुहीओ पुरक्खरोदं समप्पेंति सव्वत्थ वासा वासहरपव्वया नईओ य भाणियव्वाणि ११

५५६ जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तीयाए उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा हुत्था तं जहा-

गाहा—मित्तदामे सुदामे य, सुपासे य सयंपभे ।
विमलघोसे सुघोसे य, महाघोसे य सत्तमे ।।१।।

जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए सत्त कुलगरा हुत्था-

गाहा—पढमित्थ विमलवाहण ,
चक्खुम जसम चउत्थमभिचंदे ।
तत्तो य पसेणइ ,
पुण मरुदेवे चेव नाभी य ।।१।।

एएसि णं सत्तण्ह कुलगराण सत्त भारियाओ हुत्था. त जहा-

गाहा—चंदजसा चंदकाता ,
सुरूव पडिरूव चक्खुकंता य ।
सिरिकता मरुदेवी ,
कुलकरइत्थोण नामाइं ।।१।।

जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुलकरा भविस्सति

गाहा—मित्तवाहण सुभोमे य ,
सुप्पभे य सयपभे ।

सीतोदा,

नारीकंता,

रुप्पकूला,

रत्तवई.

धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं सत्त वासा पण्णत्ता. तं जहा-

भरहे —जाव— महाविदेहे

धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं सत्त वासहरपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

चुल्लहिमवंते —जाव— मंदरे

धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं सत्त महाणईओ पुरच्छाभिमुहीओ कालोयसमुद्दं समप्पेंति. तं जहा-

गंगा —जाव— रत्ता.

धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं सत्त महानईओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति तं जहा-

सिंधू —जाव— रत्तवई.

धायइसंडदीवे पच्छत्थिमद्धे णं सत्त वासा एवं चेव, नवरं पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति पच्चत्थाभिमुहीओ कालोदं. सेसं तं चेव.

पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धे णं सत्त वासा तहेव.

नवरं-पुरत्थाभिमुहीओ पुक्खरोदं समुद्दं समप्पेंति.

पच्छत्थाभिमुहीओ कालोदं समुद्दं समप्पेंति. सेसं तं चेव.

असिरयणे,

मणिरयणे,

काकणिरयणे·

एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त पंचिंदिय-रयणा पण्णत्ता. तं जहा-

सेणावइरयणे,

गाहावइरयणे,

वड्ढइरयणे,

पुरोहियरयणे,

इत्थियरयणे,

आसरयणे,

हत्थिरयणे. २

५५९ सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढं दुसमं जाणेज्जा. तं जहा-

अकाले वरिसइ,

काले न वरिसइ,

असाहू पुज्जंति,

साहू न पुज्जंति,

गुरुहिं जणो मिच्छं पडिवण्णो,

मणोदुहया,

वइदुहया.

सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणेज्जा. तं जहा-

अकाले न वरिसइ,

दत्ते सुहुमे सुबंधू य ,
आगमेस्सिण होक्खइ ॥१॥

विमलवाहणे णं कुलगरे सत्तविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छिसु. तं जहा-

गाहा—मत्तगया य भिगा ,
चित्तंगा चेव होंति चित्तरसा ।
मणियंगा य अणियणा ,
सत्तमगा कप्परुक्खा य ॥१॥ ५

५७ सत्तविहा दडनीई पण्णत्ता त जहा-

हक्कारे,
मक्कारे,
धिक्कारे,
परिहासे,
मंडलबंधे,
चारए,
छविच्छेदे

५८ एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स णं सत्त एगिं-दियरयणा पण्णत्ता, तं जहा-

चक्करयणे,
छत्तरयणे,
चम्मरयणे,
दडरयणे,

५६३ बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्त धणूइं उड्ढं उच्चत्तेण सत्त य वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पतिट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववण्णे.

५६४ मल्ली ण अरहा अप्पसत्तमे मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए. तं जहा-

मल्ली विदेहरायवरकण्णगा,
पडिबुद्धि इक्खागराया,
चदच्छाये अगराया,
रुप्पी कुणालाहिवइ,
सखे कासीराया,
अदीणसत्तू कुरुराया
जितसत्तू पंचालराया.

५६५ सत्तविहे दंसणे पण्णत्ते त जहा-

सम्मद्दसणे,
मिच्छदंसणे,
सम्मामिच्छदसणे,
चक्खुदसणे,
अचक्खुदंसणे,
ओहिदसणे,
केवलदंसणे

५६६ छउमत्थवीयरागे ण मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ

काले वरिसइ,
असाहू न पुज्जंति,
साहू पुज्जंति,
गुरुहि जणो सम्म पडिवण्णो,
मणोसुहया,
वइसुहया २

५६० सत्तविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता तं जहा-
नेरइया,
तिरिक्खजोणिया,
तिरिक्खजोणिणीओ,
मणुस्सा,
मणुस्सीओ,
देवा,
देवीओ

५६१ सत्तविहे आउभेदे पण्णत्ते तं जहा-
गाहा – अज्झवसाणनिमित्ते, आहारे वेयणा पराघाए ।
फासे आणापाणू, सत्तविहं भिज्जए आउं ॥१॥

५६२ सत्तविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं जहा-
पुढविकाइया —जाव— तसकाइया अकाइया.
अहवा सत्तविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं जहा-
कण्हलेसा —जाव— सुक्कलेसा, अलेसा. २

इत्थिकहा,
भत्तकहा,
देसकहा,
रायकहा,
मिउकालणिया,
दंसणभेयणी,
चरित्तभेयणी.

५७० आयरिय-उवज्झायस्स णं गणंसि सत्त अइसेसा पण्णत्ता. तं जहा-

आयरिय-उवज्झाए अंतो उवस्सगस्स पाए निगिज्झिय-निगिज्झिय पप्फोडेमाणे वा, पमज्जमाणे वा नाइक्कमइ,
एवं जहा पंचट्ठाणे —जाव—
बाहिं उवस्सगस्स एगराय वा, दुराय वा वसमाणे नाइक्कमइ,
उवकरणाइसेसे भत्तपाणाइसेसे

५७१ सत्तविहे संजमे-पण्णत्ते तं जहा-

पुढविकाइयसंजमे —जाव— तसकाइयसंजमे, अजीव-कायसंजमे.

सत्तविहे असंजमे पण्णत्ते. तं जहा-

पुढविकायअसंजमे —जाव— तसकाइयअसंजमे, अजीवकाइय असंजमे

सत्तविहे आरंभे पण्णत्ते तं जहा-

वेयइ. तं जहा-

नाणावरणिज्जं,

दंसणावरणिज्जं,

वेयणियं,

आउयं,

नामं,

गोत्तं,

अंतराइयं.

५६७ सत्त ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणइ, न पासइ. तं जहा-

धम्मत्थिकायं,

अधम्मत्थिकायं

आगासत्थिकायं,

जीवं असरीरपडिवद्धं,

परमाणुपोग्गलं,

सद्दं,

गंधं

एयाणि चेव उप्पण्णणाणे —जाव— जाणइ, पासइ. तं जहा-

धम्मत्थिकायं —जाव— गंधं. २

५६८ समणे भगव महावीरे वयरोसभणारायसंघयणे समचउरंस-संठाणसंठिए सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेण हुत्था.

५६९ सत्त विकहाओ पण्णत्ताओ तं जहा-

५७५ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अब्भितरपरिसाए देवाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता.

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीणं देवीणं सत्त पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता.

सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ३

५७६ सारस्सयमाइच्चाणं सत्त देवा, सत्त देवसया पण्णत्ता

गद्दतोयतुसियाण देवाणं सत्त देवा,

सत्त देवसहस्सा पण्णत्ता.

५७७ सणंकुमारे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

माहिंदे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं साइरेगाइं सत्त सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता

बंभलोगे कप्पे जहण्णेणं देवाणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ३

५७८ बंभलोयलंतएसु ण कप्पेसु विमाणा सत्तजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

५७९ भवणवासीणं देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता

एव वाणमंतराणं, एवं जोइसियाणं.

सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जगा सरीरा

पुढविकाइयआरंभे — जाव— अजीवकाइयआरंभे.

एवं अणारंभे वि, एवं सारंभे वि, एवं असारंभे वि, एवं समारंभे वि, एवं असमारंभे वि —जाव— अजीवकाय-असमारंभे ९

५७२ अह भंते ! अयसि-कुसुंभ-कोद्दव-कंगुरालग-सण-सरिसव-मूल-बीयाणं एएसि णं धण्णाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं —जाव— पिहियाणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठइ ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त संवच्छराइं,

तेण परं जोणी पमिलायइ—जाव— जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते.

५७३ बायरआउकाइयाणं उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता

तच्चाए णं वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं नेरइयाणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता

चउत्थिए णं पंकप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं नेरइयाणं सत्त-सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ३

५७४ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णताओ

ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ

ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ३

दुहओवंका,

एगओखुहा,

दुहओखुहा,

चक्कवाला,

अद्धचक्कवाला

५८२ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सत्त अणिया सत्त अणियाहिवई पण्णत्ता तं जहा-

पायत्ताणिए,

पीढाणिए

कुंजराणिए,

महिसाणिए,

रहाणिए,

नट्टाणिए,

गंधव्वाणिए.

दुमे पायत्ताणियाहिवइ,

एव जहा पचट्ठाणे —जाव—

किंनरे रहाणियाहिवइ,

रिट्ठे नट्टाणियाहिवइ,

गीइरइ गंधव्वाणियाहिवइ

बलिस्स ण वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सत्ताणिया, सत्त अणियाहिवइ पण्णत्ता तं जहा-

पायत्ताणिए. —जाव— गधव्वाणिए.

सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता. ४

५८० नंदिस्सरवरस्स णं दीवस्स अंतो सत्त दीवा पण्णत्ता. तं जहा-

जंबुद्दीवे दीवे,
धायइसंडे दीवे,
पोक्खरवरे,
वरुणवरे,
खीरवरे,
घयवरे,
खोयवरे.

नंदिस्सरवरस्स णं दीवस्स अतो सत्त समुद्दा पण्णत्ता. तं जहा-

लवणे,
कालोए,
पुक्खरोदे,
वरुणोए,
खीरोए
घओए,
खोओए. २

५८१ सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ. तं जहा

उज्जुआयया,
एगओवंका,

हिवइणो पण्णत्ताओ तं जहा-

पायत्ताणिए -जाव - गंधव्वाणिए.

लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवइ —जाव—

महासेणे नट्टाणियाहिवइ, रते गंधव्वाणियाहिवइ.

सेसं जहा पचट्ठाणे.

एवं —जाव— अच्चुतस्स वि नेयव्वं ३०

५८३ चमरस्सण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाहिवइस्स सत्तकच्छाओ पण्णत्ताओ त जहा-

पढमाकच्छा - जाव— सत्तमा कच्छा

चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाहिवइस्स पढमाए कच्छाए चउसट्ठि देवसहस्सा पण्णत्ता

जावइया पढमा कच्छा,

तव्विगुणा दोच्चा कच्छा,

तव्विगुणा तच्चा कच्छा,

एवं जाव — जावइया छट्ठा कच्छा,

तव्विगुणा सत्तमा कच्छा

एव वलिस्स वि, नवरं-महद्दुमे सट्ठिदेवसाहस्सिओ, सेसं तं चेव, धरणस्स एव चेव नवरमट्ठावीस देवसहस्सा, सेसं तं चेव जहा धरणस्स एवं —जाव— महाघोसस्स. नवरं पायत्ताणियाहिवइ अण्णे ते पुव्वभणियाओ पण्णत्ताओ

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो हरिणेगमेसिस्स सत्त कच्छाओ तं जहा-

महद्दुमे पायत्ताणियाहिवइ —जाव— किंपुरिसे रहाणियाहिवइ,

महारिट्ठे नट्टाणियाहिवइ, गीइजसे गंधव्वाणियाहिवइ.

धरणस्स ण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवइ पण्णत्ता त जहा-

पाइत्ताणिए - जाव — गधव्वाणिए.

रुद्दसेणे पायत्ताणियाहिवइ —जाव— आणदे रहाणियाहिवइ,

नदणे नट्टाणियाहिवइ, तेतली गंधव्वाणियाहिवइ.

भूयाणंदस्स सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवइ पण्णत्ता तं जहा-

पायत्ताणिए, -जाव - गंधव्वाणिए,

दक्खे पायत्ताणियाहिवइ —जाव— नदुत्तरे रहाणियाहिवइ, रती नट्टाणियाहिवई, माणसे गधव्वाणियाहिवइ.

एव —जाव — घोस-महाघोसाण नेयव्व

सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवइणो पण्णत्ताओ त जहा-

पायत्ताणिए, —जाव— गंधव्वाणिए,

हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवइ — जाव— माढरे रहाणियाहिवइ,

सेते नट्टाणियाहिवइ, तबुरु गंधव्वाणियाहिवइ

ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सत्त अणिया, सत्त अणिया-

चरित्तविणए,

मणविणए,

वइविणए,

कायविणए,

लोगोवयारविणए

पसत्यमणविणए सत्तविहे पण्णत्ते. तं जहा-

अपावए,

असावज्जे,

अकिरिए,

निरुवक्केसे,

अणण्हयकरे,

अच्छविकरे,

अभूयाभिसकमणे

अपसत्यमणविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा-

पावए,

सावज्जे,

सकिरिए,

सउवक्केसे,

अण्हयकरे,

छविकरे,

भूयाभिसंकमणे.

पसत्थवइविणए सत्तविहे पण्णत्ते तं जहा-

पढमा कच्छा एवं जहा चमरस्स तहा —जाव— अच्चुतस्स.

नाणत्तं-पायत्ताणियाहिवइ णं ते पुव्वभणिया.

देवपरीमाणं इम सक्कस्स चउरासीइ देवसहस्सा.

ईसाणस्स असीइदेवहस्साइ.

देवा इमाए गाहाए अणुगतव्वा

गाहा—चउरासीइ असीइ, बावत्तरि सत्तरी य सट्ठीया।
पण्णा चत्तालीसा, तीसा वीसा दससहस्सा ॥१॥

—जाव— अच्चुअस्स लहुपरक्कमस्स दसदेवसहस्सा —जाव— जावइया छट्ठा कच्छा तव्विगुणा सत्तमा कच्छा. ३०

५८४ सत्तविहे वयणविकप्पे पण्णत्ते तं जहा-

आलावे,

अणालावे,

उल्लावे,

अणुल्लावे,

संलावे,

पलावे,

विप्पलावे.

५८५ सत्तविहे विणए पण्णत्ते तं जहा-

नाणविणए,

दंसणविणए,

५८६ सत्त समुग्घाया पण्णत्ता तं जहा-

वेयणासमुग्घाए,

कसायसमुग्घाए,

मारणंतियसमुग्घाए,

वेउव्वियसमुग्घाए,

तेजससमुग्घाए,

आहारगसमुग्घाए,

केवलिसमुग्घाए

मणुस्साण सत्त समुग्घाया पण्णत्ता. एव चेव-

५८७ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स तित्थसि सत्त पवयण-णिण्हगा पण्णत्ता. तं जहा-

वहुरया

जीवपएसिया,

अवत्तिया,

समुच्छेइया,

दोकिरिया,

तेरासिया,

अवद्धिया

एएसि णं सत्तण्हं पवयणनिण्हगाण सत्त धम्मायरिया हुत्था. तं जहा-

जमालि,

तीसगुत्ते,

अपावए —जाव— अभूयाभिसंकमणे

अपसत्यवइविणए सत्तविहे पण्णत्ते. तं जहा-

पावए —जाव— भूयाभिसंकमणे.

पसत्यकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते. तं जहा-

आउत्तं गमणं,

आउत्तं ठाणं,

आउत्त निसीयणं,

आउत्तं तुअट्टणं,

आउत्तं उल्लघणं,

आउत्तं पल्लंघणं,

आउत्त सव्विदियजोगजुंजणया.

अपसत्यकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते. तं जहा-

अणाउत्तं गमणं —जाव— अणाउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणया.

लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते. तं जहा-

अब्भासवत्तिय,

परच्छंदाणुवत्तियं,

कज्जहेउं,

कयपडिकिइया,

अत्तगवेसणया,

देसकालण्णुया,

सव्वत्थेसु अ पडिलोमया. ८

सतभिसया,

पुव्वाभद्दवया,

उत्तराभद्दवया,

रेवइ.

अस्सिणियादिया णं सत्त नक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता. तं जहा-

अस्सिणी,

भरणी,

कित्तिता,

रोहिणी,

मिगसिरे,

अद्दा,

पुणव्वसू

पुस्सादिया णं सत्त नक्खत्ता अवरदारिया पण्णत्ता. तं जहा-

पुस्सो,

असिलेसा,

मघा,

पुव्वाफग्गुणी,

उत्तराफग्गुणी,

हत्थो,

चित्ता,

साइयाइया ण सत्त नक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता. तं जहा-

आसाढे,

आसमित्ते,

गंगे,

छलुए,

गोट्ठामाहिल्ले

एएसि ण सत्तण्हं पवयणनिण्हगाणं सत्तुप्पत्तिनगरा होत्था.

तं जहा-

गाहा—सावत्थी उसभपुरं, सेयविया मिहिलमुल्लगातीरं।

पुरिमंतरजि दसपुर निण्हगउप्पत्तिनगराइं।१। ३

५८८ सायावेयणिज्जस्स कम्मस्स सत्तविहे अणुभावे पण्णत्ते.

तं जहा-

मणुण्णा सद्दा —जाव— मणुण्णा फासा

मणोसुहया, वइसुहया

असायावेयणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तविहे अणुभावे पण्णत्ते.

तं जहा-

अमणुण्णा सद्दा, —जाव—वइदुहया. २

५८९ महाणक्खत्ते सत्ततारे पण्णत्ते.

अभीइयादिया णं सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता. तं जहा-

अभीइ,

सवणो,

धणिट्ठा,

५९३ सत्तपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता.

सत्तपएसोगाढा पोग्गला —जाव— सत्तगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता. २३

साइ,

विसाहा,

अणुराहा,

जेट्ठा,

मूलो,

पुव्वासाढा,

उत्तरासाढा ५

५९० जंबुद्दीवे दीवे सोमणसे वक्खारपव्वए सत्त कूड़ा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा-सिद्धे सोमणसे तह, वोद्धव्वे मंगलावइकूड़े ।
देवकुरु विमल कंचण, विसिट्ठकूड़े य वोद्धव्वे ॥१॥

जंबुद्दीवे दीवे गंधमायणे वक्खारपव्वए सत्त कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा-सिद्धे य गंधमायण, वोद्धव्वे गंधिलावइकूड़े ।
उत्तरकुरू फलिहे, लोहितक्ख अणंदणे चेव ॥१॥ २

५९१ बिइंदियाणं सत्त जाइकुलकोड़िजोणीपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता.

५९२ जीवा णं सत्तट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा, चिणंति वा, चिणिस्सति वा. तं जहा-

नेरइयनिव्वत्तिए —जाव— देवनिव्वत्तिए.

एवं चिण —जाव— निज्जरा चेव ६

आउयं, नामं,
गोत्तं, अंतराइयं.

नेरइया णं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिसु वा, एवं चेव
एवं निरंतरं —जाव— वेमाणियाणं.
जीवा णं अट्ठ कम्मपगडीओ उवचिणिसु वा, एवं चेव
एवं चिण-उवचिण-बंध-उदीर-वेय तह निज्जरा चेव
एए छ चउवीस-दंडगा भाणियव्वा ६

५९७ अट्ठहिं ठाणेहिं माई मायं कट्टु नो आलोएज्जा, नो पडिक्क-
मेज्जा —जाव— नो पडिवज्जेज्जा तं जहा-

करिसु वा हं, करेमि वा हं,
करिस्सामि वा हं, अकित्ती वा मे सिया,
अवण्णे वा मे सिया, अवणए वा मे सिया,
कित्ती वा मे परिहाइस्सइ, जसे वा मे परिहाइस्सइ

अट्ठहिं ठाणेहिं माई मायं कट्टु आलोएज्जा —जाव—
पडिवज्जेज्जा तं जहा-

माइस्स णं अस्सि लोए गरहिए भवइ,
उववाए गरहिए भवइ,
आजाइ गरहिया भवइ,
एगमवि माई मायं कट्टु नो आलोएज्जा —जाव—
नो पडिवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा,
एगमवि माई मायं कट्टु आलोएज्जा —जाव—

अट्ठट्ठाणं

५९४ अट्ठहिं ठाणेहिं सपण्णे अणगारे अरिहइ एगल्लविहारपडिमं
उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए. तं जहा-
सड्ढी पुरिसजाए, सच्चे पुरिसजाए,
मेहावी पुरिसजाए, बहुस्सुए पुरिसजाए,
सत्तिमं, अप्पाहिकरणे,
धिइमं, वीरियसपण्णे.

५९५ अट्ठविहे जोणिसंगहे पण्णत्ते तं जहा-
अंडया पोयया — जाव— उब्भिया उववाइया

अंडगा अट्ठगइया अट्ठागइआ पण्णत्ता तं जहा-
अंडए अडएसु उववज्जमाणे अडएहिंतो वा, पोयएहिंतो
वा—जाव— उववाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा
से चेव णं से अंडए अडगत्तं विप्पजहमाणे अडगत्ताए वा,
पोयगत्ताए वा —जाव— उववाइयत्ताए वा गच्छेज्जा.

एवं पोयया वि जराउया वि. सेसाणं गइरागइ नत्थि. ४

५९६ जीवा णं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिसु वा, चिणंति वा,
चिणिस्सति वा तं जहा-
नाणावरणिज्जं, दरिसणावरणिज्जं,
वेयणिज्जं, मोहणिज्जं,

तं जहा-

नो महिड्ढिएसु —जाव— नो दूरं गइएसु नो चिरट्ठिइएसु. से णं तत्थ देवे भवइ, नो महिड्ढिए -- जाव— नो चिरठ्ठिइए, जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ साविय ण नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो महरिहेणं आसणेणं उवनिमंतेति, भास पि य से भासमाणस्स —जाव— चत्तारि पंच देवा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठ ति-मा बहु देव ! भासउ

से णं ततो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएण अणंतरं चयं चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइ इमाइ कुलाइं भवंति तं जहा-

अंतकुलाणि वा, पंतकुलाणि वा, तुच्छकुलाणि वा, दरिद्द-कुलाणि वा, भिक्खागकुलाणि वा, किवणकुलाणि वा, तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाइ, से णं तत्थ पुमे भवइ, दुरूवे, दुवण्णे, दुग्गधे, दुरसे, दुफासे, अणिट्ठे, अकते अप्पिए, अमणुण्णे, अमणामे, हीणस्सरे, दीणस्सरे, अणिट्ठसरे अकतसरे, अप्पियसरे, अमणुण्णस्सरे, अमणामस्सरे, अणाए-ज्जवयणपच्चायाए, जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ सावि य ण नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो महरिहेणं आसणेणं उवणिमतेति, भासं पि य से भासमाणस्स —जाव— चत्तारि पच जणा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठेंति—मा बहुं अज्जउत्तो ! भासउ, भासउ

पड़िवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा,
बहुओवि माई मायं कट्टु नो आलोएज्जा —जाव—
नो पड़िवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा,
बहुओवि माई मायं कट्टु आलोएज्जा —जाव—
पड़िवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा,
आयरिय-उवज्झायस्स वा मे अइसेसे नाण-दंसणे समुप्पज्जेज्जा, सेत्तं मम आलोएज्जा माई णं एसे

माई णं मायं कट्टु से जहा नामए अयागरेइ वा, तंबागरेइ वा, तउआगरेइ वा, सीसागरेइ वा, रुप्पागरेइ वा, सुवण्णागरेइ वा, तिलागणीइ वा, तुसागणीइ वा, बुसागणीइ वा, नलागणीइ वा, दलागणीइ वा, सोडियालिच्छाणि वा, भंडियालिच्छाणि वा, गोलियालिच्छाणि वा, कुंभारावाएइ वा, कवेल्लूवाएइ वा, इट्टा वाएइ वा, जंतवाड़चुल्लीइ वा, लोहारंबरिसाणि वा तत्ताणि समजोइभूयाणि किंसुकफुल्लसमाणाणि उक्कासहस्साइं विणिम्मुयमाणाइं विणिम्मुयमाणाइं जालासहस्साइं पमुंचमाणाइ इंगालसहस्साइं परिकिरमाणाइं अंतो अंतो झियायंति. एवामेव मायी मायं कट्टु अंतो अंतो झियायइ जइवि य णं अण्णे केइ वदइ तं पि य णं माई जाणइ अहमेसे अभिसंकिज्जामि अभिसंकिज्जामि.

माई णं मायं कट्टु अणालोइयअपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति

—जाव— बहुजणस्स अपरिभूयाइं तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाइ.

से णं तत्थ पुमे भवइ सुरूवे, सुवण्णे, सुगंधे, सुरसे, सुफासे, इट्ठे कंते जाव— मणामे अहीणस्सरे —जाव— मणामस्सरे आदेज्जवयणे पच्चायाए, जा वि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ सा वि य णं आढाइ —जाव— बहुं अज्जउत्ते ! भासउ भासउ. ५

५९८ अट्ठविहे संवरे पण्णत्ते. तं जहा-

सोइंदियसंवरे —जाव —फासिंदियसंवरे,

मणसंवरे, वयणसंवरे, कायसंवरे

अट्ठविहे असंवरे पण्णत्ते. तं जहा-

सोइंदियअसंवरे —जाव— कायअसंवरे. २

५९९ अट्ठ फासा पण्णत्ता तं जहा-

कक्खडे, मउए, गरुए, लहुए,

सीए, उसीणे, निद्धे, लुक्खे

६०० अट्ठविहा लोगट्ठिई पण्णत्ता तं जहा-

आगासपइट्ठिए वाए, एवं जहा छट्ठाणे —जाव— जीवा कम्मपइट्ठिया.

अजीवाजीवसंगहीया, जीवाकम्मसंगहीया.

६०१ अट्ठविहा गणिसंपया पण्णत्ता तं जहा-

आचारसंपया, सुयसंपया,

सरीरसंपया, वयणसंपया,

माई णं मायं कट्टु आलोइयपड़िक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति तं जहा-

महिड्ढिएसु —जाव— चिरट्ठिइएसु, से णं तत्थ देवे भवइ महिड्ढीए —जाव— चिरट्ठिइए हारविराइयवच्छे कड़क-तुड़िय-थंभियभुए अगद-कुण्डल-मउड-गडतल-कण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणे विचित्तवत्थाभरणे विचित्तमालामउली कल्लाणग-पवर-वत्थ-परिहिए, कल्लाणग-पवर-गंध-मल्लाणु-लेवणाधरे, भासुरवोंदी, पलंबवणमालधरे, दिव्वेण वण्णेणं, दिव्वेणं गंधेणं, दिव्वेणं रसेणं, दिव्वेणं फासेणं, दिव्वेणं संछाए णं, दिव्वेण संठाणेणं, दिव्वाए इड्ढीए, दिव्वाए जूतीए, दिव्वाए पभाए, दिव्वाए छायाए, दिव्वाए अच्चीए, दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेस्साए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा, पभासेमाणा, महयाहतणट्टगीयवाइयतंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्प-वाइयरवेण दिव्वाइं भोग-भोगाइ भुंजमाणे विहरइ जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ, सावि य णं आढाइ परियाणाइ महरिहेण आसणेणं उवनिमतेति भासपि य मे भासमाणस्स —जाव— चत्तारि पच देवा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठति-बहुं देवे ! भासउ भासउ

से ण तओ देवलोगाओ आउक्खएणं —जाव— चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवति, अड्ढाइं

दंसणसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे,
खंते, दंते २

६०५ अट्ठविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते. तं जहा-

आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे,
तदुभयारिहे, विवेगारिहे,
विउसग्गारिहे, तवारिहे,
छेयारिहे, मूलारिहे.

६०६ अट्ठ मयट्ठाणा पण्णत्ता

जाइमए, कुलमए, बलमए, रूवमए,
तवमए, सुयमए, लाभमए, इस्सरियमए.

६०७ अट्ठ अकिरियावाई पण्णत्ता

एगावाई, अणेगावाई,
मियवाई, निम्मियवाई,
सायवाई, समुच्छेयवाई,
नियावाई, न संति परलोगवाई.

६०८ अट्ठविहे महानिमित्ते पण्णत्ते तं जहा-

भोमे, उप्पाए, सुविणे, अंतलिक्खे,
अंगे, सरे, लक्खणे, वंजणे

६०९ अट्ठविहा वयणविभत्ती पण्णत्ता. त जहा.

गाहाओ–निद्देसे पढमा होइ, बीइया उवएसणे ।
तईया करणंमि कया, चउत्थी संपदावणे ॥१

वायणासंपया, मइसंपया,

पओगसपया, संगहपरिण्णा णाम अट्ठमा.

६०२ एगमेगेण महाणिही अट्ठचक्कवालपइट्ठाण अट्ठट्ठजोयणाई उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते.

६०३ अट्ठ समिईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

इरिया समिई,

भासा समिई,

एसणा समिई,

आयाण-भंड-मत्त निक्खेवणा समिई,

उच्चार-पासवण- खेल-जल्ल - मल -संघाणपरिट्ठावणिया समिई.

मण समिई,

वय समिई,

काय समिई

६०४ अट्ठहि ठाणेहि सपण्णे अणगारे अरिहइ आलोयणा पडिच्छित्तए तं जहा-

आयारवं, आहारवं, ववहारवं, ओवीलए,

पकुव्वए, अपरिस्साइ, निज्जावए, अवायदंसी

अट्ठहि ठाणेहि संपण्णे अणगारे अरिहइ अत्तदोसमालोइत्तए तं जहा-

जाइसंपण्णे, कुलसंपण्णे,

विणयसंपण्णे, नाणसपण्णे,

६१२ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ
तं जहा-

पउमा, सिवा, सती, अंजु,
अमला, अच्छरा, नवमिया, रोहिणी

ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो अट्ठ अग्गमहिसीओ
पण्णत्ताओ तं जहा-

कण्हा, कण्हराइ, रामा, रामरक्खिया,
वसू, वुसुगुत्ता, वसुमित्ता, वसुंधरा.

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो
अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ

ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो
अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ४

अट्ठ महग्गहा पण्णत्ता तं जहा-

चदे, सूरे, सुक्के, बुहे,
बहस्सइ, अगारे, सणिचरे, केउ.

६१३ अट्ठविहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा-

मूले, कदे, खंधे, तया,
साले, पवाले, पत्ते, पुप्फे

६१४ चउरिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स अट्ठविहे सजमे
कज्जइ तं जहा-

चक्खुमाओ सोक्खाओ अववरोवित्ता भवइ,
चक्खुमएणं दुक्खेणं असजोएत्ता भवइ, एवं —जाव—

पंचमी य अवायाणे, छट्ठी सस्सामिवादणे ।
सत्तमो सण्णिहाणत्थे, अट्ठमी आमतणी भवे ॥२॥
तत्थ पढमा विभत्ती, निद्देसेसो इमो अहं वत्ति ।
बितीया पुण उवएसे, भण कुण व तिमं व तं वत्ति ॥३॥
तइया करणमि कया, णीयं च कयं च तेण व मए वा ।
हंदि नमो साहए, हवइ चउत्थी पदाणंमि ॥४॥
अवणे गिण्हसु तत्तो, इत्तोत्ति व पंचमी अवादाणे ।
छट्ठी तस्स इमस्स व, गयस्स वा सामिसंबंधे ॥५॥
हवइ पुण सत्तमी तमि, ममि आहारकालभावे य ।
आमंतणी भवे अट्ठमी, उं जह हे जुवाणत्ती ॥६॥

६१० अट्ठ ठाणाइं छउमत्थेणं सव्वभावेण न जाणइ न पासइ तं जहा-

धम्मत्थिकाय —जाव— गंधं, वायं.

एयाणि चेव उप्पण्णनाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली जाणइ पासइ तं जहा-

धम्मत्थिकाय —जाव— गंधं, वाय. २

६११ अट्ठविहे आउवेए पण्णत्ते तं जहा-

कुमारभिच्चे,	कायतिगिच्छा
सालाइ,	सलहत्ता
जगोली,	भूतवेज्जा
खारतते,	रसायणे

६१८ अट्ठविहे दंसणे पण्णत्ते तं जहा-

सम्मद्दसणे, मिच्छदंसणे,
सम्मामिच्छदंसणे, चक्खुदसणे,
अचक्खुदसणे, ओहीदंसणे,
केवलदंसणे, सुविणदंसणे

६१९ अट्ठविहे अद्धोवमिए पण्णत्ते. तं जहा-

पलिओवमे, सागरोवमे,
उस्सप्पिणी, ओसप्पिणी,
पोग्गलपरियट्टे, तीतद्धा,
अणागयद्धा, सव्वद्धा

६२० अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स —जाव— अट्ठमाओ पुरिसजुगाओ जुगतकरभूमी दुवासपरियाए अंतमकासी.

६२१ समणेण भगवया महावीरेणं अट्ठ रायाणो मुंडे भवेत्ता अगाराओ अणगारियं पव्वाविया त जहा-

गाहा—वीरगय वीरजसे, सजय एणिज्जए य रायरिसी ।
सेय-सिवे उदायणे, तह सखे कासिवद्धणे ॥१॥

६२२ अट्ठविहे आहारे पण्णत्ते त जहा-

मणुण्णे असणे, पाणे, खाइमे, साइमे,
अमणुण्णे असणे, पाणे, खाइमे, साइमे.

६२३ उप्पि सणकुमार-माहिंदाण कप्पाण हेट्ठि बभलोगे कप्पे रिट्ठविमाणे पत्थडे एत्थ ण अक्खाड़ग-समचउरस-संठियाओ

फासमाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ,

फासमएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवइ

चउरिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स अट्ठविहे असंजमे कज्जइ तं जहा-

चक्खुमाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ,

चक्खुमएणं दुक्खेणं सजोगेत्ता भवइ, एवं —जाव—

फासमाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ,

फासमएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवइ २

६१५ अट्ठ सुहुमा पण्णत्ता तं जहा-

पाणसुहुमे, पणगसुहुमे,

बीयसुहुमे, हरियसुहुमे,

पुप्फसुहुमे, अंडसुहुमे,

लेणसुहुमे, सिणेहसुहुमे

६१६ भरहस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठ पुरिसजुगाइं अणुबद्धं सिद्धाइं —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणाइं. तं जहा-

आदिच्चजसे, महाजसे, अइबले, महाबले,

तेतीवीरिए, कित्तवीरिए, दंडवीरिए, जलवीरिए.

६१७ पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणियस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था. तं जहा-

सुभे, अज्जघोसे, वसिट्ठे, बभचारी,

सोमे, सिरिघरिए, वीरिए, भद्दजसे.

एयासि णं अट्ठण्हं कण्हराइणं अट्ठसु उवासंतरेसु अट्ठ लोगंतियविमाणा पण्णत्ता तं जहा-

अच्ची, अच्चिमाली,
वइरोअणे, पभकरे,
चंदाभे, सुराभे,
सुपइट्ठाभे, अग्गिच्चाभे.

एएसु णं अट्ठसु लोगंतियविमाणेसु अट्ठविहा लोगंतिया देवा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा–सारस्सयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वावाहा, अग्गिच्चा चेव बोद्धव्वा ॥१॥

एएसि णं अट्ठण्हं लोगंतियदेवाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ५

६२४ अट्ठ धम्मत्थिकायमज्झपएसा पण्णत्ता,
अट्ठ अधम्मत्थिकायमज्झपएसा पण्णत्ता,
अट्ठ आगासत्थिकायमज्झपएसा पण्णत्ता,
अट्ठ जीवमज्झपएसा पण्णत्ता ४

६२५ अरहंता णं महापउमे अट्ठ रायाणो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वावेस्सइ तं जहा-

पउमं, पउमगुम्मं, नलिनं, नलिनगुम्मं,
पउमद्धयं, धणुद्धयं, कणगरहं, भरहं

६२६ कण्हस्स णं वासुदेवस्स अट्ठ अग्गमहिसीओ अरहओ ण

अट्ठ कण्हराइओ पण्णत्ताओ तं जहा-

पुरच्छिमेणं दो कण्हराइओ,
दाहिणेणं दो कण्हराइओ,
पच्चच्छिमेणं दो कण्हराइओ,
उत्तरेणं दो कण्हराइओ.

पुरच्छिमा अब्भंतरा कण्हराइ दाहिणं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा.

दाहिणा अब्भंतरा कण्हराइ पच्छच्छिमगं वाहिरं कण्हराइं पुट्ठा

पच्चच्छिमा अब्भंतरा कण्हराइ उत्तरं वाहिरं कण्हराइं पुट्ठा

उत्तरा अब्भंतरा कण्हराइ पुरच्छिमं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा.

पुरच्छिम-पच्चच्छिमिल्लाओ बाहिराओ दो कण्हराईओ छलंसाओ.

उत्तर-दाहिणाओ वाहिराओ दो कण्हराईओ तंसाओ.

सव्वाओ वि णं अब्भंतरकण्हराईओ चउरसाओ.

एयासि णं अट्ठण्हं कण्हराईणं अट्ठ नामधेज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

कण्हराईइ वा, मेहराईइ वा,
मघाई वा, माघवई वा,
वायफलिहेइ वा, वायपलिक्खोभेइ वा,
देवपलिहेइ वा, देवपलिक्खोभेइ वा.

६३३ एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठसोवण्णिए काकिणिरयणे छत्तले दुवालसंसिए अट्ठकण्णिए अहिकरणि-संठिए पण्णत्ते.

६३४ मागहस्स णं जोयणस्स अट्ठ धणुसहस्साइं निधत्ते पण्णत्ते.

६३५ जंबू णं सुदंसणा अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं बहुमज्झदे-सभाए, अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता. कूडसामली णं अट्ठ जोयणाइं एवं चेव

६३६ तिमिसगुहा णं अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेण.
खंडप्पवायगुहा णं अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं २

६३७ जंबूमंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महानईए उभओ कूले अट्ठ वक्खार-पव्वया पण्णत्ता तं जहा-

चित्तकूडे, पम्हकूडे, नलिणकूडे, एगसेले,
तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मायंजणे

जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीओयाए महाणईए उभओकूले अट्ठ वक्खारपव्वया पण्णत्ता. त जहा-

अंकावई, पम्हावई, आसीविसे, सुहावहे,
चंदपव्वए, सूरपव्वए, नागपव्वए, देवपव्वए

जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं अट्ठ चक्क-वट्टिविजया पण्णत्ता. तं जहा-

कच्छे, सुकच्छे महाकच्छे, कच्छगावइ
आवत्ते, मंगलावत्ते, पुक्खला, पुक्खलावइ.

अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडा भवेत्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइया सिद्धाओ —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणाओ. तं जहा-

पउमावई, गोरी,
गंधारी, लक्खणा,
सुसीमा, जंबवई,
सच्चभामा, रुप्पिणी

कण्हअग्गमहिसीओ

६२७ वीरियपुव्वस्स णं अट्ठ वत्थु, अट्ठ चूलिआवत्थु पण्णत्ता

६२८ अट्ठ गइओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

निरयगइ, तिरियगइ,
मणुयगइ, देवगइ,
सिद्धगइ, गुरुगइ,
पणोल्लणगइ, पब्भारगइ.

६२९ गंगा-सिंधु-रत्ता-रत्तवइदेवीणं दीवा अट्ठट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ता.

६३० उक्कामुह-मेहमुह-विज्जुमुह-विज्जुदंतदीवाणं दीवा अट्ठट्ठ जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता

६३१ कालोदे णं समुद्दे अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते.

६३२ अब्भंतरपुक्खरद्धे णं अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते एवं बाहिरपुक्खरद्धे वि.

६३८ जंबूमंदरपुरच्छिमेण सीयाए महाणईए उत्तरेणं उक्कोसपए अट्ठ अरहंता, अट्ठ चक्कवट्टी, अट्ठ बलदेवा, अट्ठ वासुदेवा उप्पज्जिसु वा, उप्पज्जंति वा, उप्पज्जिस्संति वा

जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेण उक्कोसपए एवं चेव

जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओयाए महाणईए दाहिणेण उक्कोसपए एवं चेव.

एवं उत्तरेण वि ४

६३९ जंबूमंदरपुरच्छिमेण सीयाए महाणईए उत्तरेण अट्ठ दीहवेयड्ढा, अट्ठ तिमिसगुहाओ, अट्ठ खंडप्पवायगुहाओ, अट्ठ कयमालगा देवा, अट्ठ नट्टमालगा देवा, अट्ठ गंगाकुंडा, अट्ठ सिंधुकुंडा, अट्ठ गंगाओ, अट्ठ सिंधूओ, अट्ठ उसभकूडा पव्वया, अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता

जंबूमंदरपुरच्छिमेण सीयाए महाणईए दाहिणेण अट्ठ दीहवेअड्ढा एवं चेव —जाव— अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता.

नवरं एत्थ रत्ता रत्तावईओ तासिं चेव कूडा.

जंबूमंदरपच्चच्छिमेण सीओयाए महाणईए दाहिणेण अट्ठ दीहवेयड्ढा —जाव— अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता. ४

६४० मंदरचूलिया णं बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते.

६४१ धायइसंडदीवे पुरत्थिमद्धेण धायइरुक्खे अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ते.

जंबूमंदरपुरिच्छमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेण अट्ठ चक्क-
वट्टिविजया पण्णत्ता तं जहा-

वच्छे — जाव — मंगलावई.

जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीओयए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ
चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता. तं जहा-

पम्हे —जाव— सलिलावई

जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीओयाए महाणईए उत्तरेण अट्ठ
चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता तं जहा-

वप्पे —जाव— गंधिलावई

जंबूमंदरपुरच्छिमेण सीयाए महाणईए उत्तरेणं अट्ठ राय-
हाणीओ पण्णत्ताओ तं जहा-

खेमा —जाव— पुंडरीगिणी

जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ राय-
हाणीओ पण्णत्ताओ तं जहा-

सुसीमा —जाव— रयणसंचया

जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीओदाए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ
रायहाणीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

आसपुरा —जाव— वीतसोगा.

जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीओदाए महाणईए उत्तरेणं अट्ठ
रायहाणीओ पण्णत्ताओ. त जहा-

विजया —जाव— अउज्झा. १०

जंबूमंदरउत्तरेणं रुप्पिमि वासहरपव्वए अट्ठ कूडा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—सिद्धे य रुप्पी रम्मग, नरकंता बुद्धि रुप्पकूडे य ।
हिरण्णवए मणिकचणे य रुप्पिं कूडा उ ॥१॥

जंबूमंदरपुरच्छिमेणं रुयगवरे पव्वए अट्ठ कूडा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—रिट्ठे तवणिज्जचण, रयत दिसासोत्थिए पलंबे य ।
अंजण अजणपुलए, रुयगस्स पुरच्छिमे कूडा ॥१॥

तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसंति. तं जहा-

गाहा—नंदुत्तरा नदा, आणंदा गंदीवद्धणा ।
विजया य वेजयती, जयंती अपराजिया ॥३॥

जंबूमंदरदाहिणेणं रुयगवरे पव्वए अट्ठ कूडा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—कणए कचणे पउमे, नलिणे ससि दिवायरे चेव ।
वेसमणे वेऊलिए, रुयगस्स उ दाहिणे कूडा ॥१॥

तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसति. तं जहा-

गाहा—समाहारा सुप्पतिण्णा ,
सुप्पबुद्धा जसोहरा ।
लच्छिवइ सेसवइ ,
चित्तगुत्ता वसुंधरा ॥१॥

ुमज्झदेसमाए अट्ठ जोयणाइं विक्खभेणं, साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वगेण पण्णत्ते.

एवं धायइरुक्खाओ आढवेत्ता सच्चेव जंबूदीववत्तव्वया भाणियव्वा —जाव— मंदरचूलियत्ति २२

एवं पच्चच्छिमद्धे वि महाधायइरुक्खाओ आढवेत्ता —जाव— मंदरचुलियत्ति. २२

एद पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धे वि पउमरुक्खाओ आढवेत्ता —जाव— मदरचूलियत्ति २२

एवं पुक्खरवरदीवपच्चत्थिमद्धे वि महापउमरुक्खाओ आढवेत्ता —जाव मंदरचूलियत्ति २२

६४२ जवूद्दीवे मंदरे पव्वए भद्दसालवणे अट्ठ दिसाहत्थिकूड़ा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा–पउमुत्तर नीलवते, सुहत्थि अंजणागिरी कुमुए य ।
पलासए वडिंसे, अट्ठमए रोयणगिरी ॥१॥

जवूद्दीवस्स णं दीवस्स जगई अट्ठ जोयणाणं उड्ढ उच्चत्तेणं वहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खभेणं २

६४३ जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण महाहिमवंते वासहरपव्वए अट्ठ कूड़ा पण्णत्ता त जहा-

गाहा–सिद्धे महाहिमवंते, हिमवंते रोहिया हरीकूड़े ।
हरिहंता हरिवासे, वेरुलिए चेव कूड़ा उ ॥१॥

गाहा–मेघकरा मेघवइ, सुमेघा मेघमालिणी।
तोयधारा विचित्ता य, पुप्फमाला अणिंदिया ॥१॥ १२

६४४ अट्ठ कप्पा तिरितमिरसोववण्णगा पण्णत्ता. तं जहा-
सोहम्मे —जाव — सहस्सारे

एएसु ण अट्ठसु कप्पेसु अट्ठ इंदा पण्णत्ता. तं जहा-
सक्के — जाव - सहस्सारे.

एएसि णं अट्ठण्हं इंदाण अट्ठ परियाणिया विमाणा पण्णत्ता. तं जहा-

पालए, पुप्फए, सोमणसे, सिरिवच्छे,
नदावत्ते, कामकमे, पीतिमणे, विमले ३

६४५ अट्ठट्ठमियाण भिक्खुपडिमाणं चउसट्ठीए राइदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्ता —जाव— अणुपालिया वि भवइ

६४६ अट्ठविहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता त जहा-
पढमसमयनेरइया —जाव — अपढमसयदेवा.

अट्ठविहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-

नेरइया, तिरिक्खजोणिया
तिरिक्खजोणीणिओ मणुस्सा,
मणुस्सीओ, देवा,
देवीओ, सिद्धा

अहवा अट्ठविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं जहा-

जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं रुयगवरे पव्वए अट्ठ कूड़ा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा–सोत्थिय अमोहे य, हिमवं मंदरे तहा।
रुअगे रुअगुत्तमे, चदे अट्ठमे य सुदंसणे ॥१॥

तत्थ ण अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ —जाव — पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसंति. तं जहा-

गाहा–इलादेवी सुरादेवी, पुढवी पउमावइ।
एगनासा नवमिया, सीता भद्दा य अट्ठमा ॥१॥

जंबूमदरउत्तररुअगवरे पव्वए अट्ठ कूड़ा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा–रयणे रयणुच्चए या, सव्वरयण रयणसंचए चेव।
विजये य विजयते, जयते अपराजिए ॥१॥

तत्थ ण अट्ठदिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसति तं जहा-

गाहा–अलवुसा मितकेसी, पोडरिगीतवारुणी।
आसा य सव्वगा चेव, सिरी हिरी चेव उत्तरओ ॥१॥

अट्ठ अहेलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा-

गाहा–भोगंकरा भोगवई, सुभोगा भोगमालिणी।
सुवच्छा वच्छमित्ता य, वारिसेणा वलाहगा ॥१॥

अट्ठ उड्ढलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ. त जहा-

असुयाणं धम्माणं सम्मं सुणणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ.

सुयाणं धम्माणं ओगिण्हणयाए अवधारणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ.

पावाणं कम्माणं संजमेणं अकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ.

पोराणाणं कम्माण तवसा विगिंचणयाए विसोहणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ.

असंगहीयपरितणस्स संगिण्हणयाए अब्भुट्ठेयव्व भवइ

सेहं आयारगोयरगहणयाए अब्भुट्ठेयव्व भवइ.

गिलाणस्स अगिलाए वेयावच्चकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ

साहम्मियाणमधिकरणंसि उप्पण्णंसि तत्थ अनिस्सितोवस्सिओ अपक्खग्गाही मज्झत्थ भावभूए कहं णु साहम्मिया अप्पसद्दा अप्पझंझा अप्पतुमंतुमा उवसामणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ

६५० महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयणसयाइ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता

६५१ अरहओ ण अरिट्ठनेमिस्स अट्ठसया वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए वादे अपराजियाणं उक्कोसिया वादिसंपया हुत्था.

६५२ अट्ठसामइए केवलिसमुग्घाए पण्णत्ते त जहा-

पढमे समए दंडं करेइ,

आभिणिबोहियनाणी —जाव— विभंगनाणी. ३

६४७ अट्ठविहे संजमे पण्णत्ते. तं जहा-
पढम-समय-सुहुम-संपराय-सराग-संजमे,
अपढम-समय-सुहुम-संपराय-सराग-संजमे,
पढम-समय-बादर-संजमे,
अपढम-समय-बादर-संजमे,
पढम-समय-उवसंत-कसाय-वीयराग-संजमे,
अपढम-समय-उवसंत-कसाय-वीयराग-संजमे,
पढम-समय-खीण-कसाय-वीतराग-संजमे,
अपढम-समय-खीणकसाय-वीतराग-संजमे

६४८ अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
रयणप्पभा —जाव— अहे सत्तमा इसिपब्भारा

इसीपब्भाराए ण पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइ बाहल्लेण पण्णत्ते

इसिपब्भाराए णं पुढवीए अट्ठ नामधेज्जा पण्णत्ता. त जहा-

इसिइ वा इसिपब्भाराइ वा,
तणूइ वा, तणुतणूइ वा
सिद्धिइ वा, सिद्धालएइ वा,
मुत्तीइ वा, मुत्तालएइ वा. ३

६४९ अट्ठट्ठाणेहिं सम्मं संघडितव्वं जइतव्वं परक्कमितव्वं अस्सिं च अट्ठे नो पमाएयव्वं भवइ

६५६ अट्ठ नक्खत्ता चंदेण-सिद्धिं पमद्दं जोगं जोएंति तं जहा-

कत्तिया, रोहिणी, पुणव्वसू, महा,

चित्ता, विस्साहा, अणुराधा, जेट्ठा

६५७ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स दारा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

सव्वेसिं पि दीवसमुद्दाण दारा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता. २

६५८ पुरिसवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स जहण्णेणं अट्ठसंवच्छराइं बंधठिई पण्णत्ता

जसोकित्तीनामएण कम्मस्स जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ताइं बंधठिई पण्णत्ता

उच्चगोयस्स णं कम्मस्स णं एवं चेव. ३

६५९ तेइंदियाणं अट्ठ जाइकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता

६६० जीवा ण अट्ठट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा, चिणंति वा, चिणिस्संति वा, त जहा-

पढम-समय-नेरइय-निव्वत्तिए —जाव— अपढम-समय-देव-निव्वत्तिए

एवं चिण-उवचिण —जाव— निज्जरा चेव.

अट्ठपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता

अट्ठपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता —जाव— अट्ठगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता २९

बीए समए कवाड़ं करेइ,

तइए समए मंथाणं करेइ,

चउत्थे समए लोगं पुरेइ,

पंचमे समए लोग पड़िसाहरइ,

छट्ठे समए मथं पड़िसाहरइ,

सत्तमे समए कवाड़ं पड़िसाहरइ,

अट्ठमे समए दंडं पड़िसाहरइ

६५३ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अट्ठ सया अणुत्तरोववाइयाणं गइकल्लाणाणं —जाव— आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइयसंपया हुत्था.

६५४ अट्ठविहा वाणमंतरा देवा पण्णत्ता. तं जहा-

पिसाया, भूया, जक्खा, रक्खसा,

किण्णरा, किंपुरिसा, महोरगा, गंधव्वा.

एएसि णं अट्ठण्हं वाणमतरदेवाण अट्ठ चेइयरुक्खा पण्णत्ता.

तं जहा-

गाहाओ—कलंबो अ पिसायाणं, वड़ो जक्खाण चेइयं ।

तुलसी भूयाणं भवे, रक्खसाणं च कंडओ ॥१॥

असोओ किण्णराणं च, किंपुरिसाण य चंपओ ।

नागरुक्खो भुयंगाणं, गंधव्वाण य तेंदुओ ॥२॥

६५५ इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठजोयणसए उड्ढवाहाए सूरविमाणे चारं चरइ

नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता
निज्झाइत्ता भवइ,
नो पणीयरसभोई,
नो पाण-भोयणस्स अइमत्तं आहारए भवइ,
नो पुव्वरयं पुव्वकीलियं समरेत्ता भवइ,
नो सद्दाणुवाई, नो रूवाणुवाई, नो सिलोगाणुवाई,
नो सायासुक्खपड़िबद्धे यावि भवइ.

नव बंभचेरअगुत्तीओ पण्णत्ताओ तं जहा-
नो विवित्ताइं सयणासणाइ सेवित्ता भवइ-
इत्थीसंसत्ताइ, पसुसंसत्ताइ, पडगसंसत्ताइं
इत्थीणं कहं कहेत्ता भवइ,
इत्थीणं ठाणाइं सेवित्ता भवइ,
इत्थीणं इंदियाइं —जाव— निज्झाइत्ता भवइ,
पणीयरसभोई,
पाण-भोयणस्स अइमायमाहारए सया भवइ,
पुव्वरय पुव्वकीलिय सरित्ता भवइ,
सद्दाणुवाई, रूवाणुवाई, सिलोगाणुवाई,
सायासुक्खपडिबद्धे यावि भवइ. २

६६४ अभिणंदणाओ णं अरहाओ सुमइ अरहा नवहिं सागरोवम-
कोड़ी-सयसहस्सेहिं विइक्कतेहिं समुप्पण्णे

६६५ नव सब्भावपयत्था पण्णत्ता त जहा-

नवट्ठाणं

६६१ नवहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे संभोइयं विसंभोइयं करेमाणे नाइक्कमइ. तं जहा-

आयरिय-पड़िणीयं,

उवज्झाय-पड़िणीय,

थेर-पडिणीयं,

कुल-पडिणीयं,

गण-पड़िणीयं,

संघ-पड़िणीय,

नाण-पड़िणीयं,

दसण-पडिणीयं,

चरित्त-पड़िणीयं.

६६२ नव वंभचेरा पण्णत्ता. तं जहा-

सत्थपरिण्णा —जाव— महापरिण्णा

६६३ नव वंभचेरगुत्तीओ पण्णत्ताओ. त जहा-

विवित्ताइ सयणासणाइं सेवित्ता भवइ-

नो इत्थिसंसत्ताइ नो पसुससत्ताइ, नो पंडगससत्ताइं.

नो इत्थीणं कहं कहेत्ता भवइ,

नो इत्थीठ्ठाणाइं सेवित्ता भवइ,

पुढविकाइत्ताए —जाव— पंचिंदियत्ताए. ६

६६७ नवहिं ठाणेहिं रोगुप्पत्ती सिया. तं जहा-

अच्चासणाए,

अहियासणाए,

अइणिद्दाए

अइजागरिएण,

उच्चारनिरोहेणं,

पासवणनिरोहेणं,

अद्धाणगमणेणं,

भोयणपडिकूलयाए,

इंदियत्थविकोवणयाए.

६६८ नवविहे दरिसणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते. तं जहा-

निद्दा,

निद्दानिद्दा,

पयला,

पयलापयला,

थीणगिद्धी,

चक्खुदंसणावरणे,

अचक्खुदंसणावरणे,

ओहिदंसणावरणे,

केवलदसणावरणे.

जीवा,	अजीवा,	पुण्णं,
पावो,	आसवो,	संवरो,
निज्जरा,	बंधो,	मोक्खो.

६६६ नवविहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविकाइया —जाव— पंचिंदियत्ति

पुढविकाइया नवगइया नवआगइया पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविकाइए पुढवीकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा —जाव— पंचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा.

से चेव णं पुढविकाइए पुढविकायत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा —जाव— पंचिंदियत्ताए वा गच्छेज्जा.

एवमाउकाइया वि —जाव— पंचिंदियत्ति

नवविहा सव्वजीवा पण्णत्ता. त जहा-

एगिंदिया,	बेइंदिया,	तेइंदिया,
चउरिंदिया,	नेरइया,	पंचेंदियतिरिक्खजोणिया,
मणुस्सा,	देवा,	सिद्धा.

अहवा नवविहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-

पढम-समय-नेरइया —जाव—अपढम-समय-देवा, सिद्धा

नवविहा सव्वजीवोगाहणा पण्णत्ता तं जहा-

पुढविकाइओगाहणा —जाव— पंचिंदियओगाहणा.

जीवाण नवहिं ठाणेहिं ससारं वत्तिसु वा, वत्तन्ति वा, वत्तिस्सति वा, तं जहा-

गाहा–एए खलु पडिसत्तू, कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं ।
सव्वे वि चक्कजोही, हम्मेहती सचक्केहिं ॥१॥ ३

६७३ एगमेगे णं महानिही णं नव नव जोयणाइ विक्खंभेणं पण्णत्ते

एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स नव महानिहिओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

गाहाओ–नेसप्पे पंडुयए,
पिंगलए सव्वरयण महापउमे ।
काले य महाकाले,
माणवग महानिही संखे ॥१॥
नेसप्पंमि निवेसा,
गामागरनगरपट्टणाणं च ।
दोणमुहमडंबाणं,
खंधाराणं गिहाण च ॥२॥
गणियस्स य बीयाणं,
माणुम्माणस्स जं पमाणं च ।
धण्णस्स य बीयाणं,
उप्पत्ती पंडुए भणिया ॥३॥
सव्वा आभरणविही,
पुरिसाण जा य होई महिलाणं ।
आसाण य हत्थीण य,
पिंगलगनिहिंमि सा भणिया ॥४॥

६६९ अभीई णं नक्खत्ते साइरेगे नव मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ, अभीइ आइआ णं नव नक्खत्ता णं चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति. तं जहा-

अभीई —जाव— भरणी

६७० इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवजोअणसयाइं उद्धं अबाहाए उवरिल्ले ताराख्वे चारं चरइ.

६७१ जंबूद्दीवे णं दीवे नवजोयणिआ मच्छा पविसिसु वा, पविसंति वा, पविसिस्संति वा

६७२ जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए नवबलदेव-वासुदेवपियरो हुत्था त जहा-

गाहा—पयावइ य बंभे य, रोद्दे सोमे सिवेइया।
महासीहे अग्गिसीहे, दसरहे नवमे य वसुदेवे ॥१॥

इत्तो आढत्तं जहा समवाए निरवसेस —जाव—एगा से गब्भवसही सिज्झिस्सति आगमेस्सेणं.

जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए नव बलदेव-वासुदेव-पियरो भविस्संति

नव बलदेव-मायरो भविस्संति

एवं जहा समवाए निरवसेसं —जाव—महाभीमसेण सुग्गीवे य अपच्छिमे

सखे महानिहिम्मी,
तुडियगाणं च सव्वेसिं ॥१०॥
चक्कट्ठपइट्ठाणा,
अट्ठुस्सेहा य नव य विक्खंभे।
बारसदीहा मंजूससंठियया,
जण्हवीई मुहे ॥११॥
वेरुलियमणिकवाडा,
कणगमया विविधरयणपडिपुण्णा।
ससि-सूर-चक्क-लक्खण,
अणुसम-जुगबाहुवत्तणा य ॥१२॥
पलिओवमट्ठितीया,
निहिसरिणामा य तेसु खलु देवा।
जेसिं ते आवासा,
अक्किज्जा आहिवच्चा वा ॥१३॥
एए ते नवनिहिओ,
पभूत-धण-रयण-संचय-समिद्धा।
जे वसमुवगच्छंती,
सव्वेसिं चक्कवट्टी णं ॥१४॥२

६७४ नव विगईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

खीरं, दहिं, नवणीयं,
सप्पिं, तेलं, गुलो,
महुं, मज्जं, मंसं.

नवट्ठाण

रयणाइं सव्वरयणे,
चोद्दस पवराइ चक्कवट्टिस्स।
उप्पज्जंति य,
एगिंदियाइं पंचिंदियाइं च ॥५॥
वत्थाण य उप्पत्ती,
निप्फत्ती चेव सव्वभत्तीणं।
रंगाण य धोयाण य,
सव्वा एसा महापउमे ॥६॥
काले कालण्णाणं,
भव्वपुराण च तीसु वासेसु।
सिप्पसतं कम्माणि य,
तिण्णि पयाए हियकराइं ॥७॥
लोहस्स य उप्पत्ती,
होइ महाकालि आगराणं च।
रुप्पस्स सुवण्णस्स य,
मणिमोत्तिसिलप्पवालाण ॥८॥
जोधाण य उप्पत्ती,
आवरणाणं च पहरणाणं च।
सव्वा य युद्धनीई,
माणवए दंडनीई य ॥९॥
नट्टविही नाडगविही,
कव्वस्स चउव्विहस्स उप्पत्ती।

चारणगणे,

उद्दवाइयगणे.

विस्सवाइयगणे,

कामड्ढियगणे,

माणवगणे,

कोड़यगणे

६८१ समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गंथाणं नवको-
ड़िपरिसुद्धे भिक्खे पण्णत्ते. त जहा-

न हणइ, न हणावइ, हणंतं नाणुजाणइ,
न पयइ, न पयावेइ, पचंतं नाणुजाणइ,
न किणइ, न किणावेइ, किणंतं नाणुजाणइ

६८२ ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो नव
अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ

६८३ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीणं नव पलिओ-
वमाइ ठिई पण्णत्ता

ईसाणे कप्पे उक्कोसेणं देवीणं नव पलिओवमाइं ठिई
पण्णत्ता. २

६८४ नव देवनिकाया पण्णत्ता. त जहा-

गाहा--सारस्सयमाइच्चा ,
वण्ही वरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वाबाहा ,
अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥१॥

६७५ नव सोयपरिस्सवा बोंदी पण्णत्ता. तं जहा-

दो सोत्ता, दो नेत्ता, दो घाणा

मुहं, पोसे, पाऊ.

६७६ नवविहे पुण्णे पण्णत्ते. तं जहा-

अण्णपुण्णे, पाणपुण्णे, वत्थपुण्णे,

लेणपुण्णे, सयणपुण्णे, मणपुण्णे

वइपुण्णे, कायपुण्णे, नमोक्कारपुण्णे.

६७७ नव पावस्सायतणा पण्णत्ता. तं जहा-

पाणाइवाए —जाव— लोभे

६७८ नवविहे पावसुयपसंगे पण्णत्ते. त जहा-

गाहा—उप्पाए निमित्ते मंते, आतिक्खए तिगिच्छए ।

कला आवरणे अण्णाणे, मिच्छापावतणेइ य ॥१॥

६७९ नव नेउणिया वत्थु पण्णत्ता. तं जहा-

संखाणे, निमित्ते, काइए,

पोराणे, पारिहत्थिए, परपंडिए,

वाइए, भूईकम्मे, तिगिच्छए.

६८० समणस्स णं भगवओ महावीरस्स नव गणा हुत्था. तं जहा-

गोदासे गणे,

उत्तरबलिस्सहगणे,

उद्देहगणे,

अहेगारवपरिणामे,
तिरियगारवपरिणामे,
दीहंगारवपरिणामे,
रहस्सगारवपरिणामे.

६८७ नवनवमिया ण भिक्खुपड़िमा एगासिए राइंदिएहिं चउहिं य पचुत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्ता —जाव— आराहिया यावि भवइ.

६८८ नवविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते. तं जहा-

आलोयणारिहे —जाव— मूलारिहे, अणवठप्पारिहे.

६८९ जंबूमंदरदाहिणेणं भरहे दीहवेयड्ढे नव कूडा पण्णत्ता. त जहा-

गाहा–सिद्धे भरहे खंड़ग ,
माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा ।
भरहे वेसमणे या ,
भरहे कूडाण नामाइं ॥१॥

जंबूमदरदाहिणेण निसभे वासहरपव्वए नव कूड़ा पण्णत्ता. त जहा-

गाहा–सिद्धे निसहे हरिवास ,
विदेह हरि धिहि अ सीतोदा ।
अवरविदेहे रुयगे ,
निसभे कूडाण नामाणी ॥१॥

जंबू विज्जुप्पभे वक्खारपव्वए नव कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा–सिद्धे अ विज्जुणामे,
देवकूरा पम्ह कणग सोवत्थी।
सीतोदाए सजले,
हरिकूड़े चेव वोद्धव्वे ॥१॥

जंबू पम्हे दीहवेयड्ढे नव कूड़ा पण्णत्ता त जहा-

गाहा–मिद्धे पम्हे खडे माणी वेयड्ढे.

एवं चेव —जाव— सलिलावइमि दीहवेयड्ढे.

एवं वप्पे दीहवेयड्ढे एवं —जाव— गंधिलावइमि दीहवेयड्ढे नव कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा–सिद्धे गधिल खडग,
माणी वेयड्ढं पुण तिमिसगुहा।
गंधिलावई वेसमण,
कूडाणं होंति नामाइं ॥१॥

एव सव्वेसु दीहवेयड्ढेसु दो कूडा सरिसणामगा सेसा ते चेव.

जदूमंदरेणं उत्तरेणं नीलवते वासहरपव्वए नव कूडा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा–सिद्धे नीलवत विदेह,
सीता कित्ती य नारिकता य।
अवरविदेहे,
रम्मगकूड़े उवदंसणे चेव ॥१॥

जंबूमंदरपव्वए णंदणवणे नव कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा--नंदणे मंदरे चेव, निसहे हेमवए रयय रुयए य ।
सागरचित्ते वइरे वलकूड़े चेव बोद्धव्वे ॥१॥

जंबूमालवंतवक्खारपव्वए नव कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—सिद्धे य मालवते ,
उत्तरकुरु कच्छ सागरे रयए ।
सीता तह पुण्णणामे ,
हरिस्सहकूडे य बोद्धव्वे ॥१॥

जंबूमदरपव्वय कच्छे दीहवेयड्ढे नव कूड़ा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा—सिद्धे कच्छे खंड़ग ,
माणी वेयड्ढ पुण तिमिसगुहा ।
कच्छे वेसमणे या ,
कच्छे कूड़ाण णामाइं ॥१॥

जंबू सूकच्छे दीहवेयड्ढे नव कूड़ा पण्णत्ता तं जहा-

सिद्धे सुकच्छे खंडग ,
माणी वेयड्ढ पुण तिमिसगुहा ।
सुकच्छे वेसमणे ,
सुकच्छि कूड़ाण नामाइं ॥१॥

एव —जाव— पोक्खलावर्तिमि दीहवेयड्ढे.

एवं वच्छे दीहवेयड्ढे.

एवं —जाव— मंगलावइमि दीहवेयड्ढे

अज्जा वि णं सुपासा पासावच्चिज्जा.

आगमेस्साए उस्सप्पिणीए चाउज्जामं धम्मं पण्णवतित्ता सिज्झिहिति —जाव— अंतं काहिति.

६९३ एस णं अज्जो ! सेणिए राया भिभिसारे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सीमंतए नरए चउरासीइ-वास-सहस्स-ट्ठिइयंसि निरयंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति.

से ण तत्थ नेरइए भविस्सइ काले कालोभासे —जाव— परमकिण्हे वण्णेणं से णं तत्थ वेयणं वेदिहिई उज्जलं —जाव—दुरहियासं.

से णं तओ नरयाओ उव्वट्टेत्ता आगमेस्साए उस्सप्पिणीए इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सतदुवारे नयरे समुइस्स कुलकरस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुमत्ताए पच्चायाहिइ.

तए ण सा भद्दा भारिया नवण्हं मासाण बहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं विइक्कंताण सुकुमालपाणिपायं अहीणपड़िपुण्णपंचिंदियसरीर लक्खणवंजण —जाव—सुरूव दारगं पयाहिई.

जं रयणिं च ण से दारए पयाहिई त रयणिं च ण सतदुवारे नगरे सब्भितरवाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिइ.

जंबूमंदरउत्तरेणं एरवए दीहवेयड्ढे नव कूडा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—सिद्धे रयणे खंडग ,
माणी वेयड्ढे पुण तिमिसगुहा ।
एरवए वेसमणे ,
एरवए कूडणामाइं ॥१॥ १०

६९० पासे णं अरहा पुरिसादाणिए वज्जरिसहणारायसंघयणे समचउरंससंठाणसंठिए नव रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था.

६९१ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तित्थंसि नवहिं जीवेहिं तित्थगरणामगोत्ते कम्मे निव्वत्तिए. तं जहा-

सेणिएण, सुपासेणं, उदाइणा,
पोट्टिलेणं अणगारेणं, दढाउणा, संखेणं,
सतएणं, सुलसाए, साविआए रेवतीए.

६९२ एस णं अज्जो !

कण्हे वासुदेवे,
रामे वलदेवे,
उदये पेढालपुत्ते,
पुट्टिले
सतए गाहावइ,
दारुए नियंठे,
सच्चइ नियठीपुत्ते,
सावियवुद्धे अंवडे परिव्वायए,

तं होऊ णं अम्हं देवाणुप्पिया ! महापउमस्स रण्णो दोच्चे वि नामधेज्जे देवसेणे.

तए णं तस्स महापउमस्स दोच्चे वि नामधेज्जे भविस्सइ

तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो अण्णया कयाइ सेयसंखतल-विमलसण्णिकासे चउद्दंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिहिइ

तए णं से देवसेणे राया तं सेयं संखतलविमलसण्णिकासं चउद्दंतं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे सतदुवारं नगरं मज्झं-मज्झेणं अभिक्खणं अभिक्खणं अइज्जाहि य निज्जाहि य

तए णं सतदुवारे नगरे बहवे राईसरतलवर —जाव— अण्णमण्णं सद्दाविंति एवं वइस्संति-जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं देवसेणस्स रण्णो सेए-संखतलविमलसण्णिकासे चउद्दंते हत्थिरयणे तं होऊ णं अम्हं देवाणुप्पिया ! देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे विमलवाहणे

तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे भविस्सइ विमलवाहणे

तए णं से विमलवाहणे राया तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अम्मापिईहिं देवत्तगएहिं गुरुमहत्तरएहिं अब्भणुण्णाए समाणे उदुम्मि सरए संबुद्धे अणुत्तरे मोक्खमग्गे पुणरवि लोगंतिएहिं जीयकप्पितेहिं देवेहिं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं धण्णाहिं सिवाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीआहिं वग्गूहिं अभिणं-

तए णं तस्स दारयस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे विइक्कंते —जाव— बारसाहे दिवसे अयमेयारूव गोण्णं गुण-णिप्फण्णं नामधिज्जं काहिंति

जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सयदुवारे नगरे सब्भिंतरबाहिरए भारग्गसो य, कुंभग्गसो य, पउमवासे य, रयणवासे य वासे वुट्ठे, तं होऊ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधिज्जं महापउमे.

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं काहिंति- महापउमेत्ति

तए णं महापउमं दारगं अम्मापियरो साइरेगं अट्ठवा-सजायगं जाणित्ता महया रायाभिसेएणं अभिसिंचिहिंति

से णं तत्थ राया भविस्सइ महता हिमवंतमहंतमलय-मदरराय वण्णओ —जाव— रज्जं पसाहेमाणे विहरिस्सइ

तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो अण्णया कयाइ दो देवा महिड्ढिया —जाव— महेसक्खा सेणाकम्मं काहिंति. त जहा- पुण्णभद्दए, माणिभद्दए.

तए णं सतदुवारे नगरे बहवे राइसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भसेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभियओ अण्णमण्णं सद्दावेंहिति. एवं वइस्सति.

जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं महापउमस्स रण्णो दो देवा महिड्ढिया —जाव— महेसक्खा सेणाकम्मं करेंति. तं जहा- पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य

लाघवे खंती मुत्ती गुत्ती सच्च-सजम-तव-गुणसुचरियसोव-चियफलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए —जाव— केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिंति. तए णं से भगवं अरहे जिणे भविस्सइ केवली सव्वण्णु सव्वदरिसी सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स परियागं जाणइ पासइ सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं तक्कं मणो-माणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मण-सवय-सकाइए जोगे वट्टमाणाण सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विरहइ.

तए णं से भगवंतेणं अणुत्तरेण केवलवरनाण-दंसणेण सदेवमणुआसुरलोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गयाणं जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति तं जहा-

दिव्वा वा, माणुसा वा, तिरिक्खजोणिया वा ते उप्पण्णे सम्मं सहिस्सइ, खमिस्सइ, तितिक्खिस्सइ, अहियासिस्सइ तए ण से भगवं अणगारे भविस्सइ ईरियासमिए भासासमिए एवं जहा- वद्धमाणसामी तं चेव निरवसेसं —जाव— अव्वावारविउसजोगजुत्ते.

तस्स णं भगवंतस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स दुवालसहिं संवच्छरेहिं विइक्कतेहिं तेरसहि य पक्खेहिं तेरसमस्स ण संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अणुत्तरेणं नाणेणं जहा

दिज्जमाणे अभिथुवमाणे य वहिया सुभूमिभागे उज्जाणे एग देवदूसमादाय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयाहिइ. तस्स णं भगवंतस्स साइरेगाइं दुवालस वासाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जिस्संति तं जहा-

दिव्वा वा, माणुसा वा, तिरिक्खजोणिया वा ते उप्पण्णे सम्म सहिस्सइ, खमिस्सइ, तितिक्खिस्सइ, अहियासिस्सइ.

तए णं से भगवं ईरियासमिए भासासमिए —जाव— गुत्तबमयारि अममे अकिंचणे छिण्णगंथे निरुवलेवे कसपाइ व मुक्कतोए जहा भावणाए —जाव— सुहुयहुयासणे इव तेयसा जलते.

गाहाओ–कंसे संखे जीवे, गगणे वाए य सारए सलिले ।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारडे ॥१॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोभे ।
चंदे सूरे कणगे, वसुधरा चेव सुहुयहुए ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवतस्स कत्थइ पड़िबधे भवइ

से य पड़िवधे चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा-

अंडएइ वा, पोयएइ वा, उग्गहिएइ वा, पग्गहिएइ वा

ज णं ज ण दिस इच्छइ तं ण त णं दिसं अपडिवद्धे सुचिभूए लहुभूए अणप्पगथे संजमेण अप्पाण भावेमाणे विहरिस्सइ.

तस्स ण भगवतस्स अणुत्तरेण नाणेण, अणुत्तरेण दंसणेणं, अणुत्तरेण चरित्तएणं एवं आलएणं विहारेण अज्जवे मद्दवे

कोहकसाए —जाव— लोहकसाए.

पंच कामगुणे पण्णत्ते. तं जहा-

सद्दे —जाव— फासे

छज्जीवनिकाया पण्णत्ता तं जहा-

पुढविकाइया —जाव— तसकाइया

एवामेव पुढविकाइया —जाव— तसकाइया

से जहा णामए एएणं अभिलावेणं सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता. तं जहा-

इह लोगभए —जाव— असिलोगभए

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाण सत्त भयट्ठाणा पण्णवेहिइ.

एव अट्ठ मयट्ठाणे

नव बंभचेरगुत्तीओ

दसविहे समणधम्मे

एव —जाव— तेत्तीसमसातणाउत्ति.

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाण नग्गभावे, मुंडभावे, अण्हाणए, अदंतवणे, अच्छत्तए, अणुवाहणए, भूमिसेज्जा, फलगसेज्जा, कट्ठसेज्जा, केसलोए, बंभचेरवासे, परघरपवेसे —जाव— लद्धावलद्धवित्तीओ पण्णत्ताओ. एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाण नग्गभाव —जाव— लद्धावद्धवित्ती पण्णवेहिइत्ति

भावणाए केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिति जिणे भविस्सइ केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी सणेरइए —जाव— पंच महव्वयाइं सभावणाइं छच्च जीवनिकायधम्मं देसेमाणे विहरिस्सइ

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं एगे आरंभठाणे पण्णत्ते.

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं एगं आरभठाणं पण्णवेहिइ

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं दुविहे बंधणे पण्णत्ते. तं जहा-

पेज्जबंधणे, दोसबंधणे

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं दुविहं बंधणं पण्णवेहिइ तं जहा-

पेज्जबंधणं च, दोसबंधणं च

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं तओ दंडा पण्णत्ता. तं जहा-

मणदंडे —जाव— कायदंडे.

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं तओ दंडे पण्णवेहिइ तं जहा- मणदंडं —जाव— कायदंडं.

से जहा णामए एएणं अभिलावेणं चत्तारि कसाया पण्णत्ता. तं जहा-

एवामेव महापउमस्स वि अरिहओ नव गणा, एगारस गणधरा भविस्सति.

से जहा णामए अज्जो ! अहं तीसं वासाइ अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता —जाव— पव्वइए, दुवालस सवच्छराइं तेरस पक्खा छउमत्थपरियागं पाउणित्ता, तेरसहि पक्खेहि उणगाइं तीसं वासाइ केवलिपरियागं पाउणित्ता, वायालीस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, बावत्तरि वासाइं सव्वाउय पालइत्ता, सिज्झिस्सं —जाव— सव्व-दुक्खाणमतं करेस्सं

एवामेव महापउमे वि अरहा तीस वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता —जाव— पव्वहिइ

दुवालस संवच्छराइं —जाव— बावत्तरिवासाइ सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिहिइ —जाव— सव्वदुक्खाणमत काहिइ.

गाहा—जं सीलसमायारो, अरहा तित्थकरो महावीरो ।
तस्सीलसमायारो, होइ उ अरहा महापउमे ॥१॥

इइ महापउमचरिय

६९४ नव नक्खत्ता चंदस्स पच्छंभागा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—अभिई सवणो धणिट्ठा,
रेवइ अस्सिणि मग्गसिर पूसो ।
हत्थो चित्ता य तहा,
पच्छंभागा नव हवंति ॥१॥

७०२ जीवा णं नवट्ठाणनिवत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा, चिणंति वा, चिणस्सति वा, पुढविकाइयनिवत्तिए —जाव— पंचिंदियनिवत्तिए.

एव चिण-उवचिण —जाव— निज्जरा चेव ६

७०३ नव पएसिया खंधा अणता पण्णत्ता.

नवपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता —जाव—

नवगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता. २३

९

जाव ताव लोए ताव ताव जीवा, जाव ताव जीवा ताव ताव लोए एव पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

जाव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गइ परियाए ताव ताव लोए, जाव ताव लोए ताव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गइपरियाए. एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

सव्वेसु वि णं लोगंतेसु जं अवद्धपासपुट्ठा पोग्गला लुक्खत्ताए कज्जइ जेणं जीवा य पोग्गला य नो संचायंति बहिया लोगंता गमणयाए एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता.

७०५ दसविहे सद्दे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहा--नीहारि पिंडिमे लुक्खे,
भिण्णे जज्जरिए इ य ।
दीहे रहस्से पुहुत्ते य,
काकणी खिखिणिस्सरे ।।१।।

०६ दस इंदियत्थातीता पण्णत्ता त जहा-

देसेण वि एगे सद्दाइ सुणिसु,
सव्वेण वि एगे सद्दाइं सुणिसु,
देसेण वि एगे रूवाइ पासिसु,
सव्वेण वि एगे रूवाइ पासिसु,
देसेण वि एगे गधाइ अग्घिसु,
सव्वेण वि एगे गधाइ अग्घिसु,
देसेण वि एगे रसाइ आसाइंसु,
सव्वेण वि एगे रसाइ आसाइसु,

दसट्ठाणं

७०४ दसविहा लोगट्ठिई पण्णत्ता तं जहा-

जण्णं जीवा उद्दाइत्ता तत्थेव तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायंति एवं एगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

जण्णं जीवाणं सया समियं पावे कम्मे कज्जइ. एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

जण्णं जीवा सया समियं मोहणिज्जे पावे कम्मे कज्जइ. एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

न एव भूयं वा, भव्व वा, भविस्सइ वा जं जीवा अजीवा भविस्संति, अजीवा वा जीवा भविस्संति एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

न एव भूय वा, भव्वं वा, भविस्सइ वा जं तसा पाणा वोच्छिज्जिस्संति, थावरा पाणा वोच्छिज्जिस्संति, तसा पाणा भविस्संति, थावरा पाणा भविस्संति एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

न एव भूय वा, भव्वं वा, भविस्सइ वा जं लोए अलोए भविस्सइ, अलोए वा लोए भविस्सइ. एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

न एवं भूयं वा, भव्वं वा, भविस्सइ वा जं लोए अलोए पविस्सइ अलोए वा लोए पविस्सइ. एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

वायपरिग्गणे वा चलेज्जा.

७०८ दसहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ती सिया. त जहा-

मणुण्णाइ मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गधाइ अवहरिंसु,

अमणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गधाइ उवहरिंसु,

मणुण्णाइ मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गधाइ अवहरइ,

अमणुण्णाइ मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गधाइ उवहरइ,

मणुण्णाइ मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं अवहरिस्सइ,

अमणुण्णाइ मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गधाइं उवहरिस्सइ,

मणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं अवहरिंसु, अवहरइ, अवहरिस्सइ,

अमणुण्णाइ मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं उवहरिंसु, उवहरइ, उवहरिस्सइ,

मणुण्णामणुण्णाइ सद्द-फरिस-रस-रूव-गधाइं अवहरिंसु, अवहरइ, अवहरिस्सइ उवहरिंसु, उवहरइ, उवहरिस्सइ,

अहं च णं आयरिय-उवज्झायाण सम्म वट्टामि, ममं च ण आयरिय-उवज्झाया मिच्छं पड़िवण्णा.

७०९ दसविहे सजमे पण्णत्ते. त जहा-

पुढविकाइय संजमे —जाव — वणस्सइकाइय-सजमे, बेइंदिय-सजमे, तेंदिय-सजमे, चउरिंदिय-सजमे, पंचिंदिय-संजमे, अजीवकाय-सजमे

दसविहे असंजमे पण्णत्ते. तं जहा-

पुढविकाइय-असंजमे —जाव — अजीवकाय-असंजमे

देसेण वि एगे फासाइं पडिसवेदेंसु,
सव्वेण वि एगे फासाइं पडिसवेदेंसु

दस इंदियत्था पडुप्पण्णा पण्णत्ता. तं जहा-
देसेण वि एगे सद्दाइं सुणेंति,
सव्वेण वि एगे सद्दाइं सुणेंति एवं —जाव –
देसेण वि एगे फासाइं पडिसवेदेंति,
सव्वेण वि एगे फासाइं पडिसवेदेंति

दस इंदियत्था अणागया पण्णत्ता तं जहा-
देसेण वि एगे सद्दाइ सुणिस्संति,
सव्वेण वि एगे सद्दाइं सुणिस्संति एवं —जाव—
देसेण वि एगे फासाइ पडिसवेदेस्संति,
सव्वेण वि एगे फासाइं पडिसवेदेस्संति ३

७०७ दसहिं ठाणेहिं अच्छिण्णे पोग्गले चलेज्जा पण्णत्ता तं जहा-
आहारिज्जमाणे वा चलेज्जा,
परिणामेज्जमाणे वा चलेज्जा,
उस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा,
निस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा,
वेदेज्जमाणे वा चलेज्जा,
निज्जरिज्जमाणे वा चलेज्जा,
विउव्विज्जमाणे वा चलेज्जा,
परियारिज्जमाणे वा चलेज्जा,
जक्खाइट्ठे वा चलेज्जा,

सारणिया रोगिणीया ,
अणाढिया देवसण्णत्ती ॥१॥
वोच्छाणुबंधिया ..

दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते. तं जहा-
खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे,
सच्चे, संजमे, तवे, चियाए, बंभचेरवासे

दसविहे वेयावच्चे पण्णत्ते तं जहा-
आयरिय-वेयावच्चे, उवज्झाय-वेयावच्चे,
थेर-वेयावच्चे, तवस्सि-वेयावच्चे,
गिलाण-वेयावच्चे, सेह-वेयावच्चे,
कुल-वेयावच्चे, गण-वेयावच्चे,
संघ-वेयावच्चे, साहम्मिय-वेयावच्चे.

७१३ दसविहे जीवपरिणामे पण्णत्ते त जहा-
गइपरिणामे, इंदियपरिणामे,
कसायपरिणामे, लेसापरिणामे,
जोगपरिणामे, उवओगपरिणामे,
नाणपरिणामे, दसणपरिणामे,
चरित्तपरिणामे, वेयपरिणामे

दसविहे अजीवपरिणामे पण्णत्ते. तं जहा-
बंधणपरिणामे, गइपरिणामे,
संठाणपरिणामे, भेदपरिणामे,
वण्णपरिणामे, रसपरिणामे,

दसविहे सवरे पण्णत्ते. तं जहा-

सोइदियसवरे —जाव— फासिंदियसवरे,

मणसवरे, वयसंवरे, कायसवरे,

उवगरणसवरे, सूईकुसग्गसवरे

दसविहे असंवरे पण्णत्ते. त जहा-

सोइदियअसंवरे, —जाव— सूईकुसग्गअसंवरे.

७१० दसहिं ठाणेहिं अहमतीति थंभिज्जा तं जहा-

जाइमएण वा —जाव— इस्सरियमएण वा,

नाग सुवण्णा वा मे अतिय हव्वमागच्छति,

पुरिसधम्माओ वा मे उत्तरिए अहोहिए नाण-दंसणे समुप्पण्णे

७११ दसविहा समाही पण्णत्ता तं जहा-

पाणाइवाय-वेरमणे —जाव— परिग्गह-वेरमणे,

इरियासमिई —जाव उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-परिट्ठावणियासमिई.

दसविहा असमाही पण्णत्ता तं जहा-

पाणाइवाए —जाव— उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-परिट्ठावणिया असमिई.

७१२ दसविहा पव्वज्जा पण्णत्ता. त जहा-

गाहा—छंदा रोसा परिजुण्णा ,

सुविणा पडिस्सुया चेव ।

७१७ जंबू-मंदर-दाहिणेणं गंगासिंधुमहाणईओ दस महाणईओ समप्पेंति. तं जहा-

जउणा, सरऊ,
आवी, कोसी,
मही, सिंधू,
वितत्था, विभासा,
एरावइ, चंदभागा

जंबू-मंदर-उत्तरेणं रत्तारत्तवईओ महाणईओ दस महाणईओ समप्पेंति. तं जहा-

किण्हा, —जाव— महाभागा. २

७१८ जंबूद्दीवे दीवे भरहे वासे दस रायहाणीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

गाहा–चंपा महुरा वाराणसी य, सावत्थी तह य साएयं ।
हत्थिणउर कंपिल्लं, मिहिला कोसंबि रायगिहं ॥१॥

एयासु णं दसरायहाणीसु दस रायाणो मुंडा भवेत्ता, —जाव— पव्वइया तं जहा-

भरहो, सागरो,
मघवं, सणकुमारो,
संती, कुंथू,
अरे, महापउमे,
हरिसेणो, जयणामे २

गंधपरिणामे, फासपरिणामे,

अगुरुलहुपरिणामे, सद्दपरिणामे

७१४ दसविहे अतलिक्खिए असज्झाइए पण्णत्ते तं जहा-

उक्कावाए, दिसिदाहे,

गज्जिए, विज्जुए,

निग्घाए, जूयए,

जक्खालित्ते, धूमिया,

महिया, रयओग्घाए

दसविहे ओरालिए असज्झाइए पण्णत्ते तं जहा-

अट्ठि, मंसं,

सोणिए, असुइसामंते,

सुसाणसामंते, चंदोवराए,

सूरोवराए, पडणे,

रायवुग्गहे, उवसयस्स अंतो ओरालिए सरीरगे २

७१५ पंचिंदियाणं जीवाणं असमारभमाणस्स दसविहे संजमे कज्जइ. तं जहा-

सोयामयाओ सुक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ, —जाव — फासमएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ.

एवं असंयमोऽवि भाणियव्वो २

७१६ दस सुहमा पण्णत्ता तं जहा-

पाणसुहमे — जाव— सिणेहसुहुमे,

गणियसुहुमे, भंगसुहुमे.

दवियाणुओगे,	माउयाणुओगे,
एगट्ठियाणुओगे,	करणाणुओगे,
अप्पियणप्पिए,	भाविताभाविए,
बाहिराबाहिरे,	सासयासासए,
तहणाणे,	अतहणाणे

७२८ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तिगिच्छकूडे उप्पायपव्वए मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खभेण पण्णत्ते,

चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो सोमप्पभे उप्पायपव्वए दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण, दस गाउयसयाइ उव्वेहेण, मूले दस जोयणसयाइ विक्खभेण पण्णत्ते,

चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो जमस्स महारण्णो जमप्पभे उप्पायपव्वए दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं, मूल दस जोयणसयाइं विक्खभेण पण्णत्ते,

एवं वरुणस्स वि, एव वेसमणस्स वि

बलिस्स ण वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो रुयगिंदे उप्पायपव्वए मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खभेण पण्णत्ते,

बलिस्स ण वइरोयणिंदस्स सोमस्स एव चेव

जहा चमरस्स लोगपालाण त चेव बलिस्स वि

धरणस्स ण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो धरणप्पभे

७१९ जंबूद्दीवे दीवे मंदरे पव्वए दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं धरणितले, दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, उवरिं दस-जोयणसयाइं विक्खंभेणं, दसदसाइं जोयणसहस्साइं सव्व-ग्गेणं पण्णत्ते.

७२० जबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु, एत्थ णं अट्ठपएसिए रुयगे पण्णत्ते.

जओ णं इमाओ दस दिसाओ पवहृति. तं जहा-

पुरच्छिमा,	पुरिच्छमदाहिणा,
दाहिणा,	दाहिणपच्चत्थिमा,
पच्चत्थिमा,	पच्चत्थिमुत्तरा,
उत्तरा,	उत्तरपुरच्छिमा,
उद्धा,	अहो

एयासि णं दसण्हं दिसाणं दस नामधिज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा--इंदा अग्गीइ जमा, नेरइ वारुणी य वायव्वा ।
सोमा ईसाणा विय, विमला य तमा य बोद्धव्वा ॥१॥

लवणस्स ण समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं गोतित्थविरहिए खेत्ते पण्णत्ते,

लवणस्स णं समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं उदगमाले पण्णत्ते,

सव्वे वि ण महापायाला दसदसाइ जोयणसहस्साइं उव्वेहेणं पण्णत्ता,

७३० संभवाओ णं अरहाओ अभिनंदणे अरहा दसहिं सागरोवम-
कोडिसयसहस्सेहिं विइक्कतेहिं समुप्पण्णे

७३१ दसविहे अणतए पण्णत्ते. तं जहा-

नामाणंतए, ठवणाणतए,
दव्वाणतए, गणणाणतए,
पएसाणंतए, एगओणतए,
दुहओणंतए, देसवित्थाराणतए,
सव्ववित्थाराणंतए, सासयाणतए.

७३२ उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थु पण्णत्ता.

अत्थि-णत्थिप्पवायपुव्वस्स ण दस चूलवत्थु पण्णत्ता.

७३३ दसविहा पडिसेवणा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा—दप्प पमाय णाभोगे,
आउरे आवतीसु य ।
संकिए सहसक्कारे,
भयप्पओसा य वीमसा ॥१॥

दस आलोयणादोसा पण्णत्ता. त जहा-

गाहा—आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता,
जं दिट्ठं वायरं च सुहुम वा ।
छण्णं सद्दाउलगं,
वहुजण अव्वत्त तस्सेवी ॥१॥

दसहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहइ अत्तदोसमालोएत्तए.
तं जहा-

उप्पायपव्वए दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण, दस गाउय-सयाइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते,

धरणस्स नागकुमारिंदस्स णं नागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो महाकालप्पभे उप्पायपव्वए जोयणसयाइं उड्ढं. एव चेव,

एवं —जाव– सखवालस्स, एवं भूयाणंदस्स वि, एव लोगपालाण वि से जहा धरणस्स एव —जाव— थणिय-कुमाराण सलोगपालाणं भाणियव्वं,

सव्वेसि उप्पायपव्वया भाणियव्वा सरिसणामगा,

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सक्कप्पभे उप्पायपव्वए दस जोयणसहस्साइ उड्ढं उच्चत्तेणं दस गाउयसहस्साइं उव्वेहेण, मूले दस जोयणसहस्साइ विक्खंभेणं पण्णत्ते,

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो जहा सक्कस्स तहा सव्वेसिं लोगपालाणं, सव्वेसिं च इंदाणं —जाव— अच्चुयत्ति सव्वेसिं पमाणमेगं १५०

१२६ बायरवणस्सइकाइयाण उक्कोसेण दस जोयणसयाइं सरीरो-गाहणा पण्णत्ता

जलचर-पचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं दस जोयण-सयाइ सरीरोगाहणा पण्णत्ता

उरपरिसप्प-थलचर-पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं एवं चेव ३

पुरिससीहे ण वासुदेवे दस वाससहस्साइ सव्वाउयं पाल-
इत्ता छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववण्णे

नेमी ण अरहा दस धणूय उड्ढं उच्चत्तेणं, दस य वाससयाइ
सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे

कण्हे ण वासुदेवे दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेण, दस य वाससयाइं
सव्वाउयं पालइत्ता तच्चाए वालुप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए
उववण्णे. ६

७३६ दसविहा भवणवासी देवा पण्णत्ता तं जहा-
असुरकुमारा —जाव— थणियकुमारा

एएसि णं दसविहाणं भवणवासीणं देवाणं दस चेइयरुक्खा
पण्णत्ता तं जहा-

गाहा–आसत्थ सत्तिवण्णे,
सामलि उंबर सिरीस दहिवण्णे।
वजुल पलास वप्पे,
तए य कणियाररुक्खे ॥१॥ २

७३७ दसविहे सोक्खे पण्णत्ते त जहा-

गाहा--आरोग्ग दीहमाउं,
अड्ढेज्ज काम भोग संतोसे।
अत्थि सुहभोग,
निक्खम्ममेव ततो अणावाहे ॥१॥

७३८ दसविहे उवघाए पण्णत्ते. त जहा-

जाइसंपण्णे —जाव— अट्ठट्ठाणे —जाव— खंते दंते,
अमाई, अपच्छाणुतावि.

दसहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहइ आलोयणं पडिच्छित्तए.
तं जहा-
आयारवं —जाव— अवायदंसी.
पियधम्मे. दढधम्मे.

दसविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते तं जहा-
आलोयणारिहे —जाव— अणवट्ठप्पारिहे,
पारंचियारिहे. ५

७३४ दसविहे मिच्छत्ते पण्णत्ते. तं जहा-
अधम्मे धम्मसण्णा, धम्मे अधम्मसण्णा,
अमग्गे मग्गसण्णा, मग्गे उम्मग्गसण्णा,
अजीवेसु जीवसण्णा, जीवेसु अजीवसण्णा,
असाहुसु साहुसण्णा, साहुसु असाहुसण्णा,
अमुत्तेसु मुत्तसण्णा, मुत्तेसु अमुत्तसण्णा.

७३५ चंदप्पभे णं अरहा दस पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे

धम्मे णं अरहा दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे.

नमी णं अरहा दस वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे.

दसविहे मोसे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहा—कोहे माणे माया,
लोभे पिज्जे तहेव दोसे य ।
हास भए अक्खाइ य,
उवघायनिस्सिए दसमे ॥१॥

दसविहे सच्चामोसे पण्णत्ते. तं जहा-

उप्पण्णमीसए, विगयमीसए,
उप्पण्णविगयमीसए, जीवमीसए,
अजीवमीसए, जीवाजीवमीसए,
अणंतमीसए, परित्तमीसए,
अद्धामीसए, अद्धद्धामीसए. २

७४२ दिट्ठिवायस्स णं दस नामधेज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

दिट्ठिवाएइ वा, हेउवाएइ वा,
भूयवाएइ वा, तच्चावाएइ वा,
सम्मावाएइ वा, धम्मावाएइ वा,
भासाविजएइ वा, पुव्वगएइ वा,
अणुओगगएइ वा सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहेइ वा.

७४३ दसविहे सत्थे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहा—सत्थमग्गी विसं लोणं,
सिणेहो खारमंबिलं ।
दुप्पउत्तो मणो वाया,
काया भावो य अविरई ॥१॥

उग्गमोवघाए, जहा पंचट्ठाणे — जाव — परिहरणोवघाए
नाणोवघाए, दंसणोवघाए, चरित्तोवघाए,
अचियत्तोवघाए, सारक्खणोवघाए.

दसविहा विसोही पण्णत्ता. तं जहा-
उग्गमविसोही — जाव — सारक्खणविसोही. २

७३९ दसविहे संकिलेसे पण्णत्ते. तं जहा-
उवहिसंकिलेसे, उवस्सयसंकिलेसे,
कसायसंकिलेसे, भत्तपाणसंकिलेसे,
मणसंकिलेसे वइसंकिलेसे,
कायसंकिलेसे, नाणसंकिलेसे,
दंसणसंकिलेसे, चरित्तसंकिलेसे

दसविहे असंकिलेसे पण्णत्ते तं जहा-
उवहिअसंकिलेसे — जाव — चरित्तअसंकिलेसे २

७४० दसविहे बले पण्णत्ते तं जहा-
सोइन्दियबले — जाव — फासिंदियबले,
नाणबले, दंसणबले, चरित्तबले, तवबले, वीरियबले.

७४१ दसविहे सच्चे पण्णत्ते तं जहा-
गाहा--जणवय सम्मय ठवणा,
नामे रूवे पडुच्च सच्चे य।
ववहार भाव जोगे,
दसमे ओवम्मसच्चे य ॥१॥

मणुयगइ, मणुयविग्गहगइ,
देवगइ, देवविग्गहगइ,
सिद्धगइ, सिद्धविग्गहगइ

७४६ दस मुंडा पण्णत्ता. तं जहा-
सोइंदियमुंडे —जाव फासिंदियमुंडे,
कोहमुंडे —जाव — लोभमुंडे, दसमे सिर मुंडे

७४७ दसविहे सखाणे पण्णत्ते त जहा-
गाहा–परिकम्म ववहारो, रज्जू रासी कलासवण्णे य ।
जावं तावइ वग्गो, घणो य तह वग्गवग्गो वि ॥१॥
कप्पो य , • ।

७४८ दसविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते त जहा-
गाहा–अणागयमइक्कंतं, कोडीसहियं नियन्टियं चेव ।
सागारमणागार, परिमाणकडं निरवसेस ॥१॥
सकेयं चेव अद्धाए, पच्चक्खाण दसविहं तु ।

७४९ दसविहा समायारी पण्णत्ता तं जहा-
गाहा–इच्छा मिच्छा तहक्कारो. आवस्सिया निसीहिया ।
आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छंदणा य निमतणा ॥१॥
उवसपया य काले, समायारी भवे दसविहा उ ।

७५० समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अतिमराइयसी
इमे दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, त जहा-
एगं च णं महाघोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुमिणे पराजियं
पासित्ता णं पडिबुद्धे,

दसविहे दोसे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहा–तज्जायदोसे मइभंगदोसे ,
पसत्थारदोसे परिहरणदोसे ।
सलक्खण क्कारण हेउदोसे ,
संकामणं निग्गह वत्थुदोसे ॥१॥

दसविहे विसेसे पण्णत्ते तं जहा-

गाहा–वत्थु तज्जायदोसे य ,
दोसे एगट्ठिए इ य ।
कारणे य पडुप्पण्णे ,
दोसे निव्वेहि अट्ठमे ॥१॥
अत्ताणा उवणीए य ,
विसेसेइ य ते दस । २

७४४ दसविहे सुद्धवायाणुओगे पण्णत्ते. तं जहा-

चंकारे, मंकारे, पिंकारे, सेयकारे, सायंकारे,
एगत्ते, पुहत्ते संजूहे, संकामिए, भिण्णे.

७४५ दसविहे दाणे पण्णत्ते तं जहा-

गाहा–अणुकंपा संगहे चेव, भये कालुणिए इ य ।
लज्जाए गारवेणं च, अहम्मे पुण सत्तमे ॥१॥
धम्मे य अट्ठमे वुत्ते, काहीइ य कतंति य ।

दसविहा गइ पण्णत्ता तं जहा-

निरयगइ, निरयविग्गहगइ,
तिरियगइ, तिरियविग्गहगइ,

—जाव— पड़िबुद्धे.

तं णं समणे भगवं महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरइ,
जं णं समणे भगवं महावीरे एग महं चित्तविचित्तपक्खगं —जाव— पड़िबुद्धे

तं णं समणे भगवं महावीरे ससमयपरसमइयं चित्त-विचित्तं दुवालसंग गणिपिड़गं आघवेइ पण्णवेइ परूवेइ दसेइ निदंसेइ उवदंसेइ, तं जहा- आयारं —जाव— दिट्ठीवायं,

जं णं समणे भगवं महावीरे एग महं दामदुगं सव्वरयणा —जाव— पड़िबुद्धे.

तं णं समणे भगवं महावीरे दुविहं धम्म पण्णवेइ, तं जहा- अगारधम्मं च, अणगारधम्मं च

जं ण समणे भगवं महावीरे एगं महं सेयं गोवग्गं सुमिणं —जाव— पड़िबुद्धे

त णं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउव्वण्णाइण्णे संघे पण्णत्ते. तं जहा- समणा, समणीओ, सावगा, सावियाओ.

जं णं समणे भगवं महावीरे एगं मह पउमसरं —जाव— पड़िबुद्धे

तं णं समणे भगवं महावीरे चउव्विहे देवे पण्णवेइ. त जहा- भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसवासी, विमाणवासी

जं णं समणे भगव महावीरे एग महं उन्मी-वीची

एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं पुंसकोइलं सुमिणे पासित्ता णं पडिवुद्धे.

एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं पुंसकोइलं सुविणे पासित्ता णं पड़िवुद्धे

एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुमिणे पासित्ता णं पड़िवुद्धे.

एगं च णं महं सेयं गोवग्गं सुमिणे पासित्ता णं पडिवुद्धे.

एगं च णं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमियं सुमिणे पासित्ता णं पडिवुद्धे.

एग च णं महासागरं उम्मीवीचीसहस्सकलियं भुयाहि तिण्णं सुमिणे पासित्ता णं पड़िवुद्धे.

एग च णं मह दिणयरं तेयसा जलतं सुमिणे पासित्ता णं पडिवुद्धे.

एगं च ण महं हरिवेरुलियवण्णाभेणं नियतेणमंतेणं माणुसुत्तरं पव्वयं सव्वओ समंता आवेढियं परिवेढियं सुमिणे पासित्ता ण पड़िवुद्धे

एगं च णं महं मंदरे पव्वए मंदरचूलियाओ उवरिं सीहासणवरगयमत्ताणं सुमिणे पासित्ता णं पडिवुद्धे.



जं ण समणे भगवं महावीरे एगं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसाय सुमिणे पराइयं पासित्ता णं पडिवुद्धे.

त ण समणेणं भगवया महावीरेणं मोहणिज्जे मूलाओ उग्घाइए.

जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सुक्किलपक्खगं

कोहसण्णा, —जाव— लोहसण्णा,
लोगसण्णा, ओघसण्णा

नेरइयाणं दस सण्णाओ एवं चेव,

एवं निरंतरं —जाव— वेमाणियाणं.

७५३ नेरइया णं दसविहं वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरति. तं जहा-

सीयं, उसिणं, खुहं, पिवासं, कडुं,
परज्झं, भयं, सोगं, जरं, वाहिं

७५४ दस ठाणाइं छउमत्थे णं सव्वभावे णं न जाणइ न पासइ. तं जहा-

धम्मत्थिकाय —जाव— वाउं,
अयं जिणे भविस्सइ वा, न वा भविस्सइ,
अयं सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सइ वा, न वा करेस्सइ

एयाणि उप्पण्णनाण-दंसणधरे —जाव— अयं सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सइ वा, न वा करेस्सइ

७५५ दस दसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

कम्मविवागदसाओ, उवासगदसाओ,
अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ,
आयारदसाओ, पण्हावागरणदसाओ,
बंधदसाओ, दोगिद्धिदसाओ,
दीहदसाओ, संखेवियदसाओ.

—जाव— पडिबुद्धे.

तं णं समणेणं भगवया महावीरेणं अणाईए अणवदग्गे दीहमद्धे चाउरंतसंसारकंतारे तिण्णे.

जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दिणयरं —जाव— पडिबुद्धे

तं णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अणंते अणुत्तरे —जाव— समुप्पण्णे.

जं णं समणे भगवं एगं महं हरिवेरुलिय —जाव— पडिबुद्धे.

तं णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सदेवमणुयासुरे लोगे उराला कित्तिवण्णसद्दसिलोगा परिगुव्वंति "इइ खलु समणे भगवं महावीरे" इइ.

जं णं समणे भगवं महावीरे मंदरे पव्वए मंदरचूलियाए उवरिं —जाव— पडिबुद्धे.

तं णं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेइ पण्णवेइ —जाव— उवदंसेइ

७५१ दसविहे सरागसम्मद्दंसणे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहा—निसग्गुवएसरुई, आणारुई सुत्त-बीयरुइमेव ।
अभिगम वित्थाररुई, किरिया संखेव धम्मरुई ॥१॥

७५२ दस सण्णाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

आहारसण्णा —जाव— परिग्गहसण्णा.

पण्हावागरणदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता. तं जहा-

उवमा, संखा,
इसिभासियाइं, आयरियभासियाइं,
महावीरभासियाइं, खोमगपसिणाइं,
कोमलपसिणाइं, अद्दागपसिणाइं,
अंगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइं.

बंधदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—बंधे मोक्खे य देवद्धि,
दसारमंडले वि य आयरियविप्पड़िवत्ति।
उवज्झायविपड़िवत्ती,
भावणा विमुत्ती साओ कम्मे ॥१॥

दोगेहिदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—वाए विवाए उववाए,
सुक्खित्तकसिणे बायालीसं सुमिणे।
तीसं महासुमिणा बावत्तरिं सव्वसुमिणा,
हारे रामे गुत्ते एमेए दस आहिया ॥१॥

दीहदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा—चंदे सूरे य सुक्के य सिरिदेवी,
पभावइ दीवसमुद्दोववत्ती।
बहूपुत्ती मंदरेइ य थेरे य संभूयविजए,
थेरे पम्ह ऊसासनीसासे ॥१॥

संखेवियदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता. तं जहा-

कम्मविवागदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-

गाहा—मियापुत्ते य गोत्तासे, अडे सगडे इयावरे ।
माहणे नंदिसेणे य, सोरियत्ति उदुंबरे ।।१।।
सहसुद्दाहे आमलए कुमार लिच्छइ इइ.

उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-

गाह—आणंदे कामदेवे अ, गाहावई चूलणीपिया ।
सुरादेवे चुल्लसयए, गाहावई कुंडकोलियए ।।१।।
सद्दालपुत्ते महासयए, नंदिणीपिया सालइयापिया ।

अंतगड़दसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-

गाहा—नमि मातगे सोमिले, रामगुत्ते सुदंसणे चेव ।
जमाली य भगाली य, किंकिमे पल्लए इ य ।।१।।
फाले अवड़पुत्ते य, एमेए दस आहिया ।

अणुत्तरोववाइयदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता. त जहा-

गाहा—इसिदासे य धण्णे य, सुणक्खत्ते य काइए ।
सट्ठाणे सालिभद्दे य, आणंदे तेतली इ य ।।१।।
दसण्णभद्दे अइमुत्ते, एमेए दस आहिया ।

आयारदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा-

वीसं असमाहीट्ठाणा. एगवीसं सवला,
तेत्तीस आसायणाओ, अट्ठविहा गणिसपया,
दस चित्तसमाहिट्ठाणा, एगारस उवासगपड़िमाओ,
वारस भिक्खुपड़िमाओ, पज्जोसवणाकप्पो,
तीस मोहणिज्जट्ठाणा, आजाइट्ठाण

सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

असुरकुमाराणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता. एवं —जाव— थणियकुमाराणं.

बायरवणस्सइकाइयाणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता.

वाणमंतरदेवाणं जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता.

बंभलोगे कप्पे उक्कोसेणं देवाण दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

लंतए कप्पे देवाणं जहण्णेणं दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता. १०

७५८ दसहिं ठाणेहिं जीवा आगमेसिभद्दत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा-

अणिदाणयाए, दिट्ठिसंपण्णयाए,
जोगवाहियत्ताए, खंतिखमणयाए,
जितिंदिययाए, अमाइल्लयाए,
अपासत्थयाए, सुसामण्णयाए
पवयणवच्छल्लयाए, पवयणउब्भावणयाए,

७५९ दसविहे आसंसप्पओगे पण्णत्ते, तं जहा-

इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे,
दुहओलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे
मरणासंसप्पओगे, कामासंसप्पओगे,
भोगासंसप्पओगे, लाभासंसप्पओगे,
पूयासंसप्पओगे, सक्कारासंसप्पओगे;

खुड्डियाविमाणपविभत्ती, महल्लियाविमाणपविभत्ती,
अंगचूलिया, वग्गचूलिया,
विवाहचूलिया, अरुणोववाए,
वरुणोववाए, गरुलोववाए,
वेलंधरोववाए, वेसमणोववाए, ११

७५६ दस-सागरोवम-कोड़ाकोड़िओ कालो उस्सप्पिणीए

दस-सागरोवम-कोड़ाकोड़िओ कालो ओसप्पिणीए. २

७५७ दसविहा नेरइया पण्णत्ता, तं जहा-

अणतरोववण्णा, परपरोववण्णा,
अणतरावगाढा, परंपरावगाढा,
अणतराहारगा, परंपराहारगा,
अणंतरपज्जत्ता, परंपरपज्जत्ता,
चरिमा, अचरिमा

एवं निरंतर —जाव— वेमाणिया.

चउत्थीए ण पकप्पभाए पुढवीए दस-निरयावास-सयसहस्सा ठिई पण्णत्ता

रयणप्पभाए पुढवीए जहण्णेण नेरइयाणं दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता.

चउत्थीए ण पकप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं नेरइयाणं दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता

पंचमाए ण धूमप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं नेरइयाणं दस

अणुत्तरा मुत्ती, अणुत्तरे अज्जवे,
अणुत्तरे मद्दवे, अणुत्तरे लाघवे.

७६४ समयखेत्ते ण दस कुराओ पण्णत्ताओ त जहा-
पंच देवकुराओ पंच उत्तरकुराओ, तत्थ ण दस महइमहालया महा दुमा पण्णत्ता. तं जहा-
जबू सुदंसणा, धायइरुक्खे,
महाधायइरुक्खे, पउमरुक्खे,
महापउमरुक्खे, पच कूडसामलीओ.

तत्थ ण दस देवा महड्ढिया-जाव-परिवसति त जहा-
अणाढिए जंबुद्दीवाहिवइ, सुदंसणे,
पियंदसणे, पोंडरिए,
महापोंडरीए, पंच गरुला वेणुदेवा २

७६५ दसहि ठाणेहि ओगाढं दुस्समं जाणेज्जा तं जहा-
अकाले वरिसइ, काले न वरिसइ,
असाहू पूइज्जति, साहू न पूइज्जति,
गुरुसु जणो मिच्छं पडिवण्णो,
अमणुण्णा सद्दा —जाव— फासा.

दसहि ठाणेहि ओगाढ सुसमं जाणेज्जा. तं जहा-
अकाले न वरिसइ – जाव— मणुण्णा फासा २

७६६ सुसमसुसमाए ण समाए दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छंति तं जहा-

७६० दसविहे धम्मे पण्णत्त. तं जहा -

गामधम्मे,	नगरधम्मे,
रट्ठधम्मे,	पासडधम्मे,
कुलधम्मे,	गणधम्मे,
सघधम्मे,	सुयधम्मे,
चरित्तधम्मे,	अत्यिकायधम्मे,

७६१ दस थेरा पण्णत्ता तं जहा-

गामथेरा,	नगरथेरा,
रट्ठथेरा,	पसत्थारथेरा,
कुलथेरा,	गणथेरा,
संघथेरा,	जाइथेरा,
सुअथेरा,	परियायथेरा

७६२ दस पुत्ता पण्णा, त जहा-

अत्तए,	खेत्तए,
दिण्णए,	विण्णए,
उरसे,	मोहरे,
सोडीरे,	संबुद्धे,
उववाइए,	धम्मंतेवासी,

७६३ केवलिस्स णं दस अणुत्तरा पण्णत्ता, तं जहा-

अणुत्तरे नाणे,	अणुत्तरे दंसणे,
अणुत्तरे चरित्ते,	अणुत्तरे तवे,
अणुत्तरे वीरिए	अणुत्तरा खंती,

७६९ दस कप्पा इंदाहिट्ठिया पण्णत्ता. तं जहा-
सोहम्मे —जाव— सहस्सारे.
पाणए, अच्चुए
एएसु णं दससु कप्पेसु दस इंदा पण्णत्ता. तं जहा-
सक्के — जाव अच्चुए.
एएसु णं सण्हं इंदाणं दस परिजाणियविमाणा पण्णत्ता. तं जहा-
पालए —जाव विमलवरे, सव्वओभद्दे ३

७७० दस दसमिया णं भिक्खुपडिमा णं एगेण राइंदियसएण अद्धुट्ठेहि य भिक्खासएहिं अहासुत्ता-जाव-आराहिया भवेइ

७७१ दसविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता तं जहा-
पढमसमयएगिंदिया-जाव-अपढमसमयपंचिंदिया.
दसविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं जहा-
पुढविकाइया-जाव-पंचिंदियत, अणिंदिया.
अहवा-दसविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा-
पढमसमय-नेरइया-जाव-अपढमसमयदेवा,
पढमसमयसिद्धा, अपढमसिमयसिद्धा ३

७७२ वाससयाउस्स णं पुरिसस्स दस दसाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
गाहा—बाला किड्डा य मंदा य, बला पण्णा य हायणी ।
पवंचा पब्भारा य, मुंमुही सावणी तहा ॥१॥

मत्तंगया य भिंगा, तुड़ियंगा दीव जोइ चित्तगा ।
चित्तरसा मणियंगा, गेहागारा अणियणा य ॥१॥

७६७ जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे तीताए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा होत्था तं जहा-

गाहा—सयज्जले सयाऊ य, अणंतसेणे य अमियसेणे य ।
तक्कसेणे भीमसेणे महाभीमसेणे य सत्तमे ॥१॥

दढरहे दसरहे सयरहे ···· ··· ····· ·· ··· ।

जंबूद्दीवे दीवे महाविदेहवासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा भविस्संति तं जहा-

सीमंकरे,	सीमंधरे,
खेमंकरे,	खेमंधरे,
विमलवाहणे,	संमुती,
पडिसुए,	दढधणू,
दसधणू,	सतधणू. २

७६८ जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरिच्छिमेणं सीयाए महाणईए उभओ कूले दस वक्खारपव्वया पण्णत्ता तं जहा-

मालवंते —जाव— सोमणसे.

जंबूमंदरपच्चत्थिमे णं सीओयाए महाणईए उभओ कूले दस वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

विज्जुप्पभे —जाव— गंधमायणे.

एवं धायइसंडपुरिच्छिमद्धे वि वक्खारा भाणियव्वा —जाव— पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे. ६

फोडा समुच्छंति ते फोड़ा भिज्जंति ते फोड़ा भिण्णा समाणा तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा,

केइ तहारूवं समणं वा, माहणं वा अच्चासाएज्जा से य अच्चासाएइ देवे परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा, तत्थ फोड़ा संमुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, ते फोड़ा भिण्णा समाणा तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा,

केइ तहारूवं समणं वा, माहणं वा अच्चासाएज्जा से य अच्चासाइए परिकुविए देवि वि य परिकुविए मा दुहओ पडिवण्णा तस्स तेय निसिरेज्जा तत्थ फोड़ा समुच्छंति सेसं तहेव —जाव— भासं कुज्जा,

केइ तहारूवं समण वा, माहणं वा अच्चासाएज्जा से य अच्चासाइए परिकुविए तस्स तेय निसिरेज्जा, तत्थ फोडा समुच्छंति ते फोड़ा भिज्जंति, तत्थ पुला समुच्छिंति, ते पुला भिज्जंति ते पुला भिण्णा समाणा तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा, एते तिण्णि आलावगा भाणियव्वा,

केइ तहारूव समण वा, माहणं वा अच्चासाएमाणे तेयं निसिरेज्जा से य तत्थ नो कम्मइ, नो पकम्मइ अंचियं करेइ करेत्ता आयाहिणं पयाहिण करेइ करेत्ता उड्ढ वेहासं उप्पायइ उप्पाएत्ता से ण तओ पड़िहए पड़िणियत्तइ पडिनियत्तित्ता तमेव सरीरगं अणुदहमाणे अणुदहमाणे सह तेयसा भास कुज्जा जहा वा गोसालस्स मखलि पुत्तस्स तवे एए

७७३ दसविहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता. त जहा-
मूले —जाव— वीए

७७४ सव्वओ वि णं विज्जाहरसेढीओ दस दस जोयणाइं विक्खभेणं पण्णत्ता.

सव्वओ वि णं अभियोगसेढीओ दस दस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता २

७७५ गेविज्जगविमाणा णं दस जोयणमयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

७७६ दसहिं ठाणेहिं सह तेयसा भासं कुज्जा तं जहा-

केइ तहारूवं समण वा माहणं वा, अच्चासाएज्जा, से य अच्चासाइए समाणे परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा, से तं परियावेइ, से त परियावेत्ता तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा,

केइ तहारूव समण वा माहण वा, अच्चासाएज्जा, से य अच्चासाइए समाणे देवे परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा से तं परितावेइ से त तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा,

केइ तहारूवं समणं वा, माहणं वा अच्चासाएज्जा, से य अच्चासाइए समाणे परिकुविए, देवे य परिकुविए, दुहओ पड़िवण्णा तस्स तेयं निसिरेज्जा एयं परियाविंतिए तं परियावेत्ता तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा,

केइ तहारूवं समणं वा, माहणं वा अच्चासाएज्जा से य अच्चासाइए परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा तत्थ

अणुराहाणक्खत्ते सव्वब्भंतराओ मंडलाओ दसमे मंडले चार चरइ २

७८१ दस णक्खत्ता णाणस्स वुड्ढिकरा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—मिगसिरमद्दा पुस्सो, तिण्णि य पुव्वाइं मूलमस्सेसा।
हत्थो चित्ता य तहा, दस वुड्ढिकराइं नाणस्स ॥१॥

७८२ चउप्पय-थलयर-पंचिदिय-तिरिक्खजोणियाण दस जाइ-कुल-कोडी-जोणि-पमुह-सयसहस्सा पण्णत्ता.

उरपरिसप्प-थलयर-पंचिदिय-तिरिक्खजोणियाण दस जाइ-कुल-कोडि-जोणि-पमुह-सय-सहस्सा पण्णत्ता २

७८३ जीवाण दसठाणनिव्वत्तिया पोग्गला पावकम्मत्ताए चिणिसु वा चिणंति वा, चिणिस्संति वा तं जहा-

पढमसमयएगिंदियनिव्वत्तिए जाव— फासिंदिय-निव्वत्तिए

एव चिण-उवचिण-बध-उदीर-वेय तह निज्जरा चेव

दसपएसिया खधा अणता पण्णत्ता

दसपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता

दससमयठिइया पोग्गला अणता पण्णत्ता.

दसगुणकालगा पोग्गला अणता पण्णत्ता

एवं वण्णेहि गंधेहि रसेहि फासेहि दसगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता २९

सम्मत्तं

७७७ दस अच्छेरगा पण्णत्ता तं जहा-

गाहाओ—उवसग्ग-गब्भहरणं इत्थीतित्थं,
अभाविया परिसा।
कण्हस्स अवरकंका,
उत्तरणं चंदसूराणं ॥१॥
हरिवंसकुलुप्पत्ती
चमरुप्पाओ य अट्ठसयसिद्धा,
अस्संजएसु पूआ
दस वि अणंतेण कालेण ॥२॥

७७८ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए रयणे कण्डे दस जोअणसयाइं वाहल्लेण पण्णत्ते

इमीसे रयणप्पभाए पुढविए वयरे कंडे दस जोयणसयाइं वाहल्लेणं पण्णत्ते

एवं वेरुलिए, लोहियक्खे, मसारगल्ले, हंसगब्भे, पुलए, सोगंधिए, जोइरसे, अंजणे, अंजणपुलए, रयए, जायरूवे, अंके, फलिहे, रिट्ठे.

जहा रयणे तहा सोलसविहा भाणियव्वा १६

७७९ सव्वे वि ण दीवसमुद्दा दसजोयणसयाइ उव्वेहेणं पण्णत्ता

सव्वे वि णं महा दहा दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता.

सव्वे वि णं सलिलकुंडा दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता

सिया-सीओया णं महाणईओ मुहमूले दस दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ताओ. ४

७८० कत्तियाणक्खत्ते सव्वबाहिराओ मंडलाओ दसमे मंडले चारं चरइ,

स्थानांग सूत्र

[अनुवाद]



अनुवादक

मुनि कन्हैयालाल "कमल"

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-

सुत्तधरे,
अत्थधरे,
तदुभयधरे । सू० १६६

पुरुष तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सूत्रधर,
अर्थधर,
तदुभयधर ।

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-

सुत्तधरे नामेगे नो अत्थधरे,
अत्थधरे नामेगे नो सुत्तधरे,
एगे सुत्तधरे वि अत्थधरे वि,
एगे नो सुत्तधरे नो अत्थधरे । सू० २२५

पुरुष चार प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

कोई पुरुष सूत्रधर होता है किन्तु अर्थधर नही होता,
कोई पुरुष अर्थधर होता है किन्तु सूत्रधर नही होता,
कोई पुरुष सूत्रधार भी होता है और अर्थधर भी होता है,
कोई पुरुष सूत्रधर भी नही होता और अर्थधर भी नही होता ।

स्थानांग सूत्र

[हिन्दी-अनुवाद]

३ दण्ड एक है।[1]

४ क्रिया एक है।[2]

५ लोक एक है। ६ अलोक एक है।

७ धर्मास्तिकाय एक है। ८ अधर्मास्तिकाय एक है।

९ बंध एक है।[3] १० मोक्ष एक है।[4]

११ पुण्य एक है।[5] १२ पाप एक है।[6]

१३ आश्रव एक है।[7] १४ संवर एक है।[8]

१५ वेदना एक है।[9] १६ निर्जरा एक है।[10]

१७ प्रत्येक शरीर नाम कर्म के उदय से होने वाले शरीर में जीव एक है।

---

१. आत्मा जिस क्रिया से दण्डित हो अर्थात् ज्ञानादि गुण हीन हो वह 'दंड' है।

२ मन, वचन या काया का व्यापार 'क्रिया' है।

३. कषाय पूर्वक कर्म पुद्गलों को ग्रहण करना 'बंध' है।

४ आत्मा का कर्म पुद्गलों से सर्वथा मुक्त होना 'मोक्ष' है।

५. शुभ कर्म प्रकृतियाँ 'पुण्य' रूप है।

६ अशुभ कर्म प्रकृतियाँ 'पाप' रूप है।

७. कर्म बंध के समस्त हेतु 'आश्रव' है।

८. आश्रव का निरोध संवर' है।

९. आत्मा से कर्म पुद्गलों का हटाना 'निर्जरा' है।

१० अष्टकर्म वेदन की अपेक्षा से 'वेदना' एक है।

णमो सिद्धाण

तृतीयअंग

स्थानांग सूत्र

एक स्थान

१ हे आयुष्मन् शिष्य ! मैंने सुना है, उन भगवान् महावीर ने इस प्रकार कहा है।

२ आत्मा एक है।[1]

---

१ प्रत्येक वस्तु सामान्य-विशेषात्मक है। सामान्य की अपेक्षा आत्मा एक है। क्योंकि उसका उपयोगरूप लक्षण प्रत्येक आत्मा मे पाया जाता है। विशेष की अपेक्षा आत्मा अनेक है। सामान्य विवक्षा से चैतन्यमय आत्मा एक है। इसी तरह सर्वत्र समझ लेना चाहिए। द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा से यहां विवक्षित पदार्थो का एकत्व जानना चाहिये।

३३ वेदना एक है।[1] ३४ छेदन एक है।

३५ भेदन एक है।

३६ चरम शरीरो का मरण एक ही होता है।

३७ पूर्ण शुद्ध तत्वज्ञ पात्र-अतिशय ज्ञानादि गुण रत्नो का पात्र अथवा गुणप्रकर्ष को प्राप्त 'केवली या तीर्थंकर' एक है।

३८ स्वकृत कर्म फल भोगी होने से जीवो का दुख एकसा है। [१] सर्व भूत--जीव सामान्य विवक्षा से एक है। [१-२]

३९ जिसके सेवन से आत्मा को क्लेश प्राप्त होता है वह अधर्म प्रतिज्ञा एक है।

४० जिसके आचरण से आत्मा विशिष्ट ज्ञानादि पर्याय युक्त होता है वह धर्म प्रतिज्ञा एक है।

४१ देव[2], असुर[3] और मनुष्यो का एक समय मे मनोयोग एक ही होता है। वचन योग और काय योग भी एक ही होता है। [३]

४२ देव, असुर और मनुष्यो के एक समय मे एक ही उत्थान, कर्म, बल, वीर्य और पौरुष पराक्रम होता है।

४३ ज्ञान एक है। दर्शन एक है। चारित्र एक है। [३]

---

१. ज्वर आदि रोगो के वेदन की अपेक्षा से 'वेदना' एक है।

२. ज्योतिषी और वैमानिक देवो की 'देव' संज्ञा है।

३ भवनपति और व्यन्तर देवो की 'असुर' सज्ञा है।

१८ जीवो की वाह्य पुद्गलो को ग्रहण किये विना की जाने वाली (भवधारणीय) विकुर्वणा एक है।[1]

१९ मन का व्यापार एक है। २० वचन का व्यापार एक है।

२१ काया का व्यापार एक है।

२२ उत्पाद एक है।[2] २३ विनाश एक है।

२४ मृतात्मा का शरीर एक है अथवा विशिष्ट उपपत्ति पद्धति अथवा विशिष्ट वेशभूषा एक है।[3]

२५ गति एक है। २६ आगति एक है।

२७ च्यवन-मरण[4] एक है। २८ उपपात[5] जन्म एक है।

२९ तर्क-विमर्श एक है। ३० सज्ञा एक है।[6]

३१ मनन-शक्ति एक है। ३२ विज्ञान एक है।

---

१ नारक और देवो का जीवन पर्यन्त रहनेवाला शरीर 'भवधारणीय' कहा जाता है। उत्पत्ति समय मे इस शरीर से अनवगाहित आकाश प्रदेश मे रहे हुए पुद्गल 'वाह्य कहे जाते हैं। इन बाह्य पुद्गलो का 'विकुर्वण' अर्थात् शरी : में उपयोग नहीं होता।

२. एक समय मे एक पर्याय की अपेक्षा से एकत्व है।

३ 'विवच्चा' इस पाठान्तर के ये दो वैकल्पिक अर्थ हैं।

४ देवताओ का मरण 'च्यवन' कहा जाता है।

५. देवताओ का जन्म 'उपपात' कहा जाता है।

६ व्यजनावग्रह के पश्चात् होनेवाला ज्ञान 'सज्ञा' है।

मधुर एक है। [५]
कर्कश —यावत्— रूक्ष एक है। [८]

४८ प्राणातिपात (हिंसा) —यावत्— परिग्रह एक है।
क्रोध —यावत्— लोभ एक है।
राग एक है —यावत्—
परपरिवाद–निन्दा एक है।
रति-अरति एक है।
मायामृषा-कपटयुक्त झूठ एक है।
मिथ्यादर्शन शल्य एक है। [१८]

४९ प्राणातिपात-विरमण एक है —यावत्— परिग्रह-विरमण एक है। [५]
क्रोध-त्याग एक है —यावत्— मिथ्यादर्शन-शल्य-त्याग एक है। [१३][१८]

५० अवसर्पिणी एक है।
सुषमसुषमा एक है —यावत्— दुषमदुषमा एक है। [७]
उत्सर्पिणी एक है।]७]
दुषमदुषमा एक है —यावत्— सुषमसुषमा एक है। [१४]

५१ (१) नारकीय के जीवों की वर्गणा[1] एक है।
असुरकुमारों की वर्गणा एक है, —यावत्—
वैमानिक देवों की वर्गणा एक है। [२४]

---

१ समूह।

४४ समय एक है।

४५ प्रदेश एक है।

परमाणु एक है। [२]

४६ सिद्धि एक है, सिद्ध एक है।

परिनिर्वाण एक है, परिनिर्वृत एक है। [४]

४७ शब्द एक है। रूप एक है।

गंध एक है। रस एक है।

स्पर्श एक है। [५]

शुभ शब्द एक है। अशुभ शब्द एक है। [२]

सुरूप एक है। कुरूप एक है। [२]

दीर्घ एक है। ह्रस्व एक है। [२]

वर्तुलाकार 'लड्डू के समान गोल' एक है।

त्रिकोण एक है।

चतुष्कोण एक है।

पृथुल-विस्तीर्ण एक है।

परिमंडल-चूडी के समान गोल एक है। [५]

काला एक है। नीला एक है।

लाल एक है। पीला एक है।

श्वेत एक है। [५]

सुगन्ध एक है। दुर्गन्ध एक है। [२]

तिक्त एक है। कटुक एक है।

कषाय एक है। अम्ल एक है।

सम्यग्दृष्टि द्वीन्द्रिय जीवो की वर्गणा एक है।
मिथ्यादृष्टि द्वीन्द्रिय जीवो की वर्गणा एक है।
इसी प्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवो की वर्गणा एक है।

शेप नरक जीवो के समान —यावत्— मिश्रदृष्टि वाले वैमानिको की वर्गणा एक है। [६२]

(४) कृष्णपाक्षिक जीवो की वर्गणा एक है।[1]
शुक्लपाक्षिक जीवो की वर्गणा एक है।[2]
कृष्णपाक्षिक नरक जीवो की वर्गणा एक है।
शुक्ल-पाक्षिक नरक-जीवो का वर्गणा एक है।
इसी प्रकार चौवीस दण्डक मे समझ लेना चाहिए। [५०]

(५) कृष्ण लेश्या वाले जीवो की वर्गणा एक है।
नील लेश्या वाले जीवो की वर्गणा एक है।
इसी प्रकार —यावत्— शुक्ल लेश्या वाले जीवो की वर्गणा एक है।

कृष्णलेश्या वाले नैरयिको की वर्गणा —यावत्— कापोतलेश्या वाले नैरयिको की वर्गणा एक है।

---

१ अर्धपुद्गल परावर्तन से अधिक भवभ्रमण करने वाला 'कृष्ण पाक्षिक' कहा जाता है।

२ अर्धपुद्गल परावर्तन से अल्प भवभ्रमण करनेवाला 'शुक्ल-पाक्षिक' कहा जाता है।

(२) भव्य जीवो की वर्गणा एक है।[1]
अभव्य जीवो की वर्गणा एक है।[2]
भव्य नरक जीवो की वर्गणा एक है।
अभव्य नरक जीवो की वर्गणा एक है।
इस प्रकार —यावत्— भव्य वैमानिक देवो की वर्गणा एक है।
अभव्य वैमानिक देवो की वर्गणा एक है। [५०]

(३) सम्यग्दृष्टियो की वर्गणा एक है।[3]
मिथ्यादृष्टियो की वर्गणा एक है।
मिश्रदृष्टि वालो की वर्गणा एक है।
सम्यग्दृष्टि वाले नरक जीवो की वर्गणा एक है।
मिथ्यादृष्टि वाले नरक जीवो की वर्गणा एक है।
मिश्रदृष्टि वाले नरक जीवो की वर्गणा एक है।
इसी प्रकार —यावत्— स्तनित कुमारो की वर्गणा एक है।
मिथ्यादृष्टि पृथ्वीकाय के जीवो की वर्गणा एक है।
—यावत्— वनस्पतिकाय के जीवो की वर्गणा एक है।

---

१ जो जीव मुक्त होने योग्य है वह "भव्य" है।
२ जो जीव मुक्त होने योग्य नहीं है। "अभव्य" है।
३. क्षायिक क्षायोपशमिक और औपशमिक सम्यग्दृष्टि भी इसी के अन्तर्गत है।

इस प्रकार छः लेश्याओ मे जिसकी जितनी दृष्टिया है उसके उतने पद जानने चाहिए । [२२०]

(८) कृष्णलेश्या वाले कृष्णपाक्षिक जीवो की वर्गणा एक है। कृष्णलेश्या वाले शुक्लपाक्षिक जीवो की वर्गणा एक है। इस प्रकार विमानवासी देव पर्यंत जिसकी जितनी लेश्याए हो उसके उतने पद समझ लेने चाहिए।[१६२]

ये आठ चौबीस दण्डक जानने चाहिए।

तीर्थसिद्ध जीवो की वर्गणा एक है।

अतीर्थसिद्ध जीवो की वर्गणा एक है —यावत्—

एकसिद्ध जीवो की वर्गणा एक है।

अनेकसिद्ध जीवो की वर्गणा एक है। [१५]

प्रथम समय सिद्ध जीवो की वर्गणा एक है —यावत्—

अनन्त समय सिद्ध जीवो की वर्गणा एक है। [१३]

परमाणु पुद्गलो की वर्गणा एक है।

इस प्रकार अनन्त प्रदेशी स्कन्धो की वर्गणा —यावत्— एक है।

एक प्रदेशावगाढ पुद्गलो की वर्गणा एक है —यावत्—

असख्य प्रदेशावगाढ पुद्गलो की वर्गणा एक है। [१२]

एक समय की स्थिति वाले पुद्गलो की वर्गणा एक है। —यावत्—असंख्य समय की स्थिति वाले पुद्गलोकी वर्गणा एक है। [१२]

इस प्रकार जिसकी जितनी लेश्याएं हैं उसकी उतनी वर्गणा समझ लेनी चाहिएं।

भवनपति, वानव्यन्तर, पृथ्विकाय, अप्काय और वनस्पतिकाय मे चार लेश्याएं हैं।

तेजस्काय, वायुकाय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय मे तीन लेश्याएं है।

तिर्यंच पचेन्द्रिय और मनुष्यों में छः लेश्याएं हैं।
ज्योतिष्क देवो मे एक तेजो लेश्या है।

वैमानिक देवो मे ऊपर की तीन लेश्याएं हैं।
इनकी इतनी ही वर्गणा जाननी चाहिएं। [९६]

(६) कृष्णलेश्या वाले भव्य जीवो की वर्गणा एक है।
कृष्णलेश्या वाले अभव्य जीवों की वर्गणा एक है।
इसी प्रकार छहो लेश्याओ मे दो दो पद कहने चाहिए।
कृष्णलेश्या वाले भव्य नैरयिकों की वर्गणा एक है।
कृष्णलेश्या वाले अभव्य नैरयिकों की वर्गणा एक है।
इस प्रकार विमानवासी देव पर्यंत जिसकी जितनी लेश्याए है उसके उतने ही पद समझ लेने चाहिए। [१९२]

(७) कृष्णलेश्या वाले सम्यक्दृष्टि जीवों की वर्गणा एक है।
कृष्णलेश्या वाले मिथ्यादृष्टि जीवों की वर्गणा एक है।
कृष्णलेश्या वाले मिश्रदृष्टि जीवों की वर्गणा एक है।

५२ सब द्वीप समुद्रो के मध्य मे रहा हुआ —यावत्—
जम्बूद्वीप एक है ।[1]

५३ इस अवसर्पिणी काल मे चौवीस तीर्थंकरो मे से अन्तिम तीर्थंकर श्रमण भगवान् महावीर अकेले सिद्ध हुए, बुद्ध हुए, मुक्त हुए, निर्वाण को प्राप्त हुए एव सब दुखो से रहित हुए।

५४ अनुत्तरोपपातिक देवो की ऊचाई एक हाथ की है।

५५ आर्द्रा नक्षत्र का एक तारा कहा गया है।
चित्रा नक्षत्र का एक तारा कहा गया है।
स्वाति नक्षत्र का एक तारा कहा गया है। [३]

५६ एक प्रदेश मे रहे हुए पुद्गल अनन्त कहे गए है।
इसी प्रकार एक समय की स्थिति वाले—
एक गुण काले पुद्गल अनन्त कहे गए है —यावत्—
एक गुण रूक्ष पुद्गल अनन्त कहे गए हैं। [२१]

---

१ तीन लाख सोलह हजार दो सो सत्तावीस योजन तीन कोस एक सौ अट्ठावीस धनुष, साढे तेरह अंगुल और कुछ अधिक परिधि वाला जम्बूद्वीप एक है।

एक गुण काले पुद्गलो की वर्गणा एक है —यावत्—
असख्य गुण काले पुद्गलो की वर्गणा एक है।
अनन्त गुण काले पुद्गलो की वर्गणा एक है। [१३]
इस प्रकार वर्ण, गध, रस और स्पर्श का कथन करना चाहिए
—यावत्—

अनन्त गुण रूक्ष पुद्गलो की वर्गणा एक है। [२६०]
जघन्य प्रदेशी स्कन्धो की वर्गणा एक है।
उत्कृष्ट प्रदेशी स्कन्धो की वर्गणा एक है।
न जघन्य न उत्कृष्ट प्रदेशी स्कन्धो की वर्गणा एक है। [३]
इसी प्रकार जघन्यावगाढ, उत्कृष्टावगाढ और अजघन्योत्कृष्टावगाढ। [३]

जघन्यस्थिति वाले, उत्कृष्टस्थिति वाले, अजघन्योत्कृष्ट स्थिति वाले। [३]
जघन्यगुण काले, उत्कृष्टगुण काले, अजघन्योत्कृष्टगुण काले जानें।
इसी प्रकार वर्ण गध, रस, स्पर्श वाले पुद्गलो की वर्गणा एक है —यावत्—
अजघन्योत्कृष्ट गुण रूक्ष पुद्गलो की वर्गणा एक है। [६०]
[१२८०]

अन्य तत्वो का स्वपक्ष और प्रतिपक्ष इस प्रकार है :

५९ वध और मोक्ष,
पुण्य और पाप,
आस्रव और सवर,
वेदना और निर्जरा। [४]

६० क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
जीव क्रिया और अजीव क्रिया[1]।
जीव क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
सम्यक्त्व क्रिया और मिथ्यात्व क्रिया।
अजीव क्रिया दो प्रकार की कही गई है,यथा-
ऐर्यापथिकी[2] और साम्परायिकी[3]।
क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

---

१. अजीव पुद्गलों का कर्मरूप मे परिणमन ।

[क] इस क्रिया का कर्ता यद्यपि जीव होता है किन्तु इसमें अजीव पुद्गलो का कर्मरूप मे परिणमन होता है इसलिये यह अजीवक्रिया कही जाती है।

[ख] उपशान्तमोह आदि तीन गुणस्थानवर्ती जीव केवल योग [मन, वचन, काय] द्वारा पुद्गलो को साता वेदनीय के रूप मे परिणत करता है वह ऐर्यापथिकी क्रिया है।

४. सपराय अर्थात् कषाय तज्जन्य व्यापार साम्परायिकी क्रिया है।

दो स्थान

प्रथम उद्देशक

५७ लोक मे जो कुछ है वह सब दो प्रकार का है,[1] यथा-
जीव और अजीव ।

जीव का द्वैविध्य इस प्रकार है ·

त्रस और स्थावर,
सयोनिक और अयोनिक,
सायुष्य और निरायुष्य,
सेन्द्रिय और अनेन्द्रिय,
सवेदक और अवेदक,
सरूपी और अरूपी,
सपुद्गल और अपुद्गल,
ससार समापन्नक 'ससारी'
अससार-समापन्नक 'सिद्ध'
शाश्वत और अशाश्वत । [१०]

५८ अजीव का द्वैविध्य इस प्रकार है :

आकाशास्तिकाय और नो आकाशास्तिकाय[2]
धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय । [२]

---

१. स्वपक्ष और प्रतिपक्ष रूप से ।

२. धर्मास्तिकाय आदि ।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

आरम्भिकी[1] और पारिग्रहिकी।

आरम्भिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

जीव आरम्भिकी और अजीव आरम्भिकी।

इसी तरह पारिग्रहिकी क्रिया भी दो प्रकार की कही गई है, यथा-

जीव-पारिग्रहिकी और अजीव-पारिग्रहिकी।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

माया-प्रत्ययिकी और मिथ्यादर्शन-प्रत्ययिकी।

माया-प्रत्ययिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

आत्म-भाव-वकनता[2] और पर-भाव-वकनता[3]।

मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

ऊनातिरिक्त मिथ्यादर्शन, प्रत्ययिकी[4]
तद्व्यतिरिक्त मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी[5]।

---

१. जीव हिंसादि सावद्य अनुष्ठान से होने वाली।

२. श्रेष्ठ न होते हुए अपने आपको श्रेष्ठ कहना।

३ मिथ्यालेख आदि से दूसरे को ठगना।

४. [क] आत्मा को अंगुष्ठ प्रमाण कहना ऊन मिथ्या दर्शन है।

[ख] आत्मा को सर्वव्यापक कहना अतिरिक्त मिथ्या दर्शन है।

५. आत्मा को न मानने से लगने वाली क्रिया।

कायिकी और आधिकरणिकी[1] ।

कायिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

अनुपरतकाय क्रिया और दुष्प्रयुक्तकाय क्रिया ।

आधिकरणिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

संयोजनाधिकरणिकी और निर्वर्तनाधिकरणिकी ।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

प्राद्वेषिकी और पारितापनिकी ।

प्राद्वेषिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

जीव-प्राद्वेषिकी और अजीव-प्राद्वेषिकी ।

पारितापनिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

स्वहस्तपारितापनिकी और परहस्तपारितापनिकी ।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

प्राणातिपात क्रिया और अप्रत्याख्यान क्रिया ।

प्राणातिपात क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

स्वहस्त प्राणातिपात क्रिया,
परहस्त प्राणातिपात क्रिया ।

अप्रत्याख्यान क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

जीव अप्रत्याख्यान क्रिया,
अजीव अप्रत्याख्यान क्रिया ।

---

१. (क) जिस क्रिया द्वारा आत्मा अधोगति में जावे वह 'अधिकरणिकी क्रिया' कही जाती है ।

(ख) शस्त्र को अधिकरण कहते हैं, उसके द्वारा होने वाली क्रिया भी अधिकरणिकी कही जाती है ।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

आज्ञापनिकी और वैदारिनी ।

नैसृष्टिकी क्रिया की तरह इनके भी दो दो भेद जानने चाहिए ।

दो क्रियाए कही गई है, यथा-

अनाभोगप्रत्यया और अनवकाक्षप्रत्यया[1] ।

अनाभोगप्रत्यया क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

अनायुक्त आदानता[2] और अनायुक्त प्रमार्जनता[3] ।

अनवकाक्षप्रत्यया क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

आत्म-शरीर-अनवकाक्षा प्रत्यया[4] ।

पर-शरीर-अनवकाक्षा प्रत्यया[5] ।

दो क्रियाए कही गई है, यथा-

राग-प्रत्यया और द्वेष-प्रत्यया ।

राग-प्रत्यया क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

माया-प्रत्यया और लोभ-प्रत्यया ।

द्वेष-प्रत्यया क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

क्रोध-प्रत्यया और मान-प्रत्यया । [३६]

---

१ अपने और दूसरे के शरीर को क्षति पहुंचाने वाले कर्म करने से लगने वाली क्रिया ।

२ स्वशरीर के प्रति बेपरवाह होकर वर्तन करना ।

३. उपयोग शून्य होकर वस्तु के लेने या रखने से लगने वाली क्रिया ।

४. उपयोग शून्य प्रमार्जन करने से लगने वाली क्रिया ।

५. पर शरीर के प्रति बेपरवाह होकर वर्तन करना ।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

दृष्टिजा और पृष्टिजा अथवा स्पृष्टिजा ।

दृष्टिजा क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

जीव-दृष्टिजा और अजीव-दृष्टिजा ।

इसी प्रकार पृष्टिजा भी जाननी चाहिए ।

दो क्रियाए कही गई है, यथा-

प्रातीत्यिकी[1] और सामन्तोपनिपातिकी[2] ।

प्रातीत्यिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

जीव-प्रातीत्यिकी[3] और अजीव-प्रातीत्यिकी[4] ।

इसी प्रकार सामन्तोपनिपातिकी भी जाननी चाहिए ।

दो क्रियाए कही गई है, यथा-

स्वहस्तिकी[5] और नैसृष्टिकी[6] ।

स्वहस्तिकी क्रिया दो प्रकार का कही गई है, यथा-

जीव-स्वहस्तिकी ओर अजीव-स्वहस्तिकी ।

नैसृष्टिकी क्रिया भी इसी प्रकार समझनी चाहिए ।

---

१ वाह्य वस्तु के निमित्त से होने वाली क्रिया ।

२ अनेक लोगों द्वारा की हुई प्रशसा सुनने से होने वाली ।

३ अश्व आदि जीव की प्रशंसा सुनने से होने वाली ।

४. रथ आदि अजीव पदार्थो की प्रशसा सुनने से होने वाली ।

५ अपने हाथ से लगने वाली क्रिया ।

६ किसी पदार्थ के निक्षेपण से होने वाली ।

आरम्भ और परिग्रह ।

दो स्थान जाने बिना और त्यागे बिना आत्मा गृहवास का त्याग कर और मुण्डित होकर शुद्ध प्रव्रज्या अगीकार नही कर सकता है, यथा-

आरम्भ और परिग्रह ।

इसी प्रकार—

शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन नही कर सकता है,
शुद्ध सयम से अपने आपको सयत नही कर सकता है,
शुद्ध सवर से सवृत नही हो सकता है,
सम्पूर्ण मतिज्ञान नही प्राप्त कर सकता है,
सम्पूर्ण श्रुतज्ञान,
अवधिज्ञान,
मन· पर्यायज्ञान और
केवल ज्ञान-
नही प्राप्त कर सकता है । [११]

६५ दो स्थानो को जान कर और त्याग कर आत्मा केवलि प्ररूपित धर्म सुन सकता है—यावत्—केवलज्ञान प्राप्त कर सकता है, यथा-

आरम्भ और परिग्रह । [११]

६६ दो स्थानो से आत्मा केवलि प्ररूपित धर्म सुन सकता है, —यावत्— केवलज्ञान प्राप्त कर सकता है । यथा-
श्रद्धापूर्वक 'धर्मकी उपादेयता' सुनकर और समझकर [११]

६१ गर्हा—पाप की निन्दा दो प्रकार की कही गई है, यथा-

कुछ प्राणी केवल मन से ही पाप की निन्दा करते हैं,

कुछ केवल वचन से ही पाप की निन्दा करते हैं।

अथवा—गर्हा के दो भेद कहे गये हैं, यथा-

कोई प्राणी दीर्घ काल पर्यन्त 'आजन्म' गर्हा करता है,

कोई प्राणी थोड़े काल पर्यन्त गर्हा करता है ।[२]

६२ प्रत्याख्यान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

कोई कोई प्राणी केवल मन से प्रत्याख्यान करते हैं,

कोई कोई प्राणी केवल वचन से प्रत्याख्यान करते हैं ।

अथवा—प्रत्याख्यान के दो भेद कहे गए हैं, यथा-

कोई दीर्घकाल पर्यन्त प्रत्याख्यान करते हैं

कोई अल्पकालीन प्रत्याख्यान करते है । [२]

६३ दो गुणो से युक्त अनगार अनादि, अनन्त, दीर्घकालीन चार गति रूप भवाटवी को पार कर लेता है, यथा-

विद्या[1] और चारित्र[2] से ।

६४ दो स्थानो को जाने विना और त्यागे विना आत्मा को केवली-प्ररूपित धर्म सुनने के लिए नही मिलता, यथा-

आरम्भ और परिग्रह ।

दो स्थान जाने विना और त्यागे विना आत्मा शुद्ध सम्यक्त्व नही पाता है, यथा-

---

१. यहा 'विद्या' ज्ञान का पर्यायवाची है ।

२ यहां 'चारित्र' क्रिया का पर्यायवाची है ।

सम्यग्दर्शन[1] और मिथ्यादर्शन[2]।

सम्यग्दर्शन के दो भेद कहे गये हैं, यथा-

निसर्ग सम्यग्दर्शन[3] और अभिगम सम्यग्दर्शन।[4]

निसर्ग सम्यग्दर्शन के दो भेद गये कहे हैं, यथा-

प्रतिपाति[5] और अप्रतिपाति[6]।

अभिगम सम्यग्दर्शन के दो भेद कहे गये हैं, यथा-

प्रतिपाति और अप्रतिपाति। [४]

मिथ्यादर्शन दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

अभिग्रहिक मिथ्यादर्शन और अनभिग्रहिक मिथ्या दर्शन।

अभिग्रहिक मिथ्यादर्शन दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

सपर्यवसित (सान्त) और अपर्यवसित (अनन्त),

इसी प्रकार अनभिग्रहिक मिथ्यादर्शन के भी दो भेद जानने चाहिए। [२][७]

१, तत्त्वार्थ की सम्यक् श्रद्धा "सम्यग्दर्शन" है।

२. तत्त्वार्थ की विपरीत श्रद्धा "मिथ्यादर्शन" है।

३. बिना किसी उपदेश के होने वाली सम्यक् श्रद्धा 'निसर्ग सम्यग्दर्शन' है।

४. किसी के उपदेश, से होने वाली सम्यक् श्रद्धा 'अभिगम सम्यग्दर्शन' है।

५. नष्ट होने वाला।

६. नष्ट न होने वाला।

६७ दो प्रकार का समय कहा गया है, यथा-

अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी।

६८ उन्माद दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

यक्ष के प्रवेश से होने वाला,

मोहनीय कर्म के उदय से होने वाला।

इसमे जो यक्षावेश उन्माद है उसका सरलता से वेदन हो सकता है और उसे सरलता से दूर किया जा सकता है। तथा जो मोहनीय के उदय से होने वाला है उसका कठिनाई से वेदन होता है और उसे कठिनाई से ही दूर किया जा सकता है।

६९ दण्ड दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

अर्थ-दण्ड[1] और अनर्थ-दण्ड[2]।

नैरयिक जीवो के दो दण्ड कहे गये हैं, यथा-

अर्थ-दण्ड और अनर्थ-दण्ड।

इसी तरह विमानवासी देव पर्यन्त चौवीस दण्डक समझ लेना चाहिये। [२]

७० दर्शन[3] दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

---

१ प्रयोजन से की जाने वाली हिंसा अर्थदण्ड है।

२ बिना प्रयोजन की जाने वाली हिंसा अनर्थदण्ड है।

३. दर्शन का अर्थ यहां श्रद्धा है।

एकानन्तर सिद्ध केवलज्ञान,

अनेकानन्तर सिद्ध केवलज्ञान ।

परम्परसिद्ध केवल ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

एक परम्पर सिद्ध केवल ज्ञान,

अनेक परम्पर सिद्ध केवल ज्ञान ।

नो केवलज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

अवधि ज्ञान और मन पर्याय ज्ञान ।

अवधि ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

भवप्रत्ययिक और क्षायोपशमिक ।

दो का अवधिज्ञान भवप्रत्ययिक कहा गया है, यथा-

देवताओ का और नैरयिको का ।

दो का अवधिज्ञान क्षायोपशमिक कहा गया है, यथा-

मनुष्यो का और तिर्यंच पचेन्द्रियो का ।

मन पर्यायज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

ऋजुमति और विपुलमति ।

परोक्ष ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

आभिनिवोधिक ज्ञान और श्रुतज्ञान ।

आभिनिबोधिक ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

श्रुतनिश्रित और अश्रुतनिश्रित ।

श्रुतनिश्रित दो प्रकार का कहा गया है,. यथा-

अर्थावग्रह और व्यजनावग्रह ।

अश्रुतनिश्रित के भी पूर्वोक्त दो भेद समझने चाहिए ।

श्रुतज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

७१ ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रत्यक्ष[1] और परोक्ष[2]।

प्रत्यक्ष ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

केवलज्ञान और नो केवलज्ञान।

केवलज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

भवस्थ-केवलज्ञान और सिद्ध-केवलज्ञान।

भवस्थ-केवलज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

सयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान,

अयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान।

सयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-सयोगी भवस्थ-केवलज्ञान,

अप्रथम-समयस-योगी-भवस्थ-केवलज्ञान।

अथवा -चरम-समय-सयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान,

अचरम-समय-सयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान।

इसी प्रकार-अयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान के भी दो भेद जानने चाहिए।

सिद्ध-केवलज्ञान के दो भेद कहे गये है, यथा-

अनन्तर-सिद्ध-केवलज्ञान और परम्पर-सिद्ध-केवलज्ञान।

अनन्तर सिद्ध केवलज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

---

१ आत्मा को इन्द्रियां और मन की सहायता के बिना होने वाला ज्ञान 'प्रत्यक्ष' ज्ञान है।

२. इन्द्रियां और मन की सहायता से होने वाला ज्ञान 'परोक्ष' ज्ञान है।

अथवा सूक्ष्म-सम्पराय-सराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

'संक्लिश्यमान' उपशम-श्रेणी से गिरते हुए जीव का,

'विशुध्यमान' उपशम-श्रेणी पर चढते हुए जीव का।

बादर-सम्पराय-सराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-बादर-सम्पराय-सराग-सयम,

अप्रथम-समय-बादर-सम्पराय-सयम ।

अथवा—चरम-समय-बादर-सम्पराय- सराग-सयम,

अचरम-समय-बादर-सम्पराय-सराग-सयम ।

अथवा बादर-सम्पराय-सराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रतिपाती और अप्रतिपाती ।

वीतराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

उपशान्त-कषाय-वीतराग-सयम,

क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम ।

उपशान्तकषाय वीतराग सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-उपशान्त-कषाय-वीतराग-सयम

अप्रथम-समय-उपशान्त-कषाय-वीतराग-सयम ।

अथवा चरम-समय-उपशान्त-कषाय-वीतराग-सयम,

अचरम-समय-उपशान्त-कषाय-वीतराग-सयम ।

क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

अंग-प्रविष्ट और अग-वाह्य ।

अग-वाह्य के दो भेद कहे गये है, यथा-

आवश्यक और आवश्यक-व्यतिरिक्त ।

आवश्यक-व्यतिरिक्त दो प्रकार का कहा गया हैं, यथा-

कालिक और उत्कालिक ।[२२]

७२ धर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

श्रुत-धर्म और चारित्र-धर्म ।

श्रुत-धर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

सूत्र-श्रुत-धर्म और अर्थ-श्रुत-धर्म ।

चारित्र धर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

अगार-चारित्र-धर्म और अनगार-चारित्र-धर्म । [३]

सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

सराग-सयम और वीतराग-संयम ।

सराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

सूक्ष्म-सम्पराय-सराग-संयम,

वादर-सम्परायसराग-सयम ।

सूक्ष्म-सम्पराय-सराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-सूक्ष्मसम्पराय-सराग-संयम,

अप्रथम-समय-सूक्ष्मसम्पराय-सराग-संयम ।

अथवा चरम-समय-सूक्ष्म-सम्पराय-सराग-सयम,

अचरम समयसूक्ष्म -सम्पराय -सराग -संयम ।

क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम दो प्रकार का कहा गया है।
यथा-

सयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम,
अयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम ।

सयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-सयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम,
अप्रथम-समय-सयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम ।

अथवा

चरम-समय-सयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतरागसयम,
अचरम-समय-सयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम।

अयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम,
अप्रथम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम ।

अथवा

चरम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम,
अचरम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम। [२१]

छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम,

केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम ।

छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

स्वय-बुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम,

बुद्ध-बोधित-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम ।

स्वयबुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-स्वयबुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम,

अप्रथम-समय-स्वयबुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम ।

अथवा चरम-समय-स्वयबुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम और अचरम-समय-स्वयबुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय वीतराग-सयम ।

बुद्ध-बोधित-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-बुद्ध-बोधित-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग सयम और अप्रथम-समय-बुद्ध-बोधित-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय वीतराग-सयम ।

अथवा चरम-समय और अचरम-समय-बुद्ध-बोधित-केवली

गति-समापन्नक और अगति-समापन्नक ।[५]

द्रव्य दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

गति-समापन्नक और अगति-समापन्नक ।[१]

पृथ्वीकायिक[1] जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

अनन्तरावगाढ[2] और परम्परावगाढ[3] ।

इस प्रकार —यावत्— द्रव्य दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

अनन्तरावगाढ और परम्परावगाढ । [६-२८]

७४ काल दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी । [१]

आकाश दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

लोकाकाश और अलोकाकाश । [१-२]

५ नैरयिक जीवो के दो शरीर कहे गये हैं, यथा-

आभ्यन्तर और बाह्य ।

कार्मण[4] आभ्यन्तर है और वैक्रिय बाह्य शरीर है।

देवताओ के शरीर भी इसी तरह कहने चाहिए ।

---

१ पृथ्वीकायिक आयुष्य के उदय से पृथ्वीकायिक कहे जाने वाले जीव विग्रह गति से उत्पत्ति स्थान मे जाते हुए ।

२. वर्तमान समय मे किसी एक आकाश प्रदेश मे अवगाढ ।

३. जिन्हे स्थित हुए दो तीन आदि समय हो गये हैं वे ।

४. कार्मण और तेजस आभ्यन्तर शरीर हैं किन्तु दोनो सर्वदा एक साथ रहते हैं इसलिए यहा एक कार्मण ही कहा गया है ।

७३ पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सूक्ष्म और बादर।

इस प्रकार —यावत्— दो प्रकार के वनस्पति कायिक जीव कहे गये हैं, यथा-

सूक्ष्म और बादर।[५]

पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

पर्याप्त और अपर्याप्त।

इस प्रकार —यावत्— दो प्रकार के वनस्पतिकायिक जीव कहे गये हैं, यथा-

पर्याप्त और अपर्याप्त।[५]

पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

परिणत और अपरिणत।

इस प्रकार —यावत्— दो प्रकार के वनस्पति कायिक जीव कहे गये हैं, यथा-

परिणत और अपरिणत।[५]

द्रव्य दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

परिणत और अपरिणत।[१]

पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

गतिसमापन्नक,

अगतिसमापन्नक (स्थित)।

इस प्रकार —यावत्— वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

यथा-

राग से 'रागजन्य कर्म से' और द्वेष से 'द्वेषजन्य कर्म से'। [१]

नैरयिक जीवो के शरीर दो कारणो से पूर्ण अवयव वाले होते है, यथा-

राग से 'रागजन्य कर्म से' पूर्ण अवयव वाले,

द्वेष 'द्वेष जन्य कर्म से' से पूर्ण अवयव वाले।

इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त समझना चाहिए। [१]

दो काय—'जीव समुदाय' कहे गये हैं, यथा-

त्रसकाय और स्थावरकाय।

त्रसकाय दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक।

इसी प्रकार स्थावरकाय भी समझना चाहिये। [३] [७]

७६ दो दिशाओ के अभिमुख होकर निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो को दीक्षा देना कल्पता है। यथा-

पूर्व और उत्तर।

इसी प्रकार—

प्रवजित करना, सूत्रार्थ सिखाना, महाव्रतो का आरोपण करना, सहभोजन करना, सहनिवास करना,

स्वाध्याय करने के लिए कहना,

पृथ्वीकायिक जीवो के दो शरीर कहे गये है, यथा-

आभ्यन्तर और वाह्य।

कार्मण आभ्यन्तर है और औदारिक वाह्य है।

वनस्पतिकायिक जीव पर्यन्त ऐसा समझना चाहिए[1]।

द्वीन्द्रिय जीवो के दो शरीर कहे गये है, यथा-

आभ्यन्तर और वाह्य।

कार्मण आभ्यन्तर है और हड्डी, मास, रक्त से बना हुआ औदारिक शरीर बाह्य है।

चतुरिन्द्रिय जीव पर्यन्त ऐसा ही समझना चाहिए।

पचेन्द्रिय तिर्यग्योनि के जीवो के दो शरीर है, यथा-

आभ्यन्तर और वाह्य।

कार्मण आभ्यन्तरहै और हड्डी, मास, रक्त, स्नायु और शिराओ से बना हुआ औदारिक शरीर वाह्य है।

इसी तरह मनुष्यो के भी दो शरोर समझने चाहिए।[१]

विग्रहगति-प्राप्त नैरयिको के दो शरीर कहे गये है, यथा-

तैजस और कार्मण।

इस प्रकार निरन्तर वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिए।[१]

नैरयिक जीवो के शरीर की उत्पत्ति दो स्थानो से होती है।

---

१ यद्यपि वायुकाय के जीवो को वैक्रिय शरीर भी होता है परन्तु वह प्रायिक होने से यहाँ विवक्षित नहीं है।

(बाहर देव लोक में उत्पन्न) हो चाहे विमानोपपन्न (ग्रैवेयक और अनुत्तर विमानो में उत्पन्न) हो और जो ज्योतिष्चक्र मे स्थित हो वे चाहे गतिरहित हो या सतत गमनशील हो— वे जो सदा —सतत— पापकर्म ज्ञानवरणादि का बध करते हैं उसका फल कतिपय देव तो उसी भव मे अनुभव कर लेते है और कतिपय देव अन्य भव मे वेदन करते हैं। नैरयिक जीव जो सदा —सतत— पापकर्म का वध करते है उसका फल कतिपय नैरयिक तो उसी भव मे अनुभव कर लेते है और कितनेक अन्य भव मे भी वेदना वेदते हैं। पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीव पर्यन्त ऐसा ही समझना चाहिए। मनुष्यो द्वारा जो सदा —सतत— पापकर्म का वध किया जाता है उसका फल कतिपय मनुष्य तो इसी मनुष्य भव मे अनुभव कर लेते है और कतिपय अन्य भव मे अनुभव करते हैं। मनुष्य को छोडकर शेप अभिलाप समान समझने चाहिए।

७८ नैरयिक जीवो की दो गति और दो आगति कही गई है, यथा-

नैरयिक जीवो के बीच उत्पन्न होता हुआ या तो मनुष्यो मे से या पचेन्द्रिय तिर्यंच जीवो मे से उत्पन्न होता है।

वही नैरयिक जीव नैरयिकत्व को छोडता हुआ मनुष्य अथवा पचेन्द्रिय तिर्यंच के रूप मे उत्पन्न होता है।

इसी तरह असुरकुमार असुरकुमारत्व को छोडता हुआ मनुष्य अथवा तिर्यंच के रूप मे उत्पन्न होता है।

अभ्यस्तशास्त्र को स्थिर करने के लिए कहना,
अभ्यस्तशास्त्र अन्य को पढाने के लिए कहना,
आलोचना करना, प्रतिक्रमण करना,
अतिचारो की निन्दा करना,
गुरु समक्ष अतिचारो की गर्हा करना,
लगे हुए दोप का छेदन करना, दोप की शुद्धि करना,
पुनः दोष न करने के लिए तत्पर होना,
यथायोग्य प्रायश्चित्त और
तपग्रहण करना कल्पता है।

दो दिशाओ के अभिमुख होकर निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो को मारणान्तिक सलेखना-तप विशेष से कर्म-शरीरको क्षीण करना, भोजन-पानी का त्याग कर पादपोपगमन सथारा[1] स्वीकार कर मृत्यु की कामना नही करते हुए स्थित रहना कल्पता है, यथा-

पूर्व और उत्तर।

द्वितीय उद्देशक

७७ जो देव ऊर्ध्वलोक मे उत्पन्न हुए हैं—वे चाहे कल्पोपन्न[1]

---

१ वृक्ष की तरह निश्चेष्ट होकर अनशन करना।

नैरयिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
प्रथमसमयोत्पन्न और अप्रथमसमयोत्पन्न ।
इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिए ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
आहारक और अनाहारक ।
इस प्रकार वैमानिक पर्यन्त समझ लेना चाहिए ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
उच्छ्वासक[1] और नोउच्छ्वासक ।[2]
यों वैमानिक पर्यन्त समझना चाहिये ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
सेन्द्रिय[3] और अनीन्द्रिय[4] ।
यों वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिये ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
पर्याप्त और अपर्याप्त ।
यों वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिये ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
संज्ञी और असंज्ञी ।

---

१ उच्छ्वास पर्याप्ति से पर्याप्त ।

२ उच्छ्वास पर्याप्ति पूर्ण न करनेवाले ।

३ इन्द्रियपर्याप्ति से पर्याप्त सेन्द्रिय ।

४ इन्द्रियपर्याप्ति पूर्ण न करनेवाले ।

इसी तरह सब देवो के लिए समझना चाहिए ।

पृथ्वीकाय के जीव दो गति और दो आगति वाले कहे गये है, यथा-

पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकाय मे उत्पन्न होता हुआ पृथ्वीकाय मे या नो-पृथ्वीकाय मे उत्पन्न होता है। वह पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकायिकत्व को छोड़ता हुआ पृथ्वीकाय मे अथवा नो-पृथ्वीकाय मे उत्पन्न होता है ।

इसी प्रकार मनुष्य-पर्यन्त समझना चाहिए। [२]

७९ नैरयिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

भवसिद्धिक[१] और अभवसिद्धिक[२] ।

इस प्रकार वैमानिक पर्यन्त समझना चाहिए ।

नैरयिक जीव दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

अनन्तरोपपन्नक[३] परम्परोपपन्नक[४] ।

इसी तरह वैमानिक पर्यन्त समझना चाहिए ।

नैरयिक जीव दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

गतिसमापन्नक[५] और अगतिसमापन्नक[६] ।

इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिए ।

---

१. भव्य ।

२. अभव्य ।

३ अन्तर रहित एक साथ उत्पन्न होने वाले ।

४. आगे पीछे उत्पन्न होने वाले ।

५. नरक में जाते हुए ।

६. नरक में स्थित ।

असंख्येकाल की स्थितिवाले ।

इस प्रकार एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय को छोड़कर वानव्यन्तर पर्यन्त पंचेन्द्रिय जीव समझने चाहिये[1] ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सुलभबोधिक और दुर्लभबोधिक ।

यों वैमानिक देव पर्यन्त जानना चाहिये ।

नैरयिक दो प्रकार कहे गये हैं । यथा-

कृष्णपाक्षिक और शुक्लपाक्षिक ।

यों वैमानिक देव पर्यन्त जानना चाहिये ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

चरम[2] और अचरम[3] ।

इस प्रकार वैमानिक देव पर्यन्त जानना चाहिये ।

८० दो प्रकार से आत्मा अधोलोक को जानता और देखता है. यथा-

वैक्रिय-समुद्घातरूप आत्मस्वभाव से 'अवधिज्ञानी' आत्मा अधोलोक को जानता और देखता है और वैक्रिय-समुद्घात किये बिना ही आत्म-स्वभाव से आत्मा अधोलोक

---

१. ज्योतिष्क और वैमानिक असंख्येय काल की स्थिति वाले ही होते है । एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय संख्यात काल की स्थिति वाले ही होते हैं ।

२. उस योनी में अन्तिम जन्म वाले।

३. उस योनी में पुनः जन्म लेने वाले।

यो विकलेन्द्रियो (पाच स्थावर और द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय एव चतुरिन्द्रिय) को छोडकर जो असज्ञी अवस्था से नैरयिक आदि के रूप मे उत्पन्न होते है वे असज्ञी व्यन्तर तक ही उत्पन्न होते है।

"ज्योतिष्क और वैमानिक मे नही" इस विवक्षा से उनका यहा ग्रहण नही करके वानव्यन्तर पर्यन्त कहा गया है। जिसने मन पर्याप्ति पूर्ण की हो वह सज्ञी और जिसने पूर्ण न की हो वह असज्ञी वानव्यन्तर पर्यन्त सब पचेन्द्रियो के विषय मे यह जानना चाहिये।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

भाषक और अभाषक।

यो एकेन्द्रिय को छोडकर शेष नव दण्डक मे समझ लेना चाहिये।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि।

इसी तरह एकेन्द्रिय को छोडकर शेष नव दण्डक मे समझना चाहिये।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

परित्तससारिक और अनन्तससारिक।

यों वैमानिक पर्यन्त समझना चाहिये।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

सख्येयकाल की स्थितिवाले,

और सर्व रूप से भी आत्मा शब्द सुनता है[1]।
इसी तरह रूप देखता है।
इसी तरह गंध सूँघता है।
इसी तरह रसों का आस्वादन करता है
इसी तरह स्पर्श का अनुभव करता है[2]। [५]

दो प्रकार से आत्मा प्रकाश करता है, यथा-
देश रूप से आत्मा प्रकाश करता है,
सर्वरूप से भी आत्मा प्रकाश करता है।
इसी तरह विशेष रूप से प्रकाश करता है।
इसी तरह विशेष रूप से वैक्रिय करता है।
इसी तरह परिचार मैथुन करता है।
इसी तरह विशेष रूप से भाषा बोलता है।
इसी तरह विशेष रूप से आहार करता है।
इसी तरह विशेष रूप से परिणमन करता है।
इसी तरह विशेष रूप से वेदन करता है।
इसी तरह विशेष रूप से निर्जरा करता है।

---

१. केवल कान से ही नहीं अपितु सम्पूर्ण शरीर से भी शब्द सुना जा सकता है। यह शक्ति भी विषेश साधना द्वारा प्राप्त हो सकती है।

२. आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी परीक्षण के पश्चात् यह तथ्य स्वीकार कर लिया है।

को जानता और देखता है।[1] (तात्पर्य यहहै कि)अवधि-ज्ञानी वैक्रिय-समुद्घात करके या वैक्रिय-समुद्घात किये विना ही अधोलोक को जानता है और देखता है।

इसी तरह तिर्यक् लोक को जानता और देखता है।

इसी तरह ऊर्ध्वलोक को जानता और देखता है।

इसी तरह परिपूर्णलोक को जानता और देखता है।

दो प्रकार से आत्मा अधोलोक को जानता और देखता है, यथा-

वैक्रिय शरीर वनाकर आत्मा (अवधिज्ञानी) अधोलोक को जानता और देखता है और वैक्रिय शरीर बनाए विना भी आत्मा अधोलोक को जानता और देखता है। (तात्पर्य यह है कि) अवधिज्ञानी वैक्रिय शरीर वनाकर अथवा वैक्रिय शरीर वनाए विना भी अधोलोक को जानता और देखता है।

इसी तरह तिर्यक् लोक आदि आलापक समझने चाहिये।[८]

दो प्रकार से आत्मा शब्द सुनता है। यथा-

देश रूप से आत्मा शब्द सुनता है।[2]

---

१. यह कथन शरीरस्थ आत्मा की अपेक्षा से हैं।

२. केवल कान से होन हीं अपितु शरीर के किसी एक देश से शब्द सुना जा सकता हैं। यह शक्ति विषेश साधना द्वारा प्राप्त हो सकती है।

भाषा शब्द दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
अक्षर सम्बद्ध और नो-अक्षर सम्बद्ध ।

नो भाषा शब्द दो प्रकार के कहे गये है, यथा-
आतोद्य[1] और नो-आतोद्य[2] ।

आतोद्य शब्द दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
तत[3] और वितत[4]

तत शब्द दो प्रकार के कहे गये है, यथा-
घन[5] और शुषिर[6] ।

इसी तरह वितत शब्द भी दो प्रकार का जानना चाहिये।

नो आतोद्य शब्द दो प्रकार के कहे गये है । यथा-
भूषण शब्द और नो-भूषण शब्द ।

नो-भूषण शब्द दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
ताल शब्द और कंसिका (वाद्य-विशेष का) शब्द अथवा लात-प्रहार का शब्द ।]८]

शब्द की उत्पत्ति दो प्रकार से होती है, यथा-

---

१. ढोल आदि के शब्द ।
२. बांस आदि के फटने से होने वाला शब्द ।
३. तारबद्ध वीणा आदि से होने वाला शब्द ।
४. नगारा आदि के शब्द ।
५. ताल देने वाले वाद्य का शब्द ।
६. मुंह से फूंक देकर बजाये जानेवाले वाद्यका शब्द ।

ये नव सूत्र-देश और सर्व दो प्रकार से हैं। [६]

देव दो प्रकार से शब्द सुनता है, यथा-

देव देश से भी शब्द सुनता है और सर्व से भी शब्द सुनता है —यावत्— निर्जरा करता है। [१४]

मरुत देव दो प्रकार के कहे गये है,[1] यथा-

एक शरीर वाले[2] और दो शरीर वाले[3]।

इसी तरह किन्नर, किंपुरुप, गंधर्व, नागकुमार, सुवर्णकुमार, अग्निकुमार, वायुकुमार—ये भी एक शरीर और दो शरीर वाले समझने चाहिए।

देव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

एक शरीर वाले और दो शरीर वाले। [६] [३६]

तृतीय उद्देशक

८१ शब्द दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

भापा शब्द और नो-भाषा शब्द।[4]

---

१ लोकान्तिक देव विपेश।

२ भवधारणीय शरीर की अपेक्षा।

३ उत्तर वैक्रिय की अपेक्षा।

४ अजीव से पैद होने वाला शब्द।

बद्धपार्श्व स्पृष्ट[1] और नो बद्धपार्श्व स्पृष्ट[2] ।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

पर्यायातीत (विवक्षित पर्याय से अतीत)

अपर्यायातीत ।

अथवा कर्म पुद्गल की तरह समस्त रूप से गृहीत और असमस्त रूप से गृहीत ।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

जीव द्वारा गृहीत और अगृहीत ।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

इष्ट और अनिष्ट ।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

कान्त और अकान्त ।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

प्रिय और अप्रिय ।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

मनोज्ञ और अमनोज्ञ ।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

मनाम (मन प्रिय) और अमनाम । [१८]

---

१. त्वचा से स्पृष्ट और सम्बद्ध जैसे घ्राणेन्द्रियादि ग्राह्य गंध, रस और स्पर्श

२ त्वचा से स्पृष्ट हो किन्तु बद्ध न हो जैसे श्रोत्रेन्द्रि द्वारा ग्राह्य पुद्गल ।

पुद्गलो के परस्पर मिलने से शब्द की उत्पत्ति होती है,

पुद्गलो के भेद से शब्द की उत्पत्ति होती है, [१] [६]

८२ दो प्रकार से पुद्गल परस्पर सम्बद्ध होते हैं, यथा-

स्वय (स्वभाव से) ही पुद्गल इकट्ठे हो जाते है,

अथवा अन्य के द्वारा पुद्गल इकट्ठे किये जाते है।

दो प्रकार से पुद्गल भिन्न भिन्न होते हैं, यथा-

स्वय ही पुद्गल भिन्न होते है।

अथवा अन्य के द्वारा पुद्गल भिन्न किये जाते है।

दो प्रकार से पुद्गल सडते है, यथा-

स्वय ही पुद्गल सडते है,

अथवा अन्य के द्वारा सडाये जाते है।

इसी तरह पुद्गल ऊपर गिरते है और

इसी तरह पुद्गल नष्ट होते है।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

भिन्न और अभिन्न।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

नष्ट होनेवाले और नही नष्ट होने वाले।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

परमाणु पुद्गल और परमाणु से भिन्न स्कन्ध आदि।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

सूक्ष्म और बादर।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

लघुमोकप्रतिमा और महती मोकप्रतिमा।

प्रतिमाए दो कही गई है, यथा-

यवमध्यचन्द्र प्रतिमा[1] और वज्रमध्यचन्द्र प्रतिमा[2]।]६]

सामायिक दो प्रकार की कही गई हैं, यथा-

आगार (देश विरति) सामायिक।

अनगार (सर्वविरति) सामायिक।[1] ११

---

१ 'जौ' के समान मध्यभाग वाली तथा चन्द्रमा के समान न्यूनाधिक होनेवाली प्रतिमा अर्थात् शुक्लपक्ष के प्रथम दिन एक कवल (कौर) आहार करे, दूसरे दिन दो कवल इस तरह पूर्णिमा के दिन पन्द्रह कवल आहार करे। इसके बाद कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा के दिन १५ कवल, द्वितीया के दिन १४ कवल इस तरह प्रतिदिन-एक एक कम करते हुए अमावस्या के दिन एक कवल आहार करे। इस प्रकारकी तपश्चर्या को यवमध्यचन्द प्रतिमा कहते हैं।

२ कृष्णपक्ष की प्रनिपदा को १५ कवल आहार करे तत्पश्चात् प्रति-दिन एक-एक कवल कम करते हुए अमावस्या के दिन एक कवल आहार करे और शुक्लपक्ष को एकम के दिन एक कवल अहार करे और प्रतिदिन एक-एक वढ़ाते पूर्णिमा के दिन १५ कवल आहार करे।

शुक्लपक्ष को एकम के दिन एक कवल आहार करे और प्रतिदिन एक-एक वढाते-वढाते पूर्णुमा को १५ कवल आहार करे। इस प्रकार के तप को वज्रमध्यचन्द प्रतिमा कहते हैं।

८३ शव्द दो प्रकार के कहे गये है, यथा-
गृहीत और अगृहीत।
इसी तरह इष्ट और अनिष्ट —यावत्— मनाम और अमनाम, शव्द जानने चाहिए।
इसी तरह रूप, गंध, रस और स्पर्श-प्रत्येक में छ छ आलापक जानने चाहिये। [६] [३०]

८४ आचार दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
ज्ञानाचार और नो-ज्ञानाचार।
नो ज्ञानाचार दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
दर्शनाचार और नो-दर्शनाचार।
नो-दर्शनाचार दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
चारित्राचार और नो चारित्राचार।
नो चारित्राचार दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
तपाचार और वीर्याचार,। [४]

प्रतिमाए (प्रतिज्ञाए) दो कही गई है, यथा-
समाधि प्रतिमा और उपधान प्रतिमा,
प्रतिमाए दो कही गई है, यथा-
विवेक प्रतिमा और व्युत्सर्ग प्रतिमा।
प्रतिमाए दो कही गई है, यथा-
भद्रा और सुभद्रा।
प्रतिमाए दो कही गई है, यथा-
महाभद्र और सर्वतोभद्र।
प्रतिमाए दो कही गई है, यथा-

दो प्रकार के जीव शुक्र (वीर्य) और शोणित (रक्त) से उत्पन्न होते है, यथा-

मनुष्य और तिर्यंच पचेन्द्रिय। [१]

स्थिति दो प्रकार की कही गई है, यथा-

कायस्थिति और भवस्थिति।

दो प्रकार के जीवो की कायस्थिति कही गई है, यथा-

मनुष्यो की और पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिको की[1]।

दो प्रकार के जीवो की भवस्थिति कही गई है, यथा-

देवो की और नैरयिको की। [२]

आयु दो प्रकार की कही गई है, यथा-

अद्धायु (भव बदलने पर भी कालान्तरानुगामी जैसे मनुष्यायु) और भवायु (भव बदलने पर बदलनेवाली)

दो प्रकार के जीवो की अद्धायु कही गई है, यथा-

मनुष्यो की और पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिको की।

दो प्रकार के जीवो की भवायु कही गई है, यथा-

देवो की और नैरयिको की।]३]

कर्म दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

प्रदेश कर्म और अनुभाव कर्म। [१]

---

१ एकेन्द्रियादि की भी होती हैं लेकिन यहां दो की ही विवक्षा है।

२ बीच में टूट सकने वाली

८५ दो प्रकार के जीवो का जन्म उपपात कहलाता है, यथा-
देवो और नैरयिको का।]१]
दो प्रकार के जीवों का मरना उद्वर्तन कहलाता है, यथा-
नैरयिको का और भवनवासी देवो का।
दो प्रकार के जीवों का मरना च्यवन कहलाता है, यथा-
ज्योतिष्को का और वैमानिको का ।]२]
दो प्रकार के जीवो की गर्भ मे उत्पत्ति होती है, यथा-
मनुष्यो की और पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिको की।
दो प्रकार के जीव गर्भ मे रहे हुए आहार करते है, यथा-
मनुष्य और तिर्यच पचेन्द्रिय।
दो प्रकार के जीव गर्भ मे वृद्धि पाते है, यथा-
मनुष्य और पचेन्द्रिय तिर्यच।

इसी प्रकार दो प्रकार के जीव गर्भ मे अपचय पाते हैं।
इसी प्रकार दो प्रकार के जीव गर्भ मे विकुर्वणा करते हैं।
इसी प्रकार दो प्रकार के जीव गर्भ मे गति-पर्याय पाते है।
इसी प्रकार दो प्रकार के जीव गर्भ मे समुद्धात करते है।
इसी प्रकार दा प्रकार के जीव गर्भ मे कालसयोग करते है।
इसी प्रकार दो प्रकार के जीव गर्भ से आयाति जन्म पाते है।

इसी प्रकार दो प्रकार के जीव गर्भ मे मरण पाते हैं। [१०[
दो प्रकार के जीवो का शरीर त्वचा और सन्धि वन्धन वाला कहा गया है, यथा-
मनुष्यो का और तिर्यन्च पचेन्द्रिय का। [१]

वहा महाऋद्धि वाले-यावत्-महान् सुख वाले और पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते हैं, यथा-

वेणुदेव गरुड़ और अनाढ़िय।

ये दोनो जम्बूद्वीप के अधिपति हैं। [१] [७]

८७ जम्बूद्वीप मे मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण म दो वर्षधर पर्वत कहे गये हैं, परस्पर सर्वथा समान, विशेषता रहित, विविधता रहित, लम्बई-चौड़ाई, ऊँचाई, गहराई, सस्थान और परिधि मे एक दूसरे का अतिक्रम नही करते हैं, यथा-

लघु हिमवान् और शिखरी।

इसी प्रकार महाहिमवान् और रुक्मि।

निषध और नीलवान् पर्वतो के सम्बन्ध मे जानना चाहिये। [३]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण मे हैमवत और एरण्यवत क्षेत्र मे दो गोल वैताढ्य पर्वत हैं जो अति समान, विशेषता और विविधता रहित —यावत्— उनके नाम, यथा-

शब्दापाती और विकटपाती। [१]

वहा महा ऋद्धि वाले —यावत्— पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते हैं, यथा-

स्वाति और प्रभास। [१]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण मे हरिवर्ष और रम्यक्वर्ष में दो गोल वैताढ्य पर्वत हैं जो अति-समान है —यावत्— जिनके नाम, यथा-

दो प्रकार के जीव यथावद्ध आयुष्य पूर्ण करते है, यथा-

देव और नैरयिक। [१]

दो प्रकार के जीवो की आयु सोपक्रमवाली कही है, यथा-

मनुष्यो की और पचेन्द्रिय तिर्यक्योनिको की। [१] [२८]

८६ जम्बूद्वीप मे मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण मे अत्यन्त तुल्य, विशेपता रहित, विविधता रहित, लम्बाई-चौड़ाई आकार एव परिधि मे एक दूसरे का अतिक्रम नही करनेवाले दो वर्प-क्षेत्र कहे गये है, यथा-

भरत और ऐरवत।

इसी तरह हैमवत और हिरण्यवत, हरिवर्प और रम्यक्वर्प जानने चाहिए।

इस जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के पूर्व और पश्चिम दिशा मे दो क्षेत्र कहे गये है जो अत्यन्त समान-विशेपता रहित है, यथा-

पूर्व विदेह और अपर विदेह,

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण मे दो कुरु(क्षेत्र) कहे गये है जो परस्पर अत्यन्त समान है, यथा-

देवकुरु और उत्तरकुरु। [५]

वहा दो विशाल महावृक्ष है जो परस्पर सर्वथा तुल्य, विशेपता रहित, विविधता रहित, लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई, गहराई, आकृति और परिधि मे एक दूसरे का अतिक्रम नही करते है, यथा-

कूट शाल्मली और जम्बू सुदर्शना। [१]

तिमिस्र गुफा और खण्ड-प्रपात गुफा। [१]

वहा महर्धिक —यावत्— पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते हैं, उनके नाम।

कृतमालक और नृत्यमालक। [१]

ऐरवत-दीर्घ वैताढ्य मे दो गुफाएं है जो अतिसमान है —यावत्—वहाँ कृतमालक और नृत्यमालक देव रहते हैं।[१]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण मे लघुहिमवान् वर्षधर पर्वत पर दो कूट कहे गये है जो परस्पर अति तुल्य- —यावत्—लम्बाई-चौड़ाई, ऊचाई सस्थान और परिधि मे एक दूसरे का अतिक्रमण नही करने वाले है, उनके नाम-यथा-

लघुहिमवान्कूट और वैश्रमणकूट।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण मे महाहिमवान् वर्षधर पर्वत पर दो कूट कहे गये है जो परस्पर अति तुल्य है उनके नाम-

महाहिमवन्कूट और वैडूर्यकूट।

इसी तरह निषध वर्षधर पर्वत पर दो कूट कहे गये है जो अति तुल्य है —यावत्— उनके नाम।

निषधकूट और रुचकप्रभकूट।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर मे नीलवान वर्षधर पर्वत पर दो कूट है जो अति तुल्य है —यावत्— उनके नाम।

नीलवतकूट और उपदर्शनकूट।

इसी तरह रुक्मिकूट वर्षधर पर्वत पर दो कूट हैं जो अति-

गन्धापाती और माल्यवत पर्याय। [१]

वहा महाऋद्धि वाले —यावत् पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते है, यथा-

अरुण और पद्म। [१]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण मे और देवकुरु के पूर्व और पश्चिम में अश्वस्कन्ध के समान अर्धचन्द्र की आकृति वाले दो वक्षस्कार पर्वत हैं जो परस्पर अति समान है —यावत्— उनके नाम।

सौमनस और विद्युत्प्रभ।

जम्बूद्वीपवर्त्ती मेरु पर्वत के उत्तर मे तथा कुरु के पूर्व और पश्चिम भाग मे अश्व स्कन्ध के समान, अर्धचन्द्र की आकृति वाले दो वक्षस्कार पर्वत हैं जो परस्पर अतिसमान है —यावत्–उनके नाम।

गन्धमादन और माल्यवान ।

जम्बूद्वीपवर्त्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण मे दो दो दीर्घ वेताढ्य पर्वत कहे गये है जो अतितुल्य हैं —यावत्— उनके नाम, यथा-

भरत दीर्घ वैताढ्य और ऐरवत दीर्घ वैताढ्य। [३]

उस भरत दीर्घ वैताढ्य मे दो गुफाए कही गई है जो अति तुल्य, अविशेष, विविधता रहित और एक दूसरी की लम्बाई, चौडाई, ऊचाई, सस्थान और परिधि मे अतिक्रम न करनेवाली है, उनके नाम।

तिगिच्छ द्रह और केसरी द्रह । [१]

देवियाँ 'धृति' और कीर्ति । [१]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण मे महाहिमवान् वर्षधर पर्वत के महापद्म द्रह मे से दो महानदिया प्रवाहित होती है, उनके नाम ।

रोहिता और हरिकान्ता ।

इसी तरह निषध वर्षधर पर्वत के तिगिच्छ द्रह मे से दो महानदियाँ प्रवाहित होती है, उनके नाम ।

हरिता और शीतोदा ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के उत्तर मे नीलवान् वर्षधर पर्वत के केसरी द्रह मे से दो महानदिया प्रवाहित होती हैं, उनके नाम ।

शीता और नारीकान्ता ।

इसी तरह रुक्मि वर्षधर पर्वत के महापुण्डरीक द्रह मे से दो महानदियाँ प्रवाहित होती है, उनके नाम ।

नरकान्ता और रूप्यकूला । [४]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण भरत क्षेत्र मे दो प्रपात द्रह हैं जो अतिसमान हैं —यावत्— उनके नाम ।

गगाप्रपात द्रह और सिन्धुप्रपात द्रह ।

इसी तरह हैमवतवर्ष में दो प्रपात द्रह हैं जो वहुममान है —यावत्— उनके नाम ।

रोहित-प्रपात द्रह और रोहिताश-प्रपात द्रह ।

तुल्य हैं —यावत्— उनके नाम।

रूक्मिकूट और मणिकाचनकूट।

इसी तरह शिखरी वर्षधर पर्वत पर दो कूट है जो अति तुल्य हैं —यावत्— उनके नाम, यथा-

शिखरीकूट और तिगिच्छकूट। [६-१६]

८ जम्बूद्वीपवर्त्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण मे लघुहिमवान् और शिखरी वर्षधर पर्वतो मे दो महान् द्रह हैं जो अति-मम, तुल्य, अविशेप, विचित्रतारहित और लम्बाई-चौडाई गहराई, सस्थान एव परिधि मे एक दूसरे का अतिक्रमण नहीं करने वाले हैं, उनके नाम।

पद्म द्रह और पुण्डरीक द्रह। [१]

वहां महाऋद्धि वाली —यावत्— पल्योपम की स्थिति वाली दो देविया रहती है, उनके नाम।

श्री देवी और लक्ष्मी देवी। [१]

इसी तरह महाहिमवान् और रुक्मि वर्षधर पर्वतों पर दो महाद्रह है जो अतिसमान हैं —यावत्— उनके नाम,

महापद्म द्रह और महापुण्डरिक द्रह। [१]

देवियो के नाम।

ह्री देवी और बुद्धि देवी। [१]

इसी तरह निपध और नीलवान पर्वतो मे-

—यावत्— उनके नाम ।

रक्ता और रक्तवती [१४] [३१]

८९ जम्बूद्वीपवर्ती भरत और ऐरवत क्षेत्र मे अतीत उत्सर्पिणी के सुषम दु.षम नामक आरे का काल दो कोडा कोडी सागरोपम का था ।

इसी तरह इस अवसर्पिणी के लिए भी समझना चाहिए ।

इसी तरह आगामी उत्सर्पिणी के —यावत्— सुषमदुषम आरे का काल दो कोडा कोडी सागरोपम होगा । [३]

जम्बूद्वीपवर्ती भरत-ऐरवत क्षेत्र मे गत उत्सर्पिणी के सुषम नामक आरे मे मनुष्य दो कोस की ऊचाई वाले थे । [१]

तथा दो पल्योपम की आयु वाले थे । [१]

इसी तरह इस अवसर्पिणी मे —यावत्— आयुष्य था । [२]

इसी तरह आगामी उत्सर्पिणी मे —यावत्— आयुष्य होगा । [२]

जम्बूद्वीप मे भरत और ऐरवत क्षेत्र मे एक समय मे एक युग मे दो अर्हत् वश उत्पन्न हुये, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे ।

इसी तरह चक्रवर्ती वश,

इसी तरह दशार वश । [३]

जम्बूद्वीपवर्ती भरत ऐरवत क्षेत्र मे एक समय मे दो अर्हत् उत्पन्न हुए, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे ।

इसी तरह दशार और चक्रवर्ती ।

इसी तरह बलदेव और वासुदेव दशार वशी —यावत्

जम्वूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण मे हरिवर्ष क्षेत्र मे दो प्रपात द्रह है जो अति समान है —यावत्— उनके नाम ।

हरि प्रपात द्रह और हरिकान्त प्रपात द्रह ।

जम्वूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण मे महाविदेह वर्ष मे दो प्रपात द्रह है जो अतिसमान है —यावत्— उनके नाम ।

शीता प्रपात द्रह और शीतोदा प्रपात द्रह ।

जम्वूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर मे रम्यक् वर्ष मे दो प्रपात द्रह है जो वहुसमान है —यावत्— उनके नाम ।

नरकान्त प्रपात द्रह और नारीकान्त प्रपात द्रह ।

इसी तरह हेरण्यवत मे दो प्रपात द्रह है उनके नाम ।

सुवर्णकूल प्रपात द्रह और रुप्यकूल प्रपात द्रह ।

जम्वूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर मे ऐरवत वर्ष मे दो प्रपात द्रह है और अतिसमान है —यावत्— उनके नाम

रक्त प्रपात द्रह और रक्तावती प्रपात द्रह । [७]

जम्वूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण में भरत वर्ष मे दो महानदियाँ है जो अतिसमान है । —यावत्— उनके नाम ।

गगा और सिन्धु ।

इसी तरह जितने प्रपात द्रह कहे गये हैं उतनी नदिया भी समझ लेनी चाहिए —यावत्—

ऐरवत वर्ष मे दो महानदियाँ है जो अतिसमान तुल्य है

दो सूर्य तपते थे, तपते हैं और तपते रहेगे।
दो कृत्तिका, दो रोहिणी, दो मृगशिर, दो आर्द्रा इस प्रका
निम्न गाथाओ के अनुसार सब दो दो जान लेने चाहिए।

अट्ठाइस नक्षत्र

१. दो कृत्तिका,	२. दो रोहिणी,
३. दो मृगशिर,	४. दो आर्द्रा,
५. दो पुनर्वसु,	६. दो पुष्य,
७ दो अश्लेषा,	८. दो मघा,
९. दो पूर्वाफाल्गुनी,	१० दो उत्तराफाल्गुनी,
११. दो हस्त,	१२. दो चित्रा,
१३. दो स्वाती,	१४ दो विशाखा,
१५. दो अनुराधा,	१६. दो ज्येष्ठा,
१७. दो मूल,	१८. दो पूर्वाषाढा,
१९. दो उत्तरापाढा,	२०. दो अभिजित्,
२१. दो श्रवण,	२२. दो धनिष्ठा,
२३. दो शतभिशा,	२४. दो पूर्वा भाद्रापदा,
२५. दो उत्तारा भाद्रपदा,	२६. दो रेवती,
२७ दो अश्विनी,	२८ दो भरणी,

अट्ठाइस नक्षत्रो के देवता

१ दो अग्नि,	२ दो प्रजापति,

उत्पन्न हुए, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होंगे। [३]

जम्बूद्वीपवर्ती दोनो कुरु क्षेत्र मे मनुष्य सदा सुषम-सुषम काल की उत्तम ऋद्धि को प्राप्त कर उनका अनुभव करते हुए रहते है, यथा-

देवकुरु और उत्तरकुरु।

जम्बूद्वीपवर्ती दो क्षेत्रो मे मनुष्य सदा सुषम काल की उत्तम ऋद्धि को प्राप्त करके उसका अनुभव करते हुए रहते है, यथा-

हरिवर्ष और रम्यक्वर्ष।

जम्बूद्वीपवर्ती दो क्षेत्रो मे मनुष्य सदा सुषम दुःषम की उत्तम ऋद्धि को प्राप्त करके उसका अनुभव करते हुए विचरते है, यथा-

हेमवत और हिरण्यवत।

जम्बूद्वीपवर्ती दो क्षेत्रो मे मनुष्य सदा दुःषम सुषम की उत्तम ऋद्धि को प्राप्त करके उसका अनुभव करते हुए रहते है, यथा-

पूर्व-विदेह और अपर-विदेह।

जम्बूद्वीपवर्ती दो क्षेत्रों में मनुष्य छ प्रकार के काल का अनुभव करते हुए रहते हैं। यथा-

भरत और ऐरवत। [५-१७]

९० जम्बूद्वीप मे दो चन्द्रमा प्रकाशित होते थे, होते हैं और होते रहेंगे।

१७. दो अजकरक,
१८ दो दुदुभग,
१९. दो गख,
२०. दो शखवर्ण,
२१. दो शंखवर्णाभ,
२२. दो कस
२३. दो कसवर्ण,
२४ दो कसवर्णाभ,
२५. दो रुक्मी,
२६. दो रुक्मीभास
२७ दो नील,
२८. दो नीलाभास,
२९. दो भास,
३०. दो भासराशि,
३१. दो तिल,
३२. दो तिल-पुष्यण्पवर्ण,
३३. दो उदक,
३४. दो उदकपचवर्ण,
३५. दो काक,
३६. दो काकान्ध,
३७. दो इन्द्रग्रीव,
३८. दो धूमकेतु,
३९ दो हरि,
४०. दो पिंगल,
४१. दो वुघ,
४२. दो शुक्र,
४३. दो वृहस्पति,
४४ दो राहु,
४५ दो अगस्ति,
४६ दो माणवक
४७. दो कास,
४८. दो स्पर्श,
४९ दो धुरा,
५०. दो प्रमुख,
५१ दो विकट,
५२ दो विसधि,
५३ दो नियल्ल,
५४ दो पदिक,
५५ दो जटिकादिलक,
५६ दो अरुण,
५७. दो अग्रिल्ल,
५८ दो काल
५९. दो महाकाल,
६० दो स्वस्तिक,
६१ दो सौवस्तिक,
६२. दो वर्धमानक,

३ दो सोम,	४ दो रुद्र,
५ दो अदिति,	६ दो बृहस्पति,
७ दो सर्प,	८ दो पितृ,
९ दो भग,	१० दो अर्यमन्,
११ दो सविता,	१२ दो त्वष्टा,
१३ दो वायु,	१४ दो इन्द्राग्नि,
१५ दो मित्र,	१६ दो इन्द्र,
१७ दो निर्ऋति,	१८ दो आप,
१९ दो विश्व,	२० दो ब्रह्मा,
२१ दो विष्णु,	२२ दो वसु,
२३ दो वरुण,	२४ दो अज,
२५ दो विवृद्धि,	२६ दो पूषन्,
२७ दो अश्विन्,	२८ दो यम.

अठासी ग्रह

१ दो अगारक,	२ दो विकालक,
३ दो लोहिताक्ष,	४ दो शनैश्चर,
५ दो आधुनिक,	६ दो प्राधुनिक,
७ दो कण,	८. दो कनक,
९. दो कनकनक	१०. दो कनकवितानक,
११. दो कनकसतानक,	१२. दो सोम
१३. दो सहित	१४. दो आससन,
१५ दो कार्योपग,	१६. दो कर्वटक,

चाहिए — यावत्— दो क्षेत्र मे मनुष्य छ. प्रकार के काल का अनुभव करते हुए रहते हैं, उनके नाम-

भरत और ऐरवत । [५७]

विशेषता यह है कि वहाँ कूटशाल्मली और धातकी वृक्ष हैं।

देवता गरुड़ (वेणुदेव) और सुदर्शन।

धातकी खड के पश्चिमार्ध मे और मेरु पर्वत के उत्तर-दक्षिण मे दो क्षेत्र कहे गये हैं जो परस्पर अति तुल्य है-यावत्-उनके नाम-

भरत और ऐरवत

—यावत्— दो क्षेत्रो मे मनुष्य छ प्रकार के काल का अनुभव करते हुए रहते हैं, यथा-

भरत और ऐरवत। [५७]

विशेषता यह है कि यहाँ कूटशाल्मली और महाधातकी वृक्ष है और देव गरुड वेणुदेव तथा प्रियदर्शन है।

धातकी खण्ड द्वीप की वेदिका दो कोस की ऊचाई वाली कही गई है। [१]

धातकीखंड द्वीप में

क्षेत्र

१. दो भरत, २. दो ऐरवत, ३. दो हिमवत,
४. दो हिरण्यवत, ५. दो हरिवर्ष, ६. दो रम्यक्वर्ष,
७. दो पूर्व विदेह, ८. दो अपर विदेह, ९ दो देव कुरु।

६३. दो पूपमानक ६४. दो अंकुश)[1]
६५. दो प्रलव, ६६. दो नित्यालोक,
६७ दो नित्योद्योत, ६८. दो स्वयप्रभ,
६९. दो अवभाप, ७०. दो श्रेयकर,
७१. दो क्षेमकर, ७२. दो आभंकर,
७३. दो प्रभकर, ७४. दो अपराजित,
७५. दो अरत, ७६. दो अशोक
७७. दो विगतशोक, ७८. दो विमल,
७९ दो व्यक्त, ८०. दो वितथ्य,
८१. दो विशाल, ८२. दो शाल,
८३. दो सुव्रत, ८४. दो अनिवर्त,
८५ दो एकजटी, ८६. दो द्विजटी,
८७ दो करकरिक, ८८ दो राजार्गल,
८९ दो पुष्पकेतु और ९०. दो भावकेतु। [१४८]

९१ जम्बुद्वीप की वेदिका दो कोस ऊची कही गई है। [१]
लवण समुद्र चक्रवाल विष्कम से दो लाख योजन का कहा गया है। [१]
लवण समुद्र की वेदिका दो कोस की ऊची कही गई है। [१] [३]

९२ पूर्वार्ध घातकीखडवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण मे दो क्षेत्र कहे गये है जो अति समान है—यावत्—उनके नाम-
भरत और ऐरवत।
पहले जम्बूद्वीप के अधिकार मे कहा वैसे यहां भी कहना

१. ये नाम सूर्यप्रज्ञप्ति मे नही हैं।

पर्वतवासी देव

२४ दो विकटापाती वासी "प्रभासदेव"

वृत्तवैताढ्य पर्वत

२५ दो गधागाती (हरिवर्ष स्थित वृत्ता वैताढ्य पर्वत)

पर्वतवासी देव

२६ दो गधापाती वासी "अरुण देव"

वृत्तवैताढ्य पर्वत

२७ दो माल्यवान पर्वत (रम्यग्वर्प स्थित वृत्तावैताढ्य पर्वत)

पर्वतवासी देव

२८ दो माल्यवान वासी "पद्मदेव",

वक्षस्कार पर्वत

२९ दो माल्यवान (उत्तर कुरु के पूर्व पार्श्व मे स्थित वक्षस्कार गजदत गिरि)।

३० दो चित्रकूट (शीता नदी के उत्तर तट पर स्थित वक्षस्कार पर्वत)।

३१ दो पद्मकूट (,, ,,)

३२ दो नलिनीकूट (,, ,,)

३३ दो एकशैल (,, ,,)

३४ दो त्रिकूट (शीतानदी के दक्षिण तट पर स्थित वक्षस्कार पर्वत)

३५ दो वैश्रमण कूट (,, ,,)

वृक्ष

१०. दो देवकुरु महावृक्ष, (कूटशालमली)

वृक्षवासी देव

११ दो देवकुरु महावृक्षवासी देव, (गरुडदेव)

क्षेत्र

१२. दो उत्तरकुरु,

वृक्ष

१३. दो उत्तरकुरु महावृक्ष,

वृक्षवासी देव

१४ दो उत्तरकुरु महावृक्षवासी देव,

वर्षधर पर्वत

१५ दो लघु हिमवत्त, १६ दो महा हिमवत,
१७. दो निषध, १८ दो नीलवत,
१९ दो रुक्मी, २०. दो शिखरी,

वृत्तवैताढ्य पर्वत

२१. दो शब्दापाती (हिमवत्त स्थित वृत्तवैताढ्य पर्वत)

पर्वतवासी देव

२२ दो शब्दापाती वासी "स्वातीदेव"

वृत्तवैताढ्य पर्वत

२३ दो विकटापाती (हिरण्यवत स्थित वृत्तवैताढ्य)

वर्षधर पर्वत कूट

५० दो लघु हिमवान कूट (हिमवान वर्षधर पर्वत का कूट)
५१ दो वैश्रमणकूट („ „)
५२ दो महाहिमवान कूट (महाहिमवान वर्षधर पर्वत का कूट)
५३ दो वैडूर्य कूट („ „)
५४ दो निषध कूट (निषध वर्षधर पर्वत का कूट)
५५ दो रुचककूट („ „)
५६ दो नीलवत कूट (नीलवत वर्षधर पर्वत का कूट)
५७ दो उपदर्शन कूट („ „)

एक उत्तर में और एक दक्षिण में ।

उत्तर का ' इषुकार पर्वत" लवण समुद्र की जगती (प्राकार) मे उत्तर दिशा मे रहे हुए "अपराजित द्वार" से लकर धातकी खड की जगती के उत्तर दिशा में रहे हुए "अपराजित द्वार" पर्यन्त लम्बा है। इसलिये वह चार लाख योजन (उत्तर-दक्षिण में) लम्बा फैला हुआ है ।

दक्षिण का "इषुकार पर्वत" लवण समुद्र की जगती में दक्षिण दिशा में रहे हुए, "वैजयत द्वार" से लेकर धातकी खंड की जगती मे दक्षिण दिशा मे रहे हुए "वैजयंत द्वार पर्यन्त लम्बा है । इसकी लम्बाई भी चार लाख योजन की हे ।

इस प्रकार इन दो इषुकार पर्वतो से धातकी खड के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध ये दो विभाग है ।

३६ दो अजन कूट (" ")

३७ दो मातजनकूट (" ")

३८ दो सौमनस (देवकुरु के पूर्व पार्वश्व मे स्थित वक्षस्कार गजदत गिरि)

३९ दो विद्युत्प्रभ(देवकुरु के पश्चिम पार्श्व मे स्थित ")

४० दो अकापाती कूट (शीतोदानदी के दक्षिण तट पर स्थित वक्षस्कार)

४१ दो पक्ष्मापाती कूट(" ")

४२ दो आशीविप कूट(" ")

४३ दो सुखावह कूट (" ")

४४ दो चद्र पर्वत(शीतोदानदी के उत्तार तट पर स्थित वक्षस्कार)

४५ दो सूर्य पर्वत (" ")

४६ दो नाग पर्वत (" ")

४७ दो देव पर्वत (" ")

४८ दो गधमादन(उत्तार कुरु के पश्चिम पार्श्व मे स्थित वक्षस्कार)

४९ दो इपुकार पर्वत[1] (धातकी खड को पूर्वाघ और पश्चिमार्ध मे विभक्त करने वाला)

---

१ धातकी खड के मुख्य दो विभाग हैं—पूवार्घ औरपश्चिमार्घ। उसे दो भागो मे विभक्त करने वाले दो इषुकार पर्वत हैं।

पर्वत-ह्लद

७० दो तिगिच्छ ह्लद (निषध वर्षधर पर्वत पर)

ह्लदवासी देवी

७१ दो तिगिच्छ ह्लदवासी "धृतिदेवी",

पर्वत-ह्लद

७२ दो केसरी ह्लद (नीलवत वर्षधर पर्वत पर)

ह्लदवासी देवी

७३ दो केसरी ह्लदवासी "कीर्तिदेवी",

क्षेत्र-ह्लद

७४ दो गगा प्रपात ह्लद	(भरत क्षेत्र मे)
७५ दो सिंधु प्रपात ह्लद	(,,)
७६ दो रोहिता प्रपात ह्लद	(हिमवत क्षेत्र मे)
७७ दो रोहिताश प्रपात ह्लद	(,,)
७८ दो हरि प्रपात ह्लद	(हरिवर्ष मे)
७९ दो हरिकाता प्रपात ह्लद	(,,)
८० दो शीता प्रपात ह्लद	(महाविदेह मे)
८१ दो शीतोदा प्रपात ह्लद	(,,)
८२ दो नरकाता प्रपात ह्लद	(रम्यक् वर्ष मे)
८३ दो नारीकाता प्रपात ह्लद	(,,)
८४ दा सूवर्ण कूला प्रपात ह्लद	(हिरण्यवत वर्ष मे)

५८ दो रुक्मीकूट (रुक्मी वर्षधर पर्वत का कूट)
५९ दो मणिकचन कूट (" ")
६० दो शिखरीकूट (शिखरी वर्षधर पर्वत का कूट ")
६१ दो तिगिच्छकूट (" ")

पर्वत-ह्रद

६२ दो पद्मह्रद (हिमवान वर्षधर पर्वत पर)

ह्रदवासी देवी

६३ दो पद्म ह्रदवासी "श्री देवी,"

पर्वत-ह्रद

६४ दो महापद्म ह्रद (महाहिमवान वर्षधर पर्वत पर)

ह्रदवासी देवी

६५ दो महापद्म ह्रदवासी "ह्री देवी",

पर्वत-ह्रद

६६ दो पौंडरीक ह्रद (शिखरी वर्षधर पर्वत पर)

ह्रदवासी देवी

६७ दो पौंडरीक ह्रदवासी 'लक्ष्मी देवी",

पर्वत-ह्रद

६८ दो महा पौंडरीक ह्रद (रुक्मी वर्षधर पर्वत पर)

ह्रदवासी देवी

६९ दो महा पौंडरीक ह्रदवासी "बुद्धिदेवी"

१०१	दो उन्मत्ता जला	(,,)
१०२	दो क्षारोदा[1]	(शीतोदा नदी के दक्षिण मे)
१०३	दो सिंह स्रोता[2]	(,,)
१०४	दो अन्तोवाहिनी	(,,)
१०५	दो र्ऊमिमालिनी	(शीतो दानदी के उत्तर मे)
१०६	दो फेनमालिनी[3]	(,,)
१०७	दो गभीर मालिनी	(,,)

चक्रवर्ती-विजय

१०८	दो कच्छ	(शीता नदी के उत्तर में)
१०९	दो सुकच्छ	(,, ,,)
११०	दो महाकच्छ	(,, ,,)
१११	दो कच्छकावती	(,, ,,)
११२	दो आवर्त	(,, ,,)
११३	दो मगलावर्त	(,, ,)
११४	दो पुष्कलावर्त	(,, ,,)
११५	दो पुष्कलावती	(,, ,,)

---

१. इसका 'क्षीरोदा" नाम भी अन्य ग्रन्थों मे मिलता है।

२. इसका "शीत स्रोता" नाम भी अन्य ग्रंथो में मिलता है ।

३ फेनमालिनी और गंभीर मालिनी ये दोनो नाम क्रम व्यत्यय से भी मिलते हैं ।

८५	दो रूप्यकूला प्रपात ह्रद	(,,)
८६	दो रक्ता प्रपात ह्रद	(ऐरवत वर्ष मे)
८७	दो रक्तावती प्रपात ह्रद	(,,)

महा नदियां[1]

८८	दो रोहिता महानदी	(हिमवत वर्ष मे)
८९	दो हरिकाता	,, हरिवर्ष मे)
९०	दो हरिसलिला	,, (,,)
९१	दो शीतोदा	,, (महाविदेह मे)
९२	दो शीता	,, (,,)
९३	दो नारीकांता	,, (रम्यग्वर्ष मे)
९४	दो नरकाता	,, (,,)
९५	दो रूप्यकूला	,, (हिरण्यवत वर्ष मे)

अंतर नदियां

९६	दो गाथावती	(शीतानदी के उत्तर मे)
९७	दो द्रहवती	(,,)
९८	दो पकवती[2]	(,,)
९९	दो तप्तजला	(शीतानदी के दक्षिण मे)
१००	दो मत्तजला	(,,)

---

१ गंगा, सिधु, रोहितांशा, सुवर्णकूला, रक्ता और रक्तवती ये महानदिया भी धातकी खड में दो दो हैं—देखिये सूत्र ८८।

२. अन्य ग्रन्थो मे इसका "वेगवती" नाम भी मिलता है।

१३७ दो सुवल्गु (,, ,,)
१३८ दो गधिल (,, ,,)
१३९ दा गधिलावती (,, ,,)

चक्रवर्ती विजय-राजधानियाँ

१४० दो क्षेमा (शीता नदी के उत्तर मे स्थित)
१४१ दो क्षेमपुरी (,, ,,)
१४२ दो रिष्टा (,, ,,)
१४३ दो रिष्टपुरी (,, ,,)
१४४ दो खड्गी (,, ,,)
१४५ दो मजुषा (,, ,,)
१४६ दो औषधि (,, ,,)
१४७ दो पौडरिकिणी(,, ,,)
१४८ दो सुसीमा (,, ,,)
१४९ दो कुँडला (,, ,,)
१५० दो अपराजिता (,, ,,)
१५१ दो प्रभकरा (,, ,,)
१५२ दो अकावती (,, ,,)
१५३ दो पद्मावती (,, ,,)
१५४ दो शुभा (,, ,,)
१५५ दो रत्नसचया (,, ,,)

११६	दो वत्स	(शीता नदी के दक्षिण मे स्थित)
११७	दो सुवत्स	(,, ,,)
११८	दो महावत्स	(,, ,,)
११९	दो वत्सावती	(,, ,,)
१२०	दो रम्य	(,, ,,)
१२१	दो रम्यक्	(,, ,,)
१२२	दो रमणिक	(,, ,,)
१२३	दो मगलावती	(,, ,,)
१२४	दो पद्म	(शीतोदा नदी के दक्षिण मे स्थित)
१२५	दो सुपद्म	(,, ,,)
१२६	दो महापद्म	(,, ,,)
१२७	दो पद्मावती	(,, ,,)
१२८	दो शख	(,, ,,)
१२९	दो कुमुद	(,, ,,)
१३०	दो नलिन	(,, ,,)
१३१	दो नलिनावती	(,, ,,)
१३२	दो वप्र	(शीतोदा नदी के उत्तर मे स्थित)
१३३	दो सुवप्र	(,, ,,)
१३४	दो महावप्र	(,, ,,)
१३५	दो वप्रावती	(,, ,,)
१३६	दो वल्गु	(,, ,,)

१७८ दो रक्तकबल शिला, १७९ दो अतिरक्तकंबल शिला,

पर्वत

१८० दो मेरु पर्वत

पर्वत-चूलिका

१८१ दो मेरु पर्वत की चूलिका [२९६]

९३ कालोदधि समुद्र की वेदिका दो कोस की ऊचाई वाली कही गई है। [१]

पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध मे मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण मे दो क्षेत्र कहे गये हैं जो अति, तुल्य, है-यावत्-उनके नाम—

भरत और ऐरवत।

इसी तरह —यावत्— दो कुरु कहे गये है, यथा-

देव कुरु और उत्तर कुरु।

वहाँ दो विशाल महाद्रुम कहे गये हैं, उनके नाम-

कूटशाल्मली और पद्म वृक्ष

देव गरुड वेणुदेव और पद्म —यावत्— वहाँ मनुष्य छ प्रकार के काल का अनुभव करते हुए रहते है। [५७]

पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध मे और मेरु पर्वत के उत्तर दक्षिण मे दो क्षेत्र कहे गये है इत्यादि पूर्ववत्।

विशेषता यह है कि वहाँ कूटशाल्मली और महापद्म वृक्ष है और देव गरुड (वेणुदेव) और पुण्डरिक है।

१५६ दो अश्वपुरा (शीतोदा नदी के दक्षिण मे स्थित)
१५७ दो सिंहपुरा („ „)
१५८ दो महापुरा („ „)
१५९ दो विजयपुरा („ „)
१६० दो अपराजिता („ „)
१६१ दो अपरा („ „)
१६२ दो अशोका („ „)
१६३ दो वीतशोका („ „)
१६४ दो विजया (शीतोदा नदी के उत्तर मे स्थित)
१६५ दो वैजयती („ „)
१६६ दो जयती („ „)
१६७ दो अपराजिता („ „)
१६८ दो चक्रपुरा („ „)
१६९ दो खड्गपुरा („ „)
१७० दो अवध्या („ „)
१७१ दो अयोध्या („ „)

मेरु पर्वत पर वन खंड

१७२ दो भद्रशाल वन, १७३ दो नदन वन,
१७४ दो सौमनस वन, १७५ दो पडक वन,

मेरु पर्वत पर शिला

१७६ दो पाडुकवल शिला, १७७ दो अतिकवल शिला,

वायुकुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
वेलम्ब और प्रभंजन।
स्तनितकुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
घोष और महाघोष। [१०]

सोलह व्यन्तरों के बत्तीस इन्द्र

पिशाचेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
काल और महाकाल।
भूतेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
सुरूप और प्रतिरूप।
यक्षेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
पूर्णभद्र और माणिभद्र।
राक्षसेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
भीम और महाभीम।
किन्नरेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
किन्नर और किंपुरुष।
किंपुरुषेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
सत्पुरुष और महापुरुष।
महोरगेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
अतिकाय और महाकाय।
गन्धर्वेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
गीतरति और गीतयश।
अणपन्निकेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-

पुष्करवरद्वीपार्ध मे दो भरत, दो ऐरवत —यावत्— दो मेरु और दो मेरु चूलिकाए है। [५७]
पुरष्करवर द्वीप की वेदिका दो कोस की ऊची कही गई है। सब द्वीप-समुद्रो की वेदिकाए दो कोस की ऊचाई वाली कही गई है। [२] [१७७]

दस भवनपती के वीस इन्द्र

९४ असुर कुमारेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
चमर और बलि।
नागकुमारेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
धरन और भूतानन्द।
सुवर्णकुमारेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
वेणुदेव और वेणुदाली।
विद्युत्कुमारेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
हरि और हरिसह।
अग्निकुमारेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
अग्निशिख और अग्निमाणव।
द्वीपकुमारेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
पूर्ण और वाशिष्ठ।
उदधिकुमारेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
जलकान्त और जलप्रभ।
दिक्कुमारेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
अमितगति और अमितवाहन।

सनत्कुमार और माहेन्द्र ।

ब्रह्मलोक और लान्तक कल्प मे दो इन्द्र कहे गये हैं, यथा-

ब्रह्म और लान्तक ।

महाशुक्र और सहस्रार कल्प मे दो इन्द्र कहे गये है, यथा-

महाशुक्र और सहस्रार ।

आनत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्प मे दो इन्द्र कहे गये हैं, यथा-

प्राणत और अच्युत [५]

इस प्रकार सब मिलकर चौसठ इन्द्र होते हैं

महाशुक्र और सहस्रार कल्प मे विमान दो वर्ण के कहे गये हैं, यथा-

पीले और श्वेत । [१]

ग्रैवेयक देवो की ऊचाई दो हाथ की है। [१] [३४]

चतुर्थ उद्देशक

६५ समय[1] अथवा आवलिका[2] जीव[3] और अजीव[4] कहे

---

१. काल का सबसे सूक्ष्म भाग ।

२. असंख्यात समय अथवा एक श्वास का संख्यातवां भाग

३. जीव का धर्म होने से ।

४. अजीव का धर्म होने से ।

सन्निहित और समान्य ।
पणपन्निकेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
धात और विहात ।
ऋषिवादीन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
ऋषि और ऋषिपालक ।
भूतवादीन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
ईश्वर और महेश्वर ।
क्रन्दितेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
सुवत्स और विशाल ।
महाक्रन्दितेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
हास्य और हास्यरति ।
कुभाडेन्द्र दो प्रकार के कहे गये है, यथा-
श्वेत और महाश्वेत ।
पतगेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
पतय और पतयपति । [१६]

ज्योतिषी देवो के दो इन्द्र

ज्योतिष्क देवो के दो इन्द्र कहे गये है, यथा-
चन्द्र और सूर्य । [१]

बारह देवलोकों के दस इन्द्र

सौधर्म और ईशान कल्प मे दो इन्द्र कहे गये है, यथा-
शक्र और ईशान ।
सनत्कुमार और माहेन्द्र मे दो इन्द्र कहे गये है, यथा-

अडडाग और अडड

अववाग और अवव

हूहूताग और हूहूत

उत्पलाग और उत्पल

पद्‌माग और पद्‌म

नलिनाग और नलिन

अक्षनिकुराग और अक्षनिकुर

अयुताग और अयुत

नियुताग और नियुत

प्रयुताग और प्रयुत,

चूलिकाग और चूलिक,

शीर्ष प्रहेलिकाग और शीर्ष प्रहेलिका,

पल्योपम और सागरोपम, [४६]

उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी जीव और अजीव कहे जाते है।

ग्राम अथवा नगर,

निगम (वणिक्‌-निवास),

राजधानी,

खेडा (ग्राम से बडा और नगर से छोटा, धूल की बाहर दीवारी युक्त)

कर्बट (कुत्सित नगर)

मडम्ब (जिसके चारो ओर एक योजन तक कोई गाँव न

जाते हैं।[1]
श्वासोच्छ्वास अथवा स्तोक[2] जीव और अजीव कहे जाते हैं।
इसी तरह—लव,
मुहूर्त[3] और अहोरात्र
पक्ष और मास
ऋतु और अयन
सवत्सर और युग
सौ वर्ष और हजार वर्ष
लाख वर्ष और क्रोड वर्ष
त्रुटिताग और त्रुटित
पूर्वांग[4] अथवा पूर्व[5]

---

१. जीव और अजीव का समयादि स्थिति लक्षण धर्म है धर्म और धर्मो मे अत्यन्त भेद नहीं है अत धर्म और धर्मो के अभेद को लक्ष्य में रखकर समयादि को जीव या अजीव रूप कहा जाता है।
२ सात श्वासोच्छ्वास प्रमाणकाल।
३ [क] सात स्तोकप्रमाण काल।
[ख] ७७ लव अथवा दो घड़ी अथवा ३७७३ श्वासोच्छ्वास जितना काल।
४ चौरासी लाख वर्ष।
५ चौरासी लाख पूर्व।

विग्रह (लोकनाडी)

द्वीप, समुद्र, वेला, (समुद्र के जल का बढना)

वेदिका, द्वार, तोरण,

नैरयिक (कर्म-पुद्गल की अपेक्षा से अजीवत्व समझना चाहिये) नरकवास,

वैमानिक, वैमानिको के आवास, (देवलोक) कल्पविमानावास,

वर्ष (भरत आदि क्षेत्र) वर्षधर पर्वत, कूट, कूटागार,

विजय (चक्रवर्त्ती के जीते हुए कच्छादि क्षेत्र)

राजधानी ये सब जीवाजीवात्मक होने से) जीव और अजीव कहे जाते हैं।

छाया, आतप, ज्योत्स्ना (चाँदनी), अन्धकार, अवमान (क्षेत्रादि को मापने के हस्तादि साधन) उन्मान (तोल वगैरह) अतियान गृह (राजा आदि के नगर मे धूमधाम से प्रवेश करने के गृह) उद्यानगृह, अवलिम्ब (स्थानाविशेष) सणिप्पवाय (वस्तु विशेष)- ये सब जीव और अजीव कहे जाते हैं, (जीव और अजीव से व्याप्त होने के कारण अभेदनय की अपेक्षा से जीव या अजीव कहे जाते है)। [५७]

९८ दो राशियाँ कही गयी है, यथा-

जीव-राशि और अजीव-राशि। [१]

बध दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

हो ऐसी वस्ती)

द्रोणमुख (जल और स्थल दोनों मार्ग वाला)

पत्तन (जहाँ जल या स्थल मार्ग मे से कोई एक हो ऐसा श्रेष्ठ नगर)

आकर (खान)

आश्रम,

संवाह (जहाँ कृषक लोग धान्यादि को रक्षा के लिए ले जाकर रखते है ऐमे दुर्ग-विशेष)

सन्निवेश (यात्रियोकाया सेनादि का पडाव)

गौकुल,

आराम (स्त्री-पुरुपो के लिए उद्यान विशेष)

उद्यान (विविध वृक्षो से शोभित)

वन (एक जातीय वृक्षोका समूह)

वनखड (अनेक जातीय वृक्ष)

वावडी (चतुष्कोण)

पुष्करिणी (गोल वावडी अथवा जिसमे कमल हो ऐसी वावड़ी)

सरोवर, सरवरो की पक्ति, कूप, तालाव, ह्रद, नदी, रत्न-प्रभादिक पृथ्वी, घनोदधि, वातस्कन्ध (घनवात तनुवात), अन्य पोलार (वातस्कन्ध के नीचे का आकाश जहाँ सूक्ष्म पृथ्वीकाय के जीव भरे है)

वलय (पृथ्वी के घनोदधि, घनवात, तनुवातरूप वेष्टन)

कर्म कर्मों के क्षय से अथवा उपशम से ।

इसी प्रकार —यावत्— दो कारणो से जीव को मन·

पर्याय ज्ञान उत्पन्न होता है, यथा-

(आवरणीय कर्म के) क्षय से अथवा उपशम से । [१०]

९९ औपमिक (उपमा के द्वारा गम्य) काल दो प्रकार का कहा गया है, यथा—

प्रश्न—पल्योपम और सागरोपम,

उत्तर—पल्योपम का स्वरूप क्या है ?

पल्योपम का स्वरूप इस प्रकार है । यथा-

एक योजन विस्तार वाले पल्य (धान्य-मापने का पात्र) मे एक दिन के (यावत् उत्कृष्ट सात दिन के) उगे हुए बाल निरन्तर एव निविड रूप से ठूंस ठूंस कर भर दिए जाय और सौ सौ वर्ष मे एक एक बाल निकालने से जितने वर्षों मे वह पल्य खाली हो जाय उतने वर्षो के काल को एक पल्योपम समझना चाहिए । ऐसे दस क्रोडा क्रोडी पल्योपम का एक सागरोपम होता है । [१]

१०० क्रोध दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

आत्मप्रतिष्ठित और परप्रतिष्ठित ।

"अपने आप पर होने वाला या अपने द्वारा उत्पन्न किया हुआ क्रोध क्रोध आत्म प्रतिष्ठित है ।'

'दुसरे पर होने वाला या उसके द्वारा उत्पन्न किया हुआ

राग-वध और द्वेप-वध ।

जीव दो प्रकार से पाप कर्म बाधते हैं, यथा-

राग से और द्वेप से [२]

जीव दो प्रकार से पाप कर्मों की उदीरणा करते हैं, यथा-

आभ्युपगमिक (स्वेच्छा से स्वीकृत केशलुंचन तपश्चर्या आदि से होने वाली) वेदना से

औपक्रमिक (कर्मोदय के कारण ज्वर, अतिसार आदि से होने वाली) वेदना से । [१]

इसी तरह दो प्रकार से जीव कर्मों का वेदन करते हैं एवं निर्जरा करते हैं, यथा-

आभ्युपगमिक वेदना से और औपक्रमिक वेदना से । [१-५]

९७ दो प्रकार से आत्मा शरीर का स्पर्श करके बाहर निकलती है, यथा-

देश से-शरीर के अमुक भाग अथवा अमुक अवयव का स्पर्श करके आत्मा बाहर निकलती है ।

सर्व से-सम्पूर्ण शरीर का स्पर्श करके आत्मा बाहर निकलती है ।

इसी तरह स्फुरण (स्पदन) करके

स्फोटन (फोडकर) करके,

सकोचन करके

शरीर से अलग होकर आत्मा बाहर निकलती है । [४]

९८ दो प्रकार से आत्मा को केवलि-प्ररूपित धर्म सुनने के लिए मिलता है, यथा-

है और उनके आचरण की अनुमति नही दी है, यथा-

वलद्‌मरण (सयम से खेद पाकर मरना)

वशार्त मरण (इन्द्रिय-विपयो के वश होकर पतग की तरह मरना)।

इसी तरह निदान मरण (ऋद्धि-भोग आदि की कामना करके मरना) और तद्‌भव-मरण (उसी गति का आयुष्य बांधकर मरना)।

पर्वत से गिरकर मरना और वृक्ष से गिरकर मरना।

पानी मे डूबकर मरना और अग्नि मे जलकर मरना।

विष का भक्षण कर मरना और शस्त्र का प्रहार कर मरना। [५]

दो प्रकार के मरण —यावत्— नित्य अनुज्ञात नही हैं किन्तु कारण-विशेप (शील रक्षा आदि के लिए) होने पर निपिद्ध नही हैं, वे इस प्रकार हैं, यथा-

वैहायस मरण (वृक्ष की शाखा वगैरह पर लटक कर गले मे फासी लगा लेना) और गृध्रपृष्ठ मरण (किसी वडे प्राणी के मृत कलेवर मे प्रवेश कर गीध आदि पक्षियो से शरीर नुचवा कर मरना)। [१]

श्रमण भगवान् महावीर ने दो मरण श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए सदा उपादेय रूप से वर्णित किये हैं —यावत्— उनके लिए अनुमति दी है, यथा-

क्रोध पर प्रतिष्ठित है ।

इसी प्रकार नारक —यावत्— वैमानको को उक्त दो प्रकार मान माया —यावत्— मिथ्यादर्शनशल्य भी दो प्रकार का समझना चाहिए । [१३]

१०१ ससार समापन्नक 'ससारी' जीव दो प्रकार कहे गये है, यथा-

त्रस और स्थावर,

सर्व जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सिद्ध और असिद्ध ।

सर्व जीव दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

सेन्द्रिय और अनिन्द्रिय ।

इस प्रकार सशरीरी और अशरीरी पर्यन्त निम्न गाथा से समझना चाहिए । यथा-

सिद्ध, सेन्द्रिय, सकाय, सयोगी, सवेदी, सकषायी, सलेश्य, ज्ञानी, साकारोपयुक्त, आहारक, भाषक, चरम, सशरीरी ये और प्रत्येक का प्रतिपक्ष इस रूप से दो-दो प्रकार समझने चाहिए । [२६]

१०२ श्रमण भगवान् महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए दो प्रकार के मरण सदा (उपादेय रूप से) नहीं कहे है, कीर्तित नही कहे है, व्यक्त नही कहे है, प्रशस्त नही कहे

१०५ ज्ञानावरणीय कर्म दो प्रकार का है, यथा-

देश ज्ञानावरणीय और सर्व ज्ञानवरणीय।

दर्शनावरणीय कर्म भी इसी तरह दो प्रकार का है।

वेदनीय कर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

सातावेदनीय और असातावेदनीय।

मोहनीय कर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

दर्शन मोहनीय और चारित्र मोहनीय।

आयुष्य कर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

अद्धायु (कायस्थति) और भवायु (भवस्थिति)।

नाम कर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

शुभ नाम और अशुभ नाम।

गोत्र कर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

उच्च गोत्र और नीच गोत्र।

अन्तराय कर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रत्युत्पन्न विनाशी (वर्तमान मे होने वाले लाभ को नष्ट करने वाला)

पिहितागामीपथ (भविष्य मे होने वाले लाभ को रोकने वाला) [८]

१०६ मूर्छा दो प्रकार की कही गया है, यथा-

प्रेम-प्रत्यया 'राग से होने वाली'

पादपोपगमन और भक्तप्रत्याख्यान।

पादपोपगमन दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

निर्हारिम (ग्राम नगर आदि मे मरना जहा मृत्यु सस्कार हो)

अनिर्हारिम (गिरि कन्दरादि मे मरना जहाँ मृत्यु सस्कार न हो)।

भक्तप्रत्याख्यान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

निर्हारिम और अनिर्हारिम, [३]

१०३ प्रश्न – यह लोक क्या है ?

उत्तर—जीव और अजीव ही यह लोक है अर्थात् लोक जीवाजीवात्मक है।

प्रश्न—लोक मे अनन्त क्या है ?

उत्तर—जीव और अजीव,

प्रश्न – लोक मे शाश्वत क्या है ?

उत्तर – जीव और अजीव (द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा से।)

१०४ बोधि (सम्यक्त्व) दो प्रकार की है, यथा—

ज्ञान-बोधि और दर्शन-बोधि। [१]

बुद्ध दो प्रकार के है, यथा-

ज्ञान-बुद्ध और दर्शन-बुद्ध। [१]

इसी तरह मोह को समझना चाहिए। [१]

इसी तरह मूढ को समझना चाहिए। [१-४]

दो तीर्थङ्कर चन्द्र के समान गौर वर्ण शुक्ल वर्ण वाले थे, यथा-

चन्द्रप्रभ और पुष्पदन्त । [४]

१०९ सत्यप्रवाद पूर्व (छठा पूर्व) की दो वस्तुए (अध्ययन आदि की तरह विभाग) कही गई हैं ।

११० पूर्वभाद्रपद नक्षत्र के दो तारे कहे गये हैं ।

उत्तरभाद्रपद नक्षत्र के दो तारे कहे गये है ।

इसी तरह पूर्वफाल्गुन और उत्तरफाल्गुन के भी दो दो तारे कहे गये है, [४]

१११ मनुष्य-क्षेत्र के अन्दर दो समुद्र कहे गये है, यथा-

लवण समुद्र और कालोदधि समुद्र ।

११२ काम भोगो का त्याग नही करने वाले दो चक्रवर्ती मरण-काल मे मरकर नीचे सातवी नरक-पृथ्वी के अप्रतिष्ठान नामक नरकवास मे नारकरूप से उत्पन्न हुए, उनके नाम ये है, यथा-

सुभूम और ब्रह्मदत्त ।

११३ असुरेन्द्रो को छोडकर भवनवासी देवो को किंचित् न्यून दो पल्योपम की स्थिति कही गई है ।

सौधर्म कल्प मे देवताओ की उत्कृष्ट स्थितिदो सागरोपम की कही गई है ।

ईशान कल्प में देवताओ को उत्कृष्ट किंचित् अधिक दो

द्वेष प्रत्यया 'द्वेष से होने वाली'

प्रेम प्रत्यया मूर्छा दो प्रकार का कहा गई है, यथा-

माया और लोभ ।

द्वेष प्रत्यया मूर्छा दो प्रकार की कही गई है, यथा-

क्रोध और मान । [३]

१०७ आराधना दो प्रकार की कही गई है । यथा-

धार्मिक आराधना और केवलि आराधना ।

धार्मिक आराधना दो प्रकार की कही गई है । यथा-

श्रुतधर्म आराधना और चारित्र-धर्माराधना ।

केवलि आराधना दो प्रकार की कही गई है, यथा-

अन्तक्रिया (मोक्षगमन)

कल्पविमानोपपत्ति (सौधर्मादि देवलोक और नवग्रेवयक आदि विमान मे जिसके द्वारा जन्म हो वह आराधना । यह आराधना श्रुतकेवली की होती है । [३]

१०८ दो तीर्थंकर नील-कमल के समान वर्ण वाले थे, यथा-

मुनिसुव्रत और अरिष्टनेमि ।

दो तीर्थङ्कर प्रियगु (वृक्ष-विशेष) के समान वर्ण वाले थे, यथा-

श्री मल्लिनाथ और पार्श्वनाथ,

दो तीर्थङ्कर पद्म के समान गौर (लाल) वर्ण के थे, यथा-

पद्म प्रभ और वासुपुज्य ।

देव मन परिचारक है परन्तु यहाँ द्विस्थान का अधिकार होने से "दो इदा" ऐसा पद दिया है, क्योकि इन चारो कल्पो मे दो इन्द्र है अतः उनके ग्रहणसे चारो कल्पो के देवो को ग्रहण करना चाहिए)

११७ जीव ने द्विस्थान निर्वर्तक (अथवा इन कथ्यमान स्थानो मे जन्म लेकर उपार्जित अथवा इन दो स्थानो मे जन्म लेने से निवृत्ति होने वाले) पुद्गलो को पापकर्म रूप से एकत्रित किये है, एकत्रित करते है और एकत्रित करेंगे, वे इस प्रकार है, यथा-

त्रसकाय निर्वतित और स्थावरकाय निर्वतित।

इसी तरह उपचय किये, उपचय करते है और उपचय करेंगे,

बाधे, बाधते है और बाधेंगे,

उदीरणा की, उदीरणा करते है और उदीरणा करेंगे,

वेदन , वेदन करते हैं और वेदन करेंगे,

निर्जरा की, निर्जरा करते है और निर्जरा करेंगे। [७६]

११८ दो प्रदेश वाले स्कन्ध अनन्त कहे गये है।

दो प्रदेश मे रहने वाले पुद्गल अनन्त कहे गये हैं।

इस प्रकार-यावत्-द्विगुण रूक्ष पुद्गल अनन्त कहे गये है।

सागरोपम की स्थिति कही गई है ।

सनत्कुमार कल्प मे देवो की जघन्य दो सागरोपम की स्थिति कही गई है ।

माहेन्द्र कल्प मे देवो की जघन्य स्थिति किंचित् अधिक दो सागरोपम की कही गई है ।

११४ दो देवलोक मे देविया कही गई है, यथा-

सौधर्म और ईशान ।

११५ दो देवलोक मे तेजोलेश्या वाले देव कहे गये है, यथा-

सौधर्म और ईशान ।

११६ दो देवलोक मे देव कायपरिचारक (मनुष्य की तरह विषय सेवन करने वाले) कहे गये है, यथा-

सौधर्म और ईशान,

दो देवलोक मे देव स्पर्श-परिचारक कहे गये है, यथा-

सनत्कुमार और माहेन्द्र ।

दो कल्प मे देवरूप-परिचारक कहे गये है, यथा-

ब्रह्म लोक और लान्तक ।

दो कल्प मे देव शब्द-परिचारक कहे गये है, यथा-

महाशुक्र और सहास्रर ।

दो इन्द्र मन परिचारक कहे गये है, यथा-

प्राणत और अच्युत ।

आनत, प्राणत, आरण और अच्युत इन चारो कल्पो मे

एक आभ्यन्तर पुद्गलो को ग्रहण किये विना की जाने वाली विकुर्वणा,

एक आभ्यन्तर पुद्गलो को ग्रहण करके और ग्रहण किये विना भी की जाने वाली विकुर्वणा।

विकुर्वणा तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

एक वाह्य और आभ्यन्तर पुद्गलो को ग्रहण करके की जाने वाली विकुर्वणा,

एक वाह्य आभ्यन्तर पुद्गलोको ग्रहण किये विना की जाने वाली विकुर्वणा

एक वाह्य तथा आभ्यन्तर पुद्गलो को ग्रहण करके और विना ग्रहण किये भी की जाने वाली विकुर्वणा। [३]

२२१ नारक तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

कतिसचित—एक समय मे दो से लेकर संख्यात तक उत्पन्न होने वाले,

अकतिसचित—एक समय मे असख्यात उत्पन्नहोने वाले,

अवक्तव्यक सचित—एक समय मे एक ही उत्पन्न होने वाले।

इस प्रकार एकेन्द्रिय को छोड़ कर शेप अकतिसचित ही है। क्योकि वे एक समय मे असख्यात या अनन्त उत्पन्न होते हैं

तीन स्थान

प्रथम उद्देशक

११९ इन्द्र तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

नाम इन्द्र, स्थापना इन्द्र, द्रव्य इन्द्र ।

इन्द्र तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

ज्ञान इन्द्र, दर्शन इन्द्र और चारित्र इन्द्र[1]

इन्द्र तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

देवेन्द्र, असुरेन्द्र और मनुष्येन्द्र[2] [3]

१२० विकुर्वणा तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

एक वाह्य पुद्‌गलो को ग्रहण करके की जाने वाली विकुर्वणा,

एक वाह्य पुद्‌गलो को ग्रहण किये विना की जाने वाली विकुर्वणा,

एक वाह्य पुद्‌गलो को ग्रहण करके और ग्रहण किये विना भी की जाने वाली विकुर्वणा ।

विकुर्वणा तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

एक आभ्यन्तर पुद्‌गलो को ग्रहण करके की जाने वाली विकुर्वणा,

---

१ आत्मिक ऐश्वर्य की अपेक्षा ।

२ वाह्य ऐश्वर्य की अपेक्षा ।

देव, मनुष्य और तिर्यंच योनिक जीव ।

तीन वेद वाले जीव मैथुन सेवन करते है, यथा-

स्त्री, पुरुष और नपुंसक । [३]

२२४. योग तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

मनोयोग, वचनयोग और काययोग ।

इस प्रकार नारक जीवो के तीन योग होते है,

यो विकलेन्द्रिय को छोड़कर वैमानिक पर्यन्त तीन योग समझने चाहिए । [१]

तीन प्रकार के प्रयोग (प्रवृत्ति) कहे गये है, यथा-

मनः प्रयोग, वाक् प्रयोग और काय प्रयोग ।

जैसे विकलेन्द्रिय को छोडकर योग का कथन किया वैसा ही प्रयोग के विषय मे भी जानना चाहिये । [१]

करण तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

मन करण, वचन करण और काय करण

इसी तरह विकलेन्द्रिय को छोडकर वैमानिक पर्यन्त तीन करण जानने चाहिए । [१]

करण तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

आरम्भ करण, संरम्भ करण और समारम्भ करण ।

यह अन्तर रहित वैमानिक पर्यन्त जानने चाहिए । [१-२]

२२५ तीन कारणो से जीव अल्पायु रूप कर्म का बंध करते है,

इसी तरह वैमानिक पर्यन्त तीन भेद जानने चाहिए।

१२२ परिचारणा (देवो का विषय-सेवन) तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

कोई देव अन्य देवो को या अन्य देवो की देवियो को वश मे करके या आलिगनादि करके विषय सेवन करता है, अपनी देवियो को आलिगन कर विषय-सेवन करता है और अपने शरीर की विकुर्वणा कर अपने आप से ही विषय सेवन करता है।

कोई देव अन्य देवो और अन्य देवो की देवियो को वश मे करके तो विषय सेवन नही करता है परन्तु अपनी देवियो का आलिगन कर विषय-सेवन करता है।

कोई देव अन्य देवो और अन्य देवो की देवियो को वश मे करके विषय-सेवन नही करता है और न अपनी देवियो का आलिगनादि करके भी विषय-सेवन करता है

१२३ मैथुन तीन प्रकार का कहा गया है। यथा-

देवता सम्बन्धी,

मनुष्य सम्बन्धी

तिर्यच योनि सम्बन्धी।

तीन प्रकार के जीव मैथुन करते है, यथा-

तथारूप श्रमण-माहन की हीलना करके निन्दा करके, भर्त्सना करके, गर्हा करके और अपमान करके किसी प्रकार का अमनोज्ञ एवं अप्रीतिकर अशनादि देता है, इन तीन कारणों से जीव अशुभ दीर्घायु रूप कर्म का बंध करते हैं। [१]

तीन कारणों से जीव शुभ दीर्घायु रूप कर्म का बंध करते हैं। यथा-

यदि वह प्राणियों की हिंसा नहीं करता है,

झूठ नहीं बोलता है

तथारूप श्रमण-माहन को वन्दना करके, नमस्कार करके, सत्कार करके, सम्मान करके, कल्याणरूप, मंगलरूप, देवरूप और ज्ञानरूप मानकर तथा सेवा-शुश्रूषा करके मनोज्ञ प्रीतिकर अशन, पान, खादिम, स्वादिम का दान करता है,

इन तीन कारणों से जीव शुभदीर्घायुरूप कर्म का बंध करते हैं। [१-४]

१२६ तीन गुप्तियाँ कही गई हैं, यथा-

मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति।

संयत मनुष्यों की तीन गुप्तियां कही गई हैं यथा-

मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति। [२]

यथा-

यदि वह प्राणियो की हिंसा करता है,

झूठ बोलता है,

और तथारूप श्रमण-माहन को (निर्ग्रन्थ मुनि को) अप्रासुक अशन आहार, पान, खादिम तथा स्वादिम वहराता है,

इन तीन कारणो से जीव अल्पायु रूप कर्म का बंध करते है। [१]

तीन कारणो से जीव दीर्घायु रूप कर्मो का बंध करते है,

यथा-

यदि वह प्राणियो की हिंसा नही करता है,

झूठ नही बोलता है,

तथारूप श्रमण-माहन को प्रासुक एषणीय अशन, पान, खादिम तथा स्वादिम का दान करता है,।

इन तीन कारणो से जीव दीर्घायु रूप कर्म का बंध करते है। [१]

तीन कारणो से जीव अशुभ दीर्घायु रूप कर्म का बंध करते है। यथा-

यदि वह प्राणियो की हिंसा करता है,

झूठ बोलता है,

तीन अगुप्तिया कही गई है, यथा-

मन-अगुप्ति, वचन-अगुप्ति और काय-अगुप्ति,

इसी प्रकार नारक-यावत्-स्तनितकुमारो की तीन अगुप्तियां कही गई है, यथा-

पंचेन्द्रिय, तिर्यंच, योनिक, असयत, मनुष्य और वान-व्यन्तर, ज्योतिष्क वैमानिक देवो की तीन अगुप्तिया कही गई है। [२]

तीन दण्ड कहे गये है, यथा-

मन दण्ड, वचन दण्ड और काय दण्ड।

नारको के तीन दण्ड कहे गये है, यथा-

मन दण्ड, वचन दण्ड और काय दण्ड।

विकलेन्द्रियो (एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय तक) को छोड़ कर वैमानिक पर्यन्त तीन दण्ड जानने चाहिए। [२-६]

१२७ तीन प्रकार की गर्हा कही गई है, यथा-

कुछ व्यक्ति मन से गर्हा करते हैं,

कुछ व्यक्ति वचन से गर्हा करते है,

कुछ व्यक्ति पाप कर्म नही करके काया द्वारा गर्हा करते हैं (पाप कर्म मे प्रवृत्ति नहीं करना ही काय-गर्हा है)

अथवा गर्हा तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

पोतज मत्स्य तीन प्रकार के है, यथा-

स्त्री, पुरुप और नपुसक । [३]

पक्षी तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

अण्डज, पोतज और सम्मूर्छिम ।

अण्डज पक्षी तीन प्रकार के है, यथा-

स्त्री, पुरुष और नपुसक ।

पोतज पक्षी तीन प्रकार के है, यथा-

स्त्री, पुरुष और नपुसक ।

इस अभिलापक से उरपरिसर्प और भुजपरिसर्प का भी कथन करना चाहिए । [३-१२]

१३० इसी प्रकार तीन प्रकार की स्त्रिया कही गई है, यथा-

तिर्गच योनिक स्त्रिया

मनुष्य योनिक स्त्रिया

देव-स्त्रिया । [१]

तिर्यंच स्त्रिया तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

जलचर स्त्री, स्थलचर स्त्री, खेचर स्त्री । [१]

मनुष्य-स्त्रिया तीन प्रकार की है, यथा-

कर्मभूमि मे पैदा होने वाली,

अकर्मभूमि मे पैदा होने वाली,

अन्तर्द्वीप मे उत्पन्न होने वाली । [१]

ज्ञान पुरुष, दर्शन पुरुष और चारित्र पुरुष। [१]

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

वेद पुरुष, चिन्ह पुरुष और अभिलाप पुरुष [१]

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और जघन्य पुरुष।

उत्तम पुरुष तीन प्रकार के कहे गये है, यथा

धर्म पुरुष, भोग पुरुष और कर्म पुरुष।

धर्म पुरुष अर्हन्त देव है,

भोग पुरुष चक्रवर्ती है,

कर्म पुरुष वासुदेव है।

मध्यम पुरुष तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

उग्र वशी, भोग वशी, और राजन्य वशी।

जघन्य पुरुष तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

दास, भृत्य और भागीदार। [४-६]

मत्स्य (मच्छ) तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

१२६ अण्डे से उत्पन्न होने वाले,

पोत से (विना किसी आवरण के) पैदा होने वाले,

सम्मूछिम (सयोग के विना) स्वत उत्पन्न होने वाले

अण्डज मत्स्य तीन प्रकार के है, यथा-

स्त्री मत्स्य, पुरुष मत्स्य और नपुसक मत्स्य।

१३२ नारक जीवो की तीन लेश्याए कही गई है, यथा-

कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या ।

असुरकुमारो की तीन अशुभ लेश्याए कही गई है,[1] यथा-

कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या ।

इसी प्रकार स्तनितकुमार पर्यन्त जानना चाहिए ।

इसी प्रकार पृथ्वीकायिक अप्कायिक और वनस्पति कायिक जीवो की लेश्या समझना चाहिए ।

इसी प्रकार तेजस्काय और वायुकाय की लेश्या भी जाननी चाहिए ।

द्वीन्द्रिय,

त्रीन्द्रिय,

और चतुरिन्द्रियो के भी तीन लेश्याए नारक जीवो के समान कही गई है ।

पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको के तीन अशुभ लेश्याए कही गई है । यथा-

कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या ।

---

१ असरकुमारो को चार लेश्याए होती है, परन्तु चौथी तेजोलेश्या अशुभ नहीं है अत यहा तीन अशुभ लेश्याएं ही गिनाई गई है ।

पुरुष तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

तिर्यंचयोनिक पुरुप,

मनुष्ययोनिक पुरुप

देव पुरुप । [१]

तिर्यंचयोनिक पुरुप तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

जलचर, स्थलचर और खेचर । [१]

मनुष्ययोनिक पुरुप तीन प्रकार के है, यथा-

कर्मभूमि मे उत्पन्न होने वाले,

अकर्मभूमि मे उत्पन्न होने वाले,

अन्तर्द्वीपो मे पैदा होने वाले । [१]

नपुसक तीन प्रकार के है, यथा-

नैरयिक नपुंसक,

तिर्यंचयोनिक नपुसक,

मनुष्य नपुसक । [१]

तिर्यंचयोनिक नपुमक तीन प्रकार के है, यथा-

जलचर, स्थलचर और खेचर । [१-८]

मनुष्य नपुमक तीन प्रकार के हैं, यथा-

कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज और अन्तर्द्वीपिक । [१]

१३१ तिर्यंच योनिक तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

स्त्री, पुरुप और नपुमक ।

कहा वैसा ही मेघ गर्जना के लिए भी समझना चाहिए। [१-३]

१३४ तीन कारणो से (तीन प्रसगो पर) लोक मे अन्धकार होता है, यथा-

अर्हन्त भगवान् के निर्वाण-प्राप्त होने पर[1]
अर्हन्त-प्ररूपित धर्म (तीर्थ) के विच्छिन्न होने पर,
पूर्वगत श्रुत के विच्छिन्न होने पर। [१]

तीन कारणो से लोक मे उद्योत होता है, यथा-

अर्हन्त भगवान् के जन्म धारण करते समय,
अर्हन्त के प्रव्रज्या अगीकार करते समय,
अर्हन्त भगवान् के केवल ज्ञान महोत्सव के समय। [१]

तीन कारणो से देव-भवनो मे भी अन्धकार होता है, यथा-

अर्हन्त भगवान् के निर्वाण प्राप्त होने पर,
अर्हन्त प्ररूपित धर्म का विच्छेद होने पर,
पूर्वगत श्रुत के विच्छिन्न होने पर।

तीन प्रसगो पर देवलोक मे विशेष उद्योत होता है, यथा-

अर्हन्त भगवतो के जन्म महोत्सव पर,
अर्हन्तो के दीक्षा महोत्सव पर,
अर्हन्तो के केवलज्ञान महोत्सव पर। [१]

तीन प्रसगो पर देव इस पृथ्वी पर आते हैं, यथा-

---

१. लोक में अर्हन्तरूप भाव सूर्य के न होने पर।

पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको के तीन लेश्याए शुभ कही गई है।

यथा-

तेजोलेश्या, पद्मलेश्या और शुक्ललेश्या।

इसी प्रकार मनुष्यो के भी तीन लेश्या समझनी चाहिए।

असुरकुमारो के समान वानव्यन्तरो के भी तीन लेश्या समझनी चाहिए।

वैमानिको के तीन लेश्याए कही गई है, यथा-

तेजोलेश्या, पद्मलेश्या और शुक्ललेश्या। [१]

१३३ तीन कारणो से तारे अपने स्थान से चलित होते है, यथा-

वैक्रिय करते हुए,

विषय-सेवन करते हुए,

एक स्थान से दूसरे स्थान पर सक्रमण करके जाते हुए तारे चलित होते हैं। [१]

तीन कारणो से देव विद्युत् चमकाते है, यथा-

वैक्रिय करते हुए,

विषय-सेवन करते हुए

तथारूप श्रमण-माहन को ऋद्धि, द्युति, यश, बल, वीर्य, और पौरुष पराक्रम बताते हुए विद्युत् चमकाते है। [१]

तीन कारणो से देव मेघ गर्जना करते है, यथा-

वैक्रिय करते हुए जिस प्रकार विद्युत् चमकाने के लिए

इसी तरह तीन प्रसगो पर उनके आसन चलायमान होते है, वे सिंह नाद करते है और वस्त्र-वृष्टि करते है। [३]

तीन प्रसगो पर देवताओ के चैत्यवृक्ष चलायमान होते है, यथा-

अर्हन्तो के जन्म महोत्सव पर। इत्यादि पूर्ववत् [१]

तीन प्रसगो पर लोकान्तिक देव मनुष्य-लोक मे शीघ्र आते है, यथा-

अर्हन्तो के जन्म महोत्सव पर,

उनके दीक्षा महोत्सव पर

उनके केवलज्ञान महोत्सव पर। [१-१९]

१३५ हे आयुष्मन् श्रमणो ! तीन व्यक्तियो पर प्रत्युपकार कठिन है, यथा-

माता पिता स्वामी (पोषक) और धर्माचार्य।

कोई पुरुष (प्रतिदिन) प्रात काल होते ही माता-पिता को शतपाक, सहस्रपाक तेल से मर्दन करके सुगन्धित उबटन लगाकर तीन प्रकार के (गन्धोदक उष्णोदक, शीतोदक) जल से स्नान करा कर, सर्व अलकारो से विभूपित करके मनोज्ञ, हाडी मे पकाया हुआ, शुद्ध अठारह प्रकार के व्यजनो (शाकादि) से युक्त भोजन जिमाकर यावज्जीवन कावड मे बिठाकर कधे पर

अर्हन्तो के जन्म महोत्सव पर,

उनके दीक्षा महोत्सव पर,

उनके केवल ज्ञान महोत्सव पर। [१]

इसी तरह देवताओ का समूह रूप मे एकत्रित होना और देवताओ का हर्षनाद भी समझना चाहिए। [२]

तीन प्रसगो पर देवेन्द्र मनुष्य लोक मे शीघ्र आते है, यथा-

अर्हन्तो के जन्म महोत्सव पर,

उनके दीक्षा महोत्सव पर,

उनके केवल ज्ञान महोत्मव पर। [१]

इसी प्रकार—

सामानिक देव,

त्रायस्त्रिशक देव,

लोकपाल देव,

अग्रमहिपीदेवियो की पर्पद् (परिवार) के देव,

सेनाधिपति देव,

आत्मरक्षक देव मनुष्य-लोक मे शीघ्र आते है। [६]

तीन प्रसगो पर देव सिहासन से उठते है, यथा-

अर्हन्तो के जन्म महोत्मव पर,

उनके दीक्षा महोत्सव पर,

उनके केवलज्ञान-प्रसग महोत्सव पर।[१]

के समय मर कर किसी देवलोक मे देवरूप से उन्पन्न हुआ। तदनन्तर वह देव उन धर्माचार्य को दुर्भिक्ष वाले देश से सुभिक्ष वाले देश मे ले जाकर रख दे, जगल मे भटकते हुए को जगल से वाहर ले जाकर रख दे, दीर्घ-कालीन व्याधि-ग्रस्त को रोग मुक्त करदे तो भी वह धर्माचार्य के उपकार का वदला नही चुका सकता है किन्तु वह केवलि प्ररूपित धर्म मे (मयोगवश) भ्रष्ट हुए धर्माचार्य को पुन. केवलि-प्ररूपित धर्म वता कर-यावत्-उसमें स्थापित कर देता हे तो वह उन धर्माचार्य के उपकार का वदला भलीभाति चुका सकता है।

२३६ तीन स्थानो (गुणो) से युक्त अनगार अनादि-अनन्त दीर्घ-मार्ग वाले चार गतिरूप ससार-कान्तार को पार कर लेता है वे इस प्रकार हैं, यथा-

निदान (भोग ऋद्धि आदि की इच्छा) नही करने से,

सम्यक्दर्शन युक्त होने से,

समाधि मे रहने से।

अथवा उपधान-तपश्चर्या पूर्वक श्रुत का अभ्यास करने से।

२३७ तीन प्रकार की अवसर्पिणी कही गई है, यथा-

उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य।

लेकर फिरता रहे तो भी उपकार का वदला नही चुका सकता है किन्तु वह माता-पिता को केवलि प्ररूपित धर्म वताकर, समझाकर और प्ररूपणा कर उसमे स्थापित करे तो ऐसा करने से वह उन माता पिता के उपकार का सुचारुरूप से वदला चुका सकता है ॥

कोई महा ऋद्धिवाला पुरुप किसी दरिद्र को धन आदि देकर उन्नत वनाए तदनन्तर वह दरिद्र धनादि से समृद्ध वनने पर उस सेठ के असमक्ष अथवा समक्ष ही विपुल भोग सामग्री से युक्त होकर विचरता हो, इसके वाद वह ऋद्धिवाला पुरुप कदाचित् (दैवयोग से) दरिद्र वन कर उस (पूर्व के) दरिद्र के पास शीघ्र आवे उस समय वह (पहले का) दरिद्र (वर्तमान का श्रीमन्त) अपने इस स्वामी को सर्वस्व देता हुआ भी उसके उपकार का वदला नही चुका सकता है किन्तु वह अपने स्वामी को केवलिप्ररूपित धर्म वता कर समझाकर और प्ररूपणा कर उसमे स्थापित करता है तो इससे वह अपने स्वामी के उपकार का भलीभाति वदला चुका सकता है।

कोई व्यक्ति तथारूप श्रमण-माहन के पास से एक भी आर्य (श्रेष्ठ) धार्मिक सुवचन सुनकर-समझकर मृत्यु

तीन प्रकार की उपधि समझनी चाहिये । [२]

अथवा तीन प्रकार की उपधि कही गई है, यथा-

सचित्त, अचित्त और मिश्र ।

इस प्रकार निरन्तर नैरयिक जीवो को-यावत्-वैमानिको

को तीनो ही प्रकार की उपधि होती है । [२-४]

परिग्रह तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

कर्म-परिग्रह,

शरीर परिग्रह

बाह्य-भाण्डोपकरण-परिग्रह ।

असुरकुमारो को तीनो प्रकार का परिग्रह होता है ।

यो एकेन्द्रिय और नारक को छोड कर वैमानिक पर्यन्त

समझना चाहिए । [२]

अथवा तीन प्रकार का परिग्रह कहा गया है, यथा-

सचित्त, अचित्त और मिश्र ।

निरन्तर नैरयिक यावत् – विमानवासी देवो को तीनो

प्रकार का परिग्रह होता है । [२-४]

१३६ तीन प्रकार का प्रणिधान (एकाग्रता) कहा गया है, यथा-

मन-प्रणिधान, वचन-प्रणिधान और काय-प्रणिधान ।

यह तीन प्रकार का प्रणिधान पचेन्द्रियो से लेकर वैमा-

इस प्रकार छहो आरक का कथन करना चाहिए-यावत्-दुषमदुषमा । [७]

तीन प्रकार की उत्सर्पिणी कही गई है, यथा-

उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य ।

इस प्रकार छ आरक समझने चाहिये-यावत्-सुपम सुपमा । [७-१४]

१३८ तीन कारणो से अच्छिन्न पुद्गल अपने स्थान से चलित होते है, यथा-

आहार के रूप मे जीव के द्वारा गृह्यमान होने पर पुद्गल अपने स्थान से चलित होते है,

वैक्रिय किये जाने पर उसके वशवर्ति होकर पुद्गल स्वस्थान से चलितहोते है,

एक स्थान से दूसरे स्थान पर सक्रमण किये जाने पर (ले जाये जाने पर) पुद्गल स्वस्थान से चलित होते है । [१]

उपधि तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

कर्मोपधि, शरीरोपधि और वाह्य-भाण्डोपकरणोपधि ।

असुरकुमारो के तीन प्रकार की उपधि कहनी चाहिये ।

यो एकेन्द्रिय और नारक को छोड कर वैमानिक पर्यन्त

योनि तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

सचित्त, अचित्त और मिश्र ।

यह एकेन्द्रियो, विकलेन्द्रियो सम्मूर्छिम तिर्यंचयोनिक पचेन्द्रियो और सम्मूर्छिम मनुष्यो को होती है । [२]

योनि तीन प्रकार की कही गई है, यथा —

सवृता, विवृता और सवृत-विवृता ।

योनि तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

कूर्मोन्नता, शखावर्त्ता और वशीपत्रिका ।

उत्तम पुरुषो की माताओ की कूर्मोन्नता योनि होती है। कूर्मोन्नता योनि मे तीन प्रकार के उत्तम पुरुष गर्भ रूप मे उत्पन्न होते है, यथा-

अर्हन्त चक्रवर्ती और वलदेव-वासुदेव

चक्रवर्ती के स्त्रीरत्न की योनि शखावर्त्त होती है। शखावर्त्त योनि मे वहुत से जीव और पुद्गल पैदा होते है, एव नष्ट होते हैं किन्तु जन्म धारण नही करते है ।

वशीपत्रिकायोनि सामान्य मनुष्यो की योनि है । वशीपत्रिका योनि मे वहुत से सामान्य मनुष्य गर्भरूप मे उत्पन्न होते है । [२-६]

१४१ तृण (वादर) वनस्पतिकाय तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

सख्यात जीव वाली, असख्यात जीव वाली, अनन्त जीव वाली ।

निक पर्यन्त सब दण्डको मे पाया जाता है। [२]

तीन प्रकार का सुप्रणिधान कहा गया है, यथा-

मन का सुप्रणिधान,

वचन का सुप्रणिधान,

काय का सुप्रणिधान।

सयत मनुष्यो का तीन प्रकार का सुप्रणिधान कहा गया है, यथा—

मनका सुप्रणिधान,

वचन का सुप्रणिधान

काय का सुप्रणिधान। [२]

तीन प्रकार का अशुभ प्रणिधान कहा गया है, यथा-

मन का अशुभ प्रणिधान

वचन का अशुभ प्रणिधान,

काय का अशुभ प्रणिधान।

यह पचेन्द्रिय मे लेकर वैमानिक पर्यन्त होता है। [२०६]

१४० योनि तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

शीत, उष्ण और शीतोष्ण।

यह तेजस्काय को छोड कर शेप एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय समूर्छिम तिर्यंच योनिक पचेन्द्रिय और समूर्छिम मनुष्यो को होती है। [२]

इसी तरह धातकीखण्ड के पूर्वार्ध मे और पश्चिमार्ध मे भी। [६]

इसी तरह अर्ध पुष्करवर द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध में भी काल का कथन करना चहिए। [६]

जम्बूद्वीपवर्ती भरत ऐरवत क्षेत्र मे अतीत उत्सर्पिणी काल के सुषमसुषमा आरे मे मनुष्य तीन कोस की ऊचाई वाले और तीन पल्योपम के परमायुष्य[1] वाले थे।

इसी तरह इस अवसर्पिणी काल और आगामी उत्सर्पिणी काल मे भी समझना चाहिए। [६]

जम्बूद्वीपवर्ती देवकुरु और उत्तरकुरु मे मनुष्य तीन कोस की ऊचाई वाले कहे गये है तथा वे तीन पल्योपम की परमायु वाले हैं। [२]

इसी तरह अर्धपुष्करवर द्वीप के पश्चिमार्ध तक का कथन करना चाहिए। [२]

जम्बूद्वीप वर्ती भरत-ऐरवत क्षेत्र मे एक एक उत्सर्पिणी अवसर्पिणी मे तीन वश (उत्तम पुरुष परम्परा) उत्पन्न हुए, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे, यथा-

अर्हन्तवश, चक्रवर्ती-वश और दशार्हवश।

---

१. निरुपक्रम आयु वाले होने से 'परमायु' कहा गया है।

१४२ जम्बूद्वीपवर्ती भरतक्षेत्र मे तीन तीर्थ कहे गये है, यथा-
मागध, वरदाम और प्रभास ।

इसी तरह ऐरवत क्षेत्र मे भी समझने चाहिए ।

जम्बूद्वीपवर्ती महाविदेह क्षेत्र मे एक एक चक्रवर्ती विजय मे तीन तीर्थ कहे गये है,[1] यथा-

मागध, वरदाम और प्रभास ।

इसी तरह धातकीखण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे और पश्चिमार्ध मे तथा अर्धपुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध मे और पश्चिमार्ध मे भी इसी तरह जानना चाहिये । [७]

१४३ जम्बूद्वीपवर्ती भरत और ऐरवत क्षेत्र मे अतीत उत्सर्पिणी काल के सुषम नामक आरक का काल तीन कोडाकोड़ी सागरोपम था ।

इसी तरह इस अवसर्पिणी काल के सुषम आरक का काल इतना ही (तीन कोडाकोडी सागरोपम) कहा गया है ।

आगामी उत्सर्पिणी के सुषम आरक का काल इतना ही होगा । [६]

---

१ चक्रवर्ती के समुद्र तथा सीतादि महानदियो में उतरने के मार्ग को तीर्थ कहते हैं ।

धान्यो को कोठो मे सुरक्षित रखने पर, पल्य (धान्य भरने के पात्र विशेप) मे सुरक्षित रखने पर, मच पर सुरक्षित रखने पर, ढक्कन लगाकर, लीप कर, सब तरफ लीप कर, रेखादि के द्वारा लाच्छित करने पर, मिट्टी की मुद्रा लगाने पर अच्छी तरह वन्द रखने पर इनकी कितने काल तक योनि (उत्पादन-शक्ति) रहती है ?

उत्तर हे गौतम ! जघन्य अन्तमुहूर्त्त और उत्कृष्ट तीन वर्ष तक योनि रहती है, इसके वाद योनि म्लान हो जाती है, इसके वाद ध्वसाभिमुख होती है, नष्ट हो जाती है, इसके वाद जीव अजीव हो जाता है और तत्पश्चात् योनि का विच्छेद हो जाता है ।

१४६ दूसरी शर्कराप्रभा नरक-पृथ्वी के नारको की तीन सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति कही गई है ।

तीसरी वालुकाप्रभा पृथ्वी मे नारको की तीन सागरोपम की जघन्य स्थिति कही गई है । [२]

१४७ पाचवी धूमप्रभा-पृथ्वी मे तीन लाख नरकावास कहे गये है ।

तीन नरक-पृथ्वियो मे नारको को उष्णवेदना कही गई है, यथा-

पहली, दूसरी और तीसरी नरक मे ।

इसी तरह अर्ध पुष्करवर द्वीप के पश्चिमार्ध तक कथन करना चाहिए। [४]

जम्बूद्वीप के भरत, ऐरवत क्षेत्र मे एक एक उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल मे तीन प्रकार के उत्तम पुरुष उत्पन्न हुए। उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे, यथा-

अर्हन्त, चक्रवर्ती और बलदेव-वासुदेव।

इस प्रकार अर्धपुष्करवर द्वीप के पश्चिमार्ध तक समझना चाहिए। [४]

तीन यथायु का पालन करते है (निरुपक्रम आयुवाले होते है), यथा-

अर्हन्त, चक्रवर्ती और बलदेव-वासुदेव। [१]

तीन मध्यमायु का पालन करते है (वृद्धत्व रहित आयु वाले होते है)। यथा-

अर्हन्त, चक्रवर्ती और बलदेव-वासुदेव। [१-३८]

१४४ बादर तेजस्काय के जीवो की उत्कृष्ट स्थिति तीन अहोरात्र की कही गई है,

बादरवायुकाय की उत्कृष्ट स्थिति तीन हजार वर्ष की कही गई है।

१४५ प्रश्न हे भदन्त! शालि (उत्तम चावल) व्रीहि (सामान्य चावल) गेहू, जौ, यवयव (विशेष प्रकार का जौ) इन

चक्रवर्ती, वासुदेव आदि राजा,
माण्डलिक राजा (शेप सामान्य राजा)
महारम्भ करने वाले कुटुम्वी। [१]

सुशील, सुव्रती, सद्‌गुणी मर्यादावाले, प्रत्याख्यान-पौषध उपवास करने वाले तीन प्रकार के व्यक्ति मृत्यु के समय मर कर सर्वार्थसिद्ध महाविमान मे देव रूप से उत्पन्न होते है, यथा-

काम भोगो का त्याग करने वाले राजा,
काम भोग के त्यागी सेनापति,
प्रशास्ता-धर्माचार्य।

१५१ व्रह्मलोक और लान्तक देवलोक मे विमान तीन वर्ण वाले कहे गये है। यथा-

काले, नीले और लाल। [१]

आनत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्प मे देवो के भवधारणीय शरीरो की ऊचाई तीन हाथ की कही गई है। [१-४]

१५२ तीन प्रज्ञप्तिया नियत समय पर पढी जाती है, यथा-
चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति और द्वीप सागर प्रज्ञप्ति।

द्वितीय उद्देशक

१५३ लोक तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

तीन पृथ्वियो मे नारक उष्णवेदना का अनुभव करते है, यथा-

प्रथम, दूसरी और तीसरी नरक मे । [३]

१४८ लोक मे तीन समान प्रमाण (लम्बाई-चौडाई) वाले, समान पार्श्व (आजू-बाजू) वाले और सब विदिशाओ मे भी समान कहे गये है, यथा-

अप्रतिष्ठान नरक,

जम्बूद्वीप,

सर्वार्थसिद्ध महा विमान । [१]

लोक मे तीन समान प्रमाण वाले, समान पार्श्ववाले और सब विदिशाओ मे समान कहे गये है, यथा-

सीमन्त नरकावास, समयक्षेत्र, ईपत्प्राग्भारा पृथ्वी । [१]

१४९ तीन समुद्र प्रकृति से उदकरस वाले कहे गये है, यथा-

कालोदधि, पुष्करोदधि, और स्वयभूरमण । [१]

तीन समुद्रो मे मच्छ कच्छ आदि जलचर विशेप रूप से कहे गये है, यथा-

लवण, कालोदधि और स्वयभूरमण । [१] [२]

१५० शीलरहित, व्रतरहित, गुणरहित, मर्यादा रहित, प्रत्याख्यान पौपध-उपवास आदि नही करने वाले तीन प्रकार के व्यक्ति मृत्यु के समय मर कर नीचे सातवी नरक के अप्रतिष्ठान नामक नरकावास मे नारक रूप से उत्पन्न होते है, यथा—

अग्रमहिषी पर्यन्त इसी तरह परिपद् जाननी चाहिये। धरणेन्द्र की, उसके सामानिक और त्रायस्त्रिशको की तीन प्रकार की परिषद् कही गई है, यथा-

समिता, चण्डा और जाया।

इसके लोकपाल और अग्रमहिषियो की तीन परिपद् कही गई है, यथा-

ईषा, त्रुटिता और दृढरथा।

धरणेन्द्र की तरह शेप भवनवासी देवो की परिषद् जाननी चाहिए।

पिशाच-राज, पिशाचेन्द्र काल की तीन परिपद् कही गई है, यथा-

ईषा, त्रुटिता और दृढरथा।

इसी तरह सामानिक देव और अग्रमहिपियो की भी परिषद् जाने।

इसी तरह—यावत्—गीतरति और गीतयशा की भी परिषद् जाननी चाहिये।

ज्योतिष्कराज ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र की तीन परिपद् कही गई है, यथा-

तुम्बा, त्रुटिता और पर्वा।

इसी तरह सामानिक देव और अग्रमहिषियो की भी परिपद् जाने।

नामलोक, स्थापनालोक,और द्रव्यलोक।

भाव लोक तीन प्रकार का कहे गये हैं, यथा-

ज्ञानलोक, दर्शनलोक, और चारित्रलोक।

लोक तीन प्रकार के कहे गये हैं. यथा-

ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्यग्लोक। [३]

१५४ असुरकुमारराज असुरेन्द्र चमर की तीन प्रकार की परिषद् कही गई है, यथा-

समिता[1] चण्डा[2] और जाया[3]।

समिता आभ्यन्तर परिषद् है,

चण्डा मध्यम परिषद् है,

जाया बाह्य परिषद् है।

असुरकुमारराज असुरेन्द्र चमर के सामानिक देवो की तीन परिषद् है समिता आदि चमरेन्द्र की तरह।

इसी तरह त्रायस्त्रिंशको की भी परिषद् जानें।

लोकपालो की तुम्बा, त्रुटिता और पर्वा।

इसी तरह अग्रमहिषियो की भी परिषद् जानें।

बलीन्द्र की भी इसी तरह तीन परिषद् समझनी चाहिये।

---

१. जिसके सभासद बुलाने पर आते हैं।

२. जिसके सभासद् बुलाने पर भी आते हैं और न बुलाने पर भी आते हैं।

३. जिसके सभासद् विना बुलाये आते हैं।

प्रथम वय, मध्यम वय और अन्तिम वय। [१]

इन तीनो वय मे आत्मा केवलि-प्रज्ञप्त धर्म सुन पाता है, यथा-

प्रथमवय, मध्यमवय और अन्तिमवय।

केवलज्ञान उत्पन्न होने तक का कथन पहले के समान ही जानना चाहिए। [११-२४]

१५६ बोधि तीन प्रकार की कही गई है। यथा-

ज्ञान बोधि, दर्शन बोधि और चारित्र बोधि।

'सम्यग्ज्ञानदर्शन' का फल होने से बोधि कहा गया है। [१]

तीन प्रकार के बुद्ध कहे गये है, यथा-

ज्ञानबुद्ध, दर्शनबुद्ध और चारित्रबुद्ध। [१]

इसी तरह तीन प्रकार का मोह और-

तीन प्रकार के मूढ समझने चाहिए। [२-४]

१५७ प्रवज्या (दीक्षा) तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

इहलोकप्रतिवद्धा—इस लोक मे उत्तम भोजनादि की इच्छा से ली गई।

परलोक प्रतिवद्धा—स्वर्ग आदि मे सुख की इच्छा से ली गई।

उभय-लोकप्रतिवद्धा—दोनो जगह सुख की इच्छा से ली गई।

तीन प्रकार की प्रव्रज्या कही गई है, यथा-

इसी तरह सूर्य की भी परिषद् जाने ।

देवराज देवेन्द्र शक्र की तीन परिषद् कही गई है, यथा-

समिता, चण्डा और जाया ।

इसी प्रकार अग्रमहिषी पर्यन्त चमरेन्द्र के समान तीन परिषद् कहना चाहिए ।

इसी तरह अच्युत के लोकपाल पर्यन्त तीन परिषद् समझनी चाहिए ।

१५५ तीन याम कहे गये हैं, यथा-

प्रथम याम, मध्यम याम और अन्तिम याम[1] । [१]

तीन यामो मे आत्मा केवलि-प्ररूपित धर्म सुनसकता है, यथा-

प्रथम याम मे, मध्यम याम मे और अन्तिम याम में ।

इसी तरह —यावत्— आत्मा तीन यामो में केवलज्ञान उत्पन्न करता है, यथा-

प्रथम याम मे, मध्यम याम मे और अन्तिम याम मे । [११]

तीन वय कही गई है, यथा-

---

१ यद्यपि दिन और रात्रि के चतुर्थ भाग को सामान्यतया याम प्रहर कहा जाता है तथापि यहाँ पूर्वरात्रि, मध्यरात्रि और अन्तिमरात्रि तथा पूर्व दिन, मध्यदिन और अन्तिम दिन इसी विवक्षा से यहां ये तीन याम कहे गये हैं । इसी विवक्षा से रात्रि को त्रियामा कहा गया है ।

वकुश, प्रतिसेवनाकुशील और कपायकुशील।

२५९ तीन प्रकार की शैक्ष-भूमि[1] कही गई है, यथा-

उत्कृष्ट छः मास,

मध्यम चार मास

जघन्य सात रात-दिन।

तीन स्थविर भूमियां कही गई है, यथा-

जातिस्थविर, सूत्रस्थविर और पर्यायस्थविर।

साठ वर्ष की उम्रवाला श्रमण-निर्ग्रन्थ सूत्रस्थविर

स्थानाग समवायांग को जानने वाला श्रमण-निर्ग्र

सूत्रस्थविर है,

वीस वर्ष की दीक्षा वाला श्रमणनिर्ग्रन्थ पर्यायस्थवि

है।

२६० तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं। यथा,

सुमना (हर्षयुक्त)

दुर्मना (दुःख या द्वेषयुक्त)

नो-सुमना-नो-दुर्मना (समभाव रखने वाला)।

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

कितनेक किसी स्थान पर जाकर सुमना होते है,

कितनेक किसी स्थान पर जाकर दुर्मना होते है,

कितनेक किसी स्थान पर जाकर नो सुमना-नो दुर्मना होते है।

---

१. नवदीक्षित को महाव्रतादिदेने का समय अर्थात् छेदोपस्थापनीय चारित्र-वड़ी दीक्षा का समय

पुरत. प्रतिवद्धा,[1]
मार्गत प्रतिवद्धा[2]
उभयतः प्रतिवद्धा ।

तीन प्रकार की प्रव्रज्या कही गई है, यथा-
व्यथा उत्पन्न कर दी जाने वाली दीक्षा,
अन्यत्र ले जाकर दी जाने वाली दीक्षा,
धर्मतत्व समझा कर दी जाने वाली दीक्षा ।

तीन प्रकार की प्रव्रज्या कही गई है, यथा-
सद्‌गुरुओ की सेवा के लिए ली गई दीक्षा,
आख्यानप्रव्रज्य —धर्मदेशना के दियेजानेसे ली गई दीक्षा
सगार प्रव्रज्या—सकेत से ली गई दीक्षा
अथवा" तुम दीक्षा लोगे तो मे भी लूंगा" इस प्रकार की शर्त लगा कर ली गई दीक्षा ।

१५८ तीन निर्ग्रन्थ नोसज्ञोपयुक्त (पूर्वानुभूत आहारादि का स्मरण और अनागत की चिन्ता न करने वाले) कहे गये है, यथा-
पुलाक, निर्ग्रन्थ और स्नातक ।

तीन निर्ग्रन्थ सज्ञ-नोसज्ञोपयुक्त (सज्ञा और नोसज्ञा दोनों से सयुक्त) कहे गये है। यथा-

---

१. दीक्षा लेने पर मेरे शिष्यादि होंगे इस आशा से ली गई दीक्षा पुरतः प्रतिवद्धा है ।
२. स्वजनादि से स्नेह का विच्छेद न हो इस भावना से ली गई दीक्षा मार्गतः प्रतिवद्धा है ।

वैठकर, नही वैठ कर ।

मार कर, नही मार कर ।

छेदकर, नही छेद कर ।

वोलकर, नही वोल कर ।

कहकर, नही कह कर ।

देकर, नही देकर ।

खाकर, नही खाकर ।

प्राप्त कर, नही प्राप्त कर ।

पीकर, नही पीकर ।

सोकर, नही सोकर ।

लडकर, नही लडकर ।

जीत कर, नही जीत कर ।

पराजित कर, नही पराजित कर ।

शब्द,

रूप,

गध,

रस,

और स्पर्श ।इस प्रकार एक-एक के तीन आलापक कहने चाहिये, यथा-

कितने शब्द सुनकर सुमना होते है।

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

कितनेक 'किसी स्थान पर जाता हूँ' ऐसा मान कर सुमना होते है,

कितनेक 'किसी स्थान पर जाता हू' ऐसा मान कर दुर्मना होते है,

कितनेक 'किसी स्थान पर जाता हू' ऐसा मानकर नो-सुमना-नोदुर्मना होते है ।

इसी तरह कितनेक 'जाऊगा'' ऐसा मानकर सुमना होते हैं इत्यादि पूर्ववत् ।

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

कितनेक "नही जाकर" सुमना होते है, इत्यादि ।

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

'नही जाता हू' ऐसा मानकर सुमना होते है इत्यादि ।

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

'नही जाऊगा' ऐसा मानकर सुमना होते है, इत्यादि ।

इसी तरह 'आकर' कितनेक सुमना होते है, इत्यादि ।

'आताहू' ऐसा मानकर कितनेक सुमना होते है, इत्यादि ।

'आऊगा' ऐसा मानकर कितनेक सुमना होते है, इत्यादि ।

इस प्रकार इस अभिलापक से—

जाकर, नही जाकर ।

खड़े रह कर-खडे नही रह कर ।

उसकी इस लोक मे भी प्रशसा होती है,
उसका उपपात भी प्रशसनीय होता हैं
उसके बाद के जन्म मे भी उसे प्रशसा प्राप्त होती है ।[१]

१९२ ससारी जीव तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
स्त्री, पुरुप और नपुसक । [१]

सर्व जीव तीन प्रकार के कहे गये है। यथा-
सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, और सम्यग्मिथ्यादृष्टि (मिश्र-दृष्टि)।

अथवा सब जीव तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-
पर्याप्त, अपर्याप्त और नो-पर्याप्त नो-अपर्याप्त ।
इसी तरह सम्यग्दृष्टि ।
परित्त,
पर्याप्त,
सूक्ष्म,
सज्ञी, और भव्य,
इन मे से जो ऊपर नही कहे गये है उनके भी तीन तीन प्रकार समझने चाहिए ।

१९३ लोक-स्थिति तीन प्रकार की कही गई है, यथा-
आकाश के आधार पर वायु रहा हुआ है,
वायु के आधार पर उदधि
उदधि के आधार पर पृथ्वी ।

कितनेक 'सुनता हू' यह मानकर सुमना होते है ।

कितनेक 'सुनुगा' यह मान कर सुमना होते है ।

इसी प्रकार कितनेक नही 'सुना' यह मानकर सुमना होते है ।

कितनेक 'नही सुनता हूं' यह मानकर सुमना होते है।

कितनेक 'नही सुनुगा' यह मानकर सुमना होते है ।

इस प्रकार रूप, गध, रस और स्पर्श प्रत्येक मे छः छः आलापक कहने चाहिए । [१२७]

१६१ शीलरहित, व्रतरहित, गुणरहित, मर्यादा-रहित और प्रत्याख्यान-पोपधोपवास रहित के तीन स्थान गर्हित होते हैं। यथा-

उसका इह लोक जन्म गर्हित होता है, (उसकी इस जन्म मे निन्दा होती है)

उसका उपपात (किल्विपिक देवतादि मे जन्म लेने से वहा भी) निन्दित होता है,

उसके वाद के जन्मो मे भी वह निन्दनीय होता है। [१]

सुशील, सुव्रती, सद्गुणी, मर्यादावान् और पौपधोपवास प्रत्याख्यान आदि करने वाले के तीन स्थान प्रशसनीय होते है, यथा-

तेजस्काय, वायुकाय, और उदार (स्थूल) त्रस प्राणी।

स्थावर तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

पृथ्वीकाय, अप्काय और वनस्पतिकाय।

(यहां तेजस्काय और वायुकाय को गति के योग से त्रस माना गया है। [२]

१६५ तीन अच्छेद्य हैं-समय, प्रदेश और परमाणु।

इसी तरह—दो भाग नही किये जा सकने वाले। अभेद्य

अदाह्य—नही जलाये जा सकने वाले।

अग्राह्य—हाथ आदि से नही ग्रहण किये जा सकने वाले।

अमध्य—जिनका मध्यभाग नही हो सकता।

अप्रदेशी—निरवयव।

तीन अविभाज्य है, यथा-

समय, प्रदेश और परमाणु।

१६६ हे आर्यो ! इस प्रकार श्रमण भगवान् महावीर गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थो को सम्वोधित कर इस प्रकारवोले

प्रश्न-हे श्रमणो ! हे आयुष्मन्तो ! प्राणियो को किससे भय है ?

(तव) गौतमादि श्रमणनिर्ग्रन्थ श्रमण भगवान् महावीर के समीप आते है और वन्दना-नमस्कार करते है। वन्दना नमस्कार करके वे इस प्रकार वोले :-

दिशाए तीन कही गई हैं, यथा-
ऊर्ध्व दिशा, अधो दिशा और तिर्छी दिशा।
तीन दिशाओ मे जीवो की गति होती है, यथा-
ऊर्ध्व दिशा मे, अधोदिशा मे और तिर्छी दिशामे।
इसी तरह आगति।

उत्पत्ति,
आहार,
वृद्धि,
हानि,

गति पर्याय-हलन चलन,
समुद्घात,
कालसयोग,
अवधि दर्शन से देखना, अवधिज्ञान से जानना
और जीवो का ज्ञान अवधि ज्ञान से जानना चाहिए।
तीन दिशाओ मे जीवो को अजीवो का ज्ञान होता है, यथा-

ऊर्ध्व दिशा मे, अधोदिशा मे और तिर्छी दिशा में।
(तीनो दिशाओ मे गति आदि तेरह पद समस्त रूप से चौवीस दण्डको मे से पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक और मनुष्य मे ही होते हैं)

१६४ त्रस जीव तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

पूछते है, जो पूर्वकृत नही है परन्तु दुख रूप होते है उसके लिए वे पूछते है। (पूछने का आशय यह है कि जैसे अन्य तीर्थिक अकृतकर्म प्राणियो को दुख देते हैं। यह मानते है क्या वैसा ही निर्ग्रन्थ भी मानते है ?)

अकृतकर्म को दुख का कारण मानने वाले वादियो का यह कथन है कि

कर्म किये विना ही दु'ख होता है,

कर्मो का स्पर्श (वध) किये विना ही दुःख होता है,

किये जाने वाले और किये हुए कर्मो के विना ही दुःख होता है,

प्राणी, भूत,जीव और सत्व द्वारा कर्म किये विना ही वेदना का अनुभव करते है–ऐसा कहना चाहिये।

उत्तर—(भगवान् वोले) जो लोग ऐसा कहते हैं वे मिथ्या कहते है। मैं ऐसा कहता हू, वोलता हू और प्ररूपणा करता हू कि कर्म करने से दुख होता है.

कर्मो का स्पर्श करने से दुख होता है,

क्रियमाण और कृत कर्मों से दुःख होता है,

प्राण, भूत, जीव और सत्व कर्म करके वेदना का अनुभव करते है। ऐसा कहना चाहिए।

हे देवानुप्रिय ! यह अर्थ हम जानते नही है देखते नही हैं इसलिये यदि आपको कहने में कष्ट न होता हो तो हम यह बात आप श्री से जानना चाहते हैं।

उत्तर -आर्यो ! यो श्रमण भगवान् महावीर गौतमादि श्रमणनिग्रन्थो को सम्बोधित करके इस प्रकार बोले—हे श्रमणो ! हे आयुष्मन्तो ! प्राणी दुःख से डरने वाले है।

प्रश्न—(गौतमादि श्रमणो ने पूछा) हे भगवन् ! यह दु ख किस के द्वारा दिया गया है ?

उत्तर—(भगवान् बोले) जीव ने प्रमाद के द्वारा दु.ख उत्पन्न किया है।

प्रश्न—(गौतमादि श्रमणो ने पूछा) हे भगवान् ! यह दु ख कैसे नष्ट होता है ?

उत्तर—(भगवान् बोले) अप्रमाद से दुःख का क्षय होता है।

१६७ प्रश्न-हे भगवन् ! अन्य तीर्थिक इस प्रकार बोलते हैं, कहते है, प्रज्ञप्त करते है और प्ररूपणा करते है कि श्रमण-निर्ग्रन्थो के मत मे कर्म किस प्रकार दु ख रूप होते है ? (चारभगो मे से जो पूर्वकृत कर्म दुख रूप होते हैं यह वे नही पूछते हैं, जो पूर्वकृत कर्म दुख रूप नही होते हैं यह भी वे नही

मेरा अवर्णवाद होगा,

मेरा अविनय होगा ।[1]

तीन कारणो से मायावी माया करके भी आलोचना नही करता हैं —यावत्— तप अगीकार नही करता है, यथा-

मेरी कीर्ति[2] क्षीण होगी,

मेरा यश[3] हीन होगा,

मेरी पूजा व मेरा सत्कार कम होगा । [२]

तीन कारणो से मायावी माया करके उसकी आलोचना करता है, प्रतिक्रमण करता है --यावत्— तप अगीकार करता है, यथा-

मायावी की इस लोक मे निन्दा होती है,

परलोक भी निन्दनीय होता है,

अन्य जन्म भी गर्हित होता है ।

तीन कारणो से मायावी माया करके आलोचना करता है, — यावत्— तप अगीकार करता है, यथा-

अमायी का यह लोक प्रशस्त होता है,

---

१. अवज्ञा ।

२. सीमित प्रदेश में प्रसिद्धि 'किर्ति' ।

३. सर्वत्र प्रसिद्धि 'यश' ।

तृतीय उद्देशक

१६८ तीन कारणों से मायावी माया करके भी उसकी आलोचना 'गुरु-समक्ष निवेदन' नही करता है, प्रतिक्रमण नही करता है, आत्मसाक्षी से निन्दा नही करता है, गुरु के समक्ष गर्हा नही करता है, उस विचार को दूर नही करता है, उसकी शुद्धि नही करता है, उसे पुन नही करने के लिए तत्पर नही होता है और यथायोग्य प्रायश्चित्त और तपश्चर्या अगीकार नही करता है, यथा-

"मैंने यह काम किया है।" 'इस प्रकार आलोचना करने से मेरा मान महत्त्व कम हो जाएगा अतः आलोचना न करू। 'इस समय भी मैं वैसा ही करता हू' इसलिये इसे निन्दनीय कैसे कहू ?

'भविष्य मे भी मैं वैसा ही करुगा' 'इसलिए आलोचना कैसे करू।

तीन कारणो से मायावी माया करके भी उसकी आलोचना नही करता है, प्रतिक्रमण नही करता है —यावत्— तपश्चर्या अगीकार नही करता है, यथा-

मेरी अपकीर्ति होगी,

उस स्थान से उठ कर स्वयं एकान्त स्थान मे चला जाय।[१]

तृषादि से ग्लान निग्रन्थ को प्रासुक जल की तीन दत्ति[1] ग्रहण करना कल्पता है, यथा-

उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य। [१-२]

१७३ तीन कारणों से श्रमण निग्रन्थ स्वधर्मी साम्भोगिक[2] के साथ भोजनादि व्यवहार को तोडता हुआ वीतराग की आज्ञा का उल्लंघन नही करता है, यथा-

व्रतो में 'गुरुतर' दोष लगाते हुए जिसे स्वयं देखा हो उसे,

व्रतो मे 'गुरुतर' दोष लगाने की बात के सम्बन्ध में किसी श्रद्धालु से सुनी हो उसे,

चौथी बार दोष सेवन करने वाले को[3]।

१. एक बार मे धारा टूटे बिना जितना मिले वह एक दत्ति है। जिससे सारा दिन निकल जाय इतना पानी लेना उत्कृष्ट दत्ति है, इससे कुछ कम लेना मध्यम दत्ति और एक बार ही प्यास बुझा सके इतना लेना जघन्य दत्ति है

२. जिसके साथ आहारादिके आदान-प्रदान का व्यवहार हो।

३. तीन बार दोष का सेवन करने पर आलोचना-प्रायश्चित्त होता है परन्तु चौथी बार उसी दोष के सेवन करने पर आलोचना प्रायश्चित्त नहीं होता है अतः चौथी बार उसी दोष का सेवन करने वाले को।

परलोक मे जन्म प्रशस्त होता है,

अन्य जन्म भी प्रशसनीय होता है।

तीन कारणो से मायावी माया करके आलोचना करता है —यावत्— तप अंगीकार करता है,यथा-

ज्ञान के लिये, दर्शन के लिये, चारित्र के लिये। [२-४]

१६६ तीन प्रकार के पुरुप कहे गये है, यथा-

सूत्र के धारक, अर्थ के धारक, उभय के धारक।

१७० साधु और साध्वियो को तीन प्रकार के वस्त्र धारण करना और पहनना कल्पता है, यथा-

ऊन का, सन का और सूत का वना हुआ। [१]

साधु और साध्वियो को तीन प्रकार के पात्र धारण करने और परिभोग करने के लिये कल्पते है, यथा-

तुम्वे का पात्र, लकडी का पात्र और मिट्टी का पात्र। [१-२]

१७१ तीन कारणो से वस्त्र धारण करना चाहिये, यथा-

लज्जा के लिये,

प्रवचन की निन्दा न हो इसलिये,

शीतादि परिपह निवारण के लिये।

१७२ आत्मा को रागद्वेष से वचाने के तीन उपाय क गये ६६

धार्मिक उपदेश का पालन करे,

उपेक्षा करे या मौन रहे,

नो तद्वचन,[1] नो तदन्य वचन[2] और अवचन[3] [२]

तीन प्रकार के मन कहे गये है, यथा-

तद्मन, तदन्यमन और अमन। [१-३]

१७६ तीन कारणो से अल्पवृष्टि होती है, यथा-

उस, देश मे या प्रदेश मे बहुत से उदक योनि के जीव अथवा पुद्गल उदक रूप से उत्पन्न नही होते हैं, नष्ट नही होते है, समाप्त नही होते हैं, पैदा नही होते है।

नाग, देव, यक्ष और भूतो की सम्यग् आराधना नही करने से वहा उठे हुए उदक पुद्गल-मेघ को जो बरसने वाला है उसे वे देव आदि अन्य देश मे लेकर चले जाते है।

उठे हुए परिपक्व और बरसने वाले मेघ को पवन बिखेर डालता है।

इन तीन कारणो से अल्पवृष्टि होतीहै । [१]

तीन कारणो से महावृष्टि होती है, यथा-

उस देश मे या प्रदेश मे बहुत से उदक योनि के जीव और पुद्गल उदक रूप से उत्पन्न होते है, समाप्त होते

---

१ घट को पट कहना।

२. घट को घट कहना।

३ निरर्थक वचन।

१७४ तीन प्रकार की अनुज्ञा[1] कही गई है यथा-

आचार्य जो आज्ञा दे,

उपाध्याय जो आज्ञा दे

गणनायक जो आज्ञा दे

तीन प्रकार की समनुज्ञा[2] कही गई है, यथा-

आचार्य जो आज्ञा दे,

उपाध्याय जो आज्ञा दे,

गणनायक जो आज्ञा दे । [२]

इसी प्रकार उपसम्पदा[3] और पदवी का त्याग[4] भी समझना चाहिये । [२-४]

१७५ तीन प्रकार के वचन कहे गये है, यथा-

तद् वचन[5], तदन्य वचन[6] और नोवचन[7]।

तीन प्रकार के अवचन कहे गये है, यथा-

---

१. शास्त्र पढ़ने की आज्ञा ।

२ ,,

३. अपने गण के आचार्य आदि को छोडकर दूसरे गण के आचार्य आदि को स्वीकार करना ।

४. आचार्य आदि का पद त्याग ।

५ पदार्थ वाची वचन या पदार्थ विषयक वचन ।

६ पदार्थ से भिन्न पदार्थ वाची वचन या भिन्न पदार्थ विषयक वचन ।

७. वचन मात्र ।

के प्रति आकर्षण होता है।

देवलोक मे नवीन उत्पन्न देव दिव्य काम भोगो मे मूर्छित —यावत्— तन्मय बना हुआ ऐसा सोचता है कि "अभी न जाऊँ एक मुहूर्त के बाद जब नाटकादि पूरा हो जाएगा तब जाऊँगा"। इतने काल मे तो अल्प आयुष्य वाले मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो जाते है। इन तीन कारणो से नवीन उत्पन्न हुआ देव मनुष्य लोक मे शीघ्र आने की इच्छा करने पर भी शीघ्र नही आ सकता है। [१]

तीन कारणो से देवलोक मे नवीन उत्पन्न देव मनुष्यलोक मे शीघ्र आने की इच्छा करने पर शीघ्र आने मे समर्थ होता है, यथा-

देव लोक मे नवीन उत्पन्न हुआ देव दिव्य काम-भोगो मे मूर्छित नही होने से, गृद्ध नही होने से, आसक्त नही होने से उसे ऐसा विचार होता है कि-"मनुष्य-भव मे भी मेरे आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, स्थविर, गणी, गणधर अथवा गणावच्छेदक है जिनके प्रभाव से मुझे यह इस प्रकार की देवता की दिव्य ऋद्धि, दिव्य द्युति, दिव्य देवशक्ति (अचिन्त्य) वैक्रियादि की शक्ति मिली, प्राप्त हुई, सम्मुख उपस्थित हुई अत जाऊ और उन

हैं, नष्ट होते है और पैदा होते है ।

देव, यक्ष, नाग और भूतो की सम्यग् आराधना करने से अन्यत्र उठे हुए परिपक्व और बरसने वाले मेघ को उस प्रदेश में ला देते है ।

उठे हुए, परिपक्व बने हुए और बरसने वाले मेघ को वायु नष्ट न करे ।

इन तीन कारणों से महावृष्टि होती है । [१-२]

१७७ तीन कारणो से देवलोक मे नवीन उत्पन्न देव मनुष्य-लोक मे शीघ्र आने की इच्छा करने पर भी शीघ्र आने में समर्थ नही होता है, यथा-

देवलोक मे नवीन उत्पन्न देव दिव्य कामभोगो मे मूर्छित होने से, गृहयुद्ध होने से, स्नेहपाश मे वंधा हुआ होने से, तन्मय होने से वह मनुष्य-सम्बन्धी कामभोगो को आदर नही देता है, अच्छा नही समझता है, "उनसे कुछ प्रयोजन है"-ऐसा निश्चय नही करता है, उनकी इच्छा नही करता है, "ये मुझे मिलें" ऐसी भावना नही करता है ।

देवलोक मे नवीन उत्पन्न हुआ, देव दिव्य काम भोगों में मूर्छित, गृद्ध, आसक्त और तन्मय होने से उसका मनुष्य सम्बन्धी प्रेमभाव नष्ट हो जाता है और दिव्य काम भोगों

अहो! मैंने बल होते हुए, शक्ति होते हुए, पौरुष-पराक्रम होते हुए भी निरुपद्रवता और सुभिक्ष होने पर भी आचार्य और उपाध्याय के विद्यमान होने पर और नीरोगी शरीर होने पर भी शास्त्रो का अधिक अध्ययन नही किया।

अहो! मैं विषयो का प्यासा बन कर इहलोक मे ही फसा रहा और परलोक से विमुख बना रहा जिससे मैं दीर्घ श्रमण पर्याय का पालन नही कर सका।

अहो! ऋद्धि, रस और रूप के गर्व मे फसकर और भोगो मे आसक्त होकर मैंने विशुद्ध चारित्र का स्पर्श भी नही किया।

इन तीन कारणो से देव पश्चात्ताप करते है। [२]

१७९ तीन कारणो से देव-"मैं यहा से च्युत होऊंगा" यह जानते हैं, यथा–

विमान और आभरणो को कान्तिहीन देख कर,

कल्पवृक्ष को म्लान होता हुआ देखकर,

अपनी तेजोलेश्या को क्षीण होती हुई जानकर।

इन तीन कारणो से देव अपना च्यवन होना जानते हैं। [१]

तीन कारणो से देव उद्वेग पाते हैं, यथा–

अरे मुझे इस प्रकार की मिली हुई, प्राप्त हुई और सम्मुख आई हुई दिव्य देवर्द्धि, दिव्य देवद्युति और दिव्यशक्ति

भगवान् को वन्दन करु, नमस्कार करु, सत्कार करु, कल्याणकारी, मगलकारी, देव स्वरूप मानकर उनकी सेवा करू"

देवलोक मे उत्पन्न हुआ देव दिव्य कामभोगो मे मूर्छित नहीं होने से -यावत्- तन्मय नहीं होने से ऐसा विचार करता है कि -"इस मनुष्यभव मे ज्ञानी हैं, तपस्वी हैं और अति-दुष्कर क्रिया करने वाले है अत जाऊ और उन भगवंतों को वन्दन करु, नमस्कार करु, -यावत्- उनकी सेवा करु"

देवलोक मे नवीन उत्पन्न हुआ देव दिव्य कामभोगो मे मुर्छित -यावत्- तन्मय नहीं होता हुआ ऐसा विचार करता है कि-"मनुष्यभव मे मेरी माता -यावत्- मेरी पुत्रवधू है इसलिए जाऊ और उनके समीप प्रकट होऊ जिससे वे मेरी इस प्रकार की मिली हुई, प्राप्त हुई और सम्मुख उपस्थिति हुई दिव्य देवर्द्धि, दिव्य द्युति और दिव्य देवशक्ति को देखें।"

इन तीन कारणो से देवलोक मे नवीन उत्पन्न हुआ देव मनुष्य लोक मे शीघ्र आने की इच्छा करे तो शीघ्र आ सकता है। [१]

१७८ तीन स्थानो की देवता भी अभिलाषा करते हैं, यथा–

मनुष्य भव, आर्यक्षेत्र मे जन्म और उत्तम कुल में उत्पत्ति।

तीन कारणो से देव पश्चात्ताप करते है, यथा–

आकाश प्रतिष्ठित ।

विमान तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

अवस्थित 'शास्वत' -

वैक्रेय के द्वारा निष्पादित,

पारियानिक आवागमन के लिए वाहन रूप मे काम आने वाले । [१]

१८१ नैरयिक तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि और मिश्रदृष्टि ।

इस प्रकार विकलेन्द्रिय को छोड कर वैमानिक पर्यन्त समझ लेना चाहिए ।

तीन दुर्गतिया कही गई है, यथा-

नरक दुर्गति, तिर्यचयोनिक दुर्गति और मनुष्य दुर्गति ।

तीन सद्गतिया कही गई है, यथा-

सिद्ध सद्गति, देव सद्गति और मनुष्य सद्गति ।

तीन दुर्गति प्राप्त कहे गये है, यथा-

नैरयिक दुर्गति प्राप्त,

तिर्यंचयोनिक दुर्गति प्राप्त

मनुष्य दुर्गति प्राप्त ।

तीन सद्गति प्राप्त कहे गये हैं, यथा-

सिद्धसद्गति प्राप्त,

छोडनी पडेगी ।

अरे मुझे माता के ऋतु और पिता के वीर्य के सम्मिश्रण का प्रथम आहार करना पडेगा,

अरे मुझे माता के जठर के मलमय, अशुचिमय, उद्वेगमय और भयंकर गर्भावास मे रहना पडेगा ।

इन तीन कारणों से देव उद्वेग प्राप्त होते हैं । [१]

१८० विमान तीन प्रकार के कहे गये हैं यथा-

गोल, त्रिकोण और चतुष्कोण ।

इन मे जो गोल विमान हैं वे पुष्करकर्णिका के आकार के होते हैं उनके चारो ओर प्राकार होता है और प्रवेश के लिए एक द्वार होता है ।

उनमे जो त्रिकोण विमान हैं वे सिंघाडे के आकार के, दोनो तरफ परकोटा वाले, एक तरफ वेदिका वाले और तीन द्वार वाले कहे गये हैं ।

उनमे जो चतुष्कोण विमान हैं वे अखाड़े के आकार के हैं और सब तरफ वेदिका से घिरे हुए हैं तथा चार द्वार वाले कहे गये हैं ।

देव विमान तीन के आधार पर स्थित है, यथा-

घनोदधि प्रतिष्ठित,

घनवात प्रतिष्ठित,

तीन प्रकार का आहार दाता द्वारा दिया गया कहा गया है, यथा-

देने वाला हाथ से ग्रहण कर देवे,

आहार के वर्तन से भोजन के वर्तन मे रख कर देवे,

वचे हुए अन्न को पुन· वर्तन मे रखते समय देवे। [२]

तीन प्रकार की ऊनोदरी कही गई है, यथा–

उपकरण कम करना,

आहार पानी कम करना,

कषाय त्याग रूप भाव ऊनोदरी। [१]

उपकरण ऊणोदरी तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

एक वस्त्र, एक पात्र, सयमी समत उपाधि धारण।

तीन स्थान निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो के लिए अहित कर, अशुभ, अयुक्त, अकल्याणकारी, अमुक्तकारी और अशुभानुवन्धी होते है, यथा–

आर्तस्वर 'क्रन्दन' करना,

शय्या उपधि आदि के दोषोद्भावन युक्त प्रलाप करना,

दुर्ध्यान 'आर्त-रौद्रध्यान' करना। [१]

तीन स्थान साधु और साध्वियो के लिए हितकर, शुभ, युक्त, कल्याणकारी और शुभानुवन्धी होते है, यथा-

आर्त्तस्वर 'क्रन्दन' न करना,

दोषोद्भावन गर्भित प्रलाप नही करना,

लेने के लिए हाथ भरलिया है जब तक मुख मे कौर न लिया हो तब तक वह आहार दे तो वह संसृष्टोपहृत है।

देवसद्गति प्राप्त,

मनुष्यसद्गति प्राप्त। [ ]

८२ चतुर्थभक्त 'एक उपवास करने' वाले मुनि को तीन प्रकार का जल लेना कल्पता है, यथा-

आटे का धोवन,

उबाली हुई भाजी पर सिंचा गया जल,

चावल का धोवन।

छट्ठ भक्त 'दो उपवास' करने वाले मुनि को तीन प्रकार का जल लेना कल्पता है, यथा-

तिल का धोवन, तुष का धोवन, जौ का धोवन।

अष्टभक्त 'तीन उपवास' करने वाले मुनि को तीन प्रकार का जल लेना कल्पता है, यथा-

ओसामन, छाछ के ऊपर का पानी, शुद्ध उष्ण जल। [३]

भोजन स्थान में अर्पित किया हुआ आहार तीन प्रकार का है, यथा-

फलिखोपहृत[1], शुद्धोपहृत[2], संसृष्टोपहृत[3]।

---

१ भोजन करने के लिए बैठे हुए हैं और थाली आदि में भोजन सामग्री ली हुई है उसमें से आहारादि लेना फलिकोपहृत है। यह अवगृहीत नामक पचम पिण्डैषणा का विषय है।

२ तुष आदि से रहित तथा अल्प लेप युक्त शुद्ध ओदनादि भोजनस्थान में दिये जाने पर लेना शुद्धोपहृत है।

३. भोजन करने की थाली में चावल आदि हैं और उसने कौर

उसे अवधिज्ञान उत्पन्न हो,

मन.पर्यायज्ञान उत्पन्न हो,

केवलज्ञान उत्पन्न हो। [२] [१३]

१८३ जम्बूद्वीप मे तीन कर्मभूमिया कही गई है, यथा-

भरत, एरवत और महाविदेह।

इसी प्रकार धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे—यावत्—अर्धपुष्करवर द्वीप के पश्चिमार्द्ध मे भी तीन तीन कर्मभूमिया गई है। [३]

१८४ दर्शन तीन प्रकार के है, यथा-

सम्यग्दर्शन[1] मिथ्यादर्शन[2] और मिश्रदर्शन[3]। [१]

रुचि[4] तीन प्रकार की है, यथा-

सम्यग्रुचि, मिथ्यारुचि और मिश्ररुचि। [१]

प्रयोग[5] तीन प्रकार के है, यथा-

सम्यग्प्रयोग, मिथ्याप्रयोग और मिश्रप्रयोग। [१-३]

---

१ मिथ्यात्व मोहनीय के शुद्ध दलिक 'सम्यग्दर्शन'।

२ मिथ्यात्व मोहनीय के अशुद्ध दलिक 'मिथ्यादर्शन'।

३ मिथ्यात्व मोहनी के अशुद्ध दलिक 'सम्यग्मिथ्यादर्शन'।

४ सम्यक्त्वमोहनीय के क्षयोपशम आदि से तत्त्वश्रद्धान होना 'रुची है'।

५ जीव का व्यापार।

अपध्यान नही करना। [१]

शल्य तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

मायाशल्य, निदानशल्य और मिथ्यादर्शनशल्य। [१]

तीन कारणो से श्रमण-निर्ग्रन्थ सक्षिप्त विपुल तेजोलेश्या वाला होता है, यथा-

आतापना लेने से,

क्षमा रखने से,

जलरहित 'चतुर्विधआहारकात्याग' तपश्चर्या करने से [१]

तीन मास की भिक्षु-प्रतिमा को अगीकार करने वाले अनगार को तीन दत्ति भोजन की और तीन दत्ति जल की लेना कल्पता है। [१]

एकरात्रि की भिक्षु प्रतिमा का सम्यग् आराधन नही करने वाले साधु के लिए वे तीन स्थान 'फल' अहित कर, अशुभ कर, अयुक्त, अकल्याणकारी और अशुभानुबन्धी होते हैं, यथा-

वह पागल हो जाय,

दीर्घकालीन रोग उत्पन्न हो जाय,

केवलि प्ररूपित धर्म से भ्रष्ट हो जाय।

एक रात्रि की भिक्षु-प्रतिमा का सम्यग् आराधना करने वाले अनगार के लिए ये तीन स्थान 'फल' हितकर शुभकारी, युक्त, कल्याणकारी और शुभानुबन्धी होते हैं, यथा-

सामवेद मे कहा हुआ। [४]

सामयिक व्यवसाय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

ज्ञान, दर्शन और चारित्र । [१] [७]

तीन प्रकार की अर्थयोनि 'राजलक्ष्मी की प्राप्ति के उपाय' कही गई है, यथा-

साम, दण्ड और भेद । [१]

१८६ तीन प्रकार के पुद्‌गल कहे गये है, यथा-

प्रयोगपरिणत, मिश्रपरिणत और स्वत परिणत । [१]

नरकावास तीन के आधार पर रहे हुए हैं, यथा-

पृथ्वी के आधार पर,

आकाश के आधार पर,

स्वरूप के आधार पर ।

नैगम सग्रह और व्यवहार नय से पृथ्वी प्रतिष्ठित।

ऋजुसूत्र नय के अनुसार आकाश प्रतिष्ठित ।

तीन शब्दनयो के अनुसार आत्म प्रतिष्ठित । [१] [३]

१८७ मिथ्यात्व तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

अक्रिया मिथ्यात्व,

अविनय मिथ्यात्व,

अज्ञान मिथ्यात्व ।

अक्रिया 'दुष्ट क्रिया' तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

प्रयोगक्रिया, सामुदानिक क्रिया, अज्ञान क्रिया ।

प्रयोग क्रिया तीन प्रकार की है, यथा-

मन. प्रयोग क्रिया,

१८५ व्यवसाय[1] तीन प्रकार के हैं, यथा-

धार्मिक व्यवमाय,

अर्धामिक व्यवसाय,

मिश्र व्यवसाय। [१]

अथवा-तीन प्रकार के व्यवसाय 'ज्ञान' कहे गये हैं, यथा-

प्रत्यक्ष 'अवधि आदि'

प्रात्यथिक 'इन्द्रिय औग मन के निमित्त' से होने वाला,

आनुगामिक 'अनुमरण करने वाला'। [१]

अथवा तीन प्रकार के व्यवसाय कहे गये है, यथा-

ऐहलौकिक व्यवसाय,

पारलौकिक व्यवसाय,

उभयलौकिक व्यवसाय।

ऐहलौकिक व्यवसाय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

लौकिक, वैदिक और सामयिक।

लौकिक व्यवमाय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

अर्थ, धर्म और काम,

वैदिकव्यवसाय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

ऋग्वेद मे कहा हुआ,

यजुर्वेद मे कहा हुआ,

---

१ कार्य सिद्धि के लिए उपयुक्त अनुष्ठान।

धार्मिक उपक्रम, अधार्मिक उपक्रम और मिश्र उपक्रम।

अथवा तीन प्रकार का उपक्रम कहा गया है, यथा-

आत्मोपक्रम, परोपक्रम और तदुभयोपक्रम।

इसी तरह वैयावृत्य, अनुग्रह, अनुशासन और उपालम्भ।

प्रत्येक के तीन-तीन आलापक उपक्रम के समान ही कहने चाहिए। [७]

१८९ कथा तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

अर्थकथा, धर्मकथा और कामकथा। [१]

विनिश्चय तीन प्रकार के कहे हैं, यथा-

अर्थविनिश्चय, धर्मविनिश्चय और कामविनिश्चय [१-२]

१९० श्री गौतम स्वामी भगवान् महावीर से पूछते है-

प्रश्न—हे भगवन्! तथारूप श्रमण-माहन की सेवा करने वाले को सेवा का क्या फल मिलता है?

भगवान् बोले-

उत्तर—हे गौतम उसे धर्मश्रवण करने का फल मिलता है।

प्रश्न—हे भगवन्! धर्मश्रवण का क्या फल होता है?

उत्तर—हे गौतम धर्मश्रवण करने से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

प्रश्न—हे भगवन्! ज्ञान का फल क्या है?

उत्तर—हे गौतम! ज्ञान का फल विज्ञान (हेय उपादेय का विवेक) है इस प्रकार इस अभिलापक से यह गाथा जान लेनी चाहिये।

श्रवण का फल ज्ञान,

वचन प्रयोग क्रिया,

काय प्रयोग क्रिया ।

समुदान क्रिया तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

अनन्तर समुदान क्रिया,

परस्पर समुदान क्रिया

तदुभय समुदान क्रिया ।

अज्ञान क्रिया तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

मति-अज्ञान क्रिया,

श्रुत-अज्ञान क्रिया

विभग-अज्ञान क्रिया

अविनय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

देशत्यागी[1], निरालम्बनता[2], नाना प्रेम-द्वेष अविनय[3] [५]

अज्ञान तीन प्रकार का कहा गया है । यथा-

प्रदेश अज्ञान, सर्व अज्ञान, भाव अज्ञान ।

१८८ धर्म तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

श्रुतधर्म, चारित्रधर्म और अस्तिकाय-धर्म । [१]

उपक्रम[4] तीन प्रकार का कहा गया है, यथा

---

१. जिस अविनय के करने से जन्म-क्षेत्र आदि का त्याग करना पड़े ।

२. आश्रय लेने योग्य का आश्रय न लेना

३. आराध्य के प्रति प्रेम आराध्य के असम्मत के प्रति द्वेष नियत हो तो वह विनय है यदि ये दोनों अनियत हैं तो वह अविनय है । अत नाना प्रेम-द्वेष को अविनय कहा है ।

४. गुण विशेष करण अथवा विनाश ।

इसी प्रकार तीन उपाश्रयो की आज्ञा लेना और इनका ग्रहण करना कल्पता है। [३]

प्रतिमाधारी अनगार को तीन सस्तारको की प्रतिलेखना करना कल्पता है, यथा-

पृथ्वी-शिला, काष्ठ शिला और तृणादि।

इसी प्रकार तीन सस्तारकों को आज्ञा लेना और ग्रहण करना कल्पता है। [३] [६]

१६२ काल तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल।

समय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

अतीत काल, वर्तमान काल और अनागत काल।

इसी तरह आवलिका[1], श्वासोच्छ्वास, स्तोक[2] क्षण[3] लव[4] मुहूर्त[5], अहोरात्र—यावत्—क्रोड़वर्ष, पूर्वांग[6],

---

१ आवलिका-असंख्यात समय का अथवा एक श्वासोच्छ्वास का संख्यातवां भाग।

२. स्तोक-सात श्वासोच्छ्वास प्रमाण काल।

३. क्षण-संख्यात श्वासोच्छ्वास प्रमाण काल।

४. लव-सात स्तोक प्रमाण काल।

५. मुहूर्त—७७ लव, दो घड़ी, अथवा ३७७३ श्वासोच्छ्वास।

६ पूर्वांग—८४ लाख वर्ष।

ज्ञान का फल विज्ञान,

विज्ञान का फल प्रत्याख्यान,

प्रत्याख्यान का फल सयम,

सयम का फल अनाश्रव 'कर्मो का रुक जाना'

अनाश्रव का फल 'तप'

तप का फल व्यवदान 'पूर्वकृत कर्म का विनाश'

व्यवदान का फल अक्रिया ।

अक्रिया का फल निर्वाण है ।

प्रश्न—हे भगवन् ! अक्रिया का क्या फल है ?

उत्तर— निर्वाण फल है ।

प्रश्न – हे भगवन् ! निर्वाण का क्या फल है ?

उत्तर—हे श्रमणायुष्मन् ! सिद्धगति मे जाना हीनिर्वाण का सर्वान्तिम प्रयोजन है ।

चतुर्थ उद्देशक

१९१ प्रतिमाधारी अनगार को तीन उपाश्रयो का प्रतिलेखन करना कल्पता है, यथा-

अतिथिगृह मे, खुले मकान में, वृक्ष के नीचे ।

१९५ तीन प्रकार की आराधना कही गई है, यथा-

ज्ञानाराधना, दर्शनाराधना और चारित्राराधना।

ज्ञानाराधना तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य।

इसी तरह दर्शन आराधना और चारित्र आराधना कहनी चाहिए। [३]

तीन प्रकार का संक्लेश[1] कहा गया है, यथा-

ज्ञानसंक्लेश, दर्शनसंक्लेश और चारित्रसंक्लेश।

इसी तरह असंक्लेश अतिक्रम व्यतिक्रम, अतिचार और अनाचार भी समझने चाहिए। [६]

तीन का अतिक्रमण करने पर आलोचना करनी चाहिये, प्रतिक्रमण करना चाहिये, निन्दा करनी चाहिये, गर्हा करनी चाहिये —यावत्—तप अंगीकार करना चाहिये, यथा-

ज्ञान का अतिक्रमण करने पर,

दर्शन का अतिक्रमण करने पर,

चारित्र का अतिक्रमण करने पर।

इसी तरह व्यतिक्रम, अतिचार और अनाचार करने पर भी आलोचनादि करनी चाहिये। [३] [१३]

१९६ प्रायश्चित्त तीन प्रकार कहा गया है, यथा-

---

१. अशुभ परिणामों से होने वाली हानि।

पूर्व[1], —यावत्— अवसर्पिणी । [ ]

पुद्गल परिवर्तन तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

अतीत, प्रत्युत्पन्न और अनागत । [१]

१६३ वचन तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

एकवचन, द्विवचन और बहुवचन ।

अथवा वचन तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

स्त्री वचन, पुरुषवचन और नपुंसक वचन ।

अथवा तीन प्रकार के वचन कहे गये है यथा-

अतीत वचन, वर्तमान वचन और भविष्य वचन । [३]

१६४ तीन प्रकार की प्रज्ञापना कही गई है, यथा -

ज्ञान प्रज्ञापना, दर्शन प्रज्ञापना और चारित्र प्रज्ञापना ।

तीन प्रकार के सम्यक् कहे गये हैं, यथा-

ज्ञान सम्यक्, दर्शन सम्यक् और चारित्र सम्यक् ।

तीन प्रकार के उपघात[2] कहे गये है, यथा-

उद्‌गमोपघात, उत्पादनोपघात और एषणोपघात ।

इसी तरह तीन प्रकार की विशुद्धि कही गई है, यथा-

उद्‌गम-विशुद्धि आदि ।

---

१. पूर्व–८४ लाख पूर्वांग ।

२ आहारादि की अकल्पनीयता ।

नीलवान, रुक्मी और शिखरी।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के दक्षिण मे तीन महाह्लद है, यथा-

पद्महृद, महापद्महृद और तिगिच्छहृद।

वहां तीन महर्द्धिक–यावत्– पल्योपम की स्थिति वाली तीन देविया रहती हैं, यथा-

श्री, ह्री और घृति ।

इसी तरह उत्तर मे भी तीन ह्लद है, यथा–

केशरी ह्लद, महापुण्डरीक ह्लद और पुण्डरीक ह्लद ।

इन ह्लदो में रहनेवाली देवियो के नाम, यथा-

कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण मे लघु हिमवान वर्षधर पर्वत के पद्मह्लद नामक महाह्लद से तीन महानदिया निकलती है, यथा-

गगा, सिन्धु और रोहिताशा।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर में शिखरीवर्षधर पर्वत के पौण्डरीक नामक महाह्लद से तीन महानदिया निकलती है, यथा-

सुवर्णकूला, रक्ता और रक्तवती।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के उत्तर मे तीन अन्तर नदियां कही गई है, यथा-

आलोचना के योग्य,

प्रतिक्रमण के योग्य,

उभय योग्य।

१९७ जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण मे तीन अकर्मभूमियां कही गई है, यथा-

हेमवत, हरिवास और देवकुरु।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर मे तीन अकर्मभूमियां कही गई है, यथा-

उत्तरकुरु, रम्यक्वास और हिरण्यवत।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण मे तीन क्षेत्र कहे गये है, यथा-

भरत, हेमवत और हरिवास।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर मे तीन क्षेत्र कहे गये है, यथा-

रम्यक्वास, हिरण्यवत और ऐरवत।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के दक्षिण मे तीन वर्षधर पर्वत है, यथा-

लघुहिमवान, महाहिमवान और निषध।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के उत्तर मे तीन वर्षधर पर्वत है, यथा-

पृथ्वी चलायमान होती है ।

इन तीन कारणो से पृथ्वी देशत. कम्पित होती हैं ।

तीन कारणो से पूर्ण पृथ्वी चलायमान होती है, यथा-

इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे घनवात क्षुव्व होने से घनोदधि कम्पित होता है ।

कम्पित होता हुआ घनोदधि समग्र पृथ्वी को चलायमान करता है ।

महर्धियक—यावत्—महेश कहा जाने वाला देव तथारूप-श्रमण-माहन को ऋद्धि, यश, वल, वीर्य, पुरपाकार पराक्रम वताता हुआ समग्र पृथ्वी को चलायमान करता है ।

देव तथा असुरो का सग्राम होने पर समस्त पृथ्वी चलायमान होती है।

इन तीन कारणो से सारी पृथ्वी चलायमान होती है । [३]

१९९ किल्विपिक देव तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

तीन पल्योपम की स्थिति वाले,

तीन सागरोपम की स्थिति वाले,

तेरह मागरोपम की स्थिति वाले ।

प्रश्न—हे भगवन् ! तीन पल्योपम की स्थितिवाले किल्विषिक देव कहा रहते है ?

तप्तजला, मत्तजला और उन्मत्तजला ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के दक्षिण मे तीन अन्तर नदिया कही गई है, यथा-

क्षीरोदा, शीतस्रोता, और अन्तर्वाहिनी ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के उत्तर मे तीन अन्तर नदिया कही गई है, यथा-

उर्मिमालिनी, फेनमालिनी और गभीरमालिनी । [१५]

इस प्रकार घातकी खण्डद्वीप के पूर्वार्ध मे अकर्मभूमियों से लगाकर अन्तर नदियो तक सब समान समझना चाहिए—यावत्—अर्धपुष्कर द्वीप के पश्चिमार्ध मे भी इसी प्रकार जानना चाहिये । [४५-६०]

१९८ तीन कारणो से पृथ्वी का थोड़ा भाग चलायमान होता है, यथा-

रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे बादर पुद्‌गल आकर लगे या वहा से अलग होवे तो वे लगने या अलग होने वाले बादर पुद्‌गल पृथ्वी के कुछ भाग को चलायमान करते हैं,

महा ऋद्धिवाला—यावत्—महेश कहा जाने वाला महोरग देव इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे आवागमन करे तो पृथ्वी चलायमान होती है,

नागकुमार तथा सुवर्णकुमार का सग्राम होने पर थोडी

तीन को अनुद्घातिक 'गुरु' प्रायश्चित्त कहा गयाहै, यथा

हस्तकर्म करने वाले को,

मैथुन सेवन करने वाले को,

रात्रिभोजन करने वाले को ।

तीन को पाराचिक[1] प्रायश्चित्त कहा गया है, यथा-

कषाय और विषय से अत्यन्त दुष्ट को[2] परस्पर स्त्यान-गृद्धि निद्रावाले को[3] 'गुदा'मैथुन करने वालो को।

तीन को अनवस्थाप्य[4] प्रायश्चित्त कहा गया है, यथा-

सार्धमिको की चोरी करने वाले को,

अन्यधार्मिको की चोरी करने वाले को,

हाथ आदि से मर्मान्तक प्रहार करने वाले को ।

२०२ तीन को प्रव्रजित करना नही कल्पता हैं, यथा-

पण्डक-नपुंसक को,

---

१. यह अतिम प्रायश्चि है । विशेष जानने के लिए प्रायश्चि परिशिष्ट देखें ।

२. साधु या राजा आदि का वध या साध्वी या रानी वगैरह से विषय-सेवन सरीखे भयकर अपराध करने वाले को।

३. जागृत अवस्था मे सोचे हुए कार्य को निद्रावस्था पूरा करनेकी जिससे शक्ति प्राप्त हो ऐसी निद्रा होती है

४. पुनः महाव्रत आरोपण के अयोग्य अर्थात् पुनः दीक्षा देने के अयोग्य । विशेष जानने के लिए प्रायश्चित्त-परिशिष्ट देखे

उत्तर—ज्योतिष्क देवो के ऊपर और सौधम-ईशानकल्प के नीचे तीन पल्योपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव रहते हैं।

प्रश्न—हे भगवन्! तीन सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव कहा रहते हैं?

उत्तर—सौधर्म ईशान देवलोक के ऊपर और सनत्कुमार-माहेन्द्रकल्प के नीचे तीन सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव रहते हैं।

प्रश्न—तेरह सागरोपम स्थिति वाले किल्विषिक देव कहा रहते है?

उत्तर—ब्रह्मलोक कल्प के ऊपर और लान्तक कल्पके नीचे तेरह सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव रहते हैं।

२०० देवराज देवेन्द्र शक्र की बाह्य परिषद् के देवो की स्थिति तीन पल्योपम की कही गई है।

देवराज देवेन्द्र शक्र की आभ्यन्तर परिषद् की देवियो की स्थिति तीन पल्योपम की कही गई है।

देवराज देवेन्द्र ईशान के बाह्य परिषद् देवियो कीस्थिति तीन पल्योपम की कही गई है।

२०१ प्रायश्चित्त तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

ज्ञानप्रायश्चित्त, दर्शनप्रायश्चित्त और चारित्र-प्रायश्चित्त।

मानुषोत्तर पर्वत,

कुण्डलवर पर्वत,

रुचकवर पर्वत।

२०५ तीन बड़े से बड़े कहे गये हैं, यथा-

सब मेरुपर्वतों में जम्बूद्वीप का मेरुपर्वत,

समुद्रों में स्वयभुरमण समुद्र,

कल्पों में ब्रह्मलोक कल्प।

२०६ तीन प्रकार की कल्प स्थिति 'आचार-मर्यादा' कही गई है, यथा-

सामायिक कल्पस्थिति,

छेदोपस्थापनीय कल्पस्थिति

निर्विशमान 'परिहार विशुद्धि' कल्पस्थिति।

अथवा तीन प्रकार की कल्पस्थिति कही गई है, यथा-

निर्विष्ट कल्पस्थिति 'परिहार विशुद्धिक'

जिनकल्प स्थिति,

स्थविर कल्पस्थिति।

२०७ नारक जीवों के तीन शरीर कहे गये हैं, यथा-

वैक्रिय, तैजस और कार्मण।

असुरकुमारों के तीन शरीर नैरयिकों के समान कहे गये हैं,

इसी तरह सब देवों के।

पृथ्वीकाय के तीन शरीर कहे गये है, यथा-

वातिक[1]

अथवा व्याधि-ग्रस्त को, क्लीव—असमर्थ को

इसी तरह 'उक्त तीन को' मुण्डित करना, शिक्षा देना महाव्रतो का आरोपण करना, एक साथ बैठ कर भोजन करना तथा साथ मे रखना नही कल्पता है।

२०३ तीन वाचना देने योग्य नही है, यथा-

अविनीत को,

दूध आदि विकृति के लोलुपी को,

अत्यन्त क्रोधी 'जिसका क्रोध कभी शान्त न हो उसको।

तीन को वाचना देना कल्पता है, यथा-

विनीत को

घी आदि विकृति मे लोलुप न होने वाले को,

क्रोध उपशान्त करने वाले को।

तीन को समझाना कठिन है, यथा-

दुष्ट को, मूढ को और दुराग्रही को

तीन को सरलता से समझाया जा सकता है, यथा-

अदुष्ट को, अमूढ को और अदुराग्रही को।

२०४ तीन माण्डलिक पर्वत कहे गये है, यथा-

---

१ जो विषयेच्छा होने पर अपने आपको रोक न सके।

भाव की अपेक्षा तीन प्रत्यनीक कहे गये है, यथा-
ज्ञान-प्रत्यनीक,
दर्शन-प्रत्यनीक,
चारित्र-प्रत्यनीक ।

श्रुत की अपेक्षा तीन प्रत्यनीक कहे गये हैं, यथा-
सूत्र-प्रत्यनीक,
अर्थ-प्रत्यनीक,
तदुभय- प्रत्यनीक ।

२०९ तीन अग पिता के 'वीर्य से निष्पन्न' कहे गये है, यथा-
हड्डी, हड्डी की मिजा और केश-मूछ, रोम नख[1] ।

तीन अग माता के 'आर्त्तव से निष्पन्न' कहे गये है, यथा-
मास, रक्त और कपाल का भेजा,
अथवा-भेजे का फिप्फिस 'मास विशेष' ।

२१० तीन कारणों से श्रमण निग्रन्थ महानिर्जरा वाला और महा पर्यवसान 'समाधिमरण वाला या कर्मो का आत्यन्तिक क्षय करने वाला होता है, यथा-
कब मैं अल्प या अधिक श्रुत का अध्ययन करु गा,
कब मैं एकलविहार प्रतिमा को अगीकार करके विचरुगा,

---

१. केशादि एक ही गिने गये हैं क्योकि ये प्राय: समान ही हैं।

औदारिक, तैजस और कार्मण।

इसी तरह वायुकाय को छोड़ कर चतुरिन्द्रिय पर्यन्त तीन शरीर समझने चाहिये।

२०८ गुरु सम्बन्धी तीन प्रत्यनीक 'प्रतिकूल आचरण करने वाले कहे गये हैं, यथा-

आचार्य का प्रत्यनीक,

उपाध्याय का प्रत्यनीक,

स्थविर का प्रत्यनीक।

गति सम्बन्धी तीन प्रत्यनीक कहे गये है, यथा-

इहलोक-प्रत्यनीक,

परलोक-प्रत्यनीक,

उभय लोक प्रत्यनीक

समूह की अपेक्षा से तीन प्रत्यनीक कहे गये हैं, यथा-

कुल प्रत्यनीक,

गण-प्रत्यनीक

सघ-प्रत्यनीक।

अनुकम्पा की अपेक्षा से तीन प्रत्यनीक कहे गये हैं, यथा-

तपस्वी-प्रत्यनीक,

ग्लान-प्रत्यनीक,

शैक्ष 'नवदीक्षित' प्रत्यनीक[1],

---

१. इन पर अनुकम्पा करना चाहिए परन्तु जो इन पर अनुकम्प नहीं करता है वह इनका प्रत्यनीक कहा जाता - ।

एक परमाणु-पुद्गल का दूसरे परमाणु-पुद्गल से टक-
राने के कारण गति मे प्रतिघात होता है,
रूक्ष होने से गति मे प्रतिघात होता है,
लोकान्त मे गति का प्रतिघात होता है[1]।

२१२ चक्षुष्मान् 'नेत्रवाले' तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-
एक नेत्रवाले, दो नेत्रवाले और तीन नेत्रवाले।
छद्मस्थ-श्रुतादि ज्ञान-रहित मनुष्य एक नेत्रवाले है[2]
देव दो नेत्रवाले हैं,[3]
तथारूप श्रमण-माहन तीन नेत्र वाले हैं।[4]

२१३ तीन प्रकार का अभिसमागम 'विशिष्ट ज्ञान' है, यथा-
ऊर्ध्व, अध. और तिर्यक्।
जव किसी तथारूप श्रमण-माहण को विशिष्ट ज्ञान-दर्शन
'परम अवधिज्ञानादि' उत्पन्न होता है तब वह
सर्व प्रथम ऊर्ध्वलोक को जानता है
तदनन्तर तिर्यक् लोक को जानता है,
उसके पश्चात् अधोलोक को जानता है।
हे श्रमण आयुष्मन्! अधोलोक का ज्ञान कठिनाई से होता है

---

१. क्योंकि आगे धर्मास्तिकाय का अभाव होने से गति नही होती।
२. क्योंकि उनके विशिष्ट श्रुतज्ञानादि भावचक्षु नहीं है केवल चर्मचक्षु है।
३. क्योंकि उनके चक्षु रिन्द्रिय और अवधिज्ञान है।
४. विशिष्ट श्रुत अवधि-ज्ञान और दर्शन उत्पन्न होने से उनके

कब मैं अन्तिम मारणान्तिक सलेखना से भूषित होकर आहार पानी का त्याग करके पादपोपगमन संथारा अगीकार करके मृत्यु की इच्छा नही करता हुआ विचरुगा।

इन तीन कारणो से तीनो भावना प्रकट करता हुआ अथवा चिन्तन पर्यालोचन करता हुआ निर्ग्रन्थ महानिर्जरा और महापर्यवसान वाला होता है।

तीन कारणो से श्रमणोपासक महानिर्जरा और महापर्यवसान करने वाला होता है, यथा-

कब मे अल्प या वहुत परिग्रह को छोडूगा,

कब मैं मुंडित होकर गृहस्थ से अनगार धर्म मे दीक्षित होऊगा,

कब मैं अन्तिम मारणान्तिक सखेलना झूसणा से झूषित होकर, अहार-पानी का त्याग करके पादपोगमन सथारा करके मृत्यु की इच्छा नही करता हुआ विचरूंगा। इस प्रकार शुद्ध मन से, शुद्ध वचन से और शुद्ध काया से पर्यालोचन करता हुआ या उक्त तीनों भावना प्रकट करता हुआ श्रमणोपासक महानिर्जरा और महापर्यवसान वाला होता है।

२११ तीन प्रकार से पुद्गल की गति मे प्रतिघात होना कहा गया है, यथा-

ज्ञान की ऋद्धि, दर्शन की ऋद्धि और चारित्र की ऋद्धि।

अथवा-गणी की ऋद्धि तीन प्रकार की है, यथा-
सचित्त, अचित्त और मिश्र।

२१५ तीन प्रकार के गौरव कहे गये है, यथा-
ऋद्धि-गौरव, रस- गौरव और साता-गौरव।

२१६ तीन प्रकार के करण (अनुष्ठान) कहे गये हे, यथा-
धार्मिक करण, अधार्मिक करण और मिश्र करण।

२१७ भगवान् ने तीन प्रकार का धर्म कहा है, यथा-
सु-अधीत 'अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त करना'

सु-ध्यात 'अच्छी तरह भावनादी का चिन्तन करना'
सु-तपस्यित 'तप का अनुष्ठान अच्छी तरह करना)।
जब अच्छी तरह अध्ययन होता है तो अच्छी तरह ध्यान चिन्तन होसकता है,

जब अच्छी तरह ध्यान और चिन्तन होता है तब श्रेष्ठ तप का आराधन होता है।

इसी प्रकार सु-अधीत, सु-ध्यान और सु-तपयिस्त रूप सु-आख्यात धर्म भगवान ने प्ररूपित किया है।

२१८ व्यावृत्ति 'हिंसादि से निवृत्ति' तीन प्रकार की कही गई है, यथा-
1. ज्ञानयुक्त की जाने वाली व्यावृत्ति,

२१४ ऋद्धि तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

देवर्द्धि, राजर्द्धि और गणके अधिपति आचार्य की ऋद्धि।

देव की ऋद्धि तीन प्रकार की कही है, यथा-

विमानो की ऋद्धि,

वैक्रिय की ऋद्धि,

परिचार 'विपय भोग' की ऋद्धि ।

अथवा- देवर्द्धि तीन प्रकार की है यथा-

सचित्त, अचित्त और मिश्र ।

राजा की ऋद्धि तीन प्रकार की है, यथा-

राजा की अतियान ऋद्धि[1],

राजा कि नियान ऋद्धि[2],

राजा की सेना, वाहन कोप, कोष्ठागार (धान्यभाण्डागार) आदि की ऋद्धि ।

अथवा- राजा की ऋद्धि तीन प्रकार की है, यथा-

सचित्त, अचित्त और मिश्र ऋद्धि ।

गणी (आचार्य)की ऋद्धि तीन प्रकार की है, यथा-

द्रव्य चक्षु, परमश्रुत और अवधि ज्ञानदर्शन रूप तीन नेत्र हैं ।

१. नगर-प्रवेश के समय तोरण आदि की ऋद्धि ।

२. बाहर निकलने के समय हाथी सामन्त आदि की ऋद्धि ।

२२१ तीन लेश्याएं दुर्गन्ध वाली कही गई है, यथा-
कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या ।
तीन लेश्याए सुगंधवाली कही गई हैं, यथा-
तेजोलेश्या, पद्मलेश्या शुक्ललेश्या ।

इसी तरह दुर्गति मे ले जानेवाली, सुगति मे ले जाने वाली लेश्या, अशुभ, शुभ, अमनोज्ञ, मनोज्ञ, अविशुद्ध, विशुद्ध, क्रमश. अप्रशस्त, प्रशस्त, शीतोष्ण और स्निग्ध, रूक्ष समझनी चाहिए ।

२२२ मरण तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-
वालमरण, पण्डितमरण और वाल-पण्डितमरण ।
वालमरण तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-
स्थितलेश्य[1] सक्लिष्ट लेश्य[2] पर्यवजात लेश्य[3]
पण्डितमरण तीन प्रकार का है, यथा-
स्थितलेश्य, असक्लिष्ट लेश्य और अपर्यवजात लेश्य ।
वालपण्डितमरण तीन प्रकार का है, यथा-
स्थितलेश्य, असक्लिष्टलेश्य और अपर्यवजात लेश्य ।

---

१ कृष्णादि लेश्या वाला होकर जब कृष्ण वाले नरकादि में उत्पन्न हो ।

२ नील लेश्यावाला होकर कृष्ण लेश्या वाले में उत्पन्न हो ।

३ कृष्णलेश्या वाला होकर जब नीलादि लेश्या मे उत्पन्नहो ।

अज्ञानसे की जाने वाली व्यावृत्ति,
सशय से की जाने वाले व्यावृत्ति ।
इसी तरह पदार्थो मे आसक्ति और पदार्थों का ग्रहण भी तीन तीन प्रकार का है ।

२१९ तीन प्रकार के अन्त कहे गये है, यथा-
लोकान्त, वेदान्त और समयान्त ।

लौकिक अर्थशास्त्र आदि से निर्णय करना लोकान्त है,
वेदो के अनुसार निर्णय करना वेदान्त है
जैन सिद्धान्तो के अनुसार 'निर्णय' करना समयान्त है ।

२२० जिन तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
अवधिज्ञानी जिन,
मन पर्यायज्ञानी जिन,
केवलज्ञानी जिन ।

तीन केवली कहे गये हैं, यथा-
अवधिज्ञानी केवली,
मन.पर्यायज्ञानी केवली
केवलज्ञानी केवली ।

तीन अर्हन्त कहे गये हैं, यथा-
अवधिज्ञानी अर्हन्त,
मन.पर्यायज्ञानी अर्हन्त,
केवलज्ञानी अर्हन्त ।

सम्यक् निश्चय करने वाले के तीन स्थान हित कर —यावत्— शुभानुबन्धी होते हैं, यथा-

कोई व्यक्ति मुण्डित होकर गृहस्थावस्था से अनागार धर्म मे प्रव्रजित होने पर निग्रन्थ प्रवचन मे शका नही लाता है अन्यमत की कांक्षा नही करता है—यावत्—कलुषभाव को प्राप्त न होकर निर्ग्रन्थ प्रवचन मे श्रद्धा रखता है, विश्वास रखता है और रुचि रखता है तो वह परीषहो को पराजित कर देता है । परीषह उसे पराजित नही कर सकते है ।

कोई व्यक्ति मुण्डित होकर और गृहस्थावस्था से अनगार धर्म मे प्रव्रजित होकर पाच महाव्रतो मे शका नही करता है, काक्षा नही करता है—यावत्—वह परीषहो को पराजित करता है, परीषह उसे पराजित नही कर सकते है ।

कोई व्यक्ति मुण्डित होकर गृहस्थावस्था से अनगार अवस्था मे प्रव्रजित होकर षट् जीवनिकाय मे शका नही करता है—यावत्—वह परीषहो को पराजित कर देता है । उसे परीषह पराजित नही कर सकते है ।

२२३ निश्चय नही करने वाले 'शकाशील' के लिए तीन स्थान अहित कर, अशुभरूप, अयुक्त, अकल्याण कारी और अशुभानुबन्धी होते हैं, यथा-

कोई मुण्डित होकर गृहस्थाश्रम से निकलकर अनागार धर्म मे दीक्षित होने पर निग्रन्थ प्रवचन मे शका करता है, अन्यमत की इच्छा करता है, क्रिया के फल के प्रति शकाशील होता है, द्वैधीभाव 'ऐसा है या नही है' ऐसी बुद्धि को प्राप्त करता है, और कलुषित भाव वाला होता है और इस प्रकार वह निग्रन्थ प्रवचन मे श्रद्धा नही रखता हैं, विश्वास नही रखता है, रुचि नही रखता है तो उसे परीषह होते है और वे उसे पराजित कर देते हैं। परीषहो को पराजित नही कर सकता।

कोई व्यक्ति मुण्डित होकर अगार अवस्था से अनगार रूप मे दीक्षित होने पर पाच महाव्रतो मे शका करे —यावत्— कलुषित भाव वाला होता है और इस प्रकार वह कलुषित पच महाव्रतो मे श्रद्धा नही रखता, —यावत्— वह परीषहो को पराजित नही कर सकता है।

कोई व्यक्ति मुण्डित होकर और अगार से अनागार दीक्षा को अगीकार करने पर षट् जीव निकाय में श्रद्धा नही करता है, —यावत्— वह परीषहो को पराजित नही कर सकता है,

२२९ श्रमण "भगवान्" महावीर से लेकर तीसरे युगपुरु (जम्बू स्वामी) पर्यन्त मोक्षगमन कहा गया है[1]।

मल्लिनाथ भगवान् ने तीन सौ पुरुषो के साथ मुण्डित होकर प्रव्रज्या धारण की थी।

इसी तरह पार्श्वनाथ भगवान् ने भी।

२३० श्रमण भगवान् महावीर के जिन नहीं किन्तु जिन के समान, सर्वाक्षरसन्निपाती 'सब भाषाओ के वेत्ता' और जिन के समान यथातथ्य कहने वाले चौदह पूर्वधर मुनियो की उत्कृष्ट सम्पदा 'संख्या' तीन सौ थी।

२३१ तीन तीर्थंकर चक्रवर्त्ती थे, यथा-

शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरनाथ।

२३२ ग्रैवेयक विमान प्रस्तर 'समूह' तीन कह कहे गये हैं, यथा-

अधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर।

अधस्तन ग्रैवेयक विमान स्तर तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

अधस्तनाधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

अधस्तनमध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

अधस्तनोपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर।

---

१ लगातार तीन पट्टधर निर्वाण को प्राप्त हुए हैं।

२२४ रत्नप्रभादि प्रत्येक पृथ्वी तीन वलयों के द्वारा चारों तरफ से घिरी हुई है, यथा-

घनोदधिवलय से, घनवातवलय से और तनुवातवलय से।

२२५ नैरयिक जीवन उत्कृष्ट तीन समय वाली विग्रह-गति से उत्पन्न होते हैं।

एकेन्द्रिय को छोड़कर वैमानिक पर्यन्त ऐसा जानना चाहिए[1]

२२६ क्षीण मोह वाले अर्हन्त तीन कर्मप्रकृतियो का एक साथ क्षय करते हैं, यथा-

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय।

२२७ अभिजित् नक्षत्र के तीन तारे कहे गये हैं।

इसी तरह श्रवण, अश्विनी, भरणी, मृगशिर, पुष्य और ज्येष्ठा के भी तीन तीन तारे है।

२२८ श्री धर्मनाथ तीर्थंकर के पश्चात् त्रिचतुर्थांग 'पौने, पल्योपम न्यून सागरोपम व्यतीत हो जाने के बाद श्री शान्तिनाथ भगवान् उत्पन्न हुए।

---

१. एकेन्द्रिय जीव, एकेन्द्रिय मे उत्पन्न होते हुए त्रसनाड़ी से बाहर भी उत्पन्न होते हैं अतः पांच समय भी लग सकते हैं)।

चार स्थान

प्रथम उद्देशक

२३५ चार प्रकार की अन्त-क्रियाए[1] कही गई हैं,

उनमें प्रथम अन्तक्रिया इस प्रकार है—

कोई अल्पकर्मा व्यक्ति मनुष्य-भव मे उत्पन्न होता है, वह मुण्डित होकर गृहस्थावस्था से अनगार धर्म मे प्रव्रजित होने पर उत्तम सयम, सवर और समाधि का पालन करने वाला रूक्षवृत्ति वाला (आसक्ति -रहित) समार को पार करने का अभिलापी; शास्त्राध्ययन के लिए तप करने वाला, दु ख का (दु ख के कारण रूप कर्म का) क्षय करने वाला, तपस्वी (आभ्यन्तर ध्यान आदि तप करने वाला) होता है। उमे घोर तप (अनशन आदि) नही करना पडता है और न उसे घोर वेदना होती है। (क्योकि वह अल्पकर्मा ही उत्पन्न हुआ है)। ऐसा पुरुष दीर्घायु भोगकर सिद्ध होता है, बुद्ध होता है, मुक्त होता है, निर्वाण

---

१. मुक्ति, संसार का अन्त करना।

मध्यम ग्रैवेयक विमानप्रस्तर तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

मध्यमाधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

मध्यममध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

मध्यमोपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर ।

उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

उपरितन अधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

उपरितन मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

उपरितनोपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर ।

२३३ जीवोने तीन स्थानो मे अर्जित पुद्गलो को पापकर्म रूप मे एकत्रित किये, करते है और करेगे, यथा-

स्त्रीवेद निर्वर्तित,

पुरुषवेद निर्वर्तित,

नपुसकवेद निर्वर्तित ।

पुद्गलो का एकत्रित करना, वृद्धि करना, बध, उदीरणा, वेदन तथा निर्जरा का भी इसी तरह कथन समझना चाहिए ।

२३४ तीन प्रदेशी स्कन्ध अनन्त कहे है इस प्रकार-यावत्-त्रिगुण रूक्ष पुद्गल अनन्त कहे गये है ।

दुःखों का अन्त करता है। जैसे चातुरन्त चक्रवर्ती राजा सनत्कुमार।

॥ यह तीसरी अन्तक्रिया है ॥

चौथी अन्तक्रिया इस प्रकार है-

कोई अल्पकर्मा व्यक्ति मनुष्य-भव मे उत्पन्न होता है। वह मुण्डित होकर -यावत्-दीक्षा लेकर उत्तम संयम का पालन करता है -यावत्- न तो उसे घोर तप करना पड़ता है और न उसे घोर वेदना सहनी पड़ती है। ऐसा पुरुष अल्पायु भोगकर सिद्ध होता है -यावत्- सब दुःखो का अन्त करता है। जैसे भगवती मरुदेवी।

॥ यह चौथी अन्तक्रिया है ॥

२३६ चार प्रकार के वृक्ष कहे गये हैं, यथा-

कितनेक द्रव्य मे भी ऊंचे और भाव मे भी ऊंचे,[१]

कितनेक द्रव्य मे ऊंचे किन्तु भाव से नीचे,[२]

कितनेक द्रव्य मे नीचे किन्तु भाव मे ऊंचे[३],

कितनेक द्रव्य मे भी नीचे और भाव मे भी नीचे।[४]

---

१. जैसे चन्दनादि।

२. जैसे नीम आदि।

३. जैसे इलायची आदि।

४. जैसे जवासा आदि।

प्राप्त करता है और सब दुखो का अन्त करता है। जैसे – चातुरन्त (चार दिगन्त वाली पृथ्वी का स्वामी) चक्रवर्ती भरत राजा

॥ यह पहली अन्तक्रिया है ॥

दूसरी अन्तक्रिया इस प्रकार है —

कोई व्यक्ति अधिक कर्म वाला मनुष्य-भव मे उत्पन्न होता है, वह मुण्डित होकर गृहस्थावस्था से अनगार-धर्म मे प्रव्रजित होकर सयम युक्त, सवर युक्त-यावत्-उपधान-वान्, दुख का क्षय करने वाला और तपस्वी होताहै । उसे घोर तप करना पडता है और उसे घोर वेदना होती है । ऐसा पुरुष अल्पआयु भोगकर सिद्ध होता है -यावत्- दुखो का अन्त करता है, जैसे गजसुकुमार अणगार।

॥ यह दूसरी अन्तक्रिया है ॥

तीसरी अन्तक्रिया इस प्रकार है —

कोई अल्पकर्मा व्यक्ति मनुष्य-भव मे उत्पन्न होता है, वह मुण्डित होकर अगार अवस्था मे अनगारधर्म मे दीक्षित हुआ, जैसे दूसरी अन्तक्रिया मे कहा उसी तरह सर्व कथन करना चाहिए, विशेषता यह है कि वह दीर्घायु भोगकर होता है —यावत्— सब

है। इत्यादि चार भंग।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

द्रव्यादि से उन्नत होते हुए उन्नत मनवाले -यावत्- चार भंग।

इसी प्रकार संकल्प ८ प्रज्ञा ९, दृष्टि १०, शीलाचार ११, व्यवहार १२, पराक्रम १३, सब के चार चार भंग समझ लेने चाहिए।

इन मन सूत्रों में पुरुष सूत्र ही समझने चाहिये, वृक्ष सूत्र नहीं।

चार प्रकार के वृक्ष कहे गये हैं, यथा-

कितनेक वृक्ष आकृति से भी सरल और फलादि देने में भी सरल,[1]

कितनेक आकृति में सरल और फलादि देने में वक्र।

इस प्रकार चार भंग।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

आकृति से भी सरल और हृदय से भी सरल।

इसी प्रकार उन्नत प्रणत के चार भंग और ऋजुवक्र के चार भंग भी कहने चाहिये।

पराक्रम तक सब भंग जान लेने चाहिए।

---

१. जिसकी सेवा करने पर उचित समय पर उचित उपकार रूप फल प्राप्त हो।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

कितनेक द्रव्य से 'जाति से' उन्नत और गुण से भी उन्नत इस प्रकार -यावत्- द्रव्य से भी हीन और गुण से भी हीन।

चार प्रकार के वृक्ष कहे गये है, यथा-

कितनेक वृक्ष ऊचाई मे उन्नत होते है और शुभ रस वाले होते है।

कितनेक वृक्ष ऊचाई मे उन्नत होते है परन्तु अशुभ रस वाले होते है।

कितनेक वृक्ष ऊचाई मे अवनत और रसादि मे उन्नत होते हैं।

कितनेक वृक्ष ऊचाई मे भी अवनत और रसादि मे भी अवनत होते हैं।

इसी तरह चार प्रकार के पुरुष कहे गये है-यथा-

द्रव्य से भी उन्नत और गुण-परिणमन से भी उन्नत। इत्यादि चार भग।

चार प्रकार के वृक्ष कहे गये है,

कितनेक ऊचाई मे भी ऊचे और रूप मे भी उन्नत। इत्यादि चार भग।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

कितनेक द्रव्यादि से उन्नत होते हुए रूप से भी उन्नत

इत्यादि चार भग ।

इसी तरह परिणत और रूप से भी वस्त्र की चौभगी और पुरुप की चौभगी समझ लेनी चाहिए ।

चार प्रकार के पुरुप कहे गये हैं, यथा-

जात्यादि से शुद्ध और मन से भी शुद्ध ।

इत्यादि चार भग ।

इसी तरह सकल्प-यावत्-पराक्रम के भी चारभग जानने चाहिए ।

२४० चार प्रकार के पुत्र कहे गये हैं,

अतिजात, 'अपने पिता से भी वढा चढा हुआ,

'अनुजात, 'पिता के समान,

अवजात 'पिता से कम गुण वाला,

कुलागार' कुलमे कलक लगाने वाला, ।

चार प्रकार के पुरुप कहे गये हे, यथा-

कितने द्रव्य से भी सत्य और भाव से भी सत्य होते है।

कितने द्रव्य से सत्य और भाव से असत्य होते हैं।

इत्यादि चार भग ।

इसी तरह परिणत-यावत्-पराक्रमके चार भग जानने चाहिये ।

---

१. मूल मे भी सरल और अन्त मे भी सरल ।

२३७ प्रतिमाधारी अनगार को चार भाषाए बोलना कल्पता है, यथा-याचनी,[1] प्रच्छनी,[2] अनुज्ञापनी,[3] प्रश्नव्याकरणी।[4]

२३८ चार प्रकार की भाषाए कही गई है, यथा-

सत्यभाषा, मृषा, सत्य-मृषा और असत्यामृषा-व्यवहार भाषा।

२३९ चार प्रकार के वस्त्र कहे गये है, यथा-

शुद्ध तन्तु आदि से बुना हुआ भी है और बाह्य मेल से रहित भी है

अथवा पहले भी शुद्ध और अभी भी शुद्ध।

शुद्ध बुना हुआ तो है परन्तु मलिन है,

शुद्ध बुना हुआ नही परन्तु स्वच्छ है।

शुद्ध बना हुआ भी नही है और स्वच्छ भी नही है।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

जाती आदि से शुद्ध और ज्ञानादी गुण से भी शुद्ध।

---

१. वस्तु मागने के लिए बोलना।

२ मार्ग पूछने के लिए या सूत्रार्थ पूछने के लिए बोलना।

३ स्थान आदि की आज्ञा लेते हुए बोलना।

४. प्रत्युत्तर देने के लिए बोलना।

वल्ली फल के कोर के समान,[1]

मेढेके विषाण के तुल्य वनस्पति के कोर के समान[2] ।

२४३ चार प्रकार के घुन कहे गये है, यथा-

लकड़ी के बाहर की त्वचा को खाने वाले,

छाल खाने वाले,

लकडी खाने वाले,

लकडी का सारभाग खाने वाले ।

इसी प्रकार चार प्रकार के भिक्षु कहे गये है, यथा-

त्वचा खाने वाले घुन के समान-यावत्-सार खाने वाले घुन के समान ।

१ त्वचा खाने वाले घुन के जैसे भिक्षु का तप सार खाने वाले घुन के जैसा है ।

२ छाल खाने वाले घुन के जैसे भिक्षु का तप काष्ठ खाने वाले घुन के जैसा है ।

---

१ जो बिना अधिक कष्ट के और शीघ्र ही सेवक को फल दे दे ।

२ जिसकी सेवा करने पर बदले मे केवल मीठे शब्द ही मिले विशेष उपकार न हो,

इस वनस्पति के फल सोने के समान वर्ण वाले होते हैं ।

चार प्रकार के वस्त्र कहे गये है, यथा-

कितने स्वभाव से भी पवित्र और संस्कार से भी पवित्र,

कितनेक स्वभाव से पवित्र परन्तु संस्कार से अपवित्र

इत्यादि चार भग।

इसी तरह चार प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

शरीर से भी पवित्र और स्वभाव से भी पवित्र।

इत्यादि चार भग।

२४१ शुद्ध वस्त्र के चार भग पहले कहे है उसी प्रकार शुचिवस्त्रके भी चार भग समझने चाहिए।

२४२ चार प्रकार के कोर कहे गये हैं, यथा-

आम्रफल के कोर,

ताड के फल के कोर,

वल्लीफल के कोर,

मेढे के सिंग के समान फलवाली वनस्पति के कोर।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये है यथा-

आम्रफल के कोर के समान,

तालफल के कोर के सामन[1],

---

१ जिसकी बहुत काल तक कष्ट उठा कर सेवा करने पर बड़ा फल प्राप्त होता हो।

इसी तरह नरकायुकर्म के क्षीण न होने से-यावत्-आने मे समर्थ नही होता है ।

इन चार कारणो मे नवीन उत्पन्न नैरयिक मनुष्य लोक मे शीघ्र आने की इच्छा करने पर भी आने मे समर्थ नही होता है ।

२४६ साध्वि को चार साडिया धारण करने और पहनने के लिए कल्पती है, यथा-

एक दो हाथ विस्तारवाली,[1]

दो तीन हाथ विस्तारवाली,

एक चार हाथ विस्तारवाली

२४७ ध्यान चार प्रकार के कहे गये है, -

आर्त ध्यान, रौद्र ध्यान, धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान ।

आर्त्तध्यान चार प्रकार का कहा गया है, यथा-

अमनोज्ञ 'अनिष्ट' वस्तु की प्राप्ति होने पर उसे दूर करने की चिन्ता करना ।

मनोज्ञवस्तु की प्राप्ति होने पर वह दूर न हो उसकी चिन्ता करना ।[2]

---

१ विस्तार का अर्थ हे चौड़ाई-पने से समझना चाहिए ।

२ सूत्रार्थ का चिन्तन ।

३ काष्ठ खाने वाले घुन के जैसे भिक्षु का तप छाल खाने वाले घुन के जैसा है।

४ सार खाने वाले घुन के जैसे भिक्षु का तप त्वचा खाने वाले घुन के जैसा है।

२४४ तृण वनस्पति कायिक चार प्रकार के कहे गये है, यथा-अग्रवीज, मूलबीज-पर्ववीज और स्कंधबीज।

२४५ चार कारणो से नरक मे नवीन उत्पन्न नैरयिक मनुष्य लोक मे शीघ्र आने की इच्छा करता है परन्तु आने मे समर्थ नही होता है, यथा-

नरकलोक मे नवीन उत्पन्न हुआ नैरयिक वहा होने वाली प्रबल वेदना का अनुभव करता हुआ मनुष्यलोक शीघ्र आनेकी इच्छा करता है किन्तु शीघ्र आने मे समर्थ नही होता है।

नरकभूमि मे नवीन उत्पन्न हुआ नैरयिक नरकपालो (परमाधार्मिक देवो) के द्वारा पुन पुन. आक्रान्त होने पर मनुष्यलोक मे जल्दी आने की इच्छा करता है परन्तु आने मे समर्थ नही होता है।

नवीन उत्पन्न हुआ नैरयिक नरकवेदनीय कर्म के क्षीण न होने से, वेदना के वेदित न होने से, निर्जरित न होने से इच्छा करने पर भी मनुष्यलोक मे आने मे समर्थ नही होता है,

चार प्रकार का घर्मध्यान स्वरूप, लक्षण, आलम्वन एव अनुप्रेक्षा रूप चार पदों से चिन्तनीय है

आज्ञाविचय,[1]

अपायविचय,[2]

विपाकविचय,[3]

संस्थान विचय[4] ।

धर्मध्यान के चार लक्षण कहे गये है यथा-

आज्ञारुचि ,निसर्गरुचि

सूत्ररुचि अवगाढरुचि ।

धर्मध्यान के चार आलम्वन कहे गये हैं, यथा-

वाचना, पृच्छना, परिवर्तना और अनुप्रेक्षा ।

धर्मध्यान की चार भावनाए कही गई है, यथा-

एकत्वानुप्रेक्षा, अनित्यानुप्रेक्षा,

---

१ वीतराग की आज्ञा का पर्यालोचन करना ।

२ रागादि से होने वाले अनर्थो का विचार ।

३ कर्म-फल का विचार करना ।

४ लोक आदि के आकारका चिन्तन करना

५ शास्त्रो के अवगाहन से अथवा गुरु के उपदेश से होने वाली । रुचि ।

बीमारी होने पर उसे दूर करने की चिन्ता करना।

सेवित काम भोगो मे युक्त होने पर उनके चले न जाने की चिन्ता करना।

अथवा-ज्वरादि से भोग भोगने मे असमर्थ न हो जाऊं' ऐसी चिन्ता करना।

आर्तध्यान के चार लक्षण हैं' यथा-

आक्रन्दन करना, शोक करना,
आसु गिराना, विलाप करना।

रौद्रध्यान चार प्रकार का है, यथा-

हिंसानुबन्धी, मृषानुबन्धी,
स्तेयानुबन्धी सरक्षणाणुबन्धी।

रौद्रध्यान के चार लक्षण कहे गये हैं, यथा-

हिंसादि दोषो मे से किसी एक मे अत्यन्त प्रवृत्ति करना हिंसादि सब दोषो मे बहुविध प्रवृत्ति करना, हिंसादि अधर्मकार्य मे धर्म-बुद्धि से या अभ्युदय के लिये प्रवृत्ति करना,

मरण पर्यन्त हिंसादि कृत्यो के लिये पश्चात्ताप न होना आमरणान्त दोष है।

शुक्लध्यान के चार लक्षण कहे गये है, यथा-

अव्यथ[1], असम्मोह[2], विवेक[3], व्युत्सर्ग[4]।

शुक्लध्यान के चार आलम्बन है यथा-

क्षमा, निर्ममत्व, मृदुता और सरलता।

शुक्लध्यान की चार भावनाए कही गई है' यथा-

अनन्तवर्तितानुप्रेक्षा[5],

विपरिणामानुप्रेक्षा[6],

अशुभानुप्रेक्षा,[7]

अपायानुप्रेक्षा[8],

---

१ देवकृत उपसर्गो से होने वाली व्यथा का अभाव।

२ असूढता,

३ सब सयोगों से अपने आपको पृथक् करना,

४ देहोपाधि का त्याग।

५ जीव अनन्त बार चार गति रूप संसार मे भ्रमण कर चुका है आदि विचारना।

६ वस्तु के परिणमन की विचारणा।

७ संसार की अशुभता का विचार करना।

८ आश्रवके कटुक फलो का विचार करना।

अशरणानुप्रेक्षा, ससारानुप्रेक्षा ।

शुक्लध्यान चार प्रकार का कहा गया है, यथा-

पृथक्त्ववितर्क सविचारी ।[1]

एकत्व वितर्क अविचारी[2]

सूक्ष्म-क्रिया अनिवृत्ति[3]

समुच्छिन्नक्रिया अप्रतिपाति[4]

---

१ एक द्रव्य के विभिन्न पर्यायो की पृथक् पृथक् विस्तार से श्रुतानुसार विचार करना और अर्थ से शब्द का और शब्द से अर्थ का विचार करना ।

२ द्रव्य की पयार्यों मे अभेद का चिन्तन करना तथा अर्थ से शब्द मे एव शब्द से अर्थ चिन्तन करना अथवा मन आदि योगो का एक से दूसरे मे संचरण न होना ।

३ मोक्षगमन के समय मनोयोग आदि के निरुद्ध हो जाने पर सूक्ष्म श्वासोच्छ्वास रूप क्रिया का शेष रहना तथा वर्धमान परिणाम रहने से नहीं गिरनेवाला ध्यान होने से सूक्ष्मक्रिया अनिवृत्ति है ।

४ विषयभोग और धनादि के रक्षण के लिये व्याकुल होना)

५ शैलेशीकरण मे सम्पूर्ण काययोग का भी निरोध हो जाने से क्रिया का उच्छेद हो जाता है तथा वह अवस्था अप्रतिपाती है, अत. समुच्छिन्न क्रिया, अप्रतिपाती कहा गया ।

तदुभय प्रतिष्ठित[1], अप्रतिष्ठित[2]

ये क्रोध के चार आधार नैरयिक-यावत्-वैमानिक पर्यन्त सब मे पाये जाते है ।

इसी प्रकार-यावत्-लोभ के भी चार आधार है ।
मान, माया और लोभ के चार आधार वैमानिक पर्यन्त सब दण्डको मे पाये जाते है ।

चार कारणो से क्रोध की उत्पत्ति होती है, यथा–
क्षेत्र के निमित्त से, वस्तु के निमित्त से,
शरीर के निमित्त से, उपधि के निमित्त से ।

इस प्रकार नारक-यावत्-वैमानिक मे जानना चाहिए ।
इसी प्रकार-यावत्-लोभ की उत्पत्ति भी चार प्रकार से होती है । यह मान, माया और लोभ की उत्पत्ति नारक-जीवो से लेकर वैमानिक पर्यन्त सब मे होती है ।

चार प्रकार का क्रोध कहा गया है, यथा–
अनन्तानुबन्धी क्रोध, अप्रत्याख्यान क्रोध,
प्रत्याख्यान नावरण क्रोध, सज्वलन क्रोध ।
यह चारो प्रकार का क्रोध नारक-यावत्-वैमानिको मे

---

१ अपने और दूसरे के अपराध पर आने वाला क्रोध ।
२ विना किसी बाह्य कारण के क्रोध वेदनीय के उदय से होने वाला क्रोध ।'

२४८ देवो की स्थिति (क्रम–मर्यादा) चार प्रकार की है, यथा—

कोई सामान्य देव है, कोई देवो मे स्नातक (प्रधान) हैं, कोई देव पुरोहित है, कोई स्तुति-पाठक देव है ।

चार प्रकार का सवास 'मैथुन के लिए सहनिवास' कहा गया है, यथा-

कोई देव देवी के साथ सवास करता है,

कोई देव मानुषी नारी या तिर्यंच स्त्री के साथ संवास करता है.

कोई मनुष्य या तिर्यंच-पुरुष देवीके साथ सवास करता है, ।

कोई मनुष्ह या तिर्यंच पुरुप मानुपी या तिर्यंची के साथ सवास करता है ।

२४९ चार कपाय कहे गये हैं, यथा—

क्रोधकपाय, मानकपाय, मायाकपाय और लोभकपाय ।

ये चारो कपाय नारक-यावत्-वैमानिको में पाये जाते हैं

क्रोध के चार आधार कहे गये हैं, यथा—

आत्मप्रतिष्ठित[1] परप्रतिष्ठित[2]

---

१ 'अपने ऊपर आने वाला क्रोध' ।

२ दूसरे पर होने वाला' क्रोध ।

इसी प्रकार चयन के तीन दण्डक हुए ।

इसी प्रकार उपचय किया, करते है और करेंगे ।

वन्ध किया, करते है और करेंगे ।

उदीरणा की, करते हैं और करेंगे ।

वेदन किया, करते है और करेंगे ।

निर्जरा की, करते है और करेंगे ।

यो वैमानिक पर्यन्त चौवीस दण्डक मे "उपचय —यावत्—निर्जरा करेंगे" तीन-तीन दण्डक समझ लेने चाहिए ।

२५१ चार प्रकार की प्रतिमाए कही गई है, यथा-

समाधिप्रतिमा, उपधानप्रतिमा,

विवेकप्रतिमा, व्युत्सर्गप्रतिमा ।

चार प्रकार की प्रतिमाए कही गई है, यथा-

भद्रा, सुभद्रा, महाभद्रा और सर्वतोभद्रा ।

चार प्रकार की प्रतिमाए कही गई है, यथा-

क्षुद्रा मोकप्रतिमा, महती मोकप्रतिमा,

यवमध्या प्रतिमा, वज्रमध्या प्रतिमा ।

२५२ चार अजीव अस्तिकाय कहे गये है, यथा-

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय,

आकाशास्तिकाय, पुद्‌गलास्तिकाय ।

इमी तरह—यावत्—लोभ भी वैमानिक पर्यन्त है।

चार प्रकार का क्रोध कहा गया है, यथा-

आभोगनिर्वर्त्तित,[1]

अनाभोगनिर्वर्तित,[2]

उपशान्त क्रोध,

अनुपशान्त क्रोध,

यह चारो प्रकार का क्रोध नैरयिक—यावत्

—वैमानिको मे होता है।

इसी तरह—यावत्—चार प्रकार का लोभ—यावत्—

वैमानिको मे पाया जाता है।

२५० चार कारणो से जीवो ने आठ कर्म-प्रकृतियो का चयन किया है यथा-

क्रोध से, मान से, माया से और लोभ से।

इसी प्रकार वैमानिको तक समझ लेना चाहिए।

इसी प्रकार "ग्रहण करते हैं" यह दण्डक भी जान लेना चाहिए।

इसी प्रकार "ग्रहण करेंगे" यह दण्डक भी समझ लेना चाहिए।

---

१ क्रोध के फल को जानते हुए भी किया गया क्रोध।
२ विना जाने किया गया क्रोध।

विसवाद योगरूप मृषावाद ।

चार प्रकार के प्रणिधान (प्रयोग) कहे गये है, यथा-

मन–प्रणिधान, बचन–प्रणिधान,

काय–प्रणिधान, उपकरण–प्रणिधान ।

ये चारो प्रणिधान नारक –यावत्– वैमानिक पर्यन्त समस्त पचेन्द्रिय दण्डको मे जानने चाहिए ।

चार प्रकार के सुप्रणिधान कहे गये हे, यथा-

मन-सुप्रणिधान -यावत्- उपकरण-सुप्रणिधान ।

यह सुप्रणिधान सयत मनुष्यो मे ही पाये जाते हैं ।

चार प्रकार के दुष्प्रणिधान कहे गये है, यथा-

मन-दुष्प्रणिधान - यावत्- उपकरण- दुष्प्रणिधान ।

यह पचेन्द्रियो को – यावत्– वैमानिको को होता है ।

२५५ चार प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

कोई प्रथम मिलन मे वार्तालाप से भद्र लगते है परन्तु सहवास से अभद्र मालूम होते है,

कोई सहवास से भद्र मालूम होते है पर प्रथम मिलन मे अभद्र लगते है,

कोई प्रथम मिलन मे भी भद्र होते हे और सहवास से भी भद्र मालूम होते है,

कोई प्रथम मिलन मे भी भद्र नही लगते और सहवास

चार अरूपी अस्तिकाय कहे गये हैं, यथा-

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय,

आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय।

२५३ चार प्रकार के फल कहे गये है, यथा-

कोई कच्चा होने पर भी थोडा मीठा होता है,

कोई कच्चा होने पर भी अधिक मीठा होता है,

कोई पक्का होने पर भी थोडा मीठा होता है,

कोई पक्का होने पर ही अधिक मीठा होता है।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

श्रुत और वय से अल्प होते हुए भी थोडे मीठे फल के समान अल्प उपशमादि गुण वाले होते हैं।

इस प्रकार चारो भग समझने चाहिए।

२५४ चार प्रकार के सत्य कहे गये हैं, यथा-

काया की सरलतारूप सत्य, भाषा की सरलतारूप सत्य,

भावो की सरलतारूप सत्य, अविसवाद योगरूप सत्य।[1]

चार प्रकार का मृषावाद कहा गया है, यथा-

काया की वक्रतारूप मृषावाद,

भाषा की वक्रतारूप मृषावाद,

भावो की वक्रतारू मृषावाद,

---

१. वचन-पालन करना, विश्वासघात न करना।

इसी तरह सत्कार, सम्मान, पूजा, वाचना, सूत्रार्थ ग्रहण करना, सूत्रार्थ पूछना, प्रश्न का उत्तर देना, आदि जानें।

चार प्रकार पुरुष कहे गये है, यथा-

कोई सूत्रधर होता है अर्थधर नही होता,
कोई अर्थधर होता है, सूत्रधर नही होता ।
कोई सूत्रधर भी होता है और अर्थधर भी होता है,
कोई सूत्रधर भी नही होता और अर्थधर भी नही होता

२५६ असुरेन्द्र असुकुमार-राज चमर के चार लोकपाल कहे गये है,यथा-

सोम, यम, वरुण और वैश्रमण ।

इसी तरह बलीन्द्र के भी सोम, यम, वैश्रमण और वरुण चार लोकपाल है ।

धरणन्द्र के कालपाल, कोलपाल, शैलपाल और शखपाल ।
इसी तरह भूतानन्द के कालपाल, कोलपाल, शखपाल और शैलपाल नामक चार लोकपाल हैं ।

वेणुदेव के चित्र, विचित्र, चित्रपक्ष और विचित्रपक्ष ।
वेणुदाली के चित्र, विचित्र, विचित्रपक्ष और चित्रपक्ष ।
हरिकान्त के प्रभ, सुप्रभ, प्रभाकान्त और सुप्रभाकान्त ।
हरिस्सह के प्रभ सुप्रभ, सुप्रभाकान्त और प्रभाकान्त ।
अग्निशिख के तेज, तेजशिख, तेजस्कान्त और तेजप्रभ ।

मे भी भद्र मालूम नही होते ।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

कोई अपने दोष देखता है, दूसरो के नही,

कोई दूसरो के दोष देखता है, अपने नही।

इस प्रकार चौभगी जाननी चाहिए।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये है,यथा-

कोई अपने पाप की उदीरणा करता है किंतु दूसरो के पाप की उदीरणा नही करता ।

इस प्रकार चार भग जानने चाहिए ।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

कोई अपने पाप का शान्त करता है, दूसरो के पाप को शान्त नही करता,

इस तरह चौभगी जाननी चाहिए ।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

कोई स्वय तो अभ्युत्थान आदि से दूसरो का सम्मान करते है परन्तु दूसरो के अभ्युत्थान से अपना सम्मान नही कराते है।

इत्यादि-चोभगी ।

इसी तरह कोई स्वय वन्दन करता है किन्तु दूसरो से वन्दन नही कराता है।

भवनवासी, वानव्यन्तर, ज्योतिष्क और विमानवासी।

२५८ चार प्रकार के प्रमाण कहे गये है, यथा-

द्रव्यप्रमाण, क्षेत्रप्रमाण, कालप्रमाण और भावप्रमाण।

२५९ चार प्रधान दिक्कुमारिया कही गई है, यथा-

रूपा, रूपाशा, सुरूपा और रूपावती। [२]

चार प्रधान विद्युत्कुमारिया कही गई है, यथा-

चित्रा, चित्रकनका, शतेरा और सौदामिनी।

२६० देवेन्द्र, देवराज शक्र की मध्यम परिषद् के देवो को चार पल्योपम की स्थिति कही गई है।

देवेन्द्र देवराज ईशान की मध्यमपरिषद् की देवियो की चार पल्योपम की स्थिति कही गई है। [३]

२६१ ससार चार प्रकार का कहा गया है, यथा-

द्रव्यससार, क्षेत्रससार, कालससार और भावससार।

२६२ चार प्रकार का दृष्टिवाद कहा गया है, यथा-

परिक्रम, सूत्र, पूर्वगत और अनुयोग।

२६३ चार प्रकार के प्रायश्चित्त कहे गये है, यथा-

ज्ञानप्रायश्चित्त, दर्शनप्रायश्चित्त,

चारित्रप्रायश्चित्त, व्यक्तकृत्यप्रायश्चित्त,[1]

---

१ गीतार्थ द्वारा किया जाने वाला प्रायश्चित्त।

अग्निमानव के तेज, तेजशिख, तेजप्रभ और तेजस्कान्त।

पूर्णइन्द्र के रूप, रूपाश, रूपकान्त और रूपप्रभ।

विशिष्ट इन्द्र के रूप, रूपाश, रूपप्रभ और रूपकान्त।

जलकान्त इन्द्र के जल, जलरत, जलकान्त और जलप्रभ।

जलप्रभ के जल, जलरत, जलप्रभ और जलकान्त।

अमितगत के त्वरितगति, क्षिप्रगति, सिंहगति और सिंह विक्रमगति।

अमितवाहन के त्वरितगति, क्षिप्रगति,

सिंहविक्रमगति सिंहगति और।

वेलम्ब के काल, महाकाल, अंजन और रिष्ट।

प्रभंजन के काल, महाकाल, रिष्ट और अंजन।

घोस के आवर्त्त, व्यावर्त्त, नद्यावर्त्त और महानद्यावर्त्त।

महाघोषके आवर्त्त, व्यावर्त्त, महानन्द्यावर्त्त, और नन्द्यावर्त्त।

शक्र के सोम, यम, वरुण और वैश्रमण।

ईशानेन्द्र के सोम, यम, वैश्रमण और वरुण।

इस प्रकार एक के अन्तर से अच्युतेन्द्र तक चार-चार लोकपाल समझने चाहिए।

वायुकुमार चार प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
काल, महाकाल, वेलम्ब और प्रभंजन।

२ ७ चार प्रकार के देव कहे गये हैं, यथा-

२६४ चार प्रकार का काल कहा गया है, यथा-

प्रमाणकाल, यथायुर्निवृत्तिकाल[1]

मरणकाल, अद्धाकाल।

२६५ पुद्गलो का चार प्रकार का परिणमन कहा गया है, यथा-

वर्णपरिणाम, गधपरिणाम,

रसपरिणाम, स्पर्शपरिणाम।

२६६ भरत और ऐरवत क्षेत्र मे प्रथम और अन्तिम तीर्थंकर को छोडकर मध्य के बावीस अर्हन्त भगवान् चातुयार्म (चार महाव्रत रूप) धर्म की प्ररूपणा करते है, यथा-

सव प्रकार की हिंसा से निवृत्त होना,

सब प्रकार के झूठ से निवृत्त होना

सव प्रकार के अदत्तादान से निवृत्त होना,

सब प्रकार के बाह्य पदार्थो के आदान से निवृत्त होना[1]

सब महाविदेहो मे अर्हन्त भगवान् चातुर्याम धर्म का प्ररूपण करते है, यथा-

सव प्रकार के प्राणातिपात से निवृत्त होना—यावत्—

सव प्रकार के वाह्य पदार्थो के आदान से निवृत्त होना[2]।

---

१ आयु बध के अनुसार उतने काल तक उस रूप में रहना।

२ धर्मोपकरण के अतिरिक्त-स्त्री, धन-धान्य आदि के परिग्रह से निवृत्त होना।

अथवा प्रीतिकृत्य[1]

चार प्रकार के प्रायश्चित्त कहे गये है, यथा-

परिप्रंवना प्रायश्चित्त,[2] सयोजना प्रायश्चित्त[3]

आरोपण प्रायश्चित्त[4] परिकुचन प्रायश्चित्त[5]

---

१ वैयावृत्यादि

२ अकृत्यके लिए किया जाने वाला प्रायश्चित्त।

३ समान कई अतिचारो का मेल होने पर दिया गया प्रायश्चित्त जैसे शय्यातरपिंड ग्रहण किया वह भी जल से गीले हाथ वाले से लिया, वह भी सामने लाया हुआ और वह भी आधाकर्मी।

४ एकबार अपराधकरने और प्रायश्चित्त कर लेने पर पुनः पुन. उसी दोष के आसेवन से जो विजातीय प्रायश्चित्त दिया जाता है, जैसे पहले पांच अहोरात्र का प्रायश्चित्त एक बार का प्रायश्चित्त मिलने पर पुन उसी का सेवन किया तो दस दिन का, पुन· सेवन करने पर पन्द्रह दिन का इस प्रकार-यावत्-छहमास का प्रायश्चित्त दिया जा सकता है यह आरोपणा प्रायश्चित्त है।

५ परिकुचन प्रायश्चित्त-अपराध के छिपाने या अन्यथा कथन करने के अपराध मे दिया गया प्रायश्चित्त ।

देखकर, बोलकर, सुनकर और स्मरण कर । [३]

२७० चार प्रकार के अन्तर कहे गये है,-यथा-

काष्ठान्तर[१], पक्ष्मान्तर[२] लोहान्तर[३], प्रस्तरान्तर[४] ।

इसी तरह स्त्री-स्त्री मे और पुरुष-पुरुष मे भी चार प्रकार का अन्तर कहा गया है, यथा-

काष्ठान्तर के समान, पक्ष्मान्तर के समान,

लोहान्तर के समान, प्रस्तरान्तर के समान ।

२७१ चार प्रकार के कर्मकर (नौकर) कहे गये है, यथा-

दिवसभृतक[५], यात्राभृतक[६], उच्चताभृतक,[७] कव्वाडभृतक[८] ।

२७२ चार प्रकार के पुरुप कहे गये है, यथा-

---

१. काष्ठ–काष्ठ मे अन्तर, जैसे कि चन्दन भी काष्ठ है और आकडा भी काष्ठ है परन्तु इनमें अन्तर है ।

२. कपास–रूई-रूई में अन्तर ।

३. लोह-लोह में अन्तर ।

४. पाषाण- पाषण में अन्तर ।

५. प्रतिदिन मूल्य ठहरा कर काम करने के लिए रखा जाय वह ।

६. देशान्तर मे जाने के लिए सहायक रूप से में रखा जाय वह ।

७ मूल्य और समय का नियम करके नियतकाल तक जिससे कार्य लिया जाय वह ।

८. जमीन खोदने वाले ओड़ आदि जो ठेके से काम करते हैं ।

२६७ चार प्रकार की दुर्गतिया कही गई है, यथा-

नैरयिक दुर्गति, तिर्यचयोनिक दुर्गति,

मनुष्य दुर्गति, देव दुर्गनि ।

चार प्रकार को सुगतिया कही गई है, यथा-

भिद्ध सुगति, देव सुगति,

मनुष्य सुगति, श्रेष्ठ कुलमें जन्म ।

चार दुर्गतिप्राप्त कहे गये है, यथा-

नैरयिक दुर्गतिप्राप्त तिर्यचयोनिक दुर्गतिप्राप्त, ।

मनुष्य दुर्गति प्राप्त, देव दुर्गति प्राप्त ।

चार मुगति प्राप्त कहे गये हैं, यथा-

सिद्ध सुगति प्राप्त यावत्–श्रेष्ठ कुल मे जन्म प्राप्त । [४]

२६८ प्रथम ममय जिन (सयोगिकेवली) के चार कर्म-प्रकृतिया क्षीण होती हैं, यथा-

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय ।

केवल ज्ञान–दर्शन जिन्हे उत्पन्न हुआ है ऐसे अर्हन्, जिन केवल चार कर्मप्रकृतियो का वेदन करते हैं, यथा-

वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र ।

प्रथम समय सिद्ध के चार कर्मप्रकृतिया एक साथ क्षीण होती हैं, यथा-

वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र ।

२६९ चार कारणों से हास्य की उत्पत्ति होती है, यथा-

इमी प्रकार—यावत्—शखवाल की अग्रमहिषिया है।

नागकुमारेन्द्र, नागकुमार-राज भूतानन्द के कालवाल लोकपाल की चार अग्रमहिषिया है, यथा-

सुनन्दा, सुभद्रा, सुजाता और सुमना।

इसी प्रकार—यावत्—शैलवाल की अग्रमहिषिया समझनी चाहिए।

जिस प्रकार धरणेन्द्रके लोकपालो का कथन किया उसी प्रकार सब दाक्षिणात्य—यावत्—घोष नामक इन्द्रके लोकपालो की अग्रमहिषिया जाननी चाहिये।

जिस प्रकार भूतानन्द का कथन किया उसी प्रकार उत्तर के सब इन्द्र—यावत्—महाघोष इन्द्र के लोकपालो की अग्रमहिषिया समझनी चाहिये।

पिशाचेन्द्र पिशाचराज काल की चार अग्रमहिषिया है, यथा-

कमला, कमलप्रभा, उत्पला और सुदर्शना।

इसी तरह महाकाल की भी।

भूतेन्द्र भूतराज सुरूप के भी चार अग्रमहिषिया हैं, यथा- रूपवती, बहुरूपा, सुरूपा और सुभगा।

इसी तरह प्रतिरूप के भी।

यक्षेन्द्र यक्षराज पूर्णभद्र के चार अग्रमहिषिया है, यथा-

पुत्रा, बहुपुत्रा, उत्तमा और तारका।

कितनेक प्रकट रूप से दोप का सेवन करते है किन्तु गुप्त रूप से नही,

कितनेक प्रकट रूप से दोप का सेवन करते है किन्तु प्रकट रूप से नही,

कितनेक प्रकट रूप से भी और गुप्त रूप मे भी दोष मेवन करते हैं,

कितनेक न तो प्रकट रूप मे और न गुप्त रूप मे दोप का मेवन करते है।

७३ असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर के सोम महाराजा (लोकपाल) की चार अग्रमहिपिया कही गई है, यथा-

कनका, कनकलता, चित्रगुप्ता और वसुधरा।

इसी तरह-यम, वरुण और वैश्रमण के भी इसी नाम की चार-चार अग्रमहिपियां है।

वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज बलि के सोम लोकपाल की चार अग्रमहिषिया है, यथा-

मित्रका, सुभद्रा, विद्युता और अशनी।

इसी तरह यम, वैश्रमण और वरुण की भी अग्रमहिपिया इन्ही नाम वाली है।

नागकुमारेन्द्र नागकुमार-राज धरण के कालवाल, लोकपाल की चार अग्रमहिपिया है, यथा-

अशोका, विमला, सुप्रभा और सुदर्शना।

१. भुजगा, २. भुजगवती, ३. महाकच्छा और ४ स्फुटा।

ख—महोरगेन्द्र महाकाय की चार अग्रमहिषियो के नाम भी ये ही हैं।

८क—गधर्वेन्द्र गीतरति की अग्रमहिषिया चार है। उनके नाम ये हैं—

१. सुघोषा, २. विमला, ३. सुसरा और ४. सरस्वती।

ख—इसी प्रकार गधर्वेन्द्र गीत यशकी चार अग्रमहिषियों के नाम भी ये ही है।

९-१—ज्योतिष्केन्द्र, ज्योतिषराज चन्द्र की अग्रमहिषिया चार हैं। उनके नाम ये है—

१. चन्द्रप्रभा, २ ज्योत्स्नाभा, ३. अर्चिमाली और ४ प्रभकरा।

२—इसी प्रकार सूर्य की चार अग्रमहिषियो मे प्रथम अग्रमहिषी का नाम सूर्यप्रभा और शेष तीन के नाम चन्द्र के समान हैं।

३—इगाल महाग्रह की अग्रमहिषिया चार है। उनके नाम ये हैं—

२—स्निग्ध विकृतिया चार है। उनके नाम ये हैं—

१. तैल, २ घृत, ३. चर्बी और ४ नवनीत।

३—महाविकृतियां चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१. मधु, २ मांस, ३ मद्य और ४ नवनीत।

२७५ १क—कूटागार=शिखराकार गृह चार प्रकार के हैं—

१ गुप्त-प्राकार से आवृत और गुप्त द्वार वाला है,

२. गुप्त-प्राकार से आवृत किन्तु अगुप्त द्वार वाला है,

३. अगुप्त-प्राकार रहित है किन्तु गुप्त द्वार वाला है।

४ अगुप्त-प्राकार रहित है और अगुप्त द्वार वाला है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक पुरुष गुप्त (वस्त्रावृत) हैं और गुप्तेन्द्रिय भी है।

२. एक पुरुष (वस्त्रावृत) हैं किन्तु अगुप्तेन्द्रिय हैं।

३ एक पुरुष अगुप्त (अनावृत) है किन्तु गुप्तेन्द्रिय है।

४. और एक पुरुष अगुप्त (अनावृत) भी है और अगुप्तेन्द्रिय भी है।

२ क—कूटागारशाला=शिखराकार शाला चार प्रकार की है। वे इस प्रकार है—

१ विजया, २. वैजयती, ३. जयंती और ४ अपराजिता।

४—इसीप्रकार सभी महाग्रहो की-यावत्-भावकेतु की चार-चार अग्रमहिषियो के नाम भी ये ही है।

१० १-क—शक्र देवेन्द्र देवराज के सोम (लोकपाल) महाराज की अग्रमहिषिया चार है। उनके नाम ये हैं—

१ रोहिणी, २ मदना, ३. चित्रा और ४ सोमा।

ख-घ—शेष लोकपालो की यावत् वैश्रमण की चार-चार अग्रमहिषियो के नाम भी ये ही है।

२-क—ईशानेन्द्र देवेन्द्र देवराज के सोम (लोकपाल) महाराज की अग्रमहिषिया चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१ पृथ्वी, २ राजी, ३. रतनी और ४. विद्युत्।

ख-घ—इसीप्रकार शेष लोकपालो की-यावत्-वरुण की चार-चार अग्रमहिषियो के नाम भी ये ही है।

२७४ १—गोरस विकृतिया चार है। उनके नाम ये है—

१ दूध, २. दधि, ३. घृत और ४. नवनीत।

१. द्रव्यावगाहना—अनतद्रव्ययुता, २. क्षेत्रावगाहना—असख्यप्रदेशावगाढा, ३. कालावगाहना—असख्यसमय-स्थितिका, ४ भावावगाहना—वर्णादिअनतगुणयुता ।

२७७ चार प्रज्ञप्तिया अङ्गवाह्य है । उनके नाम ये हैं—

१. चद्रप्रज्ञप्ति, २. सूर्यप्रज्ञप्ति, ३. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति ४. द्वीपसारणप्रज्ञप्ति ।

॥ चतुर्थ स्थानक प्रथम उद्देशक समाप्त ॥

२७८ १. प्रतिसंलीन—(कषाय का निरोध करने वाले) पुरुष चार प्रकार के हैं । वे इस प्रकार हैं—

१. क्रोधप्रतिसलीन—क्रोध का निरोध करने वाला ।

२. मानप्रतिसलीन—मान का निरोध करने वाला ।

३. मायाप्रतिसलीन—माया का निरोध करने वाला ।

४. लोभप्रतिसलीन—लोभ का निरोध करने वाला ।

२. अप्रतिसलीन (कषाय का निरोध न करने वाला) पुरुष चार प्रकार के कहे गये है । वह इस प्रकार हैं—

१. क्रोध अप्रतिसलीन—क्रोध का निरोध न करने वाला ।

२. मान अप्रतिसलीन—मान का निरोध न करने वाला ।

१. गुप्त है—प्राकारादि से आवृत है और गुप्त द्वार वाली है।

२. गुप्त है—प्राकारादि से आवृत है किन्तु गुप्त द्वार वाली नही है।

३ अगुप्त है—प्राकारादि से आवृत नही है किन्तु गुप्तद्वार वाली है।

४. अगुप्त भी है—प्राकारादि से आवृत नही है और गुप्तद्वार वाली भी नही है।

ख—इसी प्रकार स्त्री समुदाय भी चार प्रकार का है। वह इस प्रकार का है—

१. एक गुप्ता है—वस्त्रावृता है और गुप्तेन्द्रिया है।

२. एक गुप्ता है—वस्त्रावृता है किन्तु गुप्तेन्द्रियाँ नही है।

३. एक अगुप्ता है—वस्त्रादि से अनावृत है किन्तु गुप्तेन्द्रिया है।

४. एक अगुप्ता भी है—वस्त्रादि से अनावृता भी है और अगुप्तेन्द्रिया भी है।

अवगाहना (शरीर का प्रमाण) चार प्रकार की है यह इस प्रकार की है—

४. इन्द्रिय अप्रतिसंलीन—इन्द्रियो का निग्रह न करने वाला।

२७९ १क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक पुरुष दीन है (धनहीन है) और दीन है[1] (हीन मना है)।

२. एक पुरुष दीन है (धनहीन हैं) किन्तु अदीन है (महामना है)।

३. एक पुरुष अदीन है (धनी है) किन्तु दीन है (हीनमना है)।

४. एक पुरुष अदीन है (धनी है) और अदीन (महामना भी है)।

ख—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार का है—

१. पुरुष दीन है (प्रारम्भिक जीवन मे भी निर्धन है) और दीन है (अतिम जीवन मे भी निर्धन है)।

२. एक पुरुष दीन है (प्रारम्भिक जीवन मे निर्धन है) किन्तु अदीन भी है (अतिम जीवन मे धनी हो जाता है)

---

१. यहां 'दीन' का अर्थ हीन है।

३. माया अप्रतिसलीन—माया का निरोध न करने वाला।

४ लोभ अप्रतिसलीन—लोभ का निरोध न करने वाला।

३ प्रतिसलीन (प्रशस्त प्रवृत्तियो मे प्रवृत्त और अप्रशस्त प्रवृत्तियो से निवृत्त) पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. मन प्रतिसलीन—मन का निग्रह करने वाला।

२ वचन प्रतिसलीन—वचन का निग्रह करने वाला।

३. काय प्रतिसलीन—काया का निग्रह करने वाला।

४. इन्द्रिय प्रतिसलीन—इन्द्रियो का निग्रह करने वाला।

४. अप्रतिसलीन (अप्रशस्त कार्यों मे प्रवृत्त और प्रशस्त कार्यो से उदासीन) पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१ मन अप्रतिसलीन—मन का निग्रह न करने वाला।

२ वचन अप्रतिसलीन—वचन का निग्रह न करने वाला।

३. काय अप्रतिसलीन—काया का निग्रह न करने वाला।

२. एक पुरुष-दीन है (शरीर से कृश है) किन्तु अदीन रूप है (वस्त्र आदि से-सुसज्जित है)

३. एक पुरुष अदीन है (शरीर से हृष्ट-पुष्ट है) किन्तु दीन रूप है (मलिन वस्त्र वाला है)

४ एक पुरुष अदीन है (शरीर से हृष्ट-पुष्ट है) और अदीन रूप भी है) वस्त्र आदि से सुसज्जित है)

४-१७—इसी प्रकार ५ दीन मन, ६ दीन सकल्प, ७ दीन प्रज्ञा, ८ दीन दृष्टि, ९ दीन शीलाचार, १० दीन व्यवहार, ११ दीन पराक्रम, १२ दीन वृत्ति, १३ दीन जाति, १४ दीन भासी, १५ दीनावभासी, १६ दीन सेवी, और १७ दीन परिवारी के चार-चार भाग जाने।

२८०-१ पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१ एक पुरुष आर्य है[1] (क्षेत्र से आर्य है) और आर्य है (आचरण से भी आर्य है)

२ एक पुरुष आर्य है (क्षेत्र से आर्य है) किन्तु अनार्य भी है (पापाचरण से अनार्य है)

३. एक पुरुष अनार्य है (क्षेत्र से अनार्य है) किन्तु आर्य भी है (आचरण से आर्य है)

---

१. आर्य नो प्रकार के हैं।

३. एक पुरुष अदीन है (प्रारम्भिक जीवन मे धनी है) किन्तु दीन भी है (अन्तिम जीवन मे निर्धन हो जाता है)

४. एक पुरुष अदीन है (प्रारम्भिक जीवन मे भी धनी है) और अदीन है (अन्तिम जीवन मे भी धनी ही रहता है)[1]

२—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक पुरुष दीन है (शरीर से कृश है) और दीन परिणति वाला है (कायर है)

२. एक पुरुष दीन है (शरीर से कृश है) किन्तु अदीन परिणति वाला है (शूरवीर है)

३. एक पुरुष अदीन है (हृष्ट-पुष्ट है) किन्तु दीन परिणति वाला है (कायर है)

४ एक पुरुष अदीन भी है (हृष्ट-पुष्ट भी है) और अदीन परिणति वाला भी है (शूरवीर भी है)

३—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक पुरुष दीन है (शरीर से कृश है) और दीन रूप भी है (मलिन वस्त्र वाला है)

---

१. यह व्याख्या भी टीकाकार सम्मत है।

२ एक कुलसपन्न है किन्तु जातिसपन्न नही है।

३. एक जाति सपन्न भी है और कुलसपन्न भी है।

४ एक जाति सपन्न भी नही है और कुल सपन्न भी नही है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग के भी चार भागे जाने।

३क—वृषभ चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—

१. एक जातिसम्पन्न[1] है किन्तु वलसम्पन्न नही है।

२. एक वलसम्पन्न है किन्तु जातिसम्पन्न नही है।

३ एक जातिसम्पन्न भी है और वलसम्पन्न भी है।

४. एक जातिसम्पन्न भी नही है और वलसम्पन्न भी नही है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग के भी चार भागे जाने।

४क—वृषभ चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार है—

१ एक जातिसम्पन्न है किन्तु रूपसम्पन्न नही है।

२ एक रूपसम्पन्न है किन्तु जातिसम्पन्न नही है।

३. एक जातिसम्पन्न भी है और रूपसम्पन्न भी है।

४. एक जातिसम्पन्न भी नही है और रूपसम्पन्न भी नही है।

---

१. यहां जाति शब्द श्रेष्ठता का सूचक है।

४ एक पुरुष अनार्य है (क्षेत्र से अनार्य है) और अनार्य है (आचरण से भी अनार्य है)

२-१८—इसीप्रकार २ आर्य परिणति, ३ आर्यरूप, ४ आर्यमन, ५ आर्य सकल्प, ६ आर्यप्रज्ञा, ७ आर्य दृष्टि, ८ आर्य शीलाचार, ९ आर्य व्यवहार, १० आर्यपराक्रम, ११ आर्य वृत्ति, १२ आर्य जाति, १३ आर्यभाषी, १४ आर्यविभासी, १५ आर्यसेवी, १६ आर्य पर्याय १७ आर्य परिवार और १८ आर्य भाव वाले पुरुष के चार-चार भागे जानें।

२८१ १क—वृषभ चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार है—

१ जातिसंपन्न[1], २ कुलसंपन्न[2], ३. बलसपन्न, और ४ रूपसपन्न हैं।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है। वे इस प्रकार है—

१ जातिसपन्न-यावत्—२-४ रूपसपन्न है।

२क—वृषभ चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—

१. एक जातिसपन्न है किन्तु कुलसपन्न नही है।

---

१. यहां जाति मातृपक्ष को कहते हैं।
२. यहां कुल पितृपक्ष को कहते हैं।

२. एक भद्र है किन्तु मदमन वाला है।

३. एक भद्र है किन्तु मृग (भीरु) मन वाला है।

४. एक भद्र है किन्तु सकीर्ण मन वाला है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है।

१०क—हाथी चार प्रकार के है। वे इस प्रकार हैं—

१ एक मद किन्तु भद्रमन वाला है।

२. एक मद है और मदमन वाला है।

३. एक मद है किन्तु मृग (भीरु) मन वाला है।

४. एक मद है किन्तु सकीर्ण (विचित्र) मन वाला है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का कहा गया है।

११क—हाथी चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार है—

१ एक मृग (भीरु) है और भद्र (भीरु) मन वाला है।

२. एक मृग है किन्तु मद मन वाला है।

३. एक मृग है और मृग मन वाला भी है।

४ एक मृग है किन्तु सकीर्ण मन वाला है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है।

१२क—हाथी चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार के हैं—

१. एक सकीर्ण है किन्तु भद्र मन वाला है।

२. एक सकीर्ण है किन्तु मद मन वाला है।

ख—इसी प्रकार पुरुप वर्ग के चार भागे जानें।

५क—कुल सम्पन्न और वल सम्पन्न वृपभ के चार भागे है।

ख—इसीप्रकार पुरुप वर्ग के भी चार भागे है।

६क—कुल सम्पन्न और रूप सम्पन्न वृपभ के चार भागे है।

ख—इसीप्रकार पुरुप वर्ग के भी चार भागे हैं।

७क—वल सम्पन्न और रूप मम्पन्न वृपभ के चार भागे है।

ख—इसी प्रकार पुरुप वर्ग के भी चार भागे है।

८क—हाथी चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार है—

१ भद्र[1], २ मद[2], ३ मृग[3] और ४ सकीर्ण[4]।

ख—इसी प्रकार पुरुप वर्ग भी चार प्रकार का कहा गया है।

९क—हाथी चार प्रकार के है। वे इस प्रकार है—

१. एक भद्र[5] है और भद्रमन वाला है।

---

१. भद्र=घैर्यवान। २. मद=घैर्यरहित। ३. मृग=भीरु स्वभाव। ४. संकीर्ण=विचित्र स्वभाव वाला। ५. यहां भद्र का अर्थ उत्तम जातिवाला है।

४ गाथा—सकीर्ण हाथी के लक्षण—

जिस हाथी मे भद्र, मद और मृग प्रकृति के हाथियों के थोडे थोडे लक्षण हो तथा विचित्र रूप और शील (स्वभाव) वाला हाथी सकीर्ण प्रकृति का होता है।

५ गाथा[1]—हाथियो का मदकाल—

भद्र जाति का हाथी शरद् ऋतु मे मतवाला होता है, मद जाति का हाथी बसत ऋतु मे मतवाला होता है, मृग जाति का हाथी हेमत ऋतु मे मतवाला होता है, और सकीर्ण जाति का हाथी किसी भी ऋतु में मतवाला हो सकता है।

---

१. ये गाथायें निर्युक्ति से मूल में उद्धृत की गई है ऐसा प्रतीत होता है। टीकाकार एक और निर्युक्ति गाथा उद्धृत करते हैं।

गाथा—दंतेहिं हणइ भद्दो, मंदो हत्थेण आहणइ हत्थी।
गत्ताऽधरेइ य मिओ, संकिन्नो सव्वओ हणइ ॥

अर्थ—भद्र जाति का हाथी दोनों दांतो से प्रहार करता है। मंद जाति का हाथी सूंड से प्रहार करता है। मृग जाति का हाथी शरीर से और होठ से प्रहार करता है। संकीर्ण जाति का हाथी सर्वाङ्ग से प्रहार करता है।

३ एक सकीर्ण है किन्तु मृग मन वाला है ।

४ एक सकीर्ण है और सकीर्ण मन वाला भी है ।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का कहा गया है ।

१ गाथा—भद्र हाथी के लक्षण—

मधु की गोली के समान पिंगल (भूरे) नेत्र, क्रमश पतली सुन्दर एव लम्बी पूछ, उन्नत मस्तक आदि से सर्वाङ्ग सुन्दर भद्र हाथी धीर प्रकृति का होता है ।

२ गाथा—मद हाथी के लक्षण—

चचल, स्थूल एव कही पतली और कही मोटी चर्म वाला स्थूल मस्तक, पूछ, नख, दात एव केश वाला तथा सिह के समान पिंगल (भूरे) नेत्र वाला हाथी मद (अधीर) प्रकृति का होता है ।

३ गाथा—मृग हाथी के लक्षण—

कृश शरीर और कृशग्रीवा वाला, पतले चर्म, नख, दात एव केश वाला, भयभीत, स्थिरकर्ण, उद्विग्नता पूर्वक गमन करने वाला स्वय त्रस्त और अन्यो को त्रास देने वाला हाथी मृग प्रकृति का होता है ।

३. देशवासियो के कर्तव्याकर्तव्य की कथा,

४. देशवासियो के नेपथ्य (वेशभूषा) की कथा।

ड—राजकथा चार प्रकार की है—

यथा—१. राजा के नगर-प्रवेश की कथा,

२. राजा के नगर-प्रयाण की कथा,

३. राजा के बल-वाहन की कथा,

४. राजा के कोठार (भण्डार) की कथा।

२क—धर्मकथा चार प्रकार की है—

यथा—१. आक्षेपणी, २. विक्षेपणी, ३. सवेद(ग)नी और ४. निर्वेदनी।

ख—आक्षेपणी कथा चार प्रकार की है—

यथा—१. आचारआक्षेपणी—साधुओ का आचार बतानेवाली कथा,

२. व्यवहार आक्षेपणी—दोषनिवारणार्थ प्रायश्चित्त के भेद प्रभेद बतानेवाली कथा,

३. प्रज्ञप्ति आक्षेपणी—सशयनिवारणार्थ कही जाने वाली कथा।

४. दृष्टिवाद आक्षेपणी—श्रोताओ की अपेक्षाओ को समझकर नयानुसार सूक्ष्म तत्वो का विवेचन करने वाली कथा।

२८२ १क—विकथा चार प्रकार की है—

यथा—१. स्त्रीकथा, २. भक्तकथा, ३ देशकथा और ४. राजकथा[1]।

ख—स्त्रीकथा चार प्रकार की है—

यथा—१. स्त्रियो की जाति सम्बन्धी कथा,

२. स्त्रियो की कुल सम्बन्धी कथा,

३. स्त्रियो की रूप सम्बन्धी कथा,

४. स्त्रियो की नेपथ्य (वेषभूषा) सम्बन्धी कथा।

ग—भक्तकथा चार प्रकार की है—

यथा—१. भोजन सामग्री की कथा,

२. विविध प्रकार के पकवानो और व्यञ्जनों की कथा,

३. भोजन बनाने की विधियो की कथा,

४. भोजन निर्माण मे होने वाले व्यय की कथा।

घ—देशकथा चार प्रकार की है—

यथा—१. देश के विस्तार की कथा,

२. देश मे उत्पन्न होने वाले धान्य आदि की कथा,

---

१. इन विकथाओ के करने से होने वाले दोषो का वर्णन निर्युक्तिकार ने किया है।

यथा—१. इस जन्म मे किये गये दुष्कर्मो का फल इसी जन्म मे मिलता है—यह बताने वाली कथा,

२. इस जन्म मे किये गये दुष्कर्मो का फल परजन्म[1] मे मिलता है—यह बताने वाली कथा,

३. परजन्म मे किये गये दुष्कर्मो का फल इस जन्म में मिलता है—यह बतानेवाला कथा,

४. परजन्म[2] मे किये गये दुष्कर्मों का फल इस जन्म मे मिलता है—यह बताने वाली कथा,

४. परजन्म[3] कृत दुष्कर्मो का फल परजन्म मे मिलता है—यह बताने वाली कथा।

च—१. इस जन्म मे किये गये सत्कर्मों का फल इसी जन्म मे मिलता है—यह बताने वाली कथा,

२. इस जन्म मे किये गये सत्कर्मों का फल परजन्म मे मिलता है—यह बताने वाली कथा,

३. परजन्म कृत सत्कर्मो का फल इस जन्म मे मिलता है—यह बताने वाली कथा,

---

१. यहां पर-जन्म का अर्थ आगामी जन्म है।

२. यहां पर-जन्म शब्द का अर्थ पूर्वजन्म है।

३. यहां पर-जन्म शब्द का अर्थ पूर्वजन्म है।

ग—विक्षेपणी कथा चार प्रकार की है—

यथा—१. स्व सिद्धान्त के गुणो का कथन करके पर-सिद्धान्त के दोष बताना,

२. पर-सिद्धान्त का खण्डन करके स्वसिद्धान्त की स्थापना करना,

३. परसिद्धान्त की अच्छाईयाँ बताकर पर-सिद्धान्त की बुराइयाँ भी बताना,

४. पर सिद्धान्त की मिथ्या बातें बताकर सच्ची बातो की स्थापना करना।

घ—सवेदनीकथा चार प्रकार की है—

यथा—१. इहलोक सवेदनी—मनुष्य देह की नश्वरता बताकर वैराग्य उत्पन्न करने वाली कथा,

२. परलोक सवेदनी—मुक्ति की साधना मे भोग-प्रधान देव जीवन की निरुपयोगिता बताने वाली कथा,

३. आत्शरीर सवेदनी—स्वशरीर को अशुचिमय बताने वाली कथा,

४. परशरीर सवेदनी—दूसरो के शरीर को नश्वर बताने वाली कथा।

ङ—निर्वेदनी कथा चार प्रकार की है—

४. एक पुरुष महामना भी है और सुदृढ शरीरवाला भी है।

ग—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. किसी कृशकाय पुरुष को ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हो जाता है किन्तु सुदृढ शरीरवाले पुरुष को ज्ञान-दर्शन उत्पन्न नही होता।

२ किसी सुदृढ शरीरवाले पुरुष को ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हो जाता है किन्तु किसी कृशकाय पुरुप को ज्ञान-दर्शन उत्पन्न नही होता है।

३ किसी कृशकाय पुरुष को भी ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हो जाता है और किसी सुदृढ शरीरवाले पुरुष को भी ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हो जाता है।

४. किसी कृशकाय पुरुष को भी ज्ञान-दर्शन उत्पन्न नही होता और किसी सुदृढ शरीरवाले पुरुष को भी ज्ञान-दर्शन उत्पन्न नही होता।[1]

---

१. ज्ञान-दर्शन की उत्पत्ति में साधक-बाधक हेतु शरीर नहीं है अपितु मोह की क्षीणता या अधिकता है, अतः कृशकाय या स्थूलकाय में मोह अधिक होगा तो ज्ञान-दर्शन उत्पन्न नहीं होगा। यदि मोह उपशांत हो जायगा या क्षीण हो जायगा तो ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हो जायगा।

४. परजन्म[1] कृत सत्कर्मो का फल परजन्म[2] मे मिलता हैं—यह बताने वाली कथा।

२८३ १क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार हैं—

१. एक पुरुष पहले भी कृश था और वर्तमान मे भी कृश है।

२. एक पुरुष पहले कृश था किन्तु वर्तमान मे सुदृढ शरीरवाला है।

३. एक पुरुष पहले भी सुदृढ़ शरीर वाला था किन्तु वर्तमान में कृशकाय है।

४. एक पहले सुदृढ शरीरवाला था और वर्तमान मे भी सुदृढ शरीरवाला है।

ख—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक पुरुष हीन मनवाला है और कृशकाय भी है।

२. एक पुरुष हीन मनवाला है किन्तु सुदृढ शरीर वाला है।

३. एक पुरुष महामना (उदार मनवाला) है किन्तु कृशकाय है।

---

१. यहां परजन्म का अर्थ पूर्वजन्म है।

२. यहां परजन्म का अर्थ आगामीजन्म है।

२. जो विवेकपूर्वक कायोत्सर्ग करके आत्मा को समाधिस्थ करते हैं।

३. जो पूर्वरात्रि और अपररात्रि मे धर्म-जागरण करते हैं।

४. जो प्रासुक और एषणीय अल्प आहार लेते हैं तथा सभी घरो से आहार की गवेषणा करते हैं।

—इन चार कारणो से निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियो को वर्तमान मे भी केवलज्ञान, केवल-दर्शन उत्पन्न होता है।

२८५ १क—चार महाप्रतिपदाओ मे निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियो को स्वाध्याय करना नही कल्पता है।

वे चार प्रतिपदाये ये हैं—

१. श्रावण कृष्णा प्रतिपदा, २. कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा, ३. मार्गशीर्ष कृष्णा प्रतिपदा ४. वैसाख कृष्णा प्रतिपदा।

ख—चार सध्याओ मे निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियो को स्वाध्याय करना नही कल्पता है।

वे चार सध्यायें ये हैं—

१. दिन के प्रथम प्रहर में[१], २. दिन के अन्तिम प्रहर में[२],

---

१. सूर्योदय पूर्व एक घड़ी और पश्चात् एक घड़ी।

२. सूर्यास्त पूर्व एक घड़ी और पश्चात् एक घड़ी।

२८४ १क—चार कारणो से वर्तमान मे निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियो के चाहने पर भी उन्हे केवल ज्ञान-दर्शन उत्पन्न नही होता।

१. जो बार-बार स्त्री-कथा, भक्त-कथा, देश-कथा और राज-कथा कहता है।

२ जो विवेकपूर्वक कायोत्सर्ग करके आत्मा को समाधिस्थ नहीं करता है।

३ जो पूर्वरात्रि मे (रात्रि के प्रथम और द्वितीय प्रहर मे) और अपररात्रि मे (रात्रि के चतुर्थ प्रहर मे) धर्म जागरण नही करता है।

४. जो प्रासुक आगमोक्त और एपणीय (शुद्ध) अल्प-आहार नही लेता तथा सभी घरो से आहार की गवेषणा नही करता है।

—इन चार कारणो से निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियो को वर्तमान मे केवल ज्ञान-दर्शन उत्पन्न नही होता है।

ख—चार कारणो से वर्तमान मे भी निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों के चाहने पर उन्हे केवल ज्ञान, केवलदर्शन उत्पन्न होता है।

१. जो स्त्रीकथा आदि चार कथा नही करते हैं।

४. और प्रधान पुरुष—जो सबका आदरणीय पुरुष हो।

ख—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. आत्मांतकर—एक पुरुष अपने भव (जन्म-मरण) का अंत करता है किन्तु दूसरे के भव का अंत नहीं करता।[1]

२. परांतकर—एक पुरुष दूसरे के भव का अंत करता है किंतु अपने भव का अंत नहीं करता।[2]

३. उभयांतकरी—एक पुरुष अपने और दूसरे के भव का अंत करता है।[3]

४. न उभयांतकर—एक पुरुष न अपने भव का और न दूसरे के भव का अंत करता है।[4]

---

१. प्रत्येक बुद्ध, २. अचरमशरीरी धर्माचार्य, ३. तीर्थंकर, ४. पांचवें आरे के धर्माचार्य।

टीकाकार के अनुसार इस सूत्र के वैकल्पिक अर्थ इस प्रकार है :—

क—१. आत्मान्तकर—एक पुरुष आत्महत्या करने वाला होता है।

२. परान्तकर—एक पुरुष दूसरे की हत्या करने वाला होता है।

(कृपया शेष टिप्पणी ६९९ पृष्ठ पर देखिये)

३. रात्रि के प्रथम प्रहर में[1] और ४ रात्रि के अंतिम प्रहर में[2]।

२८६ १. लोकस्थिति चार प्रकार की है। वह इस प्रकार है—

१. आकाश के आधार पर घनवायु और तनवायु प्रतिष्ठित है।

२. वायु के आधार पर घनोदधि प्रतिष्ठित है।

३. घनोदधि के आधार पर पृथ्वी प्रतिष्ठित है।

४. और पृथ्वी के आधार पर त्रस-स्थावर प्राणी प्रतिष्ठित है।

२८७ १क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. तथापुरुष—जो सेवक, स्वामी की आज्ञानुसार कार्य करे।

२. नो तथापुरुष—जो सेवक स्वामी की आज्ञानुसार कार्य न करे।

३. सौवस्तिक पुरुष—जो स्वस्तिक पाठ करे।

---

१. दिन के मध्य भाग से पूर्व एक घड़ी और पश्चात् एक घड़ी।
२. रात्रि के मध्य भाग से पूर्व एक घड़ी और पश्चात् एक घड़ी।
ये चार सन्धिकाल है। इनमें स्वाध्याय करने का निषेध है।

२ क—मार्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार हैं—

१. एक मार्ग प्रारम्भ मे भी सरल है और अन्त मे भी सरल है।[1]

२. एक मार्ग प्रारंभ मे सरल है किन्तु अत मे वक्र है।[2]

३. एक मार्ग प्रारभ मे वक्र है किन्तु अन्त मे सरल है।

४. एक मार्ग प्रारम्भ मे भी वक्र है और अन्त मे भी वक्र है।

ख—इसीप्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का हैं[3]—

३ क—मार्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक मार्ग प्रारम्भ मे भी उपद्रवरहित है और अन्त मे भी उपद्रवरहित है।

---

१. जिस मार्ग से पथिक गंतव्यस्थान तक बिना किसी कठिनाई के पहुँच जाय वह सरल है।

२. जो मार्ग ऊँचा-नीचा व टेढा हो वह वक्र है।

३. मानव में सरलता दो प्रकार की होती है—
एक बाह्य सरलता और दूसरी आभ्यन्तर सरलता।
वाणी आदि में जो सरलता दिखाई देती है वह बाह्य सरलता है।
हृदय की जो सरलता हैं वह आभ्यन्तर सरलता है।

ग—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक पुरुष स्वय चिंता करता है, किंतु दूसरे को चिंता नही होने देता,

२. एक पुरुष दूसरे को चिंतित करता है, किंतु स्वय चिंता नही करता।

(पृष्ठ ६९८ का टिप्पणी की शेष)

३. उभयान्तकर—एक पुरुष आत्महत्या और परहत्या करने वाला होता है।

४. न उभयान्तकर—एक पुरुष न आत्महत्या करता है और न परहत्या करता है।

ख—१. आत्मतंत्रकर—जो स्वयं स्वतन्त्र होकर कार्य करता है। यथा—जिन भगवान्।

२. परतंत्रकर—जो परतंत्र होकर कार्य करता है। यथा—भिक्षु।

३. उभयतंत्रकर—जो स्वतंत्र रहकर भी कार्य करता है और परतंत्र रहकर भी कार्य करता है। यथा—आचार्य

४. न उभयतंत्रकर—जो न स्वतंत्र रहकर कार्य करता है और न परतंत्र रहकर कार्य करता है। यथा— शठ।

इसी प्रकार गच्छ या धन के सम्बन्ध में भी उक्त चार भांगों की व्याख्या करें।

ख—इसीप्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकारका है। यथा--

१. एक पुरुष शात स्वभाव वाला है और अच्छी वेश-भूषा वाला है।

२. एक पुरुष शातस्वभाववाला है किन्तु वेशभूषा अच्छी नही है।

३. एक पुरुष खराब वेशभूषा वाला तो है किन्तु शात स्वभावी है।

४. एक पुरुष खराब वेशभूषा वाला भी है और क्रूर स्वभाव वाला भी है।

५क—शख चार प्रकार के है। यथा—

१. एक शख वाम है (प्रतिकूल प्रभाव वाला है) और वामावर्त भी है।[1]

२. एक शख वाम है (प्रतिकूल प्रभाव वाला है) किन्तु दक्षिणावर्त है।

३. एक शख दक्षिण है (अनुकूल प्रभाव वाला है) किन्तु वामावर्त है।

४ एक शख दक्षिण है (अनुकूल प्रभाव वाला है) और दक्षिणावर्त भी है।[2]

---

१. उत्तरदिशा की ओर मुँह वाला।

२. दक्षिणदिशा की ओर मुँह वाला।

२ एक मार्ग प्रारम्भ मे उपद्रवरहित है किन्तु अन्त मे उपद्रवरहित नही है ।

३. एक मार्ग प्रारम्भ मे उपद्रवसहित है किन्तु अन्त मे उपद्रवरहित है।

४. एक मार्ग प्रारम्भ मे और अन्त मे उपद्रवसहित है ।

ख—इसीप्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है ।[1]

४क—मार्ग चार प्रकार का है यथा—

१. एक मार्ग उपद्रवरहित है और सुन्दर है ।

२. एक मार्ग उपद्रवरहित है किन्तु सुन्दर नही है ।

३. एक मार्ग उपद्रवसहित है किन्तु सुन्दर है ।

४. एक मार्ग उपद्रवसहित भी है और सुन्दर भी नही है ।

---

१. १. एक पुरुष पहले शांत रहता है और पीछे भी शांत रहता है ।

२. एक पुरुष पहले शांत रहता है किन्तु पीछे उत्तेजित हो जाता है ।

३. एक पुरुष पहले उत्तेजित हो जाता है किन्तु पीछे शांत हो जाता है ।

४. एक पुरुष पहले और पीछे सदा ही उत्तेजित रहता है ।

ख—इसीप्रकार स्त्रिया भी चार प्रकार की हैं[1]—

७ क—अग्निशिखा, और

ख—स्त्रियो के चार भागे।

८ क—वायुमडल, और (ख) स्त्रियो के चार भागे।

९ क—वनखड, और (ख) पुरुषो के चार भागे।[2]

२९० १ चार कारणो से अकेला साधु अकेली साध्वी से बातचीत करे तो मर्यादा का उल्लघन नही करता है।[3]

१. मार्ग पूछे, २. मार्ग बतावे,

३ अशनादि चार प्रकार का आहार दे, और

४. अशनादि चार प्रकार का आहार दिलावे।

२९१ १. तमस्काय के चार नाम है। यथा—

१ तम, २ तमस्काय, ३. अधकार और

४ महाधकार।

---

१. स्त्रियों के अनुकूल प्रतिकूल स्वभाव और अनुकूल प्रतिकूल व्यवहार से चार भागे बनालें।

२. पुरुषो के अनुकूल प्रतिकूल स्वभाव और अनुकूल प्रतिकूल व्यवहार से चार भागे बनालें।

३. एगो एगत्थिए सद्धिं, नेव चिट्ठे न सलवे।

—इस उत्सर्गसूत्र का यह अपवादसूत्र है।

ख—इसीप्रकार पुरुप वर्ग भी चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुप प्रतिकूल स्वभाव वाला है और प्रतिकूल व्यवहार वाला भी है।

२ एक पुरुप प्रतिकूल स्वभाव वाला है किन्तु अनुकूल व्यवहार वाला है।

३ एक पुरुष अनुकूल स्वभाव वाला है किन्तु प्रतिकूल व्यवहार वाला है।

४ एक पुरुष अनुकूल स्वभाव वाला है और अनुकूल व्यवहार वाला भी है।

६क—धूमशिखा चार प्रकार की है। यथा—

१ एक धूमशिखा वामा है (बायी ओर जाने वाली है) और वामावर्त भी है।

२. एक धूमशिखा वामा है (बायी ओर जाने वाली है) किन्तु दक्षिणावर्त है।

३ एक धूम शिखा दक्षिणा है (दायी ओर जाने वाली है) किन्तु वामावर्त है।

४ एक धूमशिखा दक्षिणा है और दक्षिणावर्त भी है।

२. प्रच्छन्नप्रतिसेवी—एक साधु प्रच्छन्न दोष सेवन करता है।

३ प्रत्युत्पन्न नदी—एक साधु वस्त्र या शिष्य के लाभ से आनन्द मनाता है।

४. नि सरण नदी—एक साधु गच्छ मे से स्वय के या शिष्य के निकलने से आनन्द मनाता है।

२ क—सेनाये चार प्रकार की है। यथा—

१ एक सेना शत्रु को जीतनेवाली है किन्तु हराने वाली नही है।

२. एक सेना हराने वाली है किन्तु जीतने वाली नही है।

३. एक सेना शत्रुओ को जीतनेवाली भी है और हरानेवाली भी है।

४. एक सेना शत्रुओ को न जीतनेवाली है और न हरानेवाली है।

ख—इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक साधु परीषहो को जीतनेवाला है किन्तु भगवान महावीर की तरह परीषहो को सर्वथा परास्त करनेवाला नही है।

२ तमस्काय के चार नाम हैं यथा—

१. लोकांधकार, २ लोकतमस, ३ देवांधकार और ४ देवतमस।

३. तमस्काय के चार नाम हैं यथा—

१ वातपरिघ—वायु को रोकने के लिए अर्गला समान।

२. वातपरिघ क्षोभ—वायु को क्षुब्ध करने के लिए अर्गला समान।

३ देवारण्य—देवताओ के छिपने का स्थान।

४. देवव्यूह—जिस प्रकार मानव का सैन्यव्यूह मे प्रवेश पाना कठिन है। उसी प्रकार देवो का तमस्काय मे प्रवेश पाना कठिन है।

४. तमस्काय से चार कल्प (देवलोक) ढके हुए हैं—यथा—१ सौधर्म, २ ईशान, ३. सनत्कुमार और ४. माहेन्द्र।

२९२ १. पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ सप्रगट प्रतिसेवी—साधु समुदाय मे रहने वाला एक साधु अगीतार्थ के समक्ष दोप सेवन करता है।

२ घेटे के सीग के समान वक्रता,

३ गोमूत्रिका के समान वक्रता,

४. वास की छाल के समान वक्रता।

ख—इसीप्रकार माया भी चार प्रकार की है। यथा—

१. बास की जड के समान वक्रतावाली माया करने वाला जीव मरकर नरक मे उत्पन्न होता है।

२. घेटे के सीग के समान वक्रतावाली माया करने वाला जीव मरकर तिर्यंचयोनि मे उत्पन्न होता है।

३. गोमूत्रिका के समान वक्रता वाली माया करने वाला जीव मरकर मनुष्ययोनि मे जन्म लेता है।

४. बास की छाल के समान वक्रता वाली माया करने वाला जीव मरकर्र देवयोनि मे उत्पन्न होता है।

२ क—स्तम्भ चार प्रकार के है। यथा—

१ शैलस्तम्भ, २. अस्थिस्तम्भ, ३ दारुस्तम्भ और ४. तिनिसलतास्तम्भ।

ख—इसीप्रकार मान चार प्रकार का है। यथा—

१ शैलस्तम्भ समान, २ अस्थिस्तम्भ समान, ३. दारुस्तम्भ समान और ४. तिनिसलतास्तम्भ समान।

२ एक साधु परीपहो से हारनेवाला है किन्तु कडरीक की तरह उन्हे जीतनेवाला नही हैं।

३. एक साधु शैलक राजर्पि के समान परीपहो से हारने वाला भी हैं और उन्हे जीतनेवाला भी हैं।

४. एक साधु न परीपहो से हारनेवाला हैं और न उन्हे जीतनेवाला हैं।

क्योकि साधनाकाल मे उसे परीपह आये ही नही।

३क—सेनायें चार प्रकार की हैं। यथा—

१ एक सेना युद्ध के आरम्भ मे भी शत्रु सेना को जीतती हैं और युद्ध के अत मे भी शत्रु सेना को जीतती है।

२ एक सेना युद्ध के आरम्भ मे शत्रु सेना को जीतती हैं किन्तु युद्ध के अन्त मे पराजित हो जाती हैं।

३. एक सेना युद्ध के आरम्भ मे पराजित होती है किन्तु युद्ध के अन्त मे विजय प्राप्त करती हैं।

४ एक सेना युद्ध के आरम्भ मे भी और अन्त मे भी पराजित होती है।

ख—इसीप्रकार परीषहो से विजय और पराजय प्राप्त करने वाले पुरुष वर्ग के चार भागे हैं।

२९३ १क—वक्र वस्तुएं चार प्रकार की हैं। यथा—

१ वांस की जड के समान वक्रता,

२. कीचड से रगे हुए वस्त्र के समान लोभ करने वाला जीव मरकर तिर्यंच मे उत्पन्न होता है।

३. खजन से रगे हुए वस्त्र के समान लोभ करने वाला जीव मरकर मनुष्य मे उत्पन्न होता है।

४. हल्दी से रगे हुए वस्त्र के समान लोभ क ने वाला जीव मरकर देवताओ मे उत्पन्न होता है।

२६४ १—ससार चार प्रकार का है। यथा—

१. नैरयिक ससार, २. तिर्यंच ससार, ३ मानव ससार और ४ देव ससार।

२—आयु चार प्रकार का है। यथा—

१. नैरयिकायु, २. तिर्यचायु, ३ मनुजायु ४. देवायु।

३—भव चार प्रकार का है। यथा—

१. नैरयिक भव, २. तिर्यच भव, ३ मानव भव और ४. देवभव।

२६५ १क—आहार चार प्रकार का है। यथा—

१ अशन २ पान, ३. खादिम और ४ स्वादिम।

ख—यथा—१. उपस्करसपन्न—हीग वगैरह से सस्कारित आहार।

२. उपस्कृत सपन्न—अग्निपक्व आहार,

१ शैलस्तम्भ समान मान करनेवाला जीव मरकर नरक मे उत्पन्न होता है।

२ अस्थिस्तम्भ समान मान करने वाला जीव मरकर तिर्यचयोनि मे उत्पन्न होता है।

३ दारुस्तम्भ समान मान करनेवाला जीव मरकर मनुष्य योनि मे उत्पन्न होता है।

४. तिनिसलतास्तम्भ समान मान करनेवाला जीव मरकर देवयोनि मे उत्पन्न होता है।

३क—वस्त्र चार प्रकार के हैं। यथा—

१ कृमिरग से रगा हुआ,

२ कीचड से रगा हुआ,

३. खजन से रगा हुआ,

४. हरिद्रा से रगा हुआ।

ख—इसीप्रकार लोभ चार प्रकार का है। यथा—

१. कृमिरग से रगे हुए वस्त्र के समान,

२ कीचड से रगे हुए वस्त्र के समान,

३. खजन से रगे हुए वस्त्र के समान,

४. हरिद्रा से रगे हुए वस्त्र के समान।

१. कृमिरग से रगे हुए वस्त्र के समान लोभ करने वाला जीव मरकर नरक मे उत्पन्न होता है।

घ—उदीरणोपक्रम[1] चार प्रकार का है । यथा—

१. प्रकृतिउदीरणोपक्रम, २ स्थितिउदीरणोपक्रम, ३ अनुभावउदीरणोपक्रम और ४. प्रदेशउदीरणोपक्रम ।

ङ—उपशमनोपक्रम[2] चार प्रकार का है । यथा—

१ प्रकृतिउपशमनोपक्रम, २ स्थितिउपशमनोपक्रम, ३ अनुभावउपशमनोपक्रम और ४ प्रदेशउपशमनोपक्रम । ,

च—विपरिणामनोपक्रम[3] चार प्रकार का है । यथा—

१ प्रकृतिविपरिणामनोपक्रम, २. स्थितिविपरिणामनोपक्रम, ३. अनुभावविपरिणामनोपक्रम और ४ प्रदेशविपरिणामनोपक्रम ।

छ—अल्प-वहुत्व चार प्रकार का है । यथा—

---

१. उदीरणा—उदय में नहीं आये हुए कर्मदलिको को उदय में लाना ।

२. उपशमन—उदय मे आई हुई कर्मप्रकृतियो को उपशांत करना ।

३. विपरिणमन—सत्ता, उदय, क्षय, क्षयोपशम, उद्वर्तन और अपवर्तन द्वारा कर्मप्रकृति की वर्तमान अवस्था को बदल देना ।

३. स्वभाव सपन्न—स्वत पक्वआहार—द्राक्ष आदि,

४ पर्युपित सपन्न—रात भर रखकर वनाया हुआ आहार—दहीवडा आदि।

२९६ १क—वघ चार प्रकार के है। यथा—

१ प्रकृतिवव, २. स्थितिवघ, ३ अनुभागवव और ४. प्रदेशवघ।

१ कर्मप्रकृतियों का वघ—प्रकृतिवव है,

२ कर्मप्रकृतियो की जघन्य उत्कृष्ट स्यिति का वघ—स्यितिवघ है।

३ कर्मप्रकृतियो मे तीव्र-मद रस का वव—रसवव है।

४. आत्मप्रदेशो के साथ शुभाशुभ विपाक वाले अनतानत कर्मप्रदेशो का वघ—प्रदेश वघ है।

ख—उपक्रम चार प्रकार का है। यथा—

१ वधनोपक्रम, २ उदीरणोपक्रम, ३. उपशमनोपक्रम और ४ विपरिणामनोपक्रम।

ग—वधनोपक्रम[1] चार प्रकार का है। यथा—

१ प्रकृतिववनोपक्रम, २ स्थितिववनोपक्रम, ३. अनुभागवघनोपक्रम और ४. प्रदेशवंवनोपक्रम।

---

१. स्यादारंभ उपक्रम—उपक्रम—आरम्भ।

२९७ १—एक सख्यावाले चार है। यथा—

१ द्रव्य एक[1], २. मातृका पद एक[2], ३. पर्याय एक[3], ४. सग्रह एक[4]।

२९८ १—कितने चार हैं ?[5] यथा—

१ द्रव्य कितने है, २ मातृका पद कितने हैं, ३ पर्याय कितने है और ४. सग्रह कितने है ?

२९९ १—सर्व चार है। यथा—

१ नाम सर्व, २. स्थापना सर्व, ३ आदेश सर्व और ४ निरवशेष सर्व[6]।

३०० १—मानुषोत्तर पर्वत की चार दिशाओ मे चार कूट है। यथा—

१ रत्न, २ रत्नोच्चय, ३. सर्वरत्न और ४ रत्न-सचय।

---

१. अभेद विवक्षा से द्रव्य एक है।
२. पद की अपेक्षा मातृका पद एक है।
३. एक वर्ण की अपेक्षा पर्याय एक है।
४. समुदाय की अपेक्षा संग्रह एक है।
५. ये कितने है ? यह प्रश्न इन चारो के सम्बन्ध में पूछा जाता है।
६. समग्र वस्तुओ की अपेक्षा कहना।

१ प्रकृति अल्पवहुत्व[1], २ स्थिति अल्पवहुत्व, ३. अनुभाव अल्पवहुत्व और ४. प्रदेश अल्पवहुत्व।

ज—सक्रम[2] चार प्रकार का है यथा—

१ प्रकृति सक्रम, २ स्थिति सक्रम, ३ अनुभाव सक्रम और ४. प्रदेश सक्रम।

झ—निधत्त[3] चार प्रकार का है। यथा—

१ प्रकृति निधत्त, २. स्थिति निधत्त, ३ अनुभाव निधत्त और ४ प्रदेश निधत्त।

ञ—निकाचित[4] चार प्रकार का है। यथा—

१ प्रकृति निकाचित, २. स्थिति निकाचित, ३ अनुभाव निकाचित और ४ प्रदेश निकाचित।

---

१. एक कर्म के दलिको से दूसरे कर्म के दलिको का अधिक होना।

२. सक्रम—आत्मवल से कर्मप्रकृति को दूसरी कर्मप्रकृति के रूप में बदल देना।

३. निधत्त—उद्वर्तन या अपवर्तन के विना अन्य कारणों से उदीरणा के अयोग्य कर्मप्रकृति।

४. निकाचित—सर्व कारणो से उदीरणा के अयोग्य कर्मप्रकृति। अर्थात् निकाचित कर्म भोगे विना नहीं छूटता है।

चार महर्धिक देव रहते हैं। यथा—

१ स्वाति, २ प्रभास, ३ अरुण और ४ पद्म।

३—जम्बूद्वीप मे चार महाविदेह है। यथा—

१. पूर्वविदेह, २ अपरविदेह, ३ देवकुरु और ४. उत्तरकुरु।

४—सभी निषध और नीलवत वर्षधरपर्वत चार सौ योजन ऊँचे और चारसौ गाउ (कोश) भूमि मे गहरे है।

२ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे वहनेवाली सीता महानदी के उत्तर किनारे पर चार वक्षस्कार पर्वत हैं। यथा—

१. चित्रकूट, २ पद्मकूट, ३. नलिनकूट और ४ एकशैल।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे वहनेवाली सीता महानदी के दक्षिण किनारे पर चार वक्षस्कार पर्वत हैं। यथा—

१ त्रिकूट २ वैश्रमणकूट, ३. अजन और ४ मातजन।

ग—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम मे वहनेवाली सीता महानदी के दक्षिण किनारे पर चार वक्षस्कार पर्वत है। यथा—

३०१ १क—जवूद्वीप के भरत ऐरवत क्षेत्र मे अतीत उत्सर्पिणी का सुपमसुपमाकाल[1] चार क्रोडाक्रोडी सागरोपम था।

ख—जवूद्वीप के भरत ऐरवन क्षेत्र मे इस अवसर्पिणी का सुपमसुपमा काल[2] चार क्रोडाक्रोडी सागरोपम था।

ग—जवूद्वीप के भरत ऐरवत क्षेत्र मे आगामी उत्सर्पिणी का सुपमसुपमाकाल[3] चार क्रोडाक्रोडी सागरोपम होगा।

३०२ १—जम्वूद्वीप मे देवकुरु और उत्तरकुरु को छोडकर चार अकर्मभूमिया हैं। यथा—

१. हेमवत, २ हैरण्यवत, ३. हरिवर्ष और ४ रम्यक्-वर्ष।

२क—वृत्त वैताढ्य पर्वत चार है। यथा—

१ शब्दापाति, २. विकटापाति, ३. गधापाति और ४ माल्यवत पर्याय।

ख—उन वृत्त वैताढ्य पर्वतो पर पल्योपमस्थितिवाले

---

१. छठा आरा।

२. पहला आरा।

३. छठा आरा।

१. पडुकवल शिला, २ अतिपडुकवल शिला, ३. रक्तकवल शिला और ४ अतिरक्तकवल शिला।

९—मेरुपर्वत की चूलिका ऊपर से चार सौ योजन चौडी है।

१०-११ (३४ सूत्र)—इसी प्रकार धातकी खड द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे (पूर्वोक्त सूत्र ३०१ के ३ सूत्र और सूत्र ३०२ के १४ सूत्र) काल सूत्र से लेकर यावत-मेरुचूलिका पर्यन्त कहे।

१२-१३ (३४ सूत्र)—इसी प्रकार पुष्करार्ध द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे भी काल सूत्र से लेकर-यावत्-मेरु-चूलिका पर्यन्त कहे।

गाथार्थ—जम्बूद्वीप मे शास्वत पदार्थकाल-यावत् मेरु-चूलिका तक जो कहे है वे धातकी खण्ड और पुष्करवर द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे भी कहे।

३०३ १—जम्बूद्वीप के चार द्वार है।

१. विजय, २ वेजयत, ३. जयत और ४. अपराजित।

२—जम्बूद्वीप के द्वार चार सौ योजन चौडे है और उनका उतना ही प्रवेशमार्ग है।

३—जम्बूद्वीप के उन द्वारो पर पल्योपमस्थितिवाले चार महर्धिक देव रहते है। उनके नाम ये है—

१ अकावती, २ पद्मावती, ३ आशिविष और ४. सुखावह।

घ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम मे वहनेवाली सीता महानदी के उत्तर किनारे पर चार वक्षस्कार पर्वत हैं। यथा—

१ चन्द्रपर्वत, २ सूर्यपर्वत, ३. देवपर्वत और ४ नाग-पर्वत।

ङ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के चार विदिशाओ मे चार वक्षस्कार हैं। यथा—

१. सोमनस, २ विद्युत्प्रभ, ३ गधमादन और ४. माल्यवत।

६—जम्बूद्वीप के महाविदेह मे जघन्य चार अरिहत, चार चक्रवर्ती, चार वलदेव, चार वासुदेव उत्पन्न हुए, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे।

७—जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत पर चार वन है। यथा—

१ भद्रसाल वन, २ नन्दन वन, ३. सोमनस वन और ४. पडगवन।

८—जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत पर पडगवन मे चार अभिषेक शिलाएँ है। यथा—

४क—उन द्वीपो की चार विदिशाओं मे लवण समुद्र में पाचसौ-पाचसौ योजन जाने पर चार अतर द्वीप हैं। यथा—१ आदर्शमुखद्वीप, २ मेंढमुखद्वीप, ३ अयोमुखद्वीप और ४ गोमुखद्वीप।

ख—उन द्वीपो मे चार प्रकार के मनुष्य हैं। यथा—१. आदर्शमुख, २. मेंढमुख, ३ अयोमुख और ४. गोमुख।

५क—उन द्वीपो की चार विदिशाओ मे लवण समुद्र मे छ:सो- छ:सो योजन जाने पर चार अन्तरद्वीप है। यथा—१ अश्वमुखद्वीप, २. हस्तिमुखद्वीप, ३. सिंहमुखद्वीप और ४. व्याघ्रमुखद्वीप।

ख—उन द्वीपो मे मनुष्य चार प्रकार के है। यथा—२ अश्वमुख, २ हस्तिमुख, ३. सिंहमुख और ४. व्याघ्रमुख।

६क—उन द्वीपो की चार विदिशाओं मे लवण समुद्र मे सातसो-सातसो योजन जाने पर चार अन्तरद्वीप है। यथा—

१.अश्वकर्ण द्वीप, २.हस्तिकर्ण द्वीप, ३. अकर्ण द्वीप ओर ४. कर्णप्रावरण द्वीप।

ख—उन द्वीपो मे चार प्रकार के मनुष्य हैं। यथा—

१. विजय, २ विजयन्त, ३ जयन्त और ४ अप-
राजित।

३०४ १क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के दक्षिण मे और चुल्ल (लघु) हिमवन्त वर्षधर पर्वत के चार विदिशाओं में लवण समुद्र तीनसौ तीनसौ योजन जाने पर चार-चार अन्तरद्वीप हैं। यथा—

१. एकोरुक द्वीप, २ आभाषिक द्वीप, ३. वेषाणिक द्वीप और ४. लागोलिक द्वीप।

२ख—उन द्वीपो मे चार प्रकार के मनुष्य रहते हैं। यथा

१. एकोरुक, २. आभाषिक, ३. वैपाणिक और ४ लांगुलिक

३क—उन द्वीपो की चार विदिशाओ मे लवण समुद्र मे चारसौ-चारसौ योजन जाने पर चार अन्तरद्वीप हैं। यथा—

१ हयकर्णद्वीप, २ गजकर्ण द्वीप, ३ गोकर्णद्वीप और ४ सकुलिकर्णद्वीप।

ख—उन द्वीपो मे चार प्रकार के मनुष्य रहते है।

यथा—१. हयकर्ण, २ गजकर्ण, ३. गोकर्ण और शष्कुलीकर्ण।

(१८) के ममान समझें ।

३०५ १क—जम्बूद्वीप की वाह्य वेदिकाओ मे (पूर्वादि) चार दिशाओ में लवण समुद्र में ९५,००० हजार योजन जाने पर महाघटाकार चार महापातालकलश हैं। यथा—१. वलयामुख, २. केतुक ३. यूपक और ४. ईश्वर ।

ख—इन चार महापाताल कलशो में पल्योपम स्थिति वाले चार महर्धिक देव रहते हैं । यथा—

१. काल, २. महाकाल, ३. वेलम्ब और ४. प्रभ-जन ।

२क—जम्बूद्वीप की वाह्य वेदिकाओ से (पूर्वादि) चार दिशाओ में लवण समुद्र मे ४२,००० हजार योजन जाने पर चार वेलन्धर नागराजाओ के चार आवास पर्वत हैं । यथा—

१ गोस्तुभ, २. उदकभास, ३. शंख, ४. दकसीम ।

ख—इन चार आवास पर्वतों पर पल्योपम स्थिति वाले चार महर्धिक देव रहते हैं । यथा—

१. गोस्तूप, २. शिवक, ३. शंख और ४. मनशिल ।

३क—जम्बूद्वीप की वाह्य वेदिकाओं से (अग्न्यादि) चार विदिशाओ मे लवण ममुद्र में ४२,००० हजार

१. अश्वकर्ण, २. हस्तिकर्ण, ३. अकर्ण और ४. कर्ण प्रन्वरण।

७क—उन द्वीपो की चार विदिशाओ मे लवण समुद्र मे आठसो-आठसो योजन जाने पर चार अन्तर द्वीप हैं। यथा—

१. उल्कामुखद्वीप, १ मेघमुखद्वीप, ३ विद्युन्मुखद्वीप और ४. विद्युद्दन्तद्वीप।

ख—उन द्वीपो मे चार प्रकार के मनुष्य रहते है। यथा

१. उल्कामुख, २. मेघमुख, ३ विद्युन्मुख और ४ विद्युद्दन्तमुख।

८क—उन द्वीपो की चार विदिशाओ मे लवण समुद्र मे नोसो-नोसो योजन जाने पर चार द्वीप हैं। यथा—

१. धनदन्तद्वीप, २ लष्टदन्तद्वीप, ३. मूढदन्तद्वीप और ४ शुद्धदन्तद्वीप।

ख—उन द्वीपो मे चार प्रकार के मनुष्य है। यथा—

१. घनदन्त, २. लष्टदन्त, ३. गूढदत, ४ शुद्धदत।

९—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर मे और शिखरी वर्षधर पर्वत की चार विदिशाओ मे लवण समुद्र मे तीनसो-तीनसो योजन जाने पर चार अन्तरद्वीप हैं। अन्तरद्वीपो के नाम इसी सूत्र के उपसूत्र ६

३०६ १—घातकीखड द्वीप का वलयाकार विष्कम्भ चार लाख योजन का है।

२—जम्बूद्वीप के बाहर चार भरत क्षेत्र और चार ऐरवत क्षेत्र है।

३—इसी प्रकार पुष्करार्धद्वीप के पूर्वार्ध पर्यन्त द्वितीय स्थान उद्देशक तीन के सूत्र ९०, ९१ और ९२ मे उक्त मेरुचूलिका तक के पाठ की पुनरावृत्ति करे, और उसमे सर्वत्र चार की सख्या कहे।

॥ नंदीश्वर द्वीप वर्णन ॥

३०७ १क—वलयाकार विष्कम्भवाले नन्दीश्वर द्वीप के मध्य चारो दिशाओ मे चार अजनक पर्वत है।

यथा—१. पूर्व मे अजनक पर्वत, २. दक्षिण मे अजनक पर्वत, ३. पश्चिम मे अजनक पर्वत और ४ उत्तर मे अजनक पर्वत।

वे अजनक पर्वत ८४,००० हजार योजन ऊँचे है और एक हजार योजन भूमि मे गहरे है। उन पर्वतो के मूल का विष्कम्भ दस हजार योजन का है। फिर क्रमशः कम होते होते ऊपर का विष्कम्भ एक हजार योजन का है।

उन पर्वतो की परिधि मूल मे इकतीस हजार छसो

योजन जाने पर अनुवेलधर नागराजाओ के चार आवास पर्वत हैं। यथा—

१. कर्कोटक, २. कर्दमक, ३. कैलाश और ४ अरुणप्रभ।

ख—उन चार आवास पर्वतो पर पल्योपम स्थितिवाले चार महर्धिक देव रहते हैं।

यथा—इन देवो के नाम पर्वतो के समान है।

४क—लवण समुद्र मे चार चन्द्रमा अतीत मे प्रकाशित हुए थे वर्तमान मे प्रकाशित होते हैं और भविष्य में प्रकाशित होगे।

ख—लवण समुद्र मे चार सूर्य अतीत मे तपे थे वर्तमान मे तपते हैं और भविष्य मे तपेंगे।

५(८८)—इसी प्रकार चार कृतिका-यावत्-चारभाव केतु पर्यन्त सूत्र कहे।

६क—लवण समुद्र के चार द्वार हैं—

इनके नाम जम्बूद्वीप के द्वारो के समान हैं।

ख—इन द्वारो पर पल्योपम स्थितिवाले चार महर्धिक देव रहते हैं।

उनके नाम जम्बूद्वीप के द्वारो पर रहने वाले देवो के समान हैं।

४. सुपर्ण द्वार।

घ—उन द्वारो पर चार प्रकार के देव रहते है।

यथा—१. देव, २. असुर, ३. नाग और ४. सुपर्ण।

ड—उन द्वारो के आगे चार मुखमण्डप हैं।

च—उन मुखमण्डपो के आगे चार प्रेक्षाघर मण्डप है।

छ—उन प्रेक्षाघर मण्डपो के मध्य भाग मे चार वज्रमय अखाडे है।

ज—उन वज्रमय अखाडो के मध्य भाग मे चार मणिपीठिकायें है।

झ—उन मणिपीठिकाओ के ऊपर चार सिंहासन है।

ञ—उन सिंहासनो पर चार विजय दूष्य है।

ट—उन विजयदूष्यो के मध्य भाग में चार वज्रमय अकुश[1] है।

ठ—उन वज्रमय अकुशो पर लघु कुंभाकार मोतियो की चार मालाये हैं।

ड—प्रत्येक माला अर्धप्रमाण वाली चार-चार मुक्तामालाओ से घिरी हुई हैं।

---

१. वस्तु लटकाने का आंकड़ा।

तेईस योजन की है।

फिर क्रमश कम होते-होते ऊपर की परिधि तीन हजार एक सौ छासठ योजन की है। वे पर्वत मूल मे विस्तृत, मध्य मे सकरे और ऊपर पतले अर्थात् गो पुच्छ की आकृति वाले है।

सभी अजनक पर्वत अजन (श्यामरत्न) मय हैं, स्वच्छ हैं, कोमल हैं, घुटे हुए और घिसे हुए हैं। रज, मल और कर्दम रहित हैं। अनिन्द्य सुषमा वाले हैं, स्वतः चमकने वाले हैं।

उनसे किरणें निकल रही है, अतः उद्योतित हैं। उन्हे देखने से मन प्रसन्न होता है, वे पर्वत दर्शनीय है, मनोहर है एव रमणीय हैं।

ख—उन अजनक पर्वतो का ऊपरीतल समतल है उन समतल उपरितलो के मध्य भाग मे चार सिद्धायतन हैं।

उन सिद्धायतनो की लम्बाई एक सौ योजन की है, चौडाई पचास योजन की है और ऊचाई बहत्तर योजन की है।

ग—उन सिद्धायतनो की चार दिशाओ मे चार द्वार हैं। यथा—१. देव द्वार, २ असुर द्वार, ३. नागद्वार और

गाथार्थ—यथा—१. पूर्व मे अशोक वन,
२ दक्षिण मे सप्तपर्ण वन,
३ पश्चिम मे चम्पक वन, और
४. उत्तर मे आम्रवन ।

३क—पूर्व दिशावर्ती अजनक पर्वत की चारो दिशाओ मे चार नदा पुष्करणियाँ है।

उनके नाम इस प्रकार है—

१. नदुत्तरा, २. नदा, ३ आनदा और ४. नदिवर्धना उन पुष्करणियो की लम्बाई एक लाख योजन है। चौडाई पचास हजार योजन है और गहराई एक हजार योजन है।

ख—प्रत्येक पुष्करणी की चारो दिशाओ मे त्रिसोपान प्रतिरूपक (तीन पगथिये) है।

ग—उन त्रिसोपान प्रतिरूपको के सामने पूर्वादि चार दिशाओ मे चार तोरण है।

घ—प्रत्येक तोरण की पूर्वादि चार दिशाओ मे चार वन खण्ड है।

वन खण्डो के नाम इसी सूत्र के पूर्वोक्त हैं।

ड—उन पुष्करणियो के मध्यभाग मे चार दधिमुख पर्वत है। इनकी ऊँचाई ६४,००० हजार योजन,

२क—उन प्रेक्षाघर मण्डपो के आगे चार मणिपीठिकाएँ हैं[1]।

ख—उन मणिपीठिकाओ पर चार चैत्य स्तूप हैं।

ग—प्रत्येक चैत्य स्तूपो की चारो दिशाओ मे चार-चार मणिपीठिकाएँ हैं।

घ—प्रत्येक मणिपीठिका पर पल्यकासन वाली स्तूपाभिमुख सर्व रत्नमय चार जिन प्रतिमाये है।

उनके नाम—

१. रिपभ २ वर्धमान ३. चन्द्रानन और ४. वारिपेण।

ड—उन चेत्यस्तूपो के आगे चार मणिपीठिकाये हैं।

च—उन मणिपीठिकाओ पर चार चैत्य वृक्ष है।

छ—उन चैत्य वृक्षों के सामने चार मणि पीठिकायें हैं।

ज—उन मणिपीठिकाओ पर चार महेन्द्र ध्वजायें हैं।

झ—उन महेन्द्र ध्वजाओ के सामने चार नदा पुष्करणियाँ है।

ञ—प्रत्येक पुष्करणी की चारो दिशाओ मे चार वन खड हैं।

---

१ पूर्वोक्त (च) सूत्र देखें।

१. नन्दिसेना, २. अमोघा, ३. गोस्तूपा और ४. सुदर्शना। शेष वर्णन पूर्ववत।

६क-च—उत्तर दिशा के अजनक पर्वत की चारो दिशाओ मे चार नन्दा पुष्करणिया है। उनके नाम है—

१ विजया, २ वेजयन्ती, ३ जयन्ती और ४ अपराजिता। शेप वर्णन पूर्ववत्।

७क—वलयाकार विष्कम्भ वाले नन्दीश्वर द्वीप के मध्य भाग मे चार विदिशाओ मे चार रतिकर पर्वत है।

यथा—१ उत्तर पूर्व मे रतिकर पर्वत,

२ दक्षिण-पूर्व मे रतिकर पर्वत,

३ दक्षिण-पश्चिम मे रतिकर पर्वत,

४ उत्तर-पश्चिम मे रतिकर पर्वत।

वे रतिकर पर्वत एक हजार योजन ऊचे हैं,

एक हजार गाउ भूमि मे गहरे हैं।

झालर के समान सर्वत्र सम सस्थान वाले हैं।

दस हजार योजन उनकी चौडाई है। इकतीस हजार छह सौ तेइस योजन उनकी परिधि है। सभी रत्नमय हैं। स्वच्छ है, यावत्-रमणीय हैं।

ख—उत्तर पूर्व मे स्थिति रतिकर पर्वत की चारो दिशाओ में देवेन्द्र देवराज ईशानेन्द्र की चार अग्रमहिषियो

भूमि मे गहराई एक हजार योजन की है ।
वे पर्वत सर्वत्र पल्यक के समान आकार वाले हैं ।
इनकी चौड़ाई दस हजार योजन की है और परिधि इकतीस हजार छसो तेईस योजन की है ।
ये सभी रत्नमय हैं —यावत् रमणीय है ।

च—उन दधिमुख पर्वत के उपर का भाग समतल हैं ।
"शेष समग्र कथन अजनक पर्वतो के समान कहना चाहिये यावत् -उत्तर मे आम्रवन तक" [इसी सूत्र २ के उपसूत्र २ के (ख से ड तक) और उपसूत्र २ की पूरी आवृति करे]

४क-च—दक्षिण दिशा के अजनक पर्वत की चार दिशाओ मे चार नन्दा पुष्करणिया है ।
उनके नाम इस प्रकार है—
१ भद्रा, २ विसाला, ३. कुमुद और ४. पोडरिकिणी ।
पुष्करणियो का शेष वर्णन-यावत्-दधिमुखपर्वत वनखण्ड पर्वत तक कहे ।

५क-च—पश्चिम दिशा के अंजनक पर्वत की चारों दिशाओ मे चार नन्दा पुष्पकरणियां हैं ।
उनके नाम इस प्रकार है—

१. भृता २. भूतवडिसा ३. गोस्तूपा और ४. सुदर्शना।

छ—अग्रमहिषियो के नाम—

१ अमला २ अप्सरा ३ नवमिका और ४ रोहणी।

इन अग्रमहिषियो की उक्त राजधानिया है।

ज—उत्तर-पश्चिम मे स्थित रतिकर पर्वत की चारो दिशाओ मे देवेन्द्र देवराज ईशानेन्द्र की जम्बूद्वीप जितनी बडी चार राजधानिया है।

उनके नाम ये है—

१ रत्ना, २. रत्नोच्चया, ३ सर्वरत्ना और ४ रत्न सचया।

अग्रमहिषियो के नाम—

१ वसु २ वसु गुप्ता ३. वसुमित्रा और ४ वसुधरा

इन अग्रमहिषियो की उक्त राजधानियाँ है।

॥ इति श्री नंदीश्वर द्वीप वर्णन ॥

३०८ १—सत्य चार प्रकार का है।

यथा—१. नाम सत्य, २. स्थापना सत्य,
३. द्रव्य सत्य और ४. भाव सत्य।

३०९ १—आजीविका (गोशालक) मतवालो का तप चार

की जम्बूद्वीप जितनी बडी चार राजधानियाँ हैं।

उनके नाम ये है—

१. नदुत्तरा, २ नदा, ३. उत्तर कुरु और ४. देवकुरु

ग—चार अग्रमहिषियो के नाम—

१ कृष्णा, २. कृष्णराजी, ३. रामा और ४. राम रक्षिता।

इन अग्रमहिषियो की उक्त राजधानियाँ हैं।

ग—दक्षिण पूर्व मे स्थित रतिकर पर्वत की चारो दिशाओ मे देवेन्द्र देवराज शक्रेन्द्र की चार अग्रमहिषियो की जम्बूद्वीप जितनी बडी चार राजधानियाँ हैं।

उनके नाम ये हैं—

१. समणा, २. सोमणसा, ३. अर्चिमाली और ४. मनोरमा।

ङ—चार अग्रमहिषियो के नाम—

१ पद्मा, २ शिवा, ३. शची और ४, अंजू।

इन अग्रमहिषियो की उक्त राजधानिया हैं।

च—दक्षिण-पश्चिम स्थित रतिकर पर्वत की चारो दिशाओ मे देवेन्द्र देवराज शक्रेन्द्र की चार अग्रमहिषियो की जम्बूद्वीप जितनी बडी चार राजधानिया हैं। उनके नाम ये है—

२ पृथ्वी की रेखा के समान,

३ वालु की रेखा के समान,

४. पानी की रेखा के समान ।

ग—१. पर्वत की रेखा के समान क्रोध करने वाला जीव मरकर नरक मे उत्पन्न होता है ।

२ पृथ्वी की रेखा के समान क्रोध करने वाला जीव मरकर तिर्यंच योनि मे उत्पन्न होता है ।

३ वालु की रेखा के समान क्रोध करने वाला जीव मरकर मनुष्य योनि मे उत्पन्न होता है ।

४. पानी की रेखा के समान क्रोध करने वाला जीव मरकर देव योनि में उत्पन्न होता है ।[1]

घ—उदक (पानी चार प्रकार का होता है । यथा—

१ कर्दमोदक, २. खजनोदक, ३. वालुकोदक और

---

१. इस सूत्र के आगे पूर्वोक्त सूत्र २९३ में वर्णित कषाय सूत्रो का कथन होना चाहिये था किंतु मान, माया और लोभविषयक कथन पहले हुआ और क्रोध विषयक कथन यहां हुआ यह विपर्यय देवर्धिगणि क्षमाश्रमण से अब तक चल रहा है । टीकाकार के सामने भी यही पाठ रहा है अतः इनको यथास्थान रखने का साहस अब तक किसी ने नहीं किया है ।

प्रकार है। यथा—

१. उग्र तप, २ घोर तप,

३. रसनिर्यूह तप ४. जिह्वेन्द्रिय प्रतिसंलीनता।

३१० १क—संयम चार प्रकार का है। यथा—

१. मन संयम, २ वचन संयम,

३ काय संयम और ४ उपकरण संयम।

ख—त्याग चार प्रकार का है। यथा—

१ मन त्याग, २ वचन त्याग,

३. काय त्याग और ४. उपकरण त्याग।

ग—अकिंचनता चार प्रकार की है। यथा—

१ मन अकिंचनता, २ वचन अकिंचनता,

३ काय अकिंचनता, और ४ उपकरण अकिंचनता।

॥ इति चतुर्थ स्थानक का द्वितीयोद्देशक ॥

अथ चतुर्थ स्थानक तृतीय उद्देशक

३११ १क—रेखायें चार प्रकार की है। यथा—

१ पर्वत की रेखा, २. पृथ्वी की रेखा, ३ वालु की रेखा और ४. पानी की रेखा।

ख—इसी प्रकार क्रोध चार प्रकार का है। यथा—

१. पर्वत की रेखा के समान,

४—एक पक्षी रुत सम्पन्न भी नही है और रूप सम्पन्न भी नही है ।[1]

ख—इसी प्रकार पुरुप वर्ग भी चार प्रकार का है ।

ग—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अमुक के साथ प्रीति करूँ और उसके साथ प्रीति करता भी है ।

२—एक पुरुप ऐसा सोचता है कि मैं अमुक के साथ प्रीति करू किन्तु उसके साथ प्रीति नहीं करता है ।

३—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि अमुक के साथ प्रीति न करूँ किन्तु उसके साथ प्रीति करलेता है ।

४—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि अमुक के साथ प्रीति न करू और उसके साथ प्रीति करता भी नही है ।

घ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है ।

यथा—१—एक पुरुप स्वय भोजन आदि से तृप्त होकर आनन्दित होता है किन्तु दूसरे को तृप्त नही करता ।

२—एक पुरुष दूसरे को भोजन आदि से तृप्त कर प्रसन्न

---

१. यथा—काक

४ शैलोदक ।

ङ—इसी प्रकार भाव चार प्रकार का है ।

यथा—१. कर्दमोदक समान, २. खजोनदक समान, ३. वालुकोदक समान और ४ शैलोदक समान ।

च—कर्दमोदक समान भाव (विचार) रखने वाला जीव मरकर नरक मे उत्पन्न होता है । यावत् शैलोदक समान भाव रखने वाला जीव मरकर देवयोनि मे उत्पन्न होता है ।

३१२ १क—पक्षी चार प्रकार के हैं । यथा—

१—एक पक्षी रुत सम्पन्न (मधुर स्वर वाला) है किन्तु रूप सम्पन्न नही है ।[1]

२—एक पक्षी रूप सम्पन्न है किन्तु रुत सम्पन्न (मधुर स्वर वाला) नही है ।[2]

३—एक पक्षी रूप सम्पन्न भी है और रुतसम्पन्न भी है ।[3]

---

१. यथा—कोयल

२. यथा—शुक

३. यथा—मयूर

२—एक पुरुष दूसरे में विश्वाम उत्पन्न कर देता है, किंतु स्वय विश्वास नही करता ।

३—एक पुरुष स्वय भी विश्वास करता है और दूसरे मे भी विश्वास उत्पन्न करता है ।

४—एक पुरुष स्वय भी विश्वास नही करता और न दूसरे में विश्वास उत्पन्न करता है ।

३२३ १क—वृक्ष चार प्रकार के है । यथा—

१ पत्रयुक्त, २ पुष्पयुक्त,

३. फलयुक्त और ४. छायायुक्त

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१. पत्ते वाले वृक्ष के समान,[1]

२ पुष्प वाले वृक्ष के समान,[2]

३ फल वाले वृक्ष के समान,[3]

१—जिस प्रकार केवल पत्ते वाले वृक्ष से जन साधारण को पुष्पादि नहीं मिलते उसी प्रकार एक पुरुष से किसी का भला नहीं होता ।

२—जिस प्रकार पुष्प वाले वृक्ष से सुगन्ध मिलती है उसी प्रकार एक पुरुष से सद्विचार मिलते हैं ।

३—जिस प्रकार फल वाले वृक्ष से फल मिलते हैं उसी प्रकार एक पुरुष से अन्न वस्त्र आदि मिलते हैं ।

होता है किन्तु स्वय को तृप्त नही करता।

३—एक पुरुष स्वय भी भोजन आदि से तृप्त होता है और अन्य को भी भोजन आदि से तृप्त करता है।

४—एक पुरुष स्वय भी तृप्त नही होता और अन्य को भी तृप्त नही करता।

ङ—पुरुष वर्ग ४ प्रकार का है। यथा—

१—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अपने सद्व्यवहार से अमुक मे विश्वास उत्पन्न करू और विश्वास उत्पन्न करता भी है।

२—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अपने सद्व्यवहार से अमुक मे विश्वास उत्पन्न करूँ किन्तु विश्वास उत्पन्न नही करता।

३—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अमुक मे विश्वास उत्पन्न नही कर सकूगा किन्तु विश्वास उत्पन्न करने मे सफल हो जाता है।

४—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अमुक मे विश्वास उत्पन्न नही कर सकूँगा और विश्वास उत्पन्न कर भी नही सकता है।

च१—एक पुरुष स्वय विश्वास करता है किन्तु दूसरे मे विश्वास उत्पन्न नही कर पाता।

भी एक प्रकार का विश्राम है।

२. जो श्रमणोपासक सामायिक या देशावगासिक धारण करता है यह भी एक प्रकार का विश्राम है।

३. जो श्रमणोपासक चौदस अष्टमी, अमावस्या या पूर्णिमा के दिन पौषध करता है—यह भी एक प्रकार का विश्राम है।

४ जो श्रमणोपासक भक्त-पान का प्रत्याख्यान करता है, और पादप के समान शयन करके मरण की कामना नही करता है—यह भी एक प्रकार का विश्राम का करता है।

३१५ १—पुरुप वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१ उदितोदित—यहाँ भी उदय (समृद्ध) और आगे भी उदय (परम सुख प्राप्त) है।

२ उदितास्तमित—यहा उदय (समृद्ध) है किन्तु आगे उदय नही।

३ अस्तमितोदित—यहा उदय नही है किन्तु आगे उदय है।

४. अस्तमितास्तमित—यहा भी उदय नही है और आगे भी उदय नही है।

१. भरत चक्रवर्ती उदितोदित है;

४ छाया वाले वृक्ष के समान ।[1]

३१४ १क—भारवहन करने वाले के चार विश्राम स्थल हैं ।

यथा—१. एक भारवाहक मार्ग मे चलता हुआ एक खधे से दूसरे खधे पर भार रखता है । यह भी एक प्रकार का विश्राम है ।

२ एक भारवाहक कही पर भार रखकर मल मूत्रादि का त्याग करता है—यह भी एक प्रकार का विश्राम है ।

३ एक भारवाहकनागकुमार या सुपर्णकुमार के मदिर मे रात्रि विश्राम लेता है । यह भी एक प्रकार का विश्राम है ।

४. एक भारवाहक अपने घर पहूंच जाता है यह भी एक प्रकार का विश्राम हैं ।

ख—इसी प्रकार श्रमणोपासक के चार विश्राम है ।

यथा—१ जो श्रमणोपासक शीलव्रत, गुणव्रत, विर-मण व्रत या प्रत्याख्यान-पौपधोपवास करते हैं—यह

१—जिस प्रकार छाया वाले वृक्ष से ताप मिटता है और शान्ति मिलती है उसीप्रकार एक पुरुष से सुरक्षा होती है और संताप मिटता है ।

१. एक पुरुष उच्च है (लौकिक वैभव से श्रेष्ठ है) और उच्चछद है (श्रेष्ठ अभिप्राय वाला है)

२ एक पुरुष उच्च है (लौकिक वैभव से श्रेष्ठ है) किन्तु नीच छद है (नीच अभिप्राय वाला है)

३ पुरुप एक नीच है (वैभवहीन है) किन्तु उच्चछद है (उच्च अभिप्राय वाला है)

४ एक पुरुष नीच है (वैभवहीन है) और नीच छद है (नीच अभिप्राय वाला है)

३१९ १क—असुरकुमारो की ४ लेश्या है। यथा—

१ कृष्ण लेश्या, २ नील लेश्या,

३ कापोत लेश्या और ४. तेजो लेश्या।

ख—इसी प्रकार शेष भवनवासी देवो की, पृथ्वी काय, अप्काय, वनस्पतिकाय और वाणव्यन्तरो की चार लेश्याये है।

३२० १क—यान चार प्रकार के है।

१ एक यान युक्त है (वृषभ आदि से युक्त है) और युक्त है (सामग्री से भी युक्त है)

२. एक यान युक्त है (वृषभ आदि से युक्त है) किन्तु अयुक्त है (सामग्री रहित है)

३. एक यान अयुक्त है (वृषभ आदि से रहित है)

२. ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती उदितास्तमित है।

३. हरिकेशवल अणगार अस्तमितोदित है।

४ काल शौकरिक अस्तमितास्तमित है।

३१६ १क—युग्म ४ प्रकार है। यथा—

१. कृतयुग्म—एक ऐसी सख्या जिसके चार का भाग देने पर शेप चार रहे।

२ त्र्योज—एक ऐसी सख्या जिसके तीन का भाग देने पर शेप तीन रहे।

३ द्वापर—एक ऐसी सख्या जिसके दो का भाग देने पर शेप दो रहे।

४ कल्योज—एक ऐसी सख्या जिसके एक का भाग देने पर शेप एक रहे।

ख—नारक जीवो के चार युग्म हैं।

ग—इसी प्रकार २४ दण्डकवर्ती जीवो के चार युग्म है।

३१७ १क—शूर चार प्रकार के है। यथा—

१. क्षमाशूर, २ तपशूर, ३ दानशूर और ४ युद्धशूर।

ख—१ क्षमाशूर अरिहत है, २. तपशूर अणगार है, ३. दानशूर वैश्रमण है, और ४. युद्धशूर वासुदेव है।

३१८ १क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

और अयुक्त है (चलने योग्य भी नही है)

ख—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के है। यथा—

१. एक पुरुष युक्त है (धनधान्य से परिपूर्ण है) और युक्त परिणत है (उचित प्रवृत्ति वाला है)

शेष तीन भागे पूर्वोक्त क्रम से कहे।

३क—यान चार प्रकार के है। यथा—

१. एक यान युक्त है (वृपभ आदि से युक्त है) और युम्त रूप है (सुन्दराकार है)

शेष तीन भागे पूर्वोक्त क्रम से कहे।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष युक्त है (धन आदि से युक्त है) और युक्त रूप है (सुन्दर है)

शेष तीन भाँगे पूर्वोक्त कहे।

४क—यान चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक यान युक्त है (वृषभ आदि से युक्त है) और शोभा युक्त है।

शेष तीन भागे पूर्वोक्त क्रम से कहे।

ख—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के है। यथा—

१. एक पुरुष युक्त है (धन से युक्त है) और उसकी शोभा युक्त है।

किन्तु युक्त है (सामग्री से युक्त है)।

४. एक यान अयुक्त (वृषभ आदि से रहित है) और अयुक्त है (सामग्री से भी रहित है)

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष युक्त है (धनादि से युक्त है) और युक्त है (उचित अनुष्ठान से भी युक्त है)

२ एक पुरुष युक्त है (धनादि से युक्त है) किन्तु अयुक्त है। (उचित अनुष्ठान से अयुक्त है।)

३ एक पुरुष अयुक्त है (धनादि से अयुक्त है) किन्तु युक्त है (उचित अनुष्ठान से युक्त है)

४. एक पुरुष अयुक्त है (धनादि से रहित है) और अयुक्त है (उचित अनुष्ठान से भी रहित है।

२क—यान चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक यान युक्त है (वृषभ आदि से युक्त है) और युक्त परिणत है (चलने के लिए तैयार है)

२ एक यान युक्त है (वृषभ आदि से युक्त है) किंतु अयुक्त परिणत है (चलने योग्य नही है)

३. एक यान अयुक्त है (वृषभ आदि से रहित है) किन्तु युक्त है (चलने योग्य है)

४. एक यान अयुक्त है। (वृषभ आदि से रहित है)

उत्साही भी नही है।

६-८—यान के चार सूत्रो के समान युग्म के चार सूत्र भी कहे और पुरुप सूत्र भी पूर्ववत् कहे।

९क—सारथी चार प्रकार के है। यथा—

१. एक सारथी रथ के अश्व जोतता है किन्तु खोलता नही है।

२ एक सारथी रथ के अश्व खोलता है किन्तु जोतता नही है।

३. एक सारथी रथ मे अश्व जोतता भी है और खोलता भी है।

४ एक सारथी रथ मे अश्व जोतता भी नही है है और खोलता भी नही है।

ख—इसी प्रकार पुरुष (श्रमण) चार प्रकार के है।

यथा—१ एक श्रमण (किसी व्यक्ति को) सयम साधना मे लगाता है किन्तु अतिचारो से मुक्त नही करता।

२. एक श्रमण सयमी को अतिचारो से मुक्त करता है किन्तु सयम साधना मे नही लगाता।

३. एक श्रमण सयम साधना मे भी लगाता है और अतिचारो से भी मुक्त करता है।

शेष तीन भागे पूर्वोक्त कहे।

५क—वाहन चार प्रकार के हैं।[1] यथा—

१. एक वाहन बैठने की सामग्री (मच आदि) से युक्त है और वेग युक्त है।

२. एक वाहन बैठने की सामग्री (मच आदि) से युक्त है किन्तु वेग युक्त नही है।

३ एक वाहन बैठने की सामग्री युक्त नही है किन्तु वेग युक्त है।

४. एक वाहन बैठने की सामग्री युक्त भी नही है और वेग युक्त भी नही है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष धन धान्य सम्पन्न है और उत्साही है।

२. एक पुरुष धन धान्य सम्पन्न है किन्तु उत्साही नही है।

३. एक पुरुष उत्साही है किन्तु धन धान्य सम्पन्न नही है।

४ एक पुरुष धन धान्य सम्पन्न भी नही है और

१—प्रत्येक यान या वाहन पर बैठने के साधन भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं और उनके नाम भी भिन्न-भिन्न हैं।

यथा—१. एक पुरुप सयम मार्ग मे चलता है किन्तु उन्मार्ग मे नही चलता।

शेष तीन भागे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

२०क—पुष्प चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुष्प सुन्दर है किन्तु सुगन्धित नही है।[1]

२. एक पुष्प सुगन्धित है किन्तु सुन्दर नही है।[2]

३. एक पुष्प सुन्दर भी है और सुगन्धित भी है।[3]

४. एक पुष्प सुन्दर भी नही है और सुगन्धित भी नही है।[4]

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुप सुन्दर है किन्तु सदाचारी नही है।

शेष तीन भागे पूर्ववत् कहे।

२१क—जाति सम्पन्न और कुल सम्पन्न,

ख—जाति सम्पन्न और बल सम्पन्न।

ग—जाति सम्पन्न और रूप सम्पन्न,

घ—जाति सम्पन्न और श्रुत सम्पन्न।

ङ—जाति सम्पन्न और शील सम्पन्न,

१—आंवले के पुष्प समान। २—चम्पा के पुष्प समान।

३—जाई पुष्प के समान। ४—बोरड़ी के पुष्प समान।

४. एक श्रमण सयम साधना मे भी नही लगाता और अतिचारो से भी मुक्त नही करता।

१०-१४—हय (अश्व) चार प्रकार के है। यथा—

१. एक अश्व पलाण युक्त है और वेग युक्त है। यान के चार सूत्रों के समान हय के चार सूत्र कहे और पुरुष सूत्र भी पूर्ववत् कहे।

१५-१८—हय के चार सूत्रो के समान गज के चार सूत्र कहे[1] और पुरुष सूत्र भी पूर्ववत् कहे।

१९क—युग्यचर्या (अश्व आदि की चर्या) चार प्रकार की है। यथा—१. एक अश्व मार्ग मे चलता है किन्तु उन्मार्ग मे नही चलता है।

२ एक अश्व उन्मार्ग मे चलता है किन्तु मार्ग मे नही चलता है।

३ एक अश्व मार्ग मे भी चलता है और उन्मार्ग मे भी चलता है।

४. एक अश्व मार्ग मे भी नही चलता और उन्मार्ग मे भी नही चलता।

ख—इसी प्रकार पुरुष (श्रमण) भी चार प्रकार के है।

१—गज सूत्रों में अंबाबाड़ी कहे।

ख—इसी प्रकार आचार्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१ मधुर आवले के समान जो आचार्य है वे मधुर-भाषी है और उपशान्त है।

२. मधुर दाख समान जो आचार्य है वे अधिक मधुरभाषी है और अधिक उपशान्त है।

३. मधुर दूध के समान जो आचार्य है वे विशेप मधुरभाषी है और अत्यधिक उपशान्त है।

४ मधुर शर्करा समान जो आचार्य है वे अधिकतम मधुरभापी है और अधिक उपशान्त है।

२३क—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१. एक पुरुप अपनी सेवा करता है किन्तु दूसरे की नही करता।[1]

२. एक पुरुष दूसरे की सेवा करता है अपनी नहीं करता।[2]

३. एक पुरुष अपनी सेवा भी करता है और दूसरे की भी करता है।[3]

४. एक पुरुष अपनी सेवा भी नही करता और दूसरे

---

१. आलसी या रूक्ष प्रकृतिवाला। २. परोपकारी।

३, व्यवहार कुशल (स्थविरकल्पी)

च—जाति सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न ।

छ—कुल सम्पन्न और वल सम्पन्न,

ज—कुल सम्पन्न और रूप सम्पन्न ।

झ—कुल सम्पन्न और श्रुत सम्पन्न,

ञ—कुल सम्पन्न और शील सम्पन्न ।

ट—कुल सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न,

ठ—वल सम्पन्न और रूप सम्पन्न ।

ड—वल सम्पन्न और श्रुत सम्पन्न,

ढ—वल सम्पन्न और शील सम्पन्न ।

ण—वल सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न,

त—रूप सम्पन्न और श्रुत सम्पन्न ।

थ—रूप सम्पन्न और शील सम्पन्न,

द—रूप सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न ।

ध—श्रुत सम्पन्न और शील सम्पन्न,

न—श्रुत सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न ।

प—शील सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न ।

इनके चार-चार भागे पूर्वोक्त क्रम से कहे ।

२२क—फल चार प्रकार के हैं । यथा—

१. आवले जैसा मधुर, २ दाख जैसा मधुर,

३. दूध जैसा मधुर, ४. खाड जैसा मधुर ।

करता है।

ख—पुरुप चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुप (श्रमण) गण के लिये आहारादि का सग्रह करता है।

२ एक पुरुप गण के लिये सग्रह नही करता किन्तु मान करता है।

३ एक पुरुप गण के लिये भी सग्रह करता है और मान भी करता है।

४. एक पुरुप गण के लिये सग्रह भी नही करता और अभिमान भी नही करता है।

ग—पुरुप चार प्रकार के होते है। यथा—

१. एक पुरुप निर्दोष साधु समाचारी का पालन करके गण की शोभा वढाता है और मान नही करता।

२ एक पुरुष मान करता है किन्तु गण की शोभा नही वढ़ाता है।

३ एक पुरुप गण की शोभा भी वढाता है और मान भी करता है।

४. एक पुरुष गण की शोभा भी नही वढाता और मान भी नही करता।

घ—पुरुप चार प्रकार के हैं। यथा—

की भी नही करता।[४]

ख—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१. एक पुरुष दूसरे की सेवा करता है किन्तु अपनी सेवा नही करवाता।[५]

२ एक पुरुष दूसरे से सेवा करवाता है किन्तु स्वयं सेवा नही करता।[६]

३. एक पुरुष दूसरे की सेवा भी करता है और दूसरे से सेवा करवाता हैं।[७]

४. एक पुरुष न दूसरे की सेवा करता है और न दूसरे से सेवा करवाता है।[८]

२४क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष कार्य करता है किन्तु मान नही करता।

२ एक पुरुष मान करता है किन्तु कार्य नहीं करता।

३. एक कार्य भी करता है और मान भी करता है।

४ एक कार्य भी नही करता है और मान भी नही

---

४ पादोपगमन भक्त प्रत्याख्यान करने-वाला।

५. निस्पृही।

६. रोगी या आचार्य।

७ स्थविरकल्पी मुनि।

८. जिनकल्पी मुनि।

किन्तु गण की मर्यादा को छोड देता है।

३ एक पुरुष सर्वज्ञ कथित कथित धर्म भी छोड देता है और गण की मर्यादा भी छोड देता है।

४ एक-पुरुष सर्वज्ञ कथित धर्म भी नही छोडता है और गण की मर्यादा भी नही छोडता है।

२६—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१. एक पुरुष है उसे धर्म प्रिय है किन्तु वह धर्म में दृढ नही है।

२ एक पुरुष हैं वह धर्म मे दृढ है किन्तु उसे धर्म प्रिय नही है।

३. एक पुरुष है उसे धर्म प्रिय भी है और वह धर्म मे दृढ भी है।

४ एक पुरुष है उसे धर्म भी प्रिय नही है और वह धर्म मे दृढ भी नही है।

२७क—आचार्य चार प्रकार के है। यथा—

१. एक आचार्य दीक्षा देते हैं किन्तु महाव्रतो की प्रतिज्ञा नही कराते हैं।[1]

---

१. दीक्षा देने वाले प्रव्राजनाचार्य कहे जाते है। महाव्रत धारण कराने वाले उपस्थापनाचार्य कहे जाते है।

१. एक पुरुष (श्रमण) गण की शुद्धि (यथा योग्य प्रायश्चित देकर) करता है किन्तु मान नहीं करता। शेष तीन भागे पूर्वोक्त कहे।

२५क—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१ एक पुरुष साधु वेष छोडता है किन्तु चारित्र धर्म नही छोडता।[1]

२. एक पुरुष चारित्र धर्म छोडता है किन्तु साधु वेप नही छोडता।[2]

३ एक पुरुष साधु वेप भी छोडता है और चारित्र धर्म भी छोडता है।[3]

४ एक पुरुष साधु वेप भी नही छोडता और चारित्र धर्म भी नही छोडता।

ख—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष (श्रमण) सर्वज्ञ धर्म को छोड़ता है किन्तु गण की मर्यादा को नही छोड़ता हैं।

२ एक पुरुष सर्वज्ञ कथित धर्म को नही छोडता है

---

१. अन्य दर्शन का अध्ययन करने के लिए यदि कहीं जाना हो तो।

२. निह्लव। ३. पतित।

४. एक आचार्य न शिष्य को योग्य बनाते है और न वाचना देते है।[1]

२८क—अन्तेवासी (शिष्य चार प्रकार के है। यथा—

१ एक प्रव्रजित शिष्य है किन्तु उपस्थापित महाव्रतारोपित शिष्य नही है।

२ एक उपस्थापित शिष्य हैं किन्तु प्रव्रजित शिष्य नही है।

३ एक शिष्य प्रव्रजित भी है और उपस्थापित भी है।

४ एक शिष्य प्रव्रजित भी नही है और उपस्थापित भी नही है।[2]

ख—शिष्य चार प्रकार के है। यथा—

१ एक उद्देशना शिष्य है किन्तु वाचना शिष्य नही है।

२. एक वाचना शिष्य है किन्तु उद्देशना शिष्य नही है।

३ एक उद्देशना शिष्य भी है और वाचना शिष्य भी है।

---

१. ऐसे आचार्य धर्माचार्य होते हैं वे केवलधर्मोपदेश करते हैं।

२. ऐसा शिष्य 'धर्मान्तेवासी' कहा जाता है जिसने गुरु से केवल धर्म का बोध प्राप्त किया है।

२. एक आचार्य महाव्रतो की प्रतिज्ञा कराते हैं किन्तु दीक्षा नही देते हैं।

३. एक आचार्य दीक्षा भी देते हैं और महाव्रत भी धारण कराते हैं।

४ एक आचार्य न दीक्षा देते हैं और न महाव्रत धारण कराते है।[1]

ख—आचार्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक आचार्य शिष्य को आगम ज्ञान प्राप्त करने योग्य वना देते हैं।[2] किन्तु स्वयं आगमो का अध्ययन नही कराते।[3]

२. एक आचार्य आगमो का अध्ययन कराते है किन्तु शिष्य को आगम ज्ञान प्राप्त करने योग्य नही वनाते।

३. एक आचार्य शिष्य को योग्य भी वनाते हैं और वाचना भी देते है।

---

१. धर्माचार्य, सामान्य साधु या श्रावक।

२. जो शिष्यो को आगम ज्ञान प्राप्त करने योग्य बनाते हैं वे उद्देशनाचार्य कहे जाते हैं।

३. जो शिष्य को आगमो का अध्ययन कराते हैं वे वाचनाचार्य कहे जाते हैं।

भागे कहे।

३२१ १क—श्रमणोपासक चार प्रकार के है। यथा—

१. माता-पिता के समान।[1] २ भाई के समान।[2]

३. मित्र के समान।[3] और ४. शौक के समान।[4]

ख—श्रमणोसासक चार प्रकार के हैं। यथा—

१ आदर्श समान।[5] २ पताका समान।[6]

३ स्थाणु समान।[7] और ४ तीक्ष्ण काटे के समान।[8]

३२२ १—भगवान महावीर के जो श्रमणोपासक सौधर्मकल्प के अरूणाभ विमान मे उत्पन्न हुए हैं उनकी चार पल्यो-

---

१. साधु का सदा हितचिंतक।

२. साधु को हित शिक्षा देते समय कठोर वचन कहने वाला और विपद्ग्रस्त होने पर सहायक।

३. साधु के कठोर वचन कहने पर विपत्ति में उसकी उपेक्षा करने वाला।

४. साधु के दोष देखने वाला।

५. साधु के उपदेश या आदेश को यथावत् धारण करने वाला।

६. अनेक वक्ताओ के विविध उपदेशो से अस्थिर चित।

७. गीतार्थ के समझाने पर भी न मानने वाला।

८. हित शिक्षक साधु को दुर्वचन कहने वाला।

४. एक उद्देशना शिष्य भी नही है और वाचना शिष्य भी नही है।

२९क—निर्ग्रन्थ चार प्रकार के है। यथा—

१. एक निर्ग्रन्थ दीक्षा मे ज्येष्ठ है किन्तु महा पाप कर्म और महापाप क्रिया करता है। न कभी आतापना लेता है और न पचसमितियो का पालन ही करता है। अतः वह धर्म का आराधक नही है।

२ एक निर्ग्रन्थ दीक्षा मे ज्येष्ठ है किन्तु पापकर्म और पाप क्रिया कदापि नही करता है। आतापना लेता है और समितियो का पालन भी करता है। अतः वह धर्म का आराधक होता है।

३. एक निर्ग्रन्थ दीक्षा मे लघु है किन्तु महापाप कर्म और महापाप क्रिया करता है, न कभी आतापना लेता है और न समितियो का पालन करता है। अतः वह धर्म का आराधक नही होता है।

४. एक निर्ग्रन्थ दीक्षा मे लघु है किन्तु कदापि पाप कर्म और पाप क्रिया नही करता है, आतापना लेता है और समितियो का पालन भी करता है। अतः वह धर्म का आराधक होता है।

इसी प्रकार निर्ग्रन्थियो श्रावको और श्राविकाओ के

सोचते-सोचते उसके पूर्व जन्म के प्रेमी काल धर्म को प्राप्त हो जाते है ।

४ देवलोक मे उत्पन्न होते हुए ही एक देवता दिव्य काम-भोगो मे मूर्छित-यावत्-आसक्त हो जाता है, अतः उसे मनुष्य लोक की गन्ध भी अच्छी नही लगती। क्योकि मनुष्य लोक की गन्ध चार सो पाँच योजन तक जाती है ।

देवलोक मे उत्पन्न होते ही देवता मनुष्य लोक मे आना चाहता है किन्तु इन चार कारणो से नही आ सकता ।

ख—देवलोक से उत्पन्न होते ही देवता मनुष्य लोक मे आना चाहता है और इन चार कारणो से आ भी सकता है ।

१. देवलोक मे उत्पन्न होते ही देवता दिव्य काम-भोगो मे मूर्छित-यावत् आसक्त नही होता क्योकि उसके मन मे यह विकल्प आता है कि—मेरे मनुष्य भव के आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, स्थविर, गणी, गणधर और गणावच्छेदक है उनकी कृपा से मुझे यह दिव्य देवसृष्टि, दिव्य देवद्युति प्राप्त हुई है, अत मैं जाऊँ और उन्हे वन्दना करूँ-यावत्-पर्यु-

की स्थिति है।

३२३ १क—देवलोक मे उत्पन्न होते ही कोई देवता मनुष्य लोक मे आना चाहता है किन्तु चार कारणो से वह नही आ सकता। यथा—

१ देवलोक मे उत्पन्न होते ही एक देवता दिव्य काम-भोगो मे मूर्छित, गृद्ध, वद्ध एव आसक्त हो जाता है, अत वह मानवी काम-भोगो को न प्राप्त करना चाहता है और न उन्हे श्रेष्ठ मानता है। मानवी काम-भोगो से मुझे कोई लाभ नही है—ऐसा निश्चय कर लेता है। मुझे मानवी काम-भोग मिले—ऐसी कामना भी नही करता और मानवी काम-भोगो मे मैं कुछ समय लगा रहू—ऐसा विकल्प भी मन मे नही लाता।

२ देवलोक मे उत्पन्न होते ही एक देवता दिव्य काम-भोगो मे मूर्छित-यावत्-आसक्त हो जाता है, अतः उसका मानवी प्रेम दैवी प्रेम मे परिणत हो जाता है।

३ देवलोक मे उत्पन्न होते ही एक देवता दिव्य काम-भोगो मे मूर्छित-यावत्-आसक्त हो जाता है, अत उसके मन मे यह विकल्प आता है कि 'मैं अभी जाऊँगा या एक मुहुर्त पश्चात जाऊगा" ऐसा

ही मूर्छित-यावत्-आसक्त नहीं होता है और मनुष्य लोक मे आना चाहता है तो आ सकता है।

३२४ १क—लोक मे अन्धकार चार कारणो से होता है। यथा—

१ अर्हन्तो के मोक्ष जाने पर,

२ अर्हन्त कथित धर्म के लुप्त होने पर,

३. पूर्वो का ज्ञान नष्ट होने पर,

४ अग्नि न रहने पर।[1]

ख—लोक मे उद्योत चार कारणो से होता है। यथा—

१. अर्हन्तो के जन्म समय मे, २ अर्हन्तो के प्रवजित होते समय, ३ अर्हन्तो के केवल ज्ञान महोत्सव मे, ४ अर्हन्तो के निर्वाण महोत्सव मे।

ग-छ—"इसी प्रकार देवलोक मे अधकार, उद्योत, देव

---

१. इस सूत्र मे लोक शब्द से सम्पूर्ण लोक नहीं समझना चाहिए क्योकि महाविदेह आदि ऐसे क्षेत्र हैं जहां आगममान्यतानुसार—१. अर्हन्तों का, २. अर्हन्त प्रज्ञप्त धर्म का, ३. पूर्वो के ज्ञान और का और ४. अग्नि का विच्छेद कभी होता ही नहीं। अत भरत-क्षेत्र आदि कतिपय क्षेत्र ही लोक शब्द से-ग्रहण करें। यदि लोक शब्द से सम्पूर्ण लोक लिया जायगा तो आगम वचनो में पूर्वा पर विरोध आयेगा।

पासना करू ।

२. देवलोक में उत्पन्न होते ही देवता दिव्य काम-भोगो मे मूर्छित-यावत्-आसक्त नही होता, क्योकि मन मे यह विकल्प आता है कि इस मनुष्यभव मे जो ज्ञानी या दुष्कर तप करने वाले तपस्वी हैं उन भगवन्तो की वन्दना करू-यावत-पर्युपासना करूँ ।

३. देवओक में उत्पन्न होते ही देवता दिव्य काम-भोगो मे मूर्छित-यावत्-आसक्त नही होता क्योकि उसके मन मे यह विकल्प आता है कि—मेरे मनुष्य भव के माता-पिता-यावत्-पुत्रवधु है। उनके समीप जाऊ और उन्हे यह दिखाऊ कि मुझें ऐसी दिव्य देव सृष्टि और दिव्य देवद्युति प्राप्त हुई है ।

४. देवलोक मे उत्पन्न होते ही देवता दिव्य-काम-भोगो-मे मूर्छित यावत्-आसक्त नही होता क्योकि उसके मन मे यह विकल्प आता है कि—मेरे मनुष्यभव के मित्र, सखी,सुहृत, सखा या सगी (अतिपरिचित) हैं उनके और मेरे अर्थात् एक दूसरे के साथ यह वादा हो चुका है कि—जो पहले मरेगा वह कहने के लिये आवेगा ।

इन चार कारणो से देवता देवलोक मे उत्पन्न होते

रखने पर श्रमण का मन सदा ऊँचा नीचा (डांवा-डोल) रहता है अतः वह धर्म भ्रष्ट हो जाता है। यह प्रथम दुखशय्या है।

२. यह दूसरी दुख शय्या है। यथा—"एक व्यक्ति मुडित होकर-यावत्-प्रव्रजित होकर स्वय को जो आहार आदि प्राप्त है, उससे सन्तुष्ट नही होता है और दूसरे को जो आहार आदि प्राप्त है, उनकी इच्छा करता है" ऐसे श्रमण का मन सदा ऊँचा-नीचा (डावाडोल) रहता है अतः वह धर्म भ्रष्ट हो जाता है। यह दूसरी दुखशय्या है।

३ यह तीसरी दुखशय्या है—एक व्यक्ति मुडित होकर-यावत्-प्रव्रजित होकर जो दिव्य मानवी काम-भोगो का आस्वादन-यावत्-अभिलाषा करता है। उस श्रमण का मन सदा डावाडोल रहता है अतः वह धर्मभ्रष्ट हो जाता है। यह तीसरी दुखशय्या है।

४. यह चौथी दुखशय्या है—एक व्यक्ति मुडित होकर-यावत्-प्रव्रजित होकर ऐसा सोचता है कि मैं जब घर पर था तब मालिश, मर्दन, स्नान आदि नियमित करता था और जब से मैं मुडित-यावत्-प्रव्रजित हुआ हू तब से मैं मालिश, मर्दन स्नान

समुदाय का एकत्र होना, उत्साहित होना और आनन्दजन्य कोलाहल होना" के चार-चार भागे कहें।

ज—देवेन्द्र-यावत्-लोकान्तिक देव चार कारणो से मनुष्य लोक मे आते हैं।

तीसरे स्थान मे सूत्र १३४ मे कथित तीन कारणो मे "अरिहतो के निर्वाणमहोत्सव का एक कारण और वढाकर चार भागे कहें।

३२५ १क—दुखशय्या[1] चार प्रकार की है।

१ उनमे यह प्रथम दुख शय्या है। यथा—एक व्यक्ति मु डित होकर अर्थात् "गृहस्थ का परित्याग कर और मुनि धर्म मे प्रव्रजित होकर" निर्ग्रन्थ प्रवचन मे शङ्का, काक्षा, विचिकित्सा करता है तो वह मानसिक दुविधा मे धर्म विपरीत विचारों से निर्ग्रन्थ प्रवचन मे श्रद्धा, प्रतीति एव रुचि नही रखता है। निर्ग्रन्थ प्रवचन में अश्रद्धा, अप्रतीति और अरुचि

---

१. यहाँ 'दुखशय्या' का भावार्थ 'अशान्त जीवन' है जिस प्रकार खराव खाट पर आराम से नींद नहीं आती उसी प्रकार श्रद्धा रहित साधु जीवन भी अशात जीवन ही है। इसी अशांत जीवन का औपमिक नाम 'दुखशय्या' है।

३. यह तीसरी सुख शय्या है—एक व्यक्ति मुडित-यावत्-प्रव्रजित होकर दिव्य मानवी काम-भोगो का आस्वादन-यावत्-अभिलाषा नही करता है—उस श्रमण का मन कभी डांवाडोल नही होता है, अत वह धर्म भ्रष्ट भी नही होता। यह तीसरी सुखशय्या है।

४ यह चौथी सुख शय्या है—एक व्यक्ति मुडित-यावत्-प्रव्रजित होकर ऐसा सोचता है कि—'अरिहंत भगवंत आरोग्यशाली, बलवान शरीर के धारक उदार कल्याण विपुल कर्मक्षयकारी तप कर्म को अगीकार करते हैं, तो मुझे तो जो वेदना आदि उपस्थित हुई है उसे सम्यक् प्रकार से सहन करना चाहिए। यदि मैं आगत वेदनी कर्मों को सम्यक् प्रकार से सहन नही करूँगा तो एकान्त पाप कर्म का भागी होऊँगा। यदि सम्यक् प्रकार से सहन करूँगा तो एकान्त कर्म निर्जरा कर सकूंगा।' इस प्रकार वह धर्म मे स्थिर रहता है। यह चौथी सुख-शय्या है।

३२६ १क—चार प्रकार के व्यक्ति आगम वाचना के अयोग्य होते है। यथा—

१. अविनयी, २ दूध आदि पौष्टिक आहारो का

आदि नही कर पाता हूँ—इस प्रकार श्रमण जो मालिश-यावत्-स्नान आदि की इच्छा-यावत् अभिलाषा करता है उसका मन सदा डांवाडोल रहता है अतः वह धर्म भ्रष्ट हो जाता है। यह चौथी दुख-शय्या है।

ख—सुखशय्या चार प्रकार की है उनमे से यह प्रथम सुख शय्या है।यथा—

१. एक व्यक्ति मुंडित होकर-यावत्-प्रव्रजित होकर निर्ग्रन्थ प्रवचन मे शङ्का, काक्षा, विचिकित्सा नही करता है तो वह न दुविधा मे पड़ता है और न धर्म विपरीत विचार रखता है। निर्ग्रन्थ प्रवचन मे श्रद्धा, प्रतीति एव रुचि रखने पर श्रमण का मन डावाडोल नही होता, अतः वह धर्म भ्रष्ट भी नही होता। यह प्रथम सुख शय्या है।

२. यह दूसरी सुखशय्या है—एक व्यक्ति मुंडित होकर-यावत्-प्रव्रजित होकर स्वय को प्राप्त आहार आदि से सतुष्ट रहता है और अन्य को प्राप्त आहार आदि की अभिलाषा नही रखता है—ऐसे श्रमण का मन कभी ऊँचा नीचा नही होना और न वह धर्म-भ्रष्ट होता है। यह दूसरी सुख शय्या है!

दूसरे का भी भरण-पोषण नही करता।[४]

ख—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुष पहले भी दरिद्री होता है और पीछे भी दरिद्री रहता है।

२ एक पुरुष पहले दरिद्री होता है किन्तु पीछे धनवान हो जाता है।

३ एक पुरुष पहले धनवान होता है किन्तु पीछे दरिद्री हो जाता है।

४. एक पुरुष पहले भी धनवान होता है और पीछे भी धनवान रहता है।

ग—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष दरिद्री होता है और दुराचारी भी होता है।

२. एक पुरुष दरिद्री होता है किन्तु सदाचारी होता है।

३. एक पुरुष धनवान होता है किन्तु दुराचारी होता है।

४. एक पुरुष धनवान भी होता है और सदाचारी

---

४. लोकोत्तर पक्ष मे—जड़मति।

अधिक सेवन करने वाला, ३. अनुपशात अर्थात् अति क्रोधी ४ मायावी।

ख—चार प्रकार के आगम वाचना के योग्य होते हैं।

यथा—१ विनयी, २. दूध आदि पौष्टिक आहारो का अधिक सेवन न करने वाला, ३. उपशान्त-क्षमाशील, ४. कपट रहित।

३२७ १क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक अपना भरण-पोषण करता है किन्तु दूसरे का भरण-पोषण नही करता।[1]

२ एक अपना भरण-पोषण नही करता किन्तु दूसरो का भरण-पोषण करता है।[2]

३. एक अपना भी और दूसरे का भी भरण-पोषण करता है।[3]

४ एक अपना भी भरण-पोषण नही करता और

१—लोकोत्तर पक्ष में—जिनकल्पी मुनि।

२—लोकोत्तर पक्ष मे—अर्हन्त।

३. लोकोत्तर पक्ष में—स्थविरकल्पी।

१. एक पुरुष दरिद्री है और दुर्गति में गया है ।[1]

२. एक पुरुष दरिद्री है और सुगति मे गया है ।[2]

३. एक पुरुष धनवान् है और दुर्गति मे गया है ।[3]

४. एक पुरुष धनवान है और सुगति मे गया है ।[4]

छ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१ एक पुरुष पहले भी अज्ञानी है और पीछे भी अज्ञानी है ।

२. एक पुरुष पहले अज्ञानी है किन्तु पीछे ज्ञानवान हो जाता है ।

३ एक पुरुष पहले ज्ञानी है किन्तु वाद मे अज्ञानी वन जाता है ।

४. एक पुरुष पहले भी ज्ञानी है और पीछे भी ज्ञानी है ।

ज—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१. एक पुरुष मलिन स्वभाववाला है और उसके पास अज्ञान का वल है ।

२ एक पुरुष मलिन स्वभाववाला है किन्तु उसके

---

१. द्रमक के समान ।

२. जिनदास के समान ।

३. मम्मण शेठ के समान ।

४. आनन्दश्रावक के समान ।

भी होता है।

घ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक दरिद्री हैं किन्तु दुष्कृत्यो में आनन्द मानने वाला है।

२. एक दरिद्री है किन्तु सत्कार्यों मे आनन्द मानने वाला है।

३. एक धनी है किन्तु दुष्कृत्यों में आनन्द मानने वाला है।

४ एक धनी भी है और सत्कार्यों मे भी आनन्द मानने वाला है।

ङ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुष दरिद्री है और दुर्गति मे जाने वाला है।

२ एक पुरुष दरिद्री है और सुगति में जाने वाला है।

३. एक पुरुष धनवान है और दुर्गति मे जाने वाला है।

४ एक पुरुष धनवान है और सुगति मे जाने वाला है।

च—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

ञ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष ने कृषि आदि सावद्यकर्मों का तो परित्याग कर दिया है किन्तु सदोष आहार आदि का परित्याग नही किया है।

२. एक पुरुष ने सदोष आहार आदि का तो परित्याग कर दिया है किन्तु कृषि आदि सावद्यकर्मों का परित्याग नही किया है।

३ एक पुरुष ने कृषि आदि सावद्य कर्मों का भी परित्याग कर दिया है और सदोष आहार आदि का भी परित्याग कर दिया है।

४. एक पुरुष ने कृषि आदि सावद्य कर्मों का भी परित्याग नही किया है और सदोष आहार आदि का भी परित्याग नही किया है।

ट—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष ने कृषि आदि कर्मों का परित्याग कर दिया है, किन्तु गृहवास का परित्याग नही किया है। शेष तीन भागे पूर्वोक्त क्रमसे कहे।

ठ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। पूर्ववत।

ड—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

पास ज्ञान का वल है।

३. एक पुरुष निर्मल स्वभाव वाला है किन्तु उसके पास अज्ञान का वल है।

४ एक पुरुष निर्मल स्वभाव वाला है और उसके पास ज्ञान का वल है।

झ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुष मलिन स्वभाववाला है और अज्ञान वल मे आनद मानने वाला है।[1]

२. एक पुरुष मलिन स्वभाव वाला है किन्तु ज्ञान वल मे आनद मानने वाला है।

३ एक पुरुष निर्मल स्वभाववाला है किन्तु अज्ञान वल मे आनद मानने वाला है।

४ एक पुरुष निर्मल स्वभाव वाला है और ज्ञान वल मे आनद मानने वाला है।

---

१. टीकाकार इस सूत्र के वैकल्पिक अर्थ भी देते हैं—(क) एक पुरुष मलिन स्वभाव वाला है किन्तु अपने अज्ञान से लज्जित होने वाला है। शेष तीन भागे पूर्वोक्त क्रम से कहें। (ख) एक पुरुष मलिन स्वभाव वाला है किन्तु अंधेरे में चलने से लज्जित होता है अर्थात् प्रकाश में चलता है। शेष तीन भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

बढता है और सम्यग्दर्शन से हीन होता है।

४. एक पुरुष दो (श्रुतज्ञान और सम्यगनुष्ठान) से बढता है और दो (सम्यग्दर्शन और विनय) से हीन होता है।

त—अश्व चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक अश्व पहले शीघ्र गति होता है और पीछे भी शीघ्रगति रहता है।

२. एक अश्व पहले शीघ्रगति होता है किन्तु पीछे मन्द गति हो जाता है।

३. एक अश्व पहले मदगति होता है किन्तु पीछे शीघ्र गति हो जाता है।

४. एक अश्व पहले भी मदगति होता है और पीछे भी मद गति रहता है।

थ—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष पहले सद्गुणी है और पीछे भी सद्-गुणी है।

२. एक पुरुष पहले सद्गुणी है किन्तु पीछे अवगुणी हो जाता है।

३. एक पुरुष पहले अवगुणी है किन्तु पीछे सद्गुणी

१ एक पुरुष ने सदोष आहार आदि का तो परित्याग कर दिया है किन्तु गृहवास का परित्याग नही किया है।

शेष ३ भागे पूर्वोक्त क्रम से कहे।

ढ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष इहभव के सुख की कामना करता है किन्तु परभव के सुख की कामना नही करता है।

२. एक पुरुष परभव के सुख की कामना करता है किन्तु इहभव के सुख की कामना नही करता है।

३ एक पुरुष इहभव और परभव दोनो के सुख की कामना करता है।

४. एक पुरुष न इहभव के और न परभव के सुख की कामना करता है।

ण—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुष एक (श्रुतज्ञान) से बढता है और एक (सम्यग्दर्शन) से हीन होता है।

२. एक पुरुष एक (श्रुतज्ञान) से बढ़ता है और दो (सम्यग्दर्शन और विनय) से हीन होता है।

३. एक पुरुष दो (श्रुतज्ञान और सम्यकचारित्र) से

नही है।

शेष तीन भागे पूर्वोक्त सूत्र के अनुसार कहे।

प—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं।

भागे पूर्वोक्त सूत्र २८१ के अनुसार कहे।

फ—अश्व चार प्रकार के है। यथा—

१. एक अश्व जातिसम्पन्न है किन्तु बलसम्पन्न नही है।

शेष तीन भागे पूर्वोक्त सूत्र २८१ के समान है।

ब—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के है।

भागे पूर्वोक्त सूत्र २८१ के समान है।

भ—अश्व चार प्रकार के है। यथा—

१ एक अश्व जातिसम्पन्न है किन्तु रूपसम्पन्न नही है।

शेष भागे पूर्वोक्त सूत्र २८१ के समान है।

म—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के है।

भागे पूर्वोक्त सूत्र २८१ के समान है।

य—अश्व चार प्रकार के है। यथा—

१. एक अश्व जातिसम्पन्न है किन्तु युद्ध मे वह विजय प्राप्त नही कर पाता।

शेष तीन भागे पूर्वोक्त क्रम से कहे।

हो जाता है।

४. एक पुरुष पहले भी और पीछे भी अवगुणी होता है।

द—अश्व चार प्रकार के है। यथा—

१. एश अश्व शीघ्रगति है और सकेतानुसार चलता है।

२. एक अश्व शीघ्रगति है किन्तु सकेतानुसार नही चलता है।[1]

३. एक अश्व मंदगति है किन्तु सकेतानुसार चलता है।[2]

४. एक अश्व मंद गति है और सकेतानुसार भी नही चलता है।

ध—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष विनय गुणसम्पन्न है और व्यवहार मे भी विनम्र है।

शेष ३ भागे पूर्वोक्त क्रम से कहे।

न—अश्व चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक अश्व जातिसम्पन्न है किन्तु कुलसम्पन्न

---

१. दुर्गम मार्ग होने से। २. अश्वारोही कुशल होने से।

सिह की तरह विचरण करता है।

४. एक पुरुष शृगाल की तरह प्रव्रजित होता है और शृगाल की तरह ही विचरण करता है।

३२८ १क—लोक मे समान स्थान चार है। यथा—

१. अप्रतिष्ठान नरकावास,[1]

२ जम्बुद्वीप,

३ पालकयान विमान,[2]

४. सर्वार्थसिद्ध महाविमान।[3]

ख—लोक मे सर्वथा समान स्थान चार हैं। यथा—

१ सीमतक नरकावास,[4]

२. समयक्षेत्र (मनुष्य लोक),

३ उडु नामक विमान,[5]

४. इषत्प्राग्भारा पृथ्वी[6] (सिद्धशिला)

---

१. सप्तम नरक में एक नरकावास।

२. पासक देव द्वारा निर्मित सौधर्मेन्द्र का वाहन विमान।

३. ये चारों एक-एक लाख योजन के हैं।

४. प्रथम नरक का एक नरकावास।

५. सौधर्म देवलोक में एक विमान।

६. ये चारों पैंतालीस लाख योजन के हैं।

र—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष जातिसम्पन्न (जिसका मातृ पक्ष उत्तम है) किन्तु युद्ध मे वह विजय प्राप्त नही कर पाता। शेप भागे पूर्वोक्त क्रम से कहे।

इसी प्रकार—

ल—१. कुल सम्पन्न और वल सम्पन्न,

व—२. कुल सम्पन्न और रूप सम्पन्न,

श—३. कुल सम्पन्न और जय सम्पन्न,

ष—४. वल सम्पन्न और रूप सम्पन्न,

स—५ वल सम्पन्न और जय सम्पन्न,

ह—६ रूप सम्पन्न और वल सम्पन्न,

क्ष—७ रूप सम्पन्न और जय सम्पन्न,

अश्व के चार-चार भागे तथा इसी प्रकार पुरुष के चार-चार भागे पूर्वोक्त क्रम से कहे।

क—पुरुप वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुप सिह की तरह (वीरतापूर्वक) प्रव्रजित होता है और सिह की तरह ही विचरण करता है।

२. एक पुरुष सिह की तरह प्रव्रजित होता है किन्तु शृंगाल (कायर) की तरह विचरण करता है।

३. एक पुरुप शृगाल की तरह प्रव्रजित होता किन्तु

ख—वस्त्र प्रतिमायें चार हैं।[1]

ग—पात्र प्रतिमाये चार है।[2]

घ—स्थान प्रतिमाये चार हैं।[1]

३३२ १क—जीव से व्याप्त शरीर चार है। यथा—

१ वैक्रियक शरीर   २ आहारक शरीर,

३ तेजस शरीर और   ४. कार्मण शरीर।

ख—कामर्ण शरीर से व्याप्त शरीर चार हैं। यथा—

१. औदारिक शरीर,   २ वैक्रियक शरीर,

३. आहारक शरीर और ४ तेजस शरीर।

के देने पर लेना।

घ. शय्या भी यथेष्ट बिछी हुई हो तो लेना।

१. क. मन में निर्धारित प्रकार का वस्त्र लेना।

ख. पहले देखा हुआ वस्त्र लेना।

ग. उपयुक्त वस्त्र लेना।

घ. फेंकने योग्य वस्त्र लेना।

२. क. मन में निर्धारित प्रकार का पात्र लेना।

ख. पहले देखा हुआ पात्र लेना।

ग. उपयुक्त पात्र लेना।

शेष पृष्ठ ७८३ पर भी देखें।

३२९ १क—ऊर्ध्वलोक मे दो देह धारण करने के पश्चात् मोक्ष मे जाने वाले जीव चार प्रकार के हैं। यथा—

१. पृथ्वी कायिक जीव,

२ अप्कायिक जीव,

३. वनस्पति कायिक जीव,

४. स्थूल त्रसकायिक जीव,

ख ग—अधोलोक और तिर्यग्लोक सम्बन्धी सूत्र इसी प्रकार कहें।

३३० १क—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१ एक पुरुष लज्जा से परिषह सहन करता है,

२ एक पुरुष लज्जा से मन दृढ रखता है,

३ एक पुरुष परिषह से चलचित्त हो जाता है,

४. एक पुरुष परिषह आने पर भी निश्चलमन रहता है।

३३१ १क—शय्या प्रतिमायें (प्रतिज्ञायें) चार हैं।[1]

---

१. क मन मे निर्धारित प्रकार की शय्या (शयनार्थ काष्ठ फलक) का ही ग्रहण करना।

ख. पहले देखी हुई शय्या लेना।

ग. शय्या दाता के घर मे हो तो लेना और स्वयं गृह स्वामी

३. लोकाकाश, और ४. एक जीव ।

३३५ १—चार प्रकार के जीवो का एक शरीर आँखो से नहीं देखा जा सकता । यथा—

१. पृथ्वीकाय, २. अप्काय,

३. तेउकाय और ४ वनस्पतिकाय ।

३३६ १—चार इन्द्रियो से ज्ञान पदार्थों का सम्बन्ध होने पर ही होता है । यथा—

१. श्रोत्रेन्द्रिय २. घ्राणेन्द्रिय,

३. जिह्वेन्द्रिय, और ४. स्पर्शेन्द्रिय ।

३३७ १—जीव और पुद्गल चार कारणो से लोक के बाहर नही जा सकते । यथा—

१. गति का अभाव होने से,

२. सहायता का अभाव होने से,

३. रुक्षता से, ४. लोक की मर्यादा होने से ।

३३८ १क—ज्ञात (दृष्टान्त) चार प्रकार के है । यथा—

१. जिस दृष्टान्त से अव्यक्त अर्थ व्यक्त किया जाय ।

२. जिस दृष्टान्त से वस्तु के एकदेश का प्रतिपादन किया जाय ।

३. जिस दृष्टान्त से सदोष सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जाय ।

३३३ १क—लोक में व्याप्त अस्तिकाय चार हैं। यथा—

१. धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय,

३ जीवास्तिकाय और ४ पुद्गलास्तिकाय।

ख—उत्पद्यमान चार वादरकाय लोक मे व्याप्त है।

यथा—१ पृथ्वीकाय, २. अप्काय,

३ वायुकाय और ४ वनस्पतिकाय।

३३४ १—समान प्रदेश वाले द्रव्य चार हैं। यथा—

१ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय,

घ. फेंकने योग्य पात्र लेना।

३. क. निरवद्य स्थान की याचना करना और उस स्थान में—

१. हाथ पैरो का सकोचन प्रसारण करना। २. भींत आदि का सहारा लेना। ३. चंक्रमण करना(टहलना)।

ख निरवद्य स्थान की याचना करना और उस स्थान में—

१. हाथो पैरो का संकोचन प्रसारण करना, २. भींत आदि का आश्रय लेना, ३. किन्तु चंक्रमण नहीं करना।

ग. निरवद्य स्थान की याचनाकरना और उस स्थान में—

१. केवल हाथो पैरो का संकोचन प्रसारण करना।

घ निरवद्य स्थान की याचना करना किन्तु उक्त तीनो कार्य न करना।

बोध देना।

घ—सदोष सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाले दृष्टांत चार प्रकार के हैं। यथा—

१. जिस दृष्टांत से पाप कार्य करने का सकल्प पैदा हो।

२ जिस दृष्टांत से "जैसे को तैसा करना" सिखाया जाय।

३ परमत को दूषित सिद्ध करने के लिए जो दृष्टांत दिया जाय, उसी दृष्टांत से स्वमत भी दूषित सिद्ध हो जाय।

४. जिस दृष्टांत मे दुर्वचनो का या अशुद्ध वाक्यो का प्रयोग किया जाय।

ङ—वादी के सिद्धान्त का निराकरण करने वाले दृष्टांत चार प्रकार के है। यथा—

१ वादी जिम दृष्टान्त से अपने पक्ष की स्थापना करे, प्रतिवादी भी उसी दृष्टान्त से अपने पक्ष की स्थापना करे।

२ वादी दृष्टान्त से जिस वस्तु को सिद्ध करे प्रतिवादी उस दृष्टान्त से भिन्न वस्तु सिद्ध करे।

३. वादी जैसा दृष्टान्त कहे प्रतिवादी को भी वैसा

४ जिस दृष्टान्त से वादी द्वारा स्थापित सिद्धान्त का निराकरण किया जाय।

ख—अव्यक्त अर्थ को व्यक्त करने वाले दृष्टान्त चार प्रकार के हैं। यथा—

१. द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव विघ्न-बाधा बताने वाले दृष्टान्त।

२ द्रव्यादि से कार्य सिद्धि बताने वाले दृष्टान्त।

३. जिस दृष्टान्त मे परमत को दूषित सिद्ध करके स्वमत को निर्दोष सिद्ध किया जाय।

४ जिस दृष्टान्त से तत्काल उत्पन्न वस्तु का विनाश सिद्ध किया जाय।

ग—वस्तु के एक देश का प्रतिपादन करने वाले दृष्टान्त चार प्रकार के हैं। यथा—

१. सद्गुणो की स्तुति से गुणवान के गुणो की प्रशसा करना।

२ असत्कार्य मे प्रवृत्त मुनि को दृष्टान्त द्वारा उपालम्भ देना।

३ किसी जिज्ञासु का दृष्टान्त द्वारा प्रश्न पूछना।

४. एक व्यक्ति का उदाहरण देकर दूसरे को प्रति-

ज—हेतु चार प्रकार के हैं। यथा—

१ धूम के अस्तित्व से अग्नि का अस्तित्व सिद्ध करने वाला हेतु।

२ अग्नि के अस्तित्व से विरोधी शीत का नास्तित्व सिद्ध करने वाला हेतु।

३ अग्नि के अभाव मे शीत का सद्भाव सिद्ध करने वाला हेतु।

४ वृक्ष के अभाव मे शाखा का अभाव सिद्ध करने वाला हेतु।

झ—गणित चार प्रकार का है। यथा—

१. पाहुडो का गणित (पाटि गणित)।

२ व्यवहार गणित-तोल-माप आदि।

३ लम्बाई नापने का गणित।

४. राशि मापने का गणित।

ञ—अधोलोक मे अंधकार करने वाली चार वस्तुये हैं।

यथा—१ नरकावास, २. नैरयिक,

३ पाप कर्म और ४. अशुभ पुद्गल।

ट—तिर्यक्लोक (मनुष्यलोक) मे उद्योत करने वाले चार है। यथा—

ही दृष्टान्त देने के लिए कहे ।

४. प्रश्नकर्ता जिस दृष्टान्त का प्रयोग करता है उत्तरदाता भी उसी दृष्टान्त का प्रयोग करता है ।

च—हेतु चार प्रकार के हैं । यथा—

१ वादी का समय विताने वाला हेतु ।

२ वादी द्वारा स्थापित हेतु के सदृश हेतु की स्थापना करने वाला हेतु ।

३. शब्द छल से दूसरे को व्यामोह (भ्रम) पैदा करने वाला हेतु ।

४. धूर्त द्वारा अपहृत वस्तु को पुन: प्राप्त कर सके ऐसा हेतु ।

छ—हेतु चार प्रकार के हैं । यथा—

१ जो हेतु आत्मा द्वारा जाना जाय और जो हेतु इन्द्रियो द्वारा जाना जाय ।

२. जिसके देखने से व्याप्ति का वोध हो ऐमा हेतु । यथा—धुआ देखने से अग्नि और धुएँ की व्याप्ति का स्मरण होना ।

३. उपमा द्वारा समानता का वोध कराने वाला हेतु ।

४. आप्त-पुरुष कथित वचन ।

३. शीतकालीन वायु के समान शीतल।

४. बर्फ के समान अतिशीतल।

ख—तिर्यंचो का आहार चार प्रकार का है। यथा—

१. कंक पक्षी के आहार जैसा अर्थात् दुष्पच आहार भी तिर्यंचो को सुपच होता है।

२. बिल मे जो भी डाले सब तुरन्त अन्दर चला जाता है उसी प्रकार तिर्यंच स्वाद लिए बिना सीधा उदरस्थ कर लेते है।

३. चाण्डाल के मास समान अभक्ष्य भी तिर्यंच खा लेते है।

४. पुत्र मांस के समान तीव्र क्षुधा के कारण अनिच्छा-पूर्वक खाते हैं।

ग—मनुष्यो का आहार चार प्रकार का है। यथा—

१-४ अशन-पान-खादिम-स्वादिम।

घ—देवताओ का आहार चार प्रकार का है। यथा—

१. सुवर्ण, २. सुगन्धित,

३ स्वादिष्ट और ४. सुखद स्पर्श वाला।

३४१ १—आशि-विष (मुंह मे विष) चार प्रकार का है।

यथा—१. वृश्चिक जाति का आशिविष,

२ मडूक जाति का आशिविष,

१. चन्द्र, २. सूर्य, ४ मणि और ४. ज्योति ।[1]

ठ—ऊर्ध्वलोक मे उद्योत करने वाले चार है। यथा—

१ देव, २ देवियाँ, ३. विमान और ४. आभरण।

॥ चतुर्थ स्थानक तृतीय उद्देशक समाप्त ॥



॥ चतुर्थ स्थानक चतुर्थ उद्देशक प्रारम्भ ॥

३३९ १—विदेश जाने वाले पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१ एक पुरुष जीवन निर्वाह के लिए विदेश जाता है।

२. एक पुरुष सचित सम्पत्ति की सुरक्षा के लिए विदेश जाता है।[2]

३ एक पुरुष सुख सुविधा के लिए विदेश जाता है।

४ एक पुरुष प्राप्त सुख-सुविधा की सुरक्षा के लिए विदेश जाता है।[3]

३४० १क—नैरयिको का आहार चार प्रकार का है। यथा—

१. अगारो जैसा अल्पदाहक।

२. प्रज्वलित अग्नि कणो जैसा अतिदाहक।

---

१. अग्नि।

२. अराजकता फैलने पर या सैनिक आक्रमण के भय से।

३. कुशासन से या बांधवों के दुर्व्यवहार से।

उत्तर—समय क्षेत्र जितने बडे शरीर को एक मनुष्य का विप प्रभावित कर देता है। शेप पूर्ववत्।

३४२ १—व्याधियाँ चार प्रकार की है। यथा—

१. वातजन्य, २. पित्तजन्य,

३ कफजन्य और ४. सन्निपात जन्य।[1]

   

३४३ १—चिकित्सा चार प्रकार की है। यथा—

१ वैद्य, २. औपध, ३. रोगी और ४. परिचारक।[2]

३४४ १क—चिकित्सक चार प्रकार के है। यथा—

१ एक चिकित्सक (वैद्य) स्वय की चिकित्सा करता है किन्तु दूसरे की चिकित्सा नही करता है।

२. एक चिकित्सक दूसरे की चिकित्सा करता है किन्तु स्वय की चिकित्सा नही करता है।

३. एक चिकित्सक स्वय की भी चिकित्सा करता है और अन्य की भी चिकित्सा करता है।

४ एक चिकित्सक न स्वय की चिकित्सा करता है और न अन्य की चिकित्सा करता है।

---

१. वात, पित्त और कफ के संयोग को सन्निपात कहते हैं।

२. चिकित्सा के ये चार अंग हैं।

३. सर्प जाति का आशिविप,

४ मनुष्य जाति का आशिविप ।

प्रश्न—हे भगवन् ! विच्छु जाति का आशिविप कितना प्रभावशाली है ?

उत्तर—आधे भरत क्षेत्र जितने बडे शरीर को एक विच्छु का विप प्रभावित कर देता है। यह केवल विष का प्रभावमात्र बताया है। अब तक न इतने बडे शरीर को प्रभावित किया है, न वर्तमान मे भी प्रभावित करता है और न भविष्य मे भी प्रभावित कर सकेगा।

प्रश्न—हे भगवन् ! मडूक जाति का आशिविष कितना प्रभावशाली है ?

उत्तर—भरत क्षेत्र जितने बडे शरीर को एक मडूक का विष प्रभावित कर देता है। शेप पूर्ववत् ।

प्रश्न ३—हे भगवन् ! सर्प जाति का आशिविष कितना प्रभावशाली ?

उत्तर—जम्बू द्वीप जितने बड़े शरीर को एक सर्प का विप प्रभावित कर देता है। शेष पूर्ववत् ।

प्रश्न ४—हे भगवन् ! मनुष्य जाति का आशिविष कितना प्रभावशाली है ?

घ—पुरुष चार प्रकार के है । यथा—

१ एक पुरुष व्रण करता है किन्तु व्रण को औषधि आदि से मिलाता नही है ।

२. एक पुरुष व्रण को औषधि से ठीक करता है किन्तु व्रण नही करता है ।

३. एक पुरुष व्रण भी करता है और व्रण की रक्षा भी करता है ।

४ एक पुरुष व्रण भी नही करता है और व्रण को ठीक भी नही करता है ।

ङ—व्रण चार प्रकार के हैं । यथा—

१. एक व्रण के अन्दर शल्य है किन्तु बाहर शल्य नही है ।

२. एक व्रण के बाहर शल्य है किन्तु अन्दर शल्य नही है ।

३. एक व्रण के अन्दर भी शल्य है और बाहर भी शल्य है ।

४. एक व्रण के अन्दर भी शल्य नही है और बाहर भी शल्य नही है ।

च—इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार का है । यथा—

१. एक पुरुष मन मे शल्य रखता है किन्तु व्यवहार

ख—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष व्रण (शल्य चिकित्सा) करता है किन्तु व्रण को स्पर्श नही करता।

२. एक पुरुष व्रण का स्पर्श करता है किन्तु व्रण नही करता।

३. एक पुरुष व्रण भी करता है और व्रण का स्पर्श भी करता है।

४. एक पुरुष व्रण भी नही करता और व्रण का स्पर्श भी नही करता।

ग—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१ एक पुरुष व्रण करता है किन्तु व्रण की रक्षा नही करता।[1]

२ एक पुरुष व्रण की रक्षा करता है किन्तु व्रण नहीं करता है।

३. एक पुरुष व्रण भी करता है और व्रण की रक्षा भी करता है।

४ एक पुरुष व्रण भी नही करता और व्रण की रक्षा भी नही करता।

---

१. पट्टी आदि बांधकर व्रण की रक्षा नहीं करता।

श्रेष्ठ नही है।[1]

२. एक पुरुष का व्यवहार श्रेष्ठ है किन्तु दुष्ट हृदय है।[2]

३ एक पुरुष दुष्ट हृदय भी है और उसका व्यवहार भी श्रेष्ठ नही है।

४ एक पुरुष दुष्ट हृदय भी नही है और व्यवहार भी उसका श्रेष्ठ है।

झ—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१ एक पुरुष सद्विचार वाला है और सत्कार्य करने वाला भी है।

२. एक पुरुष सद्विचार वाला है किन्तु सत्कार्य करने वाला नही है।

३ एक पुरुष सत्कार्य करने वाला तो है किन्तु सद्-विचार वाला नही है।

४. एक पुरुष सद्विचार वाला भी नही है और सत्कार्य करने वाला भी नही है।

ञ—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१. एक पुरुष भाव से श्रेयस्कर है और द्रव्य से श्रेय-

---

१ पराधीन सम्यक्त्वी पुरुष।

२. उदाई नृप को मारने वाला कपटी श्रमण वेषी।

मे शल्य नही रखता है।[1]

२. एक पुरुष व्यवहार में शल्य रखता है किन्तु मन मे शल्य नहीं रखता है।

३. एक पुरुष मन मे भी शल्य रखता है और व्यवहार मे भी शल्य रखता है।

४ एक पुरुष मन में भी शल्य नहीं रखता है और व्यवहार में भी शल्य नही रखता है।

छ—व्रण चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक व्रण अन्दर से सड़ा हुआ है किन्तु बाहर से सडा हुआ नही है।

२. एक व्रण बाहर से सड़ा हुआ है किन्तु अन्दर से सड़ा हुआ नही है।

३ एक व्रण अन्दर से भी सडा हुआ है और बाहर से भी सडा हुआ है।

४ एक व्रण अन्दर से भी सडा हुआ नहीं है और बाहर से भी सडा हुआ नही है।

ज—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष का हृदय श्रेष्ठ है किन्तु उनका व्यवहार

---

१ छल कपट।

माना जाता है।[1]

३ एक पुरुष पापी है किन्तु लोगो मे श्रेष्ठ सदृश माना जाता है।[2]

४. एक पुरुष पापी है और लोगो मे पापी सदृश माना जाता है।[3]

ङ—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष जिन प्रवचनो का प्ररूपक है किन्तु प्रभावक नही है।

२. एक पुरुष शासन का प्रभावक है किन्तु जिन प्रवचनों का प्ररूपक नही है।[4]

३. एक पुरुष शासन का प्रभावक भी है और जिन वचनो का प्ररूपक भी है।

४. एक पुरुष शासन का प्रभावक भी नही है और जिन प्रवचनों का प्ररूपक भी नही है।

ढ़—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

---

१. कुछ असत्कार्य करता है अत. पापी सदृश माना जाता है।

२. लोगों को दिखाने के लिए कुछ सुकृत करता है।

३. क्योकि सदाचारी नहीं है।

स्कर सदृश है।[1]

२. एक पुरुप भाव से श्रेयस्कर है किन्तु द्रव्य से पापी सदृश है।[2]

३ एक पुरुप भाव से पापी है किन्तु द्रव्य से श्रेयस्कर सदृश्य है।

४. एक पुरुष भाव से भी पापी है और द्रव्य से भी पापी सदृश है।

ट—पुरुप चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुप श्रेष्ठ है और अपने को श्रेष्ठ मानता है।

२ एक पुरुप श्रेष्ठ है किन्तु अपने को पापी मानता है।

३ एक पुरुप पापी है किन्तु अपने को श्रेष्ठ मानता है।

४ एक पुरुप पापी है और अपने को पापी मानता है।

ठ—पुरुप चार प्रकार के है। यथा—

१. एक पुरुप श्रेष्ठ है और लोगो मे श्रेष्ठ सदृश माना जाता है।[3]

२. एक पुरुप श्रेष्ठ है किन्तु लोगो मे पापी सदृश

---

१. दूसरे को सत्परामर्श देने के कारण श्रेयस्कर सदृश है।

२. दूसरे को असत्परामर्श देने के कारण पापी सदृश है।

३. कुछ सत्कर्म करता है अत श्रेष्ठ सदृश माना जाता है।

ख—विकलेन्द्रियो को छोडकर शेष सभी दण्डको मे वादियो के चार समवरण हैं।

३४६ १क—मेघ चार प्रकार के है। यथा—

१. एक मेघ गाजता है किन्तु वर्षता नही है।

२ एक मेघ वर्षता है किन्तु गाजता नही है।

३. एक मेघ गाजता भी है और वर्षता भी है।

४. एक मेघ गाजता भी नही है और वर्षता भी नही है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष बोलता बहुत है किन्तु देता कुछ भी नही है।

२. एक पुरुष देता है किन्तु बोलता कुछ भी नही है।

३ एक पुरुष बोलता भी है और देता भी है।

४. एक पुरुष बोलता भी नही है और देता भी नही है।

२क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक मेघ गाजता है किन्तु उसमे बिजलिया नही चमकती है।

२. एक मेघ मे बिजलियां चमकती है किन्तु गाजता नही है।

१. एक पुरुष सूत्रार्थ का प्ररूपक है किन्तु शुद्ध आहारादि की एषणा मे तत्पर नही है ।

२. एक पुरुष शुद्ध आहारादि की एषणा मे तत्पर नही है किन्तु सूत्रार्थ का प्ररूपक है ।

३. एक पुरुष सूत्रार्थ का प्ररूपक भी है और शुद्ध आहारादि की एषणा मे भी तत्पर है ।

४. एक पुरुष सूत्रार्थ का प्ररूपक भी नही है और शुद्ध आहारादि की एषणा मे भी तत्पर नही है ।

ण—वृक्ष की विकुर्वणा चार प्रकार की है । यथा—

१. नई कोपलें आना, २. पत्ते आना,
३. पुष्प आना, ४. फल आना ।

३४५ १क—वाद करने वालो के समोसरण[1] चार हैं । यथा—

१. क्रियावादी[2], २. अक्रियावादी,[3]
३. अज्ञानवादी[4] और ४. विनयवादी[5] ।

---

१. समवसरण-अनेक मतों का एकत्र मिलना ।

२ क्रियावादियो के एक सौ अस्सी मत हैं ।

३. अक्रियावादियो के अस्सी मत हैं ।

४. अज्ञानवादियो के सड़सठ मत हैं ।

५. विनयवादियो के बत्तीस मत हैं । सब मिलकर ३६३ मत हैं ।

चमकती हैं।

४ एक मेघ वर्पता भी नही है और उसमे विजलियाँ भी चमकती नही है।

ख—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष दानादि सत्कार्य करता है किन्तु अपनी वडाई नही करता है।

२. एक पुरुप अपनी वडाई करता है किन्तु दानादि सत्कार्य नही करता है।

३. एक पुरुप दानादि सत्कार्य भी करता है और अपनी वडाई भी करता है।

४. एक पुरुष दानादि सत्कार्य भी नही करता और अपनी वडाई भी नही करता है।

४क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक मेघ समय पर बरसता है किन्तु असमय नही वरसता।

२. एक मेघ असमय बरसता है किन्तु समय पर नही बरसता।

३. एक मेघ समय पर भी बरसता है और असमय भी बरसता है।

३ एक मेघ गाजता है और उसमें बिजलियाँ भी चमकती हैं।

४. एक मेघ गाजता भी नही है और उसमे बिजलिया भी चमकती नही है।

ख—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुप प्रतिज्ञा करता है किन्तु अपनी बड़ाई नही हांकता।

२, एक पुरुप अपनी बडाई हाकता है किन्तु प्रतिज्ञा नही करता है।

३. एक पुरुप प्रतिज्ञा भी करता है और अपनी बड़ाई भी हांकता है।

४. एक पुरुप प्रतिज्ञा भी नही करता है और अपनी बडाई भी नही हाकता है।

३क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक मेघ वर्षता है किन्तु उसमे बिजलियां नही चमकती है।

२. एक मेघ मे बिजलियाँ चमकती हैं किन्तु वर्षता नही है।

३. एक मेघ वर्षता भी है और उसमे बिजलिया भी

भी नही बरसता ।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष पात्र को दान देता है किन्तु अपात्र को नही।

२. एक पुरुष अपात्र को दान देता है किन्तु पात्र को नही ।

३. एक पुरुष पात्र को भी दान देता है और अपात्र को भी ।

४ एक पुरुष पात्र को भी दान नही देता और अपात्र को भी नही देता ।

६क—मेघ चार प्रकार के हैं । यथा—

१ एक मेघ धान्य के अंकुर उत्पन्न करता है किन्तु धान्य को पूर्ण नही पकाता ।

२. एक मेघ धान्य को पूर्ण पकाता है किन्तु धान्य के अकुर उत्पन्न नही करता ।

३. एक मेघ धान्य के अंकुर भी उत्पन्न करता है और धान्य को पूर्ण भी पकाता है ।

४. एक मेघ धान्य के अकुर भी उत्पन्न नही करता है और धान्य को पूर्ण भी नही पकाता है ।

ख—इसी प्रकार माता-पिता भी चार प्रकार के हैं।

४ एक मेघ समय पर भी नही बरसता और अस-मय भी नही बरसता ।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं । यथा—

१ एक पुरुष समय पर दानादि सत्कार्य करता है, किन्तु असमय नही करता ।

२. एक पुरुष असमय दानादि सत्कार्य करता है किन्तु समय पर नही करता ।

३. एक पुरुष समय पर भी दानादि सत्कार्य करता है और असमय भी ।

४. एक पुरुष समय पर भी दानादि सत्कार्य नहीं करता और असमय भी नही करता ।

३क—मेघ चार प्रकार के हैं । यथा—

१. एक मेघ क्षेत्र मे बरसता है किन्तु अक्षेत्र मे नही बरसता ।

२. एक मेघ अक्षेत्र में बरसता है किन्तु क्षेत्र मे नही बरसता ।

३. एक मेघ क्षेत्र में भी बरसता है और अक्षेत्र में भी बरसता है ।

४. एक मेघ क्षेत्र में भी नहीं बरसता और अक्षेत्र में

देशों का नही ।

२. एक राजा सब देशो का स्वामी है किन्तु एक देश का नही ।

३. एक राजा एक देश का अधिपति भी है और सब देशो का अधिपति भी है ।

४. एक राजा न एक देश का अधिपति है और न सब देशों का अधिपति है ।[1]

३४७ १—मेघ चार प्रकार के है । यथा—

१. पुष्कलावर्त, २. प्रद्युम्न,

३. जीमूत और ४. जिम्ह

१. पुष्कलावर्त महामेघ की एक वर्षा से पृथ्वी दस हजार वर्ष तक गीली रहती है ।

२. प्रद्युम्न महामेघ की एक वर्षा से पृथ्वी एक हजार वर्ष तक गीली रहती है ।

३. जीमूत महामेघ की एक वर्षा से पृथ्वी दस वर्ष तक गीली रहती है ।

४. जिम्ह महामेघ की अनेक वर्षाएँ भी पृथ्वी को एक वर्ष तक गीली नही रख पाती ।

---

१. जिस राजा का राज्य छीन लिया गया है ऐसा राजा ।

यथा—१. एक माता-पिता पुत्र को जन्म देते हैं किन्तु उसका पालन नही करते ।

२. एक माता-पिता पुत्र का पालन करते हैं किन्तु पुत्र को जन्म नही देते है ।

३. एक माता-पिता पुत्र को जन्म भी देते हैं और उसका पालन भी करते है ।

४. एक माता-पिता पुत्र को जन्म भी नही देते हैं और उसका पालन भी नही करते हैं ।

७क—मेघ चार प्रकार के हैं । यथा—

१. एक मेघ एक देश मे बरसता है किन्तु सर्वत्र नही बरसता है ।

२. एक मेघ सर्वत्र बरसता है किन्तु एक देश मे नही बरसता ।

३ एक मेघ एक देश मे भी बरसता है और सर्वत्र भी बरसता है ।

४. एक मेघ न एक देश मे बरसता है और न सर्वत्र बरसता है ।

ख—इसी प्रकार राजा भी चार प्रकार के हैं । यथा—

१. एक राजा एक देश का अधिपति है किन्तु सब

और पर-सिद्धान्त का ज्ञाता होता है और श्रमणाचार का पालक भी होता है।

४. राजा के करडिये समान आचार्य जिनागमो के मर्मज्ञ एव आचार्य के समस्त गुण युक्त होते हैं।

३४६ १क—वृक्ष चार प्रकार के है। यथा—

१. एक वृक्ष शाल (महान्) है और शाल के (छायादि) गुण युक्त है।

२. एक वृक्ष शाल (महान्) है किन्तु गुणो मे एरण्ड समान है अर्थात् छायादि रहित।

३. एक वृक्ष एरण्ड समान (अत्यल्प विस्तार वाला) है किन्तु गुणो से शाल (महावृक्ष) के समान है।

४. एक वृक्ष एरण्ड है और गुणो से भी एरण्ड जैसा ही है।

ख—इसी प्रकार आचार्य चार प्रकार के है। यथा—

१. एक आचार्य शाल समान महान् (उत्तम जाति कुल-सद्‌गुरु वाले) हैं और ज्ञानक्रियादि महान् गुणयुक्त है।

२. एक आचार्य महान् है किन्तु ज्ञान-क्रियादि गुणहीन है।

३४८ १क—करंडक (करडिया) चार प्रकार के हैं। यथा—

१. श्वपाक (भगियो) का करडक[1]।

२. वेश्याओ का करडक[2]।

३. समृद्ध गृहस्थ का करडक।[3]

४. राजा का करडक।[4]

ख—इसी प्रकार आचार्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१. श्वपाककरंडक समान आचार्य केवल लोक रजक ग्रन्थो का ज्ञाता व्याख्याता होता है किन्तु श्रमणाचार का पालक नही होता।

२. वेश्याकरंडक समान आचार्य जिनागमो का सामान्य ज्ञाता तो होता है किन्तु लोकरंजक ग्रन्थों का व्याख्यान करके अधिक से अधिक जनता को अपनी ओर आकर्पित करता है।

३. गाथापति के करंडक समान आचार्य स्वसिद्धान्त

---

१. चाण्डाल का करंडिया-मल या कचरे से भरा रहता है।

२. वेश्या का करंडिया-समान्य स्वर्णाभूषणों से भरा रहता है।

३. गृहस्वामी का करंडिया-मणिरत्नजटित स्वर्णाभूषणों से भरा रहता है।

४. राजा का करंडिया-अमूल्य रत्नों से भरा रहता है।

३. एक आचार्य एरण्ड परिवार समान कनिष्ठ शिष्य परिवार युक्त है किन्तु स्वय शाल वृक्ष समान महान् उत्तम गुण युक्त है।

४. एक आचार्य एरण्ड समान कनिष्ठ (सामान्य जात्यादियुक्त) है और एरण्ड परिवार समान कनिष्ठ शिष्य परिवार युक्त है।

गाथार्थ—१. महावृक्षो के मध्य मे जिस प्रकार वृक्ष राज शाल सुशोभित होता है उसी प्रकार श्रेष्ठ शिष्यो के मध्य मे उत्तम आचार्य सुशोभिन होते है।

२. एरण्ड वृक्षो के मध्य मे जिस प्रकार वृक्षराज शाल दिखाई देता है। उसी प्रकार कनिष्ठ शिष्यो के मध्य में उत्तम आचार्य मालुम पडते है।

३. महावृक्षो के मध्य मे जिस प्रकार एरण्ड दिखाई देता है उसी प्रकार श्रेष्ठ शिष्यो के मध्य मे कनिष्ठ आचार्य दिखाई देते हैं।

४. एरण्ड वृक्षों के मध्य मे जिस प्रकार एक एरण्ड प्रतीत होता है उसी प्रकार कनिष्ठ शिष्यो के मध्य मे कनिष्ठ आचार्य प्रतीत होते है।

३क—मत्स्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक मत्स्य नदी के प्रवाह के अनुसार चलता है।

३. एक आचार्य एरण्ड समान (जाति-कुल-गुरु आदि से सामान्य) है किन्तु ज्ञानक्रियादि महान् गुणयुक्त है।

४. एक आचार्य एरण्ड समान है और ज्ञान-क्रियादि गुणहीन है।

२क—वृक्ष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक वृक्ष शाल (महान्) है और शालवृक्ष समान महान् वृक्षों से परिवृत है।

२. एक वृक्ष शाल समान महान् है किन्तु एरण्ड समान तुच्छ वृक्षो से परिवृत है।

३. एक वृक्ष एरण्ड समान तुच्छ है किन्तु शाल समान महान् वृक्षो से परिवृत है।

४. एक वृक्ष एरण्ड समान तुच्छ है और एरण्ड समान तुच्छ वृक्षो से परिवृत है।

ख—इसी प्रकार आचार्य भी चार प्रकार हैं। यथा—

१. एक आचार्य शाल वृक्ष समान (उत्तम जात्यादि) महान् गुणयुक्त है और शाल परिवार समान श्रेष्ठ शिष्य परिवार युक्त है।

२. एक आचार्य शाल वृक्ष समान महान् उत्तम गुण युक्त है किन्तु एरण्ड परिवार समान कनिष्ठ शिष्य परिवार युक्त है।

३. एक पुरुष काष्ठ के गोले के समान कुछ अधिक कठोर हृदय होता है।

४. एक पुरुष मिट्टी के गोले के समान कुछ और अधिक कठोर हृदय होता है।

५क—गोले चार प्रकार के होते है। यथा—

१. लोहे का गोला, २. जस्ते का गोला,

३ तावे का गोला और ४. शीशे का गोला।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१. लोहे के गोले के समान एक पुरुष के कर्म भारी होते है।

२. जस्ते के गोले के समान एक पुरुष के कर्म कुछ अधिक भारी होते है।

३. तावे के गोले के समान एक पुरुष के कर्म और अधिक भारी होते हैं।

४. सीसे के गोले के समान एक पुरुष के कर्म अत्यधिक भारी होते है।

६क—गोले चार प्रकार के होते है। यथा—

१. चादी का गोला, २. सोने का गोला,

३. रत्नो का गोला और ४ हीरो का गोला।

२. एक मत्स्य नदी के प्रवाह के सन्मुख चलता है।

३. एक मत्स्य नदी के प्रवाह के किनारे चलता है।

४. एक मत्स्य नदी के प्रवाह के मध्य मे चलता है।

ख—इसी प्रकार भिक्षु (श्रमण) चार प्रकार के हैं।

यथा—१. एक भिक्षु उपाश्रय के समीप गृह से भिक्षा लेना प्रारम्भ करता है।

२. एक भिक्षु किसी अन्य गृह से भिक्षा लेता हुआ उपाश्रय तक पहुँचता है।

३. एक भिक्षु घरो की अन्तिम पक्तियो से भिक्षा लेता हुआ उपाश्रय तक पहुँचता है।

४. एक भिक्षु गाव के मध्य भाग से भिक्षा लेता है।

४क—गोले चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१. मेण का गोला, २. लाख का गोला,

३. काष्ठ का गोला ४. मिट्टी का गोला।

ख—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुप मेण के गोले के समान कोमल हृदय होता है।

२. एक पुरुप लाख के गोले के समान कुछ कठोर हृदय होता है।

शीघ्र छेदन करता है।

२ एक पुरुष करवत की धार के समान वैराग्यमय विचारो से मोहपाश को शनै शनैः काटता है।

३. एक पुरुष उस्तरे की धार के समान वैराग्यमय विचारधारा से मोहपाश का विलम्ब से छेदन करता है।

४. एक पुरुष कदवचीरिका की धार के समान वैराग्यमय विचारो से मोहपाश का अतिविलम्ब से विच्छेद करता हैं।

८क—कट[1] (चटाई) चार प्रकार के है। यथा—

१. घास की चटाई

२ बाँस की सलियो की चटाई

३. चर्म की चटाई और

४. कवल की चटाई

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. घास की चटाई के समान एक पुरुष अल्प राग वाला होता है।

---

१ कट-बिछोने का एक आसन। चटाई की बुनाई ढीली और गाढी होती है उसी प्रकार रागभाव भी अल्पाधिक होता है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ चांदी के गोले के समान एक पुरुष ज्ञानादि श्रेष्ठ गुण युक्त होता है।

२ सोने के गोले के समान एक पुरुष कुछ अधिक श्रेष्ठ ज्ञानादि गुण युक्त होता है।

३. रत्नों के गोले के समान एक पुरुष और अधिक श्रेष्ठ ज्ञानादि गुण युक्त होता है।

४ हीरों के गोले के समान एक पुरुष अत्यधिक श्रेष्ठ युक्त होता है।

७क—पत्ते चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१ तलवार की धार के समान तीक्ष्ण धार वाले पत्ते।

२ करवत की धार के समान तीक्ष्ण दांत वाले पत्ते।

३ उस्तरे की धार के समान तीक्ष्ण धार वाले पत्ते।

४. कदम्बचीरिका (एक प्रकार का शस्त्र) की धार के समान तीक्ष्ण धार वाले पत्ते।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष तलवार की धार के समान तीक्ष्ण (तीव्र) वैराग्यमय विचार धारा से मोहपाश का

३—क्षुद्र प्राणी चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१ दो इन्द्रियो वाले २ तीन इन्द्रियो वाले

३ चार इन्द्रियो वाले और

४ सम्मूर्छिम[1] पचेन्द्रिय तिर्यंच।

३५१ १क—पक्षी चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पक्षी घोसले से वाहर निकलता है किन्तु वाहर फिरने व उडने मे समर्थ नही है।

२. एक पक्षी फिरने मे समर्थ है किन्तु घोसले से वाहर नही निकलता है।

३. एक पक्षी घोसले से वाहर भी निकलता है और फिरने मे भी समर्थ है।

४. एक पक्षी न घोसले से बाहर निकलता है और न फिरने मे समर्थ होता है।

ख—इसी प्रकार भिक्षुक (श्रमण) भी चार प्रकार के है। यथा—

१ एक श्रमण भिक्षार्थ उपाश्रय से नाहर जाता है किन्तु फिरता नही है।

२ एक श्रमण फिरने मे समर्थ है किन्तु भिक्षा के

---

१ बिना गर्भ के पैदा होने वाले।

२ बांस की चटाई के समान एक पुरुष विशेष राग भाव वाला होता है।

३. चमड़े की चटाई के समान एक पुरुष विशेषतर राग भाव वाला होता है।

४. कंबल की चटाई के समान एक पुरुष विशेषतम राग भाव वाला होता है।

३५०—१. चतुष्पद चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक खुर वाले[1] २. दो खुर वाले[2]

३. कठोर चर्म मय गोल पैर वाले[3]

४ तीक्ष्ण नखयुक्त पैर वाले।[4]

२—पक्षी चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१. चमड़े की पांखों वाले

२. रुंए वाली पांखों वाले।

३ सिमटी हुई पांखों वाले[5]

४. फैली हुई पांखों वाले।

---

१ गधे, घोड़े आदि। २. गाय, भैंस आदि।

३ ऊंट, हाथी आदि। ४. कुत्ता, बिल्ली आदि।

५ समुद्गक पक्षी और वितत पक्षी अढ़ाई द्वीप के बाहर ही होते हैं।

३. एक पुरुष के कषाय अल्प है किन्तु उसका शरीर स्थूल है।

४ एक पुरुष के कषाय अल्प है और शरीर भी कृश है।

२क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष वुध (सत्कर्म करने वाला) है और वुध विवेकी है।

२. एक पुरुष वुध हैं किन्तु अबुध (विवेक रहित) है।

३. एक पुरुष अवुध है किन्तु बुध (सत्कर्म करने वाला) है।

४. एक पुरुष अवुध है (विवेक रहित है) और अवुध है (सत्कर्म करने वाला भी नही है)

ख—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१. एक पुरुष बुध (शास्त्रज्ञ) है और बुध हृदय है (कार्यकुशल है)

२ एक पुरुष वुध (शास्त्रज्ञ) है किन्तु अबुध हृदय है (कार्यकुशल नही है)

३. एक पुरुष अवुध हृदय है (कार्यकुशल नही है) किन्तु वुध है (शास्त्रज्ञ है)

लिए नही जाता है।

३ एक श्रमण भिक्षार्थ जाता है और फिरता भी है।

४ एक श्रमण भिक्षार्थ जाता भी नहीं है और फिरता भी नही है।

५२ १क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष पहले (पूर्वावस्था मे) भी कृश है और पीछे (वृद्धावस्था मे) भी कृश रहता है।

२ एक पुरुष पहले कृश है किन्तु पीछे स्थूल हो जाता है।

३ एक पुरुष पहले स्थूल है किन्तु पीछे कृश हो जाता है।

४. एक पुरुष पहले भी स्थूल होता है और पीछे भी स्थूल ही रहता है

ख—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा

१. एक पुरुष का शरीर कृश है और उसके (क्रोधादि) कषाय भी कृश (अल्प) है।

२. एक पुरुष का शरीर कृश है किन्तु उसके कषाय अकृश (अधिक) है।

ख—सभोग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक देवता देवी के साथ संभोग करता है।

२. एक देवता असुरी के साथ सभोग करता है।

३. एक असुर देवी के साथ सभोग करता है।

४ एक असुर असुरी के साथ संभोग करता है।

ग—सभोग चार प्रकार का है। यथा

१. एक देव देवी के साथ सभोग करता है।

२. एक देव राक्षसी के साथ संभोग करता है।

३. एक राक्षस देवी के साथ सभोग करता है।

४. एक राक्षस राक्षसी के साथ सभोग करता है।

घ—संभोग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक देव देवी के साथ सभोग करता है।

२. एक देव मानुषी के साथ सभोग करता है।

३. एक मनुष्य देवी के साथ सभोग करता है।

३ एक मनुष्य मानुपी के साथ संभोग करता हैं।

ङ—सभोग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक असुर असुरी के साथ सभोग करता है।

२. एक असुर राक्षसी के साथ संभोग करता है।

३ एक राक्षस असुरी के साथ सभोग करता है।

४ एक पुरुष अबुध है (शास्त्रज्ञ नही है) और अबुध है (कार्यकुशल भी नही है)

३—पुरुष चार प्रकार के है । यथा—

१. एक पुरुष अपने पर अनुकम्पा करने वाला है किन्तु दूसरे पर अनुकम्पा करने वाला नही है ।[1]

२. एक पुरुष अपने पर अनुकम्पा नही करता है किन्तु दूसरे पर अनुकम्पा करता है ।[2]

३. एक पुरुष अपने पर भी अनुकम्पा करता है और दूसरे पर भी अनुकम्पा करता है ।[3]

४. एक पुरुष अपने पर भी अनुकम्पा नही करता है और दूसरे पर भी अनुकम्पा नही करता है ।[4]

३५३ १क—सभोग (मैथुन) चार प्रकार के हैं । यथा—

१. देवताओ का[5] २ असुरो का

३. राक्षसो का और ४ मनुष्यो का ।

---

१ प्रत्येक बुध प्राणीमात्र पर अनुकम्पा करने वाले हैं किन्तु दूसरे मुनियो की सेवा नहीं करते है और उपदेश भी नहीं देते हैं इस अपेक्षा से यह कथन है । २. तीर्थंकर

३ स्थविरकल्पी ४. कालशौकरिक आदि ।

५ ज्योतिषी देवो का और वैमानिक देवो का ।

३. आहार मे आसक्ति रखते हुए तप करने से

४. निमित्त ज्ञान द्वारा आजीविकोपार्जन करने से

ग—अभियोगायु का बध चार कारणो से होता है। यथा-

१. अपने तप जप की महिमा अपने-मुह करने से।

२. दूसरो की निंदा करने से।

३. ज्वरादि के उपशमन हेतु अभिमन्त्रित राख देने से।

४ अनिष्ट की शान्ति के लिये मन्त्रोपचार करते रहने से।

घ—समोहायु[१] बाँधने के चार कारण है। यथा—

१. उन्मार्ग का उपदेश देने से,

२. सन्मार्ग मे अन्तराय देने से।

३. काम-भोगो की तीव्र अभिलाषा से।

४. अतिलोभ करके नियाणा करने से।

ङ—देव किल्विष आयु बाँधने के चार कारण हैं। यथा-

१. अरिहतो की निंदा करने से।

२. अरिहत कथित धर्म की निंदा करने से,

३. आचार्य-उपाध्याय की निंदा करने से।

---

१ मूढ़ात्मा देव का आयु।

४. एक राक्षस राक्षसी के साथ सभोग करता है।

च—सभोग चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक असुर असुरी के साथ सभोग करता है।

२. एक असुर मानुषी के साथ सभोग करता है।

३. एक मनुष्य असुरी के साथ सभोग करता है।

४. एक मनुष्य मनुष्यणी के साथ सभोग करता है।

छ—सभोग चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक राक्षस राक्षसी के साथ संभोग करता है।

२. एक राक्षस मनुष्यणी के साथ सभोग करता है।

३ एक मनुष्य राक्षसी के साथ सभोग करता है।

४ एक मनुष्य मनुष्यणी के मथभोसग करता है।

३५४ १क—अपध्वश (चारित्र के फल का नाश) चार प्रकार का है। यथा

१ आसुरी भावनाजन्य-आसुर भाव,

२ अभियोग भावनाजन्य-अभियोग भाव,

३ समोह भावनाजन्य-समोह भाव,

४ किल्विष भावना जन्य-किल्विष भाव

ख—असुरायु का वन्ध चार कारणो से होता है। यथा—

१ क्रोधी स्वभाव से २ अतिकलह करने से।

२. किसी को अन्यत्र ले जाकर दीक्षा दी जाय।

३. किसी को ऋण मुक्त करके दीक्षा दी जाय,

४. किसी को भोजन आदि का लालच दिखाकर दीक्षा दी जाय।

ड—प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१. नटखादिता–नट की तरह वैराग्य रहित धर्म कथा करके आहारादि प्राप्त करना।

२. सुभटखादिता–सुभट की तरह वल दिखाकर आहारादि प्राप्त करना।

३–सिंहखादिता–सिंह की तरह दूसरे की अवज्ञा करके आहारादि प्राप्त करना।

४. शृगालखादिता–शृगाल की तरह दीनता प्रदर्शित कर आहारादि प्राप्त करना।

२क—कृषि चार प्रकार की है। यथा—

१. एक कृषि मे धान्य एक वार बोया जाता है।

२ एक कृषि मे धान्य आदि दो तीन वार बोया जाता है।[1]

---

१ एक वार पोध लगाकर रोपना, या एक बार बोये हुए को उखाड़ कर रोपना, इसे "चोवना" कहते हैं।

४. चतुर्विध संघ की निन्दा करने से ।

३५५ १क—प्रव्रज्या चार प्रकार की है । यथा—

१ इह लोक के सुख के लिये दीक्षा लेना ।

२. परलोक के सुख के लिये दीक्षा लेना ।

३ इहलोक और परलोक के लिये दीक्षा लेना ।

४. किसी प्रकार की कामना न रखते हुए दीक्षा लेना ।

ख—प्रव्रज्या चार प्रकार की है । यथा—

१ शिष्यादि की कामना से दीक्षा लेना ।

२. पूर्व दीक्षित स्वजनो के मोह से दीक्षा लेना ।

३ उक्त दोनो कारणो से दीक्षा लेना ।

४. निष्काम भाव से दीक्षा लेना ।

ग—प्रव्रज्या चार प्रकार की है । यथा—

१. सद्‌गुरुओ की सेवा के लिए दीक्षा लेना ।

२. किसी के कहने से दीक्षा लेना ।

३. "तू दीक्षा लेगा तो मैं भी लूंगा" इस प्रकार वचनबद्ध होकर दीक्षा लेना ।

४ किसी वियोग से व्यथित होकर दीक्षा लेना ।

घ—प्रव्रज्या चार प्रकार की है । यथा—

१. किसी को उत्पीडित करके दीक्षा दी जाय,

४. खेत मे से लाकर खलिहान मे रखे हुए धान्य जैसी प्रचुर अतिचार वाली प्रव्रज्या।

३५६ १क—सज्ञा चार प्रकार की है। यथा—

१ आहार संज्ञा २. भय सज्ञा

३. मैथुन सज्ञा और ४. परिग्रह सज्ञा।

ख—चार कारणो से आहार सज्ञा होती है। यथा—

१. पेट खाली होने से।

२ क्षुधावेदनीय कर्म के उदय से।

३. खाद्य पदार्थों की चर्चा सुनने से।

४. निरन्तर भोजन की इच्छा करने से।

ग—चार कारणो से भय सज्ञा होती है। यथा—

१ अल्प शक्ति (कमजोर होने से।

२. भयवेदनीय कर्म के उदय से।

३. भयावनी कहानियाँ सुनने से।

४ भयानक प्रसगो के स्मरण से।

घ—चार कारणो से मैथुन सज्ञा होती है। यथा—

१ रक्त और मास के उपचय से।

२. मोहनीय कर्म के उदय से।

३. काम कथा सुनने से।

३. एक कृषि मे एक वार निनाण (घास आदि उखाड फेकना) की जाती है।

४ एक कृषि मे वार-वार निनाण की जाती है।

ख—इसी प्रकार प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१. एक प्रव्रज्या मे एक वार सामायिक चारित्र धारण किया जाता है।

२ एक प्रव्रज्या मे वार वार सामायिक चारित्र धारण किया जाता है।

३. एक प्रव्रज्या मे एक वार अतिचारो की आलोयणा की जाती है।

४. एक प्रव्रज्या मे वार-वार अतिचारो की आलोयणा की जाती है।

ग—प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१. खलिहान मे शुद्ध की हुई धान्यराशि जैसी अतिचार रहित प्रव्रज्या।

२ खलिहान मे उफणे हुए धान्य जैसी अल्प अतिचार वाली प्रव्रज्या।

३. गायटा किये हुए धान्य जैसी अनेक अतिचार वाली प्रव्रज्या।

१. एक पुरुष बाह्य चेष्टाओ से तुच्छ है और तुच्छ हृदय है।

२. एक पुरुष बाह्य चेष्टाओ से तो तुच्छ है किंतु गम्भीर हृदय है।

३ एक पुरुप बाह्य चेष्टाओ से तो गम्भीर प्रतीत होता है किंतु तुच्छ हृदय है।

४ एक पुरुप बाह्य चेष्टाओ से भी गम्भीर प्रतीत होता है और गम्भीर हृदय भी है।

२क—पानी चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पानी छिछला है और छिछला जैसा ही दीखता है।

२ एक पानी छिछला है किन्तु गहरा दीखता है।

३. एक पानी गहरा है किन्तु छिछला जैसा प्रतीत होता है।

४. एक पानी गहरा है और गहरे जैसा ही प्रतीत होता है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१ एक पुरुष तुच्छ प्रकृति है और वैसा ही दिखता भी है।

४. भुक्त भोगो के स्मरण से ।

ङ—चार कारणो से परिग्रह संज्ञा होती है । यथा—

१ परिग्रह (सग्रह) होने से ।

२ लोभ वेदनीय कर्म के उदय ने ।

३. हिरण्य सुवर्ण आदि के देखने से ।

४. धन कचन के स्मरण से ।

३५७ १क—काम (विपय-वासना) चार प्रकार के है । यथा—

१ शृ गार, २ करुण,

३ बीभत्स, ३. रौद्र,

ख—१. देवताओ की काम वासना 'शृ गार' प्रधान है ।

२. मनुष्यो की काम वामना 'करुण' है ।

३ तिर्यचो की काम वासना 'बीभत्स' है ।

४. नैरयिको की काम वासना 'रौद्र' है ।

३५८ १क—पानी चार प्रकार के हैं । यथा—

१. एक पानी थोड़ा गहरा है किन्तु स्वच्छ है ।

२. एक पानी थोडा गहरा है किन्तु मलिन है ।

३. एक पानी वहुत गहरा है किन्तु स्वच्छ है ।

४. एक पानी वहुत गहरा है किन्तु मलिन है ।

ख—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के हैं । यथा—

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं।

पूर्वोक्त उदक सूत्र के समान आगे कहें।

३५९ १क—तैराक चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक तैराक (तिरने वाला) ऐसा होता है जो समुद्र को तिरने का निश्चय करके समुद्र को ही तिरता है।

२ एक तैराक ऐसा होता है जो समुद्र को तिरने का निश्चय करके गोपद (समुद्र की खाडी) ही तिरता है।

३ एक तैराक ऐसा होता है जो गोपद तिरने का निश्चय करके समुद्र को तिरता है।

४. एक तैराक ऐसा होता है जो गोपद तिरने का निश्चय करके गोपद ही तिरता है।[1]

---

१. इस सूत्र का एक वैकल्पिक अर्थ टीकाकार ने इस प्रकार किया है—(१) इसी प्रकार भाव तैराक भवसागर को पार करने वाले पुरुष चार प्रकार के हैं—(१) एक पुरुष सर्वविरति धारण करने का निश्चय करके सर्वविरति ही धारण करता है। (२) एक पुरुष सर्वविरक्ति धारण करने का निश्चय करके देश विरक्ति धारण करता है। (३) एक पुरुष देशविरक्ति धारण

२ एक पुरुष तुच्छ प्रकृति है किन्तु बाह्य व्यवहार से गम्भीर जैसा प्रतीत होता है।

३ एक पुरुष गम्भीर प्रकृति है किन्तु बाह्य व्यवहार से तुच्छ प्रतीत होता है।

४. एक पुरुष गम्भीर प्रकृति है और बाह्य व्यवहार मे भी गम्भीर ही प्रतीत होता है।

३क—उदधि (समुद्र) चार प्रकार के हैं। यथा—

१ समुद्र का एक देश छिछरा (थोडा गहरा) है और थोडे गहरे (छिछरा) जैसा दिखाई देता है।[1]

२. समुद्र का एक भाग छिछरा है किन्तु बहुत गहरे जैसा प्रतीत होता है।[2]

३ समुद्र का एक भाग बहुत गहरा है किन्तु छिछरे जैसा प्रतीत होता है।[3]

४ समुद्र का एक भाग बहुत गहरा है और गहरे जैसा ही प्रतीत होता है।

---

१. मनुष्य क्षेत्र के बाहर के समुद्रो मे ज्वार भाटा नहीं आता है। अतः छिछरा ही प्रतीत होता है।

२. ज्वार भाटा आने से गहरा हो जाता है।

३. ज्वार भाटा चले जाने से छिछरे जैसा प्रतीत होता है।

३६० १क—कुम्भ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक कुम्भ पूर्ण (टूटा-फूटा नही है) और पूर्ण (मधु से भरा हुआ है) है।

२. एक कुम्भ पूर्ण है, किन्तु खाली है।

३. एक कुम्भ पूर्ण (मधु से भरा हुआ है) है किन्तु अपूर्ण (टूटा-फूटा) है।

४ एक कुम्भ अपूर्ण है (टूटा फूटा है) और अपूर्ण है (खाली है)

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष जात्यादि गुण से पूर्ण है और ज्ञानादि गुण से भी पूर्ण है।

२. एक पुरुष जात्यादि गुण से पूर्ण है किन्तु ज्ञानादि गुण से रहित।

३. एक पुरुष ज्ञानादि गुण से सहित है किन्तु जात्यादि गुण से पूर्ण है।

---

३. एक पुरुष गोपद समान सामान्य कार्य करके पुनः समुद्र समान महान् कार्य नही कर पाता।

४. एक पुरुष गोपद समान सामान्य कार्य करके पुनः अन्य सामान्य कार्य भी नहीं कर पाता।

ख—तैराक चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक तैराक एक बार समुद्र को तिरकर पुनः समुद्र को तिरने मे असमर्थ होता है।

२. एक तैराक एक बार समुद्र को तिरके दूसरी बार गोपद को तिरने मे भी असमर्थ होता है।

३. एक तैराक एक बार गोपद (समुद्र की खाड़ी) को तिर करके पुन· समुद्र को पार करने मे असमर्थ होता है।

४. एक तैराक एक बार गोपद को तिर करके पुनः गोपद को पार करने मे भी असमर्थ होता है।[2]

करने का निश्चय करके सर्वविरत्ति धारण करता है। (४) एक पुरुष देश विरक्ति धारण करने का निश्चय करके देश विरक्ति ही धारण करता है।

२. टीकाकार इस सूत्र का एक वैकल्पिक अर्थ प्रस्तुत करते हैं। पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष समुद्र समान महान् कार्य करके पुनः महान कार्य नहीं कर पाता।

२. एक पुरुष समुद्र समान महान कार्य करके पुन. गोपद समान सामान्य कार्य भी नहीं कर पाता।

३. एक पुरुष अपूर्ण है (धनादि से परिपूर्ण नही है) किन्तु समय-समय पर धन का उपयोग करता है अत. पूर्ण (धनी) जैसा ही प्रतीत होता है।

४. एक पुरुष अपूर्ण है (धनादि से परिपूर्ण भी नही है) और अपूर्ण (निर्धन) जैसा ही प्रतीत होता है।

३ क—कुम्भ चार प्रकार के है। यथा—

१. एक कुम्भ पूर्ण है (जल आदि से पूर्ण है) और पूर्ण रूप है (सुन्दर है)।

२. एक कुम्भ पूर्ण है किन्तु अपूर्ण रूप है (सुन्दर) शेष भागे पूर्वोक्त क्रम से कहे।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष पूर्ण है (ज्ञानादि से पूर्ण है) और पूर्ण रूप है (संयत वेषभूषा से युक्त है)

२. एक पुरुष पूर्ण है किन्तु पूर्ण रूप नही है (संयत वेषभूषा से युक्त नही है)

शेष भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहे।

४ क—कुम्भ चार प्रकार के है। यथा—

१. एक कुम्भ पूर्ण (जलादि से) है और (स्वर्णादि मूल्यवान धातु का बना हुआ होने से) प्रिय है।

४. एक पुरुष जात्यादि गुण से भी रहित है और ज्ञानादि गुण से भी रहित हैं।

२क—कुम्भ चार प्रकार के है। यथा—

१ एक कुम्भ पूर्ण है और देखने वाले को पूर्ण जैसा ही दीखता है।

२. एक कुम्भ पूर्ण है किन्तु देखने वाले को अपूर्ण जैसा ही दीखता है।

३. एक कुम्भ अपूर्ण है किन्तु देखने वाले को पूर्ण जैसा ही दीखता है।

४ एक कुम्भ अपूर्ण है और देखने वाले को अपूर्ण जैसा ही दीखता है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष धन आदि से पूर्ण है और उस धन का उदारतापूर्वक उपभोग करता है अतः पूर्ण जैसा ही प्रतीत होता है।

२. एक पुरुष पूर्ण है (धनादि से पूर्ण है) किन्तु उस धन का उपभोग नही करता अत अपूर्ण (धन हीन) जैसा ही प्रतीत होता है।

१. एक पुरुष (धन या श्रुत से) पूर्ण है और धन या श्रुत देता भी है।

२. एक पुरुष पूर्ण है किन्तु देता नही है।

३. एक पुरुष (धन या श्रुत से) अपरिपूर्ण है किन्तु यथाशक्ति या यथाज्ञान देता भी है।

४. एक पुरुष अपूर्ण है और देता भी नही है।

६ क—कुम्भ चार प्रकार के है। यथा—

१. खंडित, २. जोजरा,

३. कच्चा (जिसमे से पानी झरता है।)

४. पक्का (जिसमे से पानी नही झरता है।)

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१. एक पुरुष मूल प्रायश्चित्त योग्य (पुन दीक्षा देने योग्य) होता है।

२. एक पुरुष छेदादि प्रायश्चित्त योग्य होता है।

३. एक पुरुष सूक्ष्म अतिचार युक्त होता है।

४ एक पुरुष निरतिचार, चारित्र युक्त होता है।

७ क—कुंभ चार प्रकार के है, यथा—

१. एक मधु कुम्भ है और उसका ढक्कन भी मधु पूरित है।

२. एक कुम्भ पूर्ण है किन्तु (मृत्तिका आदि तुच्छ द्रव्यो का बना हुआ होने से) अप्रिय है।

३ एक कुम्भ अपूर्ण है किन्तु (स्वर्णादि मूल्यवान धातुओ का बना हुआ होने से) प्रिय है।

४ एक कुम्भ अपूर्ण है और अप्रिय भी है।

ख—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुप (धन या श्रुत आदि से पूर्ण है और उदार हृदय है अत. प्रिय है।

२. एक पुरुप पूर्ण है किन्तु मलिन हृदय होने से अप्रिय है।

शेप भागे पूर्वोक्त क्रम से कहे।

५ क—कुम्भ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक कुम्भ (जल से) पूर्ण है—किन्तु उसमे पानी झरता है।

२. एक कुम्भ (जल से) पूर्ण है—किन्तु उसमे से पानी झरता नही है।

३. एक कुम्भ (जल से) अपूर्ण है किन्तु झरता है।

४. एक कुम्भ अपूर्ण है किन्तु झरता नही है।

ख—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के हैं यथा—

३. जो पापी एव मलिन हृदय है और जिसकी जिह्वा सदा मधुरभाषिणी है। उस पुरुष को मधुपूरित ढक्कन वाले विष कुम्भ की उपमा दी जाती है।

४. जो पापी एवं मलिन हृदय है और जिसकी जिह्वा सदा कटुभाषिणी है उस पुरुष को विषपूरित ढक्कन वाले विष कुम्भ की उपमा दी जाती है।

३६१ १ क—उपसर्ग चार प्रकार के है। यथा—

१. देवकृत, २. मनुष्य कृत,
३. तिर्यंचकृत और ४. आत्मकृत।

ख—देवकृत उपसर्ग चार प्रकार के है। यथा—

१. उपहास करके उपसर्ग करता है।

२. द्वेष करके उपसर्ग करता है।

३. परीक्षा के वहाने उपसर्ग करता है।

४. विविध प्रकार के उपसर्ग करता है।

ग—मनुष्य कृत उपसर्ग चार प्रकार के हैं। यथा—

१-३ पूर्ववत्।

४. मैथुन सेवन की इच्छा से उपसर्ग करता है।

घ—तिर्य च कृत उपसर्ग चार प्रकार के है। यथा—

१. भयभीत होकर उपसर्ग करता है।

२. एक मधु कुम्भ है किन्तु उसका ढक्कन विष पूरित है।

३. एक विष कुम्भ है किन्तु उसका ढक्कन मधु पूरित है।

४. एक विष कुम्भ है और उसका ढक्कन भी विष पूरित है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष सरल हृदय है और मधुरभाषी है।

२. एक पुरुष सरल हृदय है किन्तु कटुभाषी है।

३. एक पुरुष मायावी है किन्तु मधुरभाषी भी नहीं है।

४. एक पुरुष मायावी है किन्तु मधुरभाषी भी है।

गाथार्थ—१. जिस पुरुष का हृदय निष्पाप एव निर्मल हैं और जिसकी जिह्वा भी सदा मधुर भाषिणी है। उस पुरुष को मधु ढक्कन वाले मधु कुम्भ की उपमा दी जाती है।

२ जिस पुरुष का हृदय निष्पाप एवं निर्मल है किन्तु उसकी जिह्वा सदा कटुभाषिणी है तो उस पुरुष को विष पूरित ढक्कन वाले मधु कुम्भ की उपमा दी जाती है।

४. एक कर्म प्रकृति अशुभ है और उसका हेतु भी अशुभ है। अर्थात् पापानुबंधी पाप।

ख—कर्म चार प्रकार के है। यथा—

१. एक कर्म प्रकृति का बंध शुभ रूप मे हुआ और उसका उदय भी शुभ रूप मे हुआ।

२. एक कर्म प्रकृति का बंध शुभ रूप मे हुआ किन्तु संक्रमकरण से उसका उदय अशुभ रूप मे हुआ।

३. एक कर्म प्रकृति का बंध अशुभ रूप मे हुआ किंतु संक्रमकरण से उसका उदय शुभ रूप मे हुआ।

४. एक कर्म प्रकृति का बध अशुभ रूप मे हुआ और उसका उदय भी अशुभ रूप मे हुआ।

२—कर्म चार प्रकार के है। यथा—

१. प्रकृति कर्म, २. स्थिति कर्म,
३. अनुभाव कर्म और ४. प्रदेश कर्म।

३६३ १—सघ चार प्रकार का है। यथा—

१. श्रमण, २. श्रमणिया,
३. श्रावक, और ४. श्राविकायें।

३६४ १—बुद्धि चार प्रकार की है। यथा—

१. उत्पातिया।[1]

---

१ अविलम्ब उत्पन्न होने वाली बुद्धि।

२. द्वेष भाव से उपसर्ग करता है।

३. आहार (ग्रामादि) के लिये उपसर्ग करता है।

४. स्वस्थान की रक्षा के लिये उपसर्ग करता है।

ङ—आत्मकृत उपसर्ग चार प्रकार के हैं। यथा—

१. संघट्टन से-आंख मे पडी हुई रज आदि को हाथ से निकालने पर पीडा होती है।

२. गिर पडने से।

३. अधिक देर तक एक आसन से बैठने पर पीडा होती है।

४. पग सकुचित कर अधिक देर तक बैठने से पीड़ा होती है।

३६२ १ क—कर्म चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक कर्म प्रकृति शुभ है और उसका हेतु भी शुभ है। अर्थात् पुण्यानुबंधी पुण्य।

२. एक कर्म प्रकृति शुभ है किंतु उसका हेतु अशुभ है। अर्थात् पापानुबंधी पुण्य।

३. एक कर्म प्रकृति अशुभ है किन्तु उसका हेतु शुभ है। अर्थात् पुण्यानुबंधी पाप।

३. तालाब के पानी जैसी[1] ४. समुद्र के पानी जैसी,[2]

३६५ १ ससारी जीव चार प्रकार के है। यथा
१. नैरयिक, २ तिर्यंच ३. मनुष्य-और ४. देव।

२ सभी जीव चार प्रकार के है। यथा
१. मनयोगी, २. वचन योगी,
३. काय योगी और ४. अयोगी।

३ सभी जीव चार प्रकार के है। यथा
१. स्त्री वेदी, २. पुरुष वेदी।
३. नपुंसक वेदी और ४. अवेदी।

४ सभी जीव चार प्रकार के है। यथा
१. चक्षुदर्शन वाले, २. अचक्षु दर्शन वाले।
३. अवधि दर्शन वाले, ४. केवल दर्शन वाले।

५ सभी जीव चार प्रकार के है। यथा
१. संयत, २. असंयत।
३. सयतासयत और ४. नोसंयत-नोअसयत।

---

१ सरोवर का पानी खाली नहीं होता है इसी प्रकार चिंतन मनन मे जो कभी थकती नहीं वैसी मति।

२ समुद्र का पानी सदा समान रहता है इसी प्रकार सदा समान रहने वाली मति।

२. वैनयिकी,[1]

३. कार्मिकी,[2] और

४. पारिणामिकी ।[3]

२—मति चार प्रकार की है। यथा—

१. अवग्रहमति[4], २. ईहामति[5],

३. अवायमति[6], और ४. धारणामति[7] ।

३—मति चार प्रकार की है। यथा—

१. घडे के पानी जैसी[8], २. नाले के पानी जैसी,[9]

---

१ विनय से उत्पन्न होने वाली बुद्धि ।

२ निरन्तर कार्य करते रहने से होने वाली बुद्धि ।

३ अनेक अनुभवों से उत्पन्न होने वाली बुद्धि ।

४ वस्तु के सामान्य स्वरूप का ज्ञान कराने वाली मति ।

५ वस्तु के विशेष स्वरूप की जिज्ञासा वाली मति ।

६ वस्तु का यथार्थ स्वरूप जानने वाली मति ।

७ वस्तु के स्वरूप का विस्मरण न हो ऐसी मति ।

८ घड़े का पानी जल्दी खाली हो जाता है इसी प्रकार चिंतन मनन मे अल्प सामर्थ्य वाली मति ।

९ नाले का पानी कुछ देर से खाली हो जाता है इसी प्रकार-चिंतन मनन मे अधिक सामर्थ्य वाली मति ।

रखता है। और वाह्य व्यवहार मे भी शत्रु है।

२क—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१. एक पुरुष द्रव्य (वाह्य व्यवहार) से भी मुक्त है और भाव (आसक्ति) से भी मुक्त है।[1]

२ एक पुरुष द्रव्य (वाह्य व्यवहार) से तो मुक्त है किन्तु भाव (आसक्ति) से मुक्त नही है।[2]

३. एक पुरुष भाव (आसक्ति) से तो मुक्त है किन्तु द्रव्य (वाह्य व्यवहार) से मुक्त नही है।[3]

४. एक पुरुष द्रव्य से भी मुक्त नही है और भाव से भी मुक्त नही है।[4]

ख—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१. एक पुरुष (आसक्ति से) मुक्त है और (संयत वेष का धारक होने से) मुक्त रूप है।[5]

२. एक पुरुष (आसक्ति से तो) मुक्त है किन्तु (सयत वेष का धारक न होने से) मुक्त रूप नही है।[6]

३. एक पुरुष सयत वेष का धारक है अतः मुक्त रूप तो है किन्तु आसक्ति होने से मुक्त नही है।[7]

---

१. सुसाधु, २. रंक, ३. भरत चक्रवर्तीवत्, ४. गृहस्थ, ५. यति, ६. शिवकुमारवत्, ७. छद्मवेषी यति।

६६ १क—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१. एक पुरुष इहलोक का भी मित्र है और परलोक का भी मित्र है।[1]

२. एक पुरुष इहलोक का तो मित्र है किन्तु परलोक का मित्र नही है।[2]

३. एक पुरुष परलोक का तो मित्र है किन्तु इहलोक का मित्र नही है।[3]

४. एक पुरुष इहलोक का भी मित्र नही है और परलोक का भी मित्र नही है।[4]

ख—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष अन्तरंग मित्र है और वाह्य स्नेह भी पूर्ण मित्रता का है।

२. एक पुरुष अन्तरंग मित्र तो है किन्तु वाह्य स्नेह प्रदर्शित नही करता है।

३. एक पुरुष वाह्य स्नेह तो प्रदर्शित करता है किन्तु अन्तरंग मे शत्रुभाव है।[5]

४. एक पुरुष अन्तरंग (हृदय मे) मे भी शत्रु भाव

'दगुरु २. स्वार्थी सम्बन्धी, ३ जिनके प्रतिकूल आचरण । वैराग्य हो. ४. शत्रु ५. कुलटा स्त्री ।

का असंयम करता है। यथा—

१. जिह्वेन्द्रिय के सुख को नष्ट करता है।

२. जिह्वेन्द्रिय सम्बन्धी दुख देता है।

३. स्पर्शेन्द्रिय के सुख को नष्ट करता है।

४. स्पर्शेन्द्रिय सम्बन्धी दुख देता है।

३६९ १क—सम्यग्दृष्टि नैरयिक चार क्रियायें करते है। यथा—

१. आरम्भिकी　　२. पारिग्रहिकी,

३. मायाप्रत्यया, और　　४. अप्रत्याख्यान क्रिया।

ख—विकलेन्द्रिय छोडकर शेष सभी दण्डको के जीव चार क्रियाये करते है। पूर्ववत्।

३७० १क—चार कारणो से पुरुष दूसरे के गुणो को छिपाता है।

यथा—१. क्रोध से,　　२. ईर्ष्या से,

३. कृतघ्न होने से और　　४. दुराग्रही होने से।

ख—चार कारणो से पुरुष दूसरे के गुणो को प्रकट करता है। यथा—

१. प्रशसक स्वभाव वाला व्यक्ति।

२. दूसरे के अनुकूल व्यवहार वाला।

३. स्वकार्य साधक व्यक्ति।

४. प्रत्युपकार करने वाला।

४. एक पुरुष (असक्त होने से) मुक्त भी नही है और संयत वेष भूषा का धारक न होने से मुक्त रूप भी नही है।[1]

३६७ १—(क-ख) पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जीव मरकर चारो गतियो में उत्पन्न होते है और चारो गतियो मे से आकर पचेन्द्रिय तिर्यंचो मे उत्पन्न होते है। यथा—

१ नैरयिको से, २. तिर्यंचो से,
३ मनुष्यो से और ४. देवताओ से।

२क-ख—मनुष्य मरकर चारो गतियो मे उत्पन्न होते है और चारो गतियो मे से आकर मनुष्यों मे उत्पन्न होते है।

३६८ १क—द्वीन्द्रिय जीवो की हिंसा न करने वाला चार प्रकार का सयम करता है यथा—

१. जिह्वेन्द्रिय के सुख को नष्ट नही करता।

२. जिह्वेन्द्रिय सम्बन्धी दुख नही देता।

३. स्पर्शेन्द्रिय के सुख को नष्ट नही करता।

४. स्पर्शेन्द्रिय सम्बन्धी दुख नही देता।

ख—द्वीन्द्रिय जीवो की हिंसा करने वाला चार प्रकार

---

१ गृहस्थ।

ख—चार कारणो से तिर्यंचो मे उत्पन्न होने योग्य कर्म वंधते है। यथा—

१. मन की कुटिलता से।

२. वेष बदलकर ठगने से।

३. झूठ बोलने से, ४. खोटे तोल माप बरतने से।

ग—चार कारणो से मनुष्यो मे उत्पन्न होने योग्य कर्म बँधते है। यथा—

१. सरल स्वभाव से, २. विनम्रता से,

३. अनुकम्पा से, ४. मात्सर्यभाव न रखने से

घ—चार कारणो से देवताओ मे उत्पन्न होने योग्य कर्म। बँधते है। यथा—

१. सराग संयम से, २. श्रावक जीवनचर्या से,

३. अज्ञान तप से[1] और ४. अकामनिर्जरा से[2]।

३७४ १—वाद्य चार प्रकार के है। यथा—

१. तत (वीणा आदि), २. वितत (ढोल आदि),

---

१ विवेक बिना जो तपश्चर्या की जाती है वह अज्ञानतप कहा जाता है।

२ इच्छा के बिना जो कष्ट सहा जाय और उससे जो कर्मक्षय हो उसे अकाम निर्जरा कहते है।

३७१ १क—चार कारणो से नैरयिक शरीर की उत्पत्ति प्रारम्भ होती है। यथा—

१. क्रोध से, २. मान से,

३. माया मे, और ४. लोभ से।

शेष सभी दण्डकवर्ती जीवो के शरीर की उत्पत्ति का प्रारम्भ भी इन्ही चार कारणो से होता है।

ख—चार कारणो से नैरयिको के शरीर की पूर्णता होती है। यथा—

१. क्रोध से यावत् लोभ से।

शेष सभी दण्डकवर्ती जीवो के शरीर की पूर्णता भी इन्ही चार कारणो से होती है।

३७२ १—धर्म के चार द्वार हैं। यथा—

१ क्षमा, २ निर्लोभता,

३ सरलता और ४ मृदुता।

३७३ १क—चार कारणो से नरक मे जाने योग्य कर्म बंधते है। यथा—१. महा आरम्भ (हिंसा) करने से,

२. महापरिग्रह (सग्रह) करने से।

३. पचेन्द्रिय जीवो को मारने से।

४. मास आहार करने मे।

१. केशालंकार, २. वस्त्रालकार,

३. माल्यालकार, और ४. आभरणालकार।

६—अभिनय चार प्रकार का है। यथा—

१. किसी घटना का अभिनय करना।

२. महाभारत का अभिनय करना।

३. राजा मन्त्री आदि का अभिनय करना।

४. मानव जीवन की विभिन्न अवस्थाओ का अभिनय करना।

३७५ १—सनत्कुमार और माहेन्द्रकल्प मे चार वर्ण के विमान है। यथा—

१. नीले, २. रक्त, ३. पीत और ४ श्वेत।

२—महाशुक्र और सहस्रारकल्प मे देवताओ के शरीर चार हाथ के ऊँचे है।

३७६ १ क—पानी के गर्भ चार प्रकार के है।[1] यथा—

१. ओस, २. धुंवर,

३. अतिशीत और ४. अतिगरम।

ख—पानी के गर्भ चार प्रकार के है। यथा—

१. हिमपात।

२. बादल से आकाश का आच्छादित होना।

---

१. यहाँ गर्भ का अर्थ वर्षा का हेतु है।

३. घन (कांस्यताल आदि), और

४. शुषिर (बांसुरी आदि)।

२—नाट्य (नाटक) चार प्रकार के है। यथा—

१. ठहर-ठहर कर नाचना।

२. सगीत के साथ नाचना।

३. सकेतो से भावाभिव्यक्ति करते हुये नाचना।

४. झुककर या लेट कर नाचना।

३—गायन चार प्रकार का है। यथा—

१. नाचते हुये गायन करना।

२. छंद (पद्य) गायन।

३. मंद-मंद स्वर से गायन करना।

४. शनैः शनै. स्वर को तेज करते हुए गायन करना।

४—पुष्प रचना चार प्रकार की है। यथा—

१. सूत के धागे से गूँथकर की जाने वाली पुष्प रचना।

२. चारो ओर पुष्प बीटकर की जाने वाली रचना।

३. पुष्प आरोपित करके की जाने वाली रचना।

४. परस्पर पुष्प नाल मिलाकर की जाने वाली रचना।

५—अलंकार चार प्रकार के हैं। यथा—

उत्पन्न होता है। ओज और शुक्र के समान मिश्रण से गर्भ नपुंसक रूप मे उत्पन्न होता है। स्त्री का स्त्री से सहवास होने पर गर्भ बिंब रूप मे उत्पन्न होता है।

३७८ १ —उत्पाद पूर्व के चार मूल वस्तु है।

३७९ १ —काव्य चार प्रकार के है। यथा—

१. गद्य[1], २. पद्य[2] ३. कथ्य[3] और ४. गेय[4]।

३८० १ क—नैरयिक जीवो के चार समुद्घात है।[5] यथा—

१. वेदना समुद्घात।

२. कषाय समुद्घात।

३. मारणातिक समुद्घात और

४. वैक्रिय समुद्घात।

ख—वायुकायिक जीवो के भी ये चार समुद्घात हैं।

३८१ १ —अर्हन्त अरिष्टनेमि—(नेमिनाथ) के चार सौ चौदह पूर्वधारी श्रमणो की उत्कृष्ट सम्पदा थी। वे जिन न

---

१. छंद रहित, २. छद बद्ध, ३. कथारूप, ४. गाने योग्य।

५. आत्म शक्ति से कर्म दलिको में की जाने वाली एक विशेष प्रक्रिया को समुद्घात कहते हैं।

३. अतिशीत या अतिगरमी होना ।

४. (१) वायु, (२) बद्दल, (३) गाज, (४) विजली और (५) बरसना इन पांचो का सयुक्त रूप से होना ।

गाथार्थ—१. माघ मास मे हिमपात से, २. फाल्गुन मास मे बादलो से, ३. चैत्र मास मे अधिक शीत से और ४. वैशाख मे ऊपर कहे सयुक्त पाँच प्रकार से पानी का गर्भ स्थिर होता है ।[1]

७७ १ —मनुष्यणी (स्त्री) के गर्भ चार प्रकार के हैं। यथा—

१ स्त्री रूप मे, २. पुरुष रूप मे,

३. नपुंसक रूप मे और, ४. विंब रूप मे ।[2]

गाथार्थ—१. अल्प शुक्र और अधिक ओज का मिश्रण होने से गर्भ स्त्री रूप मे उत्पन्न होता है। अल्प ओज और अधिक शुक्र का मिश्रण होने से गर्भ पुरुष रूप मे

---

१. इन लक्षणो के अनुसार जिस दिन पानी का गर्भ स्थिर होता है उससे ६ या ७ माह पश्चात् वर्षा होती है । टीकाकार अन्य ग्रन्थों के कुछ और श्लोक उद्धृत करके उदक गर्भ की स्थिति के हेतु बताते हैं अत टीका देखें ।

२. गर्भ केवल पिंड रूप मे उत्पन्न होता है अतः उसमें किसी प्रकार की आकृति नहीं होती ।

४. घृतोद समुद्र के पानी का स्वाद घी जैसा है।

३८५ १ क—आवर्त चार प्रकार के हैं।[1] यथा—

१. खरावर्त-समुद्र मे चक्र की तरह पानी का घूमना।

२. उन्नतावर्त-पर्वत पर चक्र की तरह घूमकर चढने वाला मार्ग।

३. गूढावर्त-दडी पर रस्सी से की जाने वाली गुंथन।

४. आमिषावर्त-मांस के लिए आकाश मे पक्षियो का घूमना।

ख —कषाय चार प्रकार के है। यथा—

१. खरावर्त समान क्रोध।

२. उन्नतावर्त समान मान।

३. गूढावर्त समान-माया।

४. आमिषावर्त समान लोभ।

ग —१. खरावर्त समान क्रोध करने वाला जीव मरकर नरक मे उत्पन्न होता है।

२. इसी प्रकार उन्नतावर्त समान मान करने वाला जीव।

३. गूढावर्त समान माया करने वाला जीव, और

---

१. किसी भी पदार्थ का गोल घूमना 'आवर्त' कहा जाता है।

होते हुए भी जिनसदृश थे। जिनकी तरह पूर्ण यथार्थ वक्ता थे और सर्व अक्षर संयोगो के पूर्ण ज्ञाता थे।

३८२ —श्रमण भगवान महावीर के चार सौ वादी मुनियों की उत्कृष्ट सपदा थी। वे देव, मनुष्य असुरो की परिषद मे कदापि पराजित होने वाले न थे।

३८३ १ क—नीचे के चार कल्प अर्ध चन्द्राकार हैं। यथा—

१. सौधर्म, २. ईशान,

३. सनत्कुमार और ४. माहेन्द्र।

ख—विचले चार कल्प पूर्ण चन्द्राकार हैं।

१. ब्रह्मलोक, २. लातक,

३. महाशुक्र और ४. सहस्रार।

ग—ऊपर के चार कल्प अर्ध चन्द्राकार हैं। यथा—

१ आनत, २. प्राणत,

३. आरण और ४. अच्युत।

३८४ १ —चार समुद्रो मे से प्रत्येक समुद्र के पानी का स्वाद भिन्न-भिन्न प्रकार का है। यथा—

१. लवण समुद्र के पानी का स्वाद लवण जैसा खारा है।

२. वरुणोद समुद्र के पानी का स्वाद मद्य जैसा है।

३. क्षीरोद समुद्र के पानी का स्वाद दूध जैसा है।

पांचवां स्थान . प्रथम उद्देशक

३८९ क—महाव्रत पाँच कहे गये हैं। यथा—

१. प्राणातिपात से सर्वथा विरत होना—

२-५ यावत् परिग्रह से सर्वथा विरत होना।

ख—अणुव्रत पाँच कहे गये है। यथा—

१. स्थूल प्राणातिपात से विरत होना।

२. स्थूल मृषावाद से विरत होना।

३. स्थूल अदत्तादान से विरत होना।

४. स्व-स्त्री में सन्तुष्ट रहना।

५. इच्छाओ (परिग्रह) की मर्यादा करना।

३९० क—वर्ण पाच कहे गये हैं। यथा—

१. कृष्ण, २. नील, ३. रक्त ४. पीत, ५. शुक्ल।

ख—रस पाँच कहे गये है। यथा—

१. तिक्त यावत्—२-५ मधुर।

४. आमिषावर्त समान लोभ करने वाला जीव मरकर नरक मे उत्पन्न होता है।

३८६ १ क—अनुराधा नक्षत्र के चार तारे हैं।

ख-ग—इसी प्रकार पूर्वाषाढा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चार-चार तारे हैं।

३८७ १ क—चार स्थानो मे संचित पुद्गल पाप कर्म रूप में एकत्र हुए हैं, होते है और भविष्य मे भी होंगे। यथा—

१. नारकीय जीवन में एकत्रित पुद्गल।

२. तिर्यंच जीवन मे एकत्रित पुद्गल।

३. मनुष्य जीवन मे एकत्रित पुद्गल।

४. देव जीवन मे एकत्रित पुद्गल।

ख-च—इसी प्रकार पुद्गलो का उपचय, बंध, उदीरण, वेदन और निर्जरा के एक-एक सूत्र कहे।

३८८ १ क—चार प्रदेश वाले स्कन्ध अनेक हैं।

ख—चार आकाश प्रदेश मे रहे हुए पुद्गल अनन्त हैं।

ग—चार गुण वाले पुद्गल अनन्त हैं।

घ-त्र—चार गुण रूखे पुद्गल अनन्त हैं।

—चतुर्थ स्थानक चतुर्थ उद्देशक समाप्त—

॥ चतुर्थ स्थान समाप्त ॥



"	"	"	शुभ	के लिए होता है
"	"	"	उच्चित	"
"	"	"	कल्याण	"
"	"	"	अनुगामिकता	"

ठ—इन पाँच स्थानो का न जानना और न त्यागना जीवों की दुर्गतिगमन के लिए होता है। यथा—
१. शब्द, यावत् २-५ स्पर्श।

ड—इन पाँच स्थानो का ज्ञान और परित्याग जीवो की सुगतिगमन के लिए होता है।
यथा—१. शब्द यावत् २-५ स्पर्श।

९१ क—पाच कारणो से जीव दुर्गति को प्राप्त होते है।
यथा—१. प्राणातिपात से, यावत् २-५ परिग्रह से।

ख—पाच कारणों से जीव सुगति को प्राप्त होते है।
यथा—१. प्राणातिपात विरमण से, यावत् २-५ परिग्रह विरमण से।

३९२ क—पाच प्रतिमाएं कही गई है। यथा—
१. भद्रा प्रतिमा, २. सुभद्रा प्रतिमा।
३. महाभद्रा प्रतिमा, ४. सर्वतोभद्रप्रतिमा।
५. भद्रोत्तर प्रतिमा।

३९३ क—पाँच स्थावर काय कहे गये है। यथा—

ग—काम गुण पाच कहे गये है। यथा—

१. शब्द, २. रूप, ३. गंध, ४. रस, ५. स्पर्श।

घ—इन पाचो मे जीव आसक्त हो जाते है। यथा—

१. शब्द, यावत् २-५ स्पर्श मे।

(ङ-झ)—इसी प्रकार पूर्वोक्त पाँचो मे जीव राग भाव को प्राप्त होते हैं।

,,	,,	मूर्छा भाव को	,,
,,	,,	गृद्धि भाव को	,,
,,	,,	आकाक्षा भाव को	,,
,,	,,	मरण को	,,

(ञ)—इन पाचो का ज्ञान न होना जीवो के अहित के लिए होता है।

,,	,,	,,	अशुभ	,,
,,	,,	,,	अनुचित	,,
,,	,,	,,	अकल्याण	,,
,,	,,	,,	अनानुगामिता के	,,

यथा—

शब्द, यावत् २-५ स्पर्श।

(ट)—इन पाचो का ज्ञान होना, त्याग होना जीवो के हित के लिए होता है।

ख—किन्तु इन पाँच कारणो से केवलज्ञान-केवलदर्शन चलित-क्षुब्ध नही होता है। यथा—

१. पृथ्वी को छोटी देखकर यावत् २-५ ग्राम नगरादि मे गड़े हुए अज्ञात खजानो को देखकर।

३९५ क—नैरयिको के शरीर पाँच वर्ण वाले और पाँच रस वाले कहे गये हैं। यथा—

१. कृष्ण यावत्, २-५ शुक्ल।

२. तिक्त यावत्, २-५ मधुर।

इसी प्रकार वैमानिक देव पर्यन्त २४ दण्डक के शरीरो के वर्ण और रस कहने चाहिए।

ख—पाँच शरीर कहे गये है, यथा—

१. औदारिक शरीर,

२. वैक्रिय शरीर,

३. आहारक शरीर,

४. तेजस शरीर,

५. कार्मण शरीर।

ग—औदारिक शरीर के पाँच वर्ण और पाँच रस कहे गये हैं। यथा—

१. कृष्ण, यावत् २-५ शुक्ल।

२. तिक्त, यावत् २-५ मधुर।

घ-छ—इसी प्रकार कार्मण शरीर पर्यन्त वर्ण और रस कहने चाहिये। सभी स्थूलदेहधारियो के शरीर पांच वर्ण,

१. इन्द्र स्थावर काय (पृथ्वीकाय)

२. ब्रह्म स्थावर काय (अप्काय)

३. शिल्प स्थावर काय (तेजस्काय)

४. संमति स्थावर काय (वायुकाय)

५. प्राजापत्य स्थावर काय (वनस्पति काय)

ख—पांच स्थावर कायो के ये पांच अधिपति हैं। यथा—

१. पृथ्वीकाय का अधिपति (इन्द्र)

२. अप्काय का अधिपति (ब्रह्म)

३. तेजस्काय का अधिपति (शिल्प)

४. वायुकाय का अधिपति (संमति)

५. वनस्पतिकाय का अधिपति (प्रजापति)

३९४ क—अवधि उपयोग की प्रथम प्रवृत्ति के समय अवधि ज्ञान-दर्शन। पांच कारणो से चलित-क्षुब्ध होते है। यथा—

१. पृथ्वी को छोटी देखकर,

२. पृथ्वी को सूक्ष्म जीवो से व्याप्त देखकर,

३. महान अजगर का शरीर देखकर,

४. महान ऋद्धि वाले देव को अत्यन्त सुखी देखकर,

५. ग्राम नगरादि मे अज्ञात एवं गड़े हुए स्वामीरहित खजानो को देखकर।

यथा—१. क्षमा, २. निर्लोभता,

३. सरलता, ४. मृदुता, ५. लघुता।

घ—भगवान महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए पांच सद्गुण सदा प्रशस्त एवं आचरण योग्य कहे हैं।

यथा—१. सत्य, २. सयम,
३. तप, ४. त्याग, ५.ब्रह्मचर्य।

ड—भगवान महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए पांच अभिग्रह सदा प्रशस्त एव आचरण योग्य कहे है। यथा—

१. उक्षिप्तचारी—'यदि ग्रहस्थ राधने के पात्र मे से जीमने के पात्र मे अपने खाने के लिए आहार ले और उस आहार मे से दे तो लेउं।' ऐसा अभिग्रह करने वाला मुनि।

२. निक्षिप्तचारी—'रांधने के पात्र मे से निकाला हुआ आहार यदि गृहस्थ दे तो लेउँ।' ऐसा अभिग्रह करने वाला मुनि।

३. अंतचारी—भोजन करने के पश्चात् बढा हुआ आहार लेने वाला मुनि।

४. प्रान्तचारी—तुच्छ आहार लेने का अभिग्रह करने वाला मुनि।

५. रूक्षचारी—लूखा आहार लेने का अभिग्रह करने

पांच रस, दो गंध और आठ स्पर्श युक्त हैं।

३९६ क—पांच कारणो से प्रथम और अन्तिम जिन का उपदेश उनके शिष्यो को उन्हे समझने में कठिनाई होती है।

१. दुराख्येय—आयास साध्य व्याख्या युक्त।

२. दुर्विभजन—विभाग करने मे कष्ट होता है।

३. दुर्दर्श—कठिनाई से समझ में आता है।

४. दु सह—परीषह सहन करने मे कठिनाई होती है।

५. दुरनुचर—जिनाज्ञानुसार आचरण करने में कठिनाई होती है।

ख—पांच कारणो से मध्य के २२ जिनका उपदेश उनके शिष्यो को सुगम होता है। यथा—

१. सुआख्येय—व्याख्या सरलतापूर्वक करते हैं।

२. सुविभाज्य—विभाग करने मे किसी प्रकार का कष्ट नही होता।

३. सुदर्श—सरलतापूर्वक समझ लेते है।

४. सुसह—शांतिपूर्वक परीषह सहन करते है।

५. सुचर—प्रसन्नतापूर्वक जिनाज्ञानुसार आचरण करते है।

ग—भगवान महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए पांच सद्गुण सदा प्रशस्त एवं आचरण योग्य कहे हैं

करके आहार की एषणा करने वाला मुनि।

४. दृष्टलाभिक—देखी हुई वस्तु लेने के संकल्प वाला मुनि।

५. पृष्ठलाभिक—(क) आपको आहार (आदि) दूं ?—इस प्रकार पूछकर आहार दे तो लेऊं ऐसी प्रतिज्ञा वाला मुनि।

—अथवा 'आहार निर्दोष है या सदोष ? इस प्रकार पूछ कर आहार लेने वाला मुनि।

ज—भ० महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए पांच अभिग्रह प्रशस्त एव सदा आचरण करने योग्य कहे है। यथा—

१. आचाम्लिक—आयम्बिल करने वाला मुनि।

२. निर्विकृतिक—घी आदि की विकृति को न लेने वाला मुनि।

३. पुरिमार्धक—दिन के पूर्वार्ध तक (दो प्रहर तक) प्रत्याख्यान करने वाला मुनि।

४. परिमितपिण्डपातिक—परिमित आहार लेने वाला मुनि।

५. भिन्न पिण्डपातिक—अखण्ड,नही किन्तु टुकडे-टुकडे किया हुआ आहार लेने वाला मुनि।

वाला मुनि ।

च—भगवान महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिये पाँच अभिग्रह सदा प्रशस्त एव आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१. अज्ञातचारी—अपनी जाति-कुल आदि का परिचय दिये बिना आहार लेने के अभिग्रह वाला मुनि ।

२. अन्य ग्लानचारी—दूसरे रोगी के लिए भिक्षा लाने वाला मुनि ।

३ मौनचारी—मौनव्रत धारी मुनि ।

४. ससृष्टकल्पिक—लेप वाले हाथ से कल्पनीय आहार दे तो लेऊ। ऐसी प्रतिज्ञा वाला मुनि ।

५—तज्जात ससृष्ट कल्पिक—प्रासुक पदार्थ के लेप वाले हाथ से आहार दे तो लेऊं। ऐसे अभिग्र हवाला मुनि।

छ—भगवान महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए पाँच अभिग्रह प्रशस्त एव सदा आचरण के योग्य कहे हैं।

यथा—१. औपनिधिक—अन्य स्थान से लाया हुआ आहार लेने वाला मुनि ।

२. शुद्धैषणिक—निर्दोष आहार की गवेषणा करने वाला मुनि ।

३. संख्यादत्तिक—आज इतनी दत्ति (निर्धारित सख्या के अनुसार) ही आहार लेऊँगा ऐसा अभिग्रह

२. लगडशायी—आँके वाँके पैर व कमर कर सोने वाला मुनि ।

३. आतापक—शीत या ग्रीष्म की आतापना लेने वाला मुनि ।

४. अपावृतक—वस्त्र रहित रहने वाला मुनि ।

५. अकण्डूयक—खाज न खुजाने वाला मुनि ।

३९७ क—पाँच कारणो से श्रमण निर्ग्रन्थ की महानिर्जरा और महापर्यवसान—मुक्ति होती है। यथा—

१. ग्लानि के बिना आचार्य की सेवा करने वाला

२. " उपाध्याय की सेवा करने वाला

३. " स्थविर की सेवा करने वाला

४. " तपस्वी की सेवा करने वाला

५. " ग्लान की सेवा करने वाला

ख—पाँच कारणो से श्रमण निर्ग्रन्थ की महानिर्जरा और महापर्यवसान होता है। यथा—

१. ग्लानि के विना नवदीक्षित की सेवा करने वाला

२. " कुल की सेवा करने वाला

३. " गण की सेवा करने वाला

४. " संघ की सेवा करने वाला

५. " स्वधर्मी की सेवा करने वाला

झ—भ० महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए पाँच अभि-
ग्रह प्रशस्त एव सदा आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१. अरसाहारी, २. विरसाहारी, ३. अंताहारी,
४. प्रान्ताहारी, ५. रुक्षाहारी।

ञ—भ० महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए पाँच अभि-
ग्रह प्रशस्त एव सदा आचरण योग्य कहे है। यथा—

१. अरसजीवी, २, विरसजीवी, ३. अतजीवी,
४. प्रान्तजीवी, ५. रुक्षजीवी।

ट—भ० महावीर ने श्रमण निर्गन्थो के लिए पाँच अभि-
ग्रह प्रशस्त एवं सदा आचरण योग्य कहे है। यथा—

१. स्थानातिपद—कायोत्सर्ग करने वाला मुनि।

२ उत्कटुकासनिक—उकडु आसन बैठने वाला मुनि।

३. प्रतिमास्थायो—'एक रात्रिकी' आदि प्रतिमाओ को धारण करने वाला मुनि।

४. वीरासनिक—वीरासन से बैठने वाला मुनि।

५. नैषधिक—पालथी लगाकर बैठने वाला मुनि।

ठ—भ० महावीर ने श्रमण निर्गन्थो के लिए पाँच अभि-
ग्रह सदा प्रशस्त एव आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१. दण्डायनिक—सीधे पैर कर सोने वाला मुनि।

सर की तलाश मे रहने वाले को।

५. प्रश्न विद्या का बार-बार प्रयोग करने वाले को।

३९९ क—आचार्य और उपाध्याय के गण मे विग्रह (कलह) के पाँच कारण है। यथा—

१. आचार्य या उपाध्याय गण मे रहने वाले श्रमणो को आज्ञा[1] या निषेध[2] सम्यक् प्रकार से न करे।

२. गण मे रहने वाले श्रमण दीक्षा पर्याय के क्रम से सम्यक् प्रकार से वंदना न करे।

३. गण मे काल क्रम से जिसको जिस आगम की वाचना देनी है उसे उस आगम की वाचना न दे।

४. आचार्य या उपाध्याय अपने गण मे ग्लान (रोगी) या शैक्ष्य (नवदीक्षित) की सेवा के लिए सम्यक् व्यवस्था न करे।

५. गण मे रहने वाले श्रमण गुरु की आज्ञा के विना विहार करे।

ख—आचार्य उपाध्याय के गण मे अविग्रह (कलह न होने) के पाँच कारण है। यथा—

---

१ हे मुनि! यह कार्य करो—यह आज्ञा है।

२ हे मुनि! यह कार्य न करो यह निषेध है इसे ही 'धारणा' कहा जाता है।

३६८ क—पाँच कारणा से श्रमण निर्ग्रन्थ साम्भोगिक साधर्मिक को विसभोगी करे तो जिनाज्ञा का अतिक्रमण नही करता है। यथा—

१. अकृत्य करने वाले को।

२. अकृत्य करके आलोचना न करने वाले को।

३. आलोचना करके प्रायश्चित्त न करने वाले को।

४. प्रायश्चित लेकर भी आचरण न करने वाले को।

५. "अरे! ये स्थविर ही बार-बार अकृत्य का सेवन करते हैं तो ये मेरा क्या कर सकेंगे।" ऐसा कहने वाले को।

ख—पाँच कारणो मे श्रमण निर्ग्रन्थ (आचार्य) साम्भोगिक को पाराञ्चिक प्रायश्चित दे तो जिनाज्ञा का अतिक्रमण नही करता है। यथा—

१. स्वकुल मे भेद डालने के लिए कलह करने वाले को।

२. स्वगण मे भेद डालने के लिए कलह करने वाले को।

३. हिंसा प्रेक्षी—साधु आदि को मारने के लिए उनका शोध करने वाले को।

४. छिद्र प्रेक्षी—साधु आदि को मारने के लिए अव-

४. शुभ क्षमा, ५. शुभ निर्लोभता।

४०१ क—पाँच ज्योतिष्क देव कहे गये है। यथा—

१. चन्द्र, २ सूर्य, ३. ग्रह, ४. नक्षत्र, ५. तारा।

ख पाँच प्रकार के देव कहे गये है। यथा

१. भव्य- द्रव्य देव—देवताओ मे उत्पन्न होने योग्य मनुष्य और तिर्यंच।

२. नर देव—चक्रवर्ती।

३. धर्मदेव—साधु।

४. देवाधिदेव—अरिहन्त।

५. भावदेव—देवभव के आयुष्य का अनुभव करने वाले भवनपति आदि ४ प्रकार के देव।

४०२—पाँच प्रकार की परिचारणा (विषय सेवन) कही गई है। यथा—

१. काय-परिचारणा—केवल काया से मैथुन सेवन करना। यह परिचारणा दूसरे देवलोक तक होती है।

२. स्पर्श परिचारणा—केवल स्पर्श होने से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह तीसरे चौथे देवलोक तक होती है।

३. रूप परिचारणा—केवल रूप देखने से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह परिचारणा पाचवें, छठे देवलोक

१. आचार्य या उपाध्याय गण मे रहने वाले श्रमणों को आज्ञा या निषेध सम्यक् प्रकार से करे।

२. गण मे रहने वाले श्रमण दीक्षा पर्याय के क्रम से सम्यक् प्रकार वदना करे।

३. गण मे कालक्रम से जिसको जिस आगम की वाचना देनी है उसे उस आगम की वाचना दे।

४. आचार्य या उपाध्याय अपने गण मे ग्लान या शैक्ष्य (नवदीक्षित) की सेवा के लिए सम्यक् व्यवस्था करे।

५. गण मे रहने वाले श्रमण गुरु की आज्ञा से विहार करें।

४०० क—पांच निषद्यायें (बैठने के ढंग) कही गई है। यथा—

१. उत्कुटिका—उकडु बैठना।

२. गोदोहिका—गाय दुहे उस आसन से बैठना।

३. समपादपुता—पैर और पुत से पृथ्वी का स्पर्श करके बैठना।

४. पर्यंका—पालथी मारकर बैठना।

५. अर्धपर्यंका—अर्ध पद्मासन से बैठना।

ख पांच आर्जव (संवर) के हेतु कहे गये है। यथा—

१. शुभ आर्जव, २. शुभ मार्दव, ३. शुभ लाघव,

२. सौदामी अश्वराज---अश्व सेना का सेनापति।

३. कुंथु हस्तीराज---हस्तिसेना का सेनापति।

४. लोहिताक्षमहिषराज---महिष सेना का सेनापति।

५. किन्नर---रथ सेना का सेनापति।

ख---बलि वैरोचनेन्द्र की पाँच सेनायें है और उनके पांच-पांच सेनापति हैं। यथा---

१. पैदल सेना---यावत् २-५ रथ सेना।

पाँच सेनापति---

१. महद्रुम---पैदल सेना के सेनापति।

२. महासौदाम अश्वराज---अश्वसेना के सेनापति।

३. मालंकार हस्तीराज---हस्तिसेना के सेनापति।

४. महालोहिताक्ष महिषराज---महिष सेना के सेनापति।

५. किंपुरुष---रथसेना के सेनापति।

ग---धरण नागकुमारेन्द्र की पाँच सेनायें हैं और उनके पाँच सेनापति हैं, यथा---

१. पैदल सेना---यावत् २-५ रथ सेना।

पाँच सेनापति---

१. भद्रसेन---पैदल सेना के सेनापति।

२. यशोधर अश्वराज---अश्व सेना के सेनापति।

तक होती है।

४. शब्द परिचारणा—केवल शब्द श्रवण से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह परिचारणा सातवें, आठवें देवलोक तक होती है।

५. मन परिचारणा—केवल मानसिक सकल्प से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह परिचारणा नवमे से बारहवें देवलोक तक होती है।

४०३ क—चमर असुरेन्द्र की पाँच अग्रमहिषियां कही गई हैं।

यथा—१. काली, २. रात्रि,
३. रजनी, ४. विद्युत, ५. मेघा।

ख—बलि वैरोचनेन्द्र की पाँच अग्रमहिषियाँ कही गई हैं।

यथा—१. शुभा, २. निशुभा,
३. रंभा, ४. निरंभा, ५. मदना।

४०४ क—चमर असुरेन्द्र की पाँच सेनायें हैं और उनके पांच सेनापति है। यथा—

१. पैदल सेना, २. अश्व सेना,
३. हस्ति सेना, ४. महिष सेना,
५. रथ सेना।

पाँच सेनापति—

१. द्रुम—पैदल सेना का सेनापति।

दक्षिण दिशा के इन्द्रो के यावत् घोस के सेनापतियों के नाम है।

(ड-न)—भूतानन्द के सेनापतियो के नाम के समान सभी उत्तर दिशा के इन्द्रो के यावत् महाघोस के सेनापतियो से नाम है।

प—शक्रेन्द्र की पाँच सेनाएँ हैं और उनके पांच सेनापति है। यथा—

१. पैदल सेना, २. अश्व सेना, ३. गज सेना,

४. वृषभ सेना, ५. रथ सेना।

१. हरिणगमैषी—पैदल सेना का सेनापति।

२. वायु अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति।

३. एरावण हस्तिराज—हस्ति सेना का सेनापति।

४. दामर्धि वृषभराज—वृषभ सेना का सेनापति।

५. माढर—रथ सेना का सेनापति।

फ—शक्रेन्द्र की पाँच सेनाये हैं, और उनके पाँच सेनापति है। यथा—

१. पैदल सेना यावत् २-४ वृषभ सेना, ५-रथ सेना।

पाँच सेनापति—

१. लघुपराक्रम—पैदल सेना का सेनापति।

२. महावायु अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति।

३. सुदर्शन हस्तिराज—हस्ति सेना के सेनापति ।

४. नीलकंठ महिषराज—महिष सेना के सेनापति ।

५. आनन्द—रथसेना के सेनापति ।

घ—भूतानन्द नागकुमारेन्द्र की पांच सेनाएँ है और पांच सेनापति हैं । यथा—

१. पैदल सेना—यावत् २-५ रथ सेना ।

पांच सेनापति—

१. दक्ष—पैदल सेना का सेनापति ।

२. सुग्रीव अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति ।

३. सुविक्रम हस्तिराज—हस्ति सेना का सेनापति ।

४. श्वेतकण्ठ महिषराज—महिष सेना का सेनापति ।

५. नन्दुत्तर—रथ सेना का सेनापति ।

ङ—वेणुदेव सुपर्णेन्द्र की पांच सेनापति और पांच सेनाएँ । यथा—

१. पैदल सेना यावत् २-५ रथ सेना ।

२ धरण के सेनापतियो के नाम के समान वेणुदेव के सेनापतियो के नाम है ।

३. भूतानन्द के सेनापतियो के नाम के समान वेणुदालिय के सेनापतियो के नाम है ।

(च-ठ)—धरण के सेनापतियो के नाम के समान सभी

५. बल, वीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम प्रतिघात--बल आदि का प्राप्त न होना।

४०७ पांच प्रकार की आजीविका (जीवननिर्वाह के लिए किया जाने वाला कार्य) कही गई है। यथा :—

१. जाति आजीविका—अपनी जाति बताकर आजीविका करना।

२. कुल आजीविका—अपना कुल बताकर आजीविका करना।

३. कर्म आजीविका—कृषि आदि कर्म करके आजीविका करना।

४. शिल्प आजीविका—वस्त्र आदि बुनने का कार्य करके आजीविका करना।

५. लिंग आजीविका—साधु आदि का वेष धारण करके आजीविका करना।

४०८ पांच प्रकार के राजचिन्ह कहे गये हैं। यथा

१. खड्ग, २. छत्र, ३. मुकुट,
४. मोजड़ी, ५. चामर।

४०९ क पांच कारणो से छद्मस्थ जीव (साधु) उदय मे आये हुए परीषहो और उपसर्गों को :—

१. समभाव से सहन करता है।

२. समभाव से क्षमा करता है।

३. पुष्पदन्त हस्तिराज—हस्ति सेना का सेनापति।

४. महादामर्धि वृषभराज—वृषभ सेना का सेनापति।

५. महामाढर—रथ सेना का सेनापति।

शक्रेन्द्र के सेनापतियो के नाम के समान सभी दक्षिण दिशा के इन्द्रो के यावत् आरणकल्प के इन्द्रो के सेनापतियो के नाम है। ईशानेन्द्र के सेनापतियो के समान सभी उत्तर दिशा के इन्द्रो के यावत् अच्युत कल्प के इन्द्रो के सेनापतियो के नाम हैं।

४०५ क—शक्रेन्द्र की आभ्यन्तर परिषदा के देवो की स्थिति पांच पल्योपम की कही गई हैं।

ख—ईशानेन्द्र की आभ्यन्तर परिषदा के देवियो की स्थिति पांच पल्योपम की कही गई है।

४०६—पांच प्रकार के प्रतिघात कहे गये हैं। यथा—

१. गति प्रतिघात—देवादि गतियो का प्राप्त न होना

२. स्थिति प्रतिघात—देवादि की स्थितियो का प्राप्त न होना।

३. बंधन प्रतिघात—प्रशस्त औदारिकादि बंधनो का प्राप्त न होना।

४. भोग प्रतिघात—प्रशस्त भोग-सुख का प्राप्त न होना।

३ इस भव मे वेदने योग्य कर्म मेरे उदय मे आये हैं। इसलिए यह पुरुष १-मुझे आक्रोश वचन बोलता है-यावत् २-११ मेरे पात्र चुरा लेता है।

४ यदि मैं सम्यक् प्रकार से सहन नही करूंगा।
,, ,, क्षमा नही करूंगा।
,, ,, तितिक्षा नही करूँगा।
,, ,, निश्चल नही रहूँगा।
तो मेरे केवल पाप कर्म का बंध होगा।

५ यदि मैं सम्यक् प्रकार से सहन करूंगा।
,, ,, क्षमा करूंगा।
,, ,, तितिक्षा करूंगा।
,, ,, निश्चल रहूँगा।
तो मेरे केवल कर्मो की निर्जरा ही होगी।

ख पाच कारणो से केवली उदय मे आये हुए परीषहो और उपसर्गो को—

१. समभाव से सहन करता है-यावत्
२-४ ,, निश्चल रहता है। यथा—

१ यह विक्षिप्त पुरुष है, इसलिए १. मुझे आक्रोश वचन बोलता है—यावत्-२-११-मेरे पात्र चुरा लेता है।

२ यह दृप्तचित्त (अभिमानी) पुरुष है, इसलिये—

१ मुझे आक्रोश वचन बोलता है-यावत-

३. समभाव से तितिक्षा करता है।

४. समभाव से निश्चल होता है।

५. सममाव से विचलित होता है।

१ कर्मोदय मे यह पुरुप उन्मत्त है इसलिए :—

१. मुझे आक्रोश वचन गाली बोलता है।

२. मुझे हंसता है।

३. मुझे हाथ पकड़कर फेंक देता है।

४. दुर्वचनों से मेरी भर्त्सना करता है।

५. मुझे रस्सी आदि से बाँधता है।

६ मुझे बंदीखाने मे डालता है।

७. मेरे शरीर के अवयवो का छेदन करता है।

८. मेरे सामने उपद्रव करता है।

९. मेरे वस्त्र, पात्र, कंबल या रजोहरण छीन लेता है, या दूर फेंक देता है।

१०. मेरे पात्रो को तोड देता है।

११. मेरे पात्र चुरा लेता है।

२ यह यक्षाविप्ट पुरुष है इसलिए यह—

१. मुझे आक्रोश वचन बोलता है यावत् २-११ मेरे पात्र चुरा लेता है।

ख—पाच प्रकार के हेतु कहे गये है, यथा—

१. हेतु से जानता नही है, यावत् २-५ हेतु से अज्ञान मरण मरता है।

ग—२. पाच प्रकार के हेतु कहे गये है, यथा—

१. हेतु से जानता है, यावत् २-५ हेतु से छद्मस्थ मरणं मरता है।

घ—पाच हेतु कहे गये हैं, यथा—

१. हेतु से जानता है, यावत् २-५ हेतु से छद्मस्थ मरण मरता है।

ङ—पाच अहेतु कहे गये हैं, यथा—

१. अहेतु को नही जानता है, यावत्-२-५ अहेतु रूप छद्मस्थ मरण मरता है।

च—पाच अहेतु कहे गये है, यथा—

१. अहेतु से नही जानता है, यावत्-२-५ अहेतु से छद्मस्थ मरण मरता है।

छ—पाच अहेतु कहे गये है, यथा—

१. अहेतु को जानता है-यावत् २-५ अहेतु रूप केवली मरण मरता है।

ज—पाच अहेतु कहे गये है, यथा—

१. अहेतु से जानता है-यावत् २-५ अहेतु से केवली मरण मरता है।

२-११ मेरे पात्र चुरा लेता है।

३ यह यक्षाविष्ट पुरुष है-इसलिये-

१. मुझे आक्रोश वचन बोलता है-यावत्-

२-११ मेरे पात्र चुरा लेता है।

४ इस भव में वेदने योग्य कर्म मेरे उदय में आये हैं, इसलिए यह पुरुष—

१. मुझे आक्रोश वचन बोलता है-यावत्

२-११-मेरे पात्र चुरा लेता है।

५ मुझे सम्यक् प्रकार से सहन करते हुए, क्षमा करते हुए, तितिक्षा करते हुए या निश्चल रहते हुए देखकर अन्य अनेक छद्मस्थ श्रमण निर्ग्रन्थ उदय में आये हुए परीषहों और उपसर्गों को सम्यक् प्रकार से सहन करेंगे-यावत्-निश्चल रहेंगे।

८१० क—पांच प्रकार के हेतु कहे गये हैं, यथा—

१. अनुमान प्रमाण के अंग धूमादि हेतु को जानता नहीं है,

२. " " देखता नहीं है,

३. " धूमादि हेतु पर श्रद्धा नहीं करता है।

४. " धूमादि हेतु को प्राप्त नहीं करता है।

५. " ज्ञान बिना अज्ञान मरण करता है।

२. पुष्पदन्त अर्हन्त के पाच कल्याणक मूल नक्षत्र मे हुए।

३. शीतल अर्हन्त के पाच कल्याणक पूर्वाषाढा नक्षत्र मे हुए।

४. विमल अर्हन्त के पाच कल्याणक उत्तराभाद्रपद नक्षत्र मे हुए।

५. अनन्त अर्हन्त के पांच कल्याणक रेवति नक्षत्र मे हुए।

६. धर्मनाथ अर्हन्त के पाच कल्याणक पुष्य नक्षत्र मे हुए।

७. शातिनाथ अर्हन्त के पाच कल्याणक भरणी नक्षत्र मे हुए।

८. कुन्थुनाथ अर्हन्त के पाच कल्याणक कृत्तिका नक्षत्र मे हुए।

९. अरनाथ अर्हन्त के पॉच कल्याणक रेवति नक्षत्र मे हुए।

१०. मुनिसुव्रत अर्हन्त के पाच कल्याणक श्रवण नक्षत्र मे हुए।

११. नमि अर्हन्त के पाच कल्याणक अश्विनी नक्षत्र मे हुए।

१२. नेमिनाथ अर्हन्त के पाच कल्याणक चित्रा नक्षत्र मे हुए।

झ—पांच गुण केवली के अनुत्तर (श्रेष्ठ) कहे गये हैं-यथा—

१. अनुत्तर ज्ञान २. अनुत्तर दर्शन, ३. अनुत्तर चारित्र, ४. अनुत्तर तप, ५. अनुत्तर वीर्य।

४११ क—पद्मप्रभ अर्हन्त के पांच कल्याणक चित्रा नक्षत्र में हुये हैं, यथा—

१. चित्रा नक्षत्र मे देवलोक से च्यवकर गर्भ मे उत्पन्न हुए।

२. „ जन्म हुआ,

३. „ प्रव्रजित हुए,

४. „ अनंत, अनुत्तर, निर्व्याघात, [निरावरण] पूर्ण, प्रतिपूर्ण केवल ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ।

५. चित्रा नक्षत्र मे निर्वाण प्राप्त हुए

ख—पुष्पदन्त अर्हन्त के पाच कल्याणक मूल नक्षत्र मे हुए, यथा—

१ मूल नक्षत्र मे देवलोक से च्यवकर गर्भ मे उत्पन्न हुए

२-५ „ जन्म यावत् निर्वाण कल्याणक कहे।

ग-त—तीर्थंकरो के कल्याणक इन गाथाओ से समझें।

१. पद्मप्रभ अर्हन्त के पाच कल्याणक चित्रा नक्षत्र में हुए।

ख—पाँच कारणो से पार करना कल्पता है,

यथा–१. क्रुद्ध राजा आदि या क्रूरजनो के भय से।

२. दुष्काल होने पर।

३. किसी अनार्य द्वारा पीडा पहुँचाये जाने पर।

४. बाढ के प्रवाह मे बहते हुए व्यक्तियो को निकालने के लिये।

५. किसी महान् अनार्य द्वारा पीडित किये जाने पर।

४१३ क—निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो को प्रावृट् ऋतु (प्रथम वर्षा) मे ग्रामानुग्राम विहार करना नही कल्पता है, किन्तु पाच कारणो से कल्पता है।

यथा–१ क्रुद्ध राजा आदि या क्रूर जनो के भय से।

२ दुष्काल होने पर-यावत्-३-५ किसी महान् अनार्य द्वारा पीडा पहुँचाये जाने पर।

ख—वर्षावास रहे हुए निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो को एक गाव से दूसरे गाव जाने के लिए विहार करना नही कल्पता है।

पाँच कारणो से विहार करना कल्पता है, यथा–

१. ज्ञान प्राप्ति के लिये,

२. दर्शन-सम्यकत्व की पुष्टि के लिये।

१३. पार्श्वनाथ अर्हन्त के पाच कल्याणक - विशाखा नक्षत्र मे हुए।

१४. भ० महावीर के पाच कल्याणक हस्तोत्तरा (चित्रा) नक्षत्र मे हुए।

थ—श्रमण भगवान् महावीर के पाच कल्याणक हस्तो-त्तरा नक्षत्र मे हुऐ।

यथा—१. भ० महावीर हस्तोत्तरा नक्षत्र मे देवलोक से च्यवकर गर्भ मे उत्पन्न हुए।

२. ,, ,, देवानन्दा के गर्भ से त्रिशला के गर्भ मे आये।

३. ,, ,, जन्म हुआ।

४. ,, ,, दीक्षित हुए।

५. ,, ,, केवलज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ।

—पचम स्थान का प्रथम उद्देशक समाप्त—

पंचम स्थान : द्वितीय उद्देशक

४१२ क—निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों को ये पाँच महानदियाँ एक मास मे दो या तीन वार तैर कर पार करना या नौका द्वारा पार करना नही कल्पता है।

यथा—१ गंगा, २ यमुना, ३ सरयू, ४ ऐरावती, ५ मही।

२. प्रातिहारिक (जो वस्तु लाकर पीछी दी जाय) पीठ (पाट) फलक (सहारा देने की पीठिका) संस्तारक आदि वस्तुयें देने के लिए श्रमण-निग्रन्थ अन्त पुर मे जा सकता है।

३. दुष्ट अश्व या उन्मत्त हस्ति के सामने आने पर भयभीत श्रमण निर्ग्रन्थ अन्तःपुर मे जा सकता है।

४. कोई जबरदस्त हाथ पकड कर श्रमण निग्रन्थ को अन्त पुर मे ले जावे तो जा सकता है।

५. नगर से बाहर उद्यान मे गए हुए श्रमण को यदि अन्तःपुर वाले घेर कर क्रीडा करें तो वह श्रमण अन्त.पुर मे प्रविष्ट ही माना जाता है।

४१६ क—पाच कारणो से स्त्री पुरुष के साथ सहवास न करने पर भी गर्भ धारण कर लेती है, यथा—

१. जिस स्त्री की योनि अनावृत्त हो और वह जहा पर पुरुष का वीर्य स्खलित हुआ है ऐसे स्थान पर इस प्रकार बैठे कि जिससे शुक्राणु योनि मे प्रविष्ट हो जाय तो—

२. शुक्र लगा हुआ वस्त्र योनि मे प्रवेश करे तो—

३. जानबूझकर स्वयं शुक्र को योनि मे प्रविष्ट करावे तो—

४. दूसरे के कहने से शुक्राणुओ को योनि मे प्रवेश करे तो—

४. आचार्य या उपाध्याय के मरने पर अन्य आचार्य या उपाध्याय के आश्रय मे जाने के लिये।

५. आचार्यादि द्वारा या अन्यत्र रहे हुए आचार्यादि की सेवा के लिए भेजने पर।

४१४ —पाँच अनुद्घातिक (महा प्रायश्चित देने योग्य) कहे गये है, यथा—

१. हस्त कर्म करने वाले को,

२. मैथुन सेवन करने वाले को,

३. रात्रि भोजन करने वाले को,

४. सागारिक (जिसकी आज्ञा से मकान मे ठहरे है) के घर से लाया हुआ आहार खाने वाले को।

५. राजपिंड खाने वाले को।

४१५ —पांच कारणो से श्रमण निर्ग्रन्थ अन्तःपुर में प्रवेश करे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है। यथा—

१. पर सैन्य से नगर घिर गया हो या आक्रमण के भय से नगर के द्वार वन्द कर दिये गए हो और श्रमण ब्राह्मण आहार-पानी के लिए कही आ जा न सकते हो तो श्रमण-निर्ग्रन्थ अन्तःपुर मे सूचना देने के लिए जा सकता है।

१. रजस्राव काल मे पुरुष के साथ विधिवत् सहवास न करने वाली।

२. योनि-दोष से शुक्राणुओ के नष्ट होने पर।

३. जिसका पित्त प्रधान रक्त हो वह।

४. गर्भ धारण से पूर्व देवता द्वारा शक्ति नष्ट किये जाने पर।

५. सतान होना भाग्य मे न हो तो।

४१७ क—पाच कारणो से निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियाँ एक जगह ठहरें, सोये या बैठे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नही होता है। यथा—

१. निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियाँ कदाचित् अनेक योजन लम्बी, निर्जन एवं अगम्य अटवी मे पहुँच जावे तो—

२. किसी ग्राम, नगर यावत् राजधानी मे निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थियो मे से किसी एक को ही उपाश्रय मिला हो तो—

३. नागकुमार या सुपर्णकुमारावास मे स्थान मिला हो तो—

४. निर्ग्रन्थियो के वस्त्र यदि चोर ले जावें तो—

५. यदि तरुण गुण्डे निर्ग्रन्थियो के साथ बलात्कार करना चाहें तो—

५. नदी नाले के शीतल जल में आचमन (शुद्धि के लिए) के लिए यदि कोई स्त्री जावे और उस समय उसकी योनि मे शुक्राणु प्रविष्ट हो जाए तो—

ख—पांच कारणो से स्त्री पुरुष के साथ सहवास करने पर भी गर्भ धारण नही करती है, यथा–

१. जिसे युवावस्था प्राप्त नही हुई है, वह

२ जिसकी युवावस्था बीत गई है, वह

३. जो जन्म से वन्ध्या हो, वह

४. जो रोगी हो, वह

५. जिसका मन शोक से संतप्त हो, वह

ग—पांच कारणो से स्त्री पुरुष के साथ सहवास करने पर भी गर्भ धारण नहीं करती है। यथा–

१ जिसे नित्य रजस्राव होता है, वह

२. जिसे कभी रजस्राव नहीं होता है, वह

३. जिसके गर्भाशय का द्वार रोग से बन्द हो गया हो, वह

४. जिसके गर्भाशय का द्वार रोगग्रसित हो, वह

५. जो अनेक पुरुषो के साथ अनेक बार सहवास करती हो, वह।

घ—पांच कारणो से स्त्री पुरुष के साथ सहवास करने पर भी गर्भ धारण नही करती है। यथा–

३. हिंसा दण्ड—जिसने अतीत मे हिंसा की है जो वर्तमान में हिंसा करता है और जो भविष्य मे हिंसा करेगा—इस अभिप्राय से जो सर्प या शत्रु की घात करता है।

४. अकस्मात दण्ड—किसी अन्य पर प्रहार किया था किन्तु वध अन्य का हो गया हो।

५. दृष्टिविपर्यास दण्ड—"यह शत्रु है" इस अभिप्राय से कदाचित् मित्र का वध हो जाय।

४१६ क—पाच क्रियाये कही गई हैं, यथा—

१. आरंभिकी, २. पारिग्रहिकी, ३. मायाप्रत्ययिका, ४. अप्रत्याख्यान क्रिया, ५ मिथ्या दर्शन प्रत्यया।

ख—मिथ्या दृष्टि नैरयिको के पांच क्रियाये कही गई हैं, यथा—

१. आरंभिकी-यावत्, २-५ मिथ्यादर्शन प्रत्यया।

इस प्रकार वैमानिक पर्यन्त सभी मिथ्यादृष्टियो को पांच क्रियाये कही गई हैं।

विशेष—विकलेन्द्रिय (बेन्द्रिय, तेन्द्रिय और चउरिन्द्रिय) मिथ्यादृष्टि नही होते है। शेष पूर्ववत् है।

ग—पाच क्रियायें कही गई हैं, यथा—

१. कायिकी, २. आधिकरणिकी, ३. प्राद्वेषिकी, ४. पारितापनिकी, ५. प्राणातिपातिकी।

ख—पाँच कारणो से अचेल (अल्पवस्त्रधारी) निर्ग्रन्थ सचेल (सवस्त्र) निर्ग्रन्थियो के साथ एक स्थान मे रहे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है। यथा–

१. विक्षिप्त चित्त श्रमण के साथ यदि अन्य श्रमण न हो तो—

२. इसी प्रकार हर्षातिरेक से दृप्तचित्त

३. यक्षाविष्ट और

४. वायु रोग से उन्मत्त हो तो–

५. किसी साध्वी का पुत्र दीक्षित हो और उसके साथ यदि अन्य श्रमण न हो तो।

४१८ क—पाच आश्रवद्वार कहे गए हैं, यथा—

१. मिथ्यात्व, २. अविरति, ३. प्रमाद, ४. कषाय, ५. अशुभयोग।

ख—पाच संवर द्वार कहे गये हैं,—यथा

१. सम्यकत्व, २. विरति, ३. अप्रमाद, ४. अकषाय, ५. शुभयोग।

ग—पाच प्रकार का दण्ड कहा गया है, यथा—

१. अर्थ दण्ड—स्व-पर के हित के लिए त्रस या स्थावर प्राणी की हिंसा।

२. अनर्थ दण्ड—निरर्थक हिंसा।

आ—ये पाचो क्रियायें केवल एक मनुष्य दण्डक मे हैं। शेष दण्डको मे नही है।[1]

४२० परिज्ञा पाच प्रकार की है,

यथा— १. उपधि परिज्ञा, २. उपाश्रय परिज्ञा, ३. कषाय परिज्ञा, ४. योग परिज्ञा, ५. भक्त परिज्ञा।

४२१ व्यवहार पाच प्रकार का है, यथा :—

१. आगम व्यवहार[2], २. श्रुत व्यवहार[3], ३. आज्ञा व्यवहार, ४. धारणा व्यवहार[4], ५. जीत व्यवहार।

१. किसी विवादास्पद विषय मे जहाँ तक आगम से कोई निर्णय निकलता हो वहा तक आगम के अनुसार ही व्यवहार करना चाहिये।

---

१ ईर्यापथिक क्रिया केवल उपशान्त मोह आदि तीन गुण स्थानको में ही सम्भव है। ये गुणस्थान केवल मनुष्य दण्डक में ही होते हैं।

२ केवलज्ञानी, मन.पर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, चौदह पूर्वधारी, दशपूर्वधारी, और नवपूर्वधारी का व्यवहार "आगम व्यवहार" कहा जाता है।

३ नव पूर्व से न्यून ज्ञान वाले का व्यवहार "श्रुत व्यवहार" कहा जाता है।

४ गीतार्थ ने पहले किसी को प्रायश्चित दिया हो उसे धारे— याद रखे और उसके अनुसार अन्य को प्रायश्चित दे, वह धारणा व्यवहार कहा जाता है।

नैरयिको से लेकर वैमानिक पर्यन्त ये पाच क्रियायें हैं।

घ—पांच क्रियायें कही गई है, यथा—

१. आरंभिकी-यावत्, २-५. मिथ्यादर्शन प्रत्यया

नैरयिको से लेकर वैमानिक पर्यन्त ये पाचो क्रियायें हैं।

ङ—पाच क्रियायें कही गई हैं, यथा—

१. दृष्टिजा, २. पृष्टिजा, ३. प्रातीत्यिकी,
४. सामतोपनिपातिकी, ५. स्वाहस्तिकी।

च—नैरयिको से लेकर वैमानिक पर्यन्त ये पांच क्रियायें है।

छ—पाच क्रियायें कही गई हैं, यथा—

१. नैमृष्टिकी, २ आज्ञापानिकी, ३. वैदारणिकी,
४. अनाभोग प्रत्यया, ५. अनवकाक्षप्रत्यया।

ज—नैरयिको से लेकर वैमानिक पर्यन्त ये पाच क्रियायें हैं।

झ—पाच क्रियायें कही गई हैं, यथा—

१ प्रेम प्रत्यया, २. द्वेप प्रत्यया, ३ प्रयोग क्रि
४. समुदान क्रिया, ५. ईर्यापथिकी।

ग—सुप्त या जागृत असंयत मनुष्यों के पाच जागृत है, यथा—शब्द-यावत्-स्पर्श ।

४२३ क—पाच कारणो से जीव कर्म-रज ग्रहण करता है, यथा—प्राणातिपात से-यावत्-परिग्रह से ।

ख—पाच कारणो से जीव कर्म-रज से मुक्त होता है, यथा—प्राणातिपात विरमण से — यावत्-परिग्रह विरमण से ।

४२४ पांच मास वाली पांचवी भिक्षु-प्रतिमा धारण करने वाले अणगार को पाच दत्ति आहार की और पाच-पांच दत्ति पानी की लेना कल्पता है ।

४२५ क—पाच प्रकार के उपघात (आहारादि की अशुद्धि) है ।

यथा—१ उद्गमोपघात–गृहस्थ द्वारा लगने वाले आधा कर्म आदि सोलह दोष ।

२. उत्पादनोपघात—साधु द्वारा लगने वाले धात्री आदि सोलह दोष ।

३. एषणोपघात—साधु और गृहस्थ द्वारा लगने वाले शंकितादि दश दोष ।

४. परिकर्मोपघात—वस्त्र-पात्र के छेदन या सिलाई आदि मे मर्यादा का उल्लंघन ।

५. परिहरणोपघात—एकाकी विचरने वाले साधु के वस्त्र-पात्रादि उपकरणो को उपयोग मे लेना ।

२. जहां किसी आगम से निर्णय न निकलता हो वहा श्रुत से व्यवहार करना चाहिए।

३. जहां श्रुत से निर्णय न निकलता हो वहां गीतार्थ की आज्ञा के अनुसार व्यवहार करना चाहिये।

४. जहा गीतार्थ की आज्ञा से समस्या हल न होती हो वहा धारणा के अनुसार व्यवहार करना चाहिए।

५. जहा धारणा से समस्या न सुलझती हो वहां जीत (गीतार्थ पुरुषो की परम्परा द्वारा अनुसरित) हार के अनुसार व्यवहार करना चाहिए।

इस प्रकार आगमादि से व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न—हे भगवन्। श्रमण निर्ग्रन्थ आगम व्यवहार को ही प्रमुख मानने वाले हैं फिर ये पांच व्यवहार क्यो कहे गये हैं?

उत्तर—इन पाच व्यवहारों मे से जहां जिस व्यवहार से समस्या सुलझती हो वहां उस व्यवहार से प्रवृत्ति करने वाला श्रमण निर्ग्रन्थ आज्ञा का आराधक होता है।

४२२ क—सोये हुये सयत मनुष्यो के पाच जागृत हैं,
यथा—शब्द-यावत्-स्पर्श।

ख—जागृत सयत मनुष्यो के पाच सुप्त हैं,
यथा—शब्द-यावत्-स्पर्श।

५. स्पर्शेन्द्रिय प्रतिसलीन ।

ख—अप्रतिसंलीन पाच प्रकार के है,

यथा—१. श्रोत्रेन्द्रिय अप्रतिसंलीन-यावत्-२-४

५. स्पर्शेन्द्रिय अप्रतिसंलीन ।

ग—संवर[1] पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. श्रोत्रेन्द्रिय सवर-यावत्-२-४

५. स्पर्शेन्द्रिय सवर ।

घ—असंवर[2] पाच प्रकार के हैं,

यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय असंवर-यावत्-
स्पर्शेन्द्रिय असंवर ।

४२८ —सयम पाच प्रकार का है,

यथा—१. सामायिक सयम, २. छेदोपस्थापनीय सयम, ३. परिहार विशुद्धि संयम, ४. सूक्ष्म संपराय सयम, ५. यथाख्यात चारित्र संयम ।

४२९ क—एकेन्द्रिय जीवो की हिंसा न करने वाले को पाच प्रकार का संयम होता है,

यथा—१-५ पृथ्वीकायिक सयम-यावत्-
वनस्पतिकायिक सयम ।

---

१ संवर—आत्मा के साथ कर्ममल का वंध न हो—ऐसा आचरण ।

२ असंवर-आश्रव-आत्मा के साथ कर्म बंध हो-ऐसा आचरण ।

ख—पाच प्रकार की विशुद्धि कही गई है,

यथा—१. उद्गम विशुद्धि, २ उत्पादन विशुद्धि, ३. एपणा विशुद्धि, ४ परिकर्म विशुद्धि, ५ परिहरण विशुद्धि। पूर्वोक्त उद्गमादि दोपो का सेवन न करना विशुद्धि है।

४२६ क—पांच कारणो से जीव दुर्लभ बोधी रूप कर्म बांधते है,

यथा—१. अरिहन्तो का अवर्णवाद[1] बोलने पर,
२. अरिहन्त कथित धर्म का अवर्णवाद बोलने पर,
३. आचार्यो या उपाध्यायो का अवर्णवाद बोलने पर,
४. चतुर्विध सघ का अवर्णवाद बोलने पर,
५. उत्कृष्ट तप और ब्रह्मचर्य का पालन करने से हुये देवो का अवर्णवाद बोलने पर।

ख—पाच कारणो से जीव सुलभ बोधि रूप कर्म बांधते है।

यथा—१-५ अरिहन्तो का गुणानुवाद करने पर-यावत्-उत्कृष्ट तप और ब्रह्मचर्य के पालने से हुए.... देवो के गुणानुवाद करने पर।

४२७ क—प्रतिसंलीन[2] पाच प्रकार के है,

यथा—१. श्रोत्रेन्द्रिय प्रतिसंलीन-यावत्-२-४

---

१ अवर्णवाद—निन्दा।

२ प्रतिसंलीन—इन्द्रियविजयी।

४३१ —तृणवनस्पति कायिक जीव पाच प्रकार के है,
यथा—१. अग्रबीज, २. मूल बीज, ३. पर्व बीज, ४. स्कन्ध बीज, ५. बीज रुह।

४३२ —आचार पाच प्रकार का है,
यथा—१. ज्ञानाचार, २. दर्शनाचार, ३. चारित्राचार, ४. तपाचार, ५. वीर्याचार।

४३३ क—आचार प्रकल्प[1] पाच प्रकार का है,
यथा—१. मासिक उद्घातिक-लघुमास[2],
२. मासिक अनुद्घातिक—गुरुमास[3],
३. चातुर्मासिक उद्घातिक—लघु चौमासी,
४. चातुर्मासिक अनुद्घातिक—गुरु चौमासी,
५. आरोपणा[4]—प्रायश्चित मे वृद्धि करना।

---

१ आचार प्रकल्प—निशीथ सूत्रोक्त प्रायश्चित्त।

२ लघुमास—मासिक तपश्चर्यारूप प्रायश्चित्त में कुछ अंश कम करना।

३ गुरुमास—मासिक तपश्चर्यारूप प्रायश्चित में कुछ भी कमी न करना।

४ आरोपणा—गुरु के समक्ष यदि दोष छिपावे तो दोष के प्रायश्चित के साथ-साथ माया दोष का जो प्रायश्चित और अधिक बढ़ाया जाय तो वह आरोपणा है।

ख—एकेन्द्रिय जीवो की हिंसा करने वाले को पाच प्रकार का असंयम होता है,

यथा—१-५ पृथ्वी कायिक असंयम-यावत्-
वनस्पतिकायिक असंयम।

क—पञ्चेन्द्रिय जीवों की हिंसा न करने वालो के पाच प्रकार का सयम होता है,

यथा-१ श्रोत्रेन्द्रिय संयम-यावत-२-४
५ स्पर्शेन्द्रिय सयम

ख—पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा करने वालों के पाच प्रकार का असयम होता है,

यथा—१ श्रोत्रेन्द्रिय असयम-यावत्-२-४
५ स्पर्शेन्द्रिय असंयम।

ग—सभी प्राण, भूत, सत्त्व और जीवो की हिंसा न करने वालो के पाच प्रकार का संयम होता है,

यथा—१-५ एकेन्द्रिय सयम-यावत्-
पंचेन्द्रिय सयम।

घ—सभी प्राण, भूत, सत्त्व और जीवो की हिंसा करने वालो के पाच प्रकार का असंयम होता है,

यथा—१-५ एकेन्द्रिय असंयम-यावत्
पंचेन्द्रिय असंयम।

यथा—१. विद्युत्प्रभ, २ अकावती, ३. पद्मावती, ४. आशिविष, ५. सुखावह ।

ख—जम्बूद्वीप मे मेरु पर्वत के पश्चिम मे सीता महानदी के उत्तर मे पांच वक्षस्कार पर्वत है,

यथा—१ चन्द्रपर्वत, २ सूर्य पर्वत, ३. नाग पर्वत, ४. देव पर्वत, ५. गधमादन पर्वत ।

ङ—जम्बूद्वीप मे मेरु पर्वत के दक्षिण मे देव कुरुक्षेत्र मे पांच महाद्रह हैं,

यथा—१. निषधद्रह, २. देवकुरुद्रह, ३. सूर्यद्रह, ४. सुलसद्रह, ५. विद्युत्प्रभद्रह ।

च—जम्बूद्वीप मे मेरु पर्वत के के दक्षिण मे उत्तर कुरुक्षेत्र मे पांच महाद्रह है,

यथा—१. नीलवंतद्रह, २. उत्तर कुरुद्रह, ३, चन्द्रद्रह ४. एरावणद्रह, ५. माल्यवंतद्रह ।

छ—सीता, सीतोदा महा नदी की ओर तथा मेरु पर्वत की ओर सभी वक्षस्कार पर्वत ५०० योजन ऊँचे है, और ५०० गाउ भूमि मे गहरे हैं ।

ज-ढ—धातकीखण्ड के पूर्वार्ध मे मेरु पर्वत के पूर्व मे, सीता महानदी के उत्तर मे पाँच वक्षस्कार पर्वत है [जम्बूद्वीप के समान] [ख से छ तक]

ण-न—धातकीखण्ड के पश्चिमार्ध मे [जम्बूद्वीप के समान]

ख—आरोपणा पाच प्रकार की है,

यथा—१. प्रस्थापिता—आरोपणा करने के गुरुमास आदि प्रायश्चित रूप तपश्चर्या का प्रारम्भ करना।

२. स्थापिता—गुरुजनों की वैयावृत्य करने के लिये आरोपित प्रायश्चित के अनुसार भविष्य मे तपश्चर्या करना।

३. कृत्स्ना—वर्तमान जिन शासन मे उत्कृष्ट तप ६ मास का माना गया है अतः इससे अधिक प्रायश्चित न देना।

४. अकृत्स्ना—यदि दोष के अनुसार प्रायश्चित देने पर छः मास से अधिक प्रायश्चित आता हो तथापि छः मास का ही प्रायश्चित देना।

५. हाडहडा—लघुमास आदि प्रायश्चित शीघ्रतापूर्वक देना।

४३४ क—जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के उत्तर मे पाच वक्षस्कार पर्वत हैं,

यथा—१. माल्यवत, २ चित्रकूट, ३. पद्मकूट, ४. नलिनकूट, ५. एक शैल।

ख—जम्बूद्वीप मे मेरु पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के दक्षिण मे पांच वक्षस्कार पर्वत हैं,

यथा—१. त्रिकूट, २. वैश्रमणकूट, ३. अजन, ४. मातजन, ५. सोमनस।

ग—जम्बूद्वीप मे मेरु पर्वत के पश्चिम मे सीता महानदी के दक्षिण मे पाच वक्षस्कार पर्वत हैं,

४३७ —पांच कारणो से श्रमण निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थी को पकड कर रखे या सहारा दे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है।

१. साध्वी को यदि कोई उन्मत्त पशु या पक्षी मारता हो (उस समय अन्य साध्वी समीप न हो तो)

२. दुर्ग या विषम-मार्ग से साध्वी प्रस्खलित हो या गिर रही हो।

३. निर्ग्रन्थी कीचड में फस गई हो या लिपट गई हो।

४. निर्ग्रन्थी को नाव पर चढाना हो या उतारना हो।

५. जो निर्ग्रन्थी विक्षिप्त चित्त, क्रुद्ध, यक्षाविष्ट, उन्मत्त, उपसर्ग प्राप्त, कलह से व्याकुल, प्रायश्चित-युक्त-यावत्-भक्त-पान प्रत्याख्यात हो अथवा पति या चोर द्वारा संयम से च्युत की जा रही हो।

४३८ —गण मे आचार्य और उपाध्याय के पांच अतिशय। यथा—१ आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय में प्रवेश करके धूल भरे पैरो को दूसरे साधुओ से झटकवावे या साफ करावे तो भगवान् की आज्ञा का उल्लंघन नही होता।

२. आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय में मल-मूत्र का

प-य—पुष्करवरद्वीपार्ध के पश्चिमार्ध मे भी जम्बूद्वीप के समान वक्षस्कार पर्वत और द्रहो की ऊँचाई आदि कहना चाहिये।

र—समय क्षेत्र मे पाच भरत, पाच ऐरवत-यावत्-पाच मेरु और पाच मेरु चूलिकायें।[1]

४३५ क—कौशलिक अर्हन्त ऋषभदेव पांच सौ धनुष के ऊंचे थे।

ख—चक्रवर्ती महाराजा भरत पांच सौ धनुष के ऊंचे थे।

ग—बाहुबली अणगार भी इतने ही ऊंचे थे।

घ—ब्राह्मी नाम की आर्या पाच सो धनुष ऊंची थी।

ङ—इसी प्रकार सुन्दरी नाम की आर्या भी इतनी ही ऊंची थी।

४३६ पाच कारणो से सोया हुआ मनुष्य जागृत होता है,

यथा—१. शब्द सुनने मे, २. हाथ आदि के स्पर्श से,

३. भूख लगने से, ४. निद्रा क्षय मे,

५. स्वप्न दर्शन मे।

---

१ सूचना-चतुर्थ स्थान के द्वितीय उद्देशक सूत्र के समान यहां कहें।

विशेष सूचना-यहां इषुकार पर्वत नहीं है।

४. स्वगण की या परगण की निग्रन्थी मे आसक्त हो जाय तो।

५. मित्र या स्वजन यदि गण छोडकर चला जाय तो उसे पुनः स्वगण मे स्थापित करने के लिए आचार्य या उपाध्याय गण छोडकर चला जाय तो।

४४० पांच प्रकार के ऋद्धिमान् मनुष्य है,
यथा—१. अर्हन्त, २. चक्रवर्ती, ३. बलदेव, ४. वासुदेव, ५. भावितात्मा अणगार।

पंचम स्थान-द्वितीय उद्देशक समाप्त

पञ्चम स्थान-तृतीय उद्देशक

४१ क—पाँच अस्तिकाय है—

यथा—१. धर्मास्तिकाय. २. अधर्मास्तिकाय, ३. आकाशास्तिकाय, ४. जीवास्तिकाय, ५. पुद्गलास्तिकाय।

ख धर्मास्तिकाय अवर्ण, अगध, अरस, अस्पर्श, अरूपी, अजीव, शास्वत, अवस्थित लोकद्रव्य हैं।
वह पाँच प्रकार का है,
यथा—१. द्रव्य से, २. क्षेत्र से, ३. काल से, ४. भाव से और ५. गुण से।
१. द्रव्य से—धर्मास्तिकाय एक द्रव्य है,

उत्सर्ग करे या उनकी शुद्धि करे तो भगवान् की आज्ञा का उल्लंघन नही होता ।

३. आचार्य और उपाध्याय इच्छा हो तो वैयावृत्य करे, इच्छा न हो तो न करे[1] फिर भी आज्ञा का अतिक्रमण नही होता ।

४ आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय मे एक या दो रात अकेले रहे तो भी आज्ञा का अतिक्रमण नही होता ।

५. आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय के बाहर एक या दो रात अकेले रहे तो भी आज्ञा का अतिक्रमण नही होता ।

४३६ —पाच कारणों से आचार्य और उपाध्याय गण छोडकर चले जाते हैं ।

१ गण में आचार्य और उपाध्याय की आज्ञा या निषेध[2] का सम्यक् प्रकार से पालन न होता हो ।

२. गण मे वय ज्येष्ठ और ज्ञान ज्येष्ठ का वन्दनादि व्यवहार सम्यक् प्रकार से पालन करवा न सके तो ।

३. गण मे श्रुत की वाचना यथोचित रीति से न दे सके तो ।

---

१ आहार आदि का वितरण करे या न करे ।

२ मूल में "धारणा" शब्द है । टीकाकार ने इसका अर्थ-अकृत्य से निवृत्ति-क्रिया है ।

आठ स्पर्श युक्त है। रूपी, अजीव, शास्वत, अवस्थित-यावत्-गुण से।

१. द्रव्य से—पुद्गलास्तिकाय अनन्त द्रव्य हैं।

२. क्षेत्र से—लोक प्रमाण है।

३ काल से—अतीत मे कभी नही था-ऐसा नही-यावत् नित्य है।

४. भाव से—वर्ण, गंध, रस और स्पर्श युक्त है।

५. गुण से—ग्रहण गुण है।[1]

४४२ —गति पाच हैं,

यथा—१ नरक गति, २. तिर्यंच गति, ३. मनुष्य गति. ४. देवगति, ५. सिद्ध गति।

४४३ क—पाच इन्द्रियो के पाच विषय हैं,

यथा—१. श्रोत्रेन्द्रिय का विषय 'शब्द'-यावत् २-३-४-५ स्पर्शन्द्रिय का विषय 'स्पर्श'।

ख—मुंड[2] पाच प्रकार के हैं,

यथा—१. श्रोत्रेन्द्रिय मुण्ड-यावत्—२-३-४ ५. स्पर्शेन्द्रिय मुण्ड।

---

१ पुद्गलास्तिकाय औदारिक शरीर आदि से ग्राह्य है तथा इन्द्रियों से ग्राह्य है अतः ग्रहण गुण है।

२ मुंड—रागादिभाव दूर करना।

२. क्षेत्र से—लोक प्रमाण है,

३. काल से—अतीत मे कभी नही था—ऐसा नही,
वर्त्तमान मे नही है—ऐसा नही,
भविष्य मे कभी नही होगा—ऐसा भी नही।

धर्मास्तिकाय अतीत में था, वर्तमान मे हैं और भविष्य मे भी रहेगा। वह ध्रुव, नियत, शास्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य है।

४. भाव से–अवर्ण, अगंध, अरस, और अस्पर्श है।

५. गुण से–गमन सहायक गुण है।

ग—अधर्मास्तिकाय धर्मास्तिकाय के समान पांच प्रकार का है।

विशेष सूचना–गुण से-स्थिति सहायक गुण।

घ—आकाशास्तिकाय धर्मास्तिकाय के समान पाच प्रकार का है।

विशेष सूचना–क्षेत्र से-आकाशास्तिकाय लोकालोक प्रमाण है। गुण से-अवगाहन गुण है।

ङ—जीवास्तिकाय धर्मास्तिकाय के समान पाच प्रकार का है।

विशेष सूचना द्रव्य—से जीवास्तिकाय अनन्तजीव द्रव्य हैं। गुण मे-उपयोग गुण हैं।

च—पुदगलास्तिकाय पांच वर्ण, पांच रस, दो गंध और

ङ—पाच प्रकार के बादर वायुकायिक जीव हैं,

यथा—१. पूर्व दिशा का वायु, २. पश्चिम दिशा का वायु, ३. दक्षिण दिशा का वायु, ४. उत्तर दिशा का वायु, ५. विदिशाओ का वायु।

च—पांच प्रकार के अचित्त वायुकायिक जीव है,

यथा—१. आक्रान्त—दबाने से पैदा होने वाला वायु।

२ ध्मात—धमण से पैदा होने वाला वायु।

३. पीड़ित—वस्त्र के नीचोडने से होने वाला वायु।

४. शरीरानुगत—डकार या श्वासादि रूप वायु।

५. सम्मूच्छिम—पंखा आदि से उत्पन्न होने वाला वायु।

४४५ क—निर्ग्रन्थ पांच प्रकार के है,

यथा—१. पुलाक[1], २. बकुश[2], ३. कुशील, ४. निर्ग्रन्थ, ५. स्नातक।

ख—पुलाक पाच प्रकार के है,

यथा—१. ज्ञान पुलाक, २. दर्शन पुलाक, ३. चारित्र पुलाक, ४. लिंग पुलाक, ५. यथासूक्ष्म पुलाक।

ग—बकुश पाच प्रकार के हैं।

---

१ पुलाक—अतिचार लगाने वाला निग्रन्थ।

२ बकुश—दोष लगाने वाला निर्ग्रन्थ।

ग अथवा मुंड पाच प्रकार के हैं,
यथा—१. क्रोधमुंड[1], २. मान-मुंड, ३. माया मुंड, ४. लोभमुंड, ५. शिर मुंड[2]।

४४४ क—अधोलोक मे पाच बादर (स्थूल) कायिक जीव है,
यथा—१. पृथ्वीकायिक, २. अप्कायिक, ३. वायु कायिक, ४. वनस्पतिकायिक, ५ औदारिक शरीर वाले-त्रस प्राणी।

ख—ऊर्ध्व लोक मे अधोलोक के समान पांच प्रकार के बादर कायिक जीव हैं,

ग—तिरछा लोक मे पांच प्रकार के बादर कायिक जीव हैं, यथा १. एकेन्द्रिय-यावत्—२-४
५. पंचेन्द्रिय।

घ—पाच प्रकार के बादर तेजस्कायिक जीव हैं।
यथा—१. इंगाल—अंगारे।
२. ज्वाला—प्रज्वलित अग्नि।
३. मुर्मुर—राख से मिश्रित अग्नि।
४. अर्चि—शिखा सहित अग्नि।
५. अलात—जलती हुई लकडी या छाणा।

---

१ क्रोध मुंड—क्रोध दूर करना।
२ शिर मुंड—लोच करना।

४४६ क—निर्ग्रन्थों और निर्ग्रन्थियो को पाच प्रकार के वस्त्रो का उपभोग या परिभोग कल्पता है,

यथा—१. जांगमिक[1] कंवल आदि।

२. भागमिक—अलसी का वस्त्र।

३. सानक—शण के सूत्र का वस्त्र।

४. पोतक—कपास का वस्त्र।

५. तिरीडपट्ट[2]—वृक्ष की छाल का वस्त्र।

ख—निर्ग्रन्थों और निर्ग्रन्थियो को पांच प्रकार के रजोहरणो का उपभोग या परिभोग कल्पता है।

यथा—१. औणिक—ऊन का वना हुआ।

२. औष्ट्रिक—ऊँट के वालो का वना हुआ।

३. शानक—शण का वना हुआ।

४. वल्वज—घास की छाल से वना हूआ।

५. मुंज का वना हूआ।

४४७ —धार्मिक पुरुष के पाच आलम्बन स्थान हैं,

यथा—१. छकाय, २. गण, ३. राजा, ४. गृहपति, ५. शरीर।

---

१. जंगम—त्रसजीव भेड़, वकरी आदि की ऊन से बना हुआ।

२ तिरीड—नामक वृक्ष की छाल से बना हूआ।

यथा—१. आभोग वकुश, २. अनाभोग बकुश, ३. मवृत्त बकुश, ४. असंवृत्त बकुश. ५. यथा सूक्ष्म वकुश।

घ—कुशील पाच प्रकार के है,

यथा—१. ज्ञान कुशील, २. दर्शन कुशील, ३. चारित्र कुशील, ४. लिंग कुशील, ५. यथा सूक्ष्म कुशील।

ङ—निर्ग्रन्थ पाच प्रकार हैं,

यथा—१. प्रथम समय निर्ग्रन्थ,

२. अप्रथम समय निर्ग्रन्थ

३ चरम समय निर्ग्रन्थ,

४: अचरम समय निर्ग्रन्थ,

५. यथासूक्ष्म निर्ग्रन्थ।

च—स्नातक पाच प्रकार के हैं,

यथा—१. अच्छवी—शरीर रहित।

२. अशबल—अतिचार रहित।

३. अकर्मांश—कर्म रहित।

४. शुद्ध ज्ञान—दर्शन के धारक अर्हन्त जिन केवली।

५. अपरिश्रावी—तीनो योगो का निरोध करनेवाला अयोगी।

४५२ —पुरुष पाच प्रकार के है,

यथा—१. ह्री सत्त्व-लज्जा से धैर्य रखने वाला,

२. ह्री मन सत्त्व-लज्जा से मन मे धैर्य रखने वाला,

३. चल सत्त्व—अस्थिर चित्त वाला,

४. स्थिर सत्त्व-स्थिर चित्त वाला,

५. उदात्त सत्त्व-बढते हुए धैर्य वाला।

४५३ क—मत्स्य पाच प्रकार के है,

यथा—१. अनुश्रोतचारी—प्रवाह के अनुसार चलने वाला,

२. प्रतिश्रोतचारी—प्रवाह के सामने जाने वाला।

३. अतचारी—किनारे किनारे चलने वाला,

४. प्रान्तचारी—प्रवाह के मध्य मे चलने वाला,

५. सर्वचारी—सर्वत्र चलने वाला।

ख—इसी प्रकार भिक्षु पाच प्रकार के है,

यथा—१-५ अनुश्रोतचारी-यावत्-सर्वश्रोतचारी।

१. उपाश्रय से भिक्षाचर्या प्रारम्भ करने वाला,

२. दूर से भिक्षाचर्या प्रारम्भ करके उपाश्रय तक आने वाला,

३. गांव के किनारे बसे हुए घरो से भिक्षा लेने वाला,

४४८ —निधि पांच प्रकार की है,

यथा—१. पुत्रनिधि, २. मित्रनिधि, ३. शिल्पनिधि, ४ धननिधि, ५. धान्य निधि।

४४९ —शौच पांच प्रकार का है,

यथा—१. पृथ्वी शौच, २. जल शौच,

३. अग्नि शौच, ४. मंत्र शौच,

५. ब्रह्म शौच।

४५० क—इन पांच स्थानों को छद्मस्थ पूर्ण रूप से न जानता है और न देखता है।

यथा—१. धर्मास्तिकाय, २. अधर्मास्तिकाय

३ आकाशास्तिकाय, ४. शरीर रहित जीव,

५. परमाणु पुद्गल।

ख—इन्ही पांच स्थानो को केवलज्ञानी पूर्णरूप से जानते है और देखते है,

यथा—१-५ धर्मास्तिकाय-यावत्-परमाणु पुद्गल।

४५१ —ऊर्ध्वलोक मे पाँच महाविमान हैं,

यथा—१. विजय, २. वैजयंत, ३. जयंत, ४. अपराजयत, ५. सर्वार्थ सिद्ध महाविमान।

३. स्तेन उत्कट—चोरी करने मे उत्कृष्ट।

४. देशोत्कट—देश मे उत्कृष्ट।

५. सर्वोत्कट—सब मे उत्कृष्ट।

४५७ —समितिया पाच है,
यथा १. इर्या समिति यावत्-२-४
५. परिष्ठिापनिका समिति।

४५८ क—संसारी जीव पाच प्रकार के हैं,
यथा—१. एकेन्द्रिय-यावत्-२-४
५. पंचेन्द्रिय।

ख—एकेन्द्रिय जीव पाच गतियो (स्थानो) मे पाच गतियो (स्थानो) से आकर उत्पन्न होते है।
१-५. एकेन्द्रिय जीव एकेन्द्रियो मे एकेन्द्रियो से-यावत्-पंचेन्द्रियो से आकर उत्पन्न होता है।

ग—१-५. एकेन्द्रिय एकेन्द्रियपन को छोडकर एकेन्द्रिय रूप में-यावत्-पंचेन्द्रिय रूप मे उत्पन्न होता है।

घ—द्वीन्दिय जीव पाच स्थानो मे पाच स्थानो से आकर उत्पन्न होते हैं।

ङ—१-५. द्वीन्दिय जीव एकेन्द्रियो मे यावत्-पचेन्द्रियो मे आकर उत्पन्न होते है।

च—१-५. त्रीन्दिय जीव पाच स्थानो मे पाच स्थानो से आकर उत्पन्न होते हैं।

४. गाव के मध्य में वसे हुए घरो से भिक्षा लेने वाला,

५. सभी घरो से भिक्षा लेने वाला।

४५४ —वनीपक-याचक पाच प्रकार के है,

यथा—अतिथि वनीपक, २. दरिद्री वनीपक,

३. ब्राह्मण वनीपक, ४. श्वान वनीपक,

५. श्रमण वनीपक।

४५५ —पाच कारणो से अचेलक प्रशस्त होता है,

यथा—१. अल्पप्रत्युपेक्षा—अल्प उपधि होने से अल्प-प्रतिलेखन होता है।

२. प्रशस्त लाघव—अल्प उपधि होने से अल्पराग होता है।

३. वैश्वासिक रूप—विश्वास पैदा करने वाला वेष।

४ अनुज्ञात तप—जिनेश्वर सम्मत अल्प उपाधि रूप तप।

५ विपुल इन्द्रिय निग्रह—इन्द्रियो का महान् निग्रह।

४५६ —उत्कट पुरुष पांच प्रकार के है,

यथा—१. दण्ड उत्कट—अपराध करने पर कठोर दण्ड देने वाला।

२. राज्योत्कट—ऐश्वर्य मे उत्कृष्ट।

उ०—हे गौतम ! जघन्य अन्तमुहूर्त उत्कृष्ट पाच वर्ष।

इसके पश्चात् योनि (जीवोत्पत्तिस्थान) कुमला जाती है और शनै शनै योनि विच्छेद (उत्पत्ति स्थान निर्जीव) हो जाता है।

४६० क—सवत्सर पाच प्रकार के है,

यथा—१. नक्षत्र सवत्सर, २. युग संवत्सर, ३. प्रमाण संवत्सर, ४. लक्षण संवत्सर, ५ शनैश्चर सवत्सर।

ख—युग संवत्सर पाच प्रकार के है,

यथा—१. चंद्र, २. चंद्र, ३. अभिवर्धित, ४. चंद्र ५. अभिवर्धित।

ग—प्रमाण सवत्सर पाच प्रकार का है,

यथा—१. नक्षत्र संवतसर, २ चंद्र संवत्सर, ३. ऋतु संवतसर, ४. आदित्य सवत्सर, ५ अभिवर्धित सवत्सर।

घ—लक्षण सवत्सर पाच प्रकार का है,

यथा—१. जिस तिथि मे जिस नक्षत्र का योग होना चाहिए उस नक्षत्र का उसी तिथि मे योग होता है[3] जिसमे रितुओ का परिणमन क्रमशः होता रहत

---

१ यथा-कार्तिक में कृत्तिका, मृगसिर मे आर्द्रा, पोष मे पुष्य- इत्यादि।

छ—१-५. त्रीन्द्रिय जीव एकेन्द्रियो मे-यावत्-पचेन्द्रियो मे आकर उत्पन्न होते हैं।

ज—१-५ त्रीन्द्रियजीव एकेन्द्रियो में-यावत् पचेन्द्रियो मे आकर उत्पन्न होते है।

झ—१-५ चतुरिन्द्रिय जीव पाच स्थानों मे पाच स्थानो से आकर उत्पन्न होते हैं।

ञ—१-५ चतुरिन्द्रिय जीव एकेन्द्रियो मे-यावत्-पञ्चेन्द्रियो मे आकर उत्पन्न होते है।

ट—१-५ पञ्चेन्द्रिय जीव पाच स्थानो मे पाच स्थानो से आकर उत्पन्न होते हैं।

ठ—१-५ पञ्चेन्द्रिय जीव एकेन्द्रियो मे-यावत्-पञ्चेन्द्रियो मे आकर उत्पन्न होते हैं।

ड—सभी जीव पाच प्रकार के हैं,
यथा—१-५ क्रोध कषायी-यावत्-अकषायी।

ढ—अथवा सभी जीव पाच प्रकार के है,
यथा-१-५ नैरयिक-यावत्-सिद्ध।

४५६ प्र०—हे भगवन् ! चणा, मसूर, तिल, मूंग, उडद, बाल, कुलथ, चंवला, तुवर और कालाचणा कोठे मे रखे हुए इन धान्यो की कितनी स्थिति है ?

४. शिर, ५. सर्वाङ्ग।

१. पैरो से निकलने पर जीव नरकगामो होता है,

२. उरू से निकलने पर जीव तिर्यंचगामी होता है,

३. वक्षस्थल से निकलने पर जीव मनुष्य गति प्राप्त होता है।

४. शिर से निकलने पर जीव देवगतिगामी होता है,
५. सर्वांग से निकलने पर जीव मोक्षगामी होता है।

४६२ क—छेदन पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. उत्पाद छेदन–नवीन पर्याय की अपेक्षा से पूर्वपर्याय का छेदन।

२. व्यय छेदन–पूर्व पर्याय का व्यय-छेदन।

३. बंध छेदन–कर्मबंध का छेदन।

४. प्रदेश छेदन–जीव द्रव्य के बुद्धि से कल्पित प्रदेश।

५. द्विधाकार छेदन–जीवादिद्रव्यो के दो विभाग करना।

ख—आनन्तर्य पांच प्रकार का है,
यथा–१. उत्पादानन्तर्य–जीवो की निरन्तर उत्पत्ति।
२. व्ययानन्तर्य–जीवो का निरन्तर मरण।
३. प्रदेशानन्तर्य–प्रदेशो का निरन्तर अविरह[3]।

---

१. जीव प्रदेशों के साथ कर्मो का निरन्तर अविरह।
(क) भव्य के संसारी अवस्था में निरन्तर अविरह रहता है।

है, जिसमे सरदी और गरमी का प्रमाण बराबर रहता है, और जिसमे वर्षा अच्छी होती है वह नक्षत्र सवत्सर कहा जाता है।

२. जिसमे सभी पूर्णिमाओ मे चन्द्र का योग रहता है, जिसमे नक्षत्रो की विषम गति होती है[1] जिसमे अतिशीत और अति ताप पडता है, और जिसमे वर्षा अधिक होती है वह चंद्र सवत्सर होता है।

३ जिसमें वृक्षो का यथासमय परिणमन नही होता है, रितु के विना फल लगते हैं, वर्षा भी नही होती है उसे कर्म सवत्सर या रितु संवत्सर कहते हैं।

४. जिसमे पृथ्वी जल, पुष्प और फलो को सूर्य रस देता है और थोडी वर्षा से भी पाक अच्छा होता है उसे आदित्य सवत्सर कहते हैं।

५. जिसमे क्षण, लव, दिवस और ऋतु सूर्य से तप्त रहते है, और जिसमे सदा धूल उडती रहती है। उसे अभिवर्धित सवत्सर कहते है।

४६१ शरीर मे जीव के निकलने के पांच मार्ग है,
यथा १. पैर, २. उरू (साथल), ३ वक्षस्थल,

---

१ कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका के वदले भरणी अथवा रोहिणी होता है।

४६४ —ज्ञानावरणीय कर्म पाच प्रकार के है,
यथा—१. आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय कर्म
यावत्—२-४-५ केवलज्ञानावरणीय कर्म।

४६५ —स्वाध्याय पाच प्रकार के हैं,
यथा—१. वाचना, २. पृच्छना, ३. परिवर्तना,
४. अनुप्रेक्षा ५. धर्म कथा।

४६६ —प्रत्याख्यान पांच प्रकार के है, यथा—
१. श्रद्धा शुद्ध, २. विनय शुद्ध, ३. अनुभाषना शुद्ध,
४. अनुपालना शुद्ध, ५. भाव शुद्ध।

४६७ —प्रतिक्रमण पांच प्रकार के हैं,
यथा—१. आश्रव द्वार—प्रतिक्रमण,
२. मिथ्यात्व—प्रतिक्रमण,
३. कषाय—प्रतिक्रमण,
४. योग—प्रतिक्रमण,
५. भाव—प्रतिक्रमण।

४६८ क—पांच कारणो से गुरु शिष्य को वाचना देते है,
यथा—१. सग्रह के लिये—शिष्यो को सूत्र का ज्ञान कराने के लिये।
२. उपग्रह के लिये—गच्छ पर उपकार करने के लिये।

४. समयानन्तर्य—समय का निरन्तर अविरह।

५. सामान्यानन्तर्य—उत्पाद आदि विशेष के अभाव में जो निरन्तर अविरह।

ग—अनन्त पांच प्रकार के हैं,

यथा–१. नाम अनन्त, २. स्थापना अनन्त, ३. द्रव्य अनन्त, ४. गणना अनन्त, ५. प्रदेशानन्त।

घ—अनन्तक पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. एकत अनन्तक—दीर्घता की अपेक्षा जो अनन्त है। एक श्रेणी का क्षेत्र।

२. द्विधा अनन्तक—लम्बाई और चौडाई की अपेक्षा से जो अनन्त हो।

३. देश विस्तार अनन्तक—रुचक प्रदेश से पूर्व आदि किसी एक दिशा में देश का जो विस्तार हो।

४. सर्वविस्तार अनन्तक—अनन्तप्रदेशी सम्पूर्ण आकाश।

५. शास्वतानन्तक—अनन्त समय की स्थिति वाले जीवादि द्रव्य।

४६३ —ज्ञान पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. आभिनिवोधिक ज्ञान,

२. श्रुत ज्ञान, ३. अवधि ज्ञान,

४. मन पर्यवज्ञान, ५. केवल ज्ञान।

इसी प्रकार वैमानिक देव पर्यन्त (चौवीस दण्डकों मे) कहे ।

४७० क—जम्बूद्वीप मे मेरु पर्वत के दक्षिण में गंगा महानदी मे पांच महानदियां मिलती हैं,

यथा—१. यमुना, २. सरयू, ३. आदि, ४. कोसी, ५. मही ।

ख—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु के दक्षिण मे सिन्धु महानदी मे पांच महानदियां मिलती हैं ।

यथा—१. शतद्रू, २. विभाषा, ३. वित्रस्ता, ४. एरावती, ५. चंद्रभागा ।

ग—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु के उत्तर मे रक्ता महानदी मे पाच महानदिया मिलती हैं,

यथा—१. कृष्णा, २. महा कृष्णा, ३. नीला, ४. महानीला, ५. महातीरा ।

घ—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु के उत्तर मे रक्तावती महानदी मे पाच महानदियां मिलती हैं,

यथा—१. इन्द्रा, २. इन्द्र सेना, ३. सुसेणा, ४. वारिसेणा, ५. महाभोगा ।

४७१ —पांच तीर्थंकर कुमारावस्था मे मुण्डित-यावत्-प्रव्रजित हुए,

यथा—१. वासुपूज्य, २, मल्ली, ३. अरिष्टनेमी ४, पार्श्वनाथ, ५. महावीर ।

३. निर्जरा के लिये—शिष्यों को वाचना देने से कर्मों की निर्जरा होती है।

४. सूत्र ज्ञान दृढ करने के लिये।

५. सूत्र का विच्छेद न होने देने के लिये।

ख—पाच कारणो से सूत्र सीखे,

यथा—१. ज्ञान वृद्धि के लिये,

२. दर्शन शुद्धि के लिये,

३. चारित्र शुद्धि के लिये,

४. दूसरे का दुराग्रह छुड़ाने के लिये,

५. पदार्थों के यथार्थ ज्ञान के लिये।

४६६ क—सौधर्म और ईशान कल्प मे विमान पांच वर्ण के हैं,

यथा—१. कृष्ण-यावत्-२-४, ५. शुक्ल।

ख—सौ धर्म और ईशान कल्प मे विमान पाचसौ योजन के ऊंचे हैं।

ग—ब्रह्मलोक और लान्तक कल्प मे देवताओ के भवधारणीय शरीर ऊंचाई मे पाच हाथ का है।

घ—नैरयिको ने पाच वर्ण और पाच रस वाले कर्म पुद्गल बाधे है, बाधते है और बाधेगे।

यथा—१-५ कृष्ण-यावत्-शुक्ल।

१-५ तिक्त-यावत्-मधुर।

षष्ठ स्थान (छठा ठाणा)

४७५ —छः स्थान युक्त अणगार गण का अधिपति हो सकता है।

यथा—१. श्रद्धालु, २. सत्यवादी, ३. मेधावी, ४. बहुश्रुत, ५. शक्ति सम्पन्न, ६. क्लेशरहित।

४७६ —छः कारणो से निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थी को पकड कर रखे या सहारा दे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नही होता।

यथा—१. विक्षिप्त को, २. क्रुद्ध को,

३. यक्षाविष्ट को, ४. उन्मत्त को,

५. उपसर्ग युक्त को, ६. कलह करती हुई को।

४७७ —छः कारणो से निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थिया कालगत(मृत) साधर्मिक के प्रति आदर भाव करें तो आज्ञा का अतिक्रमण नही होता है।

यथा—१. उपाश्रय से बाहर निकालना हो,

२. उपाश्रय के बाहर से जंगल मे ले जाना हो,

३ मृत को बाधना हो,

४७२ क—चमरचंचा राजधानी मे पाच सभायें हैं,
यथा—१. सुधर्मा सभा, २. उपपातसभा, ३. अभिषेकसभा, ४. अलकारसभा, ५. व्यवसाय सभा।

ख—प्रत्येक इन्द्र स्थान में पांच-पांच सभायें हैं,
यथा—१-५ सुधर्मा सभा-यावत्-व्यवसाय सभा।

४७३ पाच नक्षत्र पाच पांच तारा वाले हैं,
यथा—१. धनिष्ठा, २. रोहिणी, ३. पुनर्वसु, ४. हस्त, ५. विशाखा।

४७४ क—जीवो ने पांच स्थानों में कर्म पुद्गलों को पाप कर्म रूप में चयन किया, करते हैं और करेंगे।
यथा—१-५ एकेन्द्रिय रूप मे-यावत्-पञ्चेन्द्रिय रूप मे।

ख-च—इसी प्रकार उपचय, बंध, उदीरणा, वेदन तथा निर्जरा सम्बन्धी सूत्रक है।

छ—पांच प्रदेश वाले स्कन्ध अनन्त हैं।

ज पाच प्रदेशावगाढ़ पुद्गल अनन्त हैं।

झ पाच समयाश्रित पुद्गल अनन्त हैं।

ञ-ङ पाच गुण कृष्ण-यावत्-पांच गुण रूक्ष पुद्गल अनन्त हैं।

इति पंचम स्थान तृतीय उद्देशक

पंचम स्थान समाप्त

४८० छः जीव निकाय है,
यथा—१-६ पृथ्वीकाय—यावत्—त्रसकाय।

४८१ छः ग्रह छ-छः तारा वाले है,
यथा—१ शुक, २ बुध, ३ बृहस्पति, ४ अंगारक,[1]
५ शनैश्चर, ६ केतु।

४८२ क—ससारी जीव छः प्रकार के है,
यथा—पृथ्वीकायिक यावत्—त्रसकायिक।

ख—पृथ्वीकायिक जीव छ गति और छः आगति वाले है,

यथा—१ पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वी काय मे उत्पन्न होते हैं तो पृथ्वीकायिको से—यावत्—त्रसकायिको से उत्पन्न होते हैं।

ग—वही पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकायिकपने को छोड़-कर पृथ्वोकायिकपने को—यावत्—त्रसकायिकपने को प्राप्त होता है।

घ-ट—अप्कायिक जीव छः गति और छः आगति वाले है। इसी प्रकार—यावत्—त्रसकायिक पर्यन्तक है।

४८३ क—जीव छः प्रकार के है,
यथा—२-५ आभिनिबोधिक ज्ञानी—यावत्—केवल ज्ञानी, ६ अज्ञानी।

---

१. अंगारक–मंगल।

ख—असंवर (आश्रव) छः प्रकार के हैं,

यथा—१ ५ श्रोत्रेन्द्रिय असंवर—यावत्—स्पर्शेन्द्रिय असंवर, ६ मन असंवर।

४८८ क—सुख छ प्रकार का है,

यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय का सुख यावत् स्पर्शेन्द्रिय का सुख, ६ मन का सुख।

ख—दुःख छः प्रकार का है,

यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय का दुःख यावत् स्पर्शेन्द्रिय का दु ख, ६ मन का दुःख।

४८९ —प्रायश्चित्त छ प्रकार का है,

यथा—१. आलोचना योग्य—गुरु के समक्ष सरलता-पूर्वक लगे हुए दोष को स्वीकार करना।

२. प्रतिक्रमण योग्य—लगे हुए दोष की निवृत्ति के लिये पश्चात्ताप करना और पुनः दोप न लगे ऐसी सावधानी रखना।

३. उभय योग्य—आलोचन और प्रतिक्रमण योग्य।

४ विवेक योग्य—आधा कर्म आदि सदोप आहार को परठकर शुद्ध होना।

५. व्युत्मर्ग योग्य—कायचेष्टा का निरोध करके शुद्ध होना।

६. तप योग्य—विशिष्ट तप करके शुद्ध होना।

ख—अथवा जीव छः प्रकार के हैं।

यथा—१-५ एकेन्द्रिय—यावत्—पचेन्द्रिय,
६ अनोन्द्रिय।

ग—अथवा जीव ६ प्रकार के हैं,

यथा—१ औदरिक शरीरी, २ वैक्रिय शरीरी,
३ आहारक शरीरी, ४ तैजस शरीरी, ५ कार्मण
शरीरी, ६ अशरीरी।

४८४ —तृण वनस्पतिकाय छः प्रकार की है,
यथा—१ अग्रवीज, २ मूलवीज, ३ पर्ववीज,
४ स्कन्धवीज, ५ वीजरुह, ६ सम्मूर्छिम।

४८५ —छः स्थान सब जीवो को सुलभ नही है,
यथा—१ मनुष्यभव, २ आर्य क्षेत्र मे जन्म, ३ सुकुल
मे उत्पत्ति, ४ केवली कथित धर्म का श्रवण. ५ श्रुत
धर्म पर श्रद्धा, ६ श्रद्धित, प्रतीत और रोचित धर्म
का आचरण।

४८६ छः इन्द्रियो के छः विषय हैं,

यथा—१ श्रोत्रेन्द्रिय का विषय—यावत्—स्पर्शेन्द्रिय
का विषय, ६ मनका विषय।

४८७ क—सवर छः प्रकार के हैं,

यथा—१-५ श्रोतेन्द्रिय सवर—यावत्—स्पर्शेन्द्रिय
सवर, ६ मन संवर।

ख—ऋद्धिरहित मनुष्य छः प्रकार के है,

यथा—१. हेमवन्त क्षेत्र के।

२. हैरण्यवन्त क्षेत्र के।

३. हरिवर्ष क्षेत्र के।

४. रम्यक् क्षेत्र के।

५. देवकुरु और उत्तरकुरु क्षेत्र के।

६. अन्तरद्वीपों के।

४९२ क—अवसर्पिणी काल छ. प्रकार का है,

यथा—१-६ सुषम-सुषमा—यावत्—दुषम-दुषमा।

ख—उत्सर्पिणी काल छ प्रकार का है,

यथा—१-६ दुषम-दुषमा यावत् सुषम-सुषमा।

४९३ क—जम्बूद्वीपवर्ती भरत और ऐरवत क्षेत्रो मे अतीत उत्सर्पिणी के सुषम-सुषमा काल मे मनुष्य छः हजार धनुष के ऊचे थे, और उनका परमायु छ के आधे (तीन) पल्योपमो का था।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती भरत और ऐरवत क्षेत्रो मे इस उत्सर्पिणी के सुषम-सुषमा काल मे मनुष्यो की ऊँचाई और उनका परमायु पूर्ववत् ही था।

ग—जम्बूद्वीपवर्ती भरत और एरवत क्षेत्रो मे आगामी उत्सर्पिणी के सुषम-सुषमा काल मे मनुष्यों की ऊँचाई और उनका परमायु पूर्ववत् ही होगा।

४९० क—मनुष्य छः प्रकार के है,

यथा—१. जम्बूद्वीप मे उत्पन्न।

२. धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे उत्पन्न।

३. धातकी खण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध मे उत्पन्न।

४. पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध मे उत्पन्न।

५. पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध मे उत्पन्न।

६. अन्तरद्वीपो मे उत्पन्न।

ख—अथवा मनुष्य छ प्रकार के हैं,

यथा—	सम्मुर्छिम मनुष्य	१. कर्म भूमि मे उत्पन्न।
	,, ,,	२. अकर्म भूमि मे उत्पन्न।
	,, ,,	३. अन्तरद्वीपो मे उत्पन्न।
	गर्भज मनुष्य	१. कर्मभूमि मे उत्पन्न।
	,, ,,	२. अकर्म भूमि मे उत्पन्न।
	,, ,,	३. अन्तरद्वीपो में उत्पन्न।

४९१ क—ऋद्धिमान मनुष्य छ. प्रकार के हैं,

यथा—१. अरिहन्त, २. चक्रवर्ती, ३. बलदेव,

४. वासुदेव, ५. चारण[1], ६. विद्याधर।

---

१ जंघाचारण लब्धि युक्त।

४९६ क—अनात्मभाववर्ती (कषाय युक्त) मनुष्यो के लिए ये छह स्थान अहितकर है, अशुभ है, अशान्ति मिटाने मे असमर्थ हैं, अकल्याणकर हैं, और अशुभ परम्परा वाले है,

यथा—१. आयु अथवा दीक्षा काल,

२. परिवार–पुत्रादि, या शिष्यादि,

३. श्रुत, ४. तप, ५. लाभ, ६. पूजा-सत्कार।

ख—आत्मभाववर्ती (कषाय रहित) मनुष्यो के लिए उक्त छह स्थान हितकर हैं, शुभ है, अशान्ति मिटाने मे समर्थ है, कल्याणकर हैं, और शुभ परम्परा वाले हैं,

यथा—१-६ पर्याय यावत् पूजा-सत्कार।

४९७ क—जाति आर्य मनुष्य छः प्रकार के है,
यथा—१. अंबष्ठ, २. कलद, ३ वैदेह, ४. वेदगायक, ५. हरित, ६. चुचण।

ख—कुलार्य मनुष्य छ. प्रकार के है,
यथा—१. उग्र कुल के, २. भोग कुल के. ३. राजन्य कुल के, ४. इक्ष्वाकुकुल के, ५. ज्ञान कुल के, ६. कौरव कुल के।

४९८ —लोक स्थिति छः प्रकार की है,

यथा—१. आकाश पर वायु,

२. वायु पर उदधि,

घ—जम्बूद्वीपवर्ती देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रों मे मनुष्यो की ऊंचाई और उनका परमायु पूर्ववत् ही है।

ङ-न—इसी प्रकार धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे पूर्ववत् चार आलापक हैं—यावत्—पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध मे भी पूर्ववत् चार आलापक है।

४६४ —संघयण छ: प्रकार के है,

यथा—१. वज्ररिषभ नाराच संहनन,

२. ऋषभ नाराच संहनन,

३. नाराच संहनन,

४. अर्ध नाराच संहनन,

५. कीलिका सहनन,

६. सेवार्त संहनन।

४६५ —सस्थान छ: प्रकार के हैं,

यथा—१. सम चतुरस्र संस्थान,

२. न्यग्रोध परिमण्डल सस्थान,

३. साती संस्थान,

४. कुब्ज संस्थान,

५. वामन सस्थान,

६. हुंड संस्थान।

४. संयम की रक्षा के लिए,

५. प्राणियो की रक्षा के लिये,

६. धर्म चिन्तन के लिये।

ख—छः कारण से श्रमण निर्ग्रन्थ के आहार त्यागने पर भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नही होता।

यथा—१. आतङ्क-ज्वरादि की शान्ति के लिए,

२. उपसर्ग—राजा या स्वजनो द्वारा उपसर्ग किये जाने पर,

३. तितिक्षा—सहिष्णु बनने के लिए,

४. ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए,

५. प्राणियों की रक्षा के लिये,

६. शरीर त्यागने के लिये।

५०१ —छः कारणो से आत्मा उन्माद को प्राप्त होता है,

यथा—१. अर्हन्तो का अवर्णवाद[1] बोलने पर,

२. अर्हन्त प्रज्ञप्त धर्म का अवर्णवाद बोलने पर,

३. आचार्य और उपाध्यायो के अवर्णवाद बोलने पर

४. चतुर्विध संघ का अवर्णवाद बोलने पर,

५. यक्षाविष्ट होने पर,

६ मोहनीय कर्म का उदय होने पर।

---

१ अवर्णवाद—निन्दा

३. उदधि पर पृथ्वी,

४. पृथ्वी पर त्रस और स्थावर प्राणी,

५ जीव के सहारे अजीव,

६. कर्म के सहारे जीव।

४९९ क—दिशायें छः हैं,

यथा—१ पूर्व, २ पश्चिम, ३ दक्षिण, ४ उत्तर, ५ ऊर्ध्व, ६ अधो।

ख—उक्त छह दिशाओं में जीवो की गति होती हैं।
इसी प्रकार (ग) जीवो की आगति, (घ) व्युत्क्रान्ति, (ङ) आहार, (च) शरीर की वृद्धि, (छ) शरीर की हानि, (ज) शरीर की विकुर्वणा, (झ) गतिपर्याय (ञ) वेदनादि समुद्घात, (ट) दिन-रात आदि काल का संयोग, (ठ) अवधि आदि दर्शन से सामान्य ज्ञान, (ड) अवधि आदि ज्ञान से विशेषज्ञान, (ढ) जीव-स्वरूप का प्रत्यक्ष ज्ञान, (ण) पुद्गलादि अजीव-स्वरूप का प्रत्यक्ष ज्ञान, (त) इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चो के और मनुष्यो के चौदह-चौदह सूत्र है।

५०० क—छः कारणो से श्रमण निर्ग्रन्थ के आहार करने पर भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नही होता,
यथा—१. क्षुधा शान्त करने के लिये,

२. सेवा करने के लिए,

३, ईर्या समिति के शोधन के लिये,

३. अनानुबंधि—उतावल या झटकाये बिना प्रति-लेखना करना।

४. अमोसली—वस्त्र को मसले बिना की गई प्रति-लेखना।

५. छः पुरिमा और नव खोटका।

५०४ —दण्डक सूत्र—

क—लेश्याएं छः हैं,

यथा—१-६ कृष्णलेश्या यावत् शुक्ललेश्या।

ख—तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रियों में छह लेश्यायें हैं :

यथा—१-६ कृष्णलेश्या यावत् शुक्ल लेश्या।

ग—मनुष्य और देवताओं में छः लेश्यायें हैं,

यथा—१-६ कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या।

५०५ —शक्रदेवेन्द्र देवराज सोम महाराजा की छः अग्रमहिषियां हैं।

५०६ —ईशान देवेन्द्र की मध्यम परिषद् के देवों की स्थिति छः-पल्योपम की है।

५०७ क—छः श्रेष्ठ दिककुमारियां हैं,

यथा—१. रूपा, २. रूपांशा, ३. सुरूपा, ४. रूपवती, ५. रूपकांता, ६. रूपप्रभा।

ख—छः श्रेष्ठ विद्युत् कुमारियां हैं,

यथा—१. आला, २. शुक्रा, ३. सतेरा, ४. सौदामिनी, ५. इन्द्रा, ६. घन विद्युता।

५०२ —प्रमाद छः प्रकार के है,

यथा १. मद्य[1], २. निद्रा, ३. विषय, ४. कषाय, ५. द्यूत, ६ प्रतिलेखना मे प्रमाद ।

५०३ क—प्रमाद पूर्वक की गई प्रति लेखना छः प्रकार की है,

यथा—१. आरभटा—उतावल से प्रति लेखना करना,

२. संमर्दा—मर्दन करके प्रति लेखना करना,

३. मोमली—वस्त्र के ऊपर के नीचे के-या तिर्यक् भाग को प्रतिलेखन करते हुए परस्पर छुहाना ।

४ प्रस्फोटना—वस्त्र की रज को झडकाना ।

५. विक्षिप्ता—प्रतिलेखित वस्त्रो को अप्रतिलेखित वस्त्रों पर रखना ।

६. वेदिका—प्रतिलेखना करते समय विधिवत् न बैठना ।

ख—अप्रमाद प्रतिलेखना (सावधानी पूर्वक की गई प्रति-लेखना) छह प्रकार की है,

यथा—१. अनर्तिता—शरीर या वस्त्र को न नचाते हुए प्रतिलेखना करना ।

२. अवलिता—वस्त्र या शरीर को झुकाये बिना प्रतिलेखना करना ।

---

१ प्रमाद मद्य तुल्य है ।

४. ध्रुव—एक बार धारण किये हुये अर्थ को सदा के लिए स्मरण मे रखने वाली मति।

५. अनिश्रित—ध्वजादि चिह्न के बिना ग्रहण करने वाली मति।

६. असंदिग्ध—संशय रहित ग्रहण करने वाली मति।

ख—ईहामति छ प्रकार की है,

यथा—१-६ क्षिप्र ईहामति—शीघ्र विचार करने वाली मति—यावत्—संदेह रहित विचार करने वाली मति।

ग—अवायमति छ प्रकार की है।

यथा—१-६ शीघ्र निश्चय करने वाली मति—यावत्—सदेह रहित निश्चय करने वाली मति।

घ—धारणा छः प्रकार की है,

यथा—१. बहु धारणा—बहुत धारण करने वाली मति।

२. बहुविध धारणा—अनेक प्रकार से धारण करने वाली मति।

३. पुराण धारणा—पुराणे (जूने) को धारण करने वाली मति।

४ दुर्धर धारणा—गहन विषयों को धारण करने वाली मति।

५०८ क—धरण नागकुमारेन्द्र की छः अग्रमहिषिया हैं।
यथा—१. आला, २. शुक्रा, ३. सतेरा, ४. सौदामिनी, ५. इन्द्रा, ६, घनविद्युता।

ख—भूतानन्द नाग कुमारेन्द्र की छः अग्रमहिषिया हैं
यथा—१. रूपा, २. रूपांशा, ३. सुरूपा, ४. रूपवती, ५. रूपकांता, ६. रूपप्रभा।

ग-ञ—घोष पर्यन्त दक्षिण दिशा के सभी देवेन्द्रो की अग्रमहिषियो के नाम धरणेन्द्र के समान हैं।

ट-द—महाघोष पर्यन्त उत्तर दिशा के सभी देवेन्द्रों की अग्र-महिषियो के नाम भूतानन्द के समान हैं।

५०९ क—धरण नागकुमारेन्द्र के छ हजार सामानिक देव हैं।

ख-न—इसी प्रकार भूतानन्द यावत् महाघोष नागकुमारेन्द्र के छ हजार सामानिक देव हैं।

५१० क—अवग्रहमति छः प्रकार की हैं,
यथा—१. क्षिप्रा—क्षयोपशम की निर्मलता से शन्ख आदि के शब्द को शीघ्र ग्रहण करने वाली मति।

२. बहु—शख आदि अनेक प्रकार के शब्दो को ग्रहण करने वाली मति।

३. बहुविध—शब्दो के माधुर्य आदि पर्यायों को ग्रहण करने वाली मति।

२. विनय—जिस तप के द्वारा विशेष रूप से कर्मों का नाश हो।

३. वैयावृत्य—सेवा, सुश्रूषा।

४ स्वाध्याय—विविध प्रकार का अभ्यास करना।

५. ध्यान—एकाग्र होकर चिंतन करना।

६. व्युत्सर्ग—परित्याग[1]। चित्त की चचलता के कारणो का परित्याग करना।

५१२ —विवाद छ: प्रकार का है,

यथा—१ अवष्वष्कय—पीछे हटकर प्रारम्भ मे कुछ सामान्य तर्क देकर समय बितावे और अनुकूल अवसर पाकर प्रतिवादी पर आक्षेप करे।

२. उत्ष्वष्वय—पीछे हटाकर किसी प्रकार प्रतिवादी से विवाद बध करावे और अनुकूल अवसर पाकर पुन विवाद करे।

३. अनुलोम्य—सभ्यो को और सभापति को अनुकूल करके विवाद करे।

---

१ इसके दो भेद है यथा—

(क) द्रव्य व्युत्सर्ग—गण, शरीर, उपाधि, आहारादि का त्याग करना।

(ख) भाव व्युत्सर्ग—क्रोधादि कलुषित भावों का त्याग करना।

५. अनिश्रित धारणा—ध्वजा आदि चिह्नों के बिना धारण करने वाली मति।

६. असंदिग्ध धारणा—संशय बिना धारण करने वाली मति।

५११ क—बाह्य तप छह प्रकार का है,

यथा—१. अनशन-आहार त्याग, एक उपवास से लेकर छः मास पर्यन्त।

२. ऊनोदरिका—कवल आदि न्यून ग्रहण करना।

३. भिक्षाचर्या—नाना प्रकार के अभिगह धारण करके आहार आदि ग्रहण करना[1]।

४. रस परित्याग—क्षीर आदि मधुर रसों का त्याग करना।

५. काय क्लेश—अनेक प्रकार के आसन करना।

६. प्रति सलीनता—इन्द्रिय जय, कषाय जय और योगों का जय।[2]

ख—आभ्यन्तर तप-छह प्रकार का है,

यथा—१. प्रायश्चित्त—आलोचनादि दस प्रकार का प्रायश्चित्त।

---

१ भिक्षाचर्या—वृत्तिसंक्षेप।

२ प्रतिसंलीनता—बिविक्त शय्यासन।

४. पतंगवीथिका—पतंगिया की उड़ान के समान बिना क्रम के गोचरी करना।

५. शवुक वृत्ता—शंख के वृत्त की तरह घरों का क्रम बनाकर गोचरी करना।

६. गत्वा प्रत्यागत्वा—प्रथम पक्ति के घरो मे क्रमशः आद्योपान्त गोचरी करके द्वितीय पक्ति के घरो मे क्रमशः आद्योपान्त गोचरी करना।

५१५ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण मे—इस रत्नप्रभा पृथ्वी मे छह अपक्रान्त (अत्यन्त घृणित) महा नरकावास है,

यथा—१. लोल, २. लोलुप, ३. उद्दग्ध, ४. निर्दग्ध, ५. जरक, ६. प्रजरक।

ख—चौथी पक प्रभा पृथ्वी मे छह अपक्रान्त (अत्यन्त घृणित) महा नरकावास हैं,

यथा—१. आर, २. वार, ३. मार, ४. रोर, ५. रोरुक ६. खाडखड।

५१६ —ब्रह्मलोक कल्प मे छह विमान-प्रस्तर हैं,

यथा—१. अरज, २. विरज, ३. निरज, ४. निर्मल, ५. वितिमिर, ६. विशुद्ध।

५१७ क—ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र के साथ छह नक्षत्र ३०, ३० मुहूर्त तक सम्पूर्ण क्षेत्र मे योग करते हैं।

यथा—१. पूर्वाभद्र पद, २. कृत्तिका, ३. मघा, ४ पूर्वा फाल्गुनी, ५. मूल, ६. पूर्वाषाढा।

४. प्रतिलोम्य—सभ्यो को और सभापति को प्रतिकूल करके विवाद करे।

५. भेदयित्वा—सभ्यो मे मतभेद पैदा करके विवाद करे।

६. मेलयित्वा—कुछ सभ्यो को अपने पक्ष मे मिलाकर विवाद करे।

५१३ —क्षुद्र प्राणी छः प्रकार के है,
यथा—१. द्वीन्द्रिय, २. त्रीन्द्रिय, ३. चतुरिन्द्रिय,
४. सम्मूर्छिम पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक,
५. तेजस्कायिक, ६. वायु कायिक।

५१४ —गौचरी छ प्रकार की है,
यथा—१. पेटा—गाव के चार विभाग करके गौचरी करना।

२. अर्ध पेटा—गाव के दो विभाग करके गौचरी करना।

३. गोमूत्रिका—घरो की दो पंक्तियो मे गोमूत्रिका के समान क्रम बना कर गौचरी करे।[1]

---

१ गोमूत्रिका—गाय जैसे तिरछी गति से प्रस्रवण करती है वैसी तिरछी गति से गोचरी करना।

२. गंध (ग्रहण न कर सकने) का दुःख प्राप्त नही होता।

३. रसास्वादन का सुख नष्ट नही होता।

४. रसास्वादन न कर सकने का दुःख प्राप्त नही होता।

५. स्पर्श जन्य सुख नष्ट नही होता।

६. स्पर्शानुभव न होने का दु ख प्राप्त नही होता।

ख—तेइन्द्रिय जीवो की हिंसा करने से छह प्रकार का असयम होता है।

यथा—१. गंध ग्रहण जन्य सुख प्राप्त नही होता।

२. गध ग्रहण न कर सकने का दु.ख प्राप्त होता है।

३. रसास्वादन जन्य सुख प्राप्त नही होता।

४. रसास्वादन न कर सकने का दुःख प्राप्त होता है।

५. स्पर्शजन्य सुख प्राप्त नही होता।

६. स्पर्शानुभव न कर सकने का दुख प्राप्त होता है।

५२२ क—जम्बूद्वीप मे छह अकर्म भूमियां है,

यथा—१. हैमवत, २. हैरण्यवत, ३. हरिवर्ष, ४. रम्यक् वर्ष, ५. देवकुरु, ६. उत्तर कुरु।

ख—जम्बूद्वीप मे छह वर्ष (क्षेत्र) है

यथा १. भरत, २. ऐरवत, ३. हैमवत,

ख—ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र के साथ छह नक्षत्र १५-१५ मुहूर्त तक आधे क्षेत्र मे योग करते है,
यथा—१. शतभिषा, २. भरणी, ३. आर्द्रा, ४. अश्लेषा, ५. स्वाती, ६. ज्येष्ठा।

ग—ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र के साथ छह नक्षत्र आगे और पीछे दोनो ओर ४५-४५ मुहूर्त तक योग करते हैं,
यथा—१. रोहिणी, २. पुनर्वसु, ३. उत्तरा फाल्गुनी, ४ विशाखा, ५. उत्तराषाढा, ६. उत्तराभाद्रपदा, ६. उत्तराषाढा।

५१८ —अभिचन्द्र कुलकर छ सौ धनुष के ऊँचे थे।

५१९ —भरत चक्रवर्ती छह लाख पूर्व तक महाराजा (राजपद पर) रहे।

५२० क—भगवान पार्श्वनाथ के छ सौ वादी मुनियो की सपदा थी वे वादी मुनि देव-मनुष्यो की परिषद् मे अजेय थे।

ख—वासुपूज्य अर्हन्त के साथ छ सौ पुरुष प्रव्रजित हुये।

ग—चन्द्र प्रभ अर्हन्त छ मास पर्यन्त छद्मस्थ रहे।

५२१ क—तेइन्द्रिय जीवो की हिंसा न करने वाला छह प्रकार के सयम का पालन करता है।
यथा—१ गंध ग्रहण का सुख नष्ट नहीं होता।

३. तिगिच्छद्रह, ४. केसरीद्रह,

५. महा पौंडरीकद्रह, ६. पौंडरिक द्रह ।

छ—उन महाद्रहों मे छह पल्योपम की स्थिति वाली छ: महर्धिक देविया रहती है ।

यथा—१. श्री, २. ह्री, ३. धृति, ४. कीर्ति, ५. बुद्धि ६. लक्ष्मी ।

ज—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से दक्षिण दिशा मे छ: महानदियां है ।

यथा—१. गंगा, २. सिंधु, ३. रोहिता ४. रोहितांशा, ५. हरी, ६. हरिकांता ।

झ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से उत्तर दिशा मे छः महानदियां हैं,

यथा—१. नरकाता, २. नारीकाता, ३. सुवर्ण कूला, ४. रुप्य कूला, ५. रक्ता, ६. रक्तवती ।

ञ—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु से पूर्व मे सीता महानदी के दोनों किनारो पर छ: अन्तर नदियां हैं,

यथा—१. ग्राहवती, २. द्रहवती, ३. पकवती, ४. तप्तजला, ५. मत्तजला ६. उन्मत्तजला ।

ट—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से पश्चिम मे शीतोदा महानदी के दोनो किनारो पर छ: अन्तर नदिया है ।

यथा—१. क्षीरोदा, २. सिंह श्रोता, ३. अंतर्वाहिनी,

४. हैरण्यवत, ५. हरिवर्ष, ६. रम्यक् वर्ष[1]।

ग—जम्बूद्वीप मे छ वर्षधर पर्वत हैं,

यथा—१. चुल्ल (छोटा) हिमवंत, २. महा हिमवत

३. निषध, ४. नीलवत,

५. रुक्मि, ६. शिखरी।

घ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा मे छः कूट (शिखर) है।

यथा—१. चुल्ल हैमवंत कूट, २. वैश्रमण कूट,

३. महा हैमवत कूट, ४. वैडूर्य कूट,

५. निषध कूट, ६. रुचक कूट।

ङ—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु पर्वत से उत्तर दिशा मे छह कूट हैं।

यथा—१. नीलवान कूट, २. उपदर्शन कूट,

३. रुक्मिकूट, ४. मणिकंचन कूट,

५. शिखरी कूट, ६. तिगिच्छ कूट।[2]

च—जम्बूद्वीप मे छ महाद्रह हैं,

यथा—१. पद्मद्रह, २. महा पद्मद्रह,

---

१ वर्ष (क्षेत्र) यद्यपि सात हैं किन्तु छठा स्थान होने से छह कहे हैं।

२ दक्षिण और उत्तर में स्थित वर्ष धरों में से प्रत्येक वर्षधर पर्वत के दो दो कूटों को यहा गिना गया है।

५२४ क—दिनक्षय वाले छः पर्व है ।[1] यथा

१. तृतीयपर्व—आषाढ कृष्ण पक्ष ।

२ सप्तम पर्व—भाद्रपद कृष्ण पक्ष ।

३. ग्यारहवाँ पर्व—कार्तिक कृष्ण पक्ष ।

४. पन्द्रहवाँ पर्व—पोष कृष्ण पक्ष ।

५. उन्नीसवाँ पर्व—फाल्गुन कृष्ण पक्ष ।

६. तेतीसवाँ पर्व—वैशाख कृष्ण पक्ष ।

ख—दिन वृद्धि वाले छः पर्व है,[२] यथा—

१. चतुर्थ पर्व—आषाढ शुक्ल पक्ष ।

२. आठवाँ पर्व—भाद्रपद शुक्ल पक्ष ।

३. बारहवाँ पर्व—कार्तिक शुक्ल पक्ष ।

४. सोलहवाँ पर्व—पोष शुक्ल पक्ष ।

५. वीसवाँ पर्व—फाल्गुन शुक्ल पक्ष ।

६. चौवीसवाँ पर्व—वैशाख शुक्ल पक्ष ।

५२५ —आभिनिबोधिक ज्ञान के छः अर्थावग्रह है, यथा—
१-६ श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह यावत् नोइन्द्रिय अर्थावग्रह ।

---

१ इन छः पर्वो (पक्षो) मे दिन की हानि (दिन छोटे) और रात्रि की वृद्धि (रातें बड़ी) होती है ।

४. उर्मिमालिनी, ५. फेनमालिनी

६. गम्भीर मालिनी ।

१-११ क—धातकीखण्ड के पूर्वार्ध मे छह अकर्म भूमियाँ हैं, यथा—हैमवत आदि नदी-सूत्र पर्यन्त जम्बूद्वीप के समान ग्यारह-सूत्र कहे ।

ख—धातकीखण्ड के पश्चिमार्ध मे जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र हैं ।

ग—पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध मे जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र हैं ।

घ—पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध में जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र हैं ।[1]

५२३ —ऋतुएँ छः हैं, यथा—

१. प्रावृट्—आषाढ और श्रावण मास ।

२. वर्षा ऋतु—भाद्रपद और आश्विन ।

३. शरद्—कार्तिक और मार्गशीर्ष ।

४. हेमन्त—पोष और माघ ।

५. वसन्त—फाल्गुन और चैत्र ।

६. ग्रीष्म—वैशाख और ज्येष्ठ ।

---

१ सब मिलकर ५५ सूत्र है ।

२. हीलित वचन—ईर्ष्या भरे वचन ।

३. खिसित वचन—गुप्त बातें प्रगट करना ।

४. परुष वचन—कठोर वचन ।

५. गृहस्थ वचन—बेटा, भाई आदि कहना ।

६. उदीर्ण वचन—उपशान्त कलह को पुन उद्दीप्त करने वाले वचन ।

५२८ —कल्प (साधु का आचार) के छः प्रस्तार हैं ।[1]

यथा—१ छोटा साधु बड़े साधु को कहे कि तुमने प्राणातिपात किया है ।

२. छोटा साधु बड़े साधु को कहे कि तुम मृषावाद बोले हो ।

३. छोटा साधु बडे साधु को कहे कि तुमने अमुक वस्तु चुराई है ।

४. छोटा साधु बड़े साधु को कहे कि तुमने अविरति का सेवन किया है ।

५. छोटा साधु बडे साधु को कहे कि तुम अपुरुष (नपुंसक हो) ।

६. छोटा साधु बड़े साधु को दास वचन (तुम दास हो) कहे ।

---

१ प्रस्तार—प्रायश्चित्त बढ़ाना ।

५२६ —अवधि ज्ञान छः प्रकार का है। यथा—

१. आनुगामिक—मनुष्य के साथ जैसे मनुष्य की आँखें चलती हैं उसी प्रकार अवधि ज्ञान भी अवधि-ज्ञानी के साथ चलता है।

२. अनानुगामिक—जो अवधि ज्ञान दीपक की तरह अवधि ज्ञानी के साथ नही चलता।

३. वर्धमान—जो अवधि ज्ञान प्रति समय बढ़ता रहता है।

४. हीयमान—जो अवधि ज्ञान प्रति समय क्षीण होता रहता है।

५. प्रतिपाती—जो अवधि ज्ञान पूर्ण लोक को देखने के पश्चात् नष्ट हो जाता है।

६. अप्रतिपाती—जो अवधि ज्ञान पूर्ण लोक को देखने के पश्चात् अलोक के एक प्रदेश को देखने की शक्ति वाला है।

५२७ —निर्ग्रन्थो और निर्ग्रन्थियों को ये छः अवचन (कुवचन) कहने योग्य नही हैं।

यथा—१. अलीक वचन—असत्य वचन[1]।

---

१ ऊंघ लेने वाले निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थी को कोई कहे कि—ऊंघ क्यों लेते हो? उस समय निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थी कहे कि—मैं प्रचला (ऊंघ) नहीं लेता।

२. छेदोपस्थापनिक कल्पस्थिति—शैक्षकाल पूर्ण होने पर पंच महाव्रत धारण कराने की मर्यादा।

३. निर्विसमान कल्प स्थिति—परिहार विशुद्धि तप स्वीकार करने वाले की मर्यादा।

४. निर्विष्ठकल्पस्थिति—पारिहारिक तप पूरा करने वाले की मर्यादा।

५. जिन कल्पस्थिति—जिन कल्प की मर्यादा।

६. स्थविर कल्पस्थिति—स्थविर कल्प की मर्यादा।

५३१ क—श्रमण भगवान् महावीर चतुर्विध आहार परित्याग-पूर्वक छट्ठ भक्त (दो उपवास) करके मुंडित यावत् प्रव्रजित हुये।

ख—श्रमण भगवान् महावीर को जब केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ था उस समय चौविहार छट्ठ भक्त था।

ग—श्रमण भगवान् महावीर जब सिद्ध यावत् सर्व दुःख से मुक्त हुए उस समय चौविहर छट्ठ भक्त था।

५३२ क—सनत्कुमार और माहेन्द्रकल्प—देवलोक में विमान छः सौ योजन ऊंचे हैं।

ख—सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प में भवधारणीय शरीर की अवगाहना—ऊंचाई छः हाथ की है।

इन छः वचनों का जानबूझ कर भी यदा साधु पूर्ण प्रायश्चित्त न दे तो वह साधु उसी प्रायश्चित्त का भागी होता है।

५२९ —कल्प (साधु का आचार) के छः पलिमंथू (संयम के घातक) हैं।

यथा—१. कौत्कुच्य—कुचेष्टा करना संयम का घात करना है।

२. मौखर्य—अनावश्यक बोलना सत्य वचन का घात करना है।

३. चक्षुलोलुप—चंचल चक्षु रहना ईर्यासमिति का घात करना है।

४. तितिनिक—इष्ट वस्तु के अलाभ से दुखी होना एषणा प्रधान गोचरी का घात करना है।

५. इच्छालोभिक—अति लोभ करना मुक्ति मार्ग का घात करना है।

६. मिथ्या निदान करण—लोभ से निदान करना मोक्ष मार्ग का घात करना है। क्योंकि निदान (फलेच्छा) न करना ही भगवान् ने प्रशस्त कहा है।

५३० —कल्प-साध्वाचार-की व्यवस्था छः प्रकार की है, यथा—१. सामायिक कल्पस्थिति—सामायिक संबंधी मर्यादा।

२. मिथ्याभिनिवेश प्रश्न[1]—परपक्ष को दूषित करने के लिये किया गया प्रश्न ।

३. अनुयोगी प्रश्न—व्याख्या करने के लिए ग्रन्थकार द्वारा किया गया प्रश्न ।

४. अनुलोभ प्रश्न—कुशल प्रश्न ।

५. तथा ज्ञान प्रश्न—गणधर गौतम के प्रश्न ।

६. अतथाज्ञान प्रश्न—अज्ञ व्यक्ति द्वारा किया गया प्रश्न ।

५३५ क—चमर चंचा राजधानी मे उत्कृष्ट विरह छः मास का है ।

ख—प्रत्येक इन्द्रप्रस्थान मे उपपात विरह उत्कृष्ट छ मास का है ।

ग—सप्तम पृथ्वी तमस्तमा मे उपपात विरह उत्कृष्ट छ' मास का है ।

घ—सिद्धगती मे उपपात विरह उत्कृष्ट छः माम का है ।

दण्डक सूत्र

५३६ क—आयुवध छ प्रकार का है,

यथा—१. जातिनामनिधत्तायु—जातिनाम कर्म के साथ प्रति समय भोगने के लिये आयुकर्म के दलिकों की निषेक नाम की रचना ।

---

१ व्युद्ग्रह प्रश्न

५३३ क—भोजन का परिणाम स्वभाव छः प्रकार का है
यथा—१. मनोज्ञ—मन को अच्छा लगने वाला।
२. रसिक—माधुर्यादिरस युक्त।
३ प्रीणनीय—तृप्ति करने वाला तथा शरीर के रसो मे समता लाने वाला।
४. बृंहणीय—शरीर की वृद्धि करने वाला।
५. दीपनीय—जठराग्नि प्रदीप्त करने वाला।
६. मदनीय—कामोत्तेजक।

ख—विष का परिणाम—स्वभाव छह प्रकार का है।
यथा—१. दष्ट—सर्प आदि के डक से पीडा पहुँचाने वाला।
२. भुक्त—खाने पर पीडा पहुंचाने वाला।
३. निपतित—शरीर पर गिरते ही पीडित करने वाला अथवा दृष्टिविष।
४. मासानुसारी—मास मे व्याप्त होने वाला।
५. शोणितानुसारी—रक्त मे व्याप्त होने वाला।
६. अस्थिमज्जानुसारी—हड्डी और चर्बी मे व्याप्त होने वाला।

५३४ —प्रश्न छः प्रकार के हैं,
यथा—१. संशय प्रश्न—सशय होने पर किया जाने वाला प्रश्न।

५३७ —भाव छः प्रकार के हैं,

यथा—१. औदयिक, २. औपशमिक, ३. क्षायिक, ४. क्षायोपशमिक, ५. पारिणामिक, ६. सान्निपातिक।

५३८ —प्रतिक्रमण छः प्रकार के है,

यथा—१. उच्चार प्रतिक्रमण,—मल को परठकर स्थान पर आवे और मार्ग मे लगे दोषों का प्रतिक्रमण करे।

२. प्रश्रवण प्रतिक्रमण—मूत्र परठकर पूर्ववत् प्रतिक्रमण करे।

३. इत्वरिक प्रतिक्रमण—थोडे काल का प्रतिक्रमण यथा—दिन सम्बन्धी प्रतिक्रमण या रात्रि संबंधी प्रतिक्रमण।

४. यावज्जीवन का प्रतिक्रमण—महाव्रत ग्रहण करना अथवा भक्त परिज्ञा स्वीकार करना।

५. यत्किंचित् मिथ्या प्रतिक्रमण—जो मिथ्या आचरण हुआ हो उसका प्रतिक्रमण।

६. स्वाप्नान्तिक प्रतिक्रमण—स्वप्न सम्बन्धी प्रतिक्रमण।

५३९ क—कृत्ति का नक्षत्र के छः तारे हैं।

ख—अश्लेषा नक्षत्र के छः तारे है।

५४० क—जीवो ने छः स्थानो मे अर्जित पुद्गलो को पाप कर्म के रूप मे एकत्रित किया है। एकत्रित करते है और एकत्रित करेंगे।

२. गतिनाम निधत्तायु—गतिनाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

३. स्थितिनाम निधत्तायु—स्थिति की अपेक्षा से निषेक रचना।

४. अवगाहना नाम निधत्तायु—जिसमे आत्मा रहे वह अवगाहना औदारिक शरीर आदि की होती है। अतः शरीर नाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

५. प्रदेश नाम निधत्तायु—प्रदेश रूप नाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

६. अनुभाव नाम निधत्तायु—अनुभाव विपाक रूप नाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

ख—१-४ नैरयिको के यावत् वैमानिको के छः प्रकार का आयुबंध होता है।

यथा १-६ जातिनाम निधत्तायु—यावत् अनुभाव नाम निधत्तायु।

ग—१-४ नैरयिक यावत् वैमानिक छः माम आयु शेष रहने पर परभव का आयु बांधते हैं।[1]

---

१ असंख्य वर्ष की आयु वाले मनुष्य और तिर्यञ्च छः मास आयु शेष रहने पर परभव का आयु बांधते हैं।

सप्तम स्थान (सातवां ठाणा)

५४१ —गण छोडने के सात कारण हैं,

यथा—१ मै सब धर्मों (ज्ञान, दर्शन और चारित्र की साधनाओ) को प्राप्त करना (साधना) चाहता हूँ और उन धर्मों (साधनाओ) को मैं अन्य गण मे जाकर ही प्राप्त कर (साध) सकूंगा अतः मैं गण छोड़कर अन्य गण मे जाना चाहता हूँ।[1]

२. मुझे अमुक धर्म (साधना) प्रिय है और अमुक धर्म (साधना) प्रिय नही है। अत मैं गण छोड़कर अन्यगण में जाना चाहता हूँ।

३. सभी धर्मों (ज्ञान, दर्शन और चारित्र) मे मुझे सन्देह है अत संशय निवारणार्थ मैं अन्य गण मे जाना चाहता हूँ।

४. कुछ धर्मो (साधनाओ) मे मुझे सशय है और कुछ धर्मो (साधनाओ) मे संशय नही है। अत मैं संशय निवारणार्थ अन्य गण मे जाना चाहता हूँ।

---

१ धर्माचार्य को गण छोड़ने का कारण बताकर गण छोड़ने की आज्ञा प्राप्तकर लेनी चाहिए। आज्ञा लिये विना गण नही छोड़ना चाहिये।

यथा—१-६ पृथ्वीकाय निर्वर्तित—यावत्—त्रसकाय निर्वर्तित ।

ख-ज—इसी प्रकार पाप कर्म के रूप मे चय, उपचय, बध, उदीरण, वेदन और निर्जरा सम्बन्धी सूत्र है ।

झ—छः प्रदेशी स्कध अनन्त हैं ।

ञ—छ प्रदेशो मे स्थित पुद्गल अनन्त है ।

ट—छः समय की स्थिति वाले पुद्गल अनन्त हैं ।

ठ-ण—छ गुण काले—यावत्—छः गुण रूखे पुद्गल अनन्त हैं ।

षष्ठ स्थान समाप्त

लोक देखा है उसी दिशा मे लोक है अन्य दिशा मे नही है— ऐसी प्रतीति उसे होती है और वह मानने लगता है कि मुझे ही विशिष्ट ज्ञान उत्पन्न हुआ है और वह दूसरो को ऐसा कहता है कि जो लोग "पाच दिशाओ मे लोक है" ऐसा कहते हैं वे मिथ्या कहते है।

द्वितीय विभंग ज्ञान—किसी श्रमण-ब्राह्मण को पाच दिशा का लोकाभिगम ज्ञान उत्पन्न होता है। अत. वह पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर दिशा मे तथा ऊपर सौधर्म देवलोक पर्यन्त लोक देखता है तो उस समय उसे यह अनुभव होता है कि लोक पाच दिशाओ मे ही हैं। तथा यह भी अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय ज्ञान उत्पन्न हुआ है। और वह यो कहने लगता है कि जो लोग "एक ही दिशा मे लोक है" ऐसा कहते है वे मिथ्या कहते हैं।

तृतीय विभग ज्ञान—किसी श्रमण या ब्राह्मण को क्रियावरण जीव नाम का विभंग ज्ञान उत्पन्न होता है तो वह जीवो को हिंसा करते हुए, झूठ बोलते हुए, चोरी करते हुए, मैथुन करते हुए, परिग्रह मे आसक्त रहते हुए और रात्रि भोजन करते हुए देखता है किन्तु इन सब कृत्यो से जीवो के पाप कर्मों का बन्ध होता है यह नही देख सकता उस समय उसे यह अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय ज्ञान उत्पन्न हुआ है। और वह यो मानने लगता है कि जीव के आवरण (कर्म बन्ध) क्रिया रूप ही है। साथ ही यह भी कहने लगता है कि जो श्रमण ब्राह्मण

५. सभी धर्मों (ज्ञान दर्शन और चारित्र सम्बन्धी) की विशिष्ट धारणाओं को मैं देना (सिखाना) चाहता हूँ। इन गण मे ऐसा कोई योग्य पात्र नही है अत. मै अन्य गण मे जाना चाहता हूँ।

६. कुछ धर्मों (पूर्वोक्त धारणाओं) को देना चाहता हूँ और कुछ धर्मों (पूर्वोक्त धारणाओ) को नही देना चाहता हू अत मैं अन्य गण मे जाना चाहता हूँ।

७. एकल विहार की प्रतिमा धारण करके विचरना चाहता हू। (अत मैं गण छोड़कर जाना चाहता हूँ।)

५४२ —विभंग ज्ञान सात प्रकार का है,

यथा—१. एक दिशा मे लोकाभिगम।

२. पाँच दिशा मे लोकाभिगम।

३. क्रियावरण जीव।

४ मुदग जीव।

५. अमुदग्र जीव।

६. रूपी जीव।

७. सभी कुछ जीव है।

प्रथम विभग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को एक दिशा का लोकाभिगम ज्ञान उत्पन्न होता है। अत वह पूर्व, पश्चिम, दक्षिण या उत्तर दिशा मे से किसी एक दिशा मे अथवा ऊपर सौधर्म-देवलोक पर्यन्त लोक देखता है तो-जिस दिशा मे उसने

होता है कि मुझे अतिशय वाला ज्ञान उत्पन्न हुआ है और वह यों मानने लगता है कि जीव तो रूपी है किन्तु जो लोग जीव को अरूपी कहते है उन्हे वह मिथ्यावादी कहने लगता है।

सप्तम विभंग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को जब "सर्व-जीवा" नाम का विभंग ज्ञान उत्पन्न होता है तब वह वायु से इधर उधर हिलते चलते कापते और अन्य पुद्गलो के साथ टक-राते हुए पुद्गलो को देखता है उस समय उसे ऐसा अनुभव होता है कि मुझे हो अतिशय वाला ज्ञान उत्पन्न हुआ है अतः वह यों मानने लगता है कि "लोक मे जो कुछ है वह सब जीव ही है" किन्तु जो लोग लोक मे जीव अजीव दोनो मानते हैं उन्हे वह मिथ्यावादी कहने लगता है।

ऐसे विभग ज्ञानी को पृथ्वी, वायु और तेजस्काय का सम्यग्-ज्ञान होता ही नही अतः वह उस विषय मे मिथ्या भ्रम में पडा होता है।

५४३ क—योनि संग्रह सात प्रकार का है,

यथा—१. अंडज,—पक्षी, मछलिया, सर्प इत्यादि अडे से पैदा होने वाले।

२. पोतज—हाथी, बागल आदि चमडे से लिपटे हुए उत्पन्न होने वाले।

३. जरायुज—मनुष्य, गाय आदि जर के साथ उत्पन्न होने वाले।

४. रसज—रस में उत्पन्न होने वाले।

"जीव के क्रिया से आवरण (कर्म बन्ध) नहीं होता" ऐसा कहते हैं वे मिथ्या कहते है।

चतुर्थ विभंग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को मुदग्रविभंग ज्ञान उत्पन्न होता है तो वह बाह्य और आभ्यन्तर पुद्गलों को ग्रहण करके तथा उनके नाना प्रकार के स्पर्श करके नाना प्रकार के शरीरो की विकुर्वणा करते हुए देवताओ को देखता है उस समय उसे यह अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय वाला ज्ञान उत्पन्न हुआ है अत. मैं देख सकता हूँ कि जीव मुदग्र अर्थात् बाह्य और आभ्यन्तर पुद्गलो को ग्रहण करके शरीर रचना करने वाला है। "जो लोग जीव को अमुदग्र कहते हैं वे मिथ्या कहते हैं" ऐसा वह कहने लगता है।

पंचम विभंग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को अमुदग्र विभंग ज्ञान उत्पन्न होता है तो वह आभ्यन्तर और बाह्य पुद्-गलो को ग्रहण किये विना ही देवताओ को विकुर्वणा करते हुए देखता है। उस समय उसे ऐसा अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय ज्ञान उत्पन्न हुआ है अतः मैं देख सकता हूँ "जीव अमु-दग्र है" और वह यों कहने लगता है कि जो लोग जीव को मुदग्र समझते हैं वे मिथ्यावादी हैं।

छठा विभग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को जब रूपीजीव नाम का विभंग ज्ञान उत्पन्न होता है तव वह उस ज्ञान से देव-ताओ को ही बाह्याभ्यन्तर पुद्गल ग्रहण करके या ग्रहण किये विना विकुर्वणा करते देखता है। उस समय उसे ऐसा अनुभव

आचार्य और उपाध्याय गच्छ को पूछकर प्रवृत्ति करे किन्तु गच्छ को पूछे बिना प्रवृत्ति न करे) कहे।

६. आचार्य और उपाध्याय गण मे अप्राप्त उपकरणो को सम्यक् प्रकार से (निर्दोष रूप से) प्राप्त करे।

७. आचार्य और उपाध्याय गण मे प्राप्त उपकरणो की सम्यक् प्रकार से रक्षा एवं सुरक्षा करे किन्तु जैसे तैसे न रखे।

ख—आचार्य और उपाध्याय सात प्रकार से गण का असंग्रह (छिन्न-भिन्न) करते हैं।

यथा—१. आचार्य या उपाध्याय गण में रहने वाले साधुओं को आज्ञा या धारणा सम्यक् प्रकार से न करे। इसी प्रकार यावत् २-७ प्राप्त उपकरणो की सम्यक् प्रकार से रक्षा न करे।

५४५ क—पिण्डैषणा सात प्रकार की कही गई है,

यथा—१. असंसृष्टा—देने योग्य आहार से हाथ या पात्र लिप्त न हो ऐसी भिक्षा लेना।

२. संसृष्टा—देने योग्य आहार से हाथ या पात्र लिप्त हो ऐसी भिक्षा लेना।

३. उद्धृता—गृहस्थ अपने लिए रांधने वासण के मे से आहार बाहर निकाले व ऐसा आहार ले।

४. अल्पलेपा—जिस आहार से पात्र मे लेप न लागे ऐसा आहार (चणाआदि) ले।

५. सस्वेदज—पसीने से उत्पन्न होने वाले।

६. सम्मूर्छिम—माता-पिता के संयोग के बिना उत्पन्न होने वाले जीव—कृमि आदि।

७. उद्भिज—पृथ्वी का भेदन कर उत्पन्न होने वाले जीव खजनक आदि।

ख-ज—अंडज की गति और आगति सात प्रकार की होती है।

पोतज की गति और आगति सात प्रकार की होती है। इसी प्रकार उद्भिज पर्यन्त सातो की गति और आगति जाननी चाहिए। अंडज यदि अंडजो मे आकर उत्पन्न होता है तो अडजो पोतजो यावत् उद्भिजो से आकर उत्पन्न होता है।

इसी प्रकार अडज अंडजपन को छोड़कर अडज पोतज यावत् उद्भिज जीवन को प्राप्त होता है।

५४४ क—आचार्य और उपाध्याय सात प्रकार से गण का सग्रह (सगठन) करते हैं।

यथा—१. आचार्य और उपाध्याय गण मे रहने वाले साधुओ को सम्यक् प्रकार से आज्ञा (विधि अर्थात् कर्तव्य के लिए आदेश) या धारणा (अकृत्य का निषेध) करे।

२-५ आग पाचवे स्थान में कहे अनुसार (यावत्-

६. मैं जिसके घर (उपाश्रय) मे ठहरूँगा उसी के यहाँ से संस्तारक भी प्राप्त होगा तो उस पर सोऊँगा अन्यथा बिना संस्तारक के ही रात बिताऊँगा।

७. मैं जिस घर मे (उपाश्रय) मे ठहरूँगा उसमे पहले से बिछा हुआ संस्तारक होगा तो उसका उपयोग करूँगा।

घ—सप्तैकक सात प्रकार का कहा गया है। यथा—

१. स्थान सप्तैकक, २. नैषेधिकी सप्तैकक,

३. उच्चारप्रश्रवण विधि सप्तैकक, ४. शब्द सप्तैकक,

५. रूप सप्तैकक, ६. परक्रिया सप्तैकक,

७. अन्योन्य क्रिया सप्तैकक।[1]

ङ—सात महा अध्ययन कहे गये हैं।[2]

च—सप्तसप्तमिका भिक्षु प्रतिमा की आराधना ४९ अहोरात्र मे होती है उसमे सूत्रानुसार यावत्—१९६ दत्ति ली जाती है।

५४६ क—अधोलोक मे सात पृथ्वियाँ हैं।

ख—सात घनोदधी हैं।

---

१ -आचारांग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कंध की चूला रूप ये सात अध्ययन हैं।

२ सूत्रकृताङ्ग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध में ये सात महा-अध्ययन हैं।

५. अवगृहीता—भाजन मे परोषा हुआ आहार ले ।

६. प्रगृहीता—परोषने के लिये हाथ में लिया हुआ अथवा खाने के लिए लिया हुआ आहार ही ले ।

७. उज्झित धर्मा—फेंकने योग्य आहार ही भिक्षा मे ले ।

ख—पाणैषणा सात प्रकार की कही गई है ।[1]

ग—अवग्रह प्रतिमा सात प्रकार की कही गई है-।ः

यथा—१. "मुझे अमुक उपाश्रय ही चाहिये" ऐसा निश्चय करके आज्ञा मांगे ।

२. "मेरे साथी साधुओ के लिए उपाश्रय की याचना करूंगा" और उनके लिए जो उपाश्रय मिलेगा उसी मे मैं रहूंगा ।

३. मैं अन्य साधुओ के लिए उपाश्रय की याचना करूंगा किन्तु मैं उसमे नही रहूँगा ।

४. मैं अन्य साधुओ के लिए उपाश्रय की याचना नहीं करूंगा किन्तु अन्य साधुओ द्वारा याचित उपाश्रय मे मैं रहूँगा ।

५. मैं अपने लिये ही उपाश्रय की याचना करूंगा अन्य के लिए नही ।

पिण्डैषणा के समान पाणैषणा भी है ।

५४८ —संस्थान सात प्रकार के कहे गये हैं।
यथा—१. दीर्घ २. ह्रस्व, ३. वृत्त, ४. त्र्यस्र,
५. चतुरस्र, ६. पृथुल, ७. परिमण्डल।

५४९ भय स्थान सात प्रकार के कहे गये हैं।
यथा—१. इहलोक भय, २. परलोक भय,
३. आदान भय, ४. अकस्मात् भय, ५. वेदना भय,
६. मरण भय। ७. अश्लोक—अपयश भय।

५५० क—सात कारणो से छद्मस्थ (असर्वज्ञ) जाना जाताहै।
यथा—१. हिंसा करने वाला, २. झूठ बोलने वाला,
३. अदत्त लेने वाला, ४. शब्द, रूप, रस और स्पर्श
को भोगने वाला, ५. पूजा और सत्कार से प्रसन्न
होने वाला।

६. "यह आधा कर्म आहार सावद्य (पाप सहित) है"
इस प्रकार की प्ररूपणा करने के पश्चात् भी आधा
कर्म आदि दोषो का सेवन करने वाला।

७. कथनी के समान करणी न करने वाला।

ख—सात कारणो से केवली जाना जाता है, यथा—

१. हिंसा न करने वाला।

२. झूठ न बोलने वाला।

३. अदत्त न लेने वाला।

४. शब्द, गन्ध, रूप, रस और स्पर्श का न भोगने
वाला।

५.-७.पूजा और सत्कार से प्रसन्न न होने-वाला यावत्
कथनी के समान करणी करने वाला।

ग—सात घनवात और सात तनुवात है।

घ—सात अवकाशान्तर हैं।

ङ—इन सात अवकाशान्तरो में सात तनुवात प्रतिष्ठित हैं।

च—इन सात तनुवातों में सात घनवात प्रतिष्ठित हैं।

छ—इन सात घनवातों मे सात घनोदधि प्रतिष्ठित हैं।

ज—इन सात घनोदधियो मे पुष्पभरी छाबड़ी के समान संस्थान वाली सात पृथ्वियाँ है।
यथा—१-७ प्रथमा यावत् सप्तमा।

झ—इन सात पृथ्वियो के सात नाम हैं।
यथा—१. घम्मा, २. वंसा, ३. सेला, ४. अजना, ५. रिष्ठा, ६. मघा, ७. माघवती।

ञ—इन सात पृथ्वियो के सात गोत्र है।
यथा—१. रत्नप्रभा, २. शर्कराप्रभा, ३. वालुकाप्रभा, ४. पंकप्रभा, ५. धूमप्रभा, ६, तमप्रभा, ७. तमस्तमाप्रभा।

५४७ —वादर (स्थूल) वायुकाय सात प्रकार की कही गई है।
यथा—१. पूर्व का वायु, २. पश्चिम का वायु, ३. दक्षिण का वायु, ४. उत्तर का वायु, ५. ऊर्ध्व दिशा का वायु, ६. अधोदिशा का वायु ७. विदिश दिशाओं का वायु।

५. ऐलापत्य, ६. काडिल्य, ७. क्षारायण।

ज—वाशिष्ठ गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१. वाशिष्ठ, २. उजायन, ३. जारेकृष्ण,
४. व्याघ्रापत्य, ५. कौण्डिन्य, ६. संज्ञी,
७. पाराशर।

५५२ —मूलनय सात प्रकार के कहे गये हैं, यथा—

१. नैगम, २. संग्रह, ३. व्यवहार,
४ ऋजुसूत्र, ५ शब्द, ६. समभिरूढ,
७. एवंभूत।

५५३ क —स्वर सात प्रकार के कहे गये है, यथा—

१. षड्ज, २. रिसभ, ३. गाधार, ४. मध्यम,
५. पंचम, ६. धैवत, ७. निशाद।

१—षड्ज—१. नासा, २. कठ, ३. हृदय, ४. जीभ, ५. दाँत, और तालु इन छः स्थानो से उत्पन्न होने वाला स्वर।

२—रिषभ—बैल (साँड) के समान गभीर स्वर।

३—गाधार—विविध प्रकार के गधो से युक्त स्वर।

४—मध्यम—महानाद वाला स्वर।

५—पंचम—नासिकाओ से निकलने वाला स्वर।

६—धैवत—अन्य स्वरो से अनुसधान करने वाला स्वर।

७—निषाद—अन्य स्वरो को तिरस्कृत करने वाला स्वर।

५५१ क—मूल गोत्र सात कहे जाते हैं, यथा—

१. काश्यप, २. गौतम, ३. वत्स, ४. कुत्स,
५. कौशिक, ६. मांडव्य, ७. वाशिष्ट।

ख—काश्यप गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१. काश्यप, २. सांडिल्य, ३. गोल्य, ४. बाल,
५. मौजकी, ६. पर्वप्रेक्षकी, ७. वर्षकृष्ण।

ग—गौतम गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१. गौतम, २. गार्ग्य, ३. भारद्वाज, ४. अंगिरस,
५. शर्कराभ, ६. भक्षकाभ, ७. उदकात्माभ।

घ—वत्स गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१. वत्स, २. आग्नेय, ३. मैत्रिक, ४. स्वामिली,
५. शलक, ६. अस्थिसेन, ७. वीतकर्म।

ङ—कुत्स गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१. कुत्स, २. मौद्गलायन, ३. पिंगलायन,
४. कौडिन्य, ५. मंडली, ६. हारित,
७. सौम्य।

च—कौशिक गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१. कौशिक, २. कात्यायन, ३. शालंकायण,
४. गोलिकायण, ५ पाक्षिकायण, ६. आग्नेय,
७. लोहित्य।

छ—मांडव्य गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१. मांडव्य, २. अरिष्ट, ३. समुक्त, ४. तैल,

४. मध्यम स्वर—झालर से निकलता है।
५. पंचम स्वर—गोधिका वाद्य से निकलता है।
६. धैवत स्वर—ढोल से निकलता है।
७. निषाद स्वर—महाभेरी से निकलता है।

ङ—सात स्वर वाले मनुष्यो के लक्षण—

यथा—१. षड्जस्वर वाले मनुष्य को आजीविका सुलभ होती है, उसका कार्य निष्फल नहीं होता। उसे गायें, पुत्र और मित्रो की प्राप्ति होती है। वह स्त्री को प्रिय होता है।

२. रिषभ स्वर वाले को ऐश्वर्य प्राप्त होता है। वह सेनापति बनता है और उसे धन लाभ होता है। तथा वस्त्र, गंध, अलकार, स्त्री, और शयन आदि प्राप्त होते हैं।

३. गांधार स्वर वाला गीत—युक्तिज्ञ, प्रधान-आजीविका वाला, कवि, कलाओ का ज्ञाता, प्रज्ञाशील और अनेक शास्त्रो का ज्ञाता होता है।

४. मध्यम स्वर वाला—सुख से खाता पीता है और दान देता है।

५. पंचम स्वर वाला—राजा, शूरवीर, लोक संग्रह करने वाला, और गणनायक होता है।

६. धैवत स्वर वाला—शाकुनिक, झगड़ालु, वागुरिक, शौकरिक और मच्छीमार होता है।

ख—इन सात स्वरो के सात स्वर स्थान हैं, यथा

१—षड्ज स्वर जिह्वा के अग्रभाग से निकने वाला स्वर।

२—ऋषभ स्वर हृदय से निकलता है।

३—गाधार स्वर उग्र कंठ से निकलता है।

४—मध्यम स्वर जिह्वा के मध्य भाग से निकलता है।

५—पंचम स्वर पांच स्थानो से निकलने वाला स्वर।

६—धैवत स्वर दांत और ओष्ठ से निकलने वाला स्वर।

७—निषाद स्वर मस्तक से निकलने वाला स्वर।

ग—सात प्रकार के जीवो से निकलने वाले सात स्वर।

१—षड्ज मयूर के कण्ठ से निकलने वाला स्वर।

२—रिषभ कुक्कुट के कण्ठ से निकलता है।

३—गांधार हस के कण्ठ से निकलता है।

४.—मध्यम घेंटे के कण्ठ से निकलता है।

५.—पचम कोयल के कण्ठ से निकलता है।

६—धैवत सारस या क्रौंच के कण्ठ से निकलता है।

७—निषाद हाथी के कण्ठ से निकलता है।

घ सात प्रकार के अजीव पदार्थों से निकलने वाले सात स्वर, यथा—

यथा—१. षड्जस्वर—मृदङ्ग से निकलता है।

२. ऋषभ स्वर—गोमुखी[1] से निकलता है।

३. गांधार स्वर—शंख से निकलता है।

---

१ गोमुखी को रणसिगा भी कहते हैं।

उत्तर—एक पद के उच्चारण मे जितना समय लगता है उतना समय गीत के उच्छ्वास का है।

४—गेय के तीन आकार हैं, वे इस प्रकार हैं—

१. मद स्वर से आरम्भ करे।

२. मध्य मे स्वर की वृद्धि करे।

१. अन्त में क्रमशः हीन करे।

५—गेय के छ दोष, आठ गुण, तीन वृत्त और दो भणितिया इनको जो सम्यक् प्रकार से जानता हे वह सुशिक्षित रंग (नाट्य शाला) मे गा सकता है।

६—हे गायक ! इन छः दोषों को टालकर गाना।

१. भयभीत होकर गाना, २. शीघ्रतापूर्वक गाना, ३. सक्षिप्त करके गाना, ४. ताल बद्ध न गाना, ५. काकस्वर से गाना, ६. नाक से उच्चारण करते हुए गाना।

गेय के आठ गुण हैं।

यथा—१. पूर्ण, २. रक्त, ३. अलकृत, ४. व्यक्त, ५. अविस्वर, ६. मधुर, ७. स्वर, ८. सुकुमार,

गेय के ये गुण और हैं

यथा—१. उरविशुद्ध, कठविशुद्ध और शिरोविशुद्ध जो गाया जाय।

२. मृदु और गम्भीर स्वर से गाया जाय।

३. तालवद्ध और प्रतिक्षेप बद्ध गाया जाय।

४. सात स्वरो से सम गाया जाय।

७. निषाद स्वर वाला—चांडाल, अनेक पापकर्मों का करने वाला या गौ घातक होता है।

च—इन सात स्वरो के तीन ग्राम कहे गये है।
यथा १ षड्ज ग्राम, २. मध्यम ग्राम,
३. गांधार ग्राम।

छ—षड्जग्राम की सात मूर्छनायें होती हैं।
यथा १. भंगी, २. कौरवीय, ३. हरि, ४. रजनी,
५. सारकान्ता, ६. सारसी, ७. शुद्ध षड्जा।

ज—मध्यम ग्राम की सात मूर्छनायें होती हैं।
यथा १. उत्तरमन्दा, २. रजनी, ३. उत्तरा,
४. उत्तरासमा, ५. आशोकान्ता, ६. सौवीरा,
७. अभीरू।

झ—गाधार ग्राम की सात मूर्छनायें है।
यथा १. नंदी, २. क्षुद्रिमा, ३. पुरिमा,
४. शुद्ध गाधारा, ५. उत्तर गांधारा, ६. सुष्ठुत्तर आयाम, ७. कोटि मातसा।

ञ—१. प्रश्न—सात स्वर कहा से उत्पन्न होने हैं ?
उत्तर—नाभी से।
२. प्रश्न—गेय की योनि कौनसी होती है ?
उत्तर—गीत रुदित योनि है।
३. प्रश्न—उच्छ्वास काल कितने समय का है ?

यथा—१. तंत्रीसम, २. तालसम, ३. पाद सम, ४. लय सम, ५. ग्रह सम, ६. श्वासोच्छ्‌वाससम, ७. संचार सम, सात स्वर, तीन ग्राम, इक्कीस मूर्छना, और उनपचास तान हैं।

इति स्वर मंडल

५५४ —काय क्लेश सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१. स्थानातिग—कार्योत्सर्ग करने वाला।

२. उत्कटुकासनिक—उकडु बैठने वाला।

३. प्रतिमास्थायी—भिक्षु प्रतिमा का वहन करने वाला।

४. वीरासनिक—सिंहासन पर बैठने वाले के समान बैठना।

५. नैषधिक—पैर आदि स्थिर करके बैठना।

६. दंडायतिक—दण्ड के समान पैर फैलाकर बैठना।

७. लगडशायी—वक्र काष्ठ के समान—
—भूमी से पीठ ऊंची रखकर सोने वाला।

५५५ क—जम्बूद्वीप मे सात वर्ष (क्षेत्र) कहे गये है,

यथा—१. भरत, २. ऐरवत, ३. हैमवत, ४. हैरण्य वत, ५. हरिवर्ष, ६. रम्यक् वर्ष, ७. महाविदेह।

गेय के ये आठ गुण और है।

१. निर्दोष, २. सारयुक्त, ३. हेतु युक्त, ४. अलंकृत

५. उपसंहार युक्त, ६. सोत्प्रास, ७. मित, ८. मधुर।

तीन वृत्त हैं–

१. सम, २. अर्ध सम, ३. सर्वत्र विषम।

दो भणितिया हैं, यथा–

१. संस्कृत और २. प्राकृत

इन दो भाषाओ को ऋषियों ने प्रशस्त मानी है और इन दो भाषाओं मे ही गाया जाता है।

१. प्रश्न—मधुर कौन गाती है ?

उत्तर—श्यामा (किंचित् काली) स्त्री।

२. प्रश्न—खर स्वर से कौन गाती है ?

उत्तर—काली (घन के समान श्याम रग वाली)।

३. प्रश्न—रूक्ष स्वर से कौन गाती है ?

उत्तर—काली।

४. प्रश्न—दक्षता पूर्वक कौन गाती है ?

उत्तर—गौरी (गौरवर्ण वाली)

५. प्रश्न—मन्द स्वर से कौन गाती है ?

उत्तर—काणी।

६. प्रश्न—शीघ्रतापूर्वक कौन गाती है।

उत्तर—अंधी

७. प्रश्न—विस्वर (विरुद्ध स्वर) से कौन गाती है ?

उत्तर—पिंगला—भूरे वर्ण वाली।

स्वर सात प्रकार से सम होता है,

ज—धातकी खण्ड द्वीप मे सात महानदिया है जो पश्चिम
मे बहती हुई लवण समुद्र मे मिलती है।
यथा—१-७ सिन्धु—यावत्—रक्तावती।

झ-ठ—धातकी खण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध मे सात वर्ष है,
यथा १-७ भरत यावत् महाविदेह
शेष तीन सूत्र पूर्ववत्।
विशेष—पूर्व की ओर वहने वाली नदिया लवण समुद्र मे मिलती है और पश्चिम की ओर वहने वाली नदिया कालोद समुद्र मे मिलती है।

ड-त—पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध मे पूर्ववत् सात वर्ष है।
विशेष—पूर्व की ओर वहने वाली नदिया पुष्करोद समुद्र मे मिलती हैं। पश्चिम की ओर वहने वाली नदिया कालोद समुद्र मे मिलती है शेष ३ सूत्र पूर्ववत्।
इसी प्रकार पश्चिमार्ध के भी ४ सूत्र है।
विशेष—पूर्व की ओर वहने वाली नदिया कालोद-समुद्र मे मिलती है और पश्चिम की ओर वहने वाली नदिया पुष्करोद समुद्र मे मिलती है।
वर्ष, वर्षधर और नदिया सर्वत्र कहनी चाहिये।

५६ क—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे अतीत उत्सर्पिणी मे सात कुलकर थे,
यथा—१. मित्रदास, २. सुदाम, ३. सुपार्श्व,

ख—जम्बूद्वीप मे सात वर्षधर पर्वत कहे गये हैं।
यथा—१. चुल्लहिमवन्त, २. महाहिमवत, ३. निषध।
४. नीलवंत, ५. रुक्मी, ६. शिखरी, ७. मदराचल।

ग—जम्बूद्वीप मे सात महानदिया हैं जो पूर्व की ओर बहती हुई लवण समुद्र मे मिलती हैं।
यथा—१. गंगा, २. रोहिता, ३. हरित, ४. शीता,
५. नरकान्ता, ६. सुवर्णकूला, ५. रक्ता।

घ—जम्बूद्वीप मे सात महानदिया हैं जो पश्चिम को ओर बहती हुई लवण समुद्र मे मिलती हैं,
यथा—१. सिन्धु, २. रोहिताशा, ३. हरिकान्ता,
४. शीतोदा, ५. नारीकान्ता, ६. रुप्यकूला,
७ रक्तवती।

ड—धातकीखण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे सात वर्ष है,
यथा—१-७ भरत—यावत्—महाविदेह।

च—धातकीखण्ड द्वीप मे पूर्वार्ध मे सात वर्षधर पर्वत है।
यथा—१. चुल्ल हिमवंत—यावत्—मंदराचल।

छ—धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे सात महानदिया है जो पूर्व दिशा मे बहती हुई कालोद समुद्र मे मिलती हैं।
यथा—१-७ गंगा यावत् रक्ता।

४. परिभाषण—अपराधी को उपालम्भ देना।

५. मडल बध—क्षेत्र मर्यादा से बाहर न जाने की आज्ञा देना।

६. चारक—कैद करना।

७. छविच्छेद—हाथ पैर आदि का छेदन करना।

५५८ क—प्रत्येक चक्रवर्ती के सात एकेन्द्रिय रत्न कहे गये है। यथा—१. चक्ररत्न, २. छत्ररत्न, ३. चर्मरत्न, ४. दण्डरत्न, ५. असिरत्न, ६. मणिरत्न, ७. काकिणी रत्न।

ख—प्रत्येक चक्रवर्ती के सात पचेन्द्रिय रत्न कहे गये है, यथा—१. सेनापतिरत्न, २. गाथापतिरत्न, ३. वर्धकीरत्न, ४. पुरोहितरत्न, ५. स्त्रीरत्न ६. अश्व रत्न, ७. हस्तीरत्न।

५५९ क—दुषमकाल (अवसर्पिणी काल का पाचवा भाग) के सात लक्षण है,

यथा—१. अकाल मे वर्षा होना,

२. वर्षाकाल मे वर्षा न होना,

३. असाधु (दुर्जन) जनो की पूजा होना,

४. साधु (सज्जन) जनो की पूजा न होना,

५. गुरु के प्रति लोगो का मिथ्याभाव होना

६. मानसिक दु:ख,

७. वाणी का दु:ख।

४. स्वयंप्रभ, ५. विमलघोष, ६. सुघोष, ७. महाघोष।

ख—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे इस अवसर्पिणी में सात कुलकर थे,
यथा—१. विमलवाहन, २. चक्षुष्मान्, ३. यशस्वान्, ४. अभिचन्द्र, ५. प्रसेनजित्, ६. मरुदेव, ७. नाभि।

ग—इन सात कुलकरो की सात भार्यायें थी,
यथा—१ चन्द्रयशा, २. चन्द्रकान्ता, ३. सुरूपा, ४. प्रतिरूपा, ५. चक्षुकान्ता, ६ श्रीकान्ता, ७. मरुदेवी।

घ—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे आगामी उत्सर्पिणी मे सात कुलकर होगे।
यथा—१ मित्रवाहन, २. सुभीम, ३. सुप्रभ, ४ सयंप्रभ, ५ दत्त, ६ सूक्ष्म, ७. सुबन्धु।

ङ—विमलवाहन कुलकर के काल मे सात प्रकार के कल्पवृक्ष उपभोग मे आते थे।
यथा—१. मद्यागा, २ भृगा, ३. चित्रागा, ४. चित्र-रसा, ५ मण्यगा, ६. अनग्ना, ७ कल्पवृक्ष।

५५७ दण्ड नीति सात प्रकार की है—
यथा—१ हक्कार—हे या हा कहना।
२. मक्कार—मा अर्थात् मत कर कहना।
३ धिक्कार—फटकारना।

क—सभी जीव सात प्रकार के है,

यथा—१. पृथ्वीकायिक, २ अप्कायिक, ३. तेजस्कायिक, ४. वायुकायिक, ५. वनस्पतिकायिक, ६. त्रसकायिक, ७. अकायिक।

ख—सभी जीव सात प्रकार के हैं,

यथा—१-६ कृष्ण लेश्या वाले, यावत् शुक्ल लेश्या वाले, ७. अलेशी,

५६३ —ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती सात धनुष के ऊंचे थे। वे सातसौ वर्ष का पूर्वायु होने पर, सातवी पृथ्वी के अप्रतिष्ठान नरकावास मे नैरयिक रूप मे उपन्न हुए।

५६४ —मल्लीनाथ अर्हन्त स्वयं सातवे (सात राजाओं के साथ) मुण्डित हुये और गृहस्थावास त्यागकर अणगार प्रव्रज्या से प्रव्रजित हुये।

यथा—१. मल्ली—विदेह राज कन्या,

२. प्रतिबुद्धी—इक्ष्वाकुराजा,

३. चन्द्रच्छाय—अग देश का राजा,

४. रुक्मी—कुणाल देश का राजा.

५. शंख—काशी देश का राजा,

६. अदीन शत्रु—कुरु देश का राजा

७. जित शत्रु—पाचाल देश का राजा।

५६५ दर्शन सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१. सम्यग्दर्शन, २. मिथ्यादर्शन, ३. सम्यग्मि-

ख—सुषम काल के सात लक्षण हैं,

यथा—१. अकाल मे वर्षा नही होती है,

२. वर्षाकाल मे वर्षा होती है,

३. असाधु की पूजा नही होती है,

४. साधु की पूजा होती है,

५. गुरु के प्रति लोगो का सम्यक् भाव होता है,

६. मानसिक सुख,

७ वाणी का सुख।

५६० —संसारी जीव सात प्रकार के कहे गये हैं,
यथा—१. नैरयिक, २. तिर्यंच, ३. तिर्यंचनी,
४. मनुष्य, ५. मनुष्यनी, ६. देव, ७. देवी,

५६१ —आयु का भेदन सात प्रकार से होता है,
यथा—१. अध्यवसाय (राग-द्वेष और भय) से,
२. निमित्त (दड, शस्त्र आदि) से,
३ आहार (अत्यधिक आहार) से,[1]
४. वेदना (आख आदि की तीव्र वेदना) से,
५. पराघात (कुएं मे गिरना आदि आकस्मिक आघात) से,
६. स्पर्श (सर्प विच्छु आदि के डंक) से,
७. श्वासोच्छ्वास (के रोकने) से,

३. देश कथा, ४. राज कथा, ५. मृदुकारिणी कथा[1]
६. दर्शनभेदिनी[2] ७. चारित्र भेदिनी[3]

५७० —गण मे आचार्य और उपाध्याय के सात अतिशय है ।

यथा—१-५ आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय मे धूल भरे पैरो को दूसरे से झटकवावे या पुंछावे तो भी मर्यादा का उल्लंघन नही होता—शेष पांचवे ठाणे के समान यावत् आचार्य उपाध्याय उपाश्रय के वाहर इच्छानुसार एक रात या दो रात रहे तो भी मर्यादा का अतिक्रमण नही होता ।

६. उपकरण की विशेपता—आचार्य या उपाध्याय उज्ज्वल वस्त्र रखे तो मर्यादा का लंघन नही होता ।

७. भक्तपान की विशेषता—आचार्य या उपाध्याय श्रेष्ठ और पथ्य भोजन ले तो मर्यादा का अतिक्रमण नही होता ।

५७१ क—संयम सात प्रकार के कहे गये हैं,
यथा—१-६ पृथ्वीकायिक सयम—यावत् त्रस कायिक संयम १-७ अजीवकाय संयम

---

१ कारुण्य रस प्रधान कथा
२ कुतीर्थीकों की प्रशंसा रूप कथा ।
३ प्रमाद बाहुल्य से इस काल मे चारित्र नहीं है ।

थ्यादर्शन, ४. चक्षुदर्शन, ५. अचक्षुदर्शन, ६. अवधि-दर्शन और केवल दर्शन।

५६६ —छद्मस्थ वीतराग मोहनीय को छोड़कर सात कर्म प्रकृतियो का वेदन करते हैं—

यथा—१. ज्ञानावरणीय, २. दर्शनावरणीय, ३. वेदनीय, ४. आयुकर्म, ५. नामकर्म, ६. गोत्र कर्म, ७. अन्तराय कर्म।

५६७ क—छद्मस्थ सात स्थानो को पूर्णरूप से न जानता है और न देखता है,

यथा—१. धर्मास्तिकाय, २. अधर्मास्तिकाय, ३, आकाशास्तिकाय, ४. शरीर रहित जीव, ५. परमाणु पुद्गल, ६. शब्द और ७. गन्ध।

ख—इन्ही सात स्थानो को सर्वज्ञ पूर्ण रूप से जानता है और देखता है।

यथा—१-७ धर्मास्तिकाय यावत् गन्ध।

५६८ —श्रमण भगवान महावीर वज्र ऋषभ नाराच सघयण वाले समचतुरस्र संस्थान वाले और सात हाथ ऊंचे थे।

५६९ —सात विकथाये कही गई है,

यथा—१. स्त्री कथा, २. भक्त (आहार) कथा,

ख—तीसरी वालुका प्रभा मे नैरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम की कही गई है।

ग—चौथी पंक प्रभा मे नैरयिकों की जघन्य स्थिति सात सागरोपम की कही गई है।

५७४ क—शक्रेन्द्र के वरुण लोकपाल की सात अग्रमहिषिया हैं

ख—ईशानेन्द्र के सोम लोकपाल की सात अग्रमहिषियां है

ग—ईशानेन्द्र के यम लोकपाल की सात अग्रमहिषियां है

५७५ क—ईशानेन्द्र के आभ्यन्तर परिषद् के देवों की स्थिति सात पल्योपम की है।

ख—शक्रेन्द्र के अग्रमहिषी देवियो की स्थिति सात पल्योपम की है।

ग—सौधर्म कल्प मे परिगृहिता देवियो की उत्कृष्ट स्थिति सात पल्योपम की है।

५७६ क—सारस्वत लोकान्तिक देव के सात देवो का परिवार है।

ख—आदित्य लोकान्तिक देव के सात सौ देवों का परिवार है।

ग—गर्दतोय लोकान्तिक देव के सात देवो का परिवार है।

घ—तुषित लोकान्तिक देव के सात हजार देवों का परिवार है।

ख—असंयम सात प्रकार के कहे गये हैं,

यथा—१-६ पृथ्वीकायिक असंयम—यावत् त्रस-कायिक असयम, अजीवकाय असंयम।

ग—आरम्भ सात प्रकार के कहे गये हैं,

यथा—१-७ पृथ्वीकायिक आरम्भ—यावत् अजीव-काय आरम्भ।

घ—इसी प्रकार अनारम्भ सूत्र है।

ङ—,, ,, सारभ सूत्र है।

च—,, ,, असारंभ सूत्र है।

छ—,, ,, समारभ सूत्र है।

ज—,, ,, असमारभ सूत्र है।

५७२ —प्रश्न—हे भगवन्! अलसी, कुसुभ, कोद्रव, काग, रल, सण, सरसो और मूले के बीज। इन धान्यो को कोठे में, पाले मे यावत् ढाककर रखे तो उन धान्यो की योनि[1] कितने काल तक सचित्त रहती है?

उत्तर—हे गौतम? जघन्य अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट—सात संवत्सर।

पश्चात् योनि म्लान हो जाती है—यावत्—योनि नष्ट हो जाती है।

५७३ क—बादर अप्कायिक जीवो की उत्कृष्ट स्थिति सात हजार वर्ष की कही गई है।

---

१ योनि-ऊगने की शक्ति।

सात प्रकार की श्रेणियाँ कही गई हैं।
यथा—१. ऋजु आयता[1]।
२. एकत वक्रा[2], ३. द्विधावक्रा[3]

---

१. ऋजु आयता—सरल और लम्बी श्रेणी।
जब जीव या पुद्गल ऊर्ध्वलोक से अधोलोक में या अधोलोक से ऊर्ध्वलोक मे गमन करे तब सीधी रेखा से गमन करते हैं वह सीधी रेखा "ऋजु आयता श्रेणी" कही जाती है।

२. एकतः वक्राः—जब जीव या पुद्गल एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी मे गमन करता है तब एक जगह वक्र गति करता है।
यथा—एक जीव अधोलोक में पूर्व दिशा में मरता है और उसका उत्पत्ति स्थान उर्ध्वलोक में पश्चिम दिशा में होता है तो वह पहले ऋजु गति से उर्ध्वलोक की पूर्व दिशा में पहुंचता है और वहां से सीधा पश्चिम दिशा में जाता है। इस प्रकार उसे पश्चिम दिशा में पहुँचने के लिए एक जगह वक्र गति से गमन करना पड़ता है।

३. द्विधावक्रा—जिस श्रेणी में दो जगह वक्र गति करनी पड़ती है, वह द्विधा वक्रा श्रेणी कही जाती है। यथा—एक जीव उर्ध्वलोक के अग्निकोण में मृत्यु को प्राप्त हुआ और उसका उत्पत्ति स्थान वायव्य कोण में हो तो वह पहले तिरछी गति से नैऋत्य कोण में जाता है वहाँ से तिरछी गति से वायव्य कोण में पहुंचता है।

५७७ क—सनत्कुमार कल्प मे देवताओ की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम की है।

ख—महेन्द्र कल्प मे देवताओ की उत्कृष्ट स्थिति कुछ अधिक सात सागरोपम की है,

ग—ब्रह्मलोक कल्प मे देवताओ की जघन्य स्थिति सात सागरोपम की है।

५७८ ब्रह्मलोक और लातक कल्प में विमानो की ऊंचाई सात सौ योजन की है,

५७९ क—भवनवासी देवो के भवधारणीय शरीरो की ऊचाई सात हाथ की है।

ख—इसी प्रकार व्यन्तर देवो की

ग—ज्योतिषी देवो की

घ—सौधर्म और ईशान कल्प मे देवो के भवधारणीय शरीरो की ऊंचाई सात हाथ की है।

५८० क—नन्दीश्वर द्वीप मे सात द्वीप है।

यथा—१. जम्बूद्वीप, २. घातकीखण्ड द्वीप, ३. पुष्कर वरद्वीप, ४. वरुणवर द्वीप, ५. क्षीरवर द्वीप, ६. घृत वर द्वीप, ७. क्षोद वर द्वीप।

ख—नन्दीश्वर द्वीप मे सात समुद्र हैं।

यथा—१. लवण समुद्र, २ कालोद समुद्र, ३. पुष्करोद समुद्र, ४. करुणोद समुद्र, ५. खीरोद समुद्र, ६. घृतोद समुद्र, ७. क्षोदोद समुद्र।

शेष पांचवे स्थानक के समान यावत् किन्नर-रथसेना का सेनापति,

६. रिष्ट—नटसेना का सेनापति,

७. गीतरति—गंधर्व सेना का सेनापति।

ख—बलि वैरोचनेन्द्र के सात सेनायें हैं और सात सेनापति हैं।

यथा—१-५ पैदल सेना यावत् गंधर्व सेना,

१-५ महाद्रुम—पैदल सेना का सेनापति,

यावत् किंपुरुष—रथ सेना का सेनापति,

६. महारिष्ट—नट सेना का सेनापति,

७. गीतयश—गंधर्व सेना का सेनापति।

ग—धरणेन्द्र (नाग कुमारेन्द्र) की सात सेनायें और सात सेनापति हैं,

यथा—१-७ पैदल सेना यावत् गंधर्व सेना

१-५ भद्रसेन—पैदल सेना का सेनापति

यावत्—आनन्द—रथ—सेना का सेनापति,

६. नन्दन—नटसेना का सेनापति

७. तेतली—गंधर्व सेना का सेनापति।

घ—नाग कुमारेन्द्र भूतानन्द की सात सेनायें और सात सेनापति हैं

यथा—१-६ पैदल सेना यावत् गंधर्व सेना।

१-५ दक्ष पैदल सेना का सेनापति

यावत्—नंदुत्तर—रथ सेना का सेनापति

४. एकतः खा[4], ५. द्विधा खा[5], ६. चक्रवाला[6], ७. अर्धचक्र वाला[7]

५८२ क—चमर असुरेन्द्र के सात सेनाये हैं, और सात सेनापति हैं।

यथा—१. पैदल सेना, २. अश्व सेना, ३. हस्तिसेना, ४. महिष सेना, ५. रथ सेना, ६. नट सेना, ७. गंधर्व सेना।

१-५ द्रुम—पैदल सेनापति,

---

४. एकत. खा—जिस श्रेणी में एक ओर लोक नाड़ी(त्रसनाड़ी) के बाहर का आकाश हो वह श्रेणी "एकत. खा" कही जाती है। यथा—एक जीव त्रसनाड़ी से बाहर का त्रसनाड़ी में उत्पन्न हो तो वह श्रेणी एकत. खा कही जाती है।

५. द्विधा खा—जिस श्रेणी में दो वार त्रसनाड़ी के बाहर के आकाश का स्पर्श हो वह श्रेणी द्विधा खा कही जाती है। यथा—एक जीव त्रसनाड़ी के बाहर दक्षिण भाग से त्रसनाड़ी के बाहर बायें भाग में जाकर उत्पन्न हो तो वह दो वार त्रसनाडी से बाहर के आकाश का स्पर्श करता है।

६. चक्र वाला—चक्र के समान जो गति करे वह चक्रवाला कही जाती है। यह गति जीव की नहीं होती, केवल पुद्गल की होती है।

७. अर्धचक्र वाला—अर्ध गोल यह गति भी परमाणु की होती है।

विशेष सूचना—महद्रुम सेनापति के प्रथम कच्छ मे साठ हजार देव है, शेष छः कच्छो मे पूर्ववत् दूने-दूने देव कहे ।

ग—इस प्रकार धरणेन्द्र के सात कच्छ है ।

विशेष सूचना—रुद्रसेन सेनापति के प्रथम कच्छ में २८००० देव हैं शेप छः कच्छो मे पूर्णवत् दुगने-दुगने देव कहे ।

घ-भ—इस प्रकार महाघोष पर्यन्त दूगुने दूगुने देव कहे ।

विशेष सूचना—पैदल सेना के सेनापतियो के पूर्ववत् कहे ।

म—शक्रेन्द्र के पैदल सेनापति हरिणगमेषी देव के सात कच्छ है ।

चमरेन्द्र के समान अच्युतेन्द्र पर्यन्त कच्छ और देवताओ का वर्णन समझे ।

पैदल सेनापतियो के नाम पूर्ववत् कहे ।

देवताओ की संख्या इन दो गाथाओ से जाननी चाहिये ।

१-१०—शक्रेन्द्र के पैदल सेनापति के प्रथम कच्छ मे ८४००० देव है ।

ईशानेन्द्र के ८०,००० देव है ।

सनत्कुमार के ७२,००० देव हैं ।

माहेन्द्र के ७०,००० देव हैं ।

६ रती—नट सेना का सेनापति,

७. मानस गंधर्व सेना का सेनापति।

ङ-भ—इस प्रकार घोप और महाघोप पर्यन्त सात सात मेनायें और मात सात सेनापति है।

म—शक्रेन्द्र की सात मेनायें और सात सेनापति है।

यथा—१-७ पैदल सेना यावत् गधर्व सेना

१-५ हरिणगमेषी—पैदल सेना का सेनापति।

यावत् माढर—रथ सेना का सेनापति।

६. महास्वेत—नट सेना का सेनापति

७. रत—गंधर्व सेना का सेनापति

शेप पाचवें स्थान के अनुसार

इस प्रकार अच्युत देवलोक पर्यन्त सेना और सेनापतियो का वर्णन समझें।

५८३ क—चमरेन्द्र के द्रुम पैंदल सेनापति के सात कच्छ (सैन्य समूह) है,

यथा—१-७ प्रथम कच्छ—यावत् सप्तम कच्छ।

प्रथम कच्छ मे ६४००० देव हैं।

द्वितीय कच्छ मे प्रथम कच्छ से दूने देव हैं।

तृतीय कच्छ मे द्वितीय कच्छ मे दूने देव हैं।

इस प्रकार सातवें कच्छ तक दूने-दूने देव कहे।

ख—इस प्रकार बलेन्द्र के भी सात कच्छ है,

३. अक्रिय—कायिकादि क्रिया रहित,
४. निरुपक्लेश—शोकादि पीडा रहित,
५. अनाश्रवकर—प्राणातिपातादि रहित,
६. अक्षतकर—प्राणियो को पीडित न करने रूप,
७. अभूताभिशकन—अभयदान रूप।

ग—अप्रशस्त मन विनय सात प्रकार का कहा गया है,
यथा—१. पापक—अशुभ चिंतन रूप,
२. सावद्य—चोरी आदि निंदित कर्म,
३. सक्रिय—कायिकादि क्रिया युक्त,
४. सोपक्लेश—शोकादि पीडा युक्त,
५. आश्रवकर—प्राणातिपातादि आश्रव,
६. क्षयकर—प्राणियो को पीडित करने रूप,
७. भूताभिशंकन—भयकारी।

घ—प्रशस्त वचन विनय सात प्रकार का कहा गया है,
यथा—१-७अपापक, असावद्य, यावत् अभूताभिशंकन

ङ—अप्रशस्त वचन विनय सात प्रकार का कहा गया है,
यथा—१-७ पापक यावत् भूताभिशंकन।

च—प्रशस्तकाय विनय सात प्रकार का कहा गया है,
यथा—१. उपयोग पूर्वक गमन,
२. उपयोग पूर्वक स्थिर रहना,
३. उपयोग पूर्वक बैठना,
४. उपयोग पूर्वक सोना,

ब्रह्मेन्द्र के ६०,००० देव हैं।

लांतकेन्द्र के ५०,००० देव हैं।

महाशुकेन्द्र के ४०,००० देव हैं।

सहस्रारेन्द्र के ३०,००० देव हैं।

आनतेन्द्र और आरणेन्द्र के २०,००० देव हैं।

प्राणतेन्द्र और अच्युतेन्द्र के २०,००० देव हैं।

प्रत्येक कच्छ मे पूर्व कच्छ से दुगुने-दुगने देव कहे।

५८४ —वचन विकल्प सात प्रकार के हैं, यथा—

१. आलाप—अल्प भाषण,

२. अनालाप—कुत्सित आलाप,

३ उल्लाप—प्रश्नगर्भित वचन,

४. अनुल्लाप—निंदित वचन,

५. सलाप—परस्पर भाषण करना,

६. प्रलाप—निरर्थक वचन,

७. विप्रलाप—विरुद्ध वचन।

५८५ क—विनय सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१ ज्ञान विनय, २ दर्शन विनय, ३. चारित्र विनय, ४. मन विनय, ५. वचन विनय, ६. काय विनय, ७. लोकोपचार विनय।

ख—प्रशस्त मन विनय सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१. अपापक—शुभ चिंतन रूप विनय,

२ असावद्य—चोरी आदि निंदित कर्म रहित,

५. तैजस समुद्घात, ६. आहारक समुद्घात,
७. केवली समुद्घात।

ख—मनुष्यो के सात समुद्घात कहे गये है,
यथा—पूर्ववत्।

५८७ क—श्रमण भगवान् महावीर के तीर्थ मे सात प्रवचन-निह्नव हुए,
यथा—१. बहुरत—दीर्घकाल मे वस्तु की उत्पत्ति मानने वाले,

२. जीव प्रदेशिका—अन्तिम जीव प्रदेश मे जीवत्व मानने वाले,

३. अव्यक्तिका—साधु आदि को संदिग्ध दृष्टि से देखने वाले,

४. सामुच्छिदेका—क्षणिक भाव मानने वाले,

५. दो क्रिया—एक समय मे दो क्रिया मानने वाले,

६. त्रैराशिका—१. जीव राशि, २. अजीव राशि और ३. नो जीव राशि। इस प्रकार तीन राशि की प्ररुपणा करने वाले,

७. अबद्धिका—जीव कर्म से स्पष्ट है किन्तु कर्म से बद्ध जीव नही है, इस प्रकार की प्ररुपणा करने वाले।

ख—इन सात प्रवचन निह्नवो के सात धर्माचार्य थे,
यथा—१. जमाली, २. तिष्यगुप्त, ३. आषाढ़,

५. उपयोग पूर्वक देहली आदि का उल्लंघन करना,

६. उपयोग पूर्वक अर्गला आदि का अतिक्रमण,

७. उपयोग पूर्वक इन्द्रियों का प्रवर्तन ।

छ—अप्रशस्तकाय विनय सात प्रकार का कहा गया है,
यथा—१-७ उपयोग विना गमन करना,
यावत्—उपयोग बिना इन्द्रियों का प्रवर्तन ।

ज—लोकोपचार विनय सात प्रकार का कहा गया है,
यथा—१. अभ्यासवर्तित्व—समीपरहना — जिससे बोलने वाले को तकलीफ न हो,

२. परछंदानुवर्तित्व—दूसरे के अभिप्राय के अनुसार आचरण करना,

३. कार्य हेतु—इन्होंने मुझे श्रुत-दिया है अतः इनका कहना मुझे मानना ही चाहिये ।

४. कृतप्रतिकृतिता—इनकी मैं कुछ सेवा करूंगा तो ये मेरे पर कुछ उपकार करेंगे,

५ आर्तगवेषण—रुग्ण की गवेषणा करके औषध देना,

६. देश-कालज्ञता—देश और काल को जानना,

७. सभी अवसरों में अनुकूल रहना ।

५८६ क—समुद्घात सात प्रकार के कहे गये हैं,
यथा—१ वेदना समुद्घात, २. कषाय समुद्घात, ३ मारणातिक समुद्घात, ४ वैक्रिय समुद्घात,

ग—अश्विनी आदि सात नक्षत्र दक्षिण दिशा मे द्वार-वाले है, यथा—१. अश्विनी, २. भरणी, ३, कृत्तिका, ४. रोहिणी, ५. मृगशिरा, ६ आर्द्रा, ७ .पुनर्वसु ।

घ—पुष्य आदि सात नक्षत्र पश्चिम दिशा मे द्वारवाले हैं, यथा—१. पुष्य, २. अश्लेषा, ३. मघा, ४. पूर्वा-'फाल्गुनी, ५. उत्तराफाल्गुनी, ६. हस्त, ७. चित्रा ।

ङ—स्वाति आदि सात नक्षत्र उत्तर दिशा मे द्वारवाले हैं, यथा—स्वाति, २. विशाखा, ३. अनुराधा, ४. ज्येष्ठा, ५. मूल, ६. पूर्वाषाढा, ७. उत्तराषाढा ।

५६० क—जम्बूद्वीप मे सोमनस वक्षस्कार पर्वत पर सात कूट हैं, यथा— १ सिद्धकूट, २. सोमनसकूट, ३. मंगलावती-कूट, ४. देवकूट, ५. विमलकूट, ६. कचनकूट, ७. विशिष्टकूट ।

ख—जम्बूद्वीप मे गधमादन वक्षस्कार पर्वत पर सात कूट है,

यथा—१. सिद्धकूट, २. गधमादनकूट, ३. गंधला-वतीकूट, उत्तरकुरुकूट, ५. फलिघकूट, ६. लोहिताक्ष-कूट, ७. आनन्दन कूट ।

५६१ —बेइन्द्रिय की सात लाख कुल कोडी हैं ।

५६२ क-ङ—जीवो ने सात स्थानो मे निर्वतित (सचित) पुद्गल पाप कर्म के रूप मे चयन किये है, चयन करते हैं, और चयत करेगे ।

४. अश्वमित्र, ५. गंग, ६. पडुलुक (रोहगुप्त), ७. गोष्ठामाहिल ।

ग—इन प्रवचन निह्नवो के सात उत्पत्ति नगर है, यथा—१. श्रावस्ती, २. ऋषभपुर, ३. श्वेताम्बिका, ४. मिथिला, ५. उल्लुकातीर, ६. अंतरंजिका ७. दशपुर ।

८८ क—सातावेदनीय कर्म के सात अनुभाव (फल) हैं, यथा—१. मनोज्ञ शब्द, २. मनोज्ञ रूप, ३-५ यावत्—मनोज्ञ स्पर्श, ६. मानसिक सुख, ७. वाचिक सुख ।

ख—असातावेदनीय कर्म के सात अनुभाव (फल) हैं, यथा—१-७ अमनोज्ञ शब्द—यावत्—वाचिक दुख ।

८९ क—मघा नक्षत्र के सात तारे है,

ख—अभिजित् आदि सात नक्षत्र पूर्व दिशा मे द्वार वाले है,[1] यथा—१. अभिजित्, २. श्रवण, ३. धनिष्ठा, ४ शतभिषा, ५. पूर्वाभाद्रपदा, ६. उत्तराभाद्रपदा, ७. रेवती ।

---

१ इन सात नक्षत्रो मे पूर्व दिशा में यात्रा की जाती है इसी प्रकार आगे भी जानें ।

अष्टम स्थान—(आठवां ठाणा)

५६४ —आठ गुण सम्पन्न अणगार एकलविहारी प्रतिमा धारण करने योग्य होता है,

यथा—१. श्रद्धावान, २. सत्यवादी, ३. मेधावी, ४. बहुश्रुत, ५. शक्तिमान्, ६. अल्पकलही, ७. धैर्यवान्, ८. वीर्यसम्पन्न।

५६५ क—योनिसंग्रह आठ प्रकार का कहा गया है,

यथा—१-७ अंडज, पोतज—यावत्—उद्भिज ८. औपपातिक।

ख—अंडज आठगति वाले है, और आठ आगति वाले है।

ग—अण्डज यदि अण्डजो मे उत्पन्न हो तो अण्डजो से पोतजो से यावत्—औपपातिको से आकर उत्पन्न होते है।

घ—वही अण्डज अण्डजपने को छोडकर अण्डज रूप मे यावत्—औपपातिक रूप मे उत्पन्न होता है।

ङ—इसी प्रकार जरायुजो की गति आगति कहे।

शेष रसज आदि पाँचो की गति आगति न कहे।

इसी प्रकार उपचयन, बन्ध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा के तीन-तीन दण्डक कहें।

५६३ क—सात प्रदेशिक स्कन्ध अनन्त हैं,

ख—सात प्रदेशावगाढ पुद्गल अनन्त हैं,

ग-घ—यावत् सात गुण रुक्ष पुद्गल अनन्त हैं।

सप्तम स्थान समाप्त

४. मेरी अपकीर्ति होगी अतः मैं आलोचना कैसे करूं ?

५. मेरा अपयश होगा अत मैं आलोचना कैसे करूँ ?

६. पूजा प्रतिष्ठा की हानि होगी अत मैं आलोचना कैसे करूँ ?

७. कीर्ति की हानि होगी ,, ,,

८. मेरे यश की हानि होगी ,, ,,

ख—आठ कारणो से मायावी माया करके आलोयणा करता है—यावत्—प्रायश्चित्त स्वीकार करता है, यथा—मायावी का यह लोक निन्दनीय होता है अतः मैं आलोचना करूँ।

२. उपपात (देव-नारक) निन्दित होता है ।

३. भविष्य का जन्म निन्दनीय होता है।

४. एक वक्त माया करके आलोचना न करे तों आराधक नही होता है।

५. एक वक्त माया करके आलोचना करे तो आराधक होता है।

६. अनेक वार माया करके आलोचना न करे तो आराधक नही होता है।

७. अनेक वार माया करके भी आलोचना करे तो आराधक होता है।

५९६ क—जीवो ने आठ कर्म प्रकृतियो का चयन किया है, करते हैं, और करेंगे।

यथा—१. ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३. वेदनीय, ४. मोहनीय, ५. आयु, ६. नाम, ७. गोत्र, ८. अन्तराय।

दण्डक सूत्र

१-२४—नैरयिको ने आठ कर्म प्रकृतियो का चयन किया है, करते हैं, और करेंगे।

इस प्रकार वैमानिक पर्यन्त कहे।

इसी प्रकार उपचय, बन्ध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा के सूत्र कहे।

प्रत्येक के दण्डक सूत्र कहे।[1]

५९७ क—आठ कारणो से मायावी माया करके न आलोयणा करता है, न प्रतिक्रमण करता है,—यावत्—न प्रायश्चित्त स्वीकारता है,

यथा—१. मैंने पाप कर्म किया है अब मैं उस पाप की निन्दा कैसे करू ?

२ मैं वर्तमान मे भी पाप करता हू अत. मैं पाप की आलोचना कैसे करूं ?

३. मैं भविष्य मे भी यह पाप करूंगा—अत. मैं आलोचना कैसे करूं।

---

१ इस सूत्र के अन्तर्गत १६० सूत्र हैं।

न्तर परिषद् भी उसके सामने आती है लेकिन परिषद् के देव उस देव का आदर समादर नही करते है, तथा उसे आसन भी नही देते है। वह यदि किसी देव को कुछ कहता है तो चार पाच देव उसके सामने आकर उनका अपमान करते है और कहते है कि बस अब अधिक कुछ न कहो जो कुछ कहा यही बहुत है। आयु पूर्ण होने पर वह देव वहा से च्यवकर इस मनुष्य लोक मे हलके कुलो मे उत्पन्न होता है।

यथा—अन्त कुल, प्रात कुल, तुच्छ कुल, दरिद्र कुल, भिक्षुक कुल, कृपण कुल आदि। इन कुलो मे भी वह कुरूप, कुवर्ण, कुगन्ध, कुरस, और कुस्पर्श वाला होता है। अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ, हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्ट स्वर, अकान्त स्वर, अप्रियस्वर, अमनोज्ञ स्वर, अमनाम स्वर, और अनादेय वचन वाला वह होता है। उसके आसपास के लोग भी उसका आदर नही करते है वह कुछ किसी को उपालम्भ देने लगता है तो उसे चार पाच जने मिल कर रोकते है और कहने लगते है कि बस अब कुछ न कहो।

अमायी की सुगति—

किन्तु मायावी माया करने पर यदि आलोचना करके मरे तो वह ऋद्धिमान् देव होता है तथा

८. मेरे आचार्य और उपाध्याय विशिष्ट ज्ञान वाले हैं, वे जानेंगे कि "यह मायावी है" अत. मैं आलोचना करूं—यावत्—प्रायश्चित्त स्वीकार करूं।

माया करने पर मायावी का हृदय किस प्रकार पश्चात्ताप से दग्ध होता रहता है—यह यहां पर दृष्टान्त द्वारा बताया गया है।

जिस प्रकार लोहा, ताबा, कलई, शीशा, रुपा और सोना गलाने की भट्टी, तिल, तुस, भुसा, नल और पत्तो की अग्नि। दारु बनाने की भट्टी, मिट्टी के बर्तन, गोले, कवेलु, ईंटे आदि पकाने का स्थान, गुड पकाने की भट्टी और लुहार की भट्टी मे केशूले के फूल और उल्कापात जैसे जाज्वल्यमान, हजारो चिनगारिया जिनसे उछल रही हैं ऐसे अगारो के समान मायावी का हृदय पश्चात्ताप रूप अग्नि से निरन्तर जलता रहता है।

मायावी को सदा ऐसी आशका बनी रहती है कि ये सब लोग मेरे पर ही शंका करते हैं।

मायावी की दुर्गति—

मायावो माया करके आलोचना किये विना यदि मरता है और देवो मे उत्पन्न होता है तो वह महर्धिक देवो मे यावत् सौधर्मादि देव लोको मे उत्पन्न नही होता है। उत्कृष्ट स्थिति वाले देवों मे भी वह उत्पन्न नही होता है। उस देव की बाह्य या आभ्य-

छठे स्थान के समान—यावत्—संसारी जीव कर्म के आधार पर रहे हुए हैं।

७. पुद्गलादि अजीव जीवो से सग्रहीत (बद्ध) हैं।

८. जीव ज्ञानावरणीयादि कर्मो से संग्रहीत (बद्ध) है।

६८१ —गणी (आचार्य) की आठ सम्पदा (भावसमृद्धि) कही गयी है, यथा—

१. आचार सम्पदा—क्रियारूप सम्पदा,

२. श्रुत सम्पदा—शास्त्र ज्ञान रूप सम्पदा,

३. शरीर सम्पदा—प्रमाणोपेत शरीर तथा अवयव,

४. वचन सम्पदा—आदेय और मधुर वचन,

५. वाचना सम्पदा—शिष्यों की योग्यतानुसार आगमो की वाचना देना।

६. मति सम्पदा—अवग्रहादि बुद्धिरूप,

७. प्रयोग सरपदा—वाद विषयक स्वसामर्थ्य का ज्ञान तथा द्रव्य-क्षेत्र आदि का ज्ञान।

८. सग्रह परिज्ञा सम्पदा—वाल-वृद्ध तथा रूप आदि के क्षेत्रादि का ज्ञान।

६०२ —चक्रवर्ती की प्रत्येक महानिधि आठ चक्र के ऊपर प्रतिष्ठित है और प्रत्येक आठ-आठ योजन ऊंचे है।

६०३ —समितिया आठ कही गयी है

यथा—१. ईर्यासमिति, २. भाषा समिति, ३. एपणा समिति, ४. आदान भांड मात्र निक्षेपणा

उत्कृष्ट स्थिति वाला देव होता है, हार से उसका वक्षस्थल सुशोभित होता है, हाथ मे कंकण तथा मस्तक पर मुकुट आदि अनेक प्रकार के आभूषणो से वह सुन्दर शरीर से देदीप्यमान होता है, वह दिव्य भोगोपभोगो को भोगता है। वह कुछ कहने लगता है तो उसे चार पाँच देव आकर उत्साहित करते है और कहने लगते है कि आप खूब बोले। वह देव देवलोक से च्यवकर मनुष्य लोक मे उच्चकुलो मे उत्पन्न होता है तो उसे सुन्दर शरीर प्राप्त होता है, आस-पास के लोग उसका बहुत आदर करते है तथा बोलने के लिए बहुत आग्रह करते है।

५९८ क—सवर आठ प्रकार का कहा गया है,
यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय संवर, यावत् स्पर्शेन्द्रिय संवर, ६. मन सवर, ७ वचन सवर, ८ काय संवर।

ख—असंवर आठ प्रकार का कहा गया है,
यथा—१-८ श्रोत्रेन्द्रिय असवर यावत् काय असवर।

५९९ स्पर्श आठ प्रकार का कहा गया है,
यथा—१ कर्कश, २. मृदु, ३. गुरु, ४ लघु, ५. शीत ६ उष्ण, ७. स्निग्ध ८. रुक्ष।

६०० लोक स्थिति आठ प्रकार की कही गयी है,
यथा—१ आकाश के आधार पर रहा हुआ वायु, २. वायु के आधार पर रहा हुआ घनोदधि—शेष

सम्पन्न, ४. ज्ञान सम्पन्न, ५. दर्शन सम्पन्न, ६. चारित्र सम्पन्न, ७. क्षान्त, ८. दांत।

६०५ प्रायश्चित्त आठ प्रकार का कहा गया है,
यथा—१. आलोचना योग्य, २. प्रतिक्रमण योग्य, ३. उभय योग्य, ४. विवेक योग्य[1]
५. व्युत्सर्ग योग्य, ६. तप योग्य, ७. छेद योग्य[2]
८. मूल योग्य[3]।

६०६ —मद स्थान आठ कहे गये हैं,
यथा—१. जाति मद, २. कुल मद, ३. बल मद, ४. रूप मद, ५. तप मद, ६. सूत्र मद, ७. लाभ मद, ८. ऐश्वर्य मद।

६०७ —अक्रियावादी आठ है,
यथा—१. एक वादी—आत्मा एक ही है ऐसा कहने वाले,
२. अनेकवादी—सभी भावों को भिन्न मानने वाले,
३. मितवादी—अनन्त जीव हैं फिर भी जीवों की एक नियत संख्या मानने वाले।

---

१ आधाकर्म आदि सदोष आहार के त्याग से शुद्धि हो।

२ कायोत्सर्ग योग्य।

३ अनेक अतिचार लगने से जो तप करने में असमर्थ हो—उसके श्रमण पर्याय का छेद करना।

४ मूल महाव्रत का भंग होने पर पुनः महाव्रतारोपण करना।

समिति, ५. उच्चार, प्रस्रवण, श्लेष्म, मल, सिंघाण परिष्ठापनिका समिति।

६ मन समिति[1] ७. वचन समिति[2] ८. काय समिति[3]

६०४ क—आठ गुण सम्पन्न अणगार आलोचना सुनने योग्य होता है,

यथा—१. आचारवान्, २. अवधारणावान् ३. व्यवहारवान्,

४ आलोचक का सकोच मिटाने मे समर्थ,

५. शुद्धि करवाने मे समर्थ,

६. आलोचक की शक्ति के अनुसार प्रायश्चित्त देने वाला,

७. आलोचक के दोष अन्य को न कहने वाला,

८. दोष सेवन से अनिष्ट होता है, यह समझाने मे समर्थ।

ख—आठ गुण युक्त अणगार अपने दोषो की आलोचना कर सकता है,

यथा—१. जातिसम्पन्न, २. कुलसम्पन्न, ३. विनय

---

१ दुष्ट सकल्प का त्याग और प्रशस्त संकल्प का स्वीकार।

२ असत्य, अहितकर और अपरिमित वचन का त्याग, सत्य हितकर और परिमित वचन का स्वीकार।

३ अकुशल प्रवृत्ति का त्याग और कुशल प्रवृत्ति का स्वीकार।

७. लक्षण—स्त्री-पुरुष के शुभाशुभ लक्षण बताने वाला शास्त्र।

८. व्यञ्जन—तिल मस आदि के शुभाशुभ फल बताने वाला शास्त्र।

६०९ —वचन विभक्ति आठ प्रकार की कही गयी है, यथा १. निर्देश मे प्रथमा—वह, यह, मैं।

२. उपदेश मे द्वितीया—यह करो! इस श्लोक को पढो!

३. करण मे तृतीया—मैंने कुण्ड बनाया।

४. सम्प्रदान मे, चतुर्थी—नमः स्वस्ति, स्वाहा के योग मे, साधु के लिये भिक्षा देना।

५. अपादान मे, पचमी—पृथक् करने मे तथा ग्रहण करने मे, यथा—कूप से जल निकाल, कोठी मे से धान्य ग्रहण कर।

६. स्वामित्व के सम्बन्ध षष्ठी—इसका, उसका तथा सेठ का नौकर।

७. सन्निधान अर्थ मे सप्तमी—आधार अर्थ मे—मस्तक पर मुकुट है।

काल मे—प्रात'काल मे कमल खिलता है, भावरूप क्रिया विशेषण मे—सूर्य अस्त होने पर रात्रि हुई।

८. आमन्त्रण मे अष्टमी—यथा—हे युवान्! हे राजन्!

४. निर्मितवादी—"यह सृष्टि किसी की बनायी हुई है" ऐसा मानने वाले ।

५. सातवादी—सुख से रहना, किन्तु तपश्चर्या न करना ।

६. समुच्छेदवादी—प्रतिक्षण वस्तु नष्ट होती है, ऐसा मानने वाले क्षणिकवादी ।

७. नित्यवादी—सभी वस्तुओ को नित्य मानने वाले ।

८. मोक्ष या परलोक नही है, ऐसा मानने वाले ।

६०८ —महानिमित्त आठ प्रकार का कहा गया है, यथा—१. भौम—भूमि विषयक शुभाशुभ का ज्ञान करने वाला शास्त्र ।

२. उत्पात—रुधिर वृष्टि आदि उत्पातो का फल बताने वाला शास्त्र ।

३. स्वप्न—शुभाशुभ स्वप्नो का फल बताने वाला शास्त्र ।

४. अतरिक्ष—गाधर्व नगरादि का शुभाशुभ फल बताने वाला शास्त्र ।

५. अग—चक्षु, मस्तक आदि अगो के फरकने से शुभाशुभ फल की सूचना देने वाला शास्त्र ।

६. स्वर—षड्ज आदि स्वरो का शुभाशुभ फल बताने वाला शास्त्र ।

६१२ क—शक्रेन्द्र के आठ अग्रमहिषिया है,

यथा—१. पद्मा, २. शिवा, ३. सती, ४. अंजू, ५. अमला, ६. आसरा, ७. नवमिका ८. रोहिणी।

ख—ईशानेन्द्र के आठ अग्रमहिषिया है,

यथा—१. कृष्णा, २. कृष्णराजी, ३. रामा, ४. रामरक्षिता, ५. वसु, ६. वसुगुप्ता, ७. वसुमित्रा, ८. वसुंधरा।

ग—शक्रेन्द्र के सोम लोकपाल की आठ अग्रमहिषियाँ है,

घ—ईशानेन्द्र के वैश्रमण लोकपाल की आठ अग्रमहिषियाँ है,

ड—महाग्रह आठ हैं

यथा—१. चन्द्र, २. सूर्य, ३. शुक्र, ४. बुध, ५. वृहस्पति, ६, मगल, ७. शनैश्चर, ८. केतु।

६१३ —तृण वनस्पति काय आठ प्रकार का है,

यथा—१ मूल, २. कद, ३. स्कंध, ४. त्वचा, ५. खाल, ६. प्रवाल, ७. पत्र, ८. पुष्प।

६१४ क—चउरिन्द्रिय जीवो को हिंसा न करने वालो में आठ प्रकार का सयम होता है। यथा—

१. नेत्र सुख नष्ट नही होता,

२. नेत्र दु:ख उत्पन्न नही होता,

यावत्—७. स्पर्श सुख नष्ट नही होता,

८. स्पर्श दुःख उत्पन्न नही होता।

६१० क—आठ स्थानो को छद्मस्थ पूर्णरूप से न देखता है और न जानता है।

यथा—१-६ धर्मास्तिकाय-यावत् ७. गंध, ८. वायु।

ख—आठ स्थानो को सर्वज्ञ पूर्णरूप से देखता है और जानता है।

यथा—१-६ धर्मास्तिकाय यावत् ७. गंध, ८. वायु।

६११ —आयुर्वेद आठ प्रकार का कहा गया है,

यथा—१. कुमार भृत्य—बाल चिकित्सा शास्त्र,

२. कायचिकित्सा—शरीर चिकित्सा शास्त्र,

३. शालाक्य—गले से ऊपर के अंगो की चिकित्सा का शास्त्र।

४. शल्यहत्या—शरीर मे कंटक आदि कही लग जाय तो उसकी चिकित्सा का शास्त्र,

५. जंगोली—सर्प आदि के विष की चिकित्सा का शास्त्र।

६. भूतविद्या—भूत-पिशाच आदि के शमन का शास्त्र,

७. क्षारतंत्र—वीर्यपात की चिकित्सा का शास्त्र,

८. रसायन—शरीर आयुष्य और बुद्धि की वृद्धि करने वाला शास्त्र।

---

१ इसका दूसरा नाम—बाजीकरण है—मनुष्य को घोड़े के समान करने वाली औषधी।

६१७ —भगवान् पार्श्वनाथ के आठ गण और आठ गणधर थे, यथा—१. शुभ, २. आर्य घोष, ३. वशिष्ठ, ४. ब्रह्मचारी, ५. सोम, ६. श्रीधर, ७. वीर्य, ८. भद्रयश।

६१८ —दर्शन आठ प्रकार के कहे गये है,
यथा—१. सम्यग्दर्शन, २. मिथ्यादर्शन, ३. सम्यग्मिथ्यादर्शन, ४. चक्षुदर्शन, यावत् ५-७ केवलदर्शन, ८. स्वप्नदर्शन।

६१९ —औपमिक काल आठ प्रकार के कहे गये है,
यथा—१. पल्योपम, २. सागरोपम, ३. उत्सर्पिणी, ४. अवसर्पिणी, ५. पुद्गल परावर्तन, ६. अतीतकाल, ७. भविष्य काल, ८. सर्वकाल।

६२० —भगवान् अरिष्टनेमि के पश्चात् ८ युग प्रधान पुरुष मोक्ष मे गये और उनकी दीक्षा के दो वर्ष पश्चात् वे मोक्ष मे गये।

६२१ —भगवान् महावीर से मुण्डित होकर आठ राजा (गृहस्थ त्यागकर) प्रव्रजित हुए।
यथा—१. वीरागद, २ क्षीरयश, ३. सजय, ४. एणेयक, ५. श्वेत, ६. शिव, ७. उदायन, ८. शख।

६२२ —आहार आठ प्रकार के है,
यथा—१. मनोज्ञ अशन, २. मनोज्ञ पान, ३. मनोज्ञ खाद्य, ४. मनोज्ञ स्वाद्य, ५.अमनोज्ञ अशन,

ख—चउरिन्द्रिय जीवो की हिंसा करने वालो के आठ प्रकार का असयम होता है, यथा—

१. नेत्र सुख नष्ट होता है,

२. नेत्र दुःख उत्पन्न होता है,

३. यावत्—७. स्पर्श सुख नष्ट होता है ८. स्पर्श दुःख उत्पन्न होता है।

६१५ —सूक्ष्म आठ प्रकार के हैं,

यथा—१ प्राणसूक्ष्म—कुंथुआ आदि

२. पनक सूक्ष्म—लीलण, फूलण,

३. बीज सूक्ष्म—वटबीज,

४. हरित सूक्ष्म—लीली वनस्पति,

५. पुष्प सूक्ष्म

६. अड सूक्ष्म—कृमियो के अडे,

७ लयन सूक्ष्म—कीडी नगरा

८. स्नेह सूक्ष्म—धुंअर आदि।

६१६ —भरत चक्रवर्ती के पश्चात् आठ युग प्रधान पुरुष व्यवधान रहित सिद्ध हुये यावत्—सर्व दुःख रहित हुए।

यथा—१. आदित्य यश, २. महायश, ३. अतिबल, ४. महाबल, ५. तेजोवीर्य, ६. कार्तवीर्य, ७. दंडवीर्य, ८. जलवीर्य ।

ग—सभी आभ्यन्तर कृष्णराजियां चौरस हैं।

आठ कृष्णराजियो के आठ नाम है—

यथा—१. कृष्णराजि, २. मेघराजि, ३. मघाराजि, ४. माघवती, ५. वातपरिधा, ६. वातपरिक्षोभ, ७. देवपरिधा, ८. देवपरिक्षोभ ।

इन आठ कृष्णराजियो के मध्य भाग[1] मे आठ लोकान्तिक विमान है,

यथा—१. अर्चि, २. अर्चिमाली, ३. वैरोचन, ४. प्रभकर, ५. चन्द्राभ, ६. सूर्याभ ७. सुप्रतिष्ठाभ, ८. अग्नेयाभ ।

इन आठ लोकान्तिक विमानो मे आठ लोकान्तिक देव रहते है,

यथा—१. सारस्वत, २. आदित्य, ३. वह्नि, ४. वरुण ५. गर्दतोय, ६. तुषित, ७. अव्याबाध, ८. आग्नेय ।

६२४ क—धर्मास्तिकाय के मध्य प्रदेश आठ हैं,

ख—अधर्मास्तिकाय के मध्य प्रदेश आठ है,

ग—आकाशास्तिकाय के मध्य प्रदेश आठ हैं,

घ—जीवास्तिकाय के मध्य प्रदेश आठ है ।

---

१ आठ अवकाशान्तरो में ।

७ अमनोज्ञ पान ६. अमनोज्ञ खाद्य, ८. अमनोज्ञ स्वाद्य ।

६२३ क—सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के नीचे ब्रह्मलोक कल्प मे रिष्टविमान के प्रस्तट मे अखाडे के समान समचतुरस्र (समचोरस) संस्थान वाली आठ कृष्णराजिया है,

यथा—१-२ दो कृष्णराजिया पूर्व मे,

३-४ दो कृष्णराजियां दक्षिण मे

५-६ दो कृष्णराजियां पश्चिम मे

७-८ दो कृष्णराजियां उत्तर मे ।

१. पूर्व दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि दक्षिण दिशा की बाह्य कृष्णराजि से स्पष्ट है ।

२. दक्षिण दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि पश्चिम दिशा की बाह्य कृष्णराजि से स्पृष्ट है ।

३. पश्चिम दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि उत्तर दिशा की बाह्य कृष्णराजि से स्पृष्ट है ।

४. उत्तर दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि पूर्व दिशा की बाह्य कृष्णराजि से स्पृष्ट है ।

क—पूर्व और पश्चिम दिशा की दो बाह्य कृष्णराजियां षट्कोण हैं ।

ख—उत्तर और दक्षिण दिशा की दो बाह्य कृष्णराजिया त्रिकोण हैं ।

द्वीपो के द्वीप आठसौ-आठसौ योजन के लम्बे चौडे है ।

६३१ —कालोद समुद्र की वलयाकार चौडाई ८ लाख योजन की है ।

६३२ क—आभ्यन्तर पुष्करार्ध द्वीप की वलयाकार चौडाई भी आठ लाख योजन की है ।

ख—वाह्य पुष्करार्ध द्वीप की वलयाकार चौडाई भी इतनी ही है ।

६३३ —प्रत्येक चक्रवर्ती के काकिणी रत्न आठ सुवर्ण प्रमाण होते हैं

काकिणी रत्न के ६ तले, १२ अस्रि (कोटी) आठ कर्णिकायें होती है ।

काकिणी रत्न का सस्थान एरण के समान होता है ।

६३४ —मगध का योजन आठ हजार धनुष का निश्चित है ।

६३५ क— जम्बूद्वीप मे सुदर्शन वृक्ष आठ योजन का ऊचा है, मध्य भाग मे आठ योजन का चौडा है, और सर्व परिमाण कुछ अधिक आठ योजन का है ।[1]

ख—कूट शाल्मली वृक्ष का परिमाण भी इसी प्रकार है ।[2]

---

१ यह सुदर्शन वृक्ष उत्तर कुरु मे है ।

२ यह कूट शाल्मली वृक्ष देवकुरु में है ।

६२५ —महापद्म अर्हन्त आठ राजाओ को मुण्डित करके तथा गृहस्थ का त्याग करा करके अणगार प्रवज्या देंगे।
यथा—१. पद्म, २. पद्मगुल्म, ३ नलिन, ४. नलिन-गुल्म ५. पद्मध्वज, ६. धनुध्वज, ७. कनकरथ, ८. भरत।

६२६ —कृष्ण वासुदेव की आठ अग्रमहिषिया अर्हन्त''' अरिष्ट नेमि के समीप मुण्डित होकर तथा गृहस्थ से निकल-कर अणगार प्रवज्या स्वीकार करेंगी, सिद्ध होगी यावत् सर्व दु खो से मुक्त होगी।
यथा—१. पद्मावती, २. गोरी, ३. गधारी, ४. लक्षणा, ५. सुसीमा, ६. जाम्ववती ७. सत्यभामा ८. रुक्मिणी।

६२७ —वीर्यप्रवाद पूर्व की आठ वस्तु और आठ चूलिका वस्तु हैं।

६२८ —गतिया आठ प्रकार की है,
यथा—१. नरक गति २. तिर्यंचगति
३-५ यावत् सिद्ध गति,
६. गुरु गति ७. प्रणोदन गति ८. प्राग् भारगति

६२९ —गंगा, सिन्धु रक्ता और रक्तवती देवियों के द्वीप आठ-आठ योजन के लम्बे चौडे है।

६३० —उल्कामुख, मेघमुख, विद्युन्मुख और विद्युद्दत अन्तर-

घ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे शीता महानदी के दक्षिण मे आठ चक्रवर्ती विजय हैं,

यथा—१. वत्स, २-७ सुवत्स यावत्-८ मंगलावती।

ङ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में शीतोदा महानदी के दक्षिण में आठ चक्रवर्ती विजय हैं, १-८ पद्म यावत् सलिलावती।

च—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में शीतोदा के उत्तर में आठ चक्रवर्ती विजय हैं,

यथा—१. वप्रा, २. सुवप्रा, यावत् गंधिलावती।

छ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में शीता महानदी के उत्तर में आठ राजधानियां हैं,

यथा—१. क्षेमा, २. क्षेमपुरी, ३. यावत्-पुंडरिकिणी।

ज—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे शीता महानदी के दक्षिण मे आठ राजधानियां हैं।

यथा—१. सुसीमा, २. कुंडला यावत् ८ रत्नसंचया

झ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में शीतोदा महानदी के दक्षिण में आठ राजधानिया हैं,

१. अश्वपुरा, २-७ यावत् वीतशोका।

ञ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में शीतोदा महानदी के उत्तर मे आठ राजधानियां हैं,

यथा—१. विजया, २. वैजयन्ती—यावत् अयोध्या।

६३६ क—तमिस्रा गुफा की ऊंचाई आठ योजन की है।[1]

ख—खण्ड प्रपात गुफा की ऊंचाई भी इसी प्रकार आठ योजन की है।

६३७ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के दोनो किनारो पर वक्षस्कार पर्वत है,

यथा—१. चित्रकूट, २. पद्मकूट[2], ३ नलिनीकूट, ४. एकशैलकूट, ५. त्रिकूट, ६. वैश्रमणकूट, ७ अंजनकूट, ८ मातंजन कूट।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के किनारों पर आठ वक्षस्कार पर्वत है।

यथा—१. अकावती, २. पद्मावती, ३. आशीविष, ४ सुखावह, ५. चन्द्रपर्वत, ६. सूर्य पर्वत, ७. नागपर्वत, ८. देव पर्वत।

ग—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के उत्तरी किनारे पर आठ चक्रवर्ती विजय हैं,

यथा—१. कच्छ, २. सुकच्छ, ३. महाकच्छ, ४ कच्छगावती, ५. आवर्त, ६-७ यावत् ८. पुष्कलावती विजय।

---

१ तमिस्रा गुफा।

२ इसका अपरनाम ब्रह्मकूट है।

ग-घ—विशेप सूचना—रक्ता और रक्तवती नदियों के इतने ही कुण्ड हैं।

ट—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत से पश्चिम मे शीतोदा महानदी के दक्षिण मे आठ दीर्घ वैताढ्य पर्वत हैं यावत्—आठ नृत्यमालक देव है, आठ गंगा कुण्ड, आठ सिन्धु कुण्ड, आठ गगा (नदिया) आठ सिन्धु नदियाँ, आठ ऋपभ कूट पर्वत और आठ ऋपभ कूट देव हैं।

च—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के उत्तर मे आठ दीर्घ वैताढ्य पर्वत है यावत्—आठ नृत्यमालक देव है। आठ रक्त कुण्ड हैं, आठ रक्तावती कुण्ड है, आठ रक्ता नदियाँ है यावत्—आठ ऋपभ कूट देव हैं।

६४० —मेरुपर्वत की चूलिका मध्य भाग मे आठ योजन की चौडी है।

६४१ क—धातकी खण्डद्वीप के पूर्वार्ध में धातकी वृक्ष आठ योजन का ऊँचा है, मध्य भाग मे आठ योजन का चौडा है, और इसका सर्व परिमाण कुछ अधिक आठ योजन का है।

सूचना—धात की वृक्ष से मेरु चूलिका पर्यन्त सारा कथन जम्बूद्वीप के वर्णन के समान कहना चाहिए।[1]

---

१ सूत्र ६३५ से ६४० तक जम्बूद्वीप का वर्णन हैं।

७३८ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे शीता महानदी के उत्तर में, उत्कृष्ट आठ अर्हन्त, आठ चक्रवर्ती, आठ वलदेव और आठ वासुदेव उत्पन्न हुये, होते हैं और होंगे।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे शीता महानदी के दक्षिण मे इतने ही अरिहन्त आदि हुए हैं, होते हैं और होंगे।

ग—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के दक्षिण मे इतने ही अरिहन्त आदि हुए है, होते हैं और होंगे।

घ—उत्तर मे भी इतने ही अरिहन्त आदि हुए हैं, होते हैं और होंगे।

६३९ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत से पूर्व मे शीता महानदी के उत्तर मे आठ दीर्घ वैताढ्य, आठ तमिस्र गुफा, आठ खडप्रपात गुफा, आठ कृतमालक देव, आठ नृत्यमालक देव, आठ गंगा कुण्ड, आठ सिन्धु कुण्ड, आठ गगा, आठ सिन्धु, आठ ऋषभकूट पर्वत और आठ ऋषभ-कूट देव हैं।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे शीता महानदी के दक्षिण मे आठ दीर्घवैताढ्य हैं—यावत् — आठ ऋषभकूट देव है।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के उत्तर मे रुक्मी वर्षधर पर्वत पर आठ कूट है,

यथा—१. सिद्ध, २. रुक्मी, ३. रम्यक्, ४. नरकान्त, ५. बुद्धि, ६. रुक्मकूट,७. हिरण्यवत, ८. मणिकंचन।

ग—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे रुचकवर पर्वत पर आठ कूट हैं,

यथा—१. रिष्ट, २. तपनीय, ३. कंचन, ४. रजत, ५. दिशास्वस्तिक, ६. प्रलम्ब, ७. अंजन, ८. अजन-पुलक।

घ—इन आठ कूटो पर महर्धिक यावत् पल्योपम स्थिति वाली आठ दिशा कुमारियां रहती है।

यथा—१. नदुत्तरा, २. नंदा, ३. आनन्दा, ४. नंदि-वर्धना, ५. विजया, ६. वैजयंती, ७. जयंती ८. अप-राजिता।

ङ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के दक्षिण मे रुचकवर पर्वत पर आठ कूट हैं,

यथा—१. कनक, २. कचन, ३. पद्म, ४. नलिन, ५. शशि, ६. दिवाकर, ७. वैश्रमण ८. वैडूर्य

च—इन आठ कूटो पर महर्धिक यावत् पल्योपम स्थिति वाली आठ दिशा कुमारिया रहती है।

यथा—१. समाहारा, २. सुप्रतिज्ञा, ३. सुप्रबद्धा, ४. यशोधरा, ५. लक्ष्मीवती, ६. शेषवती, ७. चित्र-गुप्त ८. वसुंधरा।

ख—घातकी खण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध मे भी महाघातकी वृक्ष से मेरु चूलिका पर्यन्त का कथन जम्बूद्वीप के वर्णन के समान है।

ग—इसी प्रकार पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध मे पद्मवृक्ष से मेरु चूलिका पर्यन्त का कथन जम्बूद्वीप के समान है।

घ—इस प्रकार पुष्करवरद्वीपार्ध के पश्चिमार्ध मे महापद्म वृक्ष से मेरुचूलिका पर्यन्त का कथन जम्बूद्वीप के समान हैं।

६४२ क—जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत पर भद्र शालवन मे आठ दिगाहस्तिकूट है।

यथा—१ पद्मोत्तर, २. नीलवत, ३. सुहस्ती, ४. अंजनागिरी, ५. कुमुद, ६. पलाश, ७. अवतसक, ८. रोचनागिरी।

ख—जम्बूद्वीप की जगति आठ योजना की ऊंची है और मध्य मे आठ योजन की चौडी है।

६४३ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के दक्षिण मे महाहिमवंत वर्षधर पर्वत पर आठ कूट हैं,

यथा—१. सिद्ध, २ महाहिमवत, ३. हिमवत, ४. रोहित, ५. हरीकूट, ६. हरिकान्त, ७. हरिवास, ८. वैडूर्य।

४. भोग मालिनी, ५. सुवत्सा, ६. वत्समित्रा,
७. वारिसेना, ८. वलाहका।

ठ—आठदिशा कुमारियां ऊर्ध्वलोक मे रहती हैं,
यथा—१. मेघंकरा २. मेघवती, ३. सुमेघा,
४. मेघमालिनी, ५. तोयधारा, ६. विचित्रा,
७. पुष्पमाला, ८. अनिदिता।

६४४ क—तिर्यंच और मनुष्यो की उत्पत्ति वाले आठ कल्प (देवलोक) है,
यथा—१-८ सौधर्म–यावत्–सहस्रारेन्द्र।

ख—इन आठ कल्पो मे आठ इन्द्र है,
यथा—१-८ शक्रेन्द्र–यावत्–सहस्रारेन्द्र।

ग—इन आठ इन्द्रो के आठ यान विमान हैं,
यथा—१. पालक, २. पुष्पक, ३. सोमनस,
४. श्रीवत्स, ५. नदावर्त, ६. कामक्रम, ७. प्रीतिमन,
८. विमल।

६४५ —अष्ट अष्टमिका भिक्षुपडिमा का सूत्रानुसार आराधन यावत्—सूत्रानुसार पालन ६४ अहोरात्रि मे होता है और उसमे २८८ बार भिक्षा ली जाती है।

६४६ क—संसारी जीव आठ प्रकार के हैं,
यथा—१. प्रथम समयोत्पन्न नैरयिक,
२. अप्रथम समयोत्पन्न नैरयिक,
३-८ यावत्—अप्रथम समयोत्पन्न देव।

छ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में रुचकवर पर्वत पर आठ कूट हैं,

यथा—१. स्वस्तिक, २. अमोघ, ३. हिमवत्, ४. मंदर, ५. रुचक, ६. चक्रोत्तम, ७. चन्द्र, ८. सुदर्शन।

ज—इन आठ कूटों पर महर्धिक यावत् पल्योपम स्थिति-वाली आठ दिशाकुमारिया रहती हैं,

यथा—१. इलादेवी, २. सुरादेवी, ३. पृथ्वी, ४. पद्मावती, ५. एक नासा, ६. नवमिका, ७. सीता, ८. भद्रा।

झ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के उत्तर मे रुचकवर पर्वत पर आठ कूट हैं,

यथा—१. रत्न, २. रत्नोच्चय, ३. सर्वरत्न, ४. रत्न-सचय, ५. विजय, ६. वैजयंत, ७. जयन्त, ८. अप-राजित।

ञ—इन आठ कूटो पर महर्धिक यावत् पल्योपम स्थिति-वाली आठ दिशाकुमारिया रहती हैं,

यथा—१. अलंबुसा, २. मितकेसी, ३. पोंडरी ४. गीत-वारुणी ५. आशा, ६. सर्वगा, ७. श्री, ८. ह्री।

ट—आठ दिशा कुमारिया अधोलोक मे रहती हैं,

यथा—१. भोगंकरा, २. भोगवती, ३. सुभोगा,

६४९ —आठ आवश्यक कार्यों के लिए उद्यम, प्रयत्न और पराक्रम करना चाहिये किन्तु इनके लिए प्रमाद नही करना चाहिए,

यथा—१. अश्रुत धर्म को सम्यक् प्रकार से सुनने के लिए तत्पर रहना चाहिये।

२. श्रुत धर्म को ग्रहण करने और धारण करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

३. संयम स्वीकार करने के पश्चात् पापकर्म न करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

४. तपश्चर्या से पुराने पाप कर्मों की निर्जरा करने के लिए तथा आत्मशुद्धि के लिए तत्पर रहना चाहिए ।

५. निराश्रित—परिजन को आश्रय देने के लिए तत्पर रहना चाहिये।

६. शैक्ष (नव दीक्षित) को आचार और गोचरी विषयक मर्यादा सिखाने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

७. ग्लान की ग्लानि रहित सेवा करने के लिए तत्पर रहना चाहिये।

८. साधर्मिको मे कलह उत्पन्न होने पर राग-द्वेष रहित हो पक्ष ग्रहण किये बिना मध्यस्थ भाव से साधार्मिको के वोलचाल, कलह, और तु-तुं मैं मैं को शान्त करने के लिए प्रयत्न करना चाहिये।

ख—सर्वजीव आठ प्रकार के है,

यथा—१ नैरयिक, २. तिर्यंच योनिक, ३. तिर्यंच-नियां, ४. मनुष्य, ५. मनुष्यनिया, ६. देव, ७. देविया, ८. सिद्ध।

ग—अथवा सर्वजीव आठ प्रकार के हैं,

यथा—१-५, आभिनिबोधिक ज्ञानी, यावत्—केवलज्ञानी,

६ मति अज्ञानी, ७ श्रुत अज्ञानी,

८. विभंग ज्ञानी।

६४७ —संयम आठ प्रकार का है,

यथा—१. प्रथम समय—सूक्ष्म सम्पराय-सराग-संयम,

२. अप्रथम समय—सूक्ष्म संपराय संयम,

३. प्रथम समय—वादर सराग संयम,

४. अप्रथम समय—वादर-सराग-संयम,

५. प्रथम समय—उपशान्त कषाय-वीतराग संयम,

६. अप्रथम समय—उपशान्त कषाय-वीतराग संयम,

७. प्रथम समय—क्षीण कषाय वीतराग संयम,

८. अप्रथम समय—क्षीण कषाय वीतराग संयम।

६४८ —ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी के आठ नाम हैं,

यथा—१. ईषत्, २. ईषत्प्राग्भारा, ३. तनु, ४. तनु-तनु, ५. सिद्धि, ६. सिद्धालय, ७, मुक्ति, ८. मुक्तालय।

६५३ —भगवान् महावीर के उत्कृष्ट ८०० ऐसे शिष्य थे जिनकी कल्याणकारी अनुत्तरोपपातिक देवगति यावत् भविष्य मे (भद्र) मोक्ष गति निश्चित है।

६५४ क—वाणव्यन्तर देव आठ प्रकार के है,
यथा—१. पिशाच, २. भूत, ३. यक्ष, ४. राक्षस, ५. किन्नर, ६. किंपुरुप, ७. महोरग, ८. गधर्व।

ख—इन आठ वाणव्यन्तर देवो के आठ चैत्य वृक्ष है,
यथा—१. पिशाचो का कदम्ब वृक्ष,
२. यक्षों का चैत्य वृक्ष,
३. भूतो का तुलसी वृक्ष,
४. राक्षसो का कडक वृक्ष,
५. किन्नरो का अशोक वृक्ष,
६. किंपुरुपो का चपक वृक्ष
७. भुजंगो का नाग वृक्ष[1]
८. गधर्वो का तिंदुक वृक्ष।

६५५ —रत्नप्रभा पृथ्वी के समभूमि भाग से ८०० योजन ऊंचे ऊपर की ओर सूर्य का विमान गति करता है।

६५६ —आठ नक्षत्र चन्द्र के साथ स्पर्श करके गति करते है,
यथा—१. कृतिका, २. रोहिणी, ३. पुनर्वसु, ४. मघा, ५. चित्रा, ६. विशाखा, ७. अनुराधा, ८. ज्येष्ठा।

---

१ महोरगो का

५० —महाशुक्र और सहस्रारकल्प मे विमान आठसौ योजन के ऊचे है।

५१ —भगवान् अरिष्टनेमिनाथ के आठसौ ऐसे वादि मुनियो की सम्पदा थी जो देव, मनुष्य और असुरो की पर्षदा मे किसी से पराजित होने वाले नही थे।

५२ —केवली समुद्घात आठ समय का होता है,

यथा—१. प्रथम समय मे स्वदेह प्रमाण नीचे ऊँचे, लम्वा और पोला चौदह रज्जु (लोक) प्रमाण दण्ड किया जाता है,

२. द्वितीय समय मे पूर्व और पश्चिम मे लोकान्त पर्यन्त कपाट किये जाते हैं,

३. तृतीय समय मे दक्षिण और उत्तर मे लोकान्त पर्यन्त मथान किया जाता है,

४ चतुर्थ समय मे रिक्त स्थानो की पूर्ति करके लोक को पूरित किया जाता है,

५. पाँचवे समय मे आंतरो का संहार किया जाता है,

६ छठे समय मे मंथान का संहरण किया जाता है,

७. सातवें समय मे कपाट का संहरण किया जाता है,

८. आठवें समय मे दण्ड का संहरण किया जाता है।

नवम स्थान (नवां ठाणा)

६६१ —नौ प्रकार के सांभोगिक श्रमण निर्ग्रन्थो को विसंभोगी करे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नही होता है,

यथा—१. आचार्य के प्रत्यनीक को,

२. उपाध्याय के प्रत्यनीक को,

३. स्थविरों के प्रत्यनीक को,

४. कुल के प्रत्यनीक को,

५. गण के प्रत्यनीक को,

६. संघ के प्रत्यनीक को,

७. ज्ञान के प्रत्यनीक को,

८. दर्शन के प्रत्यनीक को,

९. चारित्र के प्रत्यनीक को।

६६२ —ब्रह्मचर्य (आचाराग प्रथम श्रुतस्कन्ध) के नौ अध्ययन हैं,

यथा—१. शस्त्र परिज्ञा, २-७ लोक विजय यावत्—
८ उपधान श्रुत, ९ महापरिज्ञा।

६५७ क—जम्बूद्वीप के द्वार आठ योजन ऊँचे हैं।

ख—सभी द्वीप समुद्रो के द्वार आठ योजन ऊँचे है।

६५८ क—पुरुप वेदनीय कर्म की जघन्य आठ वर्ष की बन्ध स्थिति है।

ख—यशोकीर्ति नाम कर्म की जघन्य बन्ध स्थिति आठ मुहूर्त की है।

ग—उच्चगोत्र कर्म को भी इतनी ही स्थिति है।

६५९ —तेइन्द्रिय की आठ लाख कुल कोडी है।

६६० क—जीवो ने आठ स्थानो मे निर्वर्तित—सचित पुद्गल पापकर्म के रूप मे चयन किये है, चयन करते है, और चयन करेंगे।

यथा—१-८ प्रथम समय नैरयिक निर्वर्तित यावत्—अप्रथम समय देव निर्वर्तित।

इसी प्रकार उपचयन, बन्ध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा के तीन-तीन दण्डक कहने चाहिये।

ख—आठ प्रदेशिक स्कन्ध अनन्त हैं।

ग—अष्ट प्रदेशावगाढ पुद्गल अनन्त हैं।

घ—यावत् आठ गुण रुक्ष पुद्गल अनन्त हैं।

अष्टम स्थान समाप्त



(उपयोग) नहीं करे अपितु स्त्री, पशु तथा नपुंसक सेवित शयनासन का उपयोग करे,

२. स्त्री कथा कहे,

३. स्त्री स्थानो का सेवन करे,[1]

४. स्त्रियों की इन्द्रियो का दर्शन-यावत् ध्यान करे,

५. विकार वर्धक आहार करे,

६. आहार आदि अधिक मात्रा मे सेवन करे,

७. पूर्वानुभूत रति क्रीड़ा का स्मरण करे,

८. स्त्रियों के शब्द तथा रूप की प्रशंसा करे,

९. शारीरिक सुखादि मे आसक्त रहे।

६६४ —अभिनन्दन अरहन्त के पश्चात् सुमतिनाथ अरहन्त नव लाख क्रोड सागर के पश्चात् उत्पन्न हुये।

६६५ —शास्वत पदार्थ नव हैं,
यथा—१. जीव, २. अजीव, ३. पुण्य, ४. पाप, ५. आश्रव, ६. सवर, ७. निर्जरा, ८. वन्ध, ९. मोक्ष।

६६६ क—संसारी जीव नौ प्रकार के है,
यथा—१-५ पृथ्वीकाय, यावत् वनस्पति काय, ६-९ बेइन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय।

---

१ स्त्रियों के निवास स्थान में रहे।

६६३ क—ब्रह्मचर्य की गुप्ति (रक्षा) नौ प्रकार की हैं,

यथा—१ एकान्त (पृथक्) शयन और आसन का सेवन करना चाहिये, किन्तु स्त्री, पशु और नपुंसक के ससर्ग वाले शयनासन का सेवन नही करना चाहिए,

२. स्त्री कथा नही कहनी चाहिये,

३. स्त्री के स्थान (स्त्री के निवास स्थान) मे निवास नही करना चाहिए,

४. स्त्री की मनोहर इन्द्रियो के दर्शन और ध्यान नही करना चाहिए,

५. विकार वर्धक रस का आस्वादन नही करना चाहिए,

६. आहारादि की अतिमात्रा नही लेनी चाहिए,

७. पूर्वानुभूत रति—क्रीडा का स्मरण नही करना चाहिए,

८. स्त्री के रागजन्य शब्द और रूप की तथा स्त्री की प्रशसा नही सुननी चाहिए,

९. शारीरिक सुखादि मे आसक्त नही होना चाहिए।

ख—ब्रह्मचर्य की अगुप्ति नव प्रकार की हैं,

यथा—१. एकान्त शयन और आसन का सेवन

७. तेन्द्रिय जीवों की अवगाहना

८. चउरिन्द्रिय जीवो की अवगाहना

९. पंचेन्द्रिय जीवो की अवगाहना ।

घ—संसारी जीव नौ प्रकार के थे, है और रहेंगे ।
यथा—१-९ पृथ्वीकायिक रूप मे यावत् पंचेन्द्रिय रूप मे ।

६६७ —नौ कारणो से रोगोत्पत्ती होती है,
यथा—१. अति आहार करने से,

२. अहितकारी आहार करने से,

३. अति निद्रा लेने से,

४. अति जागने से,

५. मल का वेग रोकने से,

६. मूत्र का वेग रोकने से,

७. अति चलने से,

८. प्रतिकूल भोजन करने से,

९. कामवेग को रोकने से ।

६६८ —दर्शनावरणीय कर्म नौ प्रकार का है,
यथा—१. निद्रा, २. निद्रा - निद्रा, ३. प्रचला, ४. प्रचला प्रचला, ५. स्त्यानगृद्धी, ६. चक्षुदर्शनावरण, ७. अचक्षुदर्शनावरण, ८. अवधिदर्शनावरण, ९. केवलदर्शनावरण ।

ख—पृथ्वीकायिक जीवो की नौ गति और नौ आगति।

यथा—पृथ्वीकायिक पृथ्वीकायिको मे उत्पन्न हो तो पृथ्वीकायिको से यावत् पचेन्द्रियो से आकर उत्पन्न होते है।

पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकायिकपन को छोडकर पृथ्वीकायिक रूप मे यावत् पंचेन्द्रिय रूप मे उत्पन्न होते है।

इसी प्रकार अप्कायिक जीव-यावत् पचेन्द्रिय जीव उत्पन्न होते हैं।

ग—सर्व जीव नौ प्रकार के है,

यथा—१ एकेन्द्रिय, २. द्वीन्द्रिय, ३. तेइन्द्रिय, ४ चउरिन्द्रिय, ५. नैरयिक, ६. तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, ७. मनुष्य, ८. देव, ९. सिद्ध।

घ—सर्व जीव नौ प्रकार के हैं,

यथा—१. प्रथम समयोत्पन्न नैरयिक, २-७ अप्रथम-समयोत्पन्न नैरयिक यावत्

८ अप्रथम समयोत्पन्न देव ९ सिद्ध।

ङ—सर्व जीवो की अवगाहना नौ प्रकार की हैं,

यथा—१. पृथ्वीकायिक जीवो की अवगाहना,

२-५ अप्कायिक जीवो की अवगाहना,

यावत् वनस्पति कायिक जीवो की अवगाहना,

६. वेन्द्रिय जीवो की अवगाहना,

और नौ वासुदेव के माताएं होगीं-शेष समवायाङ्ग के अनुसार कहना चाहिये। यावत्—महा भीमसेन सुग्रीव पर्यन्त कीर्तिमान् वासुदेवो के शत्रु प्रति वासुदेव जो सभी चक्र से युद्ध करने वाले हैं और स्वचक्र से ही मरने वाले है-इनका वर्णन समवायाङ्ग के अनुसार ही कहना चाहिये।

६७३ क—प्रत्येक चक्रवर्ती की नौ महानिधिया है, और प्रत्येक महानिधि नौ नौ योजन की चौड़ी है।

यथा—१. नैसर्प, २. पांडुक, ३. पिंगल, ४. सर्वरत्न ५. महापद्म, ६. काल, ७. महाकाल, ८. माणवक, ९. शंख।

१. नैसर्प महानिधि-इनके प्रभाव से निवेश, ग्राम, आकर, नगर, पट्टण, द्रोणमुख, मडंब, स्कधावार, और घरो का निर्माण होता है।

२. पांडुक महानिधि-इसके प्रभाव से गिणने योग्य वस्तुएं यथा—मोहर आदि सिक्के, मापने योग्य वस्तुएं वस्त्र आदि, तोलने योग्य वस्तुएं-धान्य आदि की उत्पति होती है,

३. पिंगल महानिधि-इसके प्रभाव से पुरुषो, स्त्रियो, हाथियो या घोडो के आभूषणो की उत्पत्ति होती है,

४. सर्वरत्न महानिधि-इसके प्रभाव से चौदह रत्नो की उत्पत्ति होती है,

६६९ क—अभिजित् नक्षत्र कुछ अधिक ९ मुहूर्त चन्द्र के साथ योग करते हैं,

ख—अभिजित् आदि नौ नक्षत्र चन्द्र के साथ उत्तर से योग करते हैं,

यथा—१. अभिजित्, २. श्रवण धनिष्ठा, ३-८ यावत् ९. भरणी।

६७० —इस रत्नप्रभा पृथ्वी के सम भू भाग से नवसौ योजन की ऊंचाई पर ऊपर का तारा मण्डल गति करता है।

६७१ —जम्बूद्वीप नाम के द्वीप मे नौ योजन के मच्छ प्रवेश करते थे, करते हैं और करेंगे।

६७२ क—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे, इस अवसर्पिणी मे ये नौ बलदेव और नौ वासुदेव के पिता थे।

यथा—१. प्रजापती, २. ब्रह्म, ३. रुद्र, ४. सोम, ५. शिव, ६. महासिंह, ७. अग्निसिंह, ८. दशरथ, ९. वसुदेव।

यहाँ से आगे समवायांग सूत्र के अनुसार कहना चाहिये यावत् एक नवमा बलदेव ब्रह्मलोक कल्प से च्यवकर एक भव करके मोक्ष मे जावेंगे—पर्यन्त कहना चाहिए।

ख—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे आगामी उत्सर्पिणी मे नौ बलदेव और नौ वासुदेव के पिता होंगे, नौ बलदेव

निधिओं से उत्पन्न वस्तुएं देने का अधिकार नही है ये सभी महानिधिया चक्रवर्ती के अधीन होती है।

६७४ —विकृतिया (विकार के हेतु भूत) नौ प्रकार की हैं, यथा—१. दूध, २. दही, ३. मक्खन, ४. घृत, ५. तेल ६. गुड, ७. मधु, ८. मद्य ९. मांस।

६७५ —औदारिक शरीर के नौ छिद्रो से मल निकलता है, यथा—१-२ दो कान, ३-४ दो नेत्र, ५-६ दो नाक, ७. मुख, ८. मूत्र स्थान, ९. गुदा।

६७६ —पुण्य नौ प्रकार के होते है, यथा—१. अन्न पुण्य, २. पाण पुण्य ३. लयन पुण्य, ४. शयन पुण्य, ५. वस्त्र पुण्य, ६. मन पुण्य, वचनपुण्य, ८. काया पुण्य ९. नमस्कार पुण्य।

६७७ —पाप के स्थान नौ प्रकार के हैं, यथा—१. प्राणातिपात २. मृषावाद यावत् ३-५ परि ग्रह ६. क्रोध; ७. मान ८. माया और ९. लोभ।

६७८ —पाप श्रुत नौ प्रकार के है, यथा—१. उत्पात, २. निमित्त, ३. मत्र, ४. आख्यायक, ५. चिकित्सा, ६. कला, ७. आकरण, ८. अज्ञान ९. मिथ्या प्रवचन।

६७९ नैपुणिक[1] वस्तु नौ है,

---

१ निपुण आचार्यों द्वारा कहे गये ग्रन्थ

५. महापद्म महानिधि–इसके प्रभाव से सर्व प्रकार के रगे हुये या स्वेत वस्त्रो की उत्पत्ति होती है,

६ काल महानिधि–काल, शिल्प, कृषि का ज्ञान उत्पन्न होता है,

७. महाकाल महानिधि–इसके प्रभाव मे लोहा, चादी, सोना, मणी, मोती स्फटिकशिला और प्रवाल आदि के खानो की उत्पत्ति होती है,

८. माणवक महानिधि–इसके प्रभाव से योद्धा, शस्त्र, बख्तर, युद्धनीति और दडनीति की उत्पत्ति होती है,

९. शख महानिधि–इसके प्रभाव से नाटचविधि, नाटकविधि, और चार प्रकार के काव्यो की तथा मृदंगादि वाद्यो की उत्पत्ति होती है।

ये नौ महानिधिया आठ-आठ चक्र पर प्रतिष्ठित है– आठ-आठ योजन के ऊंचे है, नौ नौ योजन के चौड़े हैं और बारह योजन लम्बे है, इनका आकार पेटी के समान है। ये सब गगा नदी के आगे स्थित है। स्वर्ण के बने हुए है, और वैडूर्यमणि के द्वार वाले है, अनेक रत्नो से परिपूर्ण है। इन सब विधानों पर चन्द्र-सूर्य के समान गोल चक्र के चिन्ह है।

इन निधियो के नाम वाले तथा पल्यस्थिति वाले देवता इन निधियो के अधिपति हैं। किन्तु इन

२. दूसरों से हिंसा नही करवाता है,

३. हिंसा करने वालो का अनुमोदन नही करता है,

४. स्वयं अन्नादि को पकाता नही हैं,

५. दूसरो से पकवाता नही है,

६. पकाने वालों का अनुमोदन नही करता है,

७. स्वयं आहारादि खरीदता नहीं हैं,

८. दूसरो से खरीदवाता नही है,

९. खरीदने वालों का अनुमोदन नही करता है।

६८२ —ईशानेन्द्र के वरुण लोकपाल की नौ अग्रमहिषियां हैं।

६८३ क—ईशानेन्द्र की अग्रमहिषियो की स्थिति नव पल्योपम की है।

ख—ईशान कोण मे देवियो की उत्कृष्ट स्थिति नव पल्योपम की है।

६८४ क—नौ देव निकाय (समूह) है,

यथा—१. सारस्वत, २. आदित्य, ३. वन्हि, ४. वरुण, ५. गर्दतोय, ६. तुषित, ७. अव्यावाध, ८. आग्नेय, ९. रिष्ट।

ख—अव्यावाध देवो के नवसौ नौ देवो का परिवार है,

ग-घ—इसी प्रकार अगिच्चा और रिट्ठा देवो का परिवार है।

यथा—१. सख्यान—गणित मे निपुण,

२. निमित्त—त्रैकालिक शुभाशुभ बताने वाले ग्रन्थों में निपुण,

३. कायिक—स्वर शास्त्रो में निपुण,

४. पुराण—अठारह पुराणो में निपुण,

५. परहस्तक—सर्व कार्य मे निपुण,

६. प्रकृष्ट पडित—अनेक शास्त्रो मे निपुण,

७. वादी—वाद मे निपुण,

८. भूति कर्म[1]—मंत्र शास्त्रो मे निपुण,

९. चिकित्सक—चिकित्सा करने मे निपुण।

६८० —भगवान् महावीर के नौ गण थे,

यथा १ गोदास गण, २. उत्तर वलिस्सह गण ३. उद्देह गण, ४. चारण गण, ५. उर्ध्ववातिक गण ६. विश्व वादी गण, ७. कामाद्धिक गण ८. मानव-गण ९. कोटिक गण।

६८१ —श्रमण भगवान् महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो की नव-कोटी शुद्ध भिक्षा कही है,

यथा—१. स्वयं जीवो की हिंसा नही करता है,

---

१ भूति कर्म—ज्वरादि से रक्षा करने के लिए भूति-भभूत—रक्षा पोटली देना।

६८८ —प्रायश्चित्त नौ प्रकार का है,

यथा—१. आलोचनार्ह—गुरु के समक्ष आलोचना करने से जो पाप छूटे, यावत् ८ मूलार्ह—(पुनः दीक्षा देने योग्य)

९. अनवस्थाप्यार्ह—अत्यन्त सक्लिष्ट परिणाम वाले को इस प्रकार के तप का प्रायश्चित्त दिया जाता है। जिससे कि वह उठ बैठ नही सके।
तप पूर्ण होने पर उपस्थापना (पुन· महाव्रतारोपणा) की जाती है और यह तप जहाँ तक किया जाता है वहा तक तप करने वाले से कोई बात नही करता।

६८९ क—जम्बूद्वीप के मेरु से दक्षिण दिशा के भरत मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट है,

यथा—१. सिद्ध, २. भरत, ३. खण्ड प्रपातकूट, ४. मणिभद्र, ५. वैताढ्य, ६. पूर्णभद्र, ७. तिमिश्र-गुहा, ८. भरत, ९. वैश्रमण।

ख—जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दक्षिण दिशा मे निषध वर्षधर पर्वत पर नौ कूट हैं,

यथा—१. सिद्ध, २. निषध, ३. हरिवर्ष, ४. विदेह, ५. हरि, ६. धृति, ७, शीतोदा, ८. अपर विदेह, ९. रुचक।

ग—जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत पर नन्दन वन मे नौ कूट है,

यथा—१. नन्दन, २. मेरु, ३. निषध, ४. हैमवन्त,

६८५ क—नौ ग्रैवेयक विमान प्रस्तट (प्रतर) हैं,
यथा—१. अघस्तन अघस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
२. अघस्तन मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
३. अघस्तन उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
४. मध्यम अघस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
५. मध्यम मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
६. मध्यम उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
७. उपरितन अघस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
८. उपरितन मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
९. उपरितन उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट।

ख—नव ग्रैवेयक विमान प्रस्तटो के नौ नाम हैं,
यथा—१. भद्र, २. सुभद्र, ३. सुजात, ४. सौमनस, ५. प्रिय दर्शन, ६. सुदर्शन, ७. अमोघ, ८. सुप्रबुद्ध, ९. यशोधर।

६८६ —आयु परिणाम नौ प्रकार का है,
यथा—गति परिणाम, गतिवघणपरिणाम, ३. स्थितिपरिणाम, ४. स्थिति वंधण परिणाम, ५. उर्ध्वगोरव परिणाम, ६. अधो गोरव परिणाम, ७. तिर्यग् गोरव परिणाम, ८. दीर्घ गोरव परिणाम, ९. ह्रस्व गोरव परिणाम।

६८७ —नव नवमिका भिक्षा प्रतिमा का सूत्रानुसार आराधन यावत् पालन इक्यासी रात दिन मे होता है, इस प्रतिमा मे ४०५ वार भिक्षा (दत्ति) ली जाती हैं।

झ—जम्बूद्वीप के विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत पर नौ कूट हैं,
यथा—१. सिद्ध, २. विद्युत्प्रभ, ३. देवकुरु, ४. पद्म-प्रभ, ५. कनकप्रभ, ६. श्रावस्ती, ७. शीतोदा, ८. सजल, ६. हरीकूट।

ञ—जम्बूद्वीप के पक्ष्मविजय मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट है,
यथा—१. सिद्ध कूट, २. पक्ष्मकूट, ३. खण्ड प्रपात, ४. माणिभद्र, ५. वैताढ्य, ६. पूर्णभद्र, ७. तिमिश्र गुहा, ८. पक्ष्मकूट, ६. वैश्रमण कूट।

ट—इसी प्रकार यावत् सलिलावती विजय मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट है।

ठ—इसी प्रकार वप्रविजय मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं।

ड—इसी प्रकार यावत्—गधिलावती विजय मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं,
यथा—१. सिद्ध कूट, २. गंधिलावती, ३. खण्डप्रपात, ४. माणिभद्र, ५. वैताढ्य, ६. पूर्णभद्र, ७. तिमिश्र-गुहा, ८. गधिलावती, ६. वैश्रमण।

ढ—इस प्रकार सभी दीर्घ वैताढ्य पर्वतों पर दूसरा और नवमा कूट समान नाम वाले हैं शेष कूटों के समान पूर्ववत् हैं।

५. रजत, ६. रुचक, ७. सागरचित, ८. वज्र, ९ बलकूट।

घ—जम्बूद्वीप के माल्यवत वक्षस्कार पर्वत पर नो कूट हैं,

यथा—१. सिद्ध, २. माल्यवत, ३. उत्तरकुरु, ४. कच्छ, ५ सागर, ६. रजत, ७. सीता, ८. पूर्ण, ९. हरिस्सहकूट

ङ—जम्बूद्वीप के कच्छ विजय मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नो कूट है,

यथा—१. सिद्ध, २. कच्छ, ३. खण्ड प्रपात, ४. माणिभद्र, ५. वैताढ्य ६. पूर्णभद्र, ७. तिमिस्र गुहा, ८. कच्छ, ९. वैश्रमण

च—जम्बूद्वीप के सुकच्छ विजय मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नो कूट हैं।

यथा—१. सिद्ध, २ सुकच्छ, ३. खण्ड प्रपात, ४ माणिभद्र, ५ वैताढ्य, ६. पूर्णभद्र, ७ तिमिस्र गुहा, ८. सुकच्छ, ९. वैश्रमण।

छ—इसी प्रकार पुष्कलावती विजय मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नो कूट है,

ज—इसी प्रकार वच्छ विजय मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नो कूट है यावत्—मंगलावती विजय मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नो कूट है।

६. दारूक[1] निर्ग्रन्थ, ७. सत्यकी निर्ग्रन्थीपुत्र, ८. सुलसाश्राविका से प्रतिबोधित अम्बड परिवाज्रक, ९. भ० पार्श्वनाथ की प्रशिष्या सुपार्श्वा आर्या।
ये आगामी उत्सर्पिणी मे चार याम धर्म की प्ररूपणा करके सिद्ध होगे—यावत्—सब दुःखो का अन्त करेंगे।[2]

६९३ —हे आर्य! यह श्रेणिक राजा (बिंबिसार) मरकर इस रत्नप्रभा पृथ्वी के सीमतक नरकावास मे चौरासी हजार वर्ष की नारकीय स्थिति वाले नैरयिक के रूप मे उत्पन्न होगा और अती तीव्र—यावत्—असह्य वेदना भोगेगा। यह उस नरक से निकलकर आगामी उत्सर्पिणी मे इसी जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे वैताढ्य पर्वत के समीप पुण्ड्रजन पद के शत द्वार नगर मे संमति कुलकर की भद्रा भार्या की कुक्षी मे पुत्र रूप मे उत्पन्न होगा।

---

१ दारूक श्रीकृष्ण के पुत्र थे इनका चरित्र अनुत्तरोपपातिक सूत्र में है।

२ (क) ये नौ जीव आगामी उत्सर्पिणी में प्रथम और अन्तिम तीर्थङ्कर को छोड़कर मध्य के तीर्थङ्करो के तीर्थ में तीर्थङ्कर होंगे।

(ख) इन नौ में से कुछ तीर्थङ्कर होगे और कुछ तीर्थङ्करों के तीर्थ में सिद्ध होगे।

ण—जम्बूद्वीप मे मेरुपर्वत की उत्तर दिशा मे नीलवान वर्षधर पर्वत पर नौ कूट हैं,
यथा—१. सिद्ध कूट, २. नीलवान कूट, ३ विदेह, ४. शीता, ५. कीर्ति, ६. नारिकान्ता, ७. अपरविदेह, ८. रम्यक्कूट, ९. उप दर्शन कूट।

त—जम्बूद्वीप मे मेरुपर्वत पर उत्तर दिशा मे ऐरवत क्षेत्र मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट है,
यथा—१. सिद्ध, २. रत्न, ३. खण्ड प्रपात ४. माणिभद्र, ५. वैताढ्य, ६. पूर्णभद्र, ७. तिमिश्रगुहा, ८. ऐरवत, ९. वैश्रमण।

६९० —भगवान् पार्श्वनाथ पुरुषों मे आदेय नाम कर्म वज्र-ऋषभ-नाराज संघयण और समचतुरस्र संस्थान वाले थे तथा नौ हाथ के ऊँचे थे।

६९१ —भगवान् महावीर के तीर्थ मे नौ जीवो ने तीर्थकर गोत्र नाम कर्म का उपार्जन किया,
यथा—१. श्रेणिक, २. सुपार्श्व, ३. उदायन, ४. पोटिलअणगार. ५ दृढायु, ६ शख, ७. शतक, ८. सुलसा श्राविका, ९. रेवती।

६९२ —१. आर्य कृष्ण वासुदेव, २. राम बलदेव, ३. उदक पेढाल पुत्र[1], ४. पोटिलमुनि, ५ शतक गाथापति,

---

१ पेढालपुत्र उदक मुनि का वर्णन सूत्रकृताङ्ग के नालंदीय अध्ययन में है।

देव (पूर्णभद्र और मणिभद्र) करते हैं इसलिए इनका दूसरा नाम "देवसेन" हो।

उस समय से महापद्म का दूसरा नाम देवसेन भी होगा।

कुछ समय पश्चात् उस देवसेन राजा को शखतल जैसा निर्मल, श्वेत चार दाँत वाला हस्तिरत्न प्राप्त होगा। वह देवसेन राजा उस हस्तिरत्न पर आरूढ होकर शतद्वार नगर के मध्यभाग मे से वार-बार आव-जाव करेगा। उस समय शतद्वार नगर के वहुत से राजेश्वर यावत्—सार्थवाह आदि परस्पर बातें करेंगे।

यथा—हे देवानुप्रियो! हमारे देवसेन राजा को शंखतल जैसा निर्मल श्वेत चार दान्त वाला हस्ति रत्न प्राप्त हुआ है, इसलिए हमारे देवसन राजा का तीसरा नाम "विमलवाहन" हो।

पश्चात् वह विमलवाहन राजा तीस वर्ष गृहस्था-वास मे रहेगा और माता-पिता के स्वर्गवासी होने पर गुरुजनो की आज्ञा लेकर शरद् ऋतु मे स्वयं बोध को प्राप्त होगा तथा अनन्तर मोक्ष मार्ग मे प्रस्थान करेगा।

उस समय लोकान्तिदेव इष्ट यावत्—कल्याणकारी वाणी से उनका अभिनन्दन एवं स्तुति करेंगे। नगर

नौ मास और साढेसात अहोरात्र बीतने पर सुकुमार हाथ पैर, प्रतिपूर्ण पचेन्द्रिय शरीर और उत्तम लक्षण तिलमस युक्त यावत्—रूपवान पुत्र पैदा होगा ।

जिस रात्रि मे यह पुत्र रूप मे पैदा होगा उस रात्रि मे शतद्वार नगर के अन्दर और वाहर भाराग्र तथा कुम्भाग्र प्रमाण पद्म एवं रत्नो की वर्षा वरसेगी । पश्चात् उसके माता-पिता इग्यारवा दिन बीतने पर यावत्—वारहवें दिन उसका गुण सम्पन्न नाम देगें । क्योकि इनका जन्म होने पर शतद्वार नगर के अन्दर और वाहर भार एव कुम्भ प्रमाण पद्म एवं रत्नो की वर्षा होने से इस पुत्र का महापद्म नाम देंगे ।

पश्चात् महापद्म के माता-पिता महापद्म को कुछ अधिक आठ वर्ष का हुआ जानकर राज्याभिषेक का महोत्सव करेंगे । पश्चात् वह राजा महाराजा के समान यावत्—राज्य करेगा । उसके राज्यकाल मे पूर्णभद्र और महाभद्र नाम के दो देव महर्धिक यावत्—महान् ऐश्वर्य वाले उनकी सेना का सचालन करेंगे । उस समय शतद्वार नगर के वहुत से राजा यावत्—सार्थवाह आदि परस्पर वातें करेंगे—हे देवानुप्रियो ! हमारे महापद्म राजा की सेना का सचालन महर्धिक यावत्—महान् ऐश्वर्य वाले दो

१०. गेंडा के सींग के समान एकाकी,
११. भारड पक्षी के समान अप्रमत्त,
१२. हाथी के समान धैर्यवान,
१३. वृषभ के समान बलवान,[1]
१४. सिंह के समान दुर्धर्ष,[2]
१५. मेरु के समान निश्चल,
१६. समुद्र के समान गम्भीर,
१७. चन्द्र के समान शीतल,
१८. सूर्य के समान उज्ज्वल,
१९. शुद्ध स्वर्ण के समान सुन्दर,
२०. पृथ्वी के समान सहिष्णु,
२१. आहुति के समान प्रदीप्त अग्नि के समान ज्ञानादि गुणो से तेजस्वी होगे।

उन विमलवाहन भगवान् का किसी मे प्रतिबन्ध (ममत्व) नही होगा।

प्रतिबन्ध चार प्रकार के है,

यथा—१. अण्डज, २. पोतज, ३. अवग्रहिक, ४. प्रग्रहिक।

१. ये अण्डज—हस आदि मेरे है,
२. ये पोतज—हाथी आदि मेरे है,

---

१ की हुई प्रतिज्ञा का निर्वाह करने वाले

२ परिषहो से पराजित न होने वाले

के बाहर सुभूमि भाग उद्यान मे एक देवदूष्य वस्त्र ग्रहण करके वह प्रव्रज्या लेगा ।

शरीर का ममत्व न रखने वाले उन भगवान् को कुछ अधिक बारह वर्ष तक देव, मनुष्य और तिर्यंच सम्बन्धी जो उपसर्ग उत्पन्न होगे उन्हे वे समभाव से सहन करेंगे यावत्---अकम्पित रहेंगे ।

पश्चात् वे विमलवाहन भगवान् ईर्या समिति, भाषा समिति का पालन करेंगे—यावत्—ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे ।

वे निर्मम निष्परिग्रही कास्य पात्र के समान अलिप्त होगे यावत्---भावना अध्ययन मे कहे गये भगवान् महावीर के वर्णन के समान कहे ।

वे विमलवाहन भगवान्

१. कास्यपात्र के समान अलिप्त,
२. शंख के समान निर्मल,
३. जीव के समान अप्रतिहत गति,
४. गगन के समान आलम्बन रहित,
५. व यु के समान अप्रतिवद्ध विहारी,
६. शरद् ऋतु के जल के समान स्वच्छ हृदय वाले,
७. पद्म पत्र के समान अलिप्त,
८ कूर्म के समान गुप्तेन्द्रिय,
९. पक्षी के समान एकाकी,

कर्मो को जानेगे अर्थात् उनसे कोई कार्य छिपा नही रहेगा ।

वे पूज्य भगवान् सम्पूर्ण लोक मे उस समय के मन वचन और कायिक योग मे वर्तमान सर्व जीवो के सर्व भावो को देखते हुए विचरेगे ।

उस समय वे भगवान् केवल ज्ञान, केवल दर्शन से समस्त लोक को जानकर श्रमण निर्ग्रन्थो के पच्चीस भावना सहित पाँच महाव्रतो का तथा छजीवनिकाय धर्म का उपदेश देगे ।

——हे आर्यो ! जिस प्रकार मैंने श्रमण निर्ग्रन्थो का एक आरम्भ स्थान (प्रमाद) कहा है उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी श्रमण निर्ग्रन्थो का एक आरम्भ स्थान कहेगे ।

हे आर्यो ? जिस प्रकार मैंने श्रमण निर्ग्रन्थो के दो बन्धन कहे है उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी श्रमण निर्ग्रन्थो के दो बन्धन कहेगे यथा—राग बन्धन और द्वेष बन्धन ।

हे आर्यो ! जिस प्रकार मैने श्रमण निर्ग्रन्थो के तीन दण्ड कहे है, उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी श्रमण-निर्ग्रन्थो के तीन दण्ड कहेगे यथा—मनदण्ड, वचन-दण्ड और कायदण्ड ।

३. ये अवग्रहिक—मकान, पाट, फलक आदि मेरे हैं।

४ ये प्रग्रहिक—पात्र आदि मेरे है।

वे विमल वाहन भगवान् जिस-जिस दिशा मे विचरना चाहेगे उस-उस दिशा मे स्वेच्छापूर्वक शुद्ध भाव से, गर्व रहित तथा सर्वथा ममत्व रहित होकर संयम से आत्मा को पवित्र करते हुये विचरेंगे।

उन विमल वाहन भगवान् को ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वसति और विहार की उत्कृष्ट आराधना करने से सरलता, मृदुता, लघुता, क्षमा, निर्लोभता, मन, वचन, काया की गुप्ति, सत्य, संयम, तप, शौच और निर्वाण मार्ग की विवेकपूर्वक आराधना करने से शुक्ल ध्यान ध्याते हुए अनन्त, सर्वोत्कृष्ट बाधा रहित यावत्–केवल ज्ञान–दर्शन उत्पन्न होगा तब वे भगवान अर्हन्त एव जिन होंगे।

केवल ज्ञान-दर्शन से वे देव, मनुष्यो एव असुरो से परिपूर्ण लोक के समस्त पर्यायो को देखेंगे।

सम्पूर्ण लोक के सभी जीवो की आगति, गति, स्थिति, च्यवन (मरण) उपपात (जन्म) तर्क, मानसिक भाव, मुक्त, कृत, सेवित, प्रगट कर्मो और गुप्त

अपमित्यक[1] आच्छेद्य[2] अनिसृष्ट[3] अभ्याहृत[4] कान्तार भक्त[5], दुर्भिक्ष भक्त[6], ग्लान भक्त[7] वद्दलिका भक्त[8], प्राघूर्णक[9], मूल भोजन[10], कन्द भोजन,[11] फल भोजन[12]

---

१ अपमित्यक—साधु के निमित्त उधार लिया हुआ आहार।

२ आच्छिद्य—नौकर आदि से छीनकर दिया जाने वाला आहार।

३ अनिसृष्ट—दो के स्वामित्व का आहार एक की आज्ञा के बिना देना।

४ अभ्याहृत—सन्मुख लाकर दिया जाने वाला आहार

५ कान्तार भक्त—अटवी में साधु के निमित्त बनाकर दिये जाने वाला आहार,

६ दुर्भिक्ष भक्त—दुष्काल में साधु के निमित्त बनाकर दिया जाने वाला आहार,

७ ग्लान भक्त—ग्लान साधु के निमित्त बनाकर दिया जाने वाला आहार,

८ वद्दलिका भक्त—वर्षाकाल में साधु के निमित्त बनाकर दिया जाने वाला आहार,

प्राघूर्णक—महमानो के निमित्त रखे हुए आहार में से आहार दिया जाए,

मूल भोजन—सचित्त (सजीव) वनस्पतियां साधु को देना।

कन्द भोजन—सचित्त कन्द साधु को देना,

फल भोजन—सचित्त फल साधु को देना,

इस प्रकार चार कपाय, पाच काम गुण, छ जीव-निकाय, सात भय स्थान, आठ मद स्थान, नो ब्रह्मचर्य गुप्ति, दश श्रमण धर्म यावत् तेतीम आशातना पर्यन्त कहे।

हे आर्यो ! जिस प्रकार मैंने श्रमण निर्ग्रन्थों का नग्न भाव, मुण्ड भाव, अस्नान, अदन्तधावन, छत्र रहित रहना, जूते न पहनना, भू-शय्या, फलक शय्या, काष्ठ शय्या, केश लोच, ब्रह्मचर्य पालन गृहस्थ के घर से आहार आदि लाना, मान अपमान मे सामान रहना आदि की प्ररूपणा करेगे।

हे आर्यो ! मैंने श्रमण निर्ग्रन्थो को आधाकर्म[1] औद्देशिक[2] मिश्रजात[3] अध्यवपूर्वक[4] पूतिक[5] क्रीत[6]

---

१ आधा कर्म—जो आहार साधु के निमित्त बनता है।

२ औद्देशिक—जो आहार श्रमण निर्ग्रन्थों के उद्देश्य से बनाया जाता है।

३ मिश्रजात—जो आहार गृहस्थ और श्रमण के निमित्त बनता है।

४ अध्यवपूर्वक—गृहस्थ अपने लिए जो आहार बना रहा है उसी मे साधु के निमित्त थोडा और मिलाकर बनाता है।

५ पूतिक—आधा कर्म आहार से मिश्रित शुद्ध आहार।

६ क्रीत—साधु के निमित्त खरीदा हुआ आहार।

किया है उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी श्रमण निर्ग्रन्थो को शय्यातर पिंड और राजपिंड लेने का निषेध करेंगे।

हे आर्यो! जिस प्रकार मेरे नौ गण और इग्यारह गणधर हैं उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त के भी नौ गण और इग्यारह गणधर होंगे।

हे आर्यो! जिस प्रकार मैं तीस वर्ष गृहस्थ पर्याय मे रहकर मुण्डित यावत् प्रव्रजित हुआ, बारह वर्ष और तेरह पक्ष न्यून तीस वर्ष का केवली पर्याय, बियालीस वर्ष का का श्रमण पर्याय और बहत्तर वर्ष का पूर्णायु भोगकर, सिद्ध, होऊंगा यावत् सब दुखो का अन्त करूंगा इसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी तीस वर्ष गृहस्थावास मे रहकर यावत् सब दुःखो का अन्त करेंगे।

संक्षिप्त में

जो शील समाचार (कार्यकलाप) अर्हत तीर्थंकर महावीर का था वह शील समाचार महापद्म अर्हन्त का होगा।

६६४ —नौ नक्षत्र चन्द्र के पीछे से गति करते है,
यथा—१. अभिजित्, २. श्रवण, ३. धनिष्ठा, ४. रेवति, ५. अश्विनी, ६. मृगशिरा, ७. पुष्य, ८. हस्त ९ चित्रा।

बीज भोजन[1], हरित भोजन[2] लेने का निषेध किया है उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी श्रमण निर्ग्रन्थों को आधा कर्म—यावत्—हरित भोजन लेने का निषेध करेंगे ।

हे आर्यो । जिस प्रकार मैंने श्रमण निर्ग्रन्थो का प्रति-क्रमण सहित पंच महाव्रत अचेलक धर्म कहा है इसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी श्रमण निर्ग्रन्थो का प्रति-क्रमण सहित यावत् अचेलक धर्म कहेंगे ।

हे आर्यो ! जिस प्रकार मैंने पांच अणुव्रत और सात शिक्षाव्रत रूप बारह प्रकार का श्रावक धर्म कहा है उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी पाँच अणुव्रत यावत् श्रावक धर्म कहेंगे ।

हे आर्यो ! जिस प्रकार मैंने श्रमण निर्ग्रन्थो को शय्यातर पिंड[3] और राजपिंड[4] लेने का निषेध

---

१ बीज भोजन—सचित्त बीज साधु को देना ।

२ हरित भोजन—सचित्त मधुर तृणादि साधु को देना ।

३ शय्यातर पिंड—साधु को ठहरने के लिए जो स्थान की आज्ञा दे उसके घर का आहार ।

४ राजपिंड—चक्रवर्ती या वासुदेव के निमित्त बना हुआ आहार ।

ख—भुजपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीवो की नौ लाख कुल कोड़ी है।

७०२ —नौ स्थानो मे सचित पुद्गलो को जीवो ने पापकर्म के रूप मे चयन किया था, करते है और करेंगे।

यथा—पृथ्वीकायिक जीवो द्वारा संचित यावत्—पचेन्द्रिय जीवों द्वारा संचित।

ख—इसी प्रकार चय, उपचय यावत् निर्जरा सम्बन्धि सूत्र कहने चाहिए।

७०३ क—नौ प्रादेशिक स्कन्ध अनन्त कहे गये हैं,

ख—नव प्रदेशावगाढ़ पुद्गल अनन्त कहे गये हैं—यावत् नवगुण रुक्ष पुद्गल अनन्त कहे गये है।

नवम स्थान समाप्त

६९५ —आणत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्प मे विमान नौ सौ योजन के ऊँचे हैं।

६९६ —विमल वाहन कुल कर नौ धनुष के ऊँचे थे।

६९७ —कौशलिक भगवान् ऋषभदेव ने इस अवसर्पिणी मे नौ क्रोडाक्रोड सागरोपम काल बीतने पर तीर्थ प्रवर्ताया।[1]

६९८ —घनदन्त, लष्टदन्त, गूढदन्त और शुद्धदन्त इन अन्तर्द्वीपवासी मनुष्यो के द्वीप नौ-सौ नौ-सौ योजन के लम्बे और चौडे कहे गये हैं।

६९९ —शुक्र महाग्रह की नौ विथियाँ हैं,
यथा—१. हयवीथी, २ गजवीथी, ३. नागवीथी, ४. वृषभवीथी, ५. गोवीथी, ६. उरगवीथी, ७. अजवीथी, ८. मित्रवीथी, ९. वैश्वानरवीथी[2]।

७०० —नौ कषाय वेदनीय कर्म नौ प्रकार का है,
यथा—१. स्त्री वेद, २. पुरुष वेद, ३. नपुंसक वेद, ४ हास्य, ५. रति, ६. अरति, ७. भय, ८. शोक, ९. दुगुछा।

७०१ क—चोरिन्द्रिय जीवो की नौ लाख कुल कोड़ी हैं।

---

१ यहां एक लाख पूर्व और निव्यासी पक्ष न्यून नौ क्रोडाक्रोड सागरोपम काल समझना चाहिये।

२ ये नो शुक्रग्रह के गति क्षेत्र हैं, अर्थात् इन नो क्षेत्रों में शुक्र ग्रह गति करता है।

९. जहाँ तक जीवो और पुद्गलो की गति है वहाँ तक लोक है, जहाँ तक लोक है वहाँ तक जीवों और पुद्गलो की गति है।

१०. लोकान्त मे सर्वत्र रूक्ष पुद्गल है अत. जीव और पुद्गल लोकान्त के बाहर गमन नही कर सकते है।

७०५ —शब्द दस प्रकार के है,

यथा—१. नीर्हारी—घन्टा के समान घोप वाला शब्द।

२. डिंडिम—ढोल के समान घोप रहित शब्द।

३. रूक्ष—काक के समान रूक्ष शब्द।

४. भिन्न—कुष्टादिरोग से पीडित रोगी के समान शब्द।

५. जर्जरित—वीणा के समान शब्द।

६. दीर्घ—दीर्घ अक्षर के उच्चारण से होने वाला शब्द अथवा मेघ के समान दूर तक सुनाई देने वाला शब्द।

७. ह्रस्व—ह्रस्व अक्षर के उच्चारण से होने वाला शब्द अथवा वीणा के समीप मे सुना जाने वाला शब्द।

८. पृथक्त्व—अनेक प्रकार के वाद्यो का एक समवेत स्वर।

दशम स्थान (दसवां ठाणा)

७०४ —लोक स्थिति दश प्रकार की हैं,

यथा—१. जीव मर-मरकर बार-बार लोक मे ही उत्पन्न होते हैं।

२. जीव सदा पाप कर्म करते हैं।

३. जीव सदा मोहनीय कर्म का बन्ध करते हैं।

४. तीन काल मे जीव अजीव नही होते हैं और अजीव जीव नही होते हैं।

५. तीन काल मे त्रसप्राणी और स्थावर प्राणी विच्छिन्न नही होते है।

६. तीन काल मे लोक अलोक नही होता है और अलोक लोक नही होता है।

७. तीन काल मे लोक अलोक मे प्रविष्ट नही होता है और अलोक लोक मे प्रविष्ट नही होता है।

८. जहाँ तक लोक है वहां तक जीव है और जहाँ तक जीव है वहाँ तक लोक है।

२. भविष्य मे एक व्यक्ति सर्व देश (दोनो कानो) से सुनेगा।

३-१०. इसी प्रकार रूप, रस, गंध और स्पर्श के दो-दो भेद है।

७०७ —शरीर अथवा स्कंध से पृथक् न हुए पुद्गल दश प्रकार से चलित होते है,

यथा—१. आहार करते हुए पुद्गल चलित होते है।

२. रस रूप मे परिणत होते हुए पुद्गल चलित होते हैं।

३. उच्छ्वास लेते समय वायु के पुद्गल चलित होते हैं।

४. निश्वास लेते समय वायु के पुद्गल चलित होते हैं।

५. वेदना भोगते समय पुद्गल चलित होते है।

६. निर्जरित पुद्गल चलित होते है।

७. वैक्रिय शरीर रूप मे परिणत पुद्गल चलित होते है।

८. मैथुन सेवन करते समय शुक्र के पुद्गल चलित होते है।

९. यक्षाविष्ट पुरुष के शरीर के पुद्गल चलित होते है।

९. काकणी—कोयल के समान सूक्ष्म कण्ठ से निकलने वाला शब्द ।

१०. किंकिणी—छोटी-छोटी घटियो से निकलने वाल शब्द ।

७०६ क—इन्द्रियो के दश विषय अतीत काल के हैं,

यथा—१ अतीत मे एक व्यक्ति ने एक देश (कान) से शब्द सुना ।

२. अतीत मे एक व्यक्ति ने सर्व देश (दोनो कानो) से शब्द सुना ।

३-१०. इसी प्रकार रूप, रस, गंध और स्पर्श के दो-दो भेद है ।

ख—इन्द्रियो के दश विषय वर्तमान काल के हैं,

यथा—१. वर्तमान मे एक व्यक्ति एक देश (एक कान) से शब्द सुनता है ।

२. वर्तमान मे एक व्यक्ति सर्व देश (दोनो कानों) से शब्द सुनता है ।

३-१०. इसी प्रकार रूप, रस, गंध और स्पर्श के दो-दो भेद है ।

ग—इन्द्रियो के दश विषय भविष्य काल के हैं,

यथा—१. भविष्य मे एक व्यक्ति एक देश (एक कान) से सुनेगा ।

९. इसने मेरे मनोज्ञ शब्द-यावत्-गंध का अपहरण किया, करता है या करेगा तथा इसने मुझे अमनोज्ञ शब्द-यावत् गंध दिया, देता है या देगा ऐसा चिन्तन करने से—

१०. मैं आचार्य या उपाध्याय की आज्ञानुसार आचरण करता हू किन्तु वे मेरे पर प्रसन्न नही रहते हैं।

८०९ क—संयम दश प्रकार का है,

यथा—१-५. पृथ्वीकायिक जीवो का संयम यावत्-वनस्पतिकायिक जीवो का संयम, ६. बेइन्द्रिय जीवो का संयम, ७. तेइन्द्रिय जीवो का संयम, ८. चउरिन्द्रिय जीवो का संयम, ९. पचेन्द्रिय जीवो का संयम, १०. अजीव काय सयम[1]

ख—असंयम दश प्रकार का है,

यथा—१-५. पृथ्वीकायिक जीवो का असंयम यावत्-वनस्पतिकायिक जीवो का असयम, ६-९. बेइन्द्रिय जीवों का असंयम-यावत्-पचेन्द्रिय जीवो का असंयम, १०. अजीव कायिक असंयम ।[2]

ग—सवर दस प्रकार का है,

---

१ वस्त्र-पात्र आदि अजीव पदार्थो को यत्नापूर्वक काम में लेना ।

२ वस्त्र-पात्र आदि अजीव पदार्थों को अयत्ना से काम में लेना ।

१०. शरीर के वायु से प्रेरित पुद्गल हैं।

७०८ —दश प्रकार से क्रोध की उत्पत्ति होती है,

यथा—१. मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, और गंध का इसने अपहरण किया था ऐसा चिन्तन करने से—

२. इसने मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध दिया था ऐसा चिन्तन करने से—

३. मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, और गंध का यह अपहरण करता है ऐसा चिन्तन करने से—

४. इससे मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध दिया जाता है ऐसा चिन्तन करने से—

५. मेरे मनोज्ञ शब्द स्पर्श, रस, रूप और गंध का यह अपहरण करेगा-ऐसा चिन्तन करने से—

६. यह मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध देगा—ऐसा चिन्तन करने से—

७. मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गध का इसने अपहरण किया था, करता है या करेगा—ऐसा चिन्तन करने से—

८. इसने मुझे अमनोज्ञ शब्द-यावत् गध दिया था, देता है या देगा—ऐसा चिन्तन करने से—

यथा—१. प्राणातिपात से विरत होना,

२. मृषावाद से विरत होना,

३. अदत्तादान से विरत होना,

४. मैथुन से विरत होना,

५. परिग्रह से विरत होना,

६. ईर्या समिति से,

७. भाषा समिति से।

८. एषणा समिति।

९. आदान भाण्डमात्र निक्षेपणा समिति से,

१०. उच्चार प्रश्रवण श्लेष्म सिंघाण परिस्थापनिका समिति।

ख—असमाधि दस प्रकार की है,

यथा—१-५ प्राणातिपात—यावत्—परिग्रह,
६-१० ईर्या असमिति—यावत्—उच्चार प्रश्रवण श्लेष्म सिंघाण परिस्थापनिका असमिति।

१२ क—प्रव्रज्या दस प्रकार की है,

यथा—१. छन्द से—गोविन्द वाचक के समान स्वेच्छा से दीक्षा ले।

२. रोष से—शिवभूति के समान रोष से दीक्षा ले।

३. दरिद्रता से—कठिआरे के समान दरिद्रता से दीक्षा ले।

यथा—१-५. श्रोत्रेन्द्रिय संवर–यावत्–स्पर्शेन्द्रिय सवर, ६. मन संवर, ७. वचन संवर, ८. काय संवर, ९. उपकरण सवर,[1] १०. शुचि कुशाग्र सवर।[2]

घ—असवर दस प्रकार है,

यथा—१-५. श्रोत्रेन्द्रिय असंवर–यावत्–स्पर्शेन्द्रिय असंवर, ६. मन असवर, ७. वचन असंवर, ८. काय असंवर, ९. उपकरण असवर,[3] १०. शुचि कुशाग्र असंवर,[4]

७१० —दस कारणो से मनुष्य को अभिमान उत्पन्न होता है,

यथा—१. जातिमद से, २-७. कुलमद से–यावत्–८. ऐश्वर्यमद से, ९. नाग कुमार देव या सुपर्णकुमार देव मेरे समीप शीघ्र आते हैं इस प्रकार के मद से, १०. सामन्य पुरष को जिस प्रकार का अवधिज्ञान उत्पन्न होता है उससे श्रेष्ठ अवधिज्ञान और दर्शन मुझे उत्पन्न हुआ है इस प्रकार के मद से।

७११ —समाधी दस प्रकार की है,

---

१ अकल्पनीय उपकरण वस्त्र-पात्र का त्याग करना।

२ सुई या कुशाग्र को संवृत करके रखना।

३ अकल्पनीय उपकरण वस्त्र-पात्र का त्याग न करना।

४ सुई या कुशाग्र को संवृत करके न रखना।

४. तपस्वी की वैयावृत्य,

५. ग्लान (रोगी) की वैयावृत्य,

६. शैक्ष (नवदीक्षित) की वैयवृत्य,

७. कुल (चद्र कुलादि) की वैयावृत्य,

८. गण (कोटि कादिगण) की वैयावृत्य,

९. चतुर्विध सघ की वैयावृत्य,

१०. साधर्मिक की वैयावृत्य ।

७१३ क—जीव परिणाम दस प्रकार के है,
यथा—१. गति परिणाम, २. इन्द्रिय परिणाम, ३. कषाय परिणाम, ४. लेश्या परिणाम, ५. योग-परिणाम, ६. उपयोग परिणाम, ७. ज्ञान परिणाम, ८. दर्शन परिणाम, ९ चारित्र परिणाम, १०. वेद-परिणाम ।

ख—अजीव परिणाम दस प्रकार के हैं,
यथा—१. बन्धन परिणाम, २. गति परिणाम, ३. संस्थान परिणाम, ४. भेद परिणाम, ५. वर्ण परि-णाम, ६. रस परिणाम, ७. गंध परिणाम, ८. स्पर्श परिणाम ९. अगुरु लघु परिणाम, १०. शब्द परिणाम ।

७१४ क—आकाश सम्बन्धी अस्वाध्याय दस प्रकार का है,
यथा—१. उल्कापात—आकाश से प्रकाश पुंज का गिरना[1]

---

१ अस्वाध्याय काल—एक प्रहर ।

४. स्वप्न से—पुष्प चूला के समान स्वप्न दर्शन से दीक्षा ले, अथवा स्वप्न में दीक्षा लेने से दीक्षा ले।

५. प्रतिज्ञा लेने से—धन्नाजी के समान प्रतिज्ञा लेने से दीक्षा ले।

६. स्मरण से—भगवान् मल्लिनाथ के छः मित्रो के समान पूर्वभव के स्मरण से दीक्षा ले।

७. रोग होने से—सनत्कुमार चक्रवर्ती के समान रोग होने से दीक्षा ले।

८. अनादर से—नंदीषेण के समान अनादर से दीक्षा ले।

९. देवता के उपदेश से—मेतार्य के समान देवता के उपदेश से दीक्षा ले।

१०. पुत्र के स्नेह से—वज्रस्वामी की माताजी के समान पुत्र स्नेह से दीक्षा ले।

ख—श्रमण धर्म दस प्रकार का है,

यथा—१. क्षमा, २. निर्लोभता, ३. सरलता, ४. मृदुता, ५. लघुता, ६. सत्य, ७. सयम, ८. तप, ९. त्याग, १०. ब्रह्मचर्य।

ग—वैयावृत्य दस प्रकार का है,

यथा—१. आचार्य की वैयावृत्य,

२. उपाध्याय की वैयावृत्य,

३. स्थविर साधुओ की वैयावृत्य,

ख—औदारिक शरीर सम्बन्धी अस्वाध्याय दस प्रकार का है,

यथा—१. अस्थि, २. मांस, ३. रक्त[1] ४. अशुचि के समीप, ५. स्मशान के समीप, ६. चन्द्र ग्रहण[2] ७. सूर्य ग्रहण[3] ८. पतन—राजा, मंत्री, सेनापति या ग्रामाधिपति आदि का मरण[4] ९. राजविग्रह—युद्ध, १०. उपाश्रय मे मनुष्य आदि का मृत शरीर पडा हो तो सौ हाथ पर्यन्त अस्वाध्याय क्षेत्र है।

७१५ क—पंचेन्द्रिय जीवो की हिंसा न करने वाले को दस प्रकार का संयम होता है।

यथा—१. श्रोत्रेन्द्रिय का सुख नष्ट नही होता।

२. श्रोत्रेन्द्रिय का दुःख प्राप्त नही होता यावत्—

३.-१०. स्पर्शेन्द्रिय का दुःख प्राप्त नही होता।

---

१ (क) अस्थि आदि तिर्यंच के हो तो क्षेत्र से साठ हाथ पर्यन्त और काल से तीन प्रहर तक अस्वाध्याय है।

(ख) अस्थि आदि मनुष्यों के हो तो क्षेत्र आदि से सौ-सौ हाथ पर्यन्त और काल से अहोरात पर्यन्त अस्वाध्याय है।

२ उत्कृष्ट—बारह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्याय काल है।

जघन्य—आठ प्रहर पर्यन्त अस्वाध्याय काल है।

३ उत्कृष्ट—सोलह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्याय काल है।

जघन्य—बारह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्याय काल है।

४ अहोरात्र पर्यन्त अस्वाध्याय है।

२. दिशादाह—महानगर के दाह के समान आकाश में प्रकाश का दिखाई देना[1]

३. गर्जना—आकाश में गर्जना होना[2]

४. विद्युत—अकाल में विद्युत चमकना[3]

५. निर्घात—आकाश मे व्यन्तर देव कृत महाध्वनि अथवा भूकम्प की ध्वनि[4]

६. यूयग—सध्या और चन्द्रप्रभा का मिलना[5]

७. यक्षादीप्त—आकाश में यक्ष के प्रभाव से जाज्वल्यमान अग्नि का दिखाई देना।

८. धूमिका—धुंए जैसे वर्णवाली सूक्ष्मवृष्टि।

९. मिहिका—शरद काल मे होने वाली सूक्ष्म वर्षा अर्थात् ओस गिरना,

१०. रजघात—चारो दिशा मे सूक्ष्म रज की वृष्टि[6]

---

१ अस्वाध्याय काल—एक प्रहर

२ ,, ,, दो प्रहर

३ ,, ,, एक प्रहर

४ ,, ,, आठ प्रहर

५ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से तृतीया तक प्रतिक्रमण पश्चात एक प्रहरपर्यन्त कालिक सूत्र का अस्वाध्याय काल है।

६ यक्षादीप्त, धूमिका, मिहिका और रजघात जब तक रहे तब तक अस्वाध्याय है।

ख—जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर दिशा मे रक्ता और रक्तवती महानदी मे दस महानदियाँ मिलती है, यथा—१. कृष्णा, २. महाकृष्णा, ३. नीला ४. महानीला, ५. तीरा, ६. महातीरा, ७. इन्द्रा, ८. इन्द्रषेणा, ९. वारिषेणा, १०. महाभोगा।

७१८ क—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे दस राजधानियाँ है, यथा—१. चम्पा, २. मथुरा, ३. वाराणसी, ४. श्रावस्ती, ५. साकेत, ६. हस्तिनापुर, ७. कापिल्यपुर, ८. मिथिला, ९. कोशाम्बि, १०. राजगृह।

ख—इन दस राजधानियो मे दश राजा मुण्डित यावत्—प्रव्रजित हुए, यथा—१. भरत, २. सगर, ३. मघव, ४. सनत्कुमार, ५. शान्तिनाथ, ६. कुन्थुनाथ, ७. अरनाथ, ८. महापद्म, ९. हरिषेण, १०. जयनाथ

मेरुपर्वत सूत्र

७१९ क—जम्बूद्वीप का मेरुपर्वत भूमि मे दस सौ (एक हजार) योजन गहरा है।

ख—भूमि पर दस हजार योजन चौडा है।

ग—ऊपर से दस सौ (एक हजार) योजन चौडा हे।

घ—दस-दस हजार (एक लाख) योजन के सम्पूर्ण मेरुपर्वत हैं।

ज—कलशों के मुंह दस हजार योजन चौड़े हैं।

झ—इन महापाताल कलशों की ठीकरी वज्रमय है और दस सौ योजन की सर्वत्र समान चौड़ी (मोटी) है।

लघुपाताल कलश सूत्र

ञ—सभी (चार) लघुपाताल कलश दस सौ (एकहजार) योजन गहरे हैं।

ट—मूल में (पेंदे में) दस दशक (सौ) योजन चौड़े हैं।

ठ—मध्य भाग में—एक प्रदेश वाली श्रेणी में दससौ (एक हजार) योजन चौड़े हैं।

ड—कलशों के मुंह दशदशक (सौ) योजन चौड़े हैं।

ढ—इन लघुपाताल कलशों की ठीकरी वज्रमय है और दश योजन की सर्वत्र समान चौड़ी (मोटी) है।

मेरु पर्वत सूत्र

७२१ क—धातकीखण्ड द्वीप के मेरु भूमि में दश सौ (एक हजार) योजन गहरे हैं।

ख—भूमि पर कुछ न्यून दश हजार योजन चौड़े हैं।

ग—ऊपर में दश सौ (एक हजार योजन) चौड़े हैं।

घ-च—पुष्करवर अर्धद्वीप के मेरु पर्वतों का प्रमाण भी इसी प्रकार का है।

१२० क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के मध्य भाग मे इस रत्न प्रभा पृथ्वी के ऊपर और नीचे के लघु प्रतर मे आठ प्रदेश वाला रुचक है वहाँ से इन दश दिशाओ का उद्‌गम होता है।

यथा—१. पूर्व, २. पूर्व दक्षिण, ३. दक्षिण, ४ दक्षिण पश्चिम, ५, पश्चिम, ६. पश्चिमोत्तर, ७ उत्तर, ८. उत्तर पूर्व, ९. ऊर्ध्व, १०. अवो।

ख—इन दस दिशाओ के दस नाम है,

यथा—१. ऐन्द्री, २. आग्नेयी, ३. यमा, ४. नैऋती, ५ वारुणी, ६. वायव्या, ७. सोमा, ८. ईशाना, ९ विमला, १० तमा।

लवण समुद्र सूत्र

ग—लवण समुद्र के मध्य मे दस हजार योजन का गोतीर्थ विरहित क्षेत्र है।

घ—लवण समुद्र के जल की शिखा दस हजार योजन की है।

महापाताल कलश सूत्र

ङ—सभी (चार) महापाताल कलश दस-दश सहस्र (एक लाख योजन के गहरे हैं।

च—मूल मे (पेदे मे) दस हजार योजन के चौडे हैं।

छ—मध्य भाग मे—एक प्रदेश वाली श्रेणी मे दस-दस हजार (एक लाख) योजन चौड़े है।

रतिकर पर्वत सूत्र

च—सभी रतिकर पर्वत दश सौ (एक हजार) योजन ऊँचे है।

छ—दश सौ (एक हजार) गाऊ भूमि मे गहरे है।

ज—सर्वत्र समान झालर के सस्थान से स्थित है और दश हजार योजन चौडे है।

रुचकवर पर्वत सूत्र

१२६ क—रुचकवर पर्वत दश सौ योजन भूमि मे गहरे है।

ख—मूल मे (भूमि पर) दस हजार योजन चौडे हैं।

ग—ऊपर से दस सौ योजन चौड़े हैं।

घ-च—इसी प्रकार कुण्डलवर पर्वत का प्रमाण भी करना चाहिए।

१२७ —द्रव्यानुयोग दस प्रकार का है,

यथा—१. द्रव्यानुयोग, २. जीवादि द्रव्यो का चिन्तन यथा—गुण-पर्यायवद् द्रव्यम्।

२. मातृकानुयोग—उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य इन तीन पदो का चिन्तन।

यथा—उत्पाद व्यय ध्रौव्य युक्तं सत्।

३. एकार्थिकानुयोग—एक अर्थ वाले शब्दो का चिन्तन।

वैताढ्य पर्वत सूत्र

७२२ क—सभी वृत वैताढ्य पर्वत दश सौ (एक हजार) योजन ऊँचे हैं।

ख—भूमि मे दस सौ (एक हजार) गाऊ गहरे हैं।

ग—सर्वत्र समान पल्यंक संस्थान से संस्थित हैं और दश सौ (एक हजार) योजन चौडे है।

७२३ —जम्बूद्वीप मे दश क्षेत्र है,

यथा—१. भरत, २. ऐरवत, ३. हैमवत, ४. हैरण्यवत, ५. हरिवर्प, ६. रम्यक्वर्प, ७. पूर्व-विदेह, ८. अपरविदेह, ९. देवकुरु, १०. उत्तरकुरु।

७२४ —मानुपोत्तर पर्वत मूल मे दश सौ बावीस (एक हजार बावीस–१०२२) योजन चौडा है।

अंजनक पर्वत सूत्र

७२५ क—सभी अंजनक पर्वत भूमि मे दश सौ (एक हजार) योजन गहरे हैं।

ख—भूमि पर मूल मे दश हजार योजन चौडे हैं।

ग—ऊपर मे दश सौ (एक हजार) योजन चौडे है।

दधिमुख पर्वत सूत्र

घ—सभी दधिमुख पर्वत दश सौ (एक हजार) योजन भूमि मे गहरे हैं।

ङ—सर्वत्र समान पल्यक संस्थान से संस्थित हैं और दश हजार योजन चौड़े हैं।

उत्पात पर्वत सूत्र

७२८ क—असुरेन्द्र चमर का तिगिच्छा कूट उत्पात पर्वत मूल मे दस-सौ बाईस (एक हजार बाईस १०२२) योजन चौडा है।

ख—असुरेन्द्र चमर के सोम लोकपाल का सोमप्रभ उत्पाद पर्वत दस सौ (एक हजार) योजन का ऊँचा है, दस सौ (एक हजार) गाऊ का भूमि मे गहरा है, मूल मे (भूमि पर) दससौ (एक हजार) योजन का चौडा है।

ग—असुरेन्द्र चमर के यमलोकपाल का यमप्रभ उत्पात पर्वत का प्रमाण भी पूर्ववत् है।

घ—इसी प्रकार वरुण के उत्पात पर्वत का प्रमाण है।

ङ—इसी प्रकार वैश्रमण के उत्पात पर्वत का प्रमाण हे।

च—वैरोचनेन्द्र बलि का रुचकेन्द्र उत्पात पर्वत मूल मे दस सौ बावीस (एक हजार बाईस १०२२) योजन चौडा है।

छ-ज—जिस प्रकार चमरेन्द्र के लोकपालो के उत्पात पर्वतो का प्रमाण कहा है उसी प्रकार बलि के लोकपालो के उत्पात पर्वतो का प्रमाण कहना चाहिए।

ट—नागकुमारेन्द्र धरण का धरणप्रभ उत्पात पर्वत दस सौ (एक हजार) योजन ऊँचा है, दस सौ (एक हजार) गाऊ का भूमि मे गहरा है, मूल मे दससौ (एक हजार) योजन चौडा है।

यथा—जीव, प्राण, भूत और सत्त्व इन एकार्थवाची शब्दो का चिन्तन।

४. करणानुयोग—साधकतम कारणो का चिन्तन। यथा—काल, स्वभाव, नियति और साधकतम कारण से कर्त्ता कार्य करता है।

५. अर्पितानर्पित—
यथा—अर्पित-विशेषण सहित—यह संसारी जीव है। अनर्पित विशेषण रहित—यह जीव द्रव्य है।

६. भाविताभावित—
यथा—अन्य द्रव्य के संसर्ग से प्रभावित—भावित कहा जाता है और अन्य द्रव्य के संसर्ग से अप्रभावित अभावित कहा जाता है—इस प्रकार द्रव्यो का चिन्तन किया जाता है।

७. बाह्याबाह्य—बाह्य द्रव्य और अबाह्य द्रव्यो का चिन्तन।

८. शास्वताशास्वत—शास्वत और अशास्वत द्रव्यो का चिन्तन।

९. तथाज्ञान—सम्यगदृष्टि जीवो का जो यथार्थ ज्ञान है वह तथाज्ञान है।

१० अतथाज्ञान—मिथ्यादृष्टि जीवो का जो एकान्त ज्ञान है वह अतथाज्ञान है।

ग—स्थलचर उरपरिसर्प तिर्यंच पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना भी इतनी ही है।

७३० —संभवनाथ अर्हन्त की मुक्ति के पश्चात् दश लाख क्रोड़ सागरोपम व्यतीत होने पर अभिनन्दन अर्हन्त उत्पन्न हुए।

७३१ —अनन्तक दश प्रकार के है,

यथा—१. नाम अनन्तक—सचित्त या अचित्त वस्तु का अनन्तक नाम।

२. स्थापना अनन्तक—अक्ष आदि में किसी पदार्थ मे अनन्त की स्थापना।

३. द्रव्य अनन्तक—जीव द्रव्य या पुद्गल द्रव्य का अनन्तपना।

४. गणना—अनन्तक एक, दो, तीन इसी प्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त पर्यन्त गिनती करना।

५. प्रदेश अनन्तक—आकाश प्रदेशो का अनन्तपना।

६. एकतोऽनंतक—अतीत काल अथवा अनागत काल।

७. द्विधा-अनन्तक—सर्वकाल।

८. देश विस्तारानन्तक—एक आकाश प्रतर।

९. सर्व विस्तारानन्तक—सर्व आकाशास्तिकाय।

१०. शास्वतानन्तक—अक्षय जीवादि द्रव्य।

७३२ क—उत्पाद पूर्व के दश वस्तु (अध्ययन) है।

ठ-त—इसी प्रकार धरण के कालवाल आदि लोकपालो के उत्पात पर्वतो का प्रमाण है।

थ-प—इसी प्रकार भूतानन्द और उनके लोकपालो के उत्पात पर्वतो का प्रमाण है।

सूचना—इसी प्रकार लोकपाल सहित स्तनित कुमार पर्यन्त उत्पात पर्वतो का प्रमाण कहना चाहिए। असुरेन्द्रो और लोकपालो के नामो के समान उत्पात पर्वतो के नाम कहने चाहिए।

फ—देवेन्द्र देवराज शक्रेन्द्र का शक्रप्रभ उत्पात पर्वत दस हजार योजन ऊँचा है। दस हजार गाऊ भूमि मे गहरा है। मूल मे दस हजार योजन चौडा है।

ब-य—इसी प्रकार शक्रेन्द्र के लोकपालो के उत्पात पर्वतो का प्रमाण है।

सूचना—इसी प्रकार अच्युत पर्यन्त सभी इन्द्रो और लोकपालो के उत्पात पर्वतो का प्रमाण है।[1]

अवगाहना सूत्र

७२६ क—बादर वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट अवगाहना दश सौ (एक हजार) योजन की है।

ख—जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना दश सौ (एक हजार) योजन की हैं।

---

१ सबका समान प्रमाण है।

७. सहसात्कार प्रतिषेवना—अकस्मात् दोष लग जाने से ।[1]

८. भयप्रतिषेवना—राजा चोर आदि के भय से ।[2]

९. प्रद्वेषप्रतिषेवना—क्रोधादि कषाय की प्रबलता से ।

१०. विमर्श प्रतिषेवना—शिष्यादि की परीक्षा के हेतु[3]

ख—आलोचना के दश दोष है,

यथा—१. अनुकम्पा उत्पन्न करके आलोचना करे—आलोचना लेने के पहले गुरु महाराज की सेवा इस संकल्प से करे कि ये मेरी सेवा से प्रसन्न होकर मेरे पर अनुकम्पा करके कुछ कम प्रायश्चित्त देंगे ।

२. अनुमान करके आलोचना करे—ये आचार्यादि मृत्यु दण्ड देने वाले है या कठोर दण्ड देने वाले हैं

---

१ [क] देखे बिना पैर धरदे पश्चात् देखने वर जीवों की विराधना होती हुयी देखे किन्तु पीछे न लौटे ।
[ख] पात्र में सहसा कोई सदोष आहार डाल दे बाद में दोष जानने पर भी उस आहार को न त्यागे ।

२ सिंह आदि श्वापद तथा सर्पादि उरग जीवो के भय से वृक्षादि पर चढ़ने से ।

३ सचित्त पृथ्वी आदि के स्पर्श से ।

ख—अस्तिनास्ति प्रवादपूर्व के दश चूल वस्तु (लघु अध्ययन) हैं।

७३३ क—प्रतिषेवना (प्राणातिपात आदि पापो का सेवन) दश प्रकार की है।

यथा—१. दर्प प्रतिषेवना—दर्पपूर्वक दौड़ने या वध्यादि कर्म करने से।

२. प्रमाद प्रतिषेवना—हास्य विकथा आदि प्रमाद से[1]

३. अनाभोग प्रतिषेवना—असावधानी से।

४. आतुर प्रतिषेवना—स्वय की या अन्य की चिकित्सा हेतु[2]

५. आपत्ति प्रतिषेवना—विपद्‌ग्रस्त होने से[3]

६ शंकित प्रतिषेवना—शुद्ध आहारादि मे अशुद्ध की शका होने पर भी ग्रहण करने से।

---

१ करने योग्य कार्य के करने मे प्रयत्न न करना प्रमाद है।

२ भूख, प्यास या व्याधि से पीड़ित होकर दोष सेवन करना।

३ द्रव्यादि भेद से चार प्रकार की विपत्ति है—
द्रव्य विपत्ति—प्राशुक द्रव्य की दुर्लभता,
क्षेत्र विपत्ति—मार्ग में गिरना,
काल विपत्ति—दुर्भिक्ष आदि,
भाव विपत्ति—ग्लानि होना।

७. उच्च स्वर से आलोचना करे—केवल गीतार्थ ही सुन सके ऐसे स्वर से आलोचना करनी चाहिये किन्तु उच्च स्वर से बोलकर अगीतार्थ को भी सुनावे।

८. अनेक के समीप आलोचना करे—दोष की आलोचना एक के पास ही करनी चाहिये, किन्तु जिन दोषो की आलोचना पहले कर चुका है उन्ही दोषो की आलोचना दूसरो के पास करे।

९. अगीतार्थ के पास आलोचना करे—आलोचना गीतार्थ के पास ही करनी चाहिये किन्तु ऐसा न करके अगीतार्थ के पास आलोचना करे।

१०. दोषसेवी के पास आलोचना करे—मैंने जिस दोष का सेवन किया है उसी दोष का सेवन गुरुजी ने भी किया है अत मैं उन्ही के पास आलोचना करूं—क्योकि ऐसा करने से वे कुछ कम प्रायश्चित्त देगे।

ग—दश स्थान (गुण) सम्पन्न अणगार (आचार्यादि) अपने दोषो की आलोचना करता है,

यथा—१. जातिसम्पन्न, २. कुलसम्पन्न शेष ३-६ अष्टम स्थानक समान यावत् ७. क्षमाशील, ८. दमनशील, ९. अमायी, १०. अपश्चात्तापी (आलोचना प्रायश्चित्त) लेने के पश्चात् पश्चात्ताप न करने वाला।

यह अनुमान से जानकर मृदु दण्ड मिलने की आशा से आलोचना करे।

३. मेरा दोष इन्होने देख लिया है ऐसा जानकर आलोचना करे—आचार्यादि ने मेरा यह दोषसेवन देख तो लिया ही है अब इसे छिपा नही सकता अतः मैं स्वयं इनके समीप जाकर अपने दोष की आलोचना करलूं इसमे ये मेरे पर प्रसन्न होंगे—ऐसा सोच कर आलोचना करे किन्तु दोष सेवी को ऐसा अनुभव हो कि आचार्यादि ने मेरा दोष सेवन देखा नही है है, ऐसा विचार करके आलोचना न करे अतः यह दृष्ट दोष है।

४. स्थूल दोष की आलोचना करे—अपने बडे दोष की आलोचना इस आशय से करे कि यह कितना सत्यवादी हैं ऐसी प्रतीति कराने के लिये बडे दोष की आलोचना करे।

५ सूक्ष्म दोष की आलोचना करे—यह छोटे-छोटे दोषो की आलोचना करता है तो बड़े दोषो की आलोचना करने मे तो सन्देह ही क्या है ऐसी प्रतीति कराने के लिए सूक्ष्म दोषो की आलोचना करे।

६. प्रच्छन्न रूप मे आलोचना करे—आचार्यादि सुन न सके ऐसे धीमे स्वर मे आलोचना करे अतः आलोचना नही करी ऐसा कोई न कह सके।

१०. पारंचिकार्ह—गृहस्थ के कपड़े पहनाकर जो प्रायश्चित्त दिया जाय।

७३४ —मिथ्यात्व दश प्रकार का है, यथा—

१. अधर्म में धर्म की बुद्धि,

२. धर्म मे अधर्म की बुद्धि,

३. उन्मार्ग में मार्ग की बुद्धि,

४. मार्ग में उन्मार्ग की बुद्धि,

५. अजीव में जीव की बुद्धि,

६. जीव मे अजीव की बुद्धि,

७. असाधु में साधु की बुद्धि,

८. साधु मे असाधु की बुद्धि,

९. अमूर्त मे मूर्त की बुद्धि,

१०. मूर्त मे अमूर्त की बुद्धि।

७३५ क—चन्द्रप्रभ अर्हन्त दश लाख पूर्व का पूर्णायु भोग कर सिद्ध यावत् मुक्त हुए।

ख—धर्मनाथ अर्हन्त दश लाख वर्ष का पूर्णायु भोगकर सिद्ध यावत् मुक्त हुए।

ग—नमिनाथ अर्हन्त दश हजार वर्ष का पूर्णायु भोगकर सिद्ध यावत् मुक्त हुए।

घ—पुरुषसिंह वासुदेव दश लाख वर्ष का पूर्णायु भोगकर छट्ठी तमा पृथ्वी में नैरयिक रूप में उत्पन्न हुए।

घ—दश स्थान (गुण) सम्पन्न अणगार आलोचना सुनने योग्य होता है।

यथा—१. आचारवान्

२. अवधारणावान्

३. व्यवहारवान्[1]

४. अल्पव्रीडक—आलोचक की लज्जा दूर कराने वाला, जिससे आलोचक सुखपूर्वक आलोचना कर सके।

५. शुद्धि करने मे समर्थ,

६. आलोचक की शक्ति के अनुसार प्रायश्चित्त देने वाले,

७. आलोचक के दोष दूसरो को न कहने वाला,

८. दोष सेवन से अनिष्ट होता है ऐसा समझा सकने वाला,

९. प्रियधर्मी,

१०. दृढधर्मी।

ङ—प्रायश्चित्त दश प्रकार का है,

यथा—१. आलोचना योग्य, यावत् २-९-अनवस्थाप्यार्ह—जिस दोष की शुद्धि साधु को अमुक समय तक व्रतरहित रखकर पुन. व्रतारोपण रूप प्रायश्चित्त से हो।

आगमादि पांच व्यवहारो का ज्ञाता।

ख—जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर दिशा मे रक्ता और रक्तवती महानदी मे दस महानदियाँ मिलती है,
यथा—१. कृष्णा, २. महाकृष्णा, ३. नीला ४. महानीला, ५. तीरा, ६. महातीरा, ७. इन्द्रा, ८. इन्द्रषेणा, ९. वारिषेणा, १०. महाभोगा।

७१८ क—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में दस राजधानियाँ हैं,
यथा—१. चम्पा, २. मथुरा, ३. वाराणसी, ४. श्रावस्ती, ५. साकेत, ६. हस्तिनापुर, ७. काम्पिल्यपुर, ८. मिथिला, ९. कोशाम्बि, १०. राजगृह।

ख—इन दस राजधानियो मे दश राजा मुण्डित यावत्—प्रव्रजित हुए,
यथा—१. भरत, २. सगर, ३. मघव, ४. सनत्कुमार, ५. शान्तिनाथ, ६. कुन्थुनाथ, ७. अरनाथ, ८. महापद्म, ९. हरिषेण, १०. जयनाथ

मेरुपर्वत सूत्र

७१९ क—जम्बूद्वीप का मेरुपर्वत भूमि मे दस सौ (एक हजार) योजन गहरा है।

ख—भूमि पर दस हजार योजन चौडा है।

ग—ऊपर से दस सौ (एक हजार) योजन चौड़ा है।

घ—दस-दस हजार (एक लाख) योजन के सम्पूर्ण मेरुपर्वत है।

ख—इसी प्रकार दस प्रकार का असंयम भी कहना चाहिए।

७१६ —सूक्ष्म दस प्रकार के है,
यथा—१. प्राण सूक्ष्म—कु थुआ आदि।
२. पनक सूक्ष्म—फूलण आदि।
३. बीज सूक्ष्म—डागर आदि का अग्र भाग।
४. हरित सूक्ष्म—सूक्ष्म हरी घास।
५. पुष्प सूक्ष्म—वड आदि के पुष्प।
६. अड सूक्ष्म—कीडी आदि के अण्डे।
७. लयन सूक्ष्म—कीडी नगरादि।
८. स्नेह सूक्ष्म—धुंअर आदि।
९ गणित सूक्ष्म—सूक्ष्म बुद्धि से गहन गणित करना।
१०. भंग सूक्ष्म—सूक्ष्म बुद्धि से गहन भागे वनाना।

सरितासूत्र

७१७ क—जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा मे गंगा और सिन्धु महानदी मे दस महा नदियाँ मिलती हैं।
यथा—गगा नदी मे मिलने वाली पाँच नदियाँ—
१. यमुना, २. सरयू, ३. आवी, ४ कोशी, ५. मही।
सिन्धु नदी मे मिलने वाली पाँच नदियाँ—
१. शतद्रु, २. विवत्सा, ३. विभासा, ४. एरावती, ५. चन्द्रभागा।

ज—कलशो के मुंह दस हजार योजन चौड़े है।

झ—उन महापाताल कलशो की ठीकरी वज्रमय है और दस सौ योजन की सर्वत्र समान चौडी (मोटी) है।

लघुपाताल कलश सूत्र

ञ—सभी (चार) लघुपाताल कलश दस सौ (एकहजार) योजन गहरे है।

ट—मूल मे (पेदे मे) दस दशक (सौ) योजन चौड़े है।

ठ—मध्य भाग मे—एक प्रदेश वाली श्रेणी मे दशसौ (एक हजार) योजन चौड़े हैं।

ड—कलशो के मुंह दशदशक (सौ) योजन चौडे हैं।

ढ—उन लघुपाताल कलशो की ठीकरी वज्रमय है और दश योजन की सर्वत्र समान चौड़ी (मोटी) है।

मेरु पर्वत सूत्र

७२१ क—धातकीखण्ड द्वीप के मेरु भूमि में दश सौ (एक हजार) योजन गहरे है।

ख—भूमि पर कुछ न्यून दश हजार योजन चौडे है।

ग—ऊपर से दश सौ (एक हजार योजन) चौडे है।

घ-च—पुष्करवर अर्धद्वीप के मेरु पर्वतों का प्रमाण भी इसी प्रकार का है।

क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के मध्य भाग मे इस रत्न प्रभा पृथ्वी के ऊपर और नीचे के लघु प्रतर मे आठ प्रदेश वाला रुचक है वहाँ से इन दश दिशाओ का उद्गम होता है।

यथा—१. पूर्व, २. पूर्व दक्षिण, ३. दक्षिण, ४. दक्षिण पश्चिम, ५, पश्चिम, ६. पश्चिमोत्तर, ७. उत्तर, ८. उत्तर पूर्व, ९. ऊर्ध्व, १०. अधो।

ख—इन दस दिशाओ के दस नाम है,

यथा—१. ऐन्द्री, २. आग्नेयी, ३. यमा, ४. नैऋती, ५. वारुणी, ६ वायव्या, ७. सोमा, ८. ईशाना, ९. विमला, १०. तमा।

लवण समुद्र सूत्र

ग—लवण समुद्र के मध्य मे दस हजार योजन का गोतीर्थ विरहित क्षेत्र है।

घ—लवण समुद्र के जल की शिखा दस हजार योजन की है।

महापाताल कलश सूत्र

ङ—सभी (चार) महापाताल कलश दस-दश सहस्र (एक लाख योजन के गहरे हैं।

च—मूल मे (पेंदे मे) दस हजार योजन के चौडे है।

छ—मध्य भाग मे—एक प्रदेश वाली श्रेणी मे दस-दस हजार (एक लाख) योजन चौड़े है।

रतिकर पर्वत सूत्र

च—सभी रतिकर पर्वत दश सौ (एक हजार) योजन ऊँचे हैं।

छ—दश सौ (एक हजार) गाऊ भूमि मे गहरे है।

ज—सर्वत्र समान झालर के सस्थान से स्थित है और दश हजार योजन चौडे है।

रुचकवर पर्वत सूत्र

७२६ क—रुचकवर पर्वत दश सौ योजन भूमि मे गहरे है।

ख—मूल मे (भूमि पर) दस हजार योजन चौडे है।

ग—ऊपर से दस सौ योजन चौडे है।

घ-च—इसी प्रकार कुण्डलवर पर्वत का प्रमाण भी करना चाहिए।

७२७ —द्रव्यानुयोग दस प्रकार का है,

यथा—१. द्रव्यानुयोग, २. जीवादि द्रव्यो का चिन्तन यथा—गुण-पर्यायवद् द्रव्यम्।

२. मातृकानुयोग—उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य इन तीन पदो का चिन्तन।

यथा—उत्पाद व्यय ध्रौव्य युक्तं सत्।

३. एकार्थिकानुयोग—एक अर्थ वाले शब्दो का चिन्तन।

वैताढ्य पर्वत सूत्र

७२२ क—सभी वृत वैताढ्य पर्वत दश सौ (एक हजार) योजन ऊँचे है।

ख—भूमि मे दस सौ (एक हजार) गाऊ गहरे है।

ग—सर्वत्र समान पल्यंक सस्थान से संस्थित हैं और दश सौ (एक हजार) योजन चौडे हैं।

७२३ —जम्बूद्वीप मे दश क्षेत्र हैं,

यथा—१. भरत, २. ऐरवत, ३. हैमवत, ४. हैरण्यवत, ५. हरिवर्ष, ६. रम्यक्वर्ष, ७. पूर्वविदेह, ८. अपरविदेह, ९. देवकुरु, १०. उत्तरकुरु।

७२४ —मानुषोत्तर पर्वत मूल मे दश सौ बावीस (एक हजार बावीस–१०२२) योजन चौड़ा है।

अंजनक पर्वत सूत्र

७२५ क—सभी अंजनक पर्वत भूमि मे दश सौ (एक हजार) योजन गहरे हैं।

ख—भूमि पर मूल मे दश हजार योजन चौड़े हैं।

ग—ऊपर मे दश सौ (एक हजार) योजन चौडे है।

दधिमुख पर्वत सूत्र

घ—सभी दधिमुख पर्वत दश सौ (एक हजार) योजन भूमि मे गहरे है।

ङ—सर्वत्र समान पल्यंक संस्थान से संस्थित है और दश हजार योजन चौड़े हैं।

उत्पात पर्वत सूत्र

२८ क—असुरेन्द्र चमर का तिगिच्छा कूट उत्पात पर्वत मूल मे दस-सौ वाईस (एक हजार वाईस १०२२) योजन चौडा है।

ख—असुरेन्द्र चमर के सोम लोकपाल का सोमप्रभ उत्पाद पर्वत दस सौ (एक हजार) योजन का ऊँचा है, दस सौ (एक हजार) गाऊ का भूमि मे गहरा है, मूल मे (भूमि पर) दससौ (एक हजार) योजन का चौड़ा है।

ग—असुरेन्द्र चमर के यमलोकपाल का यमप्रभ उत्पात पर्वत का प्रमाण भी पूर्ववत् है।

घ—इसी प्रकार वरुण के उत्पात पर्वत का प्रमाण है।

ङ—इसी प्रकार वैश्रमण के उत्पात पर्वत का प्रमाण है।

च—वैरोचनेन्द्र वलि का रुचकेन्द्र उत्पात पर्वत मूल मे दस सौ वावीस (एक हजार वाईस १०२२) योजन चौड़ा है।

छ-ज—जिस प्रकार चमरेन्द्र के लोकपालो के उत्पात पर्वतो का प्रमाण कहा है उसी प्रकार वलि के लोकपालों के उत्पात पर्वतों का प्रमाण कहना चाहिए।

ट—नागकुमारेन्द्र धरण का धरणप्रभ उत्पात पर्वत दस सौ (एक हजार) योजन ऊँचा है, दस सौ (एक हजार) गाऊ का भूमि मे गहरा है, मूल मे दससौ (एक हजार) योजन चौडा है।

यथा—जीव, प्राण, भूत और सत्व इन एकार्थवाची शब्दो का चिन्तन ।

४. करणानुयोग—साधकतम कारणो का चिन्तन । यथा—काल, स्वभाव, नियति और साधकतम कारण से कर्त्ता कार्य करता है ।

५. अर्पितानर्पित—

यथा—अर्पित-विशेपण सहित—यह संसारी जीव हैं । अनर्पित विशेपण रहित—यह जीव द्रव्य हैं ।

६. भाविताभावित—

यथा—अन्य द्रव्य के ससर्ग मे प्रभावित—भावित कहा जाता है और अन्य द्रव्य के ससर्ग से अप्रभावित अभावित कहा जाता है—इस प्रकार द्रव्यो का चिन्तन किया जाता है ।

७. वाह्यावाह्य—वाह्य द्रव्य और अवाह्य द्रव्यो का चिन्तन ।

८. शास्वताशास्वत—शास्वत और अशास्वत द्रव्यो का चिन्तन ।

९ तथाज्ञान—सम्यगदृष्टि जीवो का जो यथार्थ ज्ञान है वह तथाज्ञान है ।

१० अतथाज्ञान—मिथ्यादृष्टि जीवो का जो एकान्त ज्ञान है वह अतथाज्ञान है ।

ग—स्थलचर उरपरिसर्प तिर्यंच पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना भी इतनी ही है।

७३० —संभवनाथ अर्हन्त की मुक्ति के पश्चात् दश लाख क्रोड सागरोपम व्यतीत होने पर अभिनन्दन अर्हन्त उत्पन्न हुए।

७३१ —अनन्तक दश प्रकार के है,

यथा—१. नाम अनन्तक—सचित्त या अचित्त वस्तु का अनन्तक नाम।

२. स्थापना अनन्तक—अक्ष आदि मे किसी पदार्थ मे अनन्त की स्थापना।

३. द्रव्य अनन्तक—जीव द्रव्य या पुद्गल द्रव्य का अनन्तपना।

४. गणना—अनन्तक एक, दो, तीन इसी प्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त पर्यन्त गिनती करना।

५. प्रदेश अनन्तक—आकाश प्रदेशो का अनन्तपना।

६. एकतोऽनतक–अतीत काल अथवा अनागत काल।

७. द्विधा-अनन्तक—सर्वकाल।

८. देश विस्तारानन्तक—एक आकाश प्रतर।

९. सर्व विस्तारानन्तक—सर्व आकाशास्तिकाय।

१०. शास्वतानन्तक—अक्षय जीवादि द्रव्य।

७३२ क—उत्पाद पूर्व के दश वस्तु (अध्ययन) है।

ठ-त—इसी प्रकार धरण के कालवाल आदि लोकपालो के उत्पात पर्वतो का प्रमाण है।

थ-प—इसी प्रकार भूतानन्द और उनके लोकपालो के उत्पात पर्वतो का प्रमाण है।

सूचना—इसी प्रकार लोकपाल सहित स्तनित कुमार पर्यन्त उत्पात पर्वतो का प्रमाण कहना चाहिए। असुरेन्द्रो और लोकपालो के नामो के समान उत्पात पर्वतो के नाम कहने चाहिए।

फ—देवेन्द्र देवराज शक्रेन्द्र का शक्रप्रभ उत्पात पर्वत दस हजार योजन ऊँचा है। दस हजार गाऊ भूमि मे गहरा है। मूल मे दस हजार योजन चौडा है।

ब-य—इसी प्रकार शक्रेन्द्र के लोकपालो के उत्पात पर्वतो का प्रमाण है।

सूचना—इसी प्रकार अच्युत पर्यन्त सभी इन्द्रों और लोकपालो के उत्पात पर्वतो का प्रमाण है।[1]

अवगाहना सूत्र

२६ क—बादर वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट अवगाहना दश सौ (एक हजार) योजन की है।

ख—जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना दश सौ (एक हजार) योजन की है।

---

१ सबका समान प्रमाण है।

७. सहसात्कार प्रतिषेवना—अकस्मात् दोष लग जाने से।[1]

८. भयप्रतिषेवना—राजा चोर आदि के भय से।[2]

९. प्रद्वेषप्रतिषेवना—क्रोधादि कषाय की प्रबलता से।

१०. विमर्श प्रतिषेवना—शिष्यादि की परीक्षा के हेतु[3]

ख—आलोचना के दश दोष है,

यथा—१. अनुकम्पा उत्पन्न करके आलोचना करे—आलोचना लेने के पहले गुरु महाराज की सेवा इस सवल्प से करे कि ये मेरी सेवा से प्रसन्न होकर मेरे पर अनुकम्पा करके कुछ कम प्रायश्चित्त देंगे।

२. अनुमान करके आलोचना करे—ये आचार्यादि मृत्यु दण्ड देने वाले है या कठोर दण्ड देने वाले हैं

---

१ [क] देखे बिना पैर धरदे पश्चात् देखने पर जीवों की विराधना होती हुयी देखे किन्तु पीछे न लौटे।

[ख] पात्र में सहसा कोई सदोष आहार डाल दे बाद में दोष जानने पर भी उस आहार को न त्यागे।

२ सिंह आदि श्वापद तथा सर्पादि उरग जीवो के भय से वृक्षादि पर चढ़ने से।

३ सचित्त पृथ्वी आदि के स्पर्श से।

ख—अस्तिनास्ति प्रवादपूर्व के दश चूल वस्तु (लघु अध्ययन) हैं।

७३३ क—प्रतिषेवना (प्राणातिपात आदि पापो का सेवन) दश प्रकार की है।

यथा—१ दर्प प्रतिषेवना—दर्पपूर्वक दौड़ने या वध्यादि कर्म करने से।

२. प्रमाद प्रतिषेवना—हास्य विकथा आदि प्रमाद से[1]

३. अनाभोग प्रतिषेवना—असावधानी से।

४. आतुर प्रतिषेवना—स्वय की या अन्य की चिकित्सा हेतु[2]

५ आपत्ति प्रतिषेवना—विपद्ग्रस्त होने से[3]

६. शंकित प्रतिषेवना—शुद्ध आहारादि मे अशुद्ध की शका होने पर भी ग्रहण करने से।

---

१ करने योग्य कार्य के करने मे प्रयत्न न करना प्रमाद है।

२ भूख, प्यास या व्याधि से पीड़ित होकर दोष सेवन करना।

३ द्रव्यादि भेद से चार प्रकार की विपत्ति है—

द्रव्य विपत्ति—प्राशुक द्रव्य की दुर्लभता,

क्षेत्र विपत्ति—मार्ग में गिरना,

काल विपत्ति—दुर्भिक्ष आदि,

भाव विपत्ति—ग्लानि होना।

७. उच्च स्वर से आलोचना करे—केवल गीतार्थ ही सुन सके ऐसे स्वर से आलोचना करनी चाहिये किन्तु उच्च स्वर से बोलकर अगीतार्थ को भी सुनावे।

८. अनेक के समीप आलोचना करे—दोष की आलोचना एक के पास ही करनी चाहिये, किन्तु जिन दोषो की आलोचना पहले कर चुका है उन्ही दोषो की आलोचना दूसरो के पास करे।

९. अगीतार्थ के पास आलोचना करे—आलोचना गीतार्थ के पास ही करनी चाहिये किन्तु ऐसा न करके अगीतार्थ के पास आलोचना करे।

१०. दोपसेवी के पास आलोचना करे—मैंने जिस दोप का सेवन किया है उसी दोप का सेवन गुरुजी ने भी किया है अत मैं उन्ही के पास आलोचना करूं—क्योकि ऐसा करने से वे कुछ कम प्रायश्चित्त देगे।

ग—दश स्थान (गुण) सम्पन्न अणगार (आचार्यादि) अपने दोषो की आलोचना करता है,

यथा—१. जातिसम्पन्न, २. कुलसम्पन्न शेष ३-६ अष्टम स्थानक समान यावत् ७. क्षमाशील, ८. दमनशील, ९. अमायी, १०. अपश्चात्तापी (आलोचना प्रायश्चित्त) लेने के पश्चात् पश्चात्ताप न करने वाला।

यह अनुमान से जानकर मृदु दण्ड मिलने की आशा से आलोचना करे।

३. मेरा दोष इन्होने देख लिया है ऐसा जानकर आलोचना करे—आचार्यादि ने मेरा यह दोषसेवन देख तो लिया ही है अव इसे छिपा नही सकता अत. मैं स्वयं इनके समीप जाकर अपने दोप की आलोचना करलूं इससे ये मेरे पर प्रसन्न होंगे—ऐमा सोच कर आलोचना करे किन्तु दोप सेवी को ऐसा अनुभव हो कि आचार्यादि ने मेरा दोप सेवन देखा नही है है, ऐसा विचार करके आलोचना न करे अतः यह दृष्ट दोष है।

४. स्थूल दोष की आलोचना करे—अपने वडे दोष की आलोचना इस आशय से करे कि यह कितना सत्यवादी हैं ऐसी प्रतीति कराने के लिये वडे दोष की आलोचना करे।

५. सूक्ष्म दोष की आलोचना करे—यह छोटे-छोटे दोपो की आलोचना करता है तो वडे दोपो की आलोचना करने मे तो सन्देह ही क्या है ऐसी प्रतीति कराने के लिए सूक्ष्म दोपो की आलोचना करे।

६. प्रच्छन्न रूप से आलोचना करे—आचार्यादि सुन न सके ऐसे धीमे स्वर से आलोचना करे अतः आलोचना नही करी ऐसा कोई न कह सके।

१०. पारंचिकार्ह—गृहस्थ के कपडे पहनाकर जो प्रायश्चित्त दिया जाय।

७३४ —मिथ्यात्व दश प्रकार का है, यथा—

१. अधर्म मे धर्म की बुद्धि,

२. धर्म मे अधर्म की बुद्धि,

३. उन्मार्ग मे मार्ग की बुद्धि,

४. मार्ग मे उन्मार्ग की बुद्धि,

५. अजीव मे जीव की बुद्धि,

६. जीव मे अजीव की बुद्धि,

७. असाधु मे साधु की बुद्धि,

८. साधु मे असाधु की बुद्धि,

९. अमूर्त मे मूर्त की बुद्धि,

१०. मूर्त मे अमूर्त की बुद्धि।

७३५ क—चन्द्रप्रभ अर्हन्त दश लाख पूर्व का पूर्णायु भोग कर सिद्ध यावत् मुक्त हुए।

ख—धर्मनाथ अर्हन्त दश लाख वर्ष का पूर्णायु भोगकर सिद्ध यावत् मुक्त हुए।

ग—नमिनाथ अर्हन्त दश हजार वर्ष का पूर्णायु भोगकर सिद्ध यावत् मुक्त हुए।

घ—पुरुषसिंह वासुदेव दश लाख वर्ष का पूर्णायु भोगकर छट्ठी तमा पृथ्वी में नैरयिक रूप मे उत्पन्न हुए।

घ—दश स्थान (गुण) सम्पन्न अणगार आलोचना सुनने योग्य होता है।

यथा—१. आचारवान्

२. अवधारणावान्

३. व्यवहारवान्[1]

४. अल्पव्रीडक—आलोचक की लज्जा दूर कराने वाला, जिससे आलोचक सुखपूर्वक आलोचना कर सके।

५. शुद्धि करने मे समर्थ,

६. आलोचक की शक्ति के अनुसार प्रायश्चित्त देने वाले,

७. आलोचक के दोप दूसरो को न कहने वाला,

८. दोप सेवन से अनिष्ट होता है ऐसा समझा सकने वाला,

९. प्रियधर्मी,

१०. दृढधर्मी।

ङ—प्रायश्चित्त दश प्रकार का है,

यथा—१. आलोचना योग्य, यावत् २-९-अनवस्थाप्यार्ह—जिस दोप की शुद्धि साधु को अमुक समय तक व्रतरहित रखकर पुन. व्रतारोपण रूप प्रायश्चित्त से हो।

---

१ आगमादि पांच व्यवहारो का ज्ञाता।

ङ—अनुत्तरोपपातिक दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१. ऋषिदास, २. धन्ना, ३. सुनक्षत्र. ४. कार्तिक, ५. संस्थान, ६. शालिभद्र, ७. आनन्द, ८. तेतली, ९. दशार्णभद्र, १०. अतिमुक्त[1]।

च—आचार दशा (दशा श्रुतस्कंध) के दस अध्ययन हैं,

यथा—१. बीस असमाधि स्थान, २. इक्कीस शबल दोष, ३. तेतीस आशातना, ४. आठ गणिसम्पदा, ५. दस चित्त समाधि स्थान, ६. इग्यारह श्रावक प्रतिमा, ७. बारह भिक्षु प्रतिमा, ८. पर्युषण कल्प, ९. तीस मोहनीय स्थान, १०. आजातिस्थान।[2]

छ—प्रश्न व्याकरण दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१. उपमा. २. संख्या, ३. ऋषि भाषित, ४. आचार्य भाषित, ५. महावीर भाषित, ६. क्षौमिक प्रश्न, ७. कोमल प्रश्न, ८. आदर्श प्रश्न, ९. अगुष्ठ प्रश्न, १०. वाहु प्रश्न।[3]

ज—बन्ध दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१. बन्ध २ मोक्ष, ३. देवर्धि, ४. दशार-

---

१ वर्तमान में उपलब्ध अनुत्तरोपपातिक दशा के दस अध्ययनो में कुछ अध्ययन तो ये ही हैं और कुछ अध्ययन भिन्न हैं।

२ सम्मूर्छन, गर्भ और उपपात से जन्म स्थान।

३ वर्तमान में उपलब्ध प्रश्न व्याकरण में ये दस अध्ययन नहीं है किन्तु पाँच आश्रव द्वार और पांच संवर द्वार हैं।

ख—इन्ही दस पदार्थो को सर्वज्ञ सर्वदर्शी पूर्ण रूप से जानते हैं और देखते हैं।

७५५ क—दशा दस है,

यथा—१. कर्मविपाक दशा, २. उपासक दशा, ३. अतकृद् दशा, ४. अनुत्तरोपपातिकदशा, ५. आचार दशा, ६. प्रश्नव्याकरण दशा, ७. बंध दशा, ८. दोग्रद्धि दशा, ६ दीर्घ दशा, १० संक्षेपित दिशा।

ख—कर्म विपाक दशा के दस अध्ययन है,

यथा—१. मृगापुत्र, २. गोत्रास, ३. अण्ड, ४. शकट, ५. ब्राह्मण. ६ नदिमेण, ७ सौरिक, ८. उदुंबर, ६. सहसोदाह—आमरक, १० लिच्छवी कुमार।

ग—उपासक दशा के दस अध्ययन है,

यथा—१. आनन्द, २. कामदेव, ३. चुलिनीपिता, ४. सुरादेव, ५. चुल्लशतक, ६. कुण्डकोलिक, ७. शकडालपुत्र, ८ महाशतक, ६. नदिनीपिता, १०. सालेयिका पिता।

घ—अन्तकृद्दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१. नमि, २. मातग, ३. सोमिल, ४. रामगुप्त, ५. सुदर्शन, ६. जमाली, ७. भगाली, ८. किंकर्म, ६. पल्यक, १०. अंबडपुत्र[1]।

---

१ क—मूल पाठ में 'फाल" नाम अधिक हैं।

ख—वर्तमान में उपलब्ध अन्तकृद्दशा के दस अध्ययन इन अध्ययनो से भिन्न हैं।

प्रविभक्ति, ३. अग चूलिका, ४. वर्ग चूलिका, ५. विवाह चूलिका, ६. अरुणोपपात, ७. वरुणोपपात, ८. गरुलोपपात, ९. वेलंधरोपपात, १०. वैश्रमणोपपात[1]।

७५६ क—दस सागरोपम क्रोडाक्रोडी प्रमाण उत्सर्पिणी काल है।
ख—दस सागरोपम क्रोडा-क्रोडी प्रमाण अवसर्पिणी काल है।

दण्डक सूत्र

७५७ क—नैरयिक दस प्रकार के है,
यथा—१. अनन्तरोपपन्नक,
२. परंपरोपन्नक,
३. अनन्तरावगाढ,
४. परंपरावगाढ,
५. अनन्तराहारक,
६. परपराहारक.
७. अनन्तर पर्याप्त,
८. परम्परा पर्याप्त,
९. चरिम, १०. अचरिम।

इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त सभी दस प्रकार के है।
ख—चौथी पंक प्रभा पृथ्वी मे दस लाख नरकावास हैं।

---

१ यह अंग उपलब्ध नहीं हैं।

मंडलिक, ५. आचार्य विप्रतिपत्ति, ६. उपाध्याय विप्रति पत्ति, ७. भावना, ८. विमुक्ति, ९. शास्वत, १०. कर्म[1]।

झ—द्विगृद्धि दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१. वात, २. विवात, ३. उपपात, ४. सुक्षेत्र कृष्ण[2] ५. बियालीस स्वप्न, ६. तीस महास्वप्न, ७ वहत्तर स्वप्न, ८. हार, ९. राम, १०. गुप्त[3]।

ञ—दीर्घ दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१. चन्द्र, २. सूर्य, ३. शुक्र, ४. श्री देवी, ५. प्रभावती, ६. द्वीप समुद्रोपपत्ति, ७. वहुपुत्रिका, ८. मंदर ९. स्थविर सभूत विजय, १०. स्थविर पद्म उश्वास निश्वास[4]।

ट—संक्षेपिक दशा के दस अध्ययन हैं,

१. क्षुल्लिका विमान प्रविभक्ति, २. महती विमान

---

१ यह आगम उपलब्ध नहीं है।

२ यह आगम उपलब्ध नहीं है।

३ क—प्राचीन प्रतियों में सुक्षेत्र और कृष्ण भिन्न-भिन्न नाम हैं किन्तु आगमोदय समिति की प्रति मे सुक्षेत्र कृष्ण एक नाम हैं।

ख—प्राचीन प्रतियो में "रामगुप्त" एक नाम है किन्तु आगमोदय समिति की प्रति में भिन्न-भिन्न नाम हैं।

४ यह अग उपलब्ध नही हैं।

२ दृष्टिसंपन्नता—सम्यग्दृष्टि होना।

३. योगवाहिता—तप का अनुष्ठान करना।

४. क्षमा—क्षमा धारण करना।

५. जितेन्द्रियता—इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना।

६. अमायिता—कपट रहित होना।

७. अपार्श्वस्थता—शिथिलाचारी न होना।

८. सुश्रामण्यता—सुसाधुता।

९. प्रवचनवात्सल्य—द्वादशाङ्ग अथवा संघ का हित करना।

१०. प्रवचनोद्‌भावना—प्रवचन की प्रभावना करना।

७५९ —आशंसा प्रयोग[1] दश प्रकार के हैं,

यथा—१. इहलोक आशंसा प्रयोग—मैं अपने तप के प्रभाव से चक्रवर्ती आदि होऊं।

२. परलोक आशंसा प्रयोग—मैं अपने तप के प्रभाव से इन्द्र अथवा सामान्य देव बनूं,

३. उभयलोक आशंसा प्रयोग—मैं अपने तप के प्रभाव से इस भव मे चक्रवर्ती बनूं और परभव मे इन्द्र बनूं।

४. जीवित आशंसा प्रयोग—मैं चिरकाल तक जीवूं,

५. मरण आशंसा प्रयोग—मेरी मृत्यु शीघ्र हो,

६. काम आशंसा प्रयोग—मनोज्ञ शब्द आदि मुझे

---

१ आशंसा प्रयोग-आशा करना अर्थात नियाणा करना।

ग—रत्नप्रभा पृथ्वी मे नैरयिको की जघन्य स्थिति, दम हजार वर्ष की है।

घ—चौथी पंक प्रभा पृथ्वी मे नैरयिको की उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की है।

ङ—पाँचवी घूम प्रभा पृथ्वी मे नैरयिको की जघन्य स्थिति दस सागरोपम की है।

च—असुरकुमारो की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है। इसी प्रकार स्तनित कुमार पर्यन्त दम हजार वर्ष की स्थिति है।

छ—वादर वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट स्थिति दस हजार वर्ष की है।

ज—वाणव्यन्तर देवो की जघन्यस्थिति दस हजार वर्ष की है।

झ—ब्रह्मलोककल्प मे देवो की उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की है।

ञ—लातककल्प मे देवो की जघन्य स्थिति दशसागरोपम की है।

७५८ —दस कारणो से जीव अगामी भव मे भद्रकारक कर्म करता है।

यथा—१. अनिदानता—धर्माचरण के फल की अभिलाषा न करना।

५. ओरस—जिस पर पुत्र जैसा स्नेह हो,
६. मौखर—किसी को प्रसन्न रखने के लिए अपने आपको पुत्र कहने वाला,
७. शौंडीर—जो शौर्य से किसी शूर पुरुष के पुत्र रूप मे स्वीकार किया जाय,
८. सर्वधित—जो पाल पोप कर बडा किया जाय,
९. औपयाचितक—देवता की आराधना से उत्पन्न पुत्र,
१०. धर्मान्तिवासी—धर्माराधना के लिए समीप रहने वाला।

७६३ —केवली के दश उत्कृष्ट है,
यथा—१. उत्कृष्ट ज्ञान, २. उत्कृष्ट दर्शन, ३. उत्कृष्ट चारित्र, ४. उत्कृष्ट तप, ५. उत्कृष्ट वीर्य, ६. उत्कृष्ट क्षमा, ७. उत्कृष्ट निर्लोभता, ८. उत्कृष्ट सरलता, ९. उत्कृष्ट कोमलता, १०. उत्कृष्ट लघुता।

७६४ —समय क्षत्र मे दश कुरुक्षेत्र है,
यथा—(क) पाच देव कुरु, पांच उत्तर कुरु,
(ख) इन दश कुरु क्षेत्रो मे दश महावृक्ष हैं।
यथा—१. जम्बू सुदर्शन, २. धातकी वृक्ष, ३. महाधातकी वृक्ष, ४. पद्म वृक्ष, ५. महा पद्म वृक्ष, ६-१० कूटशाल्मली वृक्ष।

प्राप्त हो,

७. भोग आशंसा प्रयोग—मनोज्ञ गध आदि मुझे प्राप्त हो,

८. लाभ आशसा प्रयोग—कीर्ति आदि प्राप्त हो,

९. पूजा आशसा प्रयोग—पुष्पादि से मेरी पूजा हो,

१०. सत्कार आशंसा प्रयोग—श्रेष्ठ वस्त्रादि से मेरा सत्कार हो।

७६० —धर्म दश प्रकार के हैं,

यथा—१. ग्राम धर्म, २. नगर धर्म, ३. राष्ट्र धर्म, ४. पाषंड धर्म, ५. कुल धर्म, ६. गण धर्म, ७. संघ धर्म, ८. श्रुत धर्म, ९. चारित्र धर्म, १०. अस्तिकाय धर्म।

७६१ —स्थविर दश प्रकार के हैं,

यथा—१. ग्राम स्थविर, २. नगर स्थविर, ३. राष्ट्र स्थविर, ४. प्रशास्तृ स्थविर, ५. कुल स्थविर, ६. गण स्थविर, ७. सघ स्थविर, ८. जाति स्थविर, ९ श्रुत स्थविर, १०. पर्याय स्थविर।

७६२ —पुत्र दश प्रकार के हैं,

यथा—१. आत्मज—पिता से उत्पन्न,

२. क्षेत्रज—माता से उत्पन्न किन्तु पिता के वीर्य से उत्पन्न न होकर अन्य पुरुष के वीर्य से उत्पन्न,

३. दत्तक—गोद लिया हुआ पुत्र,

४. विनयित शिष्य—पढाया हुआ,

५. ज्योतिरंग—सूर्य और चन्द्र के समान प्रकाश देने वाले,

६. चित्राग—विचित्र पुष्प (माला) देने वाले,

७. चित्र रसाग—विविध प्रकार के भोजन देने वाले,

८. मण्यग—मणि, रत्न आदि आभूषण देने वाले,

९. गृहाकार—घर के समान स्थान देने वाले,

१०. अनग्न—वस्त्रादि की पूर्ति करने वाले।

७६७ क—जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र मे अतीत उत्सर्पिणी मे दश कुलकर थे,

यथा—१. शतजल, २. शतायु, ३. अनन्तसेन, ४. अमितसेन, ५. तर्क सेन, ६. भीमसेन, ७. महा भीमसेन, ८. दृढरथ, ९. दशरथ, १०. शतरथ।

ख—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे आगामी उत्सर्पिणी मे दश कुलकर होगे,

यथा—१. सीमंकर, २. सीमंधर, ३. खेमंकर, ४. खेमंधर, ५. विमलवाहन, ६. समति, ७. प्रतिश्रुत ८. दृढधनु, ९. दश धनु, १०. शत धनु।

७६८ क—जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व मे शीता महानदी के दोनो किनारो पर दश वक्षस्कार पर्वत है,

यथा—१. माल्यवन्त, २. चित्रकूट, ३. विचित्रकूट, ४. ब्रह्मकूट, ५-१० यावत् सोमनस।

ग—इन दश कुरु क्षेत्रो मे दश महर्धिक देव रहते है,
यथा—१. जम्बूद्वीप का अधिपतिदेव-अनाहृत, २ सुदर्शन, ३. प्रिय दर्शन, ४. पौंडरिक, ५. महा पौंडरिक, ६-१० पाच गरुड (वेणुदेव) देव हैं।

७६५ क—दश लक्षणो से पूर्ण दुषम काल जाना जाता है,
यथा—१. अकाल (चौमासे के अतिरिक्त काल) मे वर्षा हो,
२. काल (चातुर्मास) मे वर्षा न हो,
३. असाधु की पूजा हो, ४. साधु की पूजा न हो,
५. माता पिता आदि का विनय न करे,
६-१०. अमनोज्ञ शब्द यावत् स्पर्श।

ख—दश कारणो मे पूर्ण सुषमकाल जाना जाता है,
यथा—१ अकाल मे वर्षा न हो, शेष पूर्व कथित से विपरीत यावत् मनोज्ञ स्पर्श।

७६६ —सुषम-सुषम काल मे दश कल्पवृक्ष युगलियाओ के उपभोग के लिए शीघ्र उत्पन्न होते हैं।
यथा—१. मत्तागक—स्वादु पेय की पूर्ति करने वाले,
२ भृतांग—अनेक प्रकार के भाजनो की पूर्ति करने वाले,
३. तूर्यांग—वाद्यो की पूर्ति करने वाले,
४. दीपांग—सूर्य के अभाव मे दीपक के समान प्रकाश देने वाले,

ख—सर्व जीव दश प्रकार के है,

यथा—१-५ पृथ्वीकाय यावत् वनस्पतिकाय, ६-६ वेइन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय, १०. अनिन्द्रिय।

ग—सर्व जीव दश प्रकार के हैं,

यथा—१. प्रथम समयोत्पन्न नैरयिक,

२. अप्रथम समयोत्पन्न नैरयिक,

३-८ अप्रथम समयोत्पन्न देव,

६. प्रथम समयोत्पन्न सिद्ध,

१०. अप्रथमसमयोत्पन्न सिद्ध।

७७२ —सौ वर्ष की आयु वाले पुरुष की दशा दशाये हैं,

यथा—१. बाला दशा, २. क्रीडा. दशा, ३. मंद दशा, ४. बला दशा, ५. प्रज्ञा दशा, ६. हायनी दशा, ७. प्रपंचा दशा, ८. प्रभारा दशा, ६. मुंमुखी दशा, १०. शायनी दशा[1]।

७७३ —तृण वनस्पतिकाय दस प्रकार का है,

यथा—१. मूल, २. कद, यावत्—३-८ पुष्प ६ फल, १०. बीज।

७७४ क—विद्याधरो की श्रेणियाँ चारो ओर से दस-दस योजन चौडी है।

ख—अभियोगिक देवों की श्रेणियाँ चारों ओर से दस-दस योजन चौडी है।

---

१ प्रत्येक दशा दश वर्ष की होती है।

ख—जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम में शीतोदा महा-
नदी के दोनों किनारों पर दश वक्षस्कार पर्वत हैं,
यथा—विद्युत्प्रभ यावत् गंधमादन ।

ग-च—इसी प्रकार धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध में भी दश वक्षस्कार पर्वत हैं यावत् पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध में भी दश वक्षस्कार पर्वत हैं ।

७६९ क—दश कल्प इन्द्र वाले हैं,
यथा—१-८ सौधर्म यावत् सहस्रार, ९. प्राणत, १०. अच्युत ।

ख—इन दश कल्पों में दश इन्द्र हैं,
यथा—१ शक्रेन्द्र, २. ईशानेन्द्र, ३-१० यावत् अच्युतेन्द्र ।

ग—इन दश इन्द्रों के दश पारियानिक विमान हैं ।
यथा—१. पालक, २. पुष्पक यावत्, ३-९ विमलवर, १०. सर्वतोभद्र ।

७७० —दशमिका भिक्षु प्रतिमा की एक सौ दिन से और ५५० भिक्षा (दत्ति) से सूत्रानुसार यावत् आराधना होती है ।

७७१ क—संसारी जीव दश प्रकार के हैं,
यथा—१. प्रथमसमयोत्पन्न एकेन्द्रिय,
२. अप्रथमसमयोत्पन्न एकेन्द्रिय,
३-१० यावत् अप्रथम समयोत्पन्न पंचेन्द्रिय

७. इसी प्रकार श्रमण—ब्राह्मण जब तेजोलेश्या छोड़ता है तो आशातना करने वाले के शरीर पर छाले पडकर फूट जाते है, पश्चात् छोटे-छोटे छाले पैदा होकर भी फूट जाते है तब वह भस्म हो जाता है।

८. इसी प्रकार देवता जब तेजोलेश्या छोड़ता है तो आशातना करने वाला पूर्ववत् भस्म हो जाता है।

९. इसी प्रकार देवता और श्रमण—ब्रह्मण जब एक साथ तेजोलेश्या छोड़ता है तो आशातना करने वाला पूर्ववत् भस्म हो जाता है।

१०. कोई तेजोलेश्या वाला किसी श्रमण की आशातना करने के लिये उस पर तेजोलेश्या छोड़ता है वह उसका कुछ भी अनर्थ नही कर सकती हैं वह तेजोलेश्या इधर से उधर ऊँची नीची होती हैं और उस श्रमण के चारो ओर घूमकर आकाश मे उछलती है और वह तेजोलेश्या छोड़ने वाले की ओर मुडकर उसे ही भस्म कर देती है जिस प्रकार गोशालक की तेजोलेश्या से गोशालक ही मरा किन्तु भगवान महावीर का कुछ भी नही बिगड़ा।

७७ —आश्चर्य दस प्रकार के है,

यथा—१. उपसर्ग—भगवान महावीर की केवली अवस्था मे भी गोशालक ने उपसर्ग किया।

२. गर्भहरण—हरिण गमेषी देव ने भगवान महावीर

१५ —ग्रैवेयक देवो के विमान दस योजन के ऊँचे है।

१६ —दस कारणो से तेजोलेश्या से भस्म होता है।

यथा—१. तेजोलेश्या लब्धि युक्त श्रमण—ब्राह्मण की यदि कोई आशातना करता है तो वह आशातना करने वाले पर कुपित होकर तेजोलेश्या छोडता है इससे वह पीडित होकर भस्म हो जाता है।

२. इसी प्रकार श्रमण ब्राह्मण की आशातना होती देखकर कोई देवता कुपित होता है और तेजोलेश्या छोडकर आशातना करने वाले को भस्म कर देता है।

३. इसी प्रकार श्रमण—ब्राह्मण की आशातना करने वाले को देवता और श्रमण-ब्राह्मण एक साथ तेजोलेश्या छोडकर भस्म कर देता है।

४. इसी प्रकार श्रमण—ब्राह्मण जब तेजोलेश्या छोडता है तो आशातना करने वाले के शरीर पर छाले पड जाते हैं, छालो के फूट जाने पर वह भस्म हो जाता है।

५. इसी प्रकार देवता तेजोलेश्या छोडता है तो आशातना करने वाला उसी प्रकार (पूर्ववत्) भस्म हो जाता है,

६. इसी प्रकार देवता और श्रमण—ब्राह्मण एक साथ तेजोलेश्या छोड़ते हैं तो आशातना करने वाला उसी प्रकार (पूर्ववत्) भस्म हो जाता है।

१०. असंयत पूजा—आरम्भ और परिग्रह के धारण करगे वाले ब्राह्मणो की साधुओ के समान पूजा हुई ।[1]

७८ क—इस रत्नप्रभा पृथ्वी का रत्नकाण्ड दस सौ (एक हजार) योजन का चौडा है ।

ख—इस रत्नप्रभा पृथ्वी का वज्र काण्ड दस सौ (एक हजार) योजन का चौडा है ।

ग—इसी प्रकार—३. वैडूर्य काण्ड, ४. लोहिताक्ष काण्ड, ५. मसारगल्ल काण्ड, ६. हंसगर्भ काण्ड, ७. पुलक काण्ड, ८. सौगंधिक काण्ड, ९. ज्योतिरस काण्ड, १०. अजन काण्ड, ११. अजन पुलक काण्ड, १२. रजत काण्ड, १३. जलातरूप काण्ड, १४. अक काण्ड, १५. स्फटिक काण्ड, १६. रिष्ट काण्ड ये सब रत्न काण्ड के समान दस मौ (एक हजार) योजन के चौडे है ।

७९ क—सभी द्वीप समुद्र दस सौ (एक हजार) योजन के गहरे है ।

ख—सभी महाद्रह दस योजन गहरे हैं ।

ग—सभी सलिल कुण्ड (प्रताप कुण्ड-प्रभव-कुण्ड) दम योजन गहरे है ।

---

1. ये दस आश्चर्य अनन्त काल के पश्चात् इस हुंडा अवसर्पिणी में हुये ।

के गर्भ को देवानन्दा की कुक्षी से लेकर त्रिशला माता की कुक्षी में स्थापित किया।

३. स्त्री तीर्थङ्कर—भगवान मल्लीनाथ स्त्रीलिङ्ग (वेद) मे तीर्थङ्कर हुए।

४. अभावित परिषदा—केवल ज्ञान प्राप्त हो जाने के पश्चात् भगवान महावीर की देशना निष्फल गई किसी ने धर्म स्वीकार नही किया।

५. कृष्ण का अपरकंका गमन, कृष्ण वासुदेव द्रौपदी को लाने के लिए अपरकका नगरी गये।

६ चन्द्र-सूर्य का आगमन—कोशाम्बि नगरी में भगवान महावीर की वन्दना के लिए शास्वत विमान सहित चन्द्र-सूर्य आये।

७. हरिवंश कुलोत्पत्ति—हरिवर्ष क्षेत्र के युगलिये का भरत क्षेत्र मे आगमन हुआ और उसमे हरिवंश कुल की उत्पत्ति हुई। युगलिये का निरुपक्रम आयु घटा और उसकी नरक में उत्पत्ति हुई।

८. चमरोत्पात—चमरेन्द्र का सौधर्म देवलोक में जाना।

९. एक सौ आठ सिद्ध—उत्कृष्ट अवगाहना वाले एक समय मे एक सौ आठ सिद्ध हुए[1]।

---

१ मध्यम अवगाहना वाले तो एक सौ आठ सिद्ध होते है, किन्तु उत्कृष्ट अवगाहना वाले केवल दो ही सिद्ध होते हैं।

यावत्—अप्रथमसमयोत्पन्न पंचेन्द्रिय द्वारा निर्वतित पुद्गल जीवो ने पाप कर्मरूप मे ग्रहण किये, ग्रहण करते है और ग्रहण करेंगे।

इसी प्रकार चय, उपचय, बन्ध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा के तीन-तीन विकल्प कहने चाहिए।

छ—दस प्रादेशिक स्कन्ध अनन्त है।

ज—दस प्रदेशावगाढ़ पुदगल अनन्त है।

झ—दस समय की स्थिति वाले पुद्गल अनन्त है।

ञ-ट—दस गुण वाले पुद्गल अनन्त हैं।

इसी प्रकार वर्ण, गध, रस और स्पर्श से यावत्—दस गुण रूक्ष पुद्गल अनन्त हैं।

दशवां अध्ययन समाप्त

स्थानाङ्ग समाप्त



घ—शीता और शीतोदा नदी के मूल मुख दस-दस योजन गहरे हैं।

७८० क—कृत्तिका नक्षत्र चन्द्र के सर्व बाह्य मण्डल से दसवें मण्डल मे भ्रमण करता है[1]।

ख—अनुराधा नक्षत्र चन्द्र के सर्व आभ्यन्तर मण्डल से दसवें मण्डल मे भ्रमण करता है[2]।

७८१ ज्ञान की वृद्धि करने वाले दस नक्षत्र है,

यथा—१. मृगशिरा, २. आर्द्रा, ३. पुष्य, ४-६. तीन पूर्वा[3], ७. मूल, ८ अश्लेषा, ९. हस्त, १०. चित्रा।

७८२ क—चतुष्पद स्थलचर तिर्यञ्च पचेन्द्रियो की दस लाख कुल कोटी है।

ख—उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रियों की दस लाख कुल कोटी है।

७८३ क-च—दस स्थानो मे बद्ध पुद्गल जीवो ने पाप कर्म रूप मे ग्रहण किये, ग्रहण करते हैं और ग्रहण करेंगे।

यथा—प्रथम समयोत्पन्न एकेन्द्रिय द्वारा निर्वर्तित

---

१ कृत्तिका नक्षत्र चन्द्र के सर्व आभ्यन्तर मण्डल से छठे मण्डल मे भ्रमण करता है।

२ अनुराधा नक्षत्र चन्द्र के सर्व बाह्य मण्डल से छठे मण्डल मे भ्रमण करता है।

३ पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी।

परिशिष्ट

अनुयोग वर्गीकरण तालिका

(१)

एक स्थान सूत्र १-५६ (सूत्र ५६)

उत्थानिका सूत्र १

(१) द्रव्यानुयोग—

२।७, ८, ९, १०-३८।४१-४७।५०-५१।५४।५६।—योग-४१

(२) चरणानुयोग—

३, ४।२१।३९, ४०।४८, ४९।—योग ७

(३) गणितानुयोग—

५, ६।५२।५५।—योग ४

(४) धर्मकथानुयोग—

५३।—योग १

(२)

द्वि स्थानक-प्रथम उद्देशक सूत्र ५७-७६ (सूत्र २०)

(१) द्रव्यानुयोग—

५७, ५८, ५९।६७,६८।७०,७१।७३,७४,७५।—योग १०

(२) चरणानुयोग—

६०-६६।६९।७२।७६।—योग १०

परिशिष्ट १

अनुयोग वर्गीकरण

द्रव्यानुयोग के सूत्र	४२६
चरणानुयोग के सूत्र	२१४
गणितानुयोग के सूत्र	१०६
धर्म कथानुयोग के सूत्र	५१
	योग ८००[1]

१ स्थानाग के मूल सूत्र ७८३ हैं किन्तु इस अनुयोग वर्गीकरण परिशिष्ट मे वर्गीकृत सूत्रों का योग ८०० हुआ है। इस अन्तर का कारण यह है कि अनुयोग वर्गीकरण तालिका क्रमांक ६, ८, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६ मे एक मूल सूत्र के अन्तर्गत जितने सूत्र हैं उनका अनुयोग के अनुसार विभाजन करके दिये हैं। विस्तृत जानकारी के लिये तालिकाओ के टिप्पण देखें।

(३) गणितानुयोग—

१०३।११०,१११ ।–योग ३

(४) धर्मकथानुयोग—

१०८।११२ ।–योग २

(६)

त्रिस्थान-प्रथम उद्देशक सूत्र ११६-१५२ (सूत्र ३४)[1]

(१) द्रव्यानुयोग—

११६[2]-१२५।१२८[3]-१३३।१३७-१४१।१४३[4]-१४७।—

---

१ यहां सूत्र संख्या ३४ है और चारो अनुयोग के सूत्रो क योग ३९ होता है। इस अन्तर का कारण यह है कि एक सूत्र के अन्तर्गत सूत्रो मे से कुछ सूत्र एक अनुयोग के होते है और कुछ सूत्र दूसरे अनुयोग के होते हैं, अतः एक ही सूत्रांक अनुयोग भेद से कई वार गिना जाता है। आगे भी ऐसा ही समझें।

२ सूत्र ११६ के अन्तर्गत ३ सूत्र हैं। इनमे से दो सूत्र प्रथम और अन्तिम द्रव्यानुयोग के हैं और एक मध्यसूत्र चरणा-नुयोग का है।

३ सूत्र १२८ के अन्तर्गत ९ सूत्र है। इनमे से चार सूत्र द्रव्यानुयोग के है। एक सूत्र चरणानुयोग का है और ४ सूत्र धर्मकथानुयोग के है।

४ सूत्र १४३ के अन्तर्गत ३२ सूत्र है। इनमे से अन्तिम २ सूत्र द्रव्यानुयोग के है और ३० सूत्र गणितानुयोग के है।

(३)

द्विस्थानक-द्वितीय उद्देशक सूत्र ७७-८० (सूत्र ४)

(१) द्रव्यानुयोग—
७७-८०।—योग ४

(४)

द्विस्थानक-तृतीय उद्देशक सूत्र ८१-९४ (सूत्र १४)

(१) द्रव्यानुयोग—
८१, ८२, ८३।८५।९४—योग ५

(२) चरणानुयोग—
८४।—योग १

(३) गणितानुयोग—
८६-९३।—योग ८

(५)

द्विस्थानक-चतुर्थ उद्देशक सूत्र ९५-११८ (सूत्र २४)

(१) द्रव्यानुयोग—
९५,९६,९७।९९,१००, १०१।१०४,१०५,१०६।१०९।११३-११८।—योग १६

(२) चरणानुयोग—
९८।१०२।१०७ ।—योग ३

(८)

त्रिस्थान-तृतीय उद्देशक सूत्र १६८-१९० (सूत्र २३

(१) द्रव्यानुयोग—
१७५-१७९।१८१।१८४[1]-१८७।—योग १०

(२) चरणानुयोग—
१६८-१७४।१८२।१८४।१८८।१९०।—योग ११

(३) गणितानुयोग
१८०।१८३।—योग २

(४) धर्मकथानुयोग—
१८९।—योग १

(९)

त्रिस्थान-चतुर्थ उद्देशक सूत्र १९१-२३४ (सूत्र ४४)

(१) द्रव्यानुयोग—
१९२,१९३।१९९,२००।२०७।२०९।२११।२१४,२१५,२१६।
२१९,२२०,२२१।२२४,२२५,२२६।२३२,२३३,२३४।
—योग १९

सूत्र १८४ के अन्तर्गत ३ सूत्र है। उनमे से प्रारम्भ के दो सूत्र चरणानुयोग के है और अन्तिम एक सूत्र द्रव्यानुयोग का है।

१५०[1], १५१।—योग २५

२) चरणानुयोग—

११६।१२६,१२७,१२८।१३५,१३६।१५०।१५२।—योग ८

(३) गणितानुयोग—

१४२,१४३।—योग २

(४) धर्मकथानुयोग—

१२८।१३४।—योग २

(७)

त्रिस्थान-द्वितीय उद्देशक सूत्र १५३-१६७ (सूत्र १५)

(१) द्रव्यानुयोग—

१५४।१५६।१६०।१६२-१६७।—योग ६

(२) चरणानुयोग—

१५५।१५७,१५८,१५६।१६१।—योग ५

(३) गणितानुयोग—

१५३।—योग १

---

१ सूत्र १५० के अन्तर्गत दो सूत्र हैं। इनमे से एक सूत्र द्रव्यानुयोग का है और एक सूत्र चरणानुयोग का है।

(११)

चतु.स्थान द्वितीय उद्देशक मूत्र २७८-३१० (सूत्र ३३

(१) द्रव्यानुयोग

२७९-२८२[1]।२८९[2]।२९१-२९९।३०८।—योग १५

(२) चरणानुयोग

२७८।२८२-२८५।२८७-२९०।२९२[3]।३०९,३१०।—योग १५

(३) गणितानुयोग—

२८६।३००-३०७।—योग ९

(१२)

चतु:स्थान तृतीय उद्देशक मूत्र ३११-३३८ (सूत्र २८)

(१) द्रव्यानुयोग—

३११,३१२,३१३।३१५-३२०[4]।३२३,३२४।३२७[5]।३२९,—

---

१ सूत्र २८२ के अन्तर्गत १० सूत्र हैं। इनमे से प्रारम्भ के ५ सूत्र द्रव्यानुयोग के है और शेप ५ सूत्र चरणानुयोग के हैं।

२ मूत्र २८९ के अन्तर्गत १७ सूत्र है। इनमे से पहला सूत्र चरणानुयोग का है और शेप १६ सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं।

३ सूत्र २९२ के अन्तर्गत ५ मूत्र है। इनमे से पहला सूत्र चरणानुयोग का है और शेप सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं।

४ सूत्र ३२० के अन्तर्गत ७८ मूत्र हैं। इनमे से प्रारम्भ के ५९ सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं और शेप १९ सूत्र चरणानुयोग के हैं।

५ सूत्र ३२७ के अन्तर्गत ३९ मूत्र है। इनमे से प्रारम्भ के १४ सूत्र और एक अन्तिम सूत्र चरणानुयोग के है। मध्य के २४ सूत्र द्रव्यानुयोग के है।

(२) चरणानुयोग—

१९१।१९४,१९५,१९६।२०१,२०२,२०३।२०६।२०८।२१०।
२१२,२१३,२१४।२१७,२१८।२२२,२२३।—योग १७

(३) गणितानुयोग—

१९७,१९८।२०४,२०५।—योग ४

(४) धर्मकथानुयोग—

२२८–२३१।—योग ४

(१०)

चतु स्थान-प्रथम उद्देशक सूत्र २३५-२७७ (सूत्र ४३)

(१) द्रव्यानुयोग—

२३६।२३८-२४२।२४४,२४५।२४८,२४९,२५०।२५२-२६२।
२६४, २६५।२६७-२७१।२७३-२७७।—योग ३४

(२) चरणानुयोग—

२३५।२३७।२४३।२४६,२४७।२५१।२५५[1]।२६३।२६६।२७२
—योग १०

---

१ सूत्र २५५ के अन्तर्गत १४ सूत्र है। उनमे से प्रथम सूत्र द्रव्यानुयोग का है। शेष १३ सूत्र चरणानुयोग के है।

३६१।३६३।३६८,३६९,३७०।३७२।—योग १५

(३) गणितानुयोग—

३८३,३८४।३८६।—योग ३

(४) धर्म कथानुयोग—

३८१,३८२।—योग २

(१४)

पंच स्थान-प्रथम उद्देशक सूत्र ३८९-४११ (सूत्र २३)

(१) द्रव्यानुयोग—

३९०।३९३,३९४,३९५।४०१[1]—४०६।—योग १०

(२) चरणानुयोग—

३८९।३९१,३९२।३९६-४००।४०७,४०८।४०९,—
४१०।—योग १२

(३) गणितानुयोग—

४०१।—योग १

(४) धर्म कथानुयोग—

४११।—योग १

---

१ सूत्र ४०१ के अन्तर्गत २ सूत्र हैं। इनमे से प्रथम सूत्र गणितानुयोग का है और द्वितीय सूत्र द्रव्यानुयोग का है।

३३०।३३२।३३४,३३५,३३६।३३८।—योग १६

(२) चरणानुयोग—

३१४।३२०,३२१।३२५,३२६,३२७।३३१।—योग ७

(३) गणितानुयोग—

३२८।३३३।३३७।—योग ३

(४) धर्मकथानुयोग—

३२२।—योग १

(१३)

चतु. स्थान-चतुर्थ उद्देशक सूत्र ३३९-३८८ (सूत्र ५०)

(१) द्रव्यानुयोग—

३३९-३४५।३४७।३४९,३५०,३५१।३५३।३५६,३५७,३५८।
३६०।३६२।३६४,३६७।३७१।३७३-३८०।३८५।३८७,३८८।
—योग ३३

(२) चरणानुयोग—

३४४[1]।३४६।३४८,३४९[2]।३५२।३५४,३५५।३५९,३६०[3],—

---

१ सूत्र ३४४ मे १५ सूत्र है। इनमे से अन्तिम एक सूत्र द्रव्यानुयोग का है और शेष १४ सूत्र चरणानुयोग के हैं।

२ सूत्र ३४९ में १६ सूत्र हैं। इनमे से प्रारम्भ के ६ सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं। और शेष १० सूत्र चरणानुयोग के है।

३ सूत्र ३६० मे १४ सूत्र हैं। इनमे से ११ वां, १२ वां ये दो सूत्र चरणानुयोग के हैं। शेष १२ सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं।

(२) चरणानुयोग—

४४३[1]।४४५,४४६,४४७।४५३।४५५।४५७।४६५-

४६८।—योग ९

(३) गणितानुयोग—

४५१।४६०।४६९,४७०।४७२, ४७३ ।—योग ६

(१७)

षष्ठ स्थान— सूत्र ४७५-५४० (सूत्र ६६)

(१) द्रव्यानुयोग—

४७८, ४७९, ४८०।४८२।४८३,४८४।४८६,४८७,४८८।

४९०-४९५।४९७।४९९।५०१,५०२।५०४।५०५-५१०।५१२

५१३।५२४, ५२५,५२६।५३२-५३७।५४०।—योग ३८

(२) चरणानुयोग—

४७५, ४७६,४७७।४८५।४८९।४९६।५००।५०१।५११।

५१४।५२१।५२७-५३०।५३८।—योग १६

(३) गणितानुयोग—

४८१।४९८।५१५,५१६,५१७।५२२,५२३।५२९।—योग ८

(४) धर्मकथानुयोग—

५१८, ५१९, ५२०।५३१।—योग ४

---

१ सूत्र ४४३ के अन्तर्गत ३ सूत्र है। इनमे से प्रथम सूत्र द्रव्यानुयोग का है। अन्तिम दो सूत्र चरणानुयोग के है।

(१५)

पंच स्थान-द्वितीय उद्देशक सूत्र ४१२-४४० (सूत्र २६)

(१) द्रव्यानुयोग—
४१६।४१८,४१९।४३१।४३६।—योग ५

(२) चरणानुयोग—
४११-४१५।४१७।४१९[1]—४३०।४३२,४३३।४३७,४३८,
४३९।—योग २३

(३) गणितानुयोग—
४३४।—योग १

(४) धर्म कथानुयोग—
४३५।४४०।—योग २

(१६)

पंच स्थान-तृतीय उद्देशक सूत्र ४४१-४७४ (सूत्र ३४)

(१) द्रव्यानुयोग—
४४१-४४४।४४८,४४९,४५०।४५२।४५४।४५६।४५८-४५९।
४६१।४६४।४६६।४७४।—योग १८

---

१ सूत्र ४१९ के अन्तर्गत ९९ सूत्र है। इनमे से ५ क्रिया सूत्र चरणानुयोग के है। शेप सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं।

(३) गणितानुयोग—

६००।६२३।६२६-६४३।६४८।६५०।६५५,६५६,६५७।

—योग २२

(४) धर्मकथानुयोग—

६१६,६१७।६२०,६२१।६२५,६२६।६५१।६५३।—योग ८

(२०)

नव स्थान सूत्र ६६१-७०३ (सूत्र ४३)

(१) द्रव्यानुयोग—

६६२।६६५-६६८।६७१।६७३।६७५-६७९।६८२,६८३,६८४।

६८६।७००,७०३।—योग २०

(२) चरणानुयोग—

६६१।६६३।६७४।६८१।६८७,६८८।—योग ६

(३) गणितानुयोग—

६६९,६७०।६८५।६८९।६९४,६९५। ६९८,६९९ ।—योग ८

(४) धर्मकथानुयोग—

६६४।६७२।६८०।६९०-६९३। ६९६,६९७।—योग ९

(२१)

दश स्थान सूत्र ७०४-७८३ सूत्र ८०

(१) द्रव्यानुयोग—

७०४-७०८।७१०।७१३।७१६।७२७।७२९।७३१,७३२।७३४।

७३६,७३७।७४०-७४३।७५२,७५३,७५४।७५६,७५७।७६०,

(१८)

सप्त स्थान सूत्र ५४१-५९३ (सूत्र ५३)

(१) द्रव्यानुयोग—

५४२, ५४३।५४७-५५०।५५२,५५३।५५९-५६२।

५६५,५६६,५६७।५६९।५७२-५७९।५८२,५८३।५८६।

५८८।५९१,५९२,५९३।—योग ३१

(२) चरणानुयोग—

५४१।५४४,५४५।५५४।५७०,५७१।५८४,५८५।—योग ८

(३) गणितानुयोग—

५४६।५५५।५८०,५८१।५८९,५९०।—योग ६

(४) धर्मकथानुयोग—

५५१।५५६,५५७,५५८।५६३,५६४।५६८।५८७।—योग ८

(१९)

अष्ट स्थान सूत्र ५९४-६६० (सूत्र ६७)

(१) द्रव्यानुयोग—

५९५,५९६।५९९।६०२।६०६-६१३।६१५।६१९।६२२।६२४।

६२७,६२८।६४४।६४६।६५२।६५४।६५८,६५९,६६०।

—योग २५

(२) चरणानुयोग—

५९४।५९७,५९८।६०१।६०३,६०४,६०५।६१४।६१८।

६४५।६४७।६४९।—योग १२

भगवान महावीर के जीवन प्रसंग

क्रम	स्थान	उद्देशक	सूत्र	वर्णन
१	१		५३	निर्वाण
२	३	४	२२९	युगान्तकृद्भूमि
३	३	४	२३०	चौदहपूर्वीमुनि
४	४	३	३२२	जो श्रमणोपासक देवगति प्राप्त हुए उनकी स्थिति
५	४	४	३८२	वादीमुनि
६	५	१	४११	पंच कल्याण
७	६		५३१	प्रव्रज्या. केवलज्ञान. निर्वाण
८	७		५६८	संघयण. संस्थान. ऊँचाई.
९	७		५८७	प्रवचन निह्नव.
१०	७		५८७	निह्नवो के धर्माचार्य
११	७		५८७	निह्नवो के नगर
१२	८		६२१ ,,	भ० महावीर ने ८ राजाओ को दीक्षा दी.
१३	८		६५३	अनुत्तर विमानो मे उत्पन्न होने वाले भ० महावीर के शिष्य

७६१,७६२।७६५,७६६।७६९।७७२,७७३।७७६।७८१,७८२,
७८३।—योग ३६

(२) चरणानुयोग—

७०९।७११,७१२।७१४,७१५।७३३।७३८,७३९।७४४,७४९।
७५१।७५५।७५८,७५९।७६३।७७०। —योग २०

(३) गणितानुयोग—

७१७।७१९-७२६।७२८।७४७।७६४।७६८।७७४,७७५।७७८,
७७९,७८०।—योग १८

(४) धर्मकथानुयोग—

७१८।७३०।७३५।७५०।७६७।७७७।—योग ६

अनुयोग वर्गीकरण तालिका समाप्त

१४	६	६८०	भ० महावीर के गण
१५	६	६८१	नौकोटी शुद्ध आहार
१६	६	६६१	भ० महावीर के समय मे तीर्थ कर गोत्र बांधने वाले जीव
१७	६	६६२	भ० महावीर ने कहा—ये जीव आगामी उत्सर्पिणी मे तीर्थंकर होगे.
१८	६	६६३	राजा श्रेणिक का वर्णन.
१६	१०	७५०	भ० महावीर के दस महा-स्वप्न.



एक स्थान

मूलसूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
१	०[1]
२-४०	०
४१	३
४२	१८
४३	३
४४	०
४५	२
४६	४
४७	३६
४८	१८
४९	१८
५०	१४
५१	१०८४
५२	०
५३	०
५४	०
५५	३
५६	२२
	योग १२६९

द्वि स्थान प्रथम उद्‌देशक

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
५७	१०
५८	२
५९	४
६०	१६
६१	२
६२	२
६३	०
६४	११
६५	११
६६	११
६७	०
६८	०
६९	२५
७०	७
७१	२३
७२	२५
७३	२८
७४	२
७५	९३
७६	१८
	योग ३१९

१. जहा शून्य है वहां मूलसूत्रांक के अनुसार एक ही सूत्र है किन्तु अन्तर्गत सूत्र भी नही है।

त्रिस्थान प्रथम उद्देशक

मूल सूत्राङ्क	अन्तर्गतसूत्र
११९	३
१२०	३
१२१	१९
१२२	३
१२३	३
१२४	७२
१२५	४
१२६	३३
१२७	४
१२८	९
१२९	१२
१३०	९
१३१	०
१३२	२४
१३३	३
१३४	२१
१३५	०
१३६	०
१३७	१४
१३८	८४
१३९	३६
१४०	२३
१४१	०
१४२	१५
१४३	३२
४४	२
४५	०

१४६	[illegible]
१४७	[illegible]
१४८	[illegible]
१४९	२
१५०	२
१५१	२
१५२	०

योग ४५७

त्रिस्थान द्वितीय उद्देशक

मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गतसूत्र
१५३	३
१५४	३२०
१५५	२४
१५६	४
१५७	४
१५८	२
१५९	२
१६०	२९५
१६१	२
१६२	५
१६३	२९
१६४	२
१६५	८
१६६	०
१६७	०

योग ७०२

द्विस्थान द्वितीय उद्देशक

मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
७७	२४
७८	४८
७९	३६६
८०	४५
	४८३

द्विस्थान तृतीय उद्देशक

मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
८१	६
८२	१७
८३	३०
८४	११
८५	२४
८६	७
८७	१९
८८	२५
८९	१८
९०	१४८
९१	३
९२	४३४
९३	४३४
९४	३४
	योग १२१३

त्रिस्थान चतुर्थ उद्देशक

मूल सूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
९५	७८
९६	५
९७	५
९८	१०
९९	१
१००	४३२
१०१	१४
१०२	९
१०३	३
१०४	४
१०५	८
१०६	३
१०७	३
१०८	४
१०९	०
११०	४
१११	०
११२	०
११३	५
११४	०
११५	०
११६	५
११७	६
११८	२३
	योग ६२७

२१८	३
२१९	०
२२०	३
२२१	१४
२२२	४
२२३	२
२२४	०
२२५	०
२२६	०
२२७	७
२२८	०
२२९	३
२३०	०
२३१	०
२३२	४
२३३	६
२३४	२३

योग २९८

चतुःस्थान प्रथम उद्देशक

मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गतसूत्र
२३५	०
२३६	२६
२३७	०
२३८	०
२३९	१३
२४०	०
२४१	१८
२४२	२
२४३	२
२४४	०
२४५	०
२४६	०
२४७	१३
२४८	२
२४९	४०८
२५०	१०८
२५१	३
२५२	२
२५३	२
२५४	३७
२५५	१४
२५६	३१
२५७	०
२५८	०
२५९	२
२६०	२
२६१	०
२६२	०
२६३	०
२६४	०
२६५	०
२६६	२
२६७	४
२६८	३
२६९	०
२७०	२

त्रिस्थान तृतीय उद्देशक

मूल सूत्राङ्क	अन्तर्गतसूत्र
१६८	६
१६९	०
१७०	२
१७१	०
१७२	२
१७३	०
१७४	४
१३५	४
१७६	१
१७७	०
१७८	२
१७९	२
१८०	३
१८१	२५
१८२	१४
१८३	५
१८४	३
१८५	८
१८६	२
१८७	७
१८८	८
१८९	२
१९०	०
	योग १५१

त्रि स्थान चतुर्थ उद्देशक

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
१९१	६
१९२	५१
१९३	३
१९४	४
१९५	१८
१९६	०
१९७	९०
१९८	२
१९९	२
२००	३
२०१	४
२०२	६
२०३	४
२०४	०
२०५	०
२०६	२
२०७	०
२०८	६
२०९	२
२१०	२
२११	०
२१२	०
२१३	०
२१४	७
२१५	०
२१६	०
२१७	०

३२२	०
३२३	२
३२४	८
३२५	२
३२६	२
३२७	३९
३२८	२
३२९	३
३३०	०
३३१	४
३३२	२
३३३	२
३३४	०
३३५	०
३३६	०
३३७	०
३३८	८
	योग २१६

चतुः स्थान चतुर्थ उद्देशक

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
३३९	०
३४०	४
३४१	०
३४२	०
३४३	०
३४४	१५
३४५	२
३४६	१४
३४७	०
३४८	२
३४९	१६
३५०	३
३५१	२
३५२	५
३५३	७
३५४	५
३५५	८
३५६	५
३५७	०
३५८	८
३५९	२
३६०	१४
३६१	५
३६२	३
३६३	०
३६४	३
३६५	५
३६६	४
३६७	२
३६८	२
३६९	०
३७०	२
३७१	४८
३७२	०
३७३	४
३७४	६
३७५	२

२७१	०
२७२	१९८
२७३	३
२७४	४
२७५	०
२७६	०
२७७	०
	योग-९२१

चतुःस्थान द्वितीय उद्देशक

मूल सूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
२७८	४
२७९	१७
२८०	१८
२८१	२४
२८२	११
२८३	३
२८४	२
२८५	१
२८६	०
२८७	४
२८८	०
२८९	१७
२९०	०
२९१	४
२९२	५
२९३	७
२९४	३
२९५	५
२९६	१०
२९७	०
२९८	०
२९९	०
३००	०
३०१	३
३०२	५६
३०३	३
३०४	२८
३०५	१२६
३०६	२१६
३०७	०
३०८	०
३०९	०
३१०	३
	योग-५७८

चतुःस्थान तृतीय उद्देशक

मूल सूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
३११	४
३१२	६
३१३	२
३१४	३
३१५	०
३१६	२५
३१७	०
३१८	०
३१९	१४
३२०	७८
३२१	२

४२६	२
४२७	४
४२८	०
४२९	२
४३०	४
४३१	०
४३२	०
४३३	२
४३४	९२
४३५	५
४३६	०
४३७	७
४३८	०
४३९	०
४४०	०
	योग २४९

पंचस्थान तृतीय उद्देशक

मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
४४१	१
४४२	०
४४३	३
४४४	६
४४५	६
४४६	२
४४७	०
४४८	०
४४९	०
४५०	२

४५१
४५२
४५३
४५४
४५५
४५६
४५७
४५८
४५९
४६०
४६१
४६२
४६३
४६४
४६५
४६६
४६७
४६८
४६९
४७०
४७१
४७२
४७३
४७४,

३७६	२
३७७	०
३७८	०
३७९	०
३८०	०
३८१	०
३८२	०
३८३	३
३८४	०
३८५	२
३८६	०
३८७	६
३८८	२३

योग-२५१

पंच स्थान प्रथम उद्देशक

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
३८९	२
३९०	१३
३९१	२
३९२	०
३९३	२
३९४	२
३९५	८
३९६	१२
३९७	२
३९८	२
३९९	२
४००	२
४०१	२
४०२	०
४०३	२
४०४	३२
४०५	२
४०६	०
४०७	०
४०८	०
४०९	२
४१०	९
४११	१४

योग-११७

पंच स्थान द्वितीय उद्देशक

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
४१२	२
४१३	२
४१४	०
४१५	०
४१६	४
४१७	२
४१८	३
४१९	९९
४२०	०
४२१	०
४२२	३
४२३	२
४२४	०
४२५	२

६०५	०	६२८	०
६०६	०	६२९	०
६०७	०	६३०	०
६०८	०	६३१	०
६०९	०	६३२	२
६१०	२	६३३	०
६११	२	६३४	०
६१२	५	६३५	२
६१३	०	६३६	२
६१४	२	६३७	१०
६१५	०	६३८	४
६१६	०	६३९	४
६१७	०	६४०	०
६१८	०	६४१	७२४
६१९	०	६४२	२
६२०	०	६४३	१२
६२१	०	६४४	३
६२२	०	६४५	०
६२३	५	६४६	३
६२४	४	६४७	०
६२५	०	६४८	३
६२६	०	६४९	०
६२७	०	६५०	०

५६३	०	५८६	२
५६४	०	५८७	३
५६५	०	५८८	२
६६	०	५८९	५
६७	२	५९०	२
६८	०	५९१	०
६९	०	५९२	६
७०	०	५९३	२३
७१	८		
७२	०		योग-२४५
७३	३	अष्ट स्थान	
७४	३	मूल सूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
७५	३	५९४	०
७६	२	५९५	२
७७	३	५९६	१४४
८	१	५९७	२
९	४	५९८	२
०	२	५९९	०
१	१	६००	०
२	३२	६०१	०
३	३३	६०२	०
४	०	६०३	०
५	८	६०४	२

६९३	०
६९४	०
६९५	०
६९६	०
६९७	०
६९८	०
६९९	०
७००	०
७०१	०
७०२	६
७०३	२३
	योग १४०

दस स्थान

मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गतसूत्र
७०४	०
७०५	०
७०६	३
७०७	०
७०८	०
७०९	४
७१०	०
७११	२
७१२	३
७१३	२
७१४	२
७१५	२
७१६	०
७१७	२
७१८	२
७१९	०
७२०	७
७२१	२
७२२	०
७२३	०
७२४	०
७२५	३
७२६	२
७२७	०
७२८	१५०
७२९	०
७३०	०
७३१	०
७३२	२
७३३	५
७३४	०

६५१	०
६५२	०
६५३	०
६५४	२
६५५	०
६५६	०
६५७	२
६५८	३
६५९	०
६६०	२९
योग	

नव स्थान

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
६६१	०
६६२	०
६६३	२
६६४	०
६६५	०
६६६	१४
६६७	०
६६८	०
६६९	२
६७०	०
६७१	०
६७२	१९
६७३	०
६७४	०
६७५	०
६७६	०
६७७	०
६७८	०
६७९	०
६८०	०
६८१	०
६८२	०
६८३	०
६८४	०
६८५	२
६८६	०
६८७	०
६८८	०
६८९	३८
६९०	०
६९१	०
६९२	०

७३५	६	७६१	०
७३६	२	७६२	०
७३७	०	७६३	०
७३८	२	७६४	३
७३९	२	७६५	२
७४०	०	७६६	०
७४१	३	७६७	२
७४२	०	७६८	१०
७४३	३	७६९	३
७४४	०	७७०	०
७४५	२	७७१	३
७४६	०	७७२	०
७४७	०	७७३	०
७४८	०	७७४	२
७४९	०	७७५	०
७५०	०	७७६	०
७५१	०	७७७	०
७५२	०	७७८	१६
७५३	०	७७९	३
७५४	०	७८०	२
७५५	११	७८१	०
७५६	०	७८२	२
७५७	१०	७८३	२९
७५८	०		
७५९	०		३५४
७६०	०		

परिशिष्ट ३

स्थानांग-समवायांग

सम विषयक सूत्र सूची

स्थानाग और सनवायाङ्ग के सम विषयक सूत्र

---

१ यहा सर्वत्र सूत्राङ्क दिये हैं।

२ यहा सर्वत्र समवायाङ्क दिये हैं।



---

१ पाठ भेद हैं।



स्थानांग सूत्र

(समाप्त)